



# চণ্ডীদাসের পদাবলী

শ্রীযুক্ত নীলরতন মুখোপাধ্যার বি এ কর্ত্তক সম্পাদিত।

লালগোলার রাজা

<u> বির্বাপ্ত যোগীন্দ্রনারায়ণ রায় বাহাড়ুরের</u>

ৰৰ্থাসুকুল্যে ং ১৯৮৬ অপার সাকু লার রোড, ৰঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ মন্দির হইতে শ্রীযুক্ত রামকমল সিংহ কর্ত্ক প্রকাশিত।

31. 3. 65. 1911-714134

10.m 891441 © 217 pm

১---১৮ ফর্মা উইলকিন্স প্রেসে,

ভারতমিচির

হেয়ার

চেরী

৪১ --৪৪ ,. এবং ভূমিকা, স্ফী হেয়ার প্রেসে,

শব্দ তালিকা, পরিশিষ্ট, টাইটেল ও মলাট বিজ্ঞা প্রেসে মুদ্রিত।

3L.No 066608





		_	
বিষয় ১। শ্রীক্তফে <b>র পৃর্বন</b> রাগ	পৃষ্ঠ	1।   विवय	्रकेंग्र
२। श्रीताधिकात भूसताम	5	> नशी-नरवाधरन	••• >২•
०। ञीक्रकात स्वयः (मोठा	9	० ३०। तामकीका	>१%
8। অভিসার	• 8		>&q
<ul><li>१ (शार्श्व-लीमा</li></ul>		> । অক্রের গোক্লবাতা	••• ২২৮ ••• ২৩ <b>২</b>
(১) শ্রীরাধিকার প্রেমোচ্ছ্বাস .	(*	১७। य <b>ा</b> भागविनाभ	••• २३७
(২) দান		र रा शिथाविनान	*** 28%
(৩) নৌকাৰণ্ড	. 9:	<sup>8</sup> >৮। এবাধাল-বিলাপ ১৯। গোপীবিলাপ	••• \$ \$ \$
(8) বন-ভোজন (১)	91		··· ২/8
🛊 (৫) ধেমু বংস শিশুহরণ (৬) মশোদার বাংস্স্য	<b>.</b>	२) । त्रक्राकत वश्चहत्रव	365
শু সম্বোধ-স্থতি	. 54	२२। दमवका वश्रामदवत्र कक्रमा	<b>(چ</b> ز
MEI * रामक-महा		२७। नन्त-।वनाम्	•••
৮। विकास	. 3.8	। ২৪। শ্রীরাধিকার শোক । ২৫। শ্রীরাধিকার দশা	46¢
৯। শণ্ডিতা	. >• 9		৩.ა
ा भाग है। भगगाविका		२१। राशकारकत मिनन	35#
২। আক্ষেপাসুরাগ	, <del>+</del> >>e	३६। ्रावनायनन	<b>A</b>
मंत्रक-मरपारता		২৯ বাগান্তিক প্রদ	
\$ 100 miles	<b>*</b> >>9	७ । । विविध	. 000

## भृष्ठी ।

পদ-স	ংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।	পদ-স	तःश्रा পদ		পৃষ্ঠা।
	•		`	8৮২	আট রন্ধে আট	•••	23•
487	ঋ∴ <b>র</b> চর <b>ে</b>		২৩৯	১৩২	আন জন ৰত বলে	•••	63
•20	অং <b>ল বেয়াধি সেই</b>		9•9	•63	আনন্দ ছাড়িয়া		২৫৯
<b>63</b> •	অগু <b>ক চন্দন চয়</b>	•••	৩৽২	>=0	ষ্মানন্দিত হয়ে সবে	•••	>¢`
es <sup>j</sup> .	শঙ্গ <b>পুল</b> কিত		<b>૭</b> ૨	690	আনিল অমিয়া পানা	•••	>41
895	অপুলি ঘুরিয়া রাই		₹•৯	96	আপন বরণ ঘূচান তখন	•••	88
467	অতি আনাগোনা		<b>18</b> 3	२८৮	আপন শির হাম আপন হা	তে কাটিস্থ	220
4 > 8	ু ডি শে আকুল		<b>ર</b> ૨8	9/0	আপনা আপনি দিবস রক্ত	iì	>8∙
9.	ভুরাগে রাধা	•••	७०५	085	আপনা ধাইত্ব সোনা যে বি	দ্বিস্থ	>4>
66.	অনেক তপের ফলে	•••	২৯৮	160	আপুনা বুঝিয়া স্থলন দেখিয়	n	೨೨೬
181	स्यत्क नाट्यंत्र		৩২৪	<b>¢</b> 98	আমার কিশোরী কিছু না	कानस्य ••	ર¢ર
849	অ <b>াম সুস</b> র	•••	230	४४२	আমার পরাণ-পুথলি লইয়া	•••	986
		•••	(,0	129	আমার পিয়ার কথা কি ক	হিব সই	>••
1	আ			२४७	আনার বাসনা না হইল তে	विवा …	3•¢
∿,¶২∙	আই সেই সধী ভেটে চন্দ্ৰৰী		930	₹₽8	আমার মনের কথা শুন লে	<b>া সজ</b> নি…	>२ क
>.95	ष्यारेन धनी ब्राधा	•••	<b>6</b> %	988	আমরা সরল পীরিতি গরল	•••	: e ર
4>+	্আগল শ্রম অতিভরে	•••	<b>૨</b> ૨૨	680	আমি ভ অবলা তাহে এত	জালা	>68
२१२	আঙনি জালিয়া	•••	<b>&gt;</b> २०	>>२	আমি যাই যাই বলি বলে	তিন বোল	, 24
२७	व्यात्म (बरन खनी		>9	8 • 8	আর এক গোপী যাইতে ব	াহিরে	340
506	আ:গা বড়াই কি দেধ	•••	9>	766	আর এক্দিন স্থি শুতিয়া		
89	আপো রাধার কি হল 🕠	•••	9•	168	পার এক বাণী খন বিনো	•	316
: >0	জীগো সই কে জানে		656	364	আর এক ভন পরম নিও		40
′ેર∙•	শাস্কার নিশি		>•0	>09	আবুকহি শুন অদভূত কং	- •	۲۵
<b>1-28</b>	আৰু কে গো সুলী বাৰায়	•••	/ 00.	**	আর কি পরাণে জীব	•••	280
>0.	भाक् मान स्मात	•	( 63	233	ন্ধার কি মিলব মোরে পিয়		٠ ٢٠٠
603	वाङ्क् वर्ष भाव ७७ तिन	•••	<b>૨૭</b> ૨	663	আর কি ওনব তার বাণী	•••	222
761	वाक्कायत महिनी जन		• >•	२४	আর খেলে খেলা বাজিকর	<b>া-বালা</b>	<b>)</b> A

পদ	শুংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।	পদ	-সংখ্যা	পদ		পৃষ্ঠা।
>++	• আরুবা কেমনে ধর ধার ৫	ग्रत्न	ъ8	193	এই সে	রুদ নিগুড় ধ্যা		<b>່</b> ອວວ ·
<b>२</b> २७	<ul> <li>আরে মার আরে মোর সে</li> </ul>	ানার বঁধুর	>>•	836	এক এই	দ দেহ দেহের গণন		<b>૨</b>
463	. Hen a time that it think	`\	: 380	8.0	এক গে	াপী ছিল পতির শয়নে	•••	>19
२८६	<ul> <li>আরে মোর বিনোদ রায়</li> </ul>	•••	223	२३•	এক জা	লা <b>ঘরে হইল আ</b> র জাল	া কাহ	>0>
. • 9 •	আরে যোর যাত্রা তুলাল	•••	२ ३ ४	48>	এ কণা	কহিতে দব দখিগণ	•••	২৩৫
२8 <b>२</b>	<ul> <li>चानि नरहत्री कर्दर शौदि शौ</li> </ul>	রি	226	ာ	এ কণা	জননী কিছুই না জানে		٤>
480	111.10- 15/4 641 1 14/8	•	২৩৬	992	এ কথা	পরোকে যথন শুনল	•••	२৯२
২৩१	আসিয়া নাগর সমুখে দাড়াল	•••	>>>	484	এ কথা	যখন শুনিল যশোদা	•••	২৩৭
<b>२</b> २१		•••	>>•	56.0	এ কথা	শুন <b>ল শ্রবণ ভ</b> রিয়া	•••	२३२
>99	আহা মরি মরি পরাণ-পুথলি	•••	20	993		শুনিয়া ক্লফ বলরাম	•••	২ ৯ •
	₹			७२२		শুনিয়া গদ গদ হৈয়া		२१७
>66	ইহার বিস্তার ভাগবতে আচে	ē	৮২	69>		শুনিয়ানন্দের বিরহ	•••	₹≯8'
, ध्र		•••	>80	1>8		ভনিয়া নাগর-শেখর	•••	٥>•
š	ঈ			676		ওনিয়া বিনোদিনী	•••	<b>২</b> ২৪
96.	শ ঈষৎ হাসিয়া রাই পানে চে:ে	_		821		अनिया त्राया विस्नापिनी	•••	240
14.0		¥	७२ 🛭	806		ভনিয়া খাম-মুখ চেয়ে	•••	<b>3</b> 69
	উ			95		ওনিয়া সহচরী আগে	•••	<b>২</b> 8
64.	উকি এ তোমার উন্মত চিত্ত	·	₹ ₹ 8	•		গোচারণে	•••	>
<i>e</i> >2	উঠ উঠ ভাই শ্ৰীদাম স্থদাম		२७৮			বর নাগর শেধর	***	8>
966	উঠিতে কিশোরী বসিতে কি		65P	96		মনে রভদ-কাঞ্চ	•••	80 .
169	উঠিতে কিশোরী বসিতে কি		७२৮	>26		যাইতে ননদিনী সনে	•••	99
969	উঠিতে কিশোরী বসিতে কি	শারী	७२१	990		দন করি পুনঃ পুনঃ	•••	૭૭૨
२७৫	উহার নাম করো না	•••	५५२	168		াহ মায়ের পানে	•••	₹8 <b>७</b>
	এ			<b>b</b> ℃•		নিরে আছিলাস্নরী ধক্তকরি	•••	46
. 6.2.9	এই অহমান করে গোপীগণ	<i>l</i>	२8२	950		ৰ কুজ কার টিংল মোর নয়লি যৌ	•••	०६१
	विहे रमध धर्मि हाँ ममूध जूनि	1	. ,,,	١٠		। एरण एसात्र सन्नाण (याः प्रमन्त्री कनक-भूडलि	44	.>69
259	এই পথে নিতি কর গভায়তি	١	309			হৰ বনবাসী	•••	
808	ं <b>এ</b> ই পর্মাদ ব্যঞ্জিত হইলা	<i>Ĭ</i>	366			हत्त कार्यः-्		<b>9.0</b>
২৮•	এই ভয় উঠে মনে এই ভয় উ	(δ <b>°</b>				वित्नामिनौ ब्राह	•••	₹#7 ₹¶¶ 1
7 93	এই মত নিতি বনে বিহরয়	•••				গত বালকমণ্ডল	٠٠.	417 . 498 "
	এই মত সব গোপের রম্ণী	***					• 4•	•88 ,
890	এটরপে নব নাগর রশিক	•••	1			। द्रव महे मूद्रतम् ।		, >or .,
.836	পুৰ ব্লব তথ কহিল বেকভ	•••	ارد	, 492	व (नरम)	ि संदेशीय (कार्य)	ich (	>0>

			1	•			
• পদ-স	ংখ্যা ∙ श्रम		পৃষ্ঠা।	পদ-স	ংখ্যা পদ		श्रृक्षेत्र ।
459	এ দেহে দে দেহে একই রূপ		` ໑ລ >	<b>b</b> b	কহিও বঁধুরে নতি বৃহিও বঁধুরে	•••	· ·
<b>69</b>	এ ধনি এ ধনি বচন শুন	•••	৩৮	\$8•	কহিছে বড়াই শুন ধনী রাই		90
F:3	এ ধনি মানিনি মান নিবার	•••	<b>૦</b> ૧૨	992	ক্হিছে রজ্কিনী রামী	•••	೨೨೨
<b>e</b> • ₹	এ নব নাগর গুণের সাগর	•••	२७৯	১৭২	কহেন করিণ নন্দের নন্দন	• •••	۰ ۾
83	এ বোল গুনিয়া রুকভাতু রাজা		२७	<b>6</b> )2	कर्टन वहन अ यहनमन	•••	२७৮
39	এ বোল গুনিয়া সুবল সাঙ্গাত	•••	>>	82	কহে পঞ্জন ওনহ রাজন্	•••	২ 9
8৮1	এ বোল শুনিয়া হাসিয়া হাসিয়া	***	२ऽ२	888	কহে ধনী রাধা কেন তুমি হেথা		<b>५</b> ३६
795	এমন পীরিতি কভু দেবি নাই গু	ને	<b>ج</b> و	৬৬৭	কহে বলরাম এক নিবেদন	•••	২৯০
>>3	এমন পীরিতি কন্তু দেখি নাই ভা	ন	<b>د</b> د	৩৭	কহে বাঞ্চিকর খেলিলা বিশুর	•••	२ :၁
<b>હ</b> ૄર	এমন বেশে গোকুল দেশে		২৮৬	819	ক <b>হে য</b> ়ম <b>ণি খনহ স</b> জনি	•••	726
<b>b</b> •5	এমন মাধুরী যাঙার মনে	•••	<b>⊘8¢</b>	२०१	কহে সুবদনী গুন গো সদনি		>• 5
<b>હર</b> ે >	এমন রূপের ছট।	•••	₹₽ <b>७</b>	ese	কংস নরপতি করিল মারতি	•••	<b>३</b>
२२४	এস এস বন্ধ করুণার সিন্ধ	•••	>•>	১৬	কাঞ্চনবর্ণীকে বটে সে ধনী	•••	>>
84	এ সধি সুন্দরি কহ কহ মোয়	•••	9•	929	কাতরা অধিকা দেখিয়া রাধিকা		680
601	এ সব বচন ভাবিতে ভাবিতে	***	২৩৩	२१৮	কানড় কুস্থ করে	•••	<b>১</b> ২৭
>66	এস ভাই সধা দেহ মোরে দেখা	•••	F8	२७•	কানড় <b>কুসুম জি</b> নি	•••	>₹•
	٩			612	কানাই করিয়া কোলে	•••	₹88
	_			647	কান্থ অঙ্গপরশে শীতল হব কবে	•••	٥٠>
8•€	ঐছন রমণী মুরলী ভনিয়া ঐছন ভনইতে মুগধ রমণী	•••	<b>390</b>	8>२	কামু কহে গুন আমার বচন	•••	>91
્ર <b>∙</b> 8 ∶	अष्ट्रन उनश्रेष यूग्य प्रना	•••	<b>&gt;•</b> ₹	>>>	কাম কহে শুন গোপি আমার ব	15ন	63
	હ			292	কান্ন কহে গুন রাধাল যতেক	•••	• 5
৬৮৭	ও পারে বঁধুর ঘর বৈশে গুণনিধি		٥٠>	२৮১	কাম পরিবাদ মনে ছিল সাধ	•••	১২৮
9.9	ওহে ও কুবুজার বন্		۷۰۶	२৯৯	কাহ গে জীবন জাতি প্ৰাণ ধন	•••	208
633	ওহে নাথ, কি করিয়া গেলে	•••	२२७	668	কামুর আদর পীরিতি ভাবিতে	•••	૭.••
9.5	ওহে বড়াই, তাহার বিষম নারা	•••	9•9	92	কামর পীরি(ত কুহকের রীতি	•••	8 >
•	•			983	কান্থর পীরিতি চন্দনের রীতি	,•	>12
	• <b>क</b>			859	কামুর পীরিতি পাইয়া পরশ	·	ر شوائد م
086	কত ঘর বাহির হইব দিবারাতি	•••	>636	080	কামুর পীঞ্জি মরণের সাথি	• ''',	>12
÷60	कमस्त्रि वन श्रेटि	•••	06	>>8	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	•••	•>
	কনক বরণ ক্রিয়া মনে	•••	338	ł	কাহর বঁচন ভনি গোপীগণ	•••	۶۰ ۶۴۶
)/ >e			, se	998	·		<b>ა</b> ე8
	কমলনমূন্য বেয়ান স্বর্ণ 🔈	•••	. 61	२१६		यस	
689	कत्रभूद्धिया शन शन छात्व		২৩৯	269		•••	. ५२७
45	कहिल बीहातू है। है	4.		688	কালা হৈল ঘর আন <b>কৈল</b> পর	•••	£ 723

			1/0	•		
পদ	-मः था भन	পৃষ্ঠা	।   পদ-	সংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।
884	কালা্র জালাটি বড় উপদল	` `>>:	५ २ २	_	সে রাধার	> · · ·
<b>01</b> 8	কালার পীরিতি গরল সমান	36	096	কেন তুমি যাবে কামিন		રશ્ર
२७१	কালার লাগিয়া হাম হব বনবা	गौ∖⊶ : ১২३		কেন বা কান্তর সনে পী		264
63)	কালি বলি কালা গেল মধুপুরে	৩•३	000	কেন বা পীরিতি কৈলা	•	> 6 6
056	কালিয়া কালিয়া বলিয়া বলিয়া		685	কেন বা লইয়া আইলা (		२৮२
<b>0</b> 88	কালিয়া কালিয়া বলিয়া বলিয়া	566	096	কেনে কৈহু পীরিতির		360
১২০	কালিয়া বরণ ধরিলে	68	b२°	কেবা পে প্রকৃতি পুরুষ		085
62	কালিয়া বরণ হিরণ পিন্ধন	ده	929	কেশপাশ দিয়া চরণ মুছ		9,6
222	কালিয়া বরণে না ছুঁইও রাধার	অঙ্গ ৬৪	७०४	কে <b>হ আউ</b> দড় কেশ নাহি		₹৮•
७१२	কাহারে কহিব হুধ কে জানে অ	ন্তের ১৬১	855	কেহ কেহ গোপী যমুনা		२५२
७५२	কাহারে কহিব মনের বেদনা	३৯৯	७२२	কেহ কোথা রহে কান্ত্র	বিরহে	२१७
२৮२	কাহারে কহিব মনের মরম	े ३२৮	800	কেহ বলে ভাল মোরা য	विष्य	२ १ ७
410	কাহারে কহিব মনের মরম	১৫৭	8∙₹	কেহ বা আছিল শিশু বে	গলে করি	<b>&gt;</b> 92
१७८	কি আর দেখহ রাই	>>৮	>>>	কেহ হও দাম শ্রীদাম সু	দাম	\$ \$
<b>(</b> 20	কি আর বলিব পায়	২২૧	>68	কোথা আছ ভাই ছিদাম	স্পাম	16
8 :F	কি আর বিল্যে কাজ	>64	৬৭৯	কোথা গেলে পাব রাম র	क्ष इंडे	224
B•>	কি করিতে পারে গুরু হ্রুজন	) 392	662	কোথারে সাজিয়েছ	•••	<b>২</b> 8૭
۵۰۵	কি বুকে দারুণ ব্যথা	>.97	99.	কোন্ বিধি দির্দ্ধিল কুল	াবতী নারী	>ۥ
₹₡8	কি মোহিনী জান বঁধু কি মোহি	নীজান ১১৯	>>•	कान मधी वत्त खन तम		ė •
<b>599</b>	কি লয়ে আইলে তুমি	, २৯१	665	কোলে লয়ে যাত্বনণি	•••	₹86
166	কি শুনি কি শুনি দাকণ বচন	\ 289	15¢	কাঁচুলির কড়ি দশ লাখ	নিব	હક
43	কি ভনি দাকণ কুলিশ যেমন	\	600	ক্ষণে ক <b>ত</b> শত ক্ষমা নাহি	চিত	२७१
te	কি হৈল কি হৈল মোর কামুর গ	नेदिहि ३०७	800	কেণে রাধা পথ পানে চা	₹	<b>३</b> ৮७
>9	किया करत्र धरन किया करत्र करन		4८७	কেণেক দাড়ায়ে দেখ	•••	8 • ۍ
.•৯	কিশলয় শেজ করি কেন জাগি 📝	তি ১•৪	৬৩ ঃ	ক্ষেণেক দাড়ায়ে র 9	•••	२१৮
₹b_	কিয়ে ভভ দুরশনে	৩১৬				
62	১ন্ধানয় হাতী ধায় বেগে অতি	३৯•		খ		er.d
¢ 5	কুবুঙ্গা,কহেন চরণে পড়িয়া	\ <b>२</b> ৮৯	<b>৫</b> 99	খলপণা ছাড় খল খল কং	τ	રહુ ં
e b	কুৰুজা স্বন্ধরী অতি মনোহারী	··· 549		~~ <sub>\</sub>	•	٠ - ا
	কুলের ধরম ভরম সরম	>++	. \	গ ী	<b>*</b>	• • •
<sub>င</sub> ်ခ	कूलित देवती रहेन मूत्रनी	১২১	110	গগনে দারণ নিশি	·	٠, ١
e e	ক্লফ বলরাম চলিলা তুরিতে	b•		গদ গদ প্ৰেছে পৰে যায়	हिंग रें.	₹08
	क्रक रमधत विगूध चछत	২৯৫		পদ পদ বোলে ভনু বাণীধ		269
	কৈ স্পাছে বুঝিয়া বলিবে স্থিয়া	ا		भृत्य दीका भे दि निर्देश	,	≥e .′

° পদ-:	সংখ্যা . পদ		পৃষ্ঠা।	পদ-সংখ্যা পদ	शृक्षा ।
80,	গিয়া এক জনে কহে কাণে ক		ે રત્ર	<b>ছ</b>	,<
<i>چ</i> ې	গিয়া সেই গুণী প্রকার করিল	•••	₹¢	<ul> <li>८४२ ष्ट्रिक्ट् कदत्र छात्रा हुदत (शन</li> </ul>	;
694	খণিত গোপত পীরিতি	•••	260	১৯ ছাড়িয়া সে তমু দেখাইল জমু	>0
848	গুণী, <b>না কহ কাসু</b> র কথা	•••	ર <b>•ર</b>	৩৮৩ ছার দেশে বস্তি নাহি দোসর জনা	<b>&gt;5</b>
969	গৃহযাঝে রাণা কাননেতে রাধ		७२१	२८१ हि हि लोकन मारनेत्र लोगिया	. >>>
825	গেলা যত সখী বচন না ভনি	•••	>48	২৪১ ছিছি মানের লাগি ভাম বঁধুরে	>>6
68.	গোকুল তেজল নাকি কান		২৮•	२२२ हूँ ७ ना हूँ ७ ना वैधू वैधान धाक	
२৯8	গোকুল নগরে আমার ব্ধুরে	•••	<b>५०</b> २	्रा ६० मा ६७ मा भू वनात्न नाम	,,,,
1>	গোকুল নগরে ইন্দ্র পূজা করে	•••	8•	क	
9 9	গোকুল নগরে ফিরি খরে খরে		88	৩১৯ জনম অবধি পীরিতি বেয়াধি	>8२
	_			৩৮৯ জনম গেল পরত্বে কত বা সহিব	>69
•	घ			৩ং৭ জনম গোঁয়াকু ছুখে	>61
>•>	ঘনভাম শরীর কেলিরস	•••	46	<b>૧</b> ৫৫ <b>জ</b> পতে তোমার নাম	<b>ં</b> ર <b>૧</b>
86	ঘরের বাহিরে দণ্ডে শতবার	•••	२৯	<ul><li>८५७ कत्र कत्र का तिल घाउत</li></ul>	રહે
493	( दत्र म जाभन प्रिन विवान	•••	२ १ 8	७> जनम्यद्रा काङ्स	૦૧
				৫৭৩ জাতি কুল শীল সকলি মজিল	265
	₽ .			১৮৫ জাতি জীবন-ধন কালা	. >>>
999	চণ্ডীদাস কংহ তুমি সে গুরু	•••	ಌ೦೦	41	
956	চণ্ডীদাস কংহ শুনহ মাতা	•••	<b>ಀಀ</b>	·	
76	ठन्मन गञ्जना ठाँक <b>ग</b> गरन	•••	<b>48</b>	<ul> <li>८৮३ अंत्र अंत्र अंत्र वरह ८०० मवाति</li> </ul>	₹€७
422	চন্দ্ৰাবলি, আজি ছাড়ি দেহ ে	भारत्र	>•9	৩২ বরকাউপরে <sub>ই</sub> ত্তিকা <del>স্থল</del> রী	₹•
<b>২</b> ২•	চক্রাবলী সনে কুকুম-শয়নে		۶۰۲	ঞ	
. >>	চম্পকবরণী বয়সে তরুণী		ь	৫৮৫ এ বি মথুরা এ কি চতুরা	২৫৭
₹8	চরকে পুছিল বৃক্তাহ রাজা		26	7 5	
475	চল চল যাব রাই-দরশনে	•••	७:२	10. 5-5- v-1 mm mtz mzz	16
(00	্চলত নাগর কান	•••	২৩১		•
8>0	• हनन भरत हरन (यमन	•••	396	०৯৯ । ज । ज । ज जारा । जारा ज जारा । जारा जारा	229
<b>***</b>	চলহ সই জল ভরিতে যাই	•••	>•>		\
7-97	চলিলা দ্বাল সকল মধল	•••	२७•	λ ρ.	•
	• চাণ্র মৃষ্টিক হুই দেন আদি	. •••	12.2	<ul> <li>८৮१ ठीनन द्रमेन ठेमरक देवर्ठन</li> </ul>	. ২৫৮
• 8•	চাহে চারি, পানে কুরক্ত-নয়ানে	t /	24	১১৬ ঠেকিছ দানীর হাতে	<b>6</b> 2
. >16	<b>हिड़ाँहैए पिन कर्न्द्र छाष्</b> न	•	ંગ્રું	ড	-
	<b>চেতন হ</b> িনি চলিল ছাড়িয়া		ર્લ્ટ	২৭০ ডাকিয়া ভাষাও না প্রাণ আনচান বা	ति '३२४
, v>c	(डोक् इरान, इरन छिन	•		৫৮২ ডাহিনে শৃগালী ডাকে এক জনা	
	•	•	. '		•

•		ای	/。			
পদ-স	ংখ্যা পদ	शृष्ठी ।	পদ-স	<b>श्या श</b> म		পৃষ্ঠা .
•		·	₹00	তোমারে বুঝাই বঁণু তোমারে বু	ঝাই	, 444
	\		86२	ত্যজহ দারুণ মান	•••	<b>२•</b> >
649	চর চর চর বহে অনিবার	: २८৮		থ		
	ত		८३२	থাকি থাকি থাকি ব্যথিত অন্তর		<b>২</b> ৫৯ '
	•		<b>ે</b> ર	থির বিজ্রী বরণ গৌরী	•••	አ
885	তবে কহে রাই দৃতীর গোচরে	>>.				
<b>F</b> ;8	তবে কেন প্রীত বাড়াইলে হিত	२७৯		म		
२≽	তবে দে হইল শ্রীদাম স্থদাম	7.	620	मक्ति गग्रस्य नांतित यथन		২৬•
٦	তড়িৎৰরণী হরিণী-নম্বনী	৬	৩২৩	<b>क्तियम दक्ती छ</b> ि छिन छिन	•••	>80
२३१	ভাহারে বুঝাই সই পেলে তার লাগি	১৩৩	482	ছুই করে ধরি অফুর গোহারি		२७६
. <b></b>	তাহে অপব্লপ কৃষ্ণ অবভাৱ · · ·	>>	>>9	ছকাণ পাতিয়া ছিল এতক্ষণ	•••	5.6
ંકરર	তিনটি আধরে না জানি কি আছে	<b>680</b>	828	ছই সুধা লয়ে বিহি <b>পেল</b> ধেয়ে		२১७
(2)	তুমি কি নিদান তাহা সে না জানি	२ <b>१</b> ३	810	দৃতীকহে ভন আমার বচন	•••	2>8
2(2)	ত্মি ত নাগর রসের সাগর	, <b>&gt;</b> 2•	889	দৃতি, না কহ প্রামের কথা	•••	१५८
. ગહેવ	ভূমি দেব হরি দেবের দেবতা	b¶	88>	দৃতীর বচন গুনি স্থামুখী	•••	>>•
619	<b>ज्यि नन्म त</b> ज़्हे निषश्च।	. ২৯৬	२৮१	দ্র দ্র কলখিনী বলে সব লো	কে গো	74.
495	তুমি নিদারূপ নও	. ₹0•	4.0	দেশ অপরপ সিয়া	•••	455
888	ত্মি বড় নিদয় নিদান 🕠	<i>دود</i>	362	দেখ দরশন করহ ভোজন	•••	re
8>9	ভূমি বিদগধ রায়	. >9>	86>	দেখ হুই রূপ অতি রুসক্প		<b>२•</b> 8
820	ভূমি বিদেশধ স্থাধের সম্পদ	۱ ۱ ۱	6.5	(क्थं (क्थं व्यवज्ञान	•••	१२५ े
875	'তুমি বঁধু ব্ৰক্ষের জীবন	٠ ١٠ ١٠٠	6 2 6	(मथ (मथ नन्दर्गाय	•••	२२৯
298	তুমি মোর প্রাণ-পুণলি সমান	ده ( .	890	দেখ দেখ সখি চাহিয়া ছ্ আঁচি	રે	२७६
>90	ভূমি দে আঁথির তারা	./ ۱۰	4.>	मिथ नव किर्मात्र किर्माती	•••	२०৮
<b>6</b> 2•	ভূমি সে নিদন্না নিঠুৱাই পনা 🦯	. २१२	P>6	<b>(एथ वनशांम जूवनगांद्य</b>	•••	<b>96</b> •
353	তুমি সে যেমন শানিয়ে আমরা /	. 60	8•9	দেখ সবি অপরপ মনোহর		398
136	ুত্মি হৈ নিুদ্না বজি 🥇			দেখি নবরামা তুমি কোন জ		. >>¥
.891	ি ভুত্থনে দেঁথল আর অপরপ	২১৭	৩•২	দেখিব যে দিনে আপন নয়া	ন	308 -
२ <b>७७</b>	্তাদ্রে ধুদাঁহের দৈবের ঠাম 🔌 .	>>>	293	(मिथिल कलकीत मूथ कलक व	ংইবেু.	336.
100		•	)	্দেথিয়া নাগর নাগরী সঞ্ল	•••	<b>૨</b> ૨૧
રદૃર	তোমার প্রেমে বন্দী হৈলাম গুন বি	নোদ রায় ১১৮	1	े उन्धित्र। मूत्रिक करभत चाकारे	ž	9 ,
142	ে তোশার মহিষা বেদে দিতে সীমা .	৩২৫	>8<	় দেখিয়া হয়ুনা নদীর তরঞ্চ	į.,	9.8
165	ভোষার বরণ ঋতি অমুপ্য	৩২৯	624	•	, ,	. %
642	তোশারে ছাড়িতে নারিব কালিয়া	२8३	94	(मग्रामिमी (वम मामि विस्ता	ৰু <b>ৰা</b> য়	8 €

r			* -	110				• 1
	<b>जः</b> था भन		পৃষ্ঠা	। श्रम	'-সংখ্যা	পদ		পৃষ্ঠা। '
, F3	দেয়াশিনী বেশে মহলে প্রবে	শে	80	96	াণিতিনী বলে	ভিন গোসই	•••	γ°''',
976		•••	>87	৩২:			<b>पटन</b>	>80
840	4 4 1144 184 84.11	•••	२५	₹85	_			; 166
<b>₹</b> >•	বারের আগে সুলের বাগ	•••	> 8	193				8>
	¥			68	না যাইও বসুনা	র <b>ক</b> লে	•••	৩৭
962	ং ধরণী উপরে ধরিবে ঢারি			b.6	নারীর স্ত্রন আ	তি সে কঠিন	•••	088
818		•••	904	२३२	শাহ নিঠুরচিত	ভেল কাহার চি	ত	>•¢
	ধর্ম কর্ম গেল গুরু গর্বিত	•••	>64	४०२	নায়িকা-সাধন ৩	<b>এনহ লক্ষণ</b>	•••	089
8 5 5	ধরম করম স্কলি মজিল	•••	₹७•	800	নিকুঞে বদিয়া ন	াগর রসিয়া	•••	>>6
>, <b>২</b> 18	ধরি <b>অন্থপম বাজিকর</b> যেন ধরি নাপিতানী বেশ	•••	>8	2.0	নিকুল শোভিত			₹₹•
-		•••	8\$	82.	নিকুঞ্জ শহর স্ব	গোপীগণ	•••	<b>₹</b> >8
915	ধাতাকাতা বিধাতার বিধানে বি		24+	968	নিজ দেহ দিয়া গ	গ্ৰন্ধতে পারে		હાગુ
1>•	বিক্ বিক্ বিক্ তোরে রেকালি	या	۵•۶	985	নিঠুর কালিয়া না	পেল বলিয়া	•••	>60
422	षिक् षिक् षिक् निर्देश कानिया		ؕ3	724	নিভিই নৃতন পীরি	ইতি <b>হজন</b>	•••	>••
৩৬৩	ধিক্ রহ কুলবতী কুল তেয়াগিং		>69	+t	নিতি নিতি ভাগি		•••	(01
	थिक् तह कोवत्न (र श्रताशीन के	ार्य	262	963	নিত্যের আদেশে	বাণ্ডলী চলিল		9900
685	ধেছগণ সব করি হাস্বারব	•••	<b>3</b>	988	निद्धारन छन छन	বিনোদ নাপর	•••	৩২৩
	ન			410	নিভ্ত নিকুঞ্চে কুং	ল-কুটীর	•••	>9•
<b>66</b> 6	্ মন্দের করুণ শুনি			<b>6</b> 26	নিশি গেল দুর প্র	ভাত হইল	•••	२२৮
		•••	२३७	845	নিশি প্রভাত হই	7	•••	>•e
	নন্দের নন্দন চত্র কান	•••	950	२३७	নিশাদ ছাড়িতে ন	া দেয় বরের গৃ	হিণী	১৩৩
	নবীন কিশোরী মেঘের বিজ্রি	•••	9		1			
	নবীন নাগরী নবীন লোরেতে	•••	२७১			প		
	নয়ন-কাজল মুছিয়। ভারল	•••	>>1		পৰে জড়াজড়ি দে		•••	8
	নয়ন তরল বহে প্রেমবারি	•••	>12		পথের ব্যবারে আ		•••	. <b>૨৮</b>
	নহ নিদারণ নবল নাগর	•••	₹₩8		পদউৰ কাক কোবি		•••	e• ´
	া কর না কর ধনি এত অপমান	· · · ·	>>>		প্রপুরুবে শীবন স			১৩২
	াগর আপ্নি হৈলা বণিকিনী বিশ্বস্থান	•••	89		পরবশে ভূমি পরের		A	<b>205</b> .
	াগ্র্চভ্রমণি	•••	₹•৮		পরাণ-বঁপুকে স্বপনে		٠,٧	21
	াগর নাগরী প্রেমের সাগরি		423	0)6 1	भरत्रत्र <b>मिशी</b> शी प् <b>हि</b> र	व कथनि		28.
	াপন্ন পাইন্ধ নাগরী সকল	/	રસદ		শশরা নামাও রাণা		·	ÜPP
	লানি পীরিতি এমন বলিয়া	•	. >88		াড়ি <b>ল খো</b> ৰণা নগর		•••	380
	জাত শীরিতি বারা নাহি পার		485	985 P	াড়িয়ে চরণে <b>স</b> ক্র	्राच्या .	••	₹₩8
২৪৯ স	পিতিনী করে ধবি রাই চলুমুখী	l .	1->>9	200 9	াপ পরাপে কত স	হৈবেক আলা .		ละ

,

,		u	<b>/</b> •			•
				a wheel		٠. نگره
পদ-স		शृष्ठा ।	পদ-সং	•	·C	श्रुका ।
211	পাশরিতে চাহি তারে পাশরা না'্যার গো	1		প্রভাত কালের কাক কোকিল ডা	किन	· · ·
¢ or	পাৰাণ্ নিশান ভোষার পীরিতি	<b>38</b> P		প্রভাত হইল স্বাই আগিল	•••	42 -
442	পিয়া গেল দ্রদেশে হাম অভাগিনী	٥٠>	48•	-1-10	•••	203
549	পিয়ার পীরিতি লাগি যোগিনী হইম	, ,>0>	>9•	A Committee of the control of the co	•••	<b>F</b> 3
96>	পীরিতি আনল ছুঁইলে মরণ	>64	629	প্রাণনাথ, একবার চাহিয়া কহ ক	षा	<b>૨</b> ૧૮
166	পীরিতি উপরে পীরিতি বৈসয়ে	984	626	थाननाथ वैभूष। सामरत	•••	<b>₹98</b>
166	শীরিতি করিয়া ভালয়ে যে 🗼 · · ·	909	<b>67</b> P	প্রেম বাড়াইয়া ফেল উজটিয়া	•••	295
<b>3)</b> 6	পীরিতি নগরে বগতি করিব	>46	46.	প্রেম যুবতী যত রয়া যুথে	•••	586
• 40	পীরিতি নগরে বসতি করিব	>69	200	(श्राय एवं एवं नश्न क्यव	•••	63
<b>⊘∙8</b>	পীরিতি পসার লইয়া ব্যন্তার	५७५	96.	প্রেমের আক্বতি দেখিয়া মূরতি	•••	908
୬୩୩	পীরিভি পীরিভি কি রীতি মুরতি	>७३	969	প্রেমের পীরিতি কিসে উপজিল	•••	400
0F•	পীরিভি পীরিতি মধুর পীরিতি	১৬৩	962	প্রেমের যাজন গুন সর্বজন	•••	<b>006</b>
<b>⊘►8</b>	পীরিতি পীরিতি সব জন কহে 😶	> <b>t</b> @		-		
৩१৯	পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁধর 🛛	740		क्		
998	পীরিতি বশিয়া এ তিন আঁখর 🛛	782	646	ফটিক অব্দের জন্ম	•••	96>
064	পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর	>61	621	ফিরিয়া না চাহ ফিরি কথা কহ	•••	263
909	পীরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর 🛛 •	285	2.5	कृष्टेन झून गांधवी खांठि		२२•
೨ಽ€	পীরিতি বলিয়া একটি কমল	284	636	জুলি ফুলি কান্দে স্থির নাহি বাবে	ħ	<b>२</b> 9•
916	পীরিতি বিষম কাল 🗼 \cdots	365		<del></del>		
0.6	পীরিতি-মূরতি কভু না হেরিব	<b>५०</b> १		ভ		;
OF 9	পীরিতি রসের সাগর দেখিয়া	>66	603	ভাণ্ডীর-কাননে চলে ধেমুগণে	•••	२०১
२৯৫	পীরিতি লাগিয়া আমি সব তেয়াগিত্	১৩৩	₹6.	ভাদরে দেখিত্ব নটগাঁদে	•••	>>1
959	শীরিতি লাগিয়া দিছু পরাণ নিছনি	>696	120	ভাবের অন্তরে ভাবের উদয়	•••	90>
117	পুন আর বার আসি তরাতর/	৫৩২	900	ভাবোলাসে ধনী বঁধুরে পাইয়া	•••	9>9
- (100	পুনঃ পুনঃ কহি বে 🗸	২৩•	२२२	ভাল ভাল ভাল কালিয়া নাগর	•••	>>>
29	भूनः दनद्राम द्राहिश-स <del>म्</del> न	>9	423	ভাল হইল বঁধু তোমার পীরিতি	•••	. ૧૨৬
. ఎ 6	্ৰ্নঃ শি <b>ঞ্</b> ণণে করল হরণ	, re	१२३	ভাল হৈল আরে বঁধু আসিলা স	কালে	٠٠٤٤
₹•	<b>*</b>	20	663	ভালের বড় তু ভাষিনীর প্রিম	•••	२७१
86.	`	२०३	1		<b>*</b> '	٠٠ جيدم
936		دده	1.	•		× •
10		৩০৬	• •	• ম		
207		>•>	.   2	' মগন করিয়া গেল সে চলিয়া	1./	<b>ર</b>
<b>v</b> •:		980	846	্ৰগন হটুৰা নীতের আলাপে	₹	· २•७
. 64		086	814	The state of the s	·	989
V	THE MILES TO STRING TO	•	•		٠. ٦	

				_			
		_	، جوہ		alm.		
পদ-সংখ		•	वृक्षा।	পদ-সং			পৃষ্ঠা।
		•••	२५७		বম্নার ছট অতি রমা স্থল	•••	>1•
	Yu. Kana. II.	•••	8¢		যম্নার তীরে সবে যায় নানা রবে		20
	নের মর্ম মনেতে জানহ	•••	२७७		यत्नामा वर्णन छन त्मा दाहिनि	•••	ર∎૯
		•••	>>>		ষাইতে জলে কদম্ভলে	•••	84
	A Committee of the comm	•••	366		যাইতে দেখিল শ্ৰামে	•••	98
126 2	ারম কহিতে ধরম না রয়	•••	985		যাবত জনমে কি হৈল মরমে	•••	202
		•••	٥٠٠		যাহার কারণে জগজন ভরি	•••	२६७
5 AR 2	বির মরি যাই শ্রামের বাঁশীয়া নাগ	বৈ	১২৩		যাহার সহিত যাহার পীরিতি	•••	264
		•••	36¢		ষে জন না জানে পীরিতি মরম	•••	১६२
866 7	াধবীতদাতে রহে এক ভিতে	•••	164		যে দিন হইতে তোমার সহিতে	•••	१४०
840	াধৰ তলার সুলের সৌরভে	•••	>>6	> 09	যে পদ যোগীরা জপে নিরস্তর	•••	92
P3P 3	াহৰ মাত্ৰ তিবিধ মাহৰ	•••	V8F	<b>F</b> <2>	যেবা জন জানে কহিতে না পারে	••	. 085
F>> ;	শাসুৰ মাসুৰ সবাই বলয়ে	•••	485	>4<	যোগমায়া পোর্ণমাসী সাক্ষাতে ব	ষাসিয়া	8€
<b>५२०</b> :	গাবাপ জনম নাছিল যখন	•••	96.		র		
b (	মিলা অমিলা ছুই রুসের লক্ষণ	•••	982				· .,
60F 3	ন্নিগণ যারে ভাবে নিরস্তরে		२७७	२७१	त्रक्नी-विनाम करात्र ताह	•••	۶•٤١
168	विनीत चरत त्रहिर्द कि चरत	•••	১২২	4>>	রতির কারণ রবির কিরণ	•••	48¢
>9> (	যোর অপরাধ কেম	•••	৮৯	₩8 9	त्रथं चार्तार्गं कृष्णं वनत्राम	•••	२৮৪
<b>60</b> ¢	<b>যোর অপরাধ ক্ষেম যত্</b> নাথ	•••	৮৮	669	রথ চড়ি যান করয়ে গমন	•••	266
. 340	শোহন মুরতি কান	•••	>6>	೦৯೦	রমণী-মোহন বিলসিতে মন	•••	ንቀ৮
•				928	রমণীমোহন রমণী মোহিতে	•••	>65
	য			હ	রমণীর মণি পেধিকু আপনি	•••	¢
463	বধন এ তত্ত তত্তান করে	•••	२२०	¢•8	রসিক নাগর চতুর শেখর	•••	475
476	ষ্থন করিলে বনে অতিসূধ	•••	২৬৯	899	রসিত্বাগর বলে তন বিনোদি	নি	२•৮
२६७	ষ্খন নাগর পীরিতি করিলা	•••	٦ ٦٢	996	রসিক নিগ্রী রসের মরা	•••	1001
262	য়খন পীরিতি কৈলা	•••	>>1	111	রসিক রাজক স্বাই কংগ্নে	***	ಅಂತ
-6,59	বতক্ৰণ নয়নে চাও	•••	२१३	626	্রদেতে আবেশ হয়ে 🐧	•••	11-063
893	ৰত গোপনারী চন্দন অগোর	•••	₹••	112	রসের কারণ রসিকা রসিক	,	ost
22:	ষ্ঠন করিয়া বেদালি ধুইয়া	•••	>82	<b>60</b> 2	রসে রসাইয়া রমণী তেজিয়া	7	২ ৬৩
دوه.	ৰত নিবারিয়ে চিতে নিবার না যা	াৰ বে	1 560	8 66	রাই অভিসার করু	•	. 1.8
	ষদি বা পীরিতিখানি স্কনের হয়		\$6.	२०७	রাই, আফু কেন হেন দেখি	•••	ં >• ર
101	বর ত্রহা তাল মান 🗼 🗸		• ২২১	976	রাইএর দশা সধীর মূধে	•	'૦૪૨
	रम्ना निकार यथा वानीवर्षे 🚶 🍊	•••	• ২৭	₹€	রাই কহে ভবে ক্লন্তিকার আগে		. ', 56

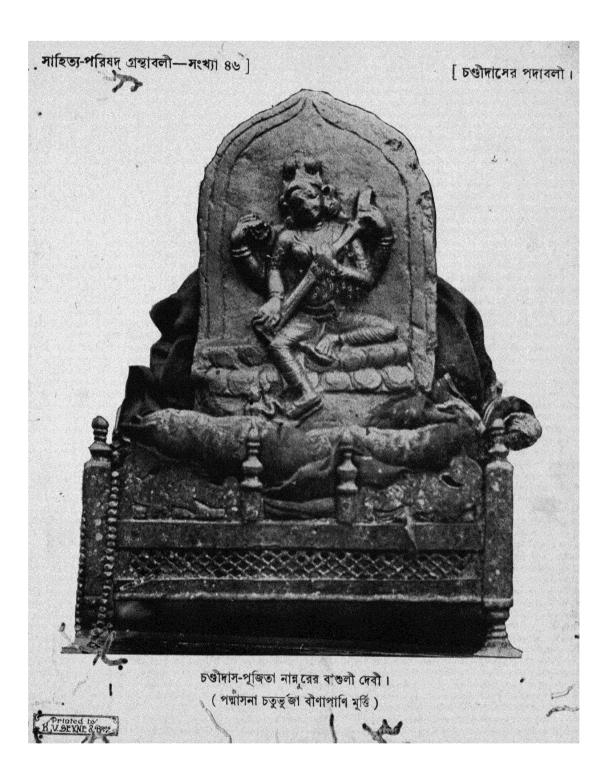
	•		lie	y'o				
পদ্-স	ংখ্যা পদ		পৃষ্ঠা।	পদ-স	ংখ্যা	পদ		পৃষ্ঠা।
160	রাই, তুমি সে আমার গতি	ψ.	<b>૭</b> ૨ <b>৬</b>	<b>666</b>	রূপ দেখি যত	মথুরা-নাগরী	•••	214
88•	ছাই, তুরিতে খামেরে দেব গিয়া	•••	245	666	রূপ দেখি হিয়	া কেমন করে	•••	266
96>	রাই, তোমার মহিমা বড়ি	•••	८२ 🖁	e>	রোঝা ওঝা অ	ান গিয়া পেয়েছে	কে ভূতা	(0)
<b>७७</b>	রাই বলে গুন বেদনী বড়াই	•••	ે ૧૨	<b>68</b>	রোদন শুমান	সব পরিহরি		२५७
>••	রাই বলে শুন হেদে গো বেদনি	•••	e b					
123	রাই, বড় সে দেখিল বিপরীত	•••	৩১৩			ल		
100	রাই বিনে মনে সকলি আঁধার	•••	<b>૯</b> ૨৯	२०১	ললিতা কহয়ে	শুন হে হরি	•••	>>>
600	রাই মুখ হেরি নাগর মুরারি	•••	২৭৮	(4)	ললিভার কথা		•••	₹85
२७३	রাইয়ুখে শুনল ঐছন বোল		>>8	180	ললিভার বাণী	ভনি বিনোদিনী	•••	>>€
8 22	রাই রাই নাম আর সব আন		>>6					
<b>7</b> 68	রাই আমে একই পরাণ	•••	२३৮			ব		
> 8	রাই স্থনাগরী প্রেমের আগরি	•••	<b>e</b> 9	39t	বদন নেহারি	তর তর বারি	***	>>
₹9•	রাইক ঐছন সকরণ ভাষ	•••	>>8	5	বদন সুন্দর যে	ান শশধর	•••	9
<b>२</b> 8७	রাইয়ের বচন শুনি দখীগণ		>>6	20	বদন হেরিয়া '	গদ গদ হৈয়া	•••	60
b• 9	রাগের ভজন গুনিয়া বিষম	•••	988	9>2	বন্ধ কানাই, (	ভোমার চরিত এ	ত দূর	٠٤٥
<b>8</b> ₹•	রাধা কহে শুন আমার বচন	•••	24.	108	বন্ধু, কি ভার	বলিব্ আমি	•••	660
54	রাধা কহে গুন রসিক নাগর	•	<b>(</b> >	43	বরণ দেখিত্ব ং	গাম	•••	೦೫
818	রাধা কহে শুন গ্রাম শ্রনাগর	•••	₹•₩	494	दैन यन (मिथ	বিকল পরাণ	•••	<b>ર</b> <del>ક</del> ર
<b>&gt;</b> 28	রাধা বলে ভূমি কত চাহ দান	•••	હહ	9.8	वन वन मि	বিরস হইলে	•••	२७४
>>>	রাধা বলে মোরা জাগাত বলিয়া	•••	••	300	বলরাম আংগ	া কহিছে কানাই	•••	93
860	রাধা বলে শুন আমার বচন	•••	২০১	२৮७	वरण बन्क र	ণারে মন্দ <b>আছে</b>	ণত জন	200
226	রাধা বলে শুন বিনোদ বড়াই	•••	હર	490	বছক্ষণে তবে	চেতন পাইয়া	•••	२२(
<b>62</b> €	রাধা বলে শুন রসিক নাগর	•••	२ <b>१</b> 8	902	বহু দিন পরে	বঁধুয়া এলে	•••	<b>५८</b> ०
162	রাধা বিনে আর আন নাহি ভায়	•••	७२৯	>08	বড় অদভূত	দেখিল বেকত	•••	•:
895	রাধারণ অতি দেখিয়া ম্রতি		২ • ৭	9.	বাদীয়ার বেশ	া ধরি	•••	೨
89•	রাধা ভাষরপ দেখিয়া মোহিত	•••	२∙६	166	বাওলী কহিছে	ছ ७न (२ विक	···· ·	90
8:3	শ্ৰন্ত আর্ট পীরিতি দেখিয়া	•••	. >94	488	বিচিত্ৰ স্বাস	ন বসিলা সন্থনে		20
8 > >	त्रायात्रे आर्वरम् गमन मध्त	•••	>96	399	বিচিত্ৰ পাল	ছু শয়ন করায়ে	•••	<b>&gt;</b> :
>3e	রাধার সাকৃতি করিছে আরতি		9 5	3.3	বিদ্গধ প্রেম	রূপ নির্বাধিতে		. 1
826	ঝুধার চরিত দেখি সেই দখী 🔪		<b>24</b> 3	Ob #	বিধির বিধার	ন হাম স্বানল ে	ভ <b>ৰ</b> াই	>68
>.,e	রাধার বেশে শোভা বনাইছে	<b>\</b>	<b>a</b> 9	98€	বিকিছু কুনুম	ষতনে আনিয়া	,	>64
২•৭	রাধিকা আদেশে ননের হরবে	}	>•0	200	विश्रम रेशिय	কাছিল ভতিয়	1	> >
	৴ রামা হে∦কি আর বলিব আন		<b>37</b> 6	9.5	(বিরহ-কার্বর	বিনোদিনী রাই		<b>d</b> •1
62	<b>J</b>	n '	₹•	860	विश्व भारत	चार्श क्रम क्रम म	ANG C	•••

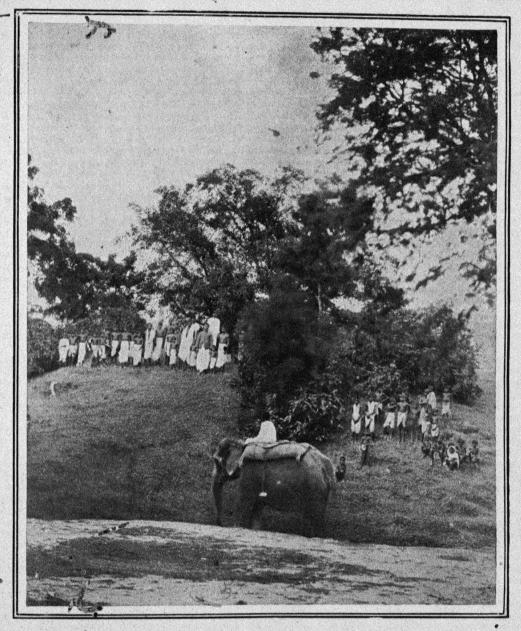
् (शप-३	तःचा भन	পৃষ্ঠা	। । প	<b>न-</b> সংখ্যা পদ	পৃষ্ঠা।
ર પ્ર	. বিষম বাঁণীর কথা কহনে না যায়	`>	25	,	
>48	বিষয় ভাবিলা বালক সকল	١	·>	٦	
764	বেদ বেদ বর্ণ চাক্ল সে পুরিত	1	9: ا	। भारतक वत्रव भारत वैभूषा विषाण परत	৩১৭
>>1	বেরাইতে রাধা নাহি পড়ে বাধা		90 )	<ul> <li>मंडिनी धवनी वरन ना পाहेबा</li> </ul>	P-0
884	বেরি বেরি দৃতি বচন সরস	>	دو دو	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	166
9	বেলি অসকালে দেখিত্ব ভালে	•••	e e	ps भिन्ना (वर्ष ७ नि वरमाना द्राहिनी ···	<b>ર</b> ડર
627	বেশ বনাইছে মায়	4	26 0	no ৰিশুকাল হইতে শ্ৰবণে শুনিম্ন · · ·	242
894	বেশ বনাইছে খাম	ء	ە م	৷২ ওান কমলিনি চল কুল রাখি	>44
960	বেশ সে স্থবেশ অতি মনোহর	>	65 C		<b>२</b> २२
২৩	বৃকভামুপুরে গিয়া কুভূহলে	•••	>1 >:	০৮ শুন পো বড়াই মোর	12
Ţ	বৰরাজবালা রাজপথে আইলা		10 >	ণ তনপোবড়াই হেখা	6 6
476	ব্ৰহ্মরশ্বে, সহস্রদল পণ্যে	o	34 0	১৪ শুন গোমরম-সই	>8•
176	ব্ৰহ্মাণ্ড ব্যাপিয়া আছয়ে যে জন	0	8. 6		٤١٦
612	বঁধু, উলটি কহত এক বোল	ء	23 0	১৬ উন গোমরম-স্থি	>3 &
<b>૨</b> ૨8	वँधू, कर ना द्रागद कथा छनि	>	.> 8	•• শুন গোমরম স্থি	>1>
216	বঁধু, কহিলে বাদিবে মনে হুখ	>:	२०   २५	০৪ শুন লো রাজার কি	275 -
826	বঁধু, কি আর ধরের সাধ	>	<b>⊬</b> २	📭 শুন গো রাধিকা চাঁপার কলিকা	8.9
109	বৃধু, কি আর বলিব আমি	0	<b>\.</b> 0	০০   শুন ও গো দই আর তোমা বই   ০০	>89
401	বঁধু, কি আর বলিব আমি		२১ । १।	৮৪ ৩৪ন গোসজনি আমার বাত	999
185	ব্ৰু, কি আর বণিব আমি		22 9:	১৭ শুন গোসজনি পরমাদ শুনি	८७१
982	বঁধু, কি আর বলিব তোরে		ا ا	৯৯ তান গোসজনি সই	**
100	বধু, ছাড়িয়া না দিব তোরে	•	> e	১৭ ৩০ন গোসজনি সই কি বৃদ্ধি করিব	२२€
822	ব্ধু, তুমি কঠিন পরাণ	<b>&gt;</b> I	P > 2:	২০ শুন পোয়ালিনি উপমা দিয়াছ	66
106	वैशू जूमि निमाक्त नाम		>> 6:	২৮ ভুনধনীরাই কহি তুয়াঠাই	२ १६
986	বঁদু, তুমি সে আমার প্রাণ		عي ا 8·	৬০ ৩ন ধনী রাই তান কিছু গাই	<b>.</b> 462
	. ব্ধু, তুমি সে পরশ মণি হে		२७ । ३:	২২ শুন্ধনীরাধারপের পরব 👵	**
42.	• •	۶	₹₩ •	৭৮ গুন নন্দ খোষ আমার বচন 💡	्र <sup>.</sup> २३१ू
~ . 	বঁধু যদি গেল বনে শুন হগো স্থি		8 S	৬৫ গুন নব রামা ঐ পরসক	• ·
	्रवेंधूत्र व्यक्तित्र एवि व्यनामत		/ 1	১৮ খন প্ৰাণ-স্থা আমি সে জানিয়ে 🙃	<b>ે</b> ર
. 3 66	বঁধুর লাগিয়া শেক বিছাইক		\	১৯ শুন রঞ্জিনী,রামি	. ७७१
181	वैधू (इ. नम्दन मुकारम (थाव	_	( 1	>२     चन द्रत्रमहे श्रीश	· <b>6</b> 5
803			į.	৮২ ७न ७न निनि थ्येम ऋगानिनि	950
	বাঁশীর নিঃখান কাণে	J	1	৬২ খন খন বাছা জীবন-কানাই 🛶	, 386
7.0	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1			৬২ খন খন বছি৷ জীবন-কানাই	. <u>5e</u>

			V	v.	•			
পদ-স	। <b>२</b> था भूष		<b>श्र</b> ि।	পদ- <b>স</b>	!ংখ্যা <i>\$</i>	<b>াদ</b>	•	र्वेश । (
865	খন খন রাধা করে সেই খাণী 📝	<b>!</b>	₹••	586	্ ভামের জলদ রূপ (		۲.	<i>३</i> ४७
_ j.•	খন খন খন আমার বচন	٠.¸ •••	ee	७৮১	খামের পীরিতি মূর		•••	3700
٠ ٥٠٠	ভন ভন সই কহি তোরে	•••	<b>२०</b> ४	6.	গ্রামের বরণ-ছটার		•••	700
905	ভন ভন হে রশিক রায়	•••	, 024	74.6	খামলা বিমলামক	লা অবলা	•••	26
२२৮	শুন শুন হৃন্দরি আমার বে রীত		>>•	9.6	খাম ভকপাৰী হ্ৰ	ার নির্বাধি	•••	٥٠٢
٠٠٩	শুন সহ6রি না কর চাতৃরী		१७१	4.1	খাম খাম বলি সদ	া ভাষ হেরি	•••	રહહ
980	খন স্থনাগর করি ক্লোড় কর		૦૨૨	<b>6.</b> 9	খাম সুনাগর রায়		•••	२७१
950	শুন সুনাগরী রাই		<b>9</b> 5 F	982	শ্রাম-হন্দর শর <b>ণ</b> ভ	াশার	•••	<b>૦</b> ૨ 8
>>>	খনহ নাগর কাহ	•••	• 5	>• •	শ্রীদাম স্থদাম স্থার	বলরাম	•••	6.5
( 56	খনহ নাগর গুণের সাগর	•••	289	494	শ্ৰীমুখ-পঞ্চজ চাহি	গোপীগৰ	•••	ર¢ર
७७७	শুন হলধর ভাই		२					
885	ভনহ স্থলরী রাধা	•••	266			স		
474	শুনহ সন্ধনি আর কি দেধহ	•••	२२८	೨೦•	সই, আর কিছু কৈ	ग्रना (গা	•••	>86
870	<b>ওন হে কমল</b> -আঁথি		>11	२१७	সই, আর যে কহিব	া কত		<b>५</b> २ :
98•	খন হে চিকণ-কালা		৩২১	१৯२	সই, এ কি সহে প	রাণে	•••	> 0 :
)842	শুন হে নাগর গুণমণি	•••	₹•5	28 <b>9</b>	সই, কাহারে করি	ব হোষ	•••	> @ 8
e 59	ভন হে নাগর গুণমণি	•	२८৮	69	সই, কি আছু দেশি	रंग तक	••	95
. 828	শুন হে নাগর রায়	•••	>99	488	,সই, কি আর শীব	নে সাধ		>08
8>¢	শুন হে নাগর রায়	•••	>96	<b>2%</b>	সই, কি আর বলি	ৰ তোৱে		≩b
७∙€	শুন হে নাগর শরণ যে লয়	•••	२५६	24	সই, কি আর বলি	<b>र ग</b> ाय	•••	¢ s
>6>	चन ८१ वनाई माना	•••	F8	<b>33</b> }	সই, কি কাজ এ ছ	রি ঘরে	•••	>81
868	ত্ব হে ভ্ৰমর কেন বা ঝঙারো	•••	<i>७६६</i>	৩২৪	সই, কি হইল কাল		•••	>88
१२१	শুন হে রসিক নাতি	•••	৬৭	48	সই, কেবা ভনাইৰে	ৰ গ্ৰাম নাম	•••	৩২
122	ঙনি ধনী যুৱছিত ভেলি	•••	8 CO	२ <b>१</b> ७	সই, কেমনে জাব		•••	: २०
Fò	ভনিয়া মান্যুর কথা রসিক স্থবন	•••	81-	٥٠>	সই, কেমনে ধরিব		•••	>0
428	শুনিয়া রাধার বিনয়-বচন	•••	<b>२</b> २१	900	সই, কে যাবে মধুং	•	•••	٥.٩
-400	গুলিয়ে স্পুভিরিণী চিতপত বোল	•••	२१৮	128	गरे, जानि कूपिन र		•••	***
१२७	जिल्ह्य वांशात्र वांगी	•••	978	0.0	সই, তাহারে বলিব			<b>ક</b> હેં
116	,শুলার রস ব্বিবে কে	•••	998	ومو	সই, পশিল বিষম			ુ <b>&gt;</b> રક
20/	অমি কহে ভন রাই বিনোদ্বিন	١	લર	100	সই, পীরিতি আখ		ممسد ٠٠٠	>81
,	শ্রাম-পরদক বড়াই দহিতে 🔪	•••	¢۵	હિર	नहे, वसूरे ध्वराम			>84
. 883	धाम-बारम देवर्घन किरमात्री	}	२५६	293	সংস্থিত মোর এ		•••	<b>&gt;</b> ? '
18.F	. भाष-भूजभाना वित्नानिनौ द्रापा	<b>[</b>	>14	90	नहे, द्विप विदय			109
488	খায় মুখ হেরি আকাশের বিধু	<b>(</b>	२७२	· 24	नहे, गेष्ठित शब्द (	अस्य 🥕 👡		>84

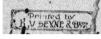
			1	rolo			
্ পদ	<b>नः</b> था भ		পৃষ্ঠা।	পদ.	সংখ্যা পদ		পঠা
)०१४	শই, রহিতে নারিমু খরে	•••	>86	42	সুধা ছানিধা কেবা	•••	96
· e salter de	ৃষ্ <b>ই, সহ<del>ৰ</del> মাত্ৰ</b> নিত্যের দেশে	•••	<b>08</b> •	>0.	ञ्चन वितर्ध रामित्रा राभित्रा	•••	12
895	সই, হের আসি দেশ্যিয়া	•••	२∙€	623	সুবলে কংহন কমললোচন		292
91	সই, হের না দেধহসিয়া	•••	€8	२७७	रूषन कूषन (र षन ना कारन	•••	<b>&gt;</b> 0•
. 8%	সকল গোপিনী মোহিত হইল	•••	२३१	65	<b>নেই কোন্ বিধি আনি স্থা</b> নিধি	•••	44
· See.	সকল রাধাল ভোজন করিতে	•••	b٤	485	শেই গোপনারী রাধার গোচর	•••	२७६
269	সকলি আমার দোষ হে বল্প	•••	>>>	६८७	সেই মুনি সেই হরিণী ছাওয়াল	•••	212
626	স্থি, এমন তোমারে কেন দেখি	•••	<b>২</b> ২৪	068	<b>গেই হৈতে মোর ম</b> ন	•••	>66
9•8	স্থি, কহিও তাহার পাশে	•••	٠٠٩	₽•8	দে কেমন যুবতী কুলবতী সভী	•••	088
1.6	<b>স্থি, কহিবি কামুর পায়</b>	•••	٥٠٩	8२8	সে নারী মরুক জলে ঝাঁপ দিয়া	•••	<b>३</b> ७२
<b>45</b> 5	স্থি রে, বরুষ বৃহিয়া গেল	•••	७•२	66	त्म (व नागंद्र खनवाम	•••	৩৮
616	স্থি রে, মথুরামগুলে পিয়া	•••	۷•১	<b>₹</b> \$\$	সে যে ৱৰভাত্ম-স্থতা	•••	>•5
>8	<b>স্থিপণ সঙ্গে যা</b> য় কত রকে	•••	۶•	8 26	সে হেন র <b>সিক কেলে রবি ত</b> থা	•••	349
623	স্থীর বচন শুনর স্থানর	•••	۶∙۵	6 .	সোনার নাতিনী এমন যে কেনি	•••	٥)
9 30	স্থীর বচন গুনিতে নাগর	•••	٠٤٥	83	সোনার নাতিনী কেন	•••	á.
497	সতের সঙ্গে পীরিতি করিলে	•••	೦೨৯	<b>೬೦</b> ೩	সোনার পুথলী অবনী উপরে	•••	₹6.
F70	সদাবল তথ্য হয় কত তত্ত্তন	•••	086	25.9	সোনার বরণথানি	•••	67
>8>	সব গোপীগণ আহীররম্ণী	•••	98	૭૦ર	সাঁজে নিবাইল বাতি	•••	>59
842	नव भागीभाग कमन-नम्रास	•••	२५५	>0	স্থান, ও ধনী কে কহ বটে	•••	٠ ۵
682	সব স্থী আসি মিলি রাধা পাশে	•••	२৮२	49	স্ঞ্জনি, কি হেরিমু যমুনার কুলে	•••	<b>9</b> 3
ંકર૦	স্বার করেতে ধরিয়া ধরিয়া	•••	२१७	২18	चक्रि, ना कह ও সব कथा	•••	> 6
>6.9	সবে অন খায় মাঝে যহবায়	•••	<b>b</b> >	२७५	चबनि ला परे	•••	>>>
90	সহচরী ধায় আনিতে চেতনী	•••	२२	P • 9	স্বন্ধনি, শুন গো মামুষের কাজ	•••	رد8 ک <sub>.</sub>
654	সহজ আচার সহজ বিচার	•••	<b>33</b>	49.	স্বপনে কালিয়া নয়নে কালিয়া	•••	₹8≽
195	সহজ আচার সহজ বিচার	••• '	90%	<b>b•9</b>	चत्रभ विश्तन क्राभित्र धनम 🔊 🦏	•••	vie
120	नरक नरक नरक कराय	•••	აგ.	144	স্বরূপে আরোপ যার	••• ,	993
	ন্সহর ফিরায়ে ধনী "মাজন সমূহ চন্দ্র ভিন্ন	•••	२>8		_	<b>,</b>	, u. 4
	সালল শক্ট চলল নিকট সাত পাঁচ সখী সলে	•••	२३६		₹	العصدرو	
		•••	الإد		হইলে স্থলাতি পুরুষের রীতি	•••	985
	भारत महर्ग व राष्ट्र कठिन भारत भी दिकि भागम (र शैकि	•••	0 3		रमध्य-छरत्र माना नाहि भारत पिर		
در) هوره	न्द्रस्य नाशिश आनम्म स्य शास्त्र न्द्रस्य नाशिश अ चत्र राशिङ्	·;;	; e d		হাত দিয়া দেৱ বড়াই খোর কলে	বর	, 8cc
vev	সংখ্যে গাগিয়া পীরিতি করিহু <sup>4</sup>	1	:0;	(t	হাম দে আহিলা হৃদয় অধলা	•••	<b>ં</b>
002 002		1	396	>81	,	<i>IK</i>	191
	द्रश्य अगिया ब्रह्मन कविश्	-প্ৰ	الأنبر	70%	शित्र्थं भूति तांश विस्तानिमी	<i>K</i>	. 19

	পদ-স	ংখ্যা পদ	<b>)</b>	পৃষ্ঠা	পদ-য	বংখ্যা পদ	,	مريخ المكانية
	288	হাসিয়া নাগর চতুর-শেধর 🧳	<i>i.</i>	90		্রেদ হে নাগর চতুর-দেখর	٠.	<b>∆</b> al(
-	<b>8</b> 6¢	হাসিয়া নাগর চতুর-শেধর	 	233	२२७	रिर्प रि निलाङ वँधु	•••	710)
•	786	হাসিরা হাসিরা নাগর রসিরা	•••	96	406	**	***	19.9 ···
	<b>&gt;</b> ર હ	হাসিয়া হাসিয়া বড়াই রসিয়া		,,,		হেদে হে পরাণ-বন্ধ	•••	212
	بزويا		•••	49		क) ८२८म ८२ वॅथ्या	•••	>>e
		হা হরি হা হরি হরি হরি হরি	•••	२७७	81-8	<b>ट्टिए ट्ट म्</b> त्रनीथत	•••	233
	976	हांब्र द्व मांकृत विधि	•••	9•8	७ऽ२	হেদে হে রমণ রমণীমোহন		211
	Q8P	হিয়ার মাঝারে যতনে রাখিব		368	<b>689</b>	হেনক সময় অক্র দেখল		201-
	<b>68</b> 6	হেণা কাছ যত পার করি গোপী	•••	96	<b>6</b> 5.	হেনক সময় এক সে রজক	•••	
	679	<b>टिया द्रांधा विस्तामिनी</b>		২২৩	ete	হেনক সময় প্রভাত হইল	•••	२५३
	610	হেণা সে অক্রুর রণ সাজাইয়া			120	• • •	•••	<b>२</b> 8२
	96	হেদে গো চেতনী	•••	२७१		হেনক সময়ে এক সধী আসি	•••	976
			•••	২৩	<b>48</b> 5	হেন বেলে শিক্বা বেণু বাজাইয়া	•••	२०५
	429	হেদে গো সন্ধনি সই	•••	0.8	696	হেন বেলে প্রবেশিল পুরে	•••	225
	P18	<b>टिए (न। य</b> त्रय-भरे	•••	२৮१	<b>८२</b> ३	হেন বেলে যত রাখাল বালক	•••	<b>२</b> २ <b>&gt;</b>
	69	<b>रिए ला ऋ</b> मित्रि	•••	৩৮	>89	হেরয়ে রসিক্বর রাইক চরিত		1
	४२२	হেদে হে কমল কান	•••	२२१		W. L. L. W. W. S. A. D. M. O.	•••	>>6

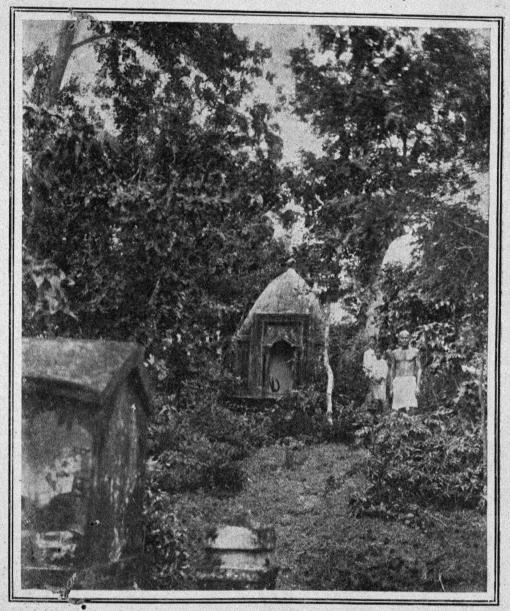




চণ্ডীদাসের ভিটা—হস্তীর পার্শ্বের স্তৃপ—নানুর।







**ठ** छीनारमञ्ज ममाधि-मन्त्रिज्ञ---नाज्ञुत ।

### ठछौनारमत्र भनावली।

### ভূমিকা।

ठिश्रीमारमञ्ज श्रमावनी श्रकानिक इहेन। व्यामारमञ वश्य विज्ञितन है शत्र दिक्षतः काहा हाका व्यामारमञ्ज आरमञ्ज ও চতুপার্যবর্তী প্রাবের সকলেই বৈঞ্ব। স্বতরাং বাল্যকাল হইতে আমি স্থাসির মনোহরসাহী কীর্ত্তন-গান্তক রসিক-দাস প্রস্কৃতির কীর্ত্তন বৎসরে অনেকবার ওনিবার স্থোগ পাইতাম। ব্রস্ক ভাষায় রচিত পদওলি ভাল বুঝিতাম না ; কিন্তু গায়কণৰ বৰ্ষন চণ্ডীদাদের পদ গাহিত, তথন আনন্দে মন বিভোর হইয়া যাইত। এইরপ বাল্যকাল হইতেই চণ্ডীদাসের প্রতি ভাষার একটা অকুরাগ ভরিয়া যায়, তাহার পর বিদ্যা-শিকার জন্ম ভাষাকে মুরশিদাবাদ 嗪 কলিকাতার অনেক দিন অতিবাহিত করিতে হর। কলেজ ত্যাগ করার পরও ছয় বংসর মুরশিদাবাদ ও কলিকাতার শিক্ষকতা করি। ১৮৯৬ সালে আমি আমার অগ্নামের সন্নিহিত কীর্ণাহার হাই স্থলের হেডমান্টার হই। কীর্ণাহারে চঙীদাদের স্থাধিত প আছে; অদ্রে নারুর চঙীদাদের বাসহান। ইহাদের প্রভাব আমার উপর আধিপতা বিভার করিল-- আমি চভীদাদের পদাবলী-দংগ্রহের সংকল করিলাম। পদকলত্র, পদামৃত-সমুদ্র খুঁজিলাম 🕫 বাহা পাইলাম, তাহাতে তৃপ্তি হইল না। মুদ্রিত সংস্করণ কয়েকখানি কিনিলাম পড়িলাম, কিন্তু মনে হইল, সংগ্রহ কারগণ ঠিক সংগ্রহ করিতে পারেন নাই; সবই বে অসংলগ্ন, ধারাবাহিকরপে ক্লঞ্চনেরিত্র-বর্ণনা কৈ ? কারি পদাবলী-সংগ্রহের চেষ্টা করিভে লাগিলাম। বিশালাকীর পূলকের পুত্র, আমার ছাত্র তীমান্ মৃত্যুগ্রর ভট্টাচার্যকে ৰিজ্ঞানা করিলান যে, তাহাদের গৃহে চওীদাসের পদের কোন পুথি আছে কি না ? মৃত্যুঞ্জর বাটা গিরা অনুস্থাদ করিয়া আমাকে রাস-সীলার একখানি পুথি আনিয়া দিল। সেই পদগুলি সম্পূর্ণ নৃতন; কখনও পুর্বের প্রকাশিত বর নাই। সেই পদওলি সাহিত্য-পরিবং-পত্রিকার প্রকাশিত হইল। অনেকটা ভরসা হইল, প্রবল উৎসাহি আৰাম অসুসন্ধান চলিতে লাগিল। এমন সময়ে কীৰ্ণাহারের স্থপ্রসিদ্ধ বিল্যোৎসাহী অমিদার প্রীমৃক্ত বাবু সোরেশ-চল সরকার মহাশল্পের সম্পূর্ণ বাবে "বীরভূমি"নারী মাসিক পঞ্জিকা প্রকাশিত হইল : আমার উপরই সম্পাদম-ভার পর্ণিত হইল। উৎসাহ বিওপ বর্দ্ধিত হইল। প্রথম সংখ্যা "বীরভূমি"তেই প্রচাব করিলাম বে, চভীলালের ্<mark>লপ্ৰকাশিতপূৰ্ব পদাৰ্থী সংগ্ৰহ করিয়া "বীরভূমি"তে প্ৰকাশ করিব।` কেন হইয়াছিল বলিতে পারি না, কিছ</mark>ু चाबाद बातवे दिवेशुक्ति—त्याब रत्र, "तामनीना" विविद्यारे सरेवादिन (य, ठ्यीवाम अक्रय-ठ्रतिक व्यवनवन कतिवाई कान कारा निषित्र नित्राह्म।

এই সময়ে স্বৰ্গীয় ইঞ্জনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় মহালয় কীৰ্ণাহাৱে গুভাগমন করেন। গুটার সহিত চভীবাসের সমাধি কৰিব। করিবার সময় বলিবান,—"আমার বিখাস, চভীবাস ক্ল-চ্ট্রির অবলঘন করিয়া কোন কাব্য লিখিয়া বিশ্বীয়া কিরিবার সময় বলিবান,—"আমার বিখাস, চভীবাস ক্ল-চ্ট্রির অবলঘন করিয়া কোন কাব্য লিখিয়া বিশ্বীয়া বিশ্বীয়া

অফুসন্ধান করিতে লাগিলান। বৈঞ্চবের আথরার আথরার বেড়াইতে লাগিলান। প্রবীণ বৈঞ্চবগণের নিকট সন্ধান লইতে ক্ষিলাম 😘 জোশ দুরে কীর্ত্তন হইলেও শুনিতে বাইভাম--ভরদা, যদি কীর্ত্তনপায়ক চণ্ডীদাদের ক্ষেত্র প্রাহে। এরপ চেষ্টার বে আৰি একেবারে বিক্লমনোরও হইয়াছি, তাবা নবে। খনেক স্থবর স্থার পর আন এইরপ অত্বদ্ধান করিয়া পাইয়াছি। তাহার পর আমার ছাত্র কীশাহারনির্কী এমানু রামেজ-कुक दांत्र व्यामादक अक्षानि व श्रीमाद्यत शनावनी शृथित महान मिन। शृथियानि कीर्याहादत निक्वेव ही काम ভদ্রলোকের গৃহে রক্ষিত ছিল। রামেজ আমাকে পুথিধানির ছই একটি পাত। আনিয়া দিল, কিন্তু সমগ্র পুথি কি ইতেই পাই না। শেবে ভনিলাম বে, বাহার পুধি, সে কীর্ণাহারের স্বামিদার প্রীযুক্ত গৌরেশচক্র সরকার মহাশ্যের জনৈক কর্মচারী · তাঁহাকে জহুরোধ করায় তিনি উক্ত কর্মচারীকে পুবিধানি বিতে জাদেশ করিবেন ; পুবি হস্তগত হইল। পুথি দেখিয়া আমি বড়ই উৎকুল হইলাম। পুথিখানিতে কেবল চণ্ডীদাসের পদ; পদসংখ্যা ৬০০ ছয় শতেরও অধিক। তাহার মধ্যে ৫০০ শত পদ নৃত্ন। দেখিয়া আরও আনন্দিত হইলাম যে, পূর্ব্ব প্রাপ্ত 'রাসলীলা''র পদওলি ইহাতে সবই আছে; তাহা ছাড়া রাস-লীলার আরও অনেক গদ আছে ৷ ধীরে ধীরে পূর্ব্বরাগের অনেক ওলি পদ 'বীরভূমি'তে প্রকাশিত হইল। চ্তীদানের পদাবলী প্রকাশিত হইতেছে দেখিয়। দাস্কল গ্রামনিবাসী প্রীমুক্ত পূর্ণচন্ত্র মুংগাপাগার মহাশর তাঁহার গৃহস্থিত পুৰি হইতে অনেক নৃতন পদ আমাকে "বীরভূমি'তে প্রকাশের बन्न দিতে লাগিলেন। তাঁহার নিকট হইতে রাসলীলার একখানি পুথিও পাওয়া গেল। এইরপে আমি রাসলীলার তিন্থানি পুৰি পাইলাম। বাহা হউক, রামেজক্ত্য-প্রদন্ত পুৰি আমার প্রধান অবলম্বন। এই পুৰি আমি রামেজ वार्, मीरमन वार्, त्यामरकन वार् ७ मात्रमा वार्रक सम्बाहेश श्रीक्षां प्रतिक स्त स्वामात्र कारक हिन, কিন্তু পাহার পুৰি, সে এমন তাগাদা আরম্ভ করিল যে, শেবে ভদ্রভার সীমাও অভিক্রেম করে দেখিয়া আমি পুৰিধানি কেরত বিলাম। রামেজ বার দেখিতে চাহিলে আর একবার চাহিয়াছিলাম; তথন লে আমাকে দশ কথা ওশাইয়া দিরাছিল। তাহা হইলেও আমি তাহার নিকট চিরকুত e থাকিব।

পুথির পরিচয়। –পূর্বেই বলিয়াছি, আমার মূল পুথিখানিতে ৫০০ শত নৃতন পদ আছে। এখন এ পদগুলি কি কি বিষয় অবলম্বন করিয়া লিখিত, তাহার পরিচয় দিব। গ্রন্থারতে আমরা দেখিতে পাই, ভগবান শ্রীকৃঞ্জ সুবল স্থার সহিত এক তক্ষাবার উপবিষ্ট। কিছুক্ষণ নীরবে থাকিয়া ঐক্কঞ স্থবলকে বলিতে লাগিলেন বে, একদিন তাঁছার প্রের গাভী ধবলী সহসা কোধার চলিয়া গেল। পদ্চিক্ত অন্তুপরণ করিয়া তিনি বুক্তামুপুরে উপস্থিত হইলেন। তথার নীল-নিচোল-পরিহিতা সর্বালভারত্বিতা এক রমণী তড়িতের ভার তাঁহার চক্ষু রলসিয়া দিল। দর্শন অব্ধি তাঁহার মন সাতিশয় উন্মন্ত হইরাছে। তাহার পুনর্দর্শন ভিন্ন তাঁহার চিভাইর হইবার উপায় নাই। স্পুবল ইক্সলাল-বিদ্যায় দিছতত ছিলেন। তিনি প্রথমতঃ নানা বৃত্তি ধারণ করিয়া শেবে শ্রীরাধিকার বৃত্তি ধারণ করিলেন। শ্রীকৃষ্ণ विभागम अवश् विभागम एक एक प्राप्त का का कि का विभाग कि का कि ধিয়া ও বম্নাতীরবর্জী চলাক-বনে অপেকা করিতে বলিয়া ক্ষবল পঞ্চ শিশু সহ বৃক্তামূপুরে উপস্থিত হইলেন। রাজা তাঁহাদের জীড়া দেখিতে ইচ্চুক হইলে, সুবল প্রভৃতি শিশুগণ মংখ, কুর্ম প্রভৃতি অবভার, মুবিলিয়াদি পাঞ্ব-বংশ দেণাইয়া শেবে কিরীট-কুওল-পরিহিত, বনমালাশোভিত, পী<mark>ভাষর, ললদ-নিশ্বিত-কলেবর ঞ্রীকুঞ্বুর্ত্তি গারণ</mark> क्रिशाना । वर्गक बात्व नक्लिरे स्थारिष्ठ रहेन । वाष्ट्रावन-शार्स बाष्ट्रा । वर्गशान-वर्ष वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा প্রীরাধিকা এতক্ষণ ক্রীড়া দেখিতেছিলেন, <u>ক্রাণ</u>পম শীক্তক্ষ র্তি-দর্শনে তিনি মুদ্ধিতা হইলেন। সংবাদ প্রাধিবাত্তই রাজা অভঃপুরে প্রবেশ করিরা ক্রার প্রায়ুণী দশা দর্শনে অতীব ব্যাকুন হইয়া অনেক চিকিৎসক আনাইলেই। কিছ কাহারও চিকিৎসার কোন ফল হইল মা। শেবে সুবল অন্তঃপুরচারিণী এক দাসীকে বলিলেম বে, ছিনি রালছ্টিকার পীড়া ভারোগ্য করিতৈ পারেন। রালাদেশে প্রণ অন্তঃপুরে এবেশ করিয়া বৃদ্ধিত। জীয়াবিকায় কর্বে

কুষ্ণনাৰ গুনাইয়া দিলেন। নাম "কাণের ভিতর দিয়া মর্মে পশিল।" রাধিকা লাগ্রত হইলেন; সুকল ব্যাধি দুরে গেল। স্বৰণ তথন রালাকে পরামল দিলেন বে, রাধিকাকে ব্যুনার সান করান হউক। শ্রিকা স্থানে চলিলেন। ব্যুনাতীরবর্তা চল্পক-কাননে রাধা ক্ষেরে প্রথম মিলন হইল। শ্রীক্ষেরে এইরপ প্রথম শ্রীকাল প্রে প্রকাশিত হয় নাই। তাহার পর শ্রীরাধিকার প্ররাধ, শ্রীক্ষেরে স্থানে বিভাগের গ্রু প্রাণিত হর্মাছে। তাহার পর অভিসার, এই পদগুলি নৃতন। তাহার পর কুঞ্জেল স্বরাধিকার প্রেমাছেন্দ। ২। দান। তাহার পাল নতন পদ নাই। ইহার পর গোঠলীলা সম্পূর্ণ নৃতন। গোঠলীলার এই করেকটি বিষয় আছে;—১। শ্রীরাধিকার প্রেমাছেন্দ। ২। দান। তালাকাগগু। ৪। বন-ভোজন। ৫। বশোদার বাংসল্য। তাহার পর রাই-রাধাল, সন্তোগ-স্থতি, বিপ্রলনা, খণ্ডিতা, মান বর্ধান্ধনে বর্ণিত হইয়াছে। এগুলির মধ্যেও অনেক নৃতন পদ আছে। তাহার পর রাস-লীলার ১০০টি পদ। পরে অকুরাগমন, যশোদা, গোপীগণ ও রাধালগণের থেদ, শ্রীক্ষেরে মথুরাগমন, রন্ধকের বন্ধহরণ, কুন্ধার সহিত মিলন, কংস-বধ, নন্ধ-বিদার প্রভৃতি বিষর অতি মধুর ভাবে বর্ণিত হইয়াছে। এই সমন্ত পদ সম্পূর্ণ নৃতন। তাহার পর মথুরার দৃতীর গমন, শ্রীক্ষেরে ব্রেছে পুনরাগমন, আত্মনিবেদন প্রভৃতি। এগুলিতেও অনেক নৃতন পদ আছে। শেবে রাগাত্মক পদ। ইহাতেও অনেক নৃতন পদ আছে। ফল কথা, আমার সংগৃহীত পদসংখ্যা মোট ৮০০। এতগুলি পদ পূর্কে কখনও প্রকাশিত হয় নাই।

#### বানান।

কেহ কেহ বলেন বে, পুৰিতে বে বানান আছে, তাহাই বজায় রাখা উচিত। তাঁহাদের বুক্তি এই বে, এইরূপ করিলে পূর্ব্দে কিরপে বানান ছিল, তাহার একটা পরিচয় পাওরা বায়। তাহা ছাড়া প্রাচীন প্রকর্ত্বগ্র অনু-সারে বানানের ভেদ করিতেন। অর্থাৎ বেধানে কোন অকরে হব ইকার আছে, সেধানে একরূপ হুর হুইবে, আর বেধানে দীর্ঘ ঈকার আছে, সেধানে অন্ত ম্বর হইবে। স্থুতরাং তাঁহাদের মতে প্রাচীন অভদ্ধ বানান ভদ্ধ করিয়া निধিলে অনেক পাপ হয়। আমি ইহাঁদের কথার দারবন্তা উপল্পি করিতে পারি নাই। আমি বানান-ভলিকে ভব করিরা লিখিয়াছি। কাজেই আমাকে একটি কৈফিয়ৎ দিতে হয়, মনে করিয়াছি। ইহাঁদের প্রথম বুক্তির উত্তরে আমার বক্তব্য এই বে, প্রাচীন কালে কিরুপ বানান ছিল, প্রাচীন পুথি দেখিয়া তাহার নির্ণয় করা ছঃসাধ্য। কোন ছুইখানি পুথির বানানের এক্য নাই। কেছ 'ঘামি' লিখিয়াছেন, কেহ বা 'মামী' লিখিয়াছেন। অর্থাৎ বাঁহারা এর্থ নকল করিয়াছেন, তাঁহারা আপন আপন ইচ্ছাত্রবায়ী বাহা ইচ্ছা, তাহাই লিখিয়াছেন। এখনও আমরা পল্লীতে দেখিতে পাই, যাঁহারা প্রাচীন ধরণে শিক্ষিত, তাঁহারা বানানের দিকে আদৌ লক্ষ্য রাথেন না। জিজাসা করিলে বলেন বে, লিখিবার সময় তাঁহারা যাহা স্থবিধাজনক বিবেচনা করেন, সেইরপ বানানই শিখিয়া থাকেন। পূর্ব্বে বাঁচারা পদাবলী নকল করিয়া পিয়াছেন, তাঁহারাও প্রাচীন ধরণে শিক্ষিত। তাঁহারা एव छोड़ाएमत वर्खमान वरमधत्रणत्वत्र नीिछ असूत्रादंदे निविद्यन, छोटाएछ त्रत्मर कतिवात्र कान कात्रव নাই। এরণ হলে আমি কোন পুৰির বানানই রাখিতে পারি নাই। কোন্ পুৰির বানান রাখিব ? সবই ৰে ভিন্ন ভিন্ন ৷ বদি সকল পুথির বাদাদের অনেকটা সমতা দেখিতে পাইভাষ, তবে না হর বৃথিতাম, পূর্বে এরপ বানানই প্রচলিত ছিল। তাহা যথন দেখিলাম মা, তথন কাহারও বানান গ্রহণ করা উচিত নহে। হাঁ, যদি চণ্ডী-দ্বানের বহত-লিখিত কোন পুথি পাইতাম, তবে সাদরে ভাষার বানান এছণ করিতাম। তাহা বধন পাই নাই, ্ৰ্টেখন আমার পভান্তর কৈ ? আর একটা কথা, আমি বৃদি পুথির বানান ব্রঞ্জায় রাখিতাম, তাহা হইলে মৃদ্রিত পুত্তক কি বিকট মুর্তিই ধারণ করিত ৷ বর্তনান কালের পাঠক পুথি খুলিয়াই বিভীবিকা দেখিতেন ও আর্থনাদ করিয়া ভাষা शुरत मिक्कि कतिएक। जाशनि वित वित वृतियार किथिएक,-"वर्षी क्याँ वृत्तारेल जामनाव", उपन जामारक

গালি দিওেন কি না ? তবেই দেখুন, বানানগুলি বর্ত্তমান কালের উপবৃক্ত করিয়া আমি খুব আপরাধ করি নাই ।

ভাষা ছাত্রি দিখুন, সাহিবরা কি করিয়াছেন। তাঁহাদের মহাকবি সেক্ষণীয়রের প্রছের যে সকল আধুনিক সংস্করণ
প্রকাশিত ইয়াছে, তাহাতে কি উক্ত কবির আমলের বানান রক্ষিত হইরাছে ? তাহা ত হয় নাই, সমভশক্ষের বানান বর্ত্তমান পাঠকের বোধগম্য করিবার জন্ম আধুনিকর প্রাপ্ত হইয়াছে। আমি বিলাতী নদীর অনুসারে
কাল করিয়াছি।

- আমার উপর আর একটা অনুযোগ এই যে, আমি স্থানে স্থানে কমা ও উদ্ধার-চিছ্ন (quotation mark) ব্যবহার করিয়াছি। আমার বক্তব্য এই যে, আজি কালিকার লোকে বে এগুলানা থাকিলে ভাষা বৃথিতে পারে না। আমি বেখানে দেখিয়াছি যে, উদ্ধার-চিছ্ন ও কমা না দিলে আর্থ বৃথিতে কট্ট হইবে, সেইখানেই তাহা দিয়াছি। ইহাতে আমার ওক্তর অপরাধ হইয়াছে বলিয়াত বোধ হয় না।

শেষ কথা এই যে, পদক র্গণ সুর-ভেদে বানান-ভেদ করিতেন। আমার জিল্ঞাস্য এই যে, কে বলিল? কোথা হইতে এই অন্ত কথা আসিল? কোন পুথিতে লেখা আছে না কি? আমাদের দেশে যত উৎকৃষ্ট কীর্ত্তন-গায়ক আছে, তত আর কোথাও নাই। সকলেরই গান শুনিয়াছি, সকলের সঞ্চেই আলাপ করিরাছি, কিন্তু এমন কথা ত শুনি নাই। বলা বাছল্য, এই আপন্তিটা বড়ই হাস্যজনক।

#### পাঠোদ্ধার।

পাঠোদ্বার বড়ই কঠিন বিষয় নানা জনে চঙীদাসের পদ নকল করিয়াছেন। দিনি বেমন ব্ৰিয়াছেন, তিনি তেমন লিখিয়াছেন। তাহা ছাড়া উাহাদের ভূল প্রান্তি ত আছেই। এইরপে "সাত নকলে আসল খাডা" হইয়া সিয়াছে। এ সব পুথির মধ্যে ঠিক পাঠোদ্বার করা বড়ই কঠিন। যে সকল হানে ছই তিনধানি পুথি পাইয়াছি, তথার পরপার মিলাইরা বেথানির পাঠ সঙ্গত বোধ হইরাছে, তাহাই গ্রহণ করিয়াছি। মুদ্রিত পুত্তক স্বদ্ধেও ঐ নীতি অবলঘন করিয়াছি। তবে ইহাতেও বে আমার প্রান্তি হর নাই, এমন কথা বলিতে পারি না। আর বেথানে একথানির অধিক পুথি পাই নাই, সেথানে পুথির পাঠ গ্রহণ করা ভিন্ন উপায়ান্তর ছিল না। মনে করুন, একটা কথা আছে, বাহার কোন অর্থ ই হয় না। পড়িতে পারিতেছি না, তাহা নহে, অক্ষর ওলি স্বস্পাই লেখা রহিয়াছে, অথচ কথাটির অর্থ হয় না। সে হলে ছই একটা অক্ষর বদল করিয়া একটা সঙ্গত কথা বসাইরা দিবার প্রলোভন খুবই হয়। কিছু আমি সে প্রলোভন ইতে আত্মরক্ষা করিতে সমর্থ হইয়াছি। বথন দেখিলাম যে, কোন একটা কথার অর্থ কিছুতেই হইতেছে না, কথাটিকে কিছুতেই চিনিতে পারিতেছি না, তখন আর আমার নিকের সম্পাদকীয় বিদ্যার পরিচর না দিয়া 'বড়ইং তিনিথিং লেখকস্য দোৰে। নান্তি' করিলায়। উত্তর্কালে যদি কথন ছিতীর পুথি পাওয়া বার, তখন কথাটা শুদ্ধ করিয়া লওয়া হাইবে, অথবা আমা অপেক্ষা বিজ্ঞতর ব্যক্তি কথাটির চিকিৎসা করিয়া তাহাকৈ কথার মত করিছে পারিবেন।। এরপ কথা আমার 'চেডীদান'' পুত্তকে বড় কম পাওয়া যাইবেন।।

#### পদ-বিচার।

একটা কথাউঠিরাছে যে, চণ্ডীদাসের তণিতা থাকিলেই যে পদটা চণ্ডীদাসের হবৈদ, ইহা বিবেচনা করা অস্তার ।
চণ্ডীদাসের একটা বিশেষত আছে, একটা 'চণ্ডীদাসত্ব' আছে; যে পদে তাহা বেণিতে পাইব না, তাহা চণ্ডীদাসের বিদিয়া কদাচ গ্রহণ করিব না। এমন লোক আনেক ছিল, বাহারা নিজের রচিত পদ চণ্ডীদাসের তণিতা দিরা চালাইরা বিরাছে। আমরা আমাদের তীক্র্ভিক্লপ করিপাথরে খনিরা দেখিব, কোন্টি আসল, কোন্ট নকল।

কথাওঁলি বিজ্ঞ সমালোচকের মত বটে, আর আমিও বে তাহা না জানিতাম, তাহা মহে। কথাওলি লে, স্ত্য, সে বিবরে মত-বৈধ থাকিতে পারে না। তথাপি আমি কটি পাথর লইয়া চঙীদাসের পদগুলি পরীক্ষা করি নাই কিবির করিবার সময় এখনও আমে নাই। এত দিন পর্যান্ত চঙীদাসের অনসংখ্যক পদই সংগৃহীত হইয়াছিল। আমি বহু চেটার ৮০০টি পদ সংগ্রহ করিরাছি। আরও বে পদ নাই, এমন বলা যায় না। আমার মূল পুবিতেই ত রাসলীলা সম্বন্ধে আটিটা পাতা নাই। ঐ আটিট পাতার সম্ভবতঃ ৪০টা পদ বাদ গিরাছে। হতরাং ইহা বলা বোধ হর অসকত হইবে না বে, চঙীদাসের আরও অনেক পদ কোথাও কোন বৈরাগীর আখড়ার বা কোন গৃহস্থের তবনে স্বত্রে বা অয়রে রক্ষিত হইতেছে। কালপ্রভাবে বোধ হয়, সেগুলি বিস্থু হইবে। তাহা ছাড়া এক বন চণ্ডীদাস ব্যতীত বিতীয় চঙীদাসের অন্তিই আম্বন্ধ শুনি বাই। অতএব এখন চণ্ডীদাসের নামের ছাপ দেখিলেই তাহা সংগ্রহ করিতে হইবে, অতটা বিচার করিয়া ত্যাগ করিবার সময় এখনও হয় নাই।

বিতীয় কথা, আমি যে একজন থব ভাল জহুৱী, এ বিখাদ আমার নাই। কৃষ্টি-পাথরে কৃদিয়া খাঁটি দোনা ধরিয়া দিব, আর মেকি বাদ দিতে পারিবই, এমন স্পর্কা রাখি না। কোন গানটি চণ্ডীদাসের, কোনটি নয়, অর্থাৎ কোন্টার ভিতর ''চণ্ডীদাসম্ব'' আছে, কোন্টার ভিতর নাই, এত বিচার করিবার শক্তি আমার নাই। আধুনিক কালের উপযুক্ত লেখা-পড়া কিছু শিখিয়াছি, কিন্তু এই বিদ্যার লোরেই অনেক স্থানেই দেখিয়াছি বে, কোম বড় কবির সকল লেখাগুলিই সমান মহে। কোন কোন বড় কবির এমন কবিতা আছে যে, তাহা নিতান্ত অসার, কোন ক্রমেই সেগুলিকে উক্ত কবির রচিত বলিয়া স্বীকার করিতে পারা যায় না। অথচ আমরা জানি যে, উক্ত অসার কবিতা উক্ত কবির রচিত। যে তাহা জানে না, সে যদি কবির কবিতা সংগ্রহের সময় তাহা বাদ দের, তবে कि (म महाभार भ लिख हहेरत ना ? हडीमार्ग मसरक्ष कि छेशरतत क्या शिल थार्ट ना ? स्थामात विश्वाम, कान कविहे नकन नमायहे छेदक्कडे कविका निश्चित्व भारतम ना। अमन रय (य, नरमा (कान जार जामिया जारात कान ভরিয়া পেল; তখন যাহা লিখিলেন, তাহা খুব উৎকৃষ্ট হইল,— ঠাহার প্রতিচার উপযুক্ত হইল। আবার এমন সময়ও আসে, যে সময়ে মহান ভাব গুলি তাঁহার জ্বর অধিকার করে না। সে সময়ে যে কবিতা লিখিবেন, তাহা कथनहै छेक मार्वत हरेरब ना। প্রত্যেক কবির কবিতা আলোচনা করিলেই ইহা যে সভ্য, তাহা স্পষ্ট উপলব্ধি হইবে। চভীদাসও এই নিয়মের বহিভূতি হইতে পারেন না; অতএব বর্তমান সময়ে অতি কৃত্র নিজি লইয়া চতীদাদের পদের ওঞ্জন করা উচিত নহে ;—অন্ততঃ আমার মত অন্তর্গ্ধিদশার লোকের উচিত নহে। আমি যদি তাহা করিতে চেষ্টা করিতাম, তাহা হইলে নিশ্চয়ই বৃদ্ধি ও বিবেচনার দোবে অনেক আসল রম্ন ছড়িয়া কেলিয়া ৰিতাম। আমি চঙীদাদের নামান্ধিত যত পৰ পাইয়াছি, বিনা বিচারে তাহা গ্রহণ করিয়া আমার ভাভার পূর্ণ करिवाहि। अथन वाशनात्वत मन करनत नमत्क ठारा (मथारेट डिक. व्याशनाता हिनिया मंडेन, द्वान्ही मनि, व्यात কোন্টা কাঁচ। আমার মত কুল বাজির এত দায়িত লইবার আবশুকতা কি ?

#### পদ-পর্যায়।

পদের শ্রেণী-বিভাগ ও ক্রমনির্দেশ করিবার সময় স্বামি একটি বিবয় ছাড়া আর সকল বিবয়েই প্রাচীন পদ-স্থায়াহকগণের পদ্বা অন্সরণ করিয়াছি। কেবল শ্রীরাধিকার পূর্বারণ স্বরোগ স্বরোগ প্রথমেই দিরাছি। কিন্তু বৈক্ষব আলভারিকগণ স্বীকার করেন স্বে যদিও শ্রীক্লফের, পূর্বারণ প্রথমে হইয়াছিল, তথাপি শ্রীরাধিকার পূর্বারণ প্রথমেই দিরবেশিত করাই নিয়ম। ইহাই বৈক্ষব অলভার লালের মত। কিন্তু আমি বে সাহস্ক্রিয়া এই শাসন-বাক্য মানি নাই, তাহার কারণ বলিতেছি। চতীদাসের সময় বৈক্ষব অলভার শাল রচিত হর

নাই। স্বত্ত্বাং চণ্ডীবানের পদ-সংগ্রহ ও ক্রমনির্জেশের সময় উক্ত শাল্প বে মানিতেই বইবে, এমন বলা বায় না।

স্ক্রেন্ত্রাক্রিক দেখিতে গেলে শ্রীক্রফের পূর্বরাগ প্রথমেই বইরাছিল। শ্রীরাধাক্তকের কথা ছাছিয়া দিয়া সাধারণ
ভাবিক বাটি বিচার করিয়া দেখা যাউক। বৈহুত্ব পদাবলী ও অপরাপর সাহিত্য পাঠ করিয়া আমার এই ধারণা
ঘূদ বইরাছে বে, আমাদের শ্রীকৃষ্ণ দরাল ঠাকুর। তিনি জীবকে আলিক্রন করিতে, কোলে টানিয়া লইতে স্নাই
ব্যাক্র। তিনি অব্রহঃ ডাকিতেছেন,—"জীব! আইস, তোমায় কোলে করি।" জীব কিন্তু এমনি মায়াবছ বে,
কিছুতেই এই ভগবদাহানে ভনিতে পাইভেছে না। কিন্তু বাহার সময় বইডেছে, সে আহ্বান ভনিতে পাইভেছে,
সে "সকল তেজিয়া একমন বইয়া নিশ্চয়" দাসী বইতেছে। যাহার সময় বইয়াছে, যাহার হৃদয় ভগবংপ্রেম
আমাদন করিবার উপযুক্ত বইয়াছে, ভগবান্ তাহার কল্প বড়ই ব্যাকুল হইয়া তাহাকে টানিয়া ক্রোড়ে লইতেছেন,
ভাই তিনি শ্রীরাধিকাকে বলিয়াছিলেন;—

রাই, ভোষার মহিলা বড়ি। গোলোক তাজিয়া রহিজে নারিস্থ জাইল তথার ছাড়ি॥

রসতবর্থানি পান অবতারে

বৃঝিতে নারিয়াছি।

ভাহার কারণে নব্দের ভবনে

क्रम गहेशाहि।--११> शक

আবার ;—

রাই, ভূষি বে আমার পর্তি।
তোমার কারণে রসতত্ব লাগি
গোকুলে আমার দ্বিতি॥
নিশি দিশি বসি গীত আলাপনে
যুরলী লইয়া করে।

ৰুগণ। গ্ৰহ্মা করে। যমুনা-সিনানে তে

বসে থাকি তার তীরে :—ইত্যাদি ৭৫০ পদ

ভোষার কারণে

স্থান সাধারণ জীব সহক্ষে ভগবানের বেরপ ব্যবহার, শ্রীরাধিকার সহক্ষে তাহার ব্যতিক্রম হটে নাই। কেন না, তাঁহারা লোক-শিক্ষার জন্ত, জগতে প্রেমতত্ব প্রচারের জন্ত বুজাবনে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন। এই জন্ত আমি শ্রীক্লফের পূর্বরাগ প্রথমেই দিয়াছি। বাহা প্রকৃত ও স্বাভাবিক, তাহাই করিয়াছি বাত্র। তাহার পর বেরপে রসপুষ্ট হর, সেইরপ বার্গে বাইতে বাইতে "বহারাদে" বুজাবন-সীনা শেব করিয়াছি।

## क्वित्र कीवनी।

বর্ত্তবাদ কালের স্বালোচকগণের মত এই বে, কবির জীবনী ও তৎসাময়িক অবস্থা না জানিতে পারিলে কবিকে ঠিক বুঝা বার না। কবির জীবন বেরণে অতিবাৃহিত হর, তাঁহার সমরে স্বাজের বাহা অবহা, তাহা তাঁহার কবিকে প্রভাব বিভার করিবেই। স্ত্তরাং কবির ক্বিতা বৃদ্ধিতে গেলে এ সব জানা অতীব আবস্তুক। আদি ক্দি এ কথা দা বার্দি, তবে আপনারা দশ জনে আবাকে বোরতর মুর্থ বলিবেদ, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। এর্লপ একটা লোজনীয় খ্যাতি লাভ করিবার ইচ্ছা আবার না থাকিলেও আমাকে অগতা। খীকার করিতে ছইতেছে বে, চঙীগাসের প্রকৃত জীবনী বা তৎসাব্যিক অবহা জানিবার কোন উপার নাই। চঙীগাস ঠিক কোন্ স্বয়ে জীৱিত ছিলেন্, বলিতে পারি না। তাহা ছাড়া ভিনি বে স্মরে জারিয়াছিলেন বলিরা আবরা অসুমান করি, সে স্মরের স্ট্রেন্টিইতিহাস নাই। স্কুতরাং তবনকার সাবাজিক অবহা প্রভৃতি স্বদ্ধে আমরা সম্পূর্ণ জ্ঞা। অতএব আবাজিগকে ও সব আবার জলাঞ্জলি দিতে হইবে। তবে একটি জীবনী না দিলে কেহ ছাড়িবেন না; হয় ত বলিবেন, ভূমিকাই হয় নাই। কাজেই কিংবলজী হইতে বেমন তেমন করিয়া একটা জীবনী থাড়া করিয়া দিতেই হইবে। তবে পঞ্চম ভাগ ভূতীয় সংখ্যা সাহিত্য-পরিবং-পত্রিকায় বে কর্মটি কবিতা প্রকাশিত হইরাছে, তাহা হইতে চঙীদাসের জীবনের একটা ভটনা পাঙ্যা বার বার নাত্র।

## জীবিতাবস্থার সময়।

দীনেশ বাবু বলেন,—চণ্ডীদাস খুইার চতুর্দশ শতান্দীর শেষতাগ হইতে পঞ্চদশ শতান্দীর মধ্যতাগ পর্যন্ত নীবিত ছিলেন। শিবরতন বাবু তাঁহার "বলীর সাহিত্য-সেবকে" লিখিরাছেন বে, চণ্ডীদাস অঞ্মান ১০০৫ শক বা ১০৮০ খুটাব্দে জন্ম গ্রহণ করেন। তাঁহার পিতা ভবানীচরণ, মাতা তৈরবী সুন্দরী; জাতি ব্রাহ্মণ। ১২৮০ সালের ১০ই পৌষ তারিখের "সোমপ্রকাশে" একজন লিখিয়াছিলেন বে, চণ্ডীদাস ১০০৯ শকে জন্মগ্রহণ করিয়া ১০৯৯ শকে পরলোকে গমন করেন। ইহাঁর পিভার নাম হুর্গদাস বাগ্তি; ইহাঁরা বারেক্তপ্রেণীর ব্রাহ্মণ ইত্যাদি। আবার কেছ কেছ বলেন বে, সপ্তম বর্ধ বিক্তপ্রিয়া পত্রিকার চণ্ডীদাসের খানিকটা পদ প্রকাশিত হইয়াছিল। সোট এই;—

বিধুর নিকটে বলি নেত্র পঞ্চ বাণ। নবহু নবহু রদ গীত পরিমাণ॥ পরিয়ে সকেঁতে অকেঁ নিয়া। আদি বিধেয় রদ চণ্ডীদাস কিয়া।

আমার মনে হইতেছে, ইহা "চণ্ডে কেপার" লেখা নয়, তবে চঞীদাস পুনর্জয় গ্রহণ করিয়া বদি বিতীয় ৩৩ছয়রপে লম্মগ্রহণ করিয়া থাকেন, (মহাপুক্বদিগের লীলা কিছুই বুঝা বায় না), তবে এ পদ তাঁহার হইতে পারে।
এ হেঁয়ালীর অর্থ করিছে আমাকে কিছুই কট পাইতে হইবে না; অনেকে দয়া করিয়া আমাকে সে কঠিন দায়
হইতে মুক্ত করিয়াছেন। তাঁহারা বলেন—বেশ গঞ্জীয়ভাবে বলেন বে, অর্থাৎ চঞীদাস ১০৫৫ শকে
(১৪৩০ ব্রিঃ) তাঁহার পদাবলী সমাধা করেন। এই পদাবলীর সমাট ১৯৬ মাত্র। আরু একটা কথা আছে।
পদক্রতরতে একটা পদ আছে। সোট এই;—

চণীদাস খনি বিদ্যাপতি-খণ দর্শনে ভেল অন্তরাগ । বিদ্যাপতি ভব চণীদাস-খণ দর্শনে ভেল অন্তরাগ । ভূঁত্ উৎকৃষ্টিত ভেল । সৃক্তি রূপ- নারার্শ কেবৃল বিদ্যাপতি চলি পেল ।

हशीनांत्र छन् अदहे भी शांत्रहे

हम्म प्रमंग गानि ।-- देखानि ।

তাহার পর আরও তুই একটা পদে বর্ণিত হইয়াছে বে, গলাতীরে উভয়ের সাক্ষাৎ হইল, কভ কথা হইল ইত্যাদি। ইহা হইতে বুঝা যায় যে, চতীদান বিদ্যাপতির সমনাময়িক। কোন কোন সমালোচক বছ গবেষণা প্রিন্ধির করিয়াছেন, বিদ্যাপতির জন্ম হয় ২৪১ লক্ষণ সংবতে অর্থাং ১২৭২ শকাকার। দীনেশ বাবু জহুমান করেন বে, প্রীষ্ঠীর চতুর্দশ শতাকীর শেষভাগে বিদ্যাপতি জন্মগ্রহণ করেন এবং সম্ভবতঃ পঞ্চলশ শতাকীর শেষভাগে উাহার জীবন শেষ হয়, এ পর্যায় বলা যাইতে পারে।

এখন দেখা ঘাউক, এই সব উজি গুলি কতটা ঠিক। প্রথম "সোমপ্রকাশে"র লেখক দৈববাণীর ভার একটা কথা বলিয়া দিলা নীরব হইয়াছেন। কোন প্রমাণ দিবার কল্লনাও মনে স্থান দেন নাই। সুতরাং তাঁহার কথার বিচার অনাবশ্যক। দিতীয়, বিফুপ্রিয়া পত্তিকার হেঁরালী—এ কবিতা পাঠ করিতে আমার আতকে শরীর শিংরিয়া উঠিতেছে। আমি ত চণ্ডীদাসের অনেক পুথি দেখিয়াছি, কিন্তু কোনটতেই ত ঐ ভীষণ কবিতাংশ পাই নাই। ইহা চণ্ডীদাসের লেখা বলিয়া আমার মনে হয় না। তবে চণ্ডীদাসের কবিতার ন্যায় ঐ কয় পংক্তির একটি ক্ষমতা আছে বটে, ইহা "কানের ভিতর দিয়া মরমে পশে"—কিন্তু শেলের ক্রায়। ততীয়, দীনেশ বাবু ও শিবরতন বাবু বোধ হয়, পদকল্পতক্রর কবিতার উপর নির্ভর করিয়া চণ্ডীদাসকে বিদ্যাপতির সম্পাম্য্রিক ধরিয়া লইয়াছেন। স্বত্যা তাঁহারা মীমাংসা করিয়াছেন যে, বিদ্যাপতি গ্রীষ্টার চতুর্দশ শতাব্দীতে জনাগ্রহণ করেন ও পঞ্চদশ শতাকীর মধাভাগ পর্যান্ত জীবিত ছিলেন। পদকল্লতকর কবিতার প্রতি আমার সম্বেহ নাই। খামকা বে করেকটা কবিতা বুচিত হইয়া গেল, পদকল্পত্র সংগ্রাহকের লায় ধার্শ্বিক লোকও তাহাদিগকে নিজ সংগ্রহে বিনা বিচারে স্থান দিলেন, ইহা আমি মনে করিতে পারি না। তবে একটা কথা শামি বুঝিতে পারিতেছি না। পদক্রতক্ষর কবিতাঙলি হুইতে বঝা বায় যে, বিদ্যাপতি ও চণ্ডীদাসের সাক্ষাৎ হইরাছিল। মানিলাম--হইরাছিল: কিন্তু মিলনটা হইল কোধার ? না, গলাতীরে। আচহা, চণ্ডীদাস নারুরে ছিলেন, নারুর গলাতীর হইতে আট ক্রোশ পশ্চিমে। বিশ্বাপতি মিধিলা হইতে চণ্ডীদাসের সহিত সাকাৎ করিতে আসিতেছিলেন। তাহা হইলে তিনি নারুরের পশ্চিম দিক হইতে আসিবেন। পলাতীরে যদি উভয়ের মিলন হয়, তবে চণ্ডীদাস নায়ুর হইতে নিশ্চয়ই পুর্বাভিমুধে যাইতেছিলেন। পশ্চিম দিক হইতে বিদ্যাপতি चাসিতেছেন, আর চণ্ডীদাস তাঁহার সঙ্গে দেখা করিতে পুর্বাভিমুখে রান্তা ধরিলেন—এটা কেমন কথা হইল ? विमानिक यनि ननात भूक्षाकन वहेटल ना चारनन, जर्द छ श्रीनारमत भूक्षा छ बुद्ध वा वा वह वा ना। छ श्रीनाम পাণৰ ছিলেন বলিয়া যে তাঁহার ''উত্তর-পূর্বে জ্ঞান'' ছিল না, ইহা ত মনে হয় না। বাহা হউক, গলাতীরে ' মিলনের কথাটা ভুল ধরিয়া লইলেও এটা স্বীকার করিতে পারা যার যে, চণ্ডীদাস ও বিদ্যাপতির সাক্ষাৎ হইরাছিল ও তাঁহারা সমসাময়িক। স্মৃতরাং সকলেই যথন বলিতেছেন যে, চণ্ডীদাস এটীয় চতুর্দশ শতাব্দীর শেব হইতে পঞ্চলৰ শতাকীর মধ্যভাগ পর্যন্ত জীবিত ছিলেন, তথন আমার তাহা মানিয়া লওয়া ভিন্ন পতান্তর নাই। শার ক্লেছ পৰি Carlyle ব্লিয়াছেন,—"In the multitude of councellors there is wisdom"; সুভরাং আর कान कथा नाहै।

চণ্ডীদাস যে শ্রীচৈতক্ত মহাপ্রভুর পূর্বের লোক. তাহার অকাট্য প্রমাণ আছে। চৈতন্যানের বে চণ্ডীদাসের পান গাইতেন, তাহা অনেক বৈষ্ণৰ গ্রন্থে আছে। চৈতক্ত-চরিতামৃত গ্রন্থে আছে;—

চণ্ডীদাস বিদ্যাপতি রারের নাটক গীতি কর্ণামৃত শ্রীগীতগোবিন্দ। স্বরূপ রামানন্দ সনে মহাপ্রভূ রাত্তি দিনে গায় শুনে পরম আনন্দ। ্ৰৈতক্তদেৰ ১৪৮৫ এটাব্দে জন্মগ্ৰহণ করেন। স্থতরাং তৎপূর্ব্ধে যে চণ্ডীদাস প্রাত্ত্তি হইয়াছিলেন, তাহাতে '
শার সব্দেহ নাই।

তীবৃত্ত ব্রদ্ধনর সাজাল মহাশ্য তাঁহার "চণীদাস-চরিতে" এক হানে লিখিয়াছেন,—"আমি ১০৭০ শ্রেন্তি লিখিত একথানি প্রাচীন পুত্তক সংগ্রহ করিয়াছি। তাহাতে এক হানে পাওয়া যায়, ভবানীচরণ নামক এক আহণের উরসে ভৈরবী নামী এক কামিনীর গর্ভে চণীদাগের জন্ম হয়।" শুদ্ধ ইহাই নহে, তাহার বীরভ্নের নামক এক আহণের পুৰির এই কথা সমর্থন করিয়া তাহাকে তৃপ্ত করিয়াছেন। কিন্তু আমরা ত নালুরের নিকটে আজন বাস করিয়া জ্যাসিতেছি, নালুরের অনেক ভল্তলোকের নিকট বহুদিন পরিচিত আছি, কিন্তু চণীদাসের মাতা পিতার সন্ধান ত কোন প্রকারেই করিতে পারি নাই। স্তরাং ব্রজক্ষর বাবুর কথাটা সত্য বলিয়া গ্রহণ করিতে পারিতেছি না। আর ও কথা জানিয়াও বিশেষ লাভ নাই। চণীদাগের কুল-পরিচয় জানিতে বর্ত্তনান কালের কল্যানায়গ্রশু কোন লোক বোধ হয়, বিশেষ উৎস্ক হইবেন না। তবে ইহা নিশ্চিত যে, চণীদাস ব্রাদ্ধণ ছিলেন, ইহা তাহার পদের ভণিতা হইতেই বুঝা যায়। "বড় চণ্ডীদাস", "বিজ চণ্ডীদাস" ইত্যাদি তাহার পদাবলীতে পুনঃ পুনঃ পাওয়া যায়।

#### জনাস্থান |

দীনেশ বাবু তাঁহার নবপ্রকাশিত "Bengali Language and Literature" পুস্তকে লিখিয়াছেন যে, চণ্ডীদাসের জন্মন্থান নান্ন,রের নিকটবর্তী ছাতনা প্রামে ছিল। এই কথাট সাহস করিয়া তিনি যে কেন লিখিলেন, তাহা আমি বলিতে পারি না। বখন দীনেশ বাবু উক্ত পুস্তকের পাঞ্ছিলিপির ঐ অংশ আমাকে পড়িয়া তানান, তখন আমি তাঁহাকে বলিয়াছিলাম যে, ছাতনা নামক কোন প্রাম নান্নরের নিকট নাই। তবে বাঁকুছা জেলায় এক ছাতনা আছে বটে। বোধ হয়, দীনেশ বাবু এই অম সংশোধন করিতে ভুলিয়া পিয়াছেন। ছাত্না প্রামে বিশালাকী নামী এক দেবীও আছেন। কিন্তু তাহা বলিয়া ছাত্না প্রামে বে চণ্ডীদাসের জন্ম হইয়াছিল, এমন কোন প্রমাণ নাই। পক্ষান্তরে চণ্ডীদাস বে নানুর প্রামে বাস করিতেন, তাহার ভূরি ভূরি প্রমাণ রহিয়াছে। ১৯০৯ সালের প্রাবণ মাসের "বীরভূমি" পত্রিকায় আমি লিখিয়াছিলাম যে, চণ্ডীদাস মজঃফরপুর জেলার উত্তৈট্ প্রামে জনিয়াছিলেন। আমি যেমন শুনীছলান, সুখী জনের বিচারার্থ তাহাই লিখিয়াছিলাম। তাহার পর বিখ্যাত "বিখকোম"-প্রবর্তক ৮ রঙ্গলাল বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়ের সহিত চণ্ডীদাসের জনস্থান সম্বন্ধে আমার জনেক আলোচনা হয়। তাহার প্র বাবানী, তাহার বিশেষ কোন প্রমাণও পাই নাই। স্বতরাং অন্ত প্রমাণাভাবে নানু বই যে চণ্ডীদাসের জন্মন্থান ছিল, ইবা খীকার করিতেই হইবে।

## চণ্ডীদাসের সম্বন্ধে কিম্বদন্তী।

নারুর অংগলে চণ্ডীদাস সম্বন্ধে এইরপ কিংবদন্তী শুনিতে পাওয়া যায়;—চণ্ডীদাস ব্রাহ্মণ, নারুরে বাস করিতেন। তাঁহার পিতা বা তিনি যে বিশালাফীর 'পূজক' ছিলেন, এ কথা কেহ বলে না। তবে যেমন তারাগ্রেরের বামা কেপা তারা মায়ের মন্তিরের নিকটে শ্রশানে থা ফুটীরে বসিয়া তারা তারা ডাকিতেন, 'চণ্ডে কেপাও' তেমনি বিশালাফীর মন্তিরেই হউক বা, নিক্টবতী কুটীরেই, হউক, থাকিয়া বিশালাফীর আরাশনা করিতেন। স্তরাং চণ্ডাদাস যে গোরতর বামাচারী ভাষিক ছিলেন, তথিবয়ে সন্দেহ নাই। একদিন চণ্ডীলাস নবীতে মান করিতে সিয়াছিলেন। লেখেন, স্রোতে একটি উত্তম পশ্ব ভাসিয়া ষাইতেছে। চণ্ডীলাস পুনুটি ধরিলেন এবং ভাবিলেন, ইহা বিশালাক্ষার পাদপশ্বে অর্পণ করিবেন। স্থানাস্তে গৃহে ফিরিয়া যথন ভিনি ভজি-ভর্তির মারের চরণে ঐ পশ্ব অর্পণ করিতে যান, তথন বিশালাক্ষী সাক্ষাৎ হইয়া (হিন্দু আমরা, এ কথার ধুব বিশাস করি) বলিলেন যে, "এ কাজ করিও না; ঐ পশ্বে আমার গুরুর পূলা হইয়াছে, উহা আমার চরণে দেওয়া হইতে পারে না।" চণ্ডীলাস জিঞাসিলেন,—"মা! তোর আবার গুরু আছে নাকি?" বাগুলী দেবী উত্তর করিলেন,—"শ্রীকৃষ্ণ আমার গুরু।" বিশ্বিত চণ্ডীদাস বলিয়া উঠিলেন,—"তবে আমি তোর আরাধনা করিব কেন? তোর গুরুর আরাধনা করিব।" দেবী সম্ভই হইয়া চণ্ডীদাসকে কৃষ্ণ উপাসনা করিতে আদেশ দিলেন এবং পরকীয়া-ভজন সাধন করিতে বলিলেন। চণ্ডীলাস পরকীয়া নায়্বিকার উদ্দেশ্বে বাহির হইলেন। দেখিলেন, নলীতে এক রন্ধকিনী কাপড় কাচিতেছে। চণ্ডীদাস প্রত্যহ ছিপ্ লইয়া তথায় মৎস্য ধরিতে যাইতে লাগিলেন। ক্রমে রন্ধকিনীর সহিত্ব ভারর প্রথম হইল। ভারার ভলন-সাধন আরম্ভ হইল।

রামীর বাড়ী যে 'তেহাই' গ্রামে ছিল বা রজ্জিনী যে বিশালাকীর গৃহ মার্জনা করিত, এ কথা ত আমরা ।
তিনি নাই। নার রে এখনও লোকে রামীর ভিটা দেখাইয়া থাকে, ইহাতে বোধ হয়, রামীর বাড়ী নার রেই ছিল।
আর বিশালাকীর পুরোহিত বা পূলক যে এত জাতি থাকিতে স্থপবিত্র রক্তকুল হইতে বিশালাকীর গৃহমার্জনের
জন্ম একজন পরিচারিকা নির্বাচন করিবেন, ইহা আমরা অনুমান করিতে পারি না। থোপার জল যে অপ্রাচ,
দেবতার গৃহমার্জনের জন্য যে থোপানী নিযুক্ত হইতে পারে না, ইহা যে এ কালের লোককে বুঝাইতে হইতেছে.
ইহা অপেকা হুংথের বিষয় আর কি হইতে পারে ?

চণ্ডীদাস ধোপানীর প্রেমে মজিল, উত্তম (ব্রাহ্মণ) কুলে জন্মগ্রহণ করিয়া নীচ সহ সহবাস করিতে লাগিল, ইহাতে প্রামের ব্রাহ্মণপণ বিরক্ত হইলেন। তাঁহারা চণ্ডীদাসের সহিত ক্যরহার বন্ধ করিলেন, তাঁহাকে পতিত করিলেন। চণ্ডীদাসের কিন্তু ক্রক্ষেপ নাই। তিনি "সকল তেজিয়া একমন হইয়।" রক্ষকিনীর সহিত প্রেম করিতে লাগিলেন। জ্বনে তাঁহার আত্মীয়বর্গ তাঁহাকে লাতিতে উঠাইবার উদ্যোগ করিতে লাগিলেন। তাঁহারা চণ্ডীদাসকে ব্রাইলেন যে, রক্ষকিনীকে ত্যাগ করিতে হইবে। ব্রাহ্মণগণকে বলিলেন যে, চণ্ডীদাস রক্ষকিনীকে ত্যাগ করিবে, তাহাকে লাতিতে উঠাইয়া লও। চণ্ডীদাস সম্বত, ব্রাহ্মণগণও সম্রত। ব্রাহ্মণগণ চণ্ডীদাসের গৃহে ভোলনে বসিয়াছেন, চণ্ডীদাস পরিবেশন করিতেছেন, এমন সময়ে কোথা হইতে রক্ষকিনী রাষী উন্মন্তার ক্যায় আসিয়া বলিল,—"কি রে চণ্ডে, তুই নাকি আমাকে ছাড়িয়া জেতে উঠ ছিস ?" চণ্ডীদাস বিহলে—নিশ্চল প্রস্তর্মার্ত্তিব তাতের থালা হাতে করিয়া দাড়াইলেন। সবিম্বন্ধ ব্রাহ্মণগণ দেখিলেন, তিনি আর ছই হন্ত বাহির করিয়া রহ্মকিনীকে আলিলন করিলেন। তথন তাঁহারা বৃক্ষিলেন, চণ্ডীদাস সামান্য মহায় নহেন। তাঁহারা তাঁহাকে পড়িত করিবার কথা আর হ্বাহ্মণগ বাহ তালেন নাই। সাহিত্য-পরিষৎ-পত্রিকার ওয় ভাগ, ৫ম সংখ্যায় নগেন্ত বাবু চণ্ডীদাস সম্বন্ধ বে কয়টি করিতা প্রকাশ করিয়াছেন, তাহার বর্ণিত বিষ্বের সহিত উপরিউক্ত গল্পের বিল আছে। তবে উক্ত কবিতাগুলিতে এইটুকু বেণী আছে যে, চণ্ডীদাসের নকুল নামে এক ভ্রাতা ছিল।

#### মৃত্যু।

চঙীদাস নামুরের দেড় জোশ উত্তরে কীর্ণাহার প্রামে কীর্ত্তন করিতে বান। রামীও সঙ্গে যার। কোন দেব-মন্দিরে কীর্ত্তন করিতেছেন, এমন সময়ে কোন কারণে বন্দির তালিয়া পড়ে। চঙীদাস ও রামী উভয়েই '

<sup>\*</sup> নালুরের নিষ্টে এখন নদী দেখিতে পাওলা বাল না।

জ্পরাধর লোকসহ চাপা পড়িয়া মারা যান। জাজিও লোকে সমন্ত্রমে সেই প্রকাপ্ত ভূপকে চণ্ডীলাসের সমাধি বিলিয়া নির্দেশ করে। জুপের নিরে রমণলাস বাবাজীর আশ্রম। তুপপাত্রে একটি ক্ষুদ্র মজির। তাঁহার জিড়ুন্তু একটি ক্ষুদ্র বেজিকা, নামাবলী-আজ্বাদিত। জুপে প্রাপ্ত একটি ত্রিশুল মন্দিরমধ্যে রক্ষিত। বাবাজী ঐ মন্দিরে নিতা চণ্ডীলাসের পূজা করেন। জুপের উপর শিরীব প্রভৃতি নানাশ্রেণীর রক্ষ জ্বিয়াছে। তথায় খুঁজিতে খুঁজিতে আমরা একধান ধ্ব বঢ় ইউক পাইয়াছিলাম। ইটধানি এখনকার ইটের মত উঁচুনয়, তবে ধ্ব ল্লা-চঙ্ডা। এত বড় ইট এখন দেখা যায় না।

চৌদ্দ ৰংগর কাল কীর্ণাহার স্থল-গৃহে বিদিয়া সোৎস্থকনেত্রে এই স্তৃপ দেখিয়াছি। কড বাসনা-কেমন করিয়া চণ্ডাদাদের পদাবলীর উদ্ধার হইবে, কেমন করিয়া স্থৃতিরক্ষা হইবে-এথানে মার্কেল পাধরে "চণ্ডাদাদের সমাধি" বলিয়া শিখিয়া দিলে হয় না ? প্রতি বংসর এখানে চণ্ডীদাসের সম্মানের জক্ত একটা মেলা করিলে হয় না ? এই মেলায় কীর্ত্তনীয়ারা চণ্ডীদালের পদ গাহিবে, বঙ্গের সাহিত্যিকগণ এইথানে একতা হইয়া চণ্ডীদালের গুণ গাহিবেন – কবি চরণে ভক্তি-পুপাঞ্জলি দিবেন—কত আনন্দ হইবে। কিন্তু 'উথায় হুদি লীয়ন্তে দরিদ্রাণাং মনো-রধাঃ।" স্বাস্থ্যভঙ্গ হওরার আমার অত স্নেহের কীর্ণাহার ত্যাগ করিয়া রামপুরহাটে আসিলাম; কিছ চণ্ডীদাসকে ভূলিতে পারিলাম না। রামেজ বাবু চঙীদাদের পদাবলী ছাপাইবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন। এ দিকে স্কবি শ্রীযুক্ত বরদাচরণ যিত্র এম্ এ মহোদয় বীর্ভুমের জল ও অধুনা পরলোকগত রায় অমৃতলাল মুণোপাধ্যায় বীর্ভুমের ম্যালিট্টেট হইরা আসিলেন। বেন মণিকাঞ্চনের যোগ হইল। কবি বরদাচরণ কি কবির সম্মান না করিয়া থাকিতে পারেন ? তিনি একবার কেন্দুলী ও নারুরে তীর্থাতা করিলেন। কীর্ণাহারে চণ্ডীদাদের স্থাধি দেখিলেন। আসিয়াই স্থির করিলেন, বেমন করিয়াই হউক, জয়দেব ও চণ্ডীদাসের স্থৃতিরকা করিতে হইবে। মাাজিট্রেট্ অমৃতলাল দোৎসাহে তাঁহার সহিত যোগ দিলেন। এক কমিটা গঠিত হইল। বরদা বাবু বলিলেন,—লক্ষ টাকা সংগ্রহ করিতে হইবে। ম্যালিট্রেটের চেষ্টায় সাঁকুলীপুর থানার নাম ঘুচিয়া "নামুর থানা" নাম হইল। কিছ আমাদের তুর্ভাগ্যবশতঃ আর কিছু হইল না। মিত্র মহাশয় হুগলীতে স্থানান্তরিত হইলেন, আর বলিতে বিষম কট্ট हहेरिछाइ, मूर्याभाषाय महामग्न वीत्रज्ञवांभीरक काँचाहेग्रा मञ्जीक वर्गात्त्राहन कतिरान । मर व्यामा राज-व्याद्व किছ इहेन ना।

চণীদাদের মৃত্যু সম্বন্ধে আর একটি গল্প প্রচলিত আছে। বিশালাক্ষীর বর্তমান মন্দিরের দক্ষিণে বে প্রাক্ত ন্তুপ আছে, তাহাই বিশালাক্ষীর প্রাচীন মন্দির। কোন কারণে মন্দির পতিত হওয়ায় দেবীসহ চণ্ডীদাস সমাহিত হল। বহু দিন পর্যান্ত দেবী এই অবস্থার থাকেন। পরে নাল্লুর গ্রামের একজন তিলি অপ খনন করিয়া দেবীকে উদ্ধার করে। সেই তিলির বংশধরগণ আজিও বর্জমান জেলার অন্তর্গত কেতুগ্রামে বাস করিতেছে। বাওলী দেবীকে উদ্ধার করিয়াছিল বলিয়া আজি পর্যান্তও শারদীয়া নবনী পৃশার দিন তাহাদের প্রদন্ত ছাগ দেবীর সম্বন্ধ প্রথমেই বলি হয়।

## কীর্ত্তন।

এখন কথা ছইতেছে, চণ্ডীদাদের এই গীতগুলি কোনু সুরে গীত হইত ? আমাদের দেশে তিন রক্ম কীর্ত্তনের সূত্র প্রচলিত আছে; — ১। মনোহরসাহী, ২। গরাণহাটী, ° ৩। রেণেড়ি। মনোহরসাহী বর্জমানাধি-পৃতির অমিদারীর অন্তর্গত বিস্তৃত প্রগণা। ইহা বীরভূমের কিম্বদংশে ও বর্জমান, জেলার অবস্থিত। এই মনোহর-সাহী পারগণাতেই বে সুরের সৃষ্টি হইল, তাহাকেই মনোহরসাহী কীর্ত্তন বলে। তুলুস্কানে জানিয়াছি বে, বর্জমানের বিশ্বতা এই মুর্বিদাবাদ জেলার অন্তর্গত টেমাগোহে ইহার কিছু উন্নতি হয়।

কিন্তু বর্জমান জেলার কান্দরা গ্রামে ইহার পরিপুষ্টি ও চরম উৎকর্ষ সাধিত হয়। কান্দরাও পাঁচপুপীর কয়েক জন ্প্রতিভাশানী গায়ক ইহার অনেক উন্নতি করেন। এখন বৈঞ্চব পদাবলী মাত্রেই মনোহরসাহী স্থরে গীত হইরা পিটকে। গরাণ-হাটী উত্তরবঙ্গে ও রেণেড়ি উড়িয়া অঞ্চলে প্রচলিত আছে।

এই তিন প্রকার স্থরই চণ্ডীদাদের, এমন কি, চৈতল্যদেবেরও পরে স্ট হয়। স্থতরাং চণ্ডীদাস কি স্থরে নিজের পদ গাহিতেন, তাহা স্থানিবার উপার নাই।

#### চণ্ডীদাসের সময়ে বাঙ্গালা ভাষা।

দীনেশ বাবুর মতে খনার ও ডাকের বচন, মাণিকচাঁদের গান ও রমাই পণ্ডিতের শৃত্যপুরাণ, চণ্ডীদাসের সময়ের পূর্বের বিচত হইয়ছিল। খনার বচন লোকয়্থে বছল প্রচার হওয়ায় অনেকটা আধুনিক ভাব ধারণ করিয়ছে বটে, কিন্তু অপর ওলির ভাষা চণ্ডীদাসের ভাষা হইতে অনেকটা পৃথক। চণ্ডীদাসের ভাষা অনেকটা আধুনিক ভাষার ভায়। কেহ কেহ অনুমান করেন যে, চণ্ডীদাসের কবিতা ওলি লোকয়ুথে বছল পরিমাণে গীত হওয়ায় আধুনিকত প্রাপ্ত হইয় ছাছে, এ কথাটা আংশিক সভ্য হইলেও সম্পূর্ণ সভ্য নহে। চণ্ডীদাসের যে সকল পদ সচরাচর গীত হইয় থাকে, ভাহাদের কিছু কিছু পরিবর্ত্তন হওয়া খ্বই সন্তব। তবে যে সকল পদ এতদিন অনাবিক্ত ছিল, সেগুলি গীত হইতে কথনও কেহ শুনিয়াছেন কি? সেগুলি ত অবিকৃত রহিয়াছে, স্বীকার করিতেই হইবে। রাসনীলার কোন কোন পদের ভাষার চমৎকারিত্বে আধুনিক কবিগণকেও বিশ্বিত হইতে হইবে। স্বতরাং মানিয়া লইতে হইবে বে, চণ্ডীদাসের পদের ভাষা এখন যাহা দেখিতেছি. চণ্ডীদাসের আমনে প্রায় ভাহাই ছিল। তাহা হইলে সিরান্ত এই দাঁড়ায় যে, আমরা ইংরাজি শিক্ষার যত অভিমানই করি না কেন, কবিভা-রচনায় আমরা কিছুমাত্র অগ্রসর হইতে পারি নাই। ভাষার মাধুর্যে, শক্ষ-যোজনার পারিপাট্যে, ভাবের গণ্ডীরভায় পরবর্তী কোন কবিই চণ্ডীদাসের নিকটবর্তী হইতে পারিয়াছেন, ইহা আমার মনে হয় না।

## চণ্ডীদাসের শিকা।

কেহ কেহ বলিয়াছেন যে, চণ্ডীদাস লেখাপড়া জানিতেন না। এত বড় একটা কথা না বুৰিব্না বলা ভাল হন্ন নাই। কথাটা যে সভ্য নার, ইহা আমাকে প্রমাণ করিতে বড় কঠ পাইতে হইবে না। বিনিই চণ্ডীদাদের কবিতা একটু মনোযোগের সহিত পাঠ করিবেন, তিনিই বুঝিতে পারিবেন বে, যদি চণ্ডীদাদের সংস্কৃত ভাষায় অবিকার না থাকিত, তাহা হইলে কি ভিনি অমন স্ক্রুম্ব সংস্কৃত কথা অত হিছ করিয়া ব্যবহার করিতে সমর্থ হইভেন ? সংস্কৃত জান না থাকিলে কি ভিনি প্রস্কার গোবংশ-হরণ, রাসলীলা প্রভৃতি ভাগুবভ-বণিত বিষয় অমন স্ক্রুম্বভাবে গাহিতে পারিভেন ? তবে ভাগবতের উপাধ্যান তিনি কোথাও বাড়াইরাছেন, কোণাও ক্রাইরাছেন, কোণাও অফ্রুম্বপ করিয়াছেন। সে দোষ তাঁহার অজ্ঞতার নহে, সে দোষ কবিছের। কবি হইলে সে নিজের কল্পনা চালাইবেই। কেন, আমাদের এ কালের সংস্কৃত ইংরাজী জানা কত বড় বড় কবি কল্পনা চালাইতে সির্মাণিব ভালিয়া যে বাঁলর গড়িয়াছেন। তাঁহাদিগকে ত কেহ আমরা মূর্থ বলিতে সাহনী হই নাই। আমার বিশ্বাস, চণ্ডীদাস বেশ ভালত্রপই সংস্কৃত জানিতেন। তন্ত্র ও ভাগবত উভরুই তাঁহার উত্তয়রপ আয়ন্ত ছিল। আপনার্বাও চণ্ডীদাসের পদ্বিদী পড়ুদ্র, উহাই বলিবেন।

## ह्थीमारमत मगरम वीक्रज्रात सर्यात व्यवश्।।

বৈষার করিয়াছিল, তাহাতে আর সন্দেহ নাই। কিন্তু তাহা হইলেও হিল্পুর্থ একবারেই ব্বংস প্রাপ্ত হয় নাই। বদের পালবংশীয় রাজপণ বৌদ্ধ ছিলেন বটে, কিন্তু তাহার পর মুসলমানাধিকার পর্যন্ত ঘাঁহারা বদে রাজত্ব করিয়াছিলেন, তাহারা সকলেই হিল্প। এই সকল হিল্পুরাজগণ হিল্পুর্ধের পুনঃ প্রতিষ্ঠার জল্প যরের ক্রাট করেন নাই। তাঁহানের আবিরাম চেন্তার বৌদ্ধ-বিহারগুলি হিল্পুল্ব-মন্দিরে পরিণত হইয়াছিল। লোক শৃত্ত-উপাসনা ছাড়িয়া আবার হিল্পুণ্রের প্রাণ্ড প্রবিশ্ব হয়রাছিল। কাত্তকুল্ল হইতে আনীত আমাদেরই পুর্বপুরুষপণের চেন্তার আবার বেদাম্মোদিত ক্রিয়াকাণ্ড প্রবিত্ত হইয়াছিল। আবার "হর হর ব্যোস্ ব্যোল্ শালে বঙ্গণেশ মুধ্রিত হইয়াছিল। আবার ব্রাহ্মণগণ হিল্পুর ধর্মানাম্র অধ্যয়ন করিতেছিলেন। বৌদ্ধর্মের ছই একটা পুলা-পদ্ধতি সমাজের উচ্চ গুর হইতে দুরীভূত হইয়া নিয় শুরে আশ্রয় প্রহণ করিলে, হিল্পুগণ তাহাতে বড় আপত্তি করেন নাই। তয়াহ্মাদিত শিব ও শক্তিপুলা বলে—বিশেষতঃ বীরভূমে বিশেষভাবে আধিপত্য বিশ্বার করিয়াছিল। বীরভূমের পীঠস্থানগুলি বক্রেশ্বর, অট্রাস, লাভপুর, তারাপুর, নলহাটী প্রভৃতিতে আবার মদ্য-মাংস হারা দেবীর অর্চনা হইদে লাগিল। বীরভূম্বাদী খোর বীরাচারী হইল। এইরূপে বীরভূম্বাদী ছান্তে ধর্মের অতীব ব্যভিচার করিয়া অসংবতভাবে পশুব্ধ ও মদ্যপান করিয়া "অহিংসা পরমো ধর্ম্মং" যে ধর্মের মূল স্ব্রে, সেই বৌদ্ধর্মের প্রতি প্রতিহিংসা লইল কিন্তু ভগবান ধর্মের মানি অধিক দিন সহু করেন না।

শ্বগংপ্রকাশক স্ব্যদেবের উদয়ের পূর্বে যেমন অরণের আভা প্রকাশ পান্ন, তেমনি বীরভূমের আকাশে জয়দেবের গীতগোবিন্দের তান উঠিল। জুন্নদেব মধুরস্বরে রাধারক্ষের লীলা গাহিলেন। মদ্যপানী বীরভূমবাসী নেশার বোরে সে গান শুনিল না। প্রায় তিন শত বৎসর অতিবাহিত হইলে বোর তান্ত্রিক চণ্ডীদান নামুরে আবার ক্রঞ্জীলা গাহিলেন। কিন্তু তাহাতেও কিছু হইল না। তথনও ক্ষেত্র প্রস্তুত হয় নাই, তথনও তিমিরপ্রংস্কারী মহাস্বর্ব্যের উদয় হয় নাই। বীরভূমি বেমন তান্ত্রিক, সেইরপ ভান্তিকই রহিয়া গেল। চণ্ডীদাসের তিরোধানের কিঞ্দিন অর্ক্ষণভানীর পর পূর্বাকাশে নবীন স্বর্গার উদয় হইল। ক্রীচৈতক্সদেব প্রায়ভূতি হইয়া ভ্রদেব ও চণ্ডীদাসের গীত গাহিয়া মানব-হদয়ে স্বধা সেচন করিলেন।

ৈচত ভাৰেব একবার বীরভ্ষের বক্ষেবর তীর্থ দর্শনের উদ্দেশ্যে যাত্রা করেন। কিয়দ্র অগ্রসর হইয়া তিনি কোন লোকের মুখেই হরিনাম শুনিতে পাইলেন না; স্থতরাং বিরক্ত হইয়া ফিরিয়া যান। ইহা হইতে বৃঝা বায় বে, চণ্ডালাসের সময়ে বৈফ্যবধর্মাবল্যী কোন লোকই বীরভ্মে ছিল না। বীরভ্মের যথন এইয়প অবয়য়, তথন চণ্ডালাস রাখনাম গাহিলেন। সে নাম কাহারও "কাণের ভিতর দিয়া মর্মে" পশে নাই। সে যাহা হউক, বীরভ্মের গোরবের কথা এই য়ে, এইখানেই জয়দেব-পাপিয়া ভাকিয়াছিল—এইখানেই চণ্ডালাস কোনিল গাহিয়াছিল—এইখানেই চিড্ভালস প্রকাশিত সমুজ্জল দিবার উষা দেখা দিয়াছিল।

## हछीमारमत्र कृतिय।

আমার একটা ধারণা হইলা গিয়াছে যে, কবি হইতে গেলে যোগী হওলা চাই। সমস্ত মনটাকে টানিয়া একটা বিষয়ে লাগাইতে না পারিলে প্রকৃত কবি কেহ হইতে পারে শা। আর একেপ না করিতে পারিলে একটা রসে মজাহুর না। রসে না মজিলে মন-মাতান কথা বহা যায় না। বিস্তুমাঞ্চ কাল যে দিন্পড়িয়াছে, তাহাতে িলোকে মন স্থির করিতে পারে না। এখন চারিদিকেই বিষম কোলাহল। লোক অর্থের লক্ত ছুটাছুট করিতেছে।
নুন্ধি ছতুপে লোকের মন নানা দিকে আকৃষ্ট হইতেছে। রাজায় প্রসায় হল, সমাকে অশান্তি, গৃহে গোলযোগ।
সংবাদপদ্রেগুলা মেক্সিকোর যুদ্ধের খবর দিয়া বীরভ্মের নিভ্ত পদ্দীর মাক্ষ্যের মনে ছজুগ বাধাইয়া দিতেছে।
বেল গাড়ীতে চড়িয়া খবরের কাগল পড়িতে পড়িতে, চুকুট টানিতে টানিতে রাজনৈতিক সভায় বক্তৃতা করিতে গেলে
কবিত্ব থাকে কি না, আমার ঘোরতর সন্দেহ হয়। পূর্বে মন লইয়া এত টানাটানি ছিল না। লোক একটা কিছুতে
মজিতে স্থবিধা পাইত। সংসারে এত হটুগোল ছিল না। এখন লোকে কবিতা লেখে বাহাছুরী লইতে, তখন
লোকে লিখিত মজিয়া মজাইতে। এখন লোকে সমুদ্রের ধারে চক্চকে পাধর কুড়াইয়া মাণিক বিলয়া বাজারে
বিক্রেয় করে; তখন লোকে রয়াকরের অগাধ সলিলে ডুবিয়া রয় তুলিয়া আনিয়া লোকসমাজে ফেলিয়া দিয়া
আবার ডুব দিত।

আমার মনে হয়, চণ্ডীদাস এইরপ একজন ডুবুরী ছিলেন। তিনি সংসারের কোন সংবাদই রাখিতেন না। দিবানিশি ভাব-সাগরে ডুবিয়া যে সকল অমৃল্য রয় সংগ্রহ করিতেন, লোকের মধ্যে তাহা বিলাইয়া দিতেন। স্পুতরাং চণ্ডীদাসের স্থায় কবিরা আমাদিগকে যাহা দিয়াছেন, তাহা ভাবসাগরের মহামূল্য রয়। "ব্রজাঙ্গনার" স্থায় সমুদ্রের ধারে কুড়াইয়া পাওয়া গুজির মুক্তা নহে।

চণ্ডীদাস রাধাক্ষকের প্রেমে একেবারে মজিয়া গিয়ছিলেন। যোগীর স্থায় মানসনেজে রাধার ফের দীলা প্রত্যক্ষ করিতেন। যাহা দেখিতেন, তাহাই গাইতেন। কল্পনার কথা নয় যে, সাজাইয়া গুছাইয়া তোমার মনে চমক লাগাইতে হইবে। চণ্ডীদাস কুত্রিমতা জানিতেন না। খাঁটি জিনিব যেমন পাইলেন, আনিলেন; লোকে লউক আর না লউক, সে দিকে তাঁহার ক্রকেপ ছিল না। তাই তাঁহার ক্রবিতা সরল ও অলয়ারবিহীন। বর্ণনীয় বিষয় হইতে মনটাকে দ্রে না আনিলে ত আর উপমা গোঁজা হয় না। সুতরাং বিষয়ে তন্ময়তা জনিলে উপমা প্রভৃতির দিকে লক্ষ্যথাকে না।

চণ্ডীদাস রাধারুক্ষের লীলা বর্ণনা করিয়াছেন অর্থাৎ ক্ষণ্ণ যাহা করিয়াছেন, রাধা যাহা করিয়াছেন, তাহাই লিথিয়াছেন। স্থতরাং তিনি রাধা ও ক্ষণকে কিন্নপ চিত্রিত করিয়াছেন, তাহা জানিলেই ভাঁহার কবিছের পরিচয় পাওয়া যাইবে। এক্ষিক্ষের স্থ-ছঃখ নাই। এমতীই স্থ-ছঃখ যাহা কিছু ভোগ করিয়াছেন, স্তরাং কেবলমাত্র রাধিকা-চরিত্র বর্ণনা করিলেই আমাদের উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে। তাহা হইলেও আমারা রাধিকা-চরিত্র ছাড়া প্রীরুষ্ণ ও যশোদা সম্বন্ধে কিছু কিছু বলিব।

প্রথম হইতে একটা কথা বৃথিয়া রাখিতে হইবে। চণ্ডীদাস যে রাধাক্তঞ্চ-প্রেম বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা প্রাক্তত নায়ক-নায়িকার প্রেম নহে। "মাকুষে এমন প্রেম কোথা না গুনিয়ে।" ইহাতে "কামগন্ধ" নাই। এই "কুফপ্রেম স্থানিশ্বল, যেন গুদ্ধ গঙ্গাজল," এই ৫েমে মজিলে নায়িকা আত্মস্থ অবেষণ করিবেন না। কিসে নায়কের প্রীতি হইবে, তিনি সর্কাদাই এই ইচ্ছা করিবেন। শ্রীচৈতক্ত-চরিতামৃতকার কবিরাজ গোস্বামী বলিয়াছেন;—

> ''আংদ্মেন্তিয়প্রীতি ইচ্ছা তারে বলি কাম। ক্লেন্তিয়গ্রীতি ইচ্ছা ধরে প্রেম নাম। কামের তাৎপর্য্য নিজ সম্ভোগ কেবল। কুক্তুস্থ তাৎপর্য্য হয় প্রেম মহাবল। বেদধর্ম লোকধর্ম দেহধর্ম কর্ম লক্ষা ধৈর্য্য দেহস্কা আত্মস্থা মর্মা।

ছক্তম আধ্যপথ নিজ পরিধন।

স্থানে কর্মে কর ডাড়ন ভর্মন ।

সর্বাত্যাগ করি করে ক্রুফের ভজন।

কৃষ্ণসূধ হেতু করে প্রেমের সেবন।।

ইংারে কহিয়ে ক্রুফে দৃঢ় অমুরাগ।

তব্র ধৌত বন্ধে ধৈছে নাহি কোন দাগ।।"

এই প্রেম রাধিকাকে---

"সৰ সমৰ্শিয়া একমন হৈয়া নিশ্চয় হইলাম দাসী"—৭০৯ পদ

ইহাই ভাবাইয়া দেয়। এই প্রেম করিতে হইলে পার্বিব ভাবের সীমা ছাড়াইয়া উঠিতে হইবে ;—

'ধরম করম লোকচরচাতে এ কথা বৃঝিতে নারে। এ তিন আঁধর যাহার মরমে সেই দে বৃঝিতে পারে॥''—৩৩৫ পদ

এই প্রেমে মন্ত্রিল বাহজান থাকে না। পার্থিব কোন পদার্থের অন্তিত্ব অনুভূত হয় না। রাধিকা সকল ভূলির।
জীক্তকে আত্মসমর্পণ করেন। তিনি আহনিশি শীক্তক ভিন্ন অপর কিছু দেখেন না, অপর কিছুই তাঁহার মনে
উদয় হয় না। এরপ ভক্ত ভগবানের কাছে, কিছুই প্রার্থনা করেন না, কেবল ছুইটি কমল-চরণ তাঁহার প্রার্থনীয়।
ইহাই প্রকৃত প্রেম; চন্ত্রীদাস এই প্রেমই বর্ণনা করিয়াছেন।

## শ্রীমতী রাধিকা।

রুক্তারপুরে পিতৃগৃহে আমরা শ্রীমতী রাধিকার প্রথম সাক্ষাৎ পাই। রাধিকা মাতা ও সধী সহ বাতায়নে উপবিষ্টা, নীচে স্থবল সদলে নানা ধেলা ধেলিতেছেন। দেখিলাম, স্থবল যথন শ্রীকৃষ্ণমূর্ত্তি দেখাইলেন, তথন সেই অন্থপম মূর্ত্তি দেখাইলের মূর্ছ্জ্র্য হইল। কিছুতেই সে মূর্ছ্জ্যার অপনোদন হয় না, পিতা কত চেষ্টা করিলেন, চিকিৎসকে কত চেষ্টা করিল। কিন্তু স্থবল বখন রাধিকার কর্ণে কৃষ্ণনামায়ত সেচন করিলেন, তখন তিনি নয়ন উন্মালন করিলেন। তাঁহার সকল ব্যাধি দ্বে গেল, তিনি প্রকৃতিস্থা হইলেন। শ্রীকৃষ্ণের রূপদর্শনে তাঁহার যে সম্মোহ হইয়াছিল, কৃষ্ণনামের অন্থত শক্তিতে তাহা তিরোহিত হইল। চণ্ডীদাস এইরপে কৃষ্ণনামের শক্তি প্রদর্শন করিরাছেন।

তাহার পর শামরা প্রেমবিহ্নক। রাধিকার অবস্থা দেখিয়া বিমোহিত হই। তিনি কখন বা, "দণ্ডে শতবার" খারের বাহির হইতেছেন। মন সর্বাদাই উদ্বিয়, ঘন ঘন কদন্যনন পানে চাহিতেছেন। তাঁহার অক্সের বসম শিধিল হইয়া পড়িতেছে, তাহা সম্বরণ করিতে ভূলিয়া যাইতেছেন। চিকুররাশি এলাইয়া পড়িতেছে, তাহাও সংযত করিতেছেন মা। ঘন ঘন নিখাস বহিতেছে। আবার কখন বা করতলে কপোল বিক্তপ্ত করিয়া মহাযোগিনীর ভার বিভাবিতেছেন। লোকের সঙ্গ ভাল লাগিতেছে না; বির্কৌ বসিয়া অঞ্পন্নত করিতেছেন। নীল নিচোল ত্যাগ করিয়া, "রাজা বাস" পরিধান করিয়াছেন। আহার ত্যাগ করিয়াছেন, শরীর কুশ হইয়াছে। কখন মেদ পানে,

কখন বা গ্রামকণ্ঠ মনুরের প্রতি, আবার কখন বা বেণী এলাইয়া আবানার ভ্রমর-ক্লফ কেশরাশির প্রতি এক**নৃষ্টিতে** চাহিয়া আছেন। আবার কখন জান হারাইয়া ধরণীতে লুন্তিত হইতেছেন। **অপর কোন কবি কোন নায়িকার**স্থান্ধানের এরপ অবস্থা চিত্রিত করিতে পারিয়াছেন কি না, আমরা জানি না।

রাধিকা যে ক্লফপ্রেনে মজিয়াছেন, তাহার গভীরতাই বা কত! দিবারাত্রি তাঁহার ক্লফরপ িন্ন অপর কিছু চিন্তা নাই। ক্লফের রূপের সহিত যে কোন বন্ধর সামান্ত সাগৃত্ত আছে, তিনি তাহা দেখিয়াই বিমোহিত হইতেছেন। কালিনার জল, কাল কেশ, নীল শাড়ী, এ সকলই তাহাকে আকুল করিতেছে। এই ক্লফপ্রেম তাঁহার ক্লমে এমন দৃড়ভাবে সংলগ্ধ হইয়াছে যে, তাহা এক তিলও তাহাকে ছাড়িতেছে না। ক্লফরপ তাঁহার নিখাদ, ক্লফেপ তাঁহার আহার। ক্লফরপ চিন্তা তিল তাহার ক্লামাত্র বাঁচিবার সভাবনা নাই। ক্লফ তাহার এত প্রিয় যে, সদাই হারাই ছারাই মনে তাইতেছে। হার! তাঁহার মনের ভাব কে বুঝিতে পারিবে দ কাহার সাধ্য যে, এ পেমের গভীরতা বুমে দ রাধার ভয়, পাতে নিজার অভেতন হইলে শ্রামকে বিস্মৃত হন; তাই সারা নিশি আগিয়া থাকেন। আবার কখন বা পীরিতির প্রতি আক্লেপ করিয়া কত বলিতেছেন। পীরিতি করিলেন, শ্রামকে পাইলেন না। কিন্তু ভাহা বিলয়া সেই পীরিতি ভ্যাগ করিতে ইচ্ছুক নহেন, ভ্যাগ করিবার উপায়ও নাই।

প্রেমে বাহার এত তর্ময়তা, যাহার প্রেম এত মধুর, এত গভীর, এত বিশুদ্ধ, শ্রীভগবান কি ভাহার আশা পূর্ব না করিয়। থাকিতে পারেন? মহারাসে রাধাক্ষের নিলন হইল। রন্দাবন-লীলার অবসান হইল। শ্রীকৃষ্ণ মথুবার যাইবেন, এই কথা বখন কোন সধী রাধিকাকে বলিল, তখন রাধিকা তাহা বিখাস করিতে পারিলেন না। শ্রীকৃষ্ণের মথুরা যাওয়া অসম্ভব। কাহাকে ছাড়িয়া শ্রীকৃষ্ণ কি মথুরায় যাইতে পারেন ? রাধার হৃদয়ে বে ঠাহার আসন। তিনি যে রাধিকার হৃদয়ে বাঁধা আছেন। কেমন করিয়া কোন্পথে যাইবেন?

"এ বুক চিরিয়া যবে বাহির করিয়া দিব তবে ত শ্রাম মধুপুরে যাবে।"

কিন্তু হার! যখন শুনিলেন, নিশ্চয়ই শ্রাম মধুপুরে যাইতেছেন, তখন যেন তাঁহার মাধার বজাঘাত হইল। তিনি শ্রীকৃষ্ণকে কত অফুনয় করিলেন, কত অঞ্পাত করিলেন। নিষ্ঠুর কানাই তাঁহার কথা শুনিলেন না, মপুরা চলিয়া গেলেন। তখন—

"পোনার পুতলি অবনী উপরে
যেন খন গড়ি যায়।
নিখাস হতাশে নাসার মুকুতা
ধেলিছে ছলিছে বায়॥"

শ্রীক্ষণ মণুরায়, আর শীমতী রাধিকা রন্দাবনে। রাধিকা ধাঁহার বিরহ ক্ষণমাত্রও সহ কৰিতে পারিতেন না, তিনি আৰু "গিরি নদী আঁতর শুলা।" এই নিদারণ বিচ্ছেদে রাধিকা বড়ই মর্মপীড়ি তা ইইলেন। কাহারও মুখে কুঞ্চনাম শুনিলে তিনি তাহার চরণে ধরিয়া রোদন করিতে লাগিলেন। সে যথন কুঞ্চনাম করিতেছে, তখন অবশ্রই কুঞ্চের সংবাদ দিতে পারে। হায়়। বিষম শোঁকের আবাতে বাণবিদ্ধা কপোতীর ক্রায় রাধিকা ধ্লায় পড়িয়া আছেন। "সোনার পুথলি যেন গ্লায় লোটায়।". বিষম বিরহজরে তাঁহার আঁথি ছল-ছল। স্থীগণ তাঁহার কুর্ণিকে বিসিয়া আছেন। তাঁহারা, এক একবার শ্লাম-নাম করিতেছেন, অমনি রাধিকা চমকিয়া উঠিতেছেন শ

আবাৰ তথনই ৰুছা হইতেছে। স্থীগণ ব্যলম করিতেছেন, চন্দন লেগন করিতেছেন, কিছু বে অগ্নি অন্তরে আনিতেছে, তাহা বাহু শৈতো নির্বাণিত হইবে কেন ? রাধিকার দশনী দশা উপস্থিত। স্কলেই তাবিল, রুনাবন-বিলাসিনী রুখি রুনাবন ত্যাগ করিয়া বান। স্থীগণ যুক্তি করিয়া রাধিকার এই অবস্থা লানাইতে মধুরার প্রীক্তঞ্জের নিকট দৃতী প্রেরণের সংকর করিলেন। বাধিকা শুনিলেন। শ্রামকে আনিতে বাইতেছে লানিতে পারিয়া রাধিকার চৈতক্ত হইল। তিনি স্থীকে একটিমাত্র তির্কারের কথা বিশ্বান ;—

> "এ কথা কহিও ভারে। সে গুণ বুৰিয়া থে জন মরিবে সে বধ শাগিবে ভারে॥"

পরক্ষণেই আবার সধীকে মিনতি করিয়া বলিলেন :-

"স্থি, কহিবি কাহুর পার।
সে স্থ-সায়র দৈবে শুকায়ল
তিয়াধে পরাণ ধায়॥
স্থি, ধরিবি কাহুর কর।
শাপনা বলিরা বোলানা ডেজবি
মাপিয়া লইবি বর॥"

चाक त्राधिकात मान छावास्त्र डेलिझ्डिं। जाक कृषिन कृषिन शरेन दिन दिन द्राहि । चाक,---

"চিকুর স্থাবিছে বসন ধণিছে পুনক ধৌবনভার। ধান অৰু আঁথি সুখনে নাচিছে ছুলিছে হিয়ার হার । প্রভাত সময়ে কাক কোলাকুলি আহার বাটিয়া ধায়।

পিরা আসিবার নাম সুধাইতে উড়িয়া বসিল তার॥

মুবের তা**খ**ূল **ধনি**য়া পড়িছে দেবের মাধার **সু**ল।"

আৰু সৰ সুৰক্ষণ। আৰু এইজের আগমন হইবে। রাধিকার মনে উল্লাসের সীমা নাই। সধী আসিয়া সংবাদ দিলুবে, প্রীক্লভ আসিয়াছেন। অমনি---

> "চকিত-নয়নে চাহিতে স্থনে সমূধে দেশল শিলা গ'

ি সকল ছঃখ, সকল অভিমান দুরে গেল।

"এস এস বলি হটি বাহু তুলি হাসিয়া কহয়ে কথা।"

এ ক্রিক্টাকে নির্জ্জনে পাইরা রাধা সুবাসিত বারি দিয়া তাঁহার চরণ ধৌত করিলেন। নিজ কেশ্রাশি निमा छै। होत हत्र मूहाहेम छै। होति विविध शामा विवास विभावता । धरेवात मत्नत कथा बनिए नामिलन,-"বঁধু, বহুদিন পরে আসিলে, প্রাণ গেলে ত আর দেখা হইত না। অবলা বলিগা তোমার বিরহ-যন্ত্রণা স্থ করিতে পারিয়াছি। পাষাণ হইলে গলিয়া যাইত। বড় কটেই আমার দিন কাটিয়াছে, কিছ তাছাতে হঃৰ করি না, তুমি মধুরায় ভাল ছিলে জানিতে পারিলেই আমি স্থবী। আমার আর স্থব-ছঃৰ কি ? ভোমার স্থবেই আমার সুখ। এখন তোমাকে পাইয়াছি; আর আমার কোন ছঃখ নাই। এখন কোকিল গান করুক, ভ্রমর তাহাতে তান ধক্ষক, মলম পবন মন্দ মন্দ বছক, গগনে চল্র উদিত হউক। ইহারা তোমার বিরহসময়ে বড় কণ্ট দিয়াছিল, এখন ত আর কিছু কষ্ট দিতে পারিবে না।" প্রথম মিলনের আবেগ শাস্ত হইলে রাধিক। বলিতে লাগিলেন:-

वंधू, कि आंत्र विविव आभि।

মরণে জীবনে क्रमस्य क्रमस्य প্রাণনাথ হৈও তুমি॥ ভোষার চরণে আমার পরাণে বাধিল প্রেমের ফাঁসি। সব সমর্পিয়া এক্ষন হৈয়া निम्हर इंडेनाय मात्री॥ ভাবিয়া ছিলাম এ তিন ভূবনে স্থার মোর কেহ আছে। রাধা বলি কেহ ভ্ৰধাইতে নাই দাঁড়াব কাহার কাছে॥ এ কুলে ও কুলে ছকুলে গোকুলে আপনা বলিব কার। শীতল বলিয়া শ্রণ লইফ ও ছটি কমল-পায়॥ না ঠেলহ চলে অবলা অধলে যে হয় উচিত তোর। ভাবিয়া দেখিত্ব প্ৰাণনাথ বিনে গতি যে নাহিক মোর। আঁৰির নিমিথে यपि नाहि (पवि তবে সে পরাপে মরি। চণ্ডীদাস কহে

গলায় গাঁৰিয়া পরি ॥--৭৩৯ পদ

এমন পৌরতি কল্প দেবি নাই শুনি।

থমন পীরিতি কল্প দেবি নাই শুনি।

পরাণে পরাণ বাঁধা আপনা আপনি॥

হঁছ কোড়ে ছুঁছ কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিয়া।

তিল আধ না দেবিলে যায় যে মরিয়া॥

পল বিনে মীন জলু কবছঁ না জীয়ে।

যালবে এমন প্রেম কোধা না শুনিয়ে॥

ভাস্থ কমল বলি, সেও হেন নহে।

হিমে কমল মরে, ভালু সূথে রহে ॥

চাতক জলদ কহি, সে নহে ভূলনা।

সময় নহিলে সে না দেয় এক কণা।

সুমুমে মগুপ কহি, সে নহে ভূল।

না আইলে ভ্রমর আপনি না ষায় সূল॥

কি ছার চকোর চাঁদ, ছুঁছ সম নহে।

অিভুবনে হেন নাই চণ্ডীশাস কহে॥

## শ্ৰীকৃষ্ণ।

যিনি ক্বপাপরবশ হইয়া ঐাবের উদ্ধারের জন্ত গোলোক ছাড়িয়া ভূতলে আসিয়া, রুলাবন-লালা প্রকট করিয়ং-ছিলেন, বাঁহার রূপ গুণ ও কার্য্যকাগাদি বর্ণনা করিতে মানব-লেখনী অক্ষম, সেই অচিন্তা, অব্যক্ত শ্রীকৃষ্ণ চণ্ডীদাদের প্রস্থের নায়ক। এরূপ নায়ককে চিত্রিত করিতে চেটা করা কম সাহসের কর্ম নছে। কিন্তু চণ্ডীদাদ সে সাহস করিয়াছেন এবং সেই অসীম গুণাধারের মহিমার কথিকিৎ কর্পনা করিতে ক্রুতকার্য্যও ইইয়াছেন। শ্রীকৃষ্ণ রুলাবনে প্রেময়য় । তিনি বশোদার বাৎসল্য-প্রেম, গোপীগণের পতি-প্রেম, রাখালগণের স্থা-প্রেম সম্পূর্ণরূপে অধিকার করিয়াছেন। বেগবতী উন্নাদিনী শ্রোতম্বতী যেমন কোন দিকে লক্ষ্য না করিয়া কেবলই সাগর-সঙ্গমে ছুটিতেছে, তেমনই ইহাদের সকলেরই বেন অন্ত কোন লক্ষ্য নাই, সকলেরই ক্র্ময়ের প্রেম মহাবেগে একমানে কেন্দ্র শিকে আকৃষ্ট হইতেছে। তাই আমরা রুলাবনে প্রেমের খেলা ভিন্ন আর কিছু দেখিতে পাই না। রুলাব-ে জীব-জন্ত বৃন্ধ-লতাদি সকলেই শ্রীকৃষ্ণকৈ ভালবাসে। তাই তিনি যথন বুলাবন ত্যাগ করিয়া মথুরায় গমন করেন, তথন রুলাবনে বে শৌকপ্রবাহ বহিয়াছিল, তাহার তুলনা জগতে কথন দেখা যায় নাই।

"(ধহুগণ সব করি হামা রৰ
মণুরা মুখেতে ধায়।
ধেহুর বাছুরি বিয়োগ পাইয়া
সেহ হুধ নাহি থায়॥
পুচ্ছ উচ্চ করি হারে পরিহরি
মথুরা গমন দিপে।
বধা সে রসিক নাগর-শেখর
সে দিক গমন ভাগে॥

(त्रापम (नपन 49 3979 আহার নাহিক পার। ভালে বসি ধগ ভাষ ভাষ করি ব্রাতি দিন নাম লর॥ মুগগণ অতি েয়ে আছে কভি नग्रत्न वरस्य (नातः। ক্ষের বিরয়ে পেরে ছতি মোছে এ সব হইলা ভোর। সেই পিকরবে এ পঞ্চ শ্বদে শুনিতে আনন্দ বড়ি। নাহিক আপদ দে সৰ শ্বদ সে ভাল চলল ছাড়ি॥ ভ্ৰমন্ত ভ্ৰমন্ত্ৰী সদাই শুঞ্জরি (म नाहि भवन करता। চকোর ডাত্তকী চাতক চাতকী **छारा ना भवन वरन ॥** ভক শারী গণি হংস হংসিনী छादा ना भवन करक । নিশ্বদ হট না জানি কোথার থাকে ঃ পুরবাসী বড व्यक्षत्र नग्रन যুবা রুদ্ধ বাল ৰত। শোকেতে আকুল বিয়োগ স্কল তাহা বা কহিব কভ।"

যাঁহার অনন্ত প্রেমের শতাংশের একাংশও চিত্রিত করিতে চণ্ডীদাস সমর্থ হয়েন নাই, আমি তাঁহার কি পরিচয় দিব ? যাঁহার মহিমা কীর্ত্তন করিতে ঋষিগণেরও জিলা অক্ষম হইবাছে, আমি সেই মহাপুরুষকে নম্বার করি।

> নমঃ পুরত্তাদথ পৃষ্ঠতন্তে নমোহত্ত তে সর্বাত এব সর্বা। অনতবীর্বামিতবিক্রমত্বং সর্বাং স্থাপ্রোবি তত্তাসি সর্বাঃ।

#### যশোদা।

বশোদা-চরিত্র অভণেও চঙীদাস কম কৃতিৰ দেখান নাই। বাৎস্ব্য-প্রেম মৃতিধান্ হইয়া বেন তাঁহার বশোদাকে আলার করিয়াছে। জীকুক রাখান-বালকগণের সলে ধেকু চরাইতে বনে বাইবেন, যশোদার মনে সানা তর হইতেছে। হুই কংসের চর স্থাই কুঞ্চের অনিই-সাধনের অভ ফিরিতেছে; না আনি, কখন কি বিপদ্ বটার। তাঁহার কুঞ্চ অতি শিশু, পদ্মুগ অতি কোমন তুণ্ডুছে কুত হইতে গারে। কুফের শ্রীর ন্বনীত তুল্য কোমন,

ভারর, ভাপে পাছে বা পলিয়া যায়। কিন্ত রাধাল-বালকপণ ছাড়িবে না, ক্লফকে সলে লইবেই। অপত্যা বশেষতী শ্রীকৃষ্ণকে গোর্চে বাইতে অমুষতি দিলেন। কিন্তু তাঁহার ক্লফের প্রতি যত লইবার অন্ত বলুরামকে কতা অহনর, কত বিনয় করিলেন। বলরাম বরুসে বড়, ক্লফ শিশু। তাই বলরামের করে ক্লফকে সমর্পণ করিলেন। ক্লের অঞ্চলে ননী ছামা বাঁধিয়া দিরা বলরামকে অমুরোধ করিলেন যে, বেন কুধার সময় ক্লফকে থাওয়ায়। বলরাম বেন সর্বাঘাই কাছকে সন্মুখে রাখে। পোর্চবিহারী ক্লফের বেণুর রব শুনিতে না পাইলে যশোদার প্রাণ ব্যাকুল হয়। তাই বলিয়া দেন, বেন রাধালগণ পোধন লইয়া ছুরে না বায়, বেন যমুনার নিকটেই থাকে। শ্রীকৃষ্ণ বন হইতে প্রত্যাগ্রমন করিলে বশোদার আনন্দের সীমা থাকে না।

"সোনার পুতলি বনে পাঠাইর।
আছিল চেতন হরি।
মরা তক ষেন বরৰ পাইলে
সে বেন মঞ্জরি সারি।।
কতক্ষণ হেরি সে চাঁদ-বদন
তবে সে জুড়াই প্রাণ।
আঁথির তারাটি ধনিয়া গেছিল
পুন সে বৈঠল ঠাম।।"—৫০৪ পদ

ৰন হইতে বখন এক্রফ ওছমুখে ফিরিয়া আসেন, তখন বশোদার হুদয় ফাটিয়া বায়।

"আহা মরি মরি পরাণ পুথলি
বাছনি কালিয়া সোনা।
কত না পেয়েছ ক্ষুধায় পীড়িত
বনে ষেতে করি মানা।।"

ৰে ক্লককে রাত্রি কাপরণ করিয়া তিনি ক্লীর-ননী থাওয়ান, তাঁথার সেই ক্লফ বনে গিয়া ক্লুখায় পীড়িত চ্ইয়াছেন, ইহা ভাবিতে যশোদার বড়ই কট্ট হয়। তখনই মনে মনে প্রতিজ্ঞা করেন, ক্লফকে জার বনে থাইতে দিবেন না। যদি নন্দ যোব আপত্তি করেন, তবে তিনি ক্লফকে দুইয়া কোথাও চদিয়া যাইবেন।

"ভোমারে গ্রহণ আন দেশে বাব
না রব নক্ষের ঘরে।
ভোমা হেন ধন আর কোথা পাই
বিধাতা দিয়েছে মোরে।।"

ৰ বেন স্বেৰ্ময়ী মাতা বখন গুনিলেন যে, তাঁহার ক্লঞ্চ তাঁহাকে ছাড়িয়া মপুরা ৰাইতেছেন, তখন তাঁহার কি দিবা হইল, তাহা সহজেই অল্পনেয়। বে ক্লঞ্চ বনে গেলে তিনি স্থা্যের নিকট প্রার্থনা করেন, বেন তিনি প্রথার করেন তাঁহার কানাইকে ক্লিট না করেন, বনদেবতার নিকট কাড্ডেডাবে কানাইকের কুশল যাজা করিতেন, পবন-দেবকে মিনতি করিয়া বলিতেন, বেন তিনি মৃহ্মল বহিয়া তাঁহার কানাইকে ব্যক্তন করেন, সেই ক্লঞ্চ তাঁহাকে ত্যাগ করিয়া চলিতেছেন, এ হঃখ কি রাধিবার হান আছে গ্রহার, তাঁহার অণ্ডিট এমন কেন ঘটল ? দেবী আনাধনা

করিয়া তিনি ক্লফ হেন ধন পাইয়াছিলেন; হয় ত পূজার কোন ক্রটি হইয়া থাকিবে, তাই তাঁহার কপালে এই ্বিড়খনা ঘটল। রাণী আকুলহাদয়ে কাঁদিতে লাগিলেন,—

> ''কোলে লয়ে যাহ্মণি বদন চুছয়ে রাণী দর দর বহে প্রেমবারি।

> ধরিয়া গোপাল-করে কাতর হইয়া বলে

ত্ই বাছ ধরিয়া পদারি॥

শ্ৰীমুখমণ্ডল দেখি তাহাতে নয়ন রাখি

পড়ে রাণী মুরছিত হয়ে।

যশোদা রোহিণী কান্দে স্থির নাহিক বাঞ্চে

গোপী রহে চাঁদ-মুখ চেয়ে॥"--৫৬০ পদ

জাবার যখন মধুরা হইতে নদ্দ খোষ ফিরিয়া জাসিলেন, কিন্তু রুফ জাসিলেন না, তখন যশোদার সকল ভরসা গেল। কাতর্ম্বরে রাণী কাঁদিতে লাগিলেন;—

> ''অনেক তপের ফলে বিধি আনি দিল মোরে সে হেন আদর নটরায়।

> কোন অপরাধ হল জননী ছাড়িয়ে গেল

হেনক আমার ভার।।

সে হেন নবীন তহ যেন পদ কর ভাহ

হিন্ধুলে গঞ্জিত বিষধন্ত্রে :

নৰখন তহুখানি অগ্ননে দলিত শ্ৰেণী

नश्न-क्मन भूभरत्।।

কিবা দে মধুৰ হাসি মধু ঝারে রাশি রাশি

নবাঁন কোকিল জিনি বোলে।

করিওও হল জিনি বাহর সে স্থবলনি

তা দেখি সদাই মন ঝুরে॥

(त्र (श्न यानव थरन द्रावि चाहेरल (कान्थात्न

मनाहे (म जूतरा चलुरत।

বে মোর গ্রেছে মন এ কথা জানিবে কোন

এ ক**থা সে ক**হিব কাহারে॥

কর ভরি দিতে সর স্থুও দেখি শশধর

বদন চাহিয়া যবে আদি।

ভাবিতে গুণিতে দেহ মলিন হইল দেহ

শনে মোর পড়ে নিশি দিশি ⊪—৩৮∙ পদ

#### क्या

চঙীদাসের অধিকাংশ পদই শগ্-এিপদী ও দীর্ঘতিপদী ছল্দে লিখিত। মধ্যে মধ্যে চতুর্দশ অকর, অধীকর.
স্থাক্ষর ও একাদশ অকর প্যারও আছে। কথন কথন নুত্ন ছন্দ্র ব্যবহার কর। ইইয়াছে। ৪১০,৫০৫,৫০৭,৬৫০,৬৫১,৬৫১ সংখ্যক পদ দেখুন। কোন বৈষ্ণৱ-কবি এতগুলি ছন্দ ব্যবহার করিয়াছেন ব্লিয়া মনে হয় না।

#### রাগাত্মিক পদ।

চঙীদাদের সাধন-প্রণালী যে কি ছিল, তাহা বলিবার সাধ্য আমার নাই। সে সাধন-প্রণালী শুরুর উপদেশ ভিন্ন বৃষ্ণিবার কাহারও ক্ষমতা নাই। তবে চণ্ডীদাদ যে তান্ত্রিক প্রণালী অত্নাবে রাধাক্ষেত্র ভন্ধনা করিতেন, তাহা আনেকটা বৃষ্ণা যার। তাঁহার রাগান্ত্রিক পদন্তলিতে এর সাধন-প্রণালী অতি সাবধানে বর্ণিত ইইয়াছে। আমি যে এই পদন্তলির টীকা করিতে বা এই সাধন-প্রণালী কি, তাহা বলিবার আদে। চেষ্টা করিলাম না, তজ্জ্জ্জ্জ্জ্মামি পাঠকগণের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিতেছি। আমি অক্ষম।

## চণ্ডীদাস-আরাধিতা বিশালাকী।

চ জীদাস গাহিয়াছেন :--

''নালুবের মাঠে

গ্রামের নিকটে

বাঙলী আছমে যথা।"

এখন স্বার বিশালাক্ষীর মন্দির গ্রামের মাঠে নাই। এখন তাঁথার মন্দিরের চহুপার্থে লোকের বস্তি হইরাছে। প্রামটা দেবী-মন্দিরের পশ্চিমে ছিল, ক্রমে প্রধারে সরিয়া আসিয়াছে, ইহার প্রমাণ পাওয়া সিয়াছে। বিশালাক্ষীর মন্দির প্রাচীন নহে, স্বাপুনিক ধরণের সামান্ত একতলা ইউকালয় মাত্র। মন্দিরের সন্মুথে প্রবেশবারে কয়েকটি শিবমন্দির স্বাছে; সেগুলিও খুব প্রাচীন বলিয়া মনে হয় না। ডবে দেবীর বাড়ীর সন্মুথে প্রকাণ্ড মৃত্তিকাল প্রাছে। লোকে ইহাকেই চণ্ডীদাসের ভিটা বলিয়া থাকে। কিন্তু চণ্ডীদাস ধনী লোক ছিলেন না যে, তাঁহার বাড়ীর ভয়াবশেষ এত বড় হইবে। আমার মনে হয় ধে, ঐ ভুপটিই বিশালাক্ষী দেবীর প্রাচীন মন্দিরের ভয়াবশেষ।

দেবীমূর্ত্তি।—আড়াই পোয়া পরিষিত একখানি কাল পাথরে খোদিত। মহাদেব বসিয়া আছেন; তাঁহার নাভিদেশ হইতে একটি পদ্ম বাহির হইরাছে, সেই পদ্মের উপর চতুর্ভা দেবী মূর্ত্তি আসীনা। দেবীর বাম পদ পদ্মের উপর ও ছক্ষিণ-পদ মহাদেবের উক্লেশে হাপিত। দেবীর তিন হাতে বীণা ও দক্ষিণের ছুইট হাতের মধ্যে একটিতে অপমানা।

পূজাপদ্ধতি।—ধ্প, দীপ, গন্ধ, নৈবেদ্য, পূন্প এই পঞ্চোপচারে দেবীর নিত্য পূজা হয়। দিবাভাগে আরভোগ • হয় এবং সন্ধ্যার সময় আরভি ও শীতল হয়। ভোগে মৎস্য দেওয়ার রীতি আছে। পূজা আত্মমত। শারদীয়া নবমী পূজার দিন বোড়শোপঠারে দেবীর পূজা হয় এবং ছাগ, মেষ ও একটি মহিষ বলি হয়। কিন্তু সাধারণতঃ বলি হয় না।

## (मवीत धान।

ं তব্রপারে বিশালাকীর এই ধ্যান লিখিত আছে ;—

"ধ্যান্তেকেবীং বিশালাকীং তপ্তলাস্নদপ্রভাম্। ।

विज्ञामिकार हजीर बज़ा-(बहेकशांत्रिक्रम् ॥

নানালছারস্কলাং রক্তাছরধরাং শুভান্।
সদা বোঙশবধীরাং প্রসরাক্তাং ত্রিলোচনান্।

যুত্তমালাবলীরমাং পীনোরতপ্রোধরান্।

শবোপরি মহাদেবীং জটামুক্টমণ্ডিতান্॥

শক্রক্ষরকরীং দেবীং সাধকাভীইদারিকান্।
সর্ক্রেভাগ্রনাই মহাসম্পৎপ্রদাং স্বরে।।

किछ (य शानि ना# तत्रत्र (निरोत्त भूका रहा, णांशा अहे ; -

''ধারেদেবীং বিশালাক্ষীং শারদবদনাং
চতুর্জাং বীণা চণ্ডিকা দেবীং স্প্রসন্ধাং বর প্রদাং ত্রিহস্তে বীণা চৈব এক হত্তে জ্বপায়িনী বামপদ প্রদাসনে দক্ষিণপদ শিবোপরি সচন্দ্রবিভ্রপতঃ পুপাং ওঁ হ্রাং বিশালাক্ষীদেবৈর নমঃ।"

মুর্থ পূজকের দারা গ্যানটি বিক্বত হইরাছে, কিন্তু উপায় নাই।

## **ह** छी नारमत अपनेत अञ् ।

চণ্ডীদাস-প্রণীত ''রাধিকার মানভঞ্জন''ও ''ভীক্ষ্ণ-কীর্ত্তন'' এই হইখানি পুথির সংবাদ পাওয়া পিয়াছে। প্রথম পুথিখানি এখনও মুদ্রিত হয় নাই। বঙ্গার-সাহিত্য-পরিষং ''জীক্ষ্ণকীর্ত্তন'' পাইয়াছেন এবং ছাপিভেছেন। উহার মূলাংশ ছাপা ইইয়া গিয়াছে এবং পরিশিষ্টাংশ ছাপা ইইতেছে। শীঘ্রই প্রকাশিত ইইবে।

चीनोनद्रश्न मुस्थानायाच् ।

# চণ্ডীদাস।

## শ্রীকৃষ্ণের পূর্বরাগ।

## াগ— অক্তাত।

এক দিন গোচাবণে সকল স্থা স্নে বসি এক ভরুয়ার ছায়। নন্দের নন্দন হরি কহে কিছু মৌন ধরি স্থবল স্থার পানে চায়॥ স্থা হে, কহ দেখি কি করি উপায়। ৫ হিয়া কৰে কেন মত সহিতে না পাৰি এত নিরম্বর জ্বলিছে চিয়ায়॥ সদয়ের কথা জান আমার বচন শুন কহ দেখি আমার মবম। মবম বাথিত তুমি বি আর বলিব আমি ১০ নয়ানে হয়েছে এক ভ্রম॥ অপূর্ব্ব সে অক্সাতে দেখিল নয়ানভিতে পূর্ববাপরে যা দেখিল ভাই। শুন স্থামন দিয়া যেমন করিছে হিয়া শ্রবণ-পরশ কিছু কই। পূর্ববাপর যা দেখিল তাহা কিছু রাগ হইল সেই রূপ পুর্বরাগ হল : পূর্ববরাগ আগি হেন জ্বলিয়া উঠিছে যেন ইহার উপায় কিছু বল। ্বৈই হৈ<mark>তে তমু মো</mark>র মরমে হয়ে*ছে ভোব* ১০ ् छन् भन मन देश्म हल ॥

**গাচন্দ্রিতে** পর দিনে ধবলী চলিলা বনে গেল বৃকভামুপুর দিয়া। দেখিল ধবলী নাই খুঁজিল অনেক ঠাই অনুসারে চলিল পাঞ্জিয়া॥ দেখি সে খুরের চিচ্চ রতি যাই ভিন্ন ভিন্ন পদ অমুসাবে গেল চলি। রকভান্তপুর বনে আনের ধেনুর সনে ধবলা মিলিয়া গেল ভালি॥ তাঁহা যে দেখিল ভাই সক্থা কথন এই ৩০ কহিতে উঠয়ে মনে রাগি। ছায়া সম<sup>্</sup>তা দেখিল বাহিব হইয়। গেল বুকভান্ন মহ**্লে** উগি॥ মহল ছাড়িয়া আসি সঙ্গে সহচরী দাসী কনক গাগরি লাই কাঁথে। ধনীর রূপের ছট। কোটী চাঁদ জিনি ঘট। ক**ত স্থা** বরিখয়ে মুখে॥ স্বপ্ন সম দেখি তারে ছায়ার সমান পুবে মোর অঙ্গে আভা আসি বাজে। চণ্ডীদাস কচে ভাগে শুন প্রভু য়**ত্ত্**নাথে ৪০ এ কথা বুনিবে আন কাজে॥ ৬। হিয়া করে কেন মত—মন কেমন করিতেছে। . প্রেপম প্রণয়পঞ্চাকে হৃদয়ে যে কিরূপ চাঞ্চা ৃউপস্থিত হয়, প্ৰশৃষ্ট ভাহা বু'ঝতে পাৰে। বা

:१। खराव बर्बाए कर्त्व म्लर्बनर्याता किंडू विन অৰ্থাৎ তোমাকে কিছ গুনাই।

১৮। আগি অগ্নি।

২০। মরমে --- স্থাত ভাবে। ভোর - বিহবল।

२>। ठल--- ठक्षल।

२8। (तिबिन, युँ जिन-(तिबिनाम, यु किनाम। अत्रेप প্রয়োগ প্রাচীন গ্রন্থে বিরল নহে।

२৫। प्रांक्तिया--प्रांक वर्षा प्रपातिक व्यापातिक व्यापात

১৬। রহি যাই ভিন্ন ভিন্ন-পুথক পুথক অর্থাৎ এক একটি পদ্চিত্ত অকুসর্ণ করিয়া চলিলাম।

৩>। রাগি--অমুরাগ, প্রেম।

৩০। উগি—উপস্থিত হইয়া।

oe। গগেরি--কলসী।

४>। वान का**ट्य--व**न (कान घटनास । ইহাতে স্থবল কর্ত্তক মিলনের আভাগ দেওয়া **११७७ ।** ४४ अन (नथून।

মগন কবিয়া (भन (म हिन्य। সোনাব পুতলি কায়া:

তাহে নীল শাড়ী ভেদিয়া অ16ল রূপ অনুপম ছায়া ॥

বসন ভেদিয়া রূপ উঠে গিয়া যেমন তডিৎ দেখি।

লখিতে নারিফ কেমন বন্ধন লখিয়া নাহিক লখি॥

কি সার কহিব ন্যান চঞ্চল · নানা আভরণ গায়।

নানা পরিপারী রসের সৌরভে माथ नाथ व्यक्ति धारा॥

্দেখিল ভখন भगन क्शिनी आश्री

মাপন গেয়ানে ना (पिथ नशास्त , ১৫

বাজয়ে মধুর পঞ্চম শ্বদ করে।

চলিয়া যাইতে সে মন্দগামিনী হেলিয়া হেলিয়া পড়ে॥

যেমত কেশরী নিতম্ব মাঝারি ঘটের মুটকে পাই।

এছন দেখিয় মধুর মুরতি আপন ন্যানে চাই॥

হাসিতে অমিয়া পড়ে কত শত \$0 দেখিলাম নয়ান কোণে।

১-২: রমণী দেখিতে ঠিক সোনার পুত্রের স্থায়; 🕯 সে আমাকে অফুরাগে ডুবাইয়া. আমার হৃদয়ে প্রবল অমুরাগ সঞ্চার কণিয়া पिया ठिलिया (श्रम ।

তাহার পরিধানে নীল শাড়ী; সেই শাঙীর আঁচল থেদ করিয়া তাহার অন্তুপম রূপের ছটা বাহির হইতেছে।

৭। লখিতে - লক্ষা করিতে : দেখিতে লখিয়া নাহিক ল'গ—দোধয়াও দেখিতে পাই वाय ना।

: १ । (शश्रात---क्कारन।

50

२८२२। "निटच मात्राति" व्यर्थ की ना कतिरन উপায় নাই। তাহার কটা সিংছের শ্চীর ন্থায় ক্ষীণ। ঘটের মুটকে অর্থাৎ শিরোদেশে ' প্রিরপ ক্ষীণতা দেখিতে পাওয়া যায়। 'মূটক' বোধ হয় মুকুট শব্দের অপত্রংশ। কিন্ধা ঘটের যে অংশ মৃটুকে ( মৃষ্টিতে ) ধরিতে পারা যায়, ১ সেই অংশের ক্ষীণতাকে লক্ষ্য করা হইয়াছে।

৵ঽ≷।

দেখিয়া মুরতি রূপের আকৃতি মরমে লাগিল ভাই। যেই সে দেখিল তখন চইতে কিছু না সন্ধিত পাই॥ ধবলী লইয়া আইফুচলিয়া শুনত সুবল স্থা। আর পুনবেরি সেই নবরামা কখন হইদে দেখা॥ কহিল মরম তোমার গোচ্বে শুন হৈ সুবল তুমি। >-মর্ম বেদন জানে কোন জন বিকল হইল সামি॥ সেই কথা মোর মনে পড়ি গেল কহিব কাহার আগে। কালি হতে মন 🥏 কেমন করিছে 24 হৃদয় ভিতরে জাগে॥ শুইতে নাহয় নিঁদের আলিস क्षा कृषा (भन मृत्र। নিরবধি হাদে সেই সে ভাবনা थाकि थाकि मन बुद्ध ॥ 🛷 🐎 💛 ३० कि इन अस्टर् হিয়াজর জর বিঁধল সন্ধান শরে ৷ জর জর কৈল **ারাণ পুত**লি মন সত হাতী বুরে ॥ ় চণ্ডীদাস বলে শুনহ রসিক 20 মাগর চতুর কান। হইবে দরশ করিবে পরশ ইহাতে নাহিক আন॥

পুনবেরি--পুনর্কার
 ১৭। নিঁদের আলিস--নিজার আলক্ত ৃত্ম হয় না ।/
 ২১-২৪। মলথের শরবিদ্ধ হইয়া আমার ওদয় ও মন
জজ্জিরিত হইয়াছে। আমার মন মৃত হতীর

8

প্ৰায় উচ্চুন্ধল হইয়াছে।

15 to 1

নবান কিশোৱী মেধের বিজবি চমকি চাহিয়ে গেল। সঙ্গের সঙ্গিনী সকল কামিনী ততহি উদিত ভেল। সই, জনমিয়ে দেখি নাই হেন নারী। ৫ রঙ্গিম ভঙ্গিম ঘন সে চাংন গ**লে সে** মোভিম হারি॥ শ**ঙ্গে**র সৌরভে ভ্রমরা ধাওয়ে ঝকার করয়ে যাই। অঙ্গের বসন যুচায়ে কখন ১০ ু সঘনে ঝাঁপয়ে তাই॥ মনের সহিতে মরম কৌতুকে স্থীর কাছেতে যাই। গসির চাহনি দেখালে কামিনী পরাণ হারান্থ ভাই॥ চলন ভক্তিম অতি স্থরঙ্গিম চাপটিলে জীবন মোর। অঙ্গুলির আগে টাদ যে ঝলকে পড়িছে উথলি জোর॥ চাহে যাহা পানে वधरत्र भन्नारम २० দারুণ দরশি ভার। হিয়ার ভিতরে কাটিয়া পাঁজরে विंधिता वान (य कात ॥

কর কর হিয়া রহিল পাড়িয়া
' চেন্ডন নহিল মোর। ২৫
চণ্ডাদাস কহে ব্যাধি সমাধি নহে
দেখিয়া হইলাম ভোর॥

১। विकृति-विद्युर।

৩-৪। সঙ্গের সহচরী কামিনীগণের মধ্যে উপস্থিত হইন। শ্রীকৃষ্ণ দেখিতেছেন, রমণী বিঞ্লির গ্রায় তাঁহার চক্ষু ঝলসিয়া স্থীগণের সহিত মিলিও হইলেন। তত্তহি — তাহাদের মধ্যে।

- तहे—प्रथा ; जीत्नारकत्र मरकायन नरङ ।
- ৬। নানা রঙ্গ-ভঞ্ন করিয়া খন খন চাহিতেছে।
- ৭। মোতিম হারি--মতির হার।

১১। 'সখন' এই শব্দের পরিবর্ত্তে কথন' এই পাঠও আছে। কিন্তু 'সখন' পাঠই সঙ্গত। কথন গামের কাপড় ঘুচাইতেছে, আবার তাড়াতাড়ি চাকিতেছে।

১২-১৫। মনের সহিতে মরম কৌতুকে স্থির কাঁথেতে বাচ। হাসির চাহনি দেখালে কামিনী প্রাণ হারাত্ব তছ॥--পাঠাস্তর।

১৬। পাঠাস্তর-চলন ভঙ্গা অতি স্থরঙ্গা।

১৯। উথালর পারবর্তে উছলি পাঠও আছে।

২>। চাহনি--পাঠান্তর; দরশি-- দৃষ্টি।

২৩। জার---বাহাতে জজর করে--মার---পাঠান্তর।

२७। नगांध-(नग)

২৭। ভোর –বিহবণ।

nimia :

পথে জড়াজড়ি দেখিতু নাগর স্থির সহিতে যায় শি

সকল অঙ্গ মদন তরক হসিত বদনে চায়॥ সই, কেমন মোহিনী সে। যদি পাই সহায় এমনি হয় তা সনে করি যে লে॥ দীল মুকুতার হার শব্বিত শোভিত দেখি যে ভাল। যেন ভারাগণ উদিত গগন ১০ চাঁদেরে বেডিয়া জাল। কুচ যে মণ্ডলী কনক কটোরি বনালে কেমন ধাতা। হাসির রাশি মনের খুসি দান করে যদি দাতা॥ 20 চণ্ডীদাস করে मान यमि नर्ट কি জানি মাগিবা ভাষ।

भन्नत्रक्र--भाठाखत् ।

१। (म - (मह. (श्रेम।

৮- । भाषा इत-

( क ) নীলমুকুতা হার বেক হা শোভিত দেখিছু ভাল।

অপ্যশ রহি যায়॥

(খ) গলিত আকার মুকুতা হার শোভিত দেধিকু ভাল।

তাহা না পাইয়ে

১ । তারাগণ বেন লালের ন্থায় চাদকে বেভিয়া
আছে; অববা, লাল = সমৃহ। নীল মৃ্জায় ৽
হার গলদেশে লভিত রহিয়াছে, এই মৃ্জাভাল
নক্ষরের ন্থায় তাহার মৃ্ধশনীকে বেইন করিয়া
আছে।

२२। कछोत्रि-वाही।

१८। वनाल-निर्माण कतिला

১৬-১৯। চণ্ডাদাস বলিভেছেন, তুমি ত ্যাজ্ঞা করিবে; কিন্তাক জানি, যদি গে দান না করে, তাৰা হইলে ত বড় অপৰণ থাকিলা যাইবে। পাঠান্তর :-- চণ্ডাদাস কহে বদি দান হরে

কি প্রানি মাগিবে তার।

ঠটার ঝলকে পরাণ চমকে

তিমিরে লাগরে ভর॥

6

আশাবার।

রমণীর মণি পেখিমু আপনি
ভূষণ সহিতে গায়।
দেখিতে দেখিতে বিজুরি ঝলকে
থৈরযে থৈরয নয়॥
সই, চাহনি মোহিনী থোর।
মরমে লাগিল হেরিয়া বুঝিল
ক্ষপের নাহিক ওর॥
বদন ছাঁদ কামের ফাঁদি
বুরিয়া বুরিয়া কাদে।

কেশের আগ চুম্বয়ে টাগ ১০ ফিরিয়া ফিরিয়া বাঁধে॥

किवियो किवियो विदिध

বসন খসয়ে অঙ্গুলি চাপয়ে

কর সে করচে থুইয়া।

দেখিয়া লোভয়ে মদন ক্ষোভয়ে

কেমনে ধরিব হিয়া॥

জলের কান্ধারে কৈশের সাঁধারে সাঁপিনা কাগিল মোয়!

কেমনে কামিনী আছুয়ে আপনি

এমন সাগিনী থোয়॥

দশনের কাঁতি মুকুভার পাঁতি ২০

হাসিতে উগারে শশী।

<sup>ক</sup>িরাণ পুতলি হইল পাগলী

মরমে লাগিল পশি॥

্য **ওধু** যে হিয়া ব**হল পড়িয়া** বস্তু যে চলিল ভায়।

চণ্ডীদাস কয় ফিরি দেখা হয়

ভবে সে পরাণ রয়॥

৪। বৈর্ব্যে বাকে না, অর্থাৎ আনে বৈর্ব্য থাকে না। 'প্রাণে প্রাণ বাকে না,' এফনত আমরা বলিয়া থাকি। পদকল্পতকতে পাঠ আছে,—"বৈর্ধে বৈরজ হয়" ইহার সঙ্গত এর্থ হয় কি শৃ

ে। থোর—ঈবৎ, অল্প।

৬ পাঠান্তর—মরমে বাধ**ত্ব হেরিয়াভূলিত্ন**।

৮। সুন্দর মুখধানি যেন কন্দর্প ধরিবার ফাঁদি বিশেষ: কন্দর্প ঐ মুখে বাধা রহিয়াছেন, পণাইবার যো নাই, সেই জন্ম বেন কাদিতেছেন। অর্থাৎ মুখথানি এত সুন্দর যে, দেখিলেই প্রেমের উদয় হয়।

১০। টাগ - জন্ম।

১৩। করচ—কটীদেশ। কাপড় ধসিয়া যাইতেছে, রমণী কটীদেশে হাত গ্রাধিয়া অঙ্গুলি ধারা চাপিয়া গাধিতেছে।

ว**४। (कांच्रा— क्यूक दश्र, हकल द**ग्न।

২০। কাতি—কান্তি।

২১। উপারে—উদগীরণ করে, বাহির করে। হাসিলে দম্বপংকি হইতে চল্লের ক্সায় শোভা বাহির হইতেছে।

২৪। পাঠান্তর---

শূন বে হিয়া রহণ পড়িয়া

বস্ত রহণ তায় :

তুড়ি।

বেলি সমকালে দেখিকু ভালে পথেতে যাইতে সে।

নয়ন যুগল জুড়াল কেবল চিনিতে নারিমু কে॥ সই, সে রূপ কে চাহিতে পারে। অঙ্গের আভা বসন শোভা পাসরিতে নারি তারে ॥ মুকুর সহিতে বাম অঙ্গুলিতে কনক কটোব্রি হাতে। সিঁথায় সিন্দূর ন্<u>য়ানে কাজ</u>র ১০ মুকুতা শোভিত নথে॥ নীল শাড়ী মোহনকারী উছলিতে দেখি পাশ। স'পিন্ম চরণে কি আর পরাণে দাস করি মনে আশ। কুচযুগ গিরি কনক কটোরি শোভিত হিয়ার মাঝে : চমকিয়া যায় ধীরে ধীরে চায় ঘন না চাহে লোকলাজে॥ कि দिव উপমা २० কিবা সে ভঙ্গিমা চলন মন্থর গতি। কোন ভাগ্যবানে পাইয়াছে দানে ভজিয়া সে উমাপতি ॥ মূরতি সে নয় চণ্ডীদাসে কয় বধিতে নাগর জনে। অমিয়া ছানিয়া যতন করিয়া গঠিল বুঝি অনুমানে। )। (विम--(विमा। अनकारम-- अवनारम। ভাবে—ভাগ্যক্রমে । - (मिथिया (केवल ठक्कू क्ष्ंहिया (शन माळ, किल চিনিতে পারিলাম না। ৬। অঙ্গের জ্যোতিতে 'বসুনধানিও শোভাষয়

হইয়াছে ৷

১১। মাথে পাঠান্তর।

১৩। যথন শাড়ীট দরিয়া যাইতেছে, তথন ভাহার শরীরের পার্যদেশ দেখা যাইতেছে।

১৫। তাহার রূপে মৃক্ষ হইয়া মনঃ প্রাণ তাহার চরণে সমর্পণ করিয়া মনে মনে ইচ্ছা করিলাম ধে. তাহার দাস হইব।

১২ দানে পাওয়: ভি

র কিনিয়া পইবার সাধ্য

কাহারও নাই

— জিনিসটি যে অমূলা !

২৪-২০। চণ্ডীদাস বলিতেছেন, এটি সাধারণ স্ত্রীমূর্ত্তি নতে ---রক্ত-মাংসের শরীর নহে। বাঁটি অমৃত দির। বিধাতা ইথাকে সঠন করিয়াছেন--উদ্দেশ্য গ নাগর-বধ।

তুঙি।

হরিণী নয়নী **ডডিৎ ববণী** দেখিতু আঙ্গিনা মাঝে। কিবা সে দিয়া অমিয়া ছানিয়া গড়িল কোন বা রাজে॥ সই, কিবা সে স্থন্দর রূপ। চাহিতে চাহিতে পশি গেল চিতে বড়ই রসের কৃপ॥ সোনার কটোরি কুচযুগ গিরি কনক-মন্দির লাগে। চ্ডাটি বনালে ভাহার উপর সে আর অধিক ভাঁগে॥ কে এমন কারিগর ় বনাইলে ঘর দেখিতে না পান্ন ভারে। দেখিতে পাইথু শিরোপা যে দিথু এমতি মন যে করে॥ ঐছন মন্দিরে শয়ন করয়ে

সে মেনে নাগর কে।

२ (

36

স্কদয়ে আছিল বেকত হইল 'দেখিতে পাইমু সে॥

হিয়ার মালা থোবন ভালা ২০ পশারী পশারল থেন। চাঁদ যে কাটিয়া চাকা যে গড়িয়া ভাহাতে বৈসাল হেন॥

মধর-স্থা পড়িছে জুদা

দশন-মুকুতা শশী।
মোর মনে হয় এমতি কর্য ভাহাতে যাইযা পশি।

চণ্ডীদাসে কয় ও কথা কি হয়

মরম কহিলে বটে।

সার কার কাছে কহ যদি পাছে

তবে সে কুৎসা রটে॥

১। তরুণী বৰণী-পাঠাস্তর।

৮-১১। উগ্রও স্তন দোনার মন্দিরের আয়—স্তানের উপর চুচুক (বোটা) মন্দিরের উপর চূড়ার আয় অধিকতর শোভা পাইতেভো। লাগে—বোধ হইতেছে।

১৪: শিরোপা -পুরস্কার ·

১৮। তাহার সুন্দর রূপ "চাহিতে চাহিতে পাশ গেল চিতে"; সুতরাং বাছজানশু এইয়। তাহাকে কেবল অন্তরেই দেখিতেছিলাম, এখন বাছজান হইয়াছে--এখন বাহিরে দেখিতেছি।

২০-২০। পশারী - দোকানদার পশারল - বিছাইয়া রাখিল।
রমণীর গণায় মালা রহিয়ছে—দেখিয়। বোধ
হই তেছে থেম, কোন বিক্রেতা চাঁদ কাটিয়া খণ্ড
খণ্ড করিয়া ধৌবনের পণ্য সাজাইয়। রাখিয়।
দিয়াছে। হিয়ার মালা অর্থে শুনও হইতে
পারে। পাঠান্তর—চাকুতে কাটিয়া চাক যে
কবিয়া।

শ্রীগান্ধার।

বদন স্থল্পর যেন শশধর
উদিত গণনে হয়।
ভাটার ঝালকে পরাণ চমকে
ভিমির পাইল ভয়॥
নামান চাকনি বিষেধ্য শাস্তি

নয়ান চাহনি বিষের ধায়নি তিখিন তিখিন শর।

দেখিয়া অন্তর উপজিল জ্ব মদন পাইল ডর॥ সই, কে বলে কুচযুগ বেল।

সোনার গুলি শোভিছে ভালি ১০ যুবক বধিবার শেল॥ সাজামু লম্বিত করিবর শুণ্ডিত কনক ভূজ যে সাজে।

হেরিয়ামদন গে**ল সে সদন**মুখ না তু**লিল লাজে**॥
মাজা যে ড**ম্ব**রু সিংচিনী আকুণ্ব

় নিতম্ব বিমান চাক।

চবণ কমলে ভ্ৰমরা দোলয়ে

চৌদিকে বেডিয়া ঝাঁক॥

সফুলির মাঝে যাবক সাজে ২।
মিহির শোভিত জ্বন্ধ।
চণ্ডীদাসে কয় কি জানি কি হয়
লখিতে নারিফু তন্তু॥

तिरवत शावि - विषय गांथान ।
 विख्की रिम यनि - शांठा खतः

৬। তিখিন-ভীক্ষ

৭-৮ দেখিয়া সদয়ে জালা উপস্থিত হইল। মদন
দৈখিল যে, তাহার ফুলশর অপেকা ইহার দৃষ্টি
অধিকতর প্রশার; স্থতরাং নিজের প্রতিপত্তি
লোপ হইবৈ, এই ভয় হইল।

১২। করিবর গুণ্ডিত হাতীর প্রুড়ের ঞায়।

১০: কনক চুড়ি যে সা**ল্লে — পাঠান্ত**র।

১৭। বিমান চাক — বিমান গর্বে রথ; চাক – চাকা। রথচক্তের স্থায় গোলাকার নিডম্ব

২০-২১। যাবক---আল্তা। ১কু--যেন। অঙ্গুলিব আলতা সর্যোর নায় থক থক করিতেছে।

#### শীপান্ধার :

একে যে স্থন্দরী কনক পুতলি খঞ্জন লোচন তার। ভ্ৰমরা বলয়ে বদন কমলে তিমির কেশের ধার॥ महे. नवीन वालिका (म। দৈবে উপজিল দেখিতে না গাইল শ্বমতি না দিল কে ॥ নঘন উজরে পরাণ ছটয়ে रिधत्रय छेश्रील (य) সঙ্গে কেচ নাই ংন কচি ভাই কাহারে স্থগাব কে॥ দক্ষ দিজ দাডিম্ব বীজ ওষ্ঠ বিশ্বক শোভা। দেখিয়া যুবকে মদন কোপে মনেতে হইল লোভা। 50 গলায় মাল শোভিত ভাল

তামুল বদনে তার।

বহিছে পিঙ্গল ধার॥

আইল আপন ঘরে।

তৃমি কি করিবে ভারে॥

চব্বিত চৰ্ববণে

চণ্ডীদাস বলে

বাজার ঝিয়ারি

পড়িছে বদনে

গিয়াছিল জলে

ऋन्पत्री नागती

वृत्रायः—ख्येष करत्।

७ : (मर উপिक्क - भाठासतः

৮। নজরে নজরে পরাণে পরাণে – পাঠান্তর।
 আমার পুথির পাঠের এইরূপ অর্থ হয়;—
 ভাহার উজ্জল দৃষ্টিতে প্রাণ ছট্ ফট্ কণিভেছে
 ও বৈর্ধ্য লোপ পাইতেছে।

১১ দস্তবিগ-নন্ত তৃইবার হয়, তাই বিজ । দশুটি যে পাঠান্তর।

১৪। যুবতীকে দেখিয়া মদনের উদ্রেক হয়। কোথাও এই বিকট পাঠ স্বাছে, - দেখিয়া জুলুফে মদন ক্লুফে...

১৯ শোভিত পিঙ্গল ধার- -পাঠান্তর। পিঞ্গল ধার—পিঙ্গল বর্ণের ধারা।

२)। আहिन पतान चरत পঠि। छत्।

>>

তুড়ি।

চম্পক বরণী বয়দে তরুণী হাসিতে অমিয়া ধারা। স্থচিত্র বেণী তুলিছে জনি কপিলা চামব পারা॥ সখি, ষাইতে দেখিমু ঘাটে হরিণ-নয়নী জগত-মোহিনী ভান্তর ঝিয়ারি বটে॥ হিয়াজার জার . খসিল পাঁজর এমতি করিল বটে। চলল কামিনী বঙ্কিম চাছনি विधिन भन्नान करहे ॥ না পাই সমাধি কি হৈল বেয়াধি মরম কহিব কারে। ব্যাধি সমাধি হয় চণ্ডীদাসে কয় পাইবে যবে তারে॥ 30 .

-1					9·
	শুন হে প	রাণ	স্থ্ৰ	সাঙ্গাতি	
	C	কা ধনী ম	<b>জি</b> ছে	গা।	¢
	যমুনার তী	রে	বসি ভা	র নীরে	
	পায়ের উপরে পা॥				
	গঙ্গের বস	न	করে	ছে আসন	
•		লোয়ে দি	য়াছে বে	ागी ।	
	উচ কুচ মূ	লে	হেম হা	त्र (मारन	٥٥
	স্থমেরুশিখর জিনি॥				
	সিনিয়া উ	ঠতে	নিভ	ম্ব তটাতে	
	পড়ে'ছে চিকুর রাশি।				
	কাদিয়ে অ	<b>াধার</b>	কল	ক্ষ চাদার	
	শরণ লইল আসি॥				٥٢
	কিবা সে তু	হঙলি	*(%)	বালমলি	
	*	রু শরু এ	শিকলা		
	শাঁজেতে ই	<b>উদ</b> য়	∙ স্থ	ধু স্থাময়	
	G	দখিয়ে হ	ইবু ভো	লা॥	
	<b>ьरन</b> नीन	শাড়ী	<b>নিঙ্গ</b> ড়ি	নিঙ্গাড়ি	२०
	9	ারাণ সহি	ভ মোর	t	
	त्महे देशर	মোর	হিয়া	নহে থির	
	2	ানমথ জ্ব	র ভোর	11	
	কহে চণ্ডী	गटम	বা <b>শুলী</b>	আদেশে	
	*	ণ্ডনহে না	গর চন্দা	1	२৫
	সে যে বৃষ	ভামু	রাজা	त्र निकनी	
	•	াম বি <b>নো</b>	मिनी द्र	ধি। ॥	
<b>&gt;</b> ₹	সিনিয়া—	স্থান করিং	at i		_
\$8,\$¢	৷ ভাহার ৫	কেশ ঘোর	ক্ষধ্বৰ্ণ	। বর্ণে পর	† <b>ভি</b> ড
				দর শর্ণ লইয়	
	ভাই চাঁচ	क्राक्ष ।	কণক ট	ঠাদার— পাঠা <del>ৰ</del>	<b>ছ</b> র। .
*************		পোড়া। র প্রেথম	তিথিগুটি	াতে শীণ চয়	দক্ষা
• •				ণীর শাঁধাৰে	

সেই ক্ষীণ চল্লকলার ভার।

```
8 । अनि-- (यन ।
৭। "ভামর—বৃষভামুর।
১১.। পরাণ তটে— প্রাণের অন্তন্তনে, ভিতরে।
১২। স্মাধি-শান্তি।
              >> 1
              তুড়ি।
   থির বিজুরি বরণ গৌরী
         পেখিতু ঘাটের কূলে।
  ক্রানড়া ছাঁদে কুবরী বাঁথে
          নব মল্লিকার মালে॥
       সই মরম কহিয়ে তোরে।
   আড় নয়নে ঈষৎ হাসিয়া
         বিকল করল মোরে 🛭
   ফুলের গেরুয়া লুফিয়া ধরয়ে
          সঘনে দেখায় পাশ।
   উচ কুচমুগ বসন যুচায়ে ১০
       মুচকি মুচকি হাস॥
   চরণ কমলে
                     মল্লভোড়ল।
        স্থন্দর যাবক রেখা।
   কহে চণ্ডীদাস হৃদয়ে উল্লাস
          পালটি হইবে দেখা।
                          36
 >। থির⊹–স্থির।
৮। গেরুয়া—গুলহ, স্তবক।
১২। মল্লভোড়ল-ভোড়া-এক রকম মল।
             1060
              ধানশী।
     স্বঞ্জনি, ও ধনী কে কহ বটে।
   গোরচনা গোরী নবীনা কিশোরী
```

নাহিতে দেখিনু ঘাটে॥

ভোগা--বিহবণ।

' মাজিতে উনয়—পাঠান্তর।

২৪। কোন মুদ্রিত পদকল্পতরতে আছে,— দাস লোচন কহয়ে বচন - ইতাদি। ইহা সম্পূর্ণ ভূল। এদেশের আখাবান বৃদ্ধ বনিতা জ্ঞানে এ পদ চণ্ডী-দাসের। আর চণ্ডীদাসের সঙ্গে গাঁহার একটু পরিচয় আছে, তিনিই বলিবেন যে চণ্ডীদাস ভিন্ন এ পদ অপর কাহারও হইতে পারে না। এয়ে ওস্তাদি হাতের লেখা।

58 1

etcate i

স্থীগণ সঙ্গে যায় কত রঙ্গে যসুনা সিনান করি। অঙ্গের সৌরভে ভ্ৰমরা ধাবয়ে শঙ্কার করয়ে ফিরি॥ নানা আভরণ মণির কিরণ সহজে মলিন লাগে। নবীন কিশোরী বরণ বিজ্বরি সদাই মনেতে জাগে॥ সই সে নব রমণী কে। চকিতে হেরিয়া জ্লত এ হিয়া ধরিতে নারি এ দে॥ পুন না হেরিলে না রহে জীবন তোমারে কহিন্ম দড়। কহে চণ্ডীদাস পুরাহ লালস নাগ্র আতুর বড়॥ 30

३३। (म-(मर्।

১०। पंड - पृष्ठात-श्रितः

>৫। আতুর—কাতর।

1 34

ভুড়ি।

কনক বরণ কিয়ে দরপণ নিছনি দিয়ে যে তার। কপালে ললিত চাঁদ শোভিত স্থন্দর অরুণ আর॥ সই, কিবা সে মুখের হাসি। পাঁজর কাটিয়া হিয়ার ভিতর মরমে রহিল পশি॥ গলার উপর \_\_\_\_\_মণিময় হার গগন মণ্ডল (হরু। কুচযুগ গিরি কনক গাগরি >0 উলটি পড়য়ে মেরু॥ গুরু যে উরুতে লম্বিত কেশ হেরি যে স্থন্দর ভার। বহিয়া ছুকুল বরণের ফুল জলদ শোভিত ধার॥ >0 ' কহে চণ্ডীদাসে বাশুলী আদেশে হেরিয়ে নখের কোণে।

>। কিয়ে--কিবা; **কিবা দর্পণের** স্থায় **স্বচ্ছ**।

এমন কোন বা জনে॥

২। নিছনি—বাণাই। নিছনি যাই যে তার— পঠিভিব।

বিহি আনি দিল

৩, ६ : क्लाटन ठटन व छोत्र तिन्त्रत रह छो।।

৮, ৯। নীল শাড়ীব উপর মশ্বির হার, ভারকাখচিত ত্বানমগুলের ক্লায় শোভা পাইতেছে।

১০,১১। স্বৰণেৰ কলসীর স্তায় স্তনযুগল দেখিরা, স্থমের পর্বত পরাজিত হইলাম ভাবিয়া ছ:খে ,উলটিরা, পড়ে।

১২,১৫। গুরু উরুতে সুক্ষর কেশভার স্বিত হট্যা আছে।

শঠোন্তরঃ -( > ) উরু বে শখিত কাম যে সম্বিত হেরি যে শব্দিত ভার। চরণ ফুল হেরিয়ে ছকুল জনধি সোঙরি ধার। (২) উক্ষে উক্তে লখিত কেশ হেরি যে স্থন্দর তার। চরণের ফুল হেরিয়া ছুকুল জগদ শেভিত ধার। কোন পাঠেএই ভাল অর্থ হয় না। b, ১৯। विश्-िविधि । পাঠा खत्र-कनम मकत्म वसूनात कृत्न भिनायन (कान प्रत्। 361 कृष्टि । কাঞ্চনবরণী কে বটে সে ধনী **धीरत धीरत हिंग गा**र । হাসির ঠমকে চপলা চমকে নীল শাড়ী শোভে গায়॥ মোহিত মদন দেখিতে বদন নাসাতে তুলিছে তুল। স্থাবিশাল আঁখি মানস ভাবিয়া ছুটিছে মরালকুল। অাখিতারা ছটি বিরলে বসিয়া স্ঞান করেছে বিধি। নীলপদ্ম ভাবি লুবধ ভ্রমরা 🐃 ূটিতে**ছে'** নিরবধি<sup>°</sup>॥ কিবা দম্ভভাতি মুকুভার পাঁতি किनिया कुम्मक कुँ छि। 🏄 िनं थाग्र निन्मूब জিনিয়া অরুণ कारन कर्नना ए छ ॥

শ্ৰীকল যুগল 🐪 জিনি কুচযুগ পাতলা কাঁচলি তাহে. তাহার উপরে **মণিময়**হার উপমা কহিব কাহে॥ কেশরী জিনি কুশ মাজাখানি মুঠে করি যায় ধরা। গজ কুম্ব জিনি নিতম্ব বলনি উরু করিকর পারা॥ জিনিয়াকনল ২৫ চরণ যুগল মালতা রঞ্জিত তায়। কাহে না ভুলন মঝু মন তাহে মদন মূরছা পায়॥ কাহার নন্দিনী কাহার রমণী গোকুলে এমন কে। কোন পুণ্যফলে বল বল সখা সে রামা পাইল সে॥ চণ্ডীদাস বলে ভেব না ভেব না ওহে শ্যাম গুণমণি। ভূমি ক্ষেতাহার সরবস ধন তোমারি আছে সে ধনী॥ १। मानम-नानम भरतावत्र। २०। वननि-गर्रन। ce । मन्नरम-नर्माय । 196 শ্বল মিলন--রাগ অজ্ঞাত। এ বোল শুনিয়া স্থবল সাঙ্গাত কহেন উত্তর বোল। "ইহার বচন জানিয়ে সকলি করিব এখন ওর॥ ¢

কহেন স্থবল স্থা।

ভোমার চরিভ করিব বেকভ তা সনে করাব দেখা॥ বুঝিসু করম তোমার মরম 🔊 न त्रममग्न को न । ভা সনে মিলন করাব যতনে ইহাতে নাহিক আন ॥ তোমার মরম স্থামি ভালে জানি रुनर मत्रम-मथा। বুঝিব চরিত জানিব বেকত ভোমারে করাব দেখা ॥ 20 ভাল সে জানিল মনের গুমান আমি সে করিব তাই।" অভি কুভূহলে স্বলের বোলে ় আনন্দ হইল তাই॥ ম**র্ম্মস**খাগণ বসি পঞ্জন স্থবল ত্রিবিট তথা। **निष्यक्ष**क এ সধুসঙ্গল করেন মরম কথা। এপিচ মদন তেঁইদে *মুজ*ন কহিতে লাগিল ভায়। २० স্থবল বচন মৰ্শ্মত বেকতা কহন নাহিক যায়॥ কমলনয়ন কহেন বচন শুনহ বচন মোর। অতি সে হরায় **हछीमान** याय রুকভামুপুর ওর॥ ७व--जोमा, मोमारना । (र १ छ – रांक । (छामात्र চরিত তাহার निक्रे বাক্ত করিয়া তাহার সহিত্য তোমার দেখা করাইয়া দিব। পাঠক পরে দেখিবেন, সুবল ত্রীবাধার সমক্ষে ত্রীক্রকের যুর্ত্তি প্রকাশ করিয়া **डीहांत्र मत्नाहरण करतन।** 

১৬। গুৰান – **গুপ্ত ভাব।** ২৬। মৰ্মত বেকতা— মৰ্ম্ম ব্যক্তকারী।

761

कानड़ा।

"শুন প্রাণস্থা সামি সে জানিয়ে অনেকু টোনার খেলা। যাইব ত্বরিতে তাহাই খেলিতে শুন পরাণের কালা।" সেই যদ্ধরায় কহে তবে তায় "কিবা সে খেলিবে ভাই। দেখি তাহা আমি আপন নয়ানে তবে সে প্রতীত যাই॥ স্থাহে স্থবল এইখানে খেল কোন্সে করিবে টোনা। যদি মনে লাগে এই হিয়া জাগে তবে সে যাইব জানা॥" "বৈসহ আনন্দে তরু আশাননে আমি সে ধরিব ছলা।" কান্থুর গোচরে স্থুবল সাক্ষাত করিতে লাগিল খেলা॥ আবেশ করিল 🔧 আগে সে ধরিল পূর্বর অবতার লীলা। শ্রীরাম ধাসুকী সহিত্তে জানকী করিতে লাগিল খেলা॥ তাহাই ছাড়িয়া ्र भिरुপान रग्न मखवक जामि कर्ति। এই সব খেলা করেন স্থবল (मर्थन প্রাণের হরি॥ তাহা ছাড়ি পুনঃ ধরেন তখন

নূসিংহ রূপের কায়া।

<u>ছাতে অন্ত টাঙ্গি</u> প্রচণ্ড মূরতি >७। धाम---निकटि। **ठ**खीमांम (मर्ट्य (ठग्ना ॥ २৮ २०। बाद कान मूर्ति (पश्चित बाह्य कि ना। ২.। টোলা—বশীকরণমন্ত্র, ইন্সকাল। se! यात्रम-- आहे मल क्छोमात्मत्र शाम नाना व्यर्थ ₹• | नानकृ करेगारहः अधारन व्यर्भ, अकाम। বরাড়ি। পুন সে ধরিল সভি মনোহর 166 এ নব মূরতি বেশ। বরাড়ি। ছাড়িয়া সে তমু দেখাইল জমু পরিধান নীল বসন ভূষণ অতি সে চাঁচর কেশ॥ ধরি হলধর রূপ। কাঁথেতে লাক্ষল দেখি তাহা ভাল নব সে নিলন ভুবনমোহন বড়ই রসের কুপ॥ চিত্রের পুত্তলি যৈছে। তেজি সেই কায়া আর ধরে মায়া कनक मञ्जीत স্থচারু গঠন ধরিশা মৎস্থের তমু। বেকত দেখিল তৈছে ॥ সোণার প্রতিমা শৰ্ম চক্ৰ গদা পদ্ম বিরাজিত বিজুরি উজর মূরতি **হইলা** তমু॥ নয়ান ভঙ্গিমা তায়। তাহা ছাড়ি সথা আর দিল দেখা কনক কটোরি বদরী সমান কুর্ম্মের আকৃতি সতি। দেখি মন মূরছায়॥ >0 বরাহ বামন আদি আর যত নীল শাড়ী তাহে ওড়নী ভঙ্গিমা অবতার তথি॥ চাহনি কটাক্ষ বাঁকে। তাহা দেখাইল ভাই সে স্থবল মদন কম্পিত হয়শ বেকত 20 "দেখহ কালিয়া শ্যাম : সেই সে মূর্তি দেখে॥ এ সব মূরতি তাহার পীরিতি মধুর মূরতি হেরি যতৃপতি কহত আ্মার ধাম ॥" হরষ পাইল ভায়। বরাহ মূর্তি 🕝 দেখায়ে আকৃতি পূরবে দেখিল বেমন মূর্তি দেখিতে সুবল স্থা। সেই মত অভিপ্রায়॥ সকল মূরতি (४४ करन करन মন**ম**তহাতী ধরিতে না পারি মরমে লাগিল ভাহা। আর কোন আছে দেখা। এই অমুমানে, করি নিরীক্ষণে **ठ**खीनाम वरन মনেতে না লাগে পুলক মানিল দেহা ॥ যতেক দেখিল খেলা। কংহন স্থ্ৰল• কেন দেখাইমু চাহি সধা পানে কমলনয়ানে আর কোন আছে দীন।॥ 🐪 মনেত্বে লাগিল ভাহা। ₹8

কহ কহ ভাই প্রাণের কানাই

এই সে কেমন দেবা ॥

ছাড়িয়া মৃত্তির স্থবল আকৃতি

হইল যেমন স্থা। ৩০

নন্দের নন্দন মোহিত মানস

চণ্ডীদাস দেখে একা ॥

৫-৬। গৈছে—যাহাতে। সেই কামিনী নবপ্রক্টিত

নলিনীর স্থায় অথবা চিত্রাভিত অতি স্ক্রের মৃর্রির

স্থায়।

৭। মঞ্জার—নৃপ্র।

৮। তৈছে - ভাহাতে।

৯। উজর---উজ্জা।

২০। অভিপায়-শর্মতোভাবে সেইরূপ।

२८। (कन - (कमन।

যাগ নেপাইলান ভাহা মনে লাগিল কি ?

। ८८ । व्हिंड

নন্দ তুলালিয়া "শুন শুন ভেয়ে (य प्रिंग (इन (थिन। দেখাইমু এত মনেতে লাগিল কহ দেখি বনমালী॥" ক্ষে নন্দস্ত তায়ে "আমার মর্ম ভেয়ে ৫ যে দেখিতু বৃকভাত্মপুরে। তাহাতে ইহাতে খেদ কিছু নাহি বৰ্ণভেদ পশি পুন রহল অন্তরে ॥ সেই যেন কমলিনী দেখিল তেমতি খানি শুদ ভাই স্থবল সাঙ্গাত। ও জন যতন করে দেখাহ আমারে বেরি কেমনে ইহারে দেখি সাত ॥" ' ক্ৰেন স্থবল ভাহে "আমি মিলাইব ভোহে ইহাতে অশুণা নাহি কিছু।

গিয়া বৃকভানুপুরে খেলাইব কুতৃহলে ১৫
মোহিত করি তাহে পিছু॥"

যাব পঞ্চশিশু সনে সবে হৈয়া একমনে
খেলিব বিনোদ খেলা অভি।

মায়া ছলে মুগ্ধ করি মোহন মূরতি ধরি
অনায়াসে দেখাব যুবতী॥ ২০
এই যম্নার তটে বৈস ভাই স্থানিকটে
চম্পাকের বন সম্পাম।

চণ্ডীদাস স্থ চিতে দেখে তাহা একভিতে
গভরেত বংশীগুণ গান॥ ২৪।

💶 ভাই, আমার মনের কথা এই।

৭। থেদ---স্ত্র---সামান্ত।

२४। व्यर्थताथ इडेन ग।

বহু তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ

२२ ।

क विद्या

ধরি অমুপম বাজিকর যেন খেলায় কতেক তানে। স্থবল ত্রিবিট এপিচ মদন मधु-मऋ लित भत्न॥ কহে বিদৃষক "শুনহে স্থবল নানা যন্ত্ৰ লেহ সঙ্গে। তবে সে খেলিব নানা মত খেলা গাহিব নাচিব র**ঙ্গে**॥" নানা যন্ত্ৰ নিলা নানা সে প্ৰতিমা কাঠের পুতলি লৈয়া। আর যত নিল মধুর মধুর वाणिया वाणित हांशा॥ নানা বেশ ধরি যেন বাজিকর নাচায় পুতলি কায়া।

ক্লেক জানৱে মায়া ॥

বার নাহি অস্ত

্চলে পঞ্চজন হয়ে একমন ব্ৰুজামুপুর যায়।

পথে যায় তথি থেলা খেলে অতি

চণ্ডীদাস সুখী তায়॥

২০

বিদ্যক—মধুমকল ব্রাহ্মণ ও হাস্তরণপটু ছিলেন;
 সেই জন্তে গহাংকে 'নিদ্যক' নলা ইইয়াছে।

১২। বাজীকরের ঐক্রজালিক মূর্ত্তি।

১৯। তথি-তথায়।

501

ৰরাড়ি।

বৃক্তামুপুরে গিয়া কুতৃহলে
স্থবল এ চারিজনে।
রাজার ছুরারে এ গান বাজন
করেন আনন্দ মনে।
কেই গায় অতি কেই বায় তথি। ৫
আনন্দ কৌতুক মনে।

বুকভামু রাজা শুনি স্থললিত অতি সে মধুর তানে॥

রাজা কহে "কোন গুণীর গমন জান একজন খারে। ১

নেহত খবর আনহ গোচর

গিয়া একজন বুঝল কারণ "কেন বা আইলে ভোরা।

एक किया मिन एम हरता।

কোন দেশে ঘর কছত সম্বর ১৫ কি বটে তোদের ধারা॥

রাজা বৃকভামু পাঠাইল পুন লইতে ভোদের তরে।

কোন জন মোর ছয়ারে প্রবেশি 🗸 গায়ন বান্ধন করে ॥" কহে বাজীকর "শুনহে উত্তর
বিদেশে নোদের ঘর। .
গুণিজন হই আইনু হেথায়
লই আমাদের সর॥

এই সে লালসে হইল মানসে ২৫ আইল পঞ্চম বালা।

রাজার গোচর কহে বাজীকর দেখাব বাজীর খেলা॥

কিছু গুণগ্রাম করিব **সন্ধান** খেলিতে বাজীর খেলা।

এই সে কারণে আইল যভনে এ পঞ্চ করিয়া মেলা॥"

ভাল ভাল বলি আইল সেচর আইল রাজার পাশে।

চণ্ডীদাস কহে শুন মহারাজা ৩৫ বড় গুণিজন সে॥

e। বায়--বা**জা**য়।

১২। ভেজিয়া--পাঠাইয়া।

১৬। ধারা—ব্যবহার—অর্থাৎ তোমরা কি কর १

২৪। সর পাঠ করিলে মিল হয় বটে কিন্তু অর্থ হয় না। আবার 'সব' পাঠ করিলে মিল হয় না, কিন্তু অর্থ হয়।

२६। नानमा - इच्छा--- यरन এই देखा इटेन।

७७। श्रम्य-श्रा

৩২। মেলা-মিলন। পাঁচজন মিণিয়া আসিলাম।

₹81

ৰয়াডি।

চরকে পুছিল বৃকভামু রাজা

কোন গুণী এই বটে।
কেন বা আইল কোন প্রয়োজন
কহওঁ বচন ফুটে॥

কর জোড় করি কহে বরাবরি "শুনহে নৃপতি তুমি। বিদেশ হইতে পঞ্চ বাজীকর আইল বালক গুণী॥ বাজীর পুতলি অনেক আছয়ে নানা যন্ত্ৰ দেখি তথি। বহু গুণ জানে গায়ন নাচন শুন মহা নরপতি॥ কহে গুণিজন শুনহ রাজন 'খেলিব কিছুই খেলা'।" "ভাল ভাল" বলি রুকভান্থ রাজা 20 ৰবায়ে বাহির হৈলা॥ বাহির দ্বয়ারে বিচিত্র বিছানা পড়িল সকল জনে। তাহে वृक्छ.। देवर्रम श्रीतर्थ ডাকি সানি গুণিজনে॥ २० नृत्थ जाड्या निष मश्न जाउँ त রাণীবর্গ আদি করি। ঝরকা উপরে বসিলা হরিষে সব সহচরী মেলি II কৃত্তিকা মোহিনী রাধার জননী বৈঠল ঝরকা পরে। वित्नामिनौ त्राधा স্বন্ধী অগাধা 🧎 বৈঠল মায়ের কোড়ে॥ ললিতা স্থন্দরী অনসমঞ্জরী रेवर्ठन बाधात भारम। 90 ণত সহচরী চামর চুলায় 'পাখা ঝুলে প্রতি আশে॥ নানা সেবা করে প্রতি সহচরী আনন্দ কৌতুক বড়ি। চনক ঝারিতে বারি পূরি করি খরে খরে সব এছি।

তামুৰ বাটাতে রেখেছে হরিভে कर्श्व मिणान कति। চণ্ডীদান বলে নানা উপহার থাপিত যে সারি সারি॥

२१। वशांशा-याहात शतियांग हम ना। ०२। ভाग व्यर्थाय इहेन ना। ৩৬। এড়ি-রাখিয়া দিয়াছে। E • । থাপিত-স্থাপিত।

₹ 1

গরা। রাই কহে তবে কুত্তিকার আগে একি এ দেখিতে দেখি। কহেন জননী "स्न विद्यापिन বাজিকর উহ পেখি॥ কোন দেশ হৈতে এই পঞ্চ শিশু œ এই সে করিবে বাঞ্চি। ভোমার পিভার আবেশ হইল বাজিয়ার দেখিতে বাজি॥ তথির কারণ বাহির চুয়ারে বসিল ভোমার পিতা। 20 বাজিকর আগে দেখহ চাহিয়া এমত না দেখি কোথা॥" রাজা আজ্ঞা দিল গুণী পঞ্চনে কি গুণ জানহ ভোরা। খেলহ আনন্দে মূনের কৌতুকে কেমন বাজির ধারা॥ "শুন মহারাজা কি গুণ খেলিব কহ না উত্তর বাণী। এই পঞ্জনে

গুণ গুণ জেদ

व्यत्नक श्विमार्ड कानि ।

\_স্মবধান কর ব্কভামু রাজা খেলাতে করহ মন।" · চণ্ডীদাস কৰে রাঞ্চার গোচরে খেলায় সে পঞ্চজন॥ 8। উश्—उशाताः (पिय—पिविट्राइ) १। चारवर्ष-- हेळ्या ১৯-२ । আমরা পাঁচজনে বিভিন্ন প্রকার খেলা জানি।

थाञ्जी ।

আগে খেলে গুণী দশ অবতার দেখহ নয়নে চাই। খেলে নানা খেলা সেই পঞ্চবালা এক দিঠে দেখে তাই॥ মৎস্থ অবতার চারি ভুজধর শৰা চক্ৰ গদা পদা। তার পর আর দেখায়ে গোচর কুর্ম্মরূপ অমুসঙ্গ ॥ তার পর আর হইল সত্বর বরাহ আকৃতি কায়া। অস্তর হইল আনন্দে মগন (मिथरंग वाकित होगा। নৃসিংহমুরতি হইল আকৃতি শ্রবণ প্রভাপ বড়ি। হিরণ্যকশিপু জামুতে ধরিয়ে বিদারল নখে চি ড়ি॥

नर्थए इिंग, হৃদয় ভিতর টানিল একুশ ना**ड़ी।** কম্পিড মেদিনী হুহু হুহু স্বরে দীঘল নিশাস ছাড়ি ॥ তবে সে হইল ৰামন মুরতি ত্রিপদ হইল কারা।

বলিরে লইল পাতাল ভুবনে **(**नथारत्र ७ नव मात्रा ॥ তার পর হয় শ্রীরাম মূরতি কাঁধেতে ধন্মক শর। সুক্ষেতে মৈথিলী .**ज**नकनिमनी দেখি অতি মনোহর॥ তা দেখি রাজার মনে অতি হৃখ এ বড়ি মুরতি স্থখ। দেখিতে দেখিতে আর নহে চিতে দূরে গেল অতি ছখ। পুন তা তেজিল আবেশ হইল ভৃগুরাম অবতার। শ্রবণ প্রতাপে বস্থমতী কাঁপে মাথায় জটার ভার॥ অতি খরশান টাঙ্গীর বাখান নিঃক্ষেত্রি করিল এতে। অতি কুতৃহ**লে** চণ্ডীদাস বলে দেখি হুখ লাগে তাতে॥ ৩০। সুধ—সুথকরী। ৩৩। আবেশ হইল-রূপ ধারণ করিল।

२। ठाइे— र्हाहिबा। ৪ ' দিঠে - দৃষ্টিতে। ১৪। अद्य-भक्रा २०। मीचन--मीर्घ।

24 ७१। वाधान-वर्गना, गाथा।

२०

21 ञीन है।

রোহিণী-নন্দুন পুনঃ বলরাম ধরিল ধবল কায়া। হল কাঁধে করি আনন্দে মগন

ক্রিল বালির ছারা।
31. 3.64. শ্রাক্তা (See) । দেও (মা.

পুনঃ তা তেজিয়া বৌদ্ধ অবতার ৫ হইল মুরতি তিন। ভগ্নী সহোদর জগন্নাথ আর স্বভদ্রা তাহাতে চিহ্ন ॥ বলরাম পুনঃ হইলা তখন দেখি বৃকভান্ম রাজে। >0 দেখিয়া মুরতি পরম পিরিতি পাওল সে সভামাঝে॥ পুনঃ তা তেজিয়া কন্দী অবতার ধরেন মূরতি কায়া। অশ্বের উপরে ধরি ছুইকরে 20 সংহার অমুপ ছায়া। 🗸 নানা অবতার করিল সত্বর দেখিয়া মোহিত মন। দশ অবতার ভেদ দেখাইল দ্বিজ চণ্ডীদাস কন। २ ०

১৬। অমুপম সংহার-মৃতি।

कान्छ।

বাজিকর-বালা আর খেলে খেলা দেখায় পাণ্ডৰ বংশ। ধর্ম যুধিষ্ঠর ভীম সহোদর व्यर्क्त् धतिम वाःम ॥ নকুল আকৃতি ধরিলা মূরতি ं मेंश्राप्त क्रथ श्राय। দেখিতে রাজার চিত মন হরে ৃ নয়ানে দেখিল তায়॥ তেজি আনরূপ • ুধরিল তখনি 🗻 ় শিশুপাল রূপ হয়।

সূর্য্যবংশ কুল ভগীরথ-গণ অজ আদি করি নয়॥ নানা অবভার নানা রাজকুল দেখিলা অনেক খেলা। কহেন রাজন্ "আর কিবা জান 24 কহ বাজিকর-বালা॥" "আর খেলা আছে বৃকভামু-রাজে কহি যে ভোমার কাছে। একমন করি দেখহ রাজন্ খেলি এ সভার মাঝে॥" Ş٠٠ চণ্ডীদাস বলে পুনঃ সে ধরিল নন্দ উপনন্দ যত। যশোদা রোহিণী বরজ-রমণী তাহা দেখাইল কত॥ ২৩। বরজ—ব্রন্থ।

> \$ 3 সিশ্বুডা।

তবে সে হইল শ্রীদাম স্থূদাম স্তোক-কৃষ্ণ বলরাম। অৰ্জ্ন স্বল অংশসেন কোকিল বসস্ত প্রধান রাম।

ক্রিকনী ঝক্কার অতি মনোহর ধরল বালক-মূর্ত্তি। করে কোন গুণ গুণের আখ্যান করে হয়ে নানা শক্তি॥ ুবিশক্ষণ জ্যোতিঃ দেখিয়া মূরতি नाना (म वक्कान (वर्ण। অমুপ স্থন্দর মৃরতি কিশোর বিনোদ বন্ধান কেশে। গাঁথিয়া স্থম নানা সে কুস্থম विताम वज्ञान हुए।

কনক কিঙ্কিণী কলহংস জিনি তলে আরোপিড **্ত্রেরম্ব অনুজ** 50 পীতের বসন সাজে। ভবৰ অমুক্ত গাঢ়া॥ এ চ্য়া চন্দ্ৰ অঙ্গে স্থলেপন সে রূপ ত্যজিয়া মদনমোহন ্মুরতি কৈশোর হয়। মৃগমদ আদি রাজে॥ বৃকভান্থ রাজা কিবা শোভা করে **ह** छोमां न रत বনমালা গলে শোভিত কৌস্তৃভ তায়। দেখি পাছে মুরছায়॥ ৭-৮। নানা মূর্ত্তি ধারণ করিয়া নানা গুণ প্রকাশ যমুনাতে যেন চাঁদ ঝলমল দেখি যে তেমতি প্রায়॥ ៌ করিতে লাগিল। >৫->৬। অর্থ করিতে পারিলাম না। অধিক স্থ**ন্দর** শিখী মনোহর শিরে পুচ্ছ শোভে তায়। প্রবণে মকর কৃণ্ডল দোলয় **ৰিন্**ড়া যেমতি রবির প্রায়॥ অধর বান্ধুলী স্থন্দর উপমা কৃষ্ণ অবভার ভাহে অপরূপ रुरेन स्वन मथा। দশন দাড়িম বাঁজে। অভি অমুপম যেন নবঘন ভা**লে** সে শোভিত চন্দনের চাঁদ ় জলদ সমান দেখা॥ তাহে গোরচনা সাজে॥ ললিত রঞ্জন যেমত অঞ্চন অভি নিরমল নয়ন কমল কিবা অতদীর ফুল। তাহে **কাজরে**র রেখা। মেঘের ধারাটি বেন কুবলয় যমুনা ক্লিনারে **पल मरत्रा**ज्ञर অধিক দিয়াছে দেখা। যেমত কানড় ফুল। 80 ভাংার উপরে যেন নিরুপম নবগ্ৰহ বেড়ি কোনরূপ হেন দেখিয়াছে বছরূপ। মুকুতা হুসারি সাজে। ٥ ( বিবিধ বন্ধান করিয়া সন্ধান মূণির মালায়ে প্রবাল মাণিক গড়ল রসের কুপ ॥ বেড়িয়া তাহার মাঝে॥ যাবক নিন্দিয়া বিচিত্র চামর কেশের অ'টিনি ৪৫ চরণ যেমত वाँिश्वा वित्नाम हुड़ा। श्त्रिण प्रणिया रेयरछ। অতি সে স্থ্যম তাহাতে অধিক বিশ্বফল সম নানা সে কুম্বম তাহা মালা দিয়া বেড়া॥ দেখিতে না পারে কৈছে। শিখণ্ড আরোপি তাহাতে রঞ্জিত তা পরে ময়ুর म्यनथ ठाँप করেতে মোহন বাঁশী। চরণে শোভিত ভাল। কটাক্ষ চাহনি ত্রিভঙ্গ ভঙ্গিমা

অমিয়া<sub>)</sub> মধুর হাসি ॥

দশদিক শোভা

२०

ভাহার শোভাতে

সকল করেছে আলো॥

( C

৬০

দেখিয়া সেরূপ মদন ম্রছে

 কুলের কামিনী যত।

ম্নির মানস জপতপ ছাড়ি

ওরূপ দেখিয়া কত॥

বৃকভামুপুর নাগর-নাগরী

পড়িছে ম্রছা খাই।

ঢলিয়া পড়ল বৃকভামুরাজা

দিজ চণ্ডীদাসে গাই॥

৪। দেখিতে মেখের ফায়।
২৫। বনমালা—বনফুলের মালা নহে।
"আজামুলস্বিনী মালা সর্বর্তু কুমুমোজ্জলা।
মধ্যে স্থলকদম্বাঢ়া বনমালেতি কীর্জিত।"
মালাটি জামু পর্যান্ত বিস্থৃত, সকল ঋতুজ ফুলে গাঁথা ও
মধ্যে একটি বড় কদম্পুশ আছে।

0)

সিয়ুড়া

রূপ দেখি মোহিত হইল কত জনা।
নগরে চাতরে সব পড়িল ঘোষণা॥
রূপবতী কুলবতী ছাড়ে নিজ পতি।
জনমিয়া হেন রূপ নাহি দেখি কতি॥
বৃকভানুপুরে যত পুরবাসিগণ।
এ বড় বিষম বাজি কখন না দেখি।
কি আনন্দ দেখিয়া মজিল যেন আঁখি॥
সাগিল মোহ নিগড়া রহে এক চিতে।
১০
মদন-ম্রতি দেখি রাজা বৃষভানু।
দেগদ সর্ব্ধ ভেল পুলকিত ভন্ন॥
দেখিল নয়ান ভরি রূপ ফুমধ্রে॥

প্রাণ কাঁদে চাহিতে মধুর মূরতি দেখি। ১৫ চণ্ডীদাস রহে তথা সে রূপ উপেখি॥

২। চতরে--চত্রে।

১। মোহনিগড়া—মোহশৃষ্থল, রূপ দেখিয়া কেহ কেহ মোহশৃষ্থলে আবদ্ধ হইল অর্থাৎ একেবারে মুয় ইয়া গেল।

১৬! উপেখি--(দৰিয়া।

૭૨

কাৰভা

কৃত্তিকা স্থন্দরী ঝরকা উপরে তা সনে স্থন্দরী রাধা। দেখিতে সে খেলা মন ভেল ভোলা সকলি মানিল বাধা॥ হৃদয় ভিতরে এ মহীমণ্ডলে কভুত নাহিক রহে। "এমন মুরতি এ মহীমণ্ডলে কভুত নাহিক হয়ে। হেনরূপ স্থি কোথা বা আছিল কে হেন আনিল নিধি। কেমন করিয়া বসিয়া গড়িল বিধি॥" পশিশ ওরাপ হৃদ্য মাঝারে বিদগধি রাই। মানস পুরিয়া সর্ল হাদয়ে মগন হইল তাই॥ কহিতে না পারে ু মনের বেদন মনের পোড়ান ভেল। হৃদয় ভিতরে ভরল অন্তর জর জর হৈয়া গেল। দেখিতে দেখিতে তুলল নাগরী भूपण नशान छुटि।

রসের আবেশে ঠেকিলা স্থন্দরী

 কুলের ভরম ছুটি ॥

এই সে পুরুষ রতনে যতনে ২৫

যদি বা মিলয়ে মোরে ।

তোমাকে কি দিয়া তুষিব হরিষে

কিনিয়া লইবে মোরে ॥

জনমে জনমে তোমারে তৃষিব ঘোষিব তোমার গুণে। ৩০ এ বোল বলিয়া পড়িল ঢলিয়া ছিজ চণ্ডীদাস ভনে॥

৪। বাধা-ব্যাঘাত।

১৪। বিদগধি—প্রেমমৃকা। ১৮। পোড়ান বিশেষ্য; অর্থ—দতন,মন পুড়িয়াগেল

२२। पूनन, तिरमयन ; व्यर्थ, पूनि छ।

৫৩

11ৰডা

এ কথা জননী কিছুই না জানে
সঙ্গের সঙ্গতি গুণে।
গোপত আখ্যান ইহা কে জানিব
কেহ সে নাহিক জানে॥
মূর্চিছত কেশরী আপনা পাসরি
পড়ল ধরণী মাঝে।
যেমত সোণার প্রতিমা পড়ল
অবনী মণ্ডল মাঝে॥
কাঞ্জণ বরণী সুবল মোহিনী
দামিনী চমকে যেন।

অগেয়ান হৈয়া

পড়ল কিশোরী তেন॥

অনঙ্গ মঞ্জরী কহে।

বিশ্বিত হইলা ললিতা স্থন্দরী

সুধী নাহি রহে

"আচন্বিতে হেন বহি অচেতন কেন বা এমন হয়ে। এই মাত্র খেলা দেখিতে দেখিতে কেন বা এমন হ'ল। কি হেতু ইহার বৃনিতে নারিয়ে সবাই হইল ভোল॥" কৃত্তিকা কহেন "রাধা কেন চেন भू पिया नयान १३। চেতনা নাহিক কাঠের পুতলি পড়িয়ারহল রাই॥" কাঁদিয়া বিকল মায়ের অন্তর 20 ক্রেন স্বার আগে। বিষম বিষাদ একি পরমাদ বালিকা দেখিয়া লাগে॥ এক সহচরী আন ডাক দিয়া কহত রাজাব আগে। আচ্বিতে রাই পড়িল অথাই

>-২। রাদিকার সধীর কৌশলে একণা অর্থাৎ রাধিকা কেন মৃচ্ছিত হইলেন, তাহা কেহ জানিতে পারিল না।

চণ্ডীদাস যায় নগে॥

.১। সুধী--জ্ঞান।

১২। তেন--সেইরূপ। ৩১। অধাই--অস্থির।

**0**8

নটনারায়ণ

গিয়া এক জনে কহে কাণে কাণে

 বৃকভামু রাজা কাছে।

অপরপ এক, অন্তঃপুরে দেখ

অদাষ্ট্ত কথা আছে॥

আচন্বিতে হেদে ঝরকা উপরে কৃত্তিকা বৈঠল ভায়। রাধিকা স্থন্দরী সঙ্গে সহচরী বসিলা মায়ের ঠাই ॥ দেখিতে লাগিলা বাজিকার ছায়া তোমার নন্দিনী রাধা। আচন্ধিতে কেন মুরছা খাইয়া সে তমু হয়েছে আধা॥ তুরিত গমন করহ রাজন বিলম্বে নাহিক কাজ। এ কথা শুনিয়া বুকভানু মাথে 30 পড়িল আকাশ বাজ ॥ যেমত আছিল সভাতে বসিয়া তেমত উঠিয়া গেলা। বিয়োগ অস্তরে গেলা অন্তঃপুরে দেখিতে আপন বালা॥ २० কি হৈল কি হৈল বলি বুকভানু আচম্বিতে কিবা শুনি। আন কোন জন দেখাত এমন কো কহে কেমন বাণী॥ িকেন দেবঘাত দেবের নির্শ্বিত কেন বা দেবের বায়। 🐈 আনহ চেত্নী 🛮 কোন বা গোপিনী দেখহ তুরিত তায়॥ চণ্ডীদাস কহে শুন মহারাজা আনহ চেত্তনী কেই। দেখহ বৃঝিয়া নাটিকা ধরিয়া নিবিষ্ট করিয়া দেহ॥ ় ১৯। বিয়োগ—ছঃখিত। २०-२८। कान ख्वी लाक चानिश एंपाउ रा কি বলে শুন। ২৫। নির্শ্বিত--কৃত।

২৬। বায়—বাভাস। কোন উপদেবতা অর্থাৎ ভূতের বাতাস লাগিয়াছে। ২৭। চেতনী— চৈতক্ত করাইতে পারেন এমন ন্ত্ৰীলোক। ৩১। নাটকা--নাড়ী। কাষোদ আনিতে চেতনী সহচরী ধায় আনি আহীরিণী এক। দেখিয়া নাটিকা করে কর ধরি বুঝিল যে পরতেক॥ নহে জ্ব জালা দেব অপঘাত কোন বা বাযুর জোর। বুঝিতে নারিল কি হেতু ইহার মনেতে হইল ভোর॥ ব্ঝিভে নারিল নাটিকা চঞ্চল না হয় এ জর জালা। নহে দেবঘাত নহে সন্নিপাত নহে উপদেশ খেলা॥ "নাটিকা ভিতরে কিছু না পাইল শুন বুকভানু রাজে। দেখি তল্প মন্ত্ৰ ঝারিয়ে স্থতন্ত্র বুসিয়ে ঘরের মাঝে ॥" আনি স্বর্ণ ঝারি তাহা করে ধরি পড়ে মন্ত্র বারে বার। ঝারি অনিবার জ্ঞেকরি সার চৈত্তক্য না হয় তার॥ তার পর গলে বাঁধি কুতৃহলে खेषि वाँधिय त्रामा।

নহে নিবারণ

তাহে কিছু নাহি ক্ষমা।

দ্বিগুণ বাড়ল

ভানেক প্রকার প্রবন্ধ করিল ২৫
তাহাতে না হয় ভাল।
আর কোন মন্ত্র কারিয়ে স্থতন্ত্র
কাণে শুনাইল তান॥
ভালিয়া আনল তাহে ধূণা দিল
মায়ের নির্মিত বাণ।
উপদেব হ'ত তথনি ছাড়িত
দ্বিজ চণ্ডীদাস গান॥

৩। নাটক-নাড়ী।

৪। পরতেক—প্রত্যক্ষ, ম্পষ্ট।

২৪। ক্ষমা---উপশ্ম।

- .

**ীস্ট** 

"হেদে গো চেত্নী বুড়া আহীরিণী <sup>\</sup> ঝাড়হ লভার ছলে। কি জানি দংশিল আসি কোন ঘাতে জানি বিষকরে বলে॥ দেহ পানি পড়া দেহ নাড়া ঝাড়া যদি বা ছুইল অঙ্গ। বাঁধহ ধরণী শুন গোয়ালিনী তিলেক না কর ভঙ্গ। ঝাড়হ চৌসাপা বলি ধর্ম বাপা চন্দ্র সূর্য্য করি মেলা। নিদান বিদান পানী সার আন-∽ ঝাডহ আমার বালা॥" তিলেক চেতন তথাপি না হয় তৈছন রহল রাই। পানীসার ভালে বিষ নাহি জালে

নাহি সম্বরণ পাই॥

না হয় কণ্ঠহি বোল।

নানা সে উপায়ে ঝাড়িল সবাই

মুদিত নয়ন বয়ান বচন মরমে আছয়ে ভোর॥ २० কোন সহচরী চামর ঢুলায় শীতল বলিয়া গায়। সরোক্তহ দল আনি বিছাওল রাই শুতায়ল তায়॥ মলয় চন্দ্ৰ কর্য়ে লেপন শীতল হইবে বলি। অঙ্গে উঠে জ্বালা শুখাইছে দ্বরা গরল সমান ভেলি॥ করিলা বন্ধন ∖বহু মন্ত্র ভন্তর চেতনা নাহিক মানি। 9. 'এ কথা কেহ সে জানিতে না পারে চণ্ডীদাস কিছু জানি॥

২। লতার ছলে—সর্পে দংশন করিলে যেমন করিয়া ঝাড়িতে হয়, সেইরূপ ঝাড়। স্ত্রীলোকেরা ক**খ**ন কথন বিশেষতঃ রানিকালে সাপকে লতা বলিয়া থাকে।

৩। ঘাতে—স্বযোগে

৫। পানি দপ্ডা— যে জলে মল্প উচ্চারণ করা
 হইয়াছে।

৭। বাধহ ধরণী—মন্ত্র দারা পৃথিবী রক্ষা কর, যেন কোন ছুই লোক বিরুদ্ধ মন্ত্র পৃথিবী দিয়া চালাইয়া রোগিনীর অনিষ্ট না করিতে পারে।

১০। মেলা—মিলন।

১৫। काल-कारत, कीर्व रय, नष्टे रय।

৩৭

গড়াধানসী

কহে বাজিকর খেলিলা বিস্তর
. রাজা গেলা অন্তঃপুরে।
গুণীর সম্মান্না করিয়া কেন
ভুরিতে চলিলা ঘরে॥

এই সব কথা কহে বাজিকর সভার মাঝারে বসি। গুণীর গোচরে কহিল সত্তর এক সহচরী দাসী। "শুন বাজিকর" কহিল সম্বর "দেখিতে ভোমার খেলা। অন্তঃপুরে বড় বিষম হইল এক বৃকভান্থ বালা॥ তার নাম রাধা সুন্দরী অগাধা ভূবনমোহিনী রূপে। তুলনা নাহিক তাহার স্থবেশ 24 দেখিতে চলিলা ভূপে॥" দাসীর বচন শুনিয়া শুধায় যত বাজিকর-বালা। "কিরূপ দেখিল নয়ান গোচরে কাহার হইল খেলা। २० কোন দেব বটে নিশাচর ফুটে যোগিনী <u>ডাকিনী</u> হয়। বুঝিলা কি হেডু কাহার পরশ কেমনে লাগিল ভয়॥" ্আনিয়া চেত্ৰী এক গোয়ালিনী ধরিল নাটীর টান। অনেক নিঘাত নহে দেবঘাত না পাইল কিছু জ্ঞান ॥" চণ্ডীদাস বলে দেখিল যেমতি বড়ই দেবের খেলা। যেমতি দেখিল উঠিল তৈছন অস্তর ভিতরে জালা। ২৬। নাটীর টাম-নাড়ীর গতি। ২৮। কিছু বুঝিতে পারিল না।

গড়াগানশী সহচরী আগে এ কথা শুনিয়া কহে বাজিকর রায়। "আমি কিছু জানি তন্ত্ৰ মন্ত্ৰ যত, দেব ঘাত আছে গায়॥" সহচরী দাসী কহিতে লাগিল "শুন বাজিকর ভোরা। যদি বা পারব ভাল করিবারে পাবে খাসা জামা জোড়া॥ রাজার গোচরে রন্তরত্ব পাবে কনক রম্ভত দান।" 20 "অনেক জানিয়ে কহে বাজিকর সন্ধান বিধান আন॥" माभी शिन हिन ভাল ভাল বলি কহিতে রাজার কাছে। কর জোড করি করিছে গোহরি ১৫ "এক নিবেদন আছে। যেই বা**জি**কর ভোমার ছুয়ারে থেলায় নাটের ছায়া। সেই জন কহে বহুমন্ত্রজানি নাটিকা দেখিতে কায়া। ২০ দেখিয়া অস্তবে সেই কোন দেব ভয় সে মানিল চিতে। সেই সে নিম্বাত দেব অপহাত পাইল ঝরকা হৈতে॥ ভাহারে দেখিলে প্ভাল করি দিব ইহাতে নাহিক আন। রাজার গোচ্বে বোলহ আমারে কহিনু ভোমার স্থান॥

পুলকিত তমু

শুনি বৃকভানু

"আনত সেই সে গুণী।

যে হয় বিধান ৰুকুক গেয়ান তারে ডাক দিয়া আনি॥" . গিয়া সেই দাসী বাহিরে প্রবেশি ডাকিয়া আনিল ভারে। অতি কুতৃহলে স্থবল চলিল नरा राम অस्टःभूत ॥ গিয়া সে স্থবল রাধার গোচরে ধরিল তাহার নাডী। নানা সেই তম্ভ মন্ত্র আরোপিয়া প্রকার প্রবন্ধে ঝাডি॥ 8. **৮গ্রীদাসে ক**হে শুনহে স্থবল আর আছে কিছু দোষ। বীজ মন্ত্ৰ কহ শ্রবণ ভিতরে 🤄 তবে হবে পরিতোষ॥ ১৫। গোহরি—নিবেদন। 🕶। নাড়ী ও শরীর উভয়ই দেখিতে জানি। নাড়ী ও শরীরের লক্ষণ দেখিয়া রোগ নির্ণয় করিতে পারি।

> शाननी গিয়া সেই গুণী প্রকার করিল স্থমন্ত্ৰ কহিল কাণে। কুক্ত-মন্ত্ৰ জপ করিতে লাগিল শুনায় রাধার স্থানে॥ "সেই কৃষ্ণ দেহ দেখিলে যে তেঁহো হয়েন রসিক রাজ। ষে পাঁহু নাগর সুগড় মূরতি বসতি গোকুল মাঝ। , कृषः कृषः कृषः कृष्ठ कृष्ठ कृष्ठ कृषः कृषः कृषः कृषः (पर। এই কুড়ি বৰ্ণ ভেদ জানাইল পরম স্বরূপ সেই॥

95

সেই কৃষ্ণ হয় পরম রভন সেই কৃষ্ণ প্রাণপতি। সেই কৃষ্ণ হয় ব্রঞ্জের জীবন 34 গোকুলে গোপীর পতি॥ সেই কৃষ্ণ হয় অখিল শক্তি এই কৃষ্ণরূপে দেহা। এই কৃষ্ণ হয় গোকুল জীবন যেই জন রাখে লেহা॥" কৃষ্ণনাম কর্ণে যবে প্রবেশিল তখনি হইল ভাল। আখি ছুই মিলি করেতে কচালি ত্থ অতি দুরে গেল। চণ্ডীদাস বলে চেতন হইল ₹# সেই বৃকভামু বালা। অঙ্গ মোডা দিয়া উঠিল চাহিয়া দূরে গেল যত জ্বালা।।

এই পদে রুঞ্চ-নামের অন্তুত শক্তি বর্ণিত হইরাছে।
নাম-শক্তি বোধ হয় চণ্ডীদাসই প্রথমে প্রচার করেন।
রুঞ্চ-নাম কর্ণে প্রানিষ্ট হইয়া মাত্র রাধিকার চেতন হইল
এবং তিনি বলিয়া উঠিলেন;—

"সবি কেবা গুনাইল খ্রাম নাম! কানের ভিতর দিয়া"—ইত্যাদি পরে দেধুন। ৭। স্থগড়—স্থগঠিত। ১০। বিনি প্রেমের আধার।

g,

<del>य</del>ु इ

চাহে চারি পানে কুরল নয়ানে দেখিল স্থবল স্থা। যেমত তড়িং দামিনী চমকে তৈছন পাইল দেখা॥

সে ছটি নয়ান স্থুবল মুদিল চাহিতে নাহিক পারে। রূপের ছটায় নয়ন বারিল দেখি অতি মনোহরে। ভরিলা তখন দেখিয়া নয়ন সেই বাজিকর শিশু। কহিতে লাগিল বৃক**ভানু**রা**জ**া গুণীরে ডাকিয়ে কিছু ॥ ''তুমি আঙ্গি মোর নন্দিনী জিয়ালে কি দিব তোমারে দান। ভিতরে আনিয়া আপন হৃদয় যবে দিয়ে তোরে প্রাণ॥" ভবে কহে শিশু "শুন মহারাজা গুণীর এ কাজ হয়ে। পর উপকার বড়ই চুল্ল ভ সকল জনেতে কহে। 20 প্রহিংসা সম নাহিক পাতক এ তিন ভূবন **লোকে**। ধিক রহু তার জীবন অসার কি আর বলিব তাকে॥ যদি কোন ছলে করে উপকার ₹ & যেমত বন্ধুর প্রায়। ইহ লোক তরে উহ লোক তরে" দ্বিদ্দ চণ্ডীদাস গায়॥

৯->৽। প্রথমে রাধার রূপ দেখিয়া বাজিকরের নম্মন ঝল্সিয়া গিয়াছিল। তাহার পর যথন সে দেখিতে সমর্থ হইল, তথন তাহার নয়ন ভরিয়া গেল। ১৫-১৬। তোমাকে হৃদয়-ভিতরে আনিয়া যদি নিজের প্রাণ দিতে পারি তবেই তৃপ্তি হয়।

82 কাৰড়া এ বোল শুনিয়া বুকভামুরাজা মগন হইলা চিতে। "তোমারে কি দিয়া আমি সে তৃষিব কি ভোরে আছয়ে দিতে। পরাণ কাডিয়া দিই ভোমা হাতে তবু সে শোধন নয়। কোন বস্তু দিয়া তোমা স্বখী করি হেন মোর মনে হয়॥" করেতে ধরিয়া বাহির হইলা সেই শিশু লই সঙ্গে। ١, নানা রত্ন আদি কনকের মালা দিল হরষিত রঙ্গে॥ মালা অভি শোভা মণি মাণিকের **पिण** এ পঞ্চ জনে। মকর কুণ্ডল দোহারিয়া দিল 30 অতি আনন্দিত মনে॥ সোণার পদক্ অতি মনোহর তাহে তাড়বালা শোভে। বিচিত<u>্র বৃ</u>স্ন সোণায়\_জডিত দিল মহারাজ ভবে॥ ব্ৰেছত পূরিয়া বহুত্ কাঞ্চন যুতে যুতে দিল যত। হর্ষ বদনে তৃষি পঞ্জনে আদর করিল কত। চণ্ডীদাস তাহা • দেখে দাড়াইয়া বৃকভামু ধরি করে। আদর করিয়া ভক্ষ্যের সামগ্রী . কত আনি দিল তারে i

>৫। দোহারিয়া—জোড়া জোড়া। ২২। বুতে বুতে—বহু সংখ্যার। 8२

ঞীনট

"শুনহ রাজন ক্রে পঞ্জন এক নিবেদন আছে। ভোমার নন্দিনী সঙ্গে একজন নিরবধি থাকে কাছে। দেবের নির্ঘাত হয়েছিল অঙ্গে এবে জানি কোন দোষ। যমুনাতে স্নান করাহ যতনে বুচুক দেবের রোষ॥ এক ভীর্থ হয় প্ৰিত পাবনী করিলে ভাহাতে স্নান। 50 যত দোষ ঘুচে তবে অন্ন রুচে ইহাতে নাহিক আন॥" তবে সহচরী এক সঙ্গে দিল যমুনা সিনান লাগি। চলে সহচরী রসের নাগরী রসময় ধনী আগি॥ মন্তর স্থচারু চ**লিতে** গমন ভূবন করেছে আলা। সেই পঞ্চ শিশু বৃন্দাবন বনে আগে সে চলিয়া গেলা॥ ၃۰ যথা নটবর নাগর শেখর চতুরের চূড়ামণি। বলিল দেখিয়া সেইখানে গিয়া রহিলা সুবল জানি॥ চণ্ডীদাস কৰে \* শুনহে সুবল 20 গমন করল রাই। যমুনা সিনানে সহচরী সনে দেখিমু পথেতে যাই॥

৩-৪। ভোমার ক্সার নিকটে কোন দেবতা সর্বাদ।

शंक्ति।

৫-৬। নির্ঘাত--আবাত--আবেশ। তোমার কলার উপর কোন দেবতার আবেশ হইয়াছিল। এখনও কিছু দোৰ থাকিতে পারে।

১১। তবে অন্ন রুচে—ব্যাধি সারিয়া গেলেই অন্নে রুচি হইবে।

১৬। রসময়ী জীরাধিকা অগ্রে যাইতেছেন। २०२८। (यथान जीकृष्य चाह्न, यूवन (प्रदेशान গিয়া তাঁহাকে সকল কথা বলিলেন। তিনি ত পূর্ব্ব ছইতে সকল কথা জানিতেন, স্বতরাং সেইখানেই রহিলেন। ২৪। জানি --বিশেষণ। যিনি জ্ঞাত সাছেন।

80

বৰাচী

যমুনা নিকটে যথা বংশীবট অতি সে সুন্দর থল। নানা পক্ষিগণ তরুগণ তাপে धरत नाना यून कल॥ নানা পুষ্প ফুটে পরিম**ল** উঠে কেতকী চামেলি কুন্দ। নাগেশ্বর আদি নানা সে কুন্থম চাঁপা পারুলীর গন্ধ॥ ঝ'।টি গজকুনদ গুলাল চুলাল কিংশুকু আমলা কত। ٥ ( কদম্ব দোসারি শোভা অতি বড়ি লাখে লাখে ফুল কত॥ হংস হংসিনী চক্ৰবাক আদি চকোর চকোরী ডাকে। ক্তেক চামরী ভ্ৰমরা ভ্ৰমরী 54 शुक्रविर्घ् मार्थ मार्थ। · ভুরু**লভা** আর লবঙ্গ লতায়ে বেষ্ঠিত মাধুবী তরু।

নাগর কালিযা

সেইখানে নব

মোহন সুরতি ধরু ॥

সে হেন মুরতি জলধর অতি সহচরী সনে তুরিতে মিলল হেলিয়া মাধ্বীভলা। যমুনা সিনানে যাই॥ চূড়ার টালনি বঙ্কিম চাহনি কহেন সুবল অপরূপ আছে ভূবন করেছে আলা। ञ्ल कल (महे पिर्ण। বিনোদিয়া চূড়া মালতিয়া বেড়া যে রূপ ছায়াতে प्रिश्र मृक्डिंड मয়्त्र <u>শিখণ্ড</u> উড়ে। সহজ মূরতি আগে॥ ভালে সে চন্দন চাঁদ বিরাজিত এ পথে গমন না কর বিলম্ব কে হেন বাঁধিল চূড়ে॥ আগে দেখ নটরায়। নাসিকার আগে ময়ুরের চুলি হংসগমনী রাজার নন্দিনী গৰুমতি তাহে দোলে। প্রবেশ করল তায়॥ ত্রিভঙ্গ ভঙ্গিম ভঙ্গিমা হইয়া সহচরী রহে পথের মাঝারে দাড়ায়ে মাধবীতলে। স্বল সঙ্গেতে তথা। কিবা করে আলা গলে বনমালা দেখিতে নাগরে নাগরীর রূপ দোলই হিয়ার মাঝে। মূরছিত ভেল তথা। অলিকুল মন্ত লাখে লাখে কত অবশ পরশ नग्रादन नग्रान সতত তাহে বিরাজে। হেরিয়া নাগরী পানে। পীত প্রিধান বিনাদ বন্ধান নাগরী নাগরে হাদয়ের পরে চরণে নৃপুর বায়। वाँधिन तम प्रवे कता॥ পঞ্ধনি শুনি মগৰ মেদিনী কেবল দরশ হইল পরশ **मध्**त्र भूतनी शांत्र ॥ 8• नग्रात्न नग्रात्न (थना। বচনে মিলন চণ্ডীদাস কছে অমুপ অপার হইল যভন স্থাবে নাহিক ওর। হৃদয় ভিতরে মেলা॥ এবে সে এ বেশে ষুবতী ভূলিল *বুকভামুস্থ*ভা চরণ হইতে মরমে হইল ভোর॥ নিরীক্ষণ করে চূড়া। २। थन-- इन, इनि। আপনার চিতে মনের মানসে · ৫। পরিম**ল—কুগন্ধ**। क्रमस्य वाँथन गांजा ॥ > । ভক্লতা--এক রক্ম লতা। মনে মনে বন- 🕟 ফুল ভুলি রাধে পূজন চরণ ছুই। নহিল পরশ কেবল দরশ 88 মানস ভিতরে থুই॥ শিশুড়া পথের মাঝারে "সূৰ্য্য-পূজা ছলে আনি মিলাইৰ

আছেন স্বল

হেনই সময়ে রাই।

२०

২৫

তবে সে পরশ হব।

' ললিভা বিশাখা সব সখী সক্তে আনিয়া মিলায়া দিব ॥" • এ কথা অনেক বিচার করিতে রসের মাধুর্যা বড়ি। এ সব জানিলে সুগন্ধ হইলে বৃঝিৰ চাতৃরী তারি ॥

চণ্ডীদাস বলে এ সব জানিলে চাতুরী রসের সার। র**সিক হইলে** জানিতে পারয়ে কিবা সে কি রস ধার॥

७। (वां रह निभिक्त-श्रमाम--- "ठल ठम (महे ৪০ দিগে" হইতে পারে।

# শ্ৰীরাধিকার পূর্বরাগ

२०

84

ধাৰণী শ্মনা যাইয়া শ্রামেরে দেখিয়া ঘরে আইল বিনোদিনী। বির্লে বসিয়া काॅं निया काॅं निया ধেয়ায় ভামরূপ থানি ॥ নিজ করোপর রাখিয়া কপোল মহাযোগিনীর পারা। ও ছুটি নয়ানে বহিছে সঘনে প্রাবণ মেঘেরি ধারা॥ হেন কালে তথা আইল ললিত। রাই দেখিবার ভরে। 50 বেথিত হইয়া সে দশা দেখিয়া जूलिया लंडेला करत्र॥ নিজ বাস্ দিয়া মুছিয়া পুছয়ে মধুর মধুর বাণী। "আজু কেন ধ্নি হয়েছ এমনি কহবা কি লাগি শুনি॥ আজনম স্থা হাসি বিধুমুখে क्षू ना श्रित्र यान। আজু কেন বল কাঁদিয়া ব্যাকুল

় কেমন করিছে প্রাণ॥

চাঁচর চিকুর কিছু না সম্বর কেনে হৈলে অগেয়ান।" চণ্ডীদাস করে বেজেছে হাদয়ে শ্রামের পিরীতি বাণ ॥ ৪। ধেয়ায়—ধ্যান কবে।

### স্থীর উক্তি

धाननी

ঘরের বাহিরে দত্তে শতবাৰ ভিলে ভিলে আদে যায়। মন উচাটন নিশ্বাস সঘন কদম্ব কাননে চায়॥ রাই এমন কেন বা হইল। গুরু তুরুজন ভয় না মানিল কোথা কি দেবতা পাইলু,॥ मनाइ हक्क বসন অঞ্চল সংবরণ নাহি করে। বসি থাকি থাকি উঠয়ে চমকি **ভূষণ খুসি**য়ে পড়ে॥

রাজার ঝিয়ারি বয়সে কিশোরী

তাহে কুলবতী বালা।

কিবা অভিলাষ বাড়য়ে লালস
বৃঝিতে নারি এ ছলা ॥ ১৫
তাহার চরিত হেন বৃঝি রীত
হাত বাড়াইল চাঁদে।

চণ্ডীদাস কয় করি অমুনয়
ঠেকিলে কালিয়া ফাঁদে ॥

৬। ৬য় নাহি মনে—পাঠাগুর। চুরুজন অর্থে চুর্জ্জন হইতে পারে না। বোধ হয় অর্প এই—গুরুজন প্রভৃতি।

৭। দেবতা পাইল--দেবতার আবেশ হইল--ভূতে পাইল।

> । বিয়ারি—কুমারী পাঠও আছে।

>৪-১৫। লালস— আকাজ্ঞা, অনুরাগ। সে যে কোন্ বন্ধকে অভিলাষ করিয়া অনুরাগ দেখাইতেছে তাহা বুঝিতে পারা যায় না।

১৬-১৯। পাঠাস্তর:---

তাহার চরিতে হেন বৃঝি চিতে হাত বাড়াইল চাঁদে।

চণ্ডীদাস ভবে করি অকুমানে ঠেকেছে কালিয়া কাঁদে।

অন্ধনয়—অন্ধান; তাহার কার্য্যকলাপ দেখিয়া বোধ হইতেছে মে, সে কোন অপ্রাপ্য বস্তু পাইবার ইচ্ছা করিয়াছে।

89

**সিন্ধু**ডা

আগো রাধার কি হলো অস্তরে বাথা।
বিসয়া বিরলে থাকই একলে
না শুনে কাহার কথা॥

সদাই ধেয়ানে চাহে মেঘপানে
না চলে নয়নের চৌরা।

বিরতি আহারে রাঙ্গা বাস পরে
থেন যোগিনীর পারা॥
এলাইয়া বেণী খুলয়ে গাঁথনি
দেখয়ে আপন চুলি।
হসিত বয়ানে চাহে মেঘ পানে ১০
কি কহে ছ'হাত তুলি॥
এক দিঠ করি ময়ুর ময়ুরী
কণ্ঠ করে নিরীক্ষণে।
চণ্ডীদাস কয় নব পরিচয়

Sa -41

কালিয়া বঁধুর সনে॥ ৩। ধরম কথা—পাঠান্তর।

৭। যেমন যোগিনীর পারা---পাঠাস্তর।

৮-১। ফুলের গাঁথনি দেখয়ে খসায়ে চূলি— পাঠান্তর।

>>। কি চাহে তু'হাত তুলি—পাঠান্তর। নিজের কেশ, মেঘ ও ময়ুরের কণ্ঠের বর্ণের সহিত শ্রীক্লঞের বর্ণের সাদৃশ্য আছে বলিয়া রাধিকা সেগুলি দেখিতেছেন। রাধিকার এই উদ্ভাস্ত ভাব বড়ই কমনীয়।

8**A** 

বালা ধানশী

এ সখি স্থালরি, কহ কহ সোয়।
কাহে লাগি তুয়া অঙ্গ অবশ হোয়॥
অধর কাঁপয়ে তুয়া ছল ছল আঁখি।
কাঁপিয়া উঠয়ে তন্ম কন্টক দেখি॥
মৌন করিয়া তুমি কি ভাবিছ মনে।
এক দিঠি করি রহ কিন্সের কারণে॥
বিজু চণ্ডীদাস্যকতে বৃঝিলাম নিশ্চয়।
পশিল শ্রবণে বাঁশী অ্তত্ম সে হয়॥
৭। বড়ু -- বটু, বান্ধণ-বালক। এখানে বান্ধণ।

द8 साम्याक

সোণার নাভিনী কেন আইস যাও পুনঃ পুন: না বৃঝি ভোমার অভিপ্রায়।

महाई काँहना एवि **অঝ**রু **ঝর**য়ে আঁখি ' জাতি কুল সব পাছে যায়॥ ্ষমূনার জলে যাও কদমতলার পাশে চাও ৫ ানা জানি দেখিলা কোন্জনে। শ্যামল বরণ হিরণ পিঁধন বসি থাকে যখন তখন সে জন পড়েছে বুঝি মনে॥ ঘরে আসি নাহি খাও সদাই তাহারে চাও বৃঝিলাম ভোমার মনের কথা। এখনি শুনিলে ঘরে 🏻 কি বোল বলিবে তোরে বাড়িয়া ভাঙ্গিবে ভোর মাথা॥ একে তুমি কুলনারী কুল আছে তোমার বৈরী আর তাহে বড়ুয়ার বধু। কতে বড়ু চণ্ডীদাসে কুল শীল সব ভাসে ১৫ লাগিল কালিয়া প্রেম মধু॥ ৩। অবারু---অঞ্জন্ত। ৭। হ্রিণ পিঁধন-পীতবর্ণের কাপড় পরা।. ১৪। বড়ুয়ার--বড়লোকের।

> ८० धाननी

সোণার নাতিনী এমন ধে কেনি হইলি বাউরি পারা। সদাই রোদন বিরস বদন না বৃঝি কেমন ধারা॥ যমুনা যাইতে, **কদস্বতলাতে** দেখিয়া যে কোন জনে। যুবতী জনার ধরম নাশক বসি থাকে সেই খানে॥ সে জন পড়ে তোর মনে। 'সতীর **কুলে**র কলন্ধ রাখিলি চাহিয়া ভাহার পানে॥ কুল আছে বৈরী <sup>∤</sup>একে কু**ল**নারী • ভাহে বড়ুরার বধু।

কৰে চণ্ডীদাসে কুল শীল নাশে কালিয়া প্ৰেমের মধু॥ ° ১৫

>। কেনি-কেন।

२। वाडेवि--भागनी।

६५ शनभी

🕇 রোঝা ওঝা আন গিয়া পেয়েছে <page-header> ভূতা। ় কাঁপি কাঁপি উঠে ঐ বুকভামুস্থতা॥ ' কানাই কোঙর চিকণ যবে পড়ে মনে। মুরছি পড়িয়া ধনী কাঁদে ভূম খানে॥ রক্ষা অক্ষা পড়ে মন্ত্র ধরি ধনীর চুলে। কেহ বলে আনি দেহ কালার গলার ফুলে। কালিয়া কোঙর থাকে কদম্বের ডালে। বা**লিকা দেখিয়া পাইয়াছে শিশু কালে**॥ চেত্ৰ পাইয়া তবে উঠিবেক বালা। ভূত প্রেত ঘুচিবেক যাবে অঙ্গের জালা। ১০ চণ্ডীদাস কহে সবে যারে কহ ভূত। সে শ্যাম কালিয়া চিকণ নন্দ ঘোষের পুত।। ১। রোঝাম্মানি গিয়াপাছে আছে ভূতা—পাঠান্তর। ৩-৪। চিৰূণ বর্ণের কানাই কুমার। কালিয়া কোঙর হিরণ পিঁধন যবে পড়ে মনে। **ম্রছি পড়িয়া কাঁদে ধরি ভূম খানে ॥ – পাঠান্তর**। ে। রক্ষা-মন্ত্র—যে মন্ত্র উচ্চারণ করিলে ভূতের হাত ২ইতে রক্ষা পাওয়া যায়। অক্ষা কথাটার কোুন অর্থ নাই।

>২। খাম চিকনিয়াসে নন্দ খোৰের পৃত। · -- পাঠাৰর ।

> (२ -----

কালিয়া বর্ণ হিরণ পিদ্ধন\_ বংন পড়য়ে মনে।

মুরছি পড়িয়া কাঁপয়ে ধরিয়া সব সখী জনে জনে। কেহ বলে মাই ওঝারে ঝাড়াই রাইয়েরে পেয়েছে ভূতা। े केािंश केािंश छेटिंश किश्ला ना हैट्छे সে যে বৃকভানুসুতা॥ বক্ষা-সম্ভ্র পড়ে निक চूटन सार् কেহ বা কহয়ে ছলে। ٠ ر "নি<del>শ্</del>চর কহি যে আনি দাও এবে কালার গলার ফুলে॥ পাইলে সে ফুল চেতন পাইয়া তবে উঠিবেক বালা। স্তুত প্ৰেত আদি ঘুরিয়া যাইবে 20 যাইবে অঙ্গের জালা॥" কহে চণ্ডীদাসে আন উপদেশে कूटलत रेवती (य काला। দেখাও যতনে পাইবে চেডনে घूिति अक्टब द्याना॥ ১৭-২০। চণ্ডীদাস কিন্তু অক্স উপদেশ দিতেছেন। কুণ আনিলে হইবেনা, প্রং <u>আ</u>কৃষ্ণকে আনিয়া দেখাও সৰ ভাল হইয়া যাইবে।

> ৫৩ জুড়ি

শক্ত স্থলকিত নরম সহিত অঝরে নয়ন ঝরে। বৃঝি প্রত্মানি কালা রূপ থানি ভোমারে করিয়া ভোরে॥ দেখি নানা দশা সক্ত যে বিবশা না হত এমন ভারে। সে বর নাগর গুণের সাগর কিবা না করিতে পারে॥ শুন শুন রাই কহি তব সাঁই
ভাল না দেখি যে ভোরে। ১০
সতী কুলবতী তুয়া যে খেয়াজি
আছ্য় গোকুলপুরে॥
ইহাতে এখন দেখি যে কেমন
নাহি লাজ গুরুতরে।
কহে চণ্ডীদাসে শ্রাম নবরসে ১৫
বৃঝিলে বৃঝিতে নারে॥
১০ অঙ্গ ও প্রাণ উভয়ই পুলকে পূর্ণ।

€8

কাথোদ

🦯 সই, কেবা শুনাইলে শ্যাম নাম। কাণের ভিতর দিয়া মরমে পশিল গো আকুল করিল মোর প্রাণ। না জানি কতেক মধু শ্যাম নামে আছে গো বদন ছাড়িতে নাহি পারে। জপিতে জপিতে নাম অবশ করিল গো কেমনে পাইব সই তারে॥ নাম পরতাপে যার এছন করিল গো অঙ্গের পরশে কিবা হয়। যেখানে বসতি ভার নয়নে দেখিয়া গো ১০ যুবতী ধরম কৈছে রয়॥ পাশরিতে চাহি মনে পাশরা না যায় গো কি করিব কি হবে উপায়। ক্ষে দিজ চণ্ডাদাসে কুলবতী কুল নাশে আপনার যৌবন যাচায়॥

ে। রুক্তনাম এত মিষ্ট লাগিয়াছে যে, অনবর্গু উচ্চারণ করিতেছি। ১।পরতাপে প্রতাপে,শক্তিতে।

>। নামের বাসস্থান শরীর; শ্রীরুদ্ধের সেই শরীর দেখিলে কি কাহারও ধৈর্য্য থাকে ? >৪--- >৫ প্রীক্তঞ্চর রূপে মুগ্ধ হইয়া কুলবতী নারী কুল ভাগা করিয়া আপনার যৌবন দান করে ।

t e

ভিরোভা

হাম সে অবলা হৃদয় অখলা ভাল মনদ নাহি জানি। বিরলে বসিয়া পটেতে লিখিয়া বিশাখা দেখালে আনি ॥ হরি, হরি এমন কেন বা হ'ল। বিষম বাড়ব অনল মাঝারে আমারে ভারিয়া দিল। বয়সে কিশোর রূপ মনোহর অতি স্থমধুর রূপ। নয়নযুগল করয়ে শীতল বড়ই রসের কুপ॥ নিজ পরিজন সে নহে আপন • বচনে বিশ্বাস করি। চাহিতে তা পানে পশিল পরাণে বুক বিদরিয়া মরি॥ 38 চাহি ছাড়াইতে ছাড়া নাহি চিতে এখন করিব কি। কহে চণ্ডীদাসে শ্রাম নবরসে ঠেকিলে রাজার বি॥ ৬। বাড়ব - অন্ল, দাবানল। ৭। ডারিয়া—ফেলাইয়া।

> ু **৫৬** গা**য়া**র

সই, কি আজু দেখিল রঙ্গ। আজু গিয়াছিয় যমুনার কুলে তুই চারি জন সঙ্গা। এক কালা দেহ, বসন ভূষণ **हु**णां छे निया वाटम। • ৫ ভাহে আরোপিত হেরম্ব অমুজ বেড়িয়া কুস্থমদামে ॥ তার মাঝ দিয়া ময়ুরের পাখা হেলিছে ছুলিছে বায়। লহরী ভেমতি প্রায়। তাহে শশধর यमग्र हम्पन তার মাঝে গোরোচনা। পেয়ে অলিকুল তাহার সৌরভ করে আসি আনাগোনা।। নাসা খগ জিনি এই চুই নখিলে নয়। আকর্ণ পুরিত সে ছটি লোচন চঞ্চলে শোভিত তায়। কটাক্ষ মিশালে হাসির হিল্লোগে ২০ অমিয়া বরিখে রাশি। দেখিয়া দে রূপ হেন মনে করি সদা থাকি নিশি দিশি॥ কিবা করে আলা গলে বনমালা যমুনা তুকুল ভরি। পীতবাস অতি কাঞ্চন মুরতি করেতে মুরলী ধরি॥ এত দিন বসি গোকুল নগরে ना प्रिंथ ना श्विन कारन। এমন মুরতি গড়ে কোন বিধি ৩• দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণে॥

৬। হেরম্ব অমুজ—কার্ত্তিক; কিন্তু অর্থ হয় কি ? 

> । রবির মুভার—রবির কিরণের—কিরণ হত্তের
ক্রায়।

কাষোদ

সজনি, কি হেরিপু যমুনার কূলে। হরিল আমার মন ব্ৰজকুলনন্দন ত্রিভঙ্গ দাঁড়ায়ে ভরু-মূলে॥ গোকুল নগরমাঝে আর যে রমণী আছে তাহে কেন না পড়িল বাধা। নিরমল কুল খানি যতনে রেখেছি আনি বাঁশী কেন বলে রাধা রাধা॥ মল্লিকা চম্পকদামে চুড়ার টালনি বামে তাহে শোভে ময়ুরের পাথে। আশে পাশে চলে ধেয়ে স্থন্দর সৌরভ নিয়ে ১০ অলি উড়ি পড়ে লাখে লাখে॥ সে শিরে চূড়ার ঠাম কেবল বৈছন কাম নানা ছাঁদে বাঁধে পাক মোড়া। সে শিরে বেনানি জালে নব গুঞ্জামণি মালে চঞ্চল চাঁদপরে পারা॥ 20 পায়ের উপরে থুয়ে পা কদম্ব হেলন গা গলে দোলে মালতীর মালা। দ্বিজ চণ্ডীদাস কয় না হইল পরিচয় রসের নাগর বড় কালা॥ ৪। আর কত নারী আছে--পাঠান্তর। ৫। वाश-विश्वन। ৮। চালনি--পাঠান্তর। ১০। আশে পাশে ধেয়ে ধেয়ে স্থনর সৌরভ পেয়ে— ৈ ২২। সে কি রে চূড়ার ঠাম কেবল যেমন কাম---<sub>--</sub> পাঠান্তর । >8। भित्र (वड्न देवनान कारन-भाठाखना

্তিঞ্জামণি মালে - কুঁচ ফ**লের মালা**য়।

১৫। हक्ष्म हाम छेशरत ब्लाफ़ा-शाशिश्व ।

45

PIFT

যাইতে দেখিল শ্যামে কি করিবে কোটী কামে. ভাঙ ভঙ্গিন স্থঠান। চাঁদ বদনে চাহে যাহা পানে সে ছাড়ে কুল অভিমান॥ সই এমন স্থলর কান। হেরি কুলবতী ছাড়ে নিজ পতি তেজি লাজ ভয় মান। অতি সে শোভিত বক্ষঃ বিস্তারিত দেখি যে দর্পণাকার। তাহার উপরে মাল শোভিয়াছে ভাল ১০ উপজে মদন-বিকার॥ নাভির উপরে জমু তমাল জিনিয়া তমু দলিত অঞ্জন জিনি আভা। বড় কারিকর কুঁদিয়াছে ভাল রামকদলি শোজা॥ চরণনখর-কোণে রঞ্জিত শোভিত মেনে মণিময় নৃপুর তায়। চণ্ডীদাসের হিয়া ও রূপ দেখিয়া চঞ্চল হইয়া ধায়॥ ২। ভাও--ভাব। ः भई, किता (म शास्त्र ज्ञाप।--पाठास्त्र। >२। अक्--(यन। ১৬। মেনে-কোন অর্থ নাই। '

60

কাথোদ

বরণ দেখিতু শ্যাম জিনিয়া ত কোটী কাম বদন জিতল কোটী শশী।

ভাঙ ধনু ভঙ্গী ঠাম নয়ানকোণে পূরে বাণ ় হাসিতে খ**স**য়ে সুধারাশি॥ · সই, এমন স্থল্পর বর কান। হেরি সে মূরতি সভী ছাড়ে নিজপতি তেয়াগিয়া লাজ ভয় মান॥ এ ব**ড়** কারিকরে কুঁদিলে তাহারে প্রতি অঙ্গে মদনের শরে। ষুবভী ধরম থৈগ ভুজজন ১০ দ্মন করিবার ভরে॥ **শতি স্থােভিত** বক্ষঃ বিস্তারিত দেখিমু দর্পণাকার। ভাহার উপরে মালা বিরাজিত কি দিব উপমা তার॥ 20 নাভির উপরে লোমণতাবলী সাপিনী আকার শোভা। ভুরুর বলনি কামধন্ত জিনি ইন্দ্রধন্তকের সাভা। বিধু বিরাজিভ ১০ চবণ-নখরে মণির মঞ্জীর তায়। চণ্ডাদাস-হিয়া সে রূপ দেখিয়া

🕶 🏻 চঞ্চল হইয়া ধায়॥ ে। ব্রু, ধহুক ; দৃষ্টি, শর।

५ १। त्कर विक्रक जाव यत्न यानितन ना। प्रमुख 🗂 ্যাগ করিয়া শরণাগত ন্যু হইলে ভগবান্কে পাওয়া যায় ना। हकीनाम भूनः अपूनः এই कथा विनिधात्कन। बीक्रक गैराटि अहे डेल्सिन निशाहन।

३५। वस्ति—११४म।

🖊 শ্রামের বরণছটার কিবা ছবি। কাটী মদন জমু নিন্দিয়া শ্যাম তমু উদইছে যেন রবি শশী॥

কিবা সে শ্রামের রূপ স্থাময় রসকৃপ নয়ন জুড়ায় যাহা চেয়ে। হেন মোর মনে হয় যদি লোকভয় নয় কোলে করি যেয়ে ধেয়ে॥ ভরুণ মূরলী করিল পাগলী রহিতে না দিল ঘবে। সবারে বলিয়া বিদায় লইব ১০ কি কবে সোদৰ পরে॥ দুরে তেয়াগিল মরমে লাগিল যে। চণ্ডীদাস ভণে আপন পৰাণে বুঝিয়া করিবে সে॥ 🔃 শামের বরণ—শ্রামের বদন পাঠান্তর।

>ে। ঠিক কথা। ভগবান্ যদি "মর্মে লাগিয়া" পাকেন, তবেই তুমি 'ধরম করম" প্র ত্যাগ করিতে পারিবে। নচেৎ ত্যাগ সম্ভব নয়।

भागान

**डेन्डेर्ड ७**४ **ए**था गरा। নয়ন চকোর মোর পিতে করে উত্তরোল নিমিখে নিমিখ নাহি সয়॥ সই, দেখিকু শ্যামের রূপ যাইতে জলে। ৫ ভালে সে গোকুলনারী হইয়াছে পাগলী ' *ञ्*वनञ्*न*नौं কিবা সে চাহনি ুশাভিত গলের মাল। মধুর লোভে এমরা বুলে ১০ ় বেডিয়া ভৃহি রসাল॥

#### চণ্ডীদাস

তুইটী লোচন মদনের বাণ
দেখিতে পরাণ হানে।
পশিয়া মরমে ঘুচায়ে ধরমে
পরাণ সহিতে টানে॥ ১০
তথীদাস কয় ভুবনে না হয়
এমন রূপ যে আর।
যে জন দেখিল সেই সে ভুলিল
কি ভার কুবুলবিচার॥
১। অগ্পন জন্ম-পাঠান্তর।
২। উদয় হয়েছে সুধাময় পাঠান্তর।
৩। উতরোল ব্যগ্রহা।

 ৪। নিমেবপাতও অসকনীয়। নিনিমেধনেকে দেখিতে ইচ্ছা করে।

৮। নমরভঙ্গিমা-পাঠান্তর।

>। 1ल- अयन करता

১১। ঠাই সেই।

১২। তুইটি মোহন মদনের বাণ- পাঠান্তর।

७२

কামোদ

স্থা ছানিয়া কেবা ও স্থা চেলেছে গো
তেমতি শ্যামের চিকণ দেহা।

অপ্তন গঞ্জিয়া কেবা অপ্তন আনিল রে

চাঁদ নিঙ্গাড়ি কৈল থেহা॥
থেহা নিঙ্গাড়িয়া কেবা মু'খানি বনা'ল বে ৫
জবা নিঙ্গাড়িয়া কৈল গণ্ড।
বিশ্বফল যিনি কেবা ৬৯ গড়ল রে
ভুজ, জিনিয়া করিশুণ্ড॥
কন্মু জিনিয়া কেবা কন্ঠ বনাইল রে
কোকিল জিনিয়া সুস্থর। ১০
থারজ মাথিয়া কেবা সারজ বনাইল বে

বিস্তারি পাষাণে কেবা রতন বসাইল রে

এমতি লাগয়ে বুকের শোভা।

নাম কুমুমে কেবা স্থমা করেছে রে :৫

এমতি তন্তর দেখি আভা॥

আদলি উপরে কেবা কদলি রোপিল রে

ঐচন দেখি উরুষুগ।

অঙ্গুলি উপরে কেবা দর্পণ বসাইল রে

চণ্ডীদাস দেখে মৃগে যুগ॥ ১০
৪। থেখা--ইছুর্যু গান্তীর্য।

>>। আরদ্ধান করিল; সার্দু—পীত্রণ।

50

403

কদম্বেৰ বন হইতে কিবা শব্দ আচ্থিতে ় আসিয়া পশিল মোর কাণে। অমৃত ছিনিয়া ফেলি কি মাধুষ্য পদাবলী কি জানি কেমন করে মনে॥ সখি রে, নিশ্চয় কহিয়া কঠি তোরে। হাহা কুলাঙ্গনাগণ গ্রহিবারে ধৈর্যাগণ यारक रञ्च मना रेड्स रभारत ॥ শুনিয়া ললিতা কহে অন্য কোন শব্দ নহে মোহন মূরলীধ্বনি এহ। সে শব্দ শুনিয়া কেনে হৈলে তুমি বিমোহনে ১০ রহ নিজে চিত্তে ধরি থেই॥ রাই কচে কেবা কেন মুরলী বাজায় চেন বিষামৃতে একত্র কনিয়া। ভল নহে হিমে জমু কাঁপাইছে সব **তমু** শীতল করিয়া মোর হিয়া। অস্ত্র নহে মন ফুটে কাটারিতে যেন কাটে ছেদন না করে হিয়া মোর।

তাপ নহে উষ্ণ অতি পোড়ায় আমার মতি চণ্ডীদাস ভাবি না পায় ওর ॥

৬। কুলাঙ্গনাগণের ধৈষ্য নত্ত করিবাব জ্ঞান্ত এই •বাণী বাজিতেছে।

২৩। শুনিতে মিষ্ট, কিন্তু শরীর জ্বলিয়া যাইতেছে।

٤8

দগীর উক্তি

**म** ५ के

না যাইও যমুনাব জলে তক্ষা কদশ্বমূলে চিকণকালা করিয়াছে থানা। নবজলধর রূপ সুনির মন মোহে গো. তেঁই জলে যেঁতে করি মানা॥ এিভঙ্গ ভঙ্গিমা ভাতি রগিয়া মদন ভি**তি** ৫ চাদ জিতি মলয়জ ভালে। ভ্ৰনবিভয়া মালা মেঘে মৌদামিনী কলা শোভা করে শ্রাম-চাঁদের গলে॥ নয়ান কটাক্ষ ছ'াদে হিয়ার ভিতরে হানে আর তাহে মুরলীর তান। শুনিয়া মুরলীর গান ধৈরজ নাধরে প্রাণ নিরখিলে হামাবি পরাণ॥ কানড়া কুস্থম যিন্দ্ৰ শ্যামের বদনখানি হেরিবে নয়ানের কোণে ধে। দ্বিজ চণ্ডীদাস্ভণে চাহিয়া গোবিন্দ পানে ১৫ পরাণে বাঁচিবে স্থি কে।

় ধানা—আড্ডা।

थनग्रधः--- ठ∙४न।

40

বড়াইর উল্লি-

ারুষ্ণের প্রতি

**ीक्षांत** 

নিভি নিভি আসি যাও বাধাসনে কথা কণ্ড শুনিয়াছিলাম পরেব মুখে। মনে করি কোন দিনে দেখা হবে তার সনে ভাল হ'ল দেখিলাম তোকে॥ <sup>‡</sup> চেটো নেটো যায় জলে তার নাকি ধর চুলে ৫ এমত ভোমাব কোন রীত। <sup>‡</sup> যাব ভূমি পর চুলে ়ু সেই এসে মো**রে বলে** নহিলে নহিতাম প্রতীত॥ শুজন কখন নত প্ৰ-নারী নিতে চাও এমনি ভোমার অভিলায় । ১০ আমি ত শুনিলাম ভালে যদি শুনে তার কুলে শুনিলে ১ইবে অপভাষ ॥ নিশ্বাস ফোপান ছাড় আছাড় খাইয়া পড় বুঝিলান তোমাব মনের কথা। নতে কেহ খাটে মাঠে তো अभयन बढ़े ১० শুনিতে পাই এ সব কথা ॥ আমার কথাটি শুন না করিছ ইছা পুনঃ না মজে নন্দের কুলগারি। 'দ্বিজ চণ্ডীদাস**ুক**য় ও কথা কি মনে লয় নাগ্রীর পিরিত তৈল বৈরী॥ व । एठएछे। (नएछ।—श्रव्यव्यक्ष प्रीत्नाक । ঃঃ। তালে—ভাগ্যো। । অপভাধ—অপ্যান, অপ্রাদ।

: 🕶 । अपि--(भोत्रव ।

46

#### শ্রীকৃষ্ণের উক্তি

বিভাষ

সেই কোন বিধি আনি স্থানিধি
থুইল রাধিকা নামে।
শুনিতে যে বাণী অবশ তথনি
মূরিছি পড়ল হামে॥
সই. কি আর বলিব আমি।
সে তিন আঁখর কৈল জর জর
হুইল অন্তরগামী॥
সব কলেবর কাঁপে থর থর
ধরণ না যায় চিত।
কি করি কি করি বুঝিতে না পারি ১০
শুনহ পরাণ মিতঃ॥

কৰে চণ্ডীদাসে বাশুলী আদেশে সেই যে নবীন বালা।

তার দরশনে বাড়িল দ্বিগুণে
পরশে যুচব জালা॥ ১৫
৮। হইল অস্তরগামী---অস্তরে প্রবেশ করিল।
"মরমে পশিল"।

>০। চিত্তে ধৈৰ্য্য থাকিতেছে না।

١,

বড়াই-বচন— শ্রীরাধার প্রক্তি খুম্বই

হেদে লো সুন্দরি প্রেমের আগরি
শুনহ নাগর-কথা।
নিকুঞ্জে আসিয়া ভোচারি লাগিয়া
কাদিয়ে আকুল তথা॥
ভাই রাই করি ফুকারি ফুকারি ফু

পড়ই ভূমির তলে।

ধরি মোর করে

ক্হয়ে কাডরে

30

কেমনে সে ধনী মিলে॥ রাই, অভএ আইফু আমি।

কামুর পিরিতি যতেক আরতি ১০

যাই**লে জা**নিবা তুমি॥

প্রেম অমিয়া বাড়াও উহারে

তোহারে কে করে বাধা।

চণ্ডীদাস করে রাখি কুলশীল

পূরাহ মনের সাধা॥

৯। অতএ—অতএক।

১৪। রাখি-ত্যাগ করিয়া।

46

তিরোতা ধানশী

সে যে নাগর গুণ্ধাম।

জপয়ে ভোহারি নাম।

<sup>'</sup> শুনিতে জোহারি বাত।

পুলকে ভরয়ে গাত॥

অবনত করি শিরে। -

लाहत्न यदाय नीत ॥ यमि वा श्रृष्टाय वानी ।

উলট করয়ে পানি ॥

কহিয়ে ভোহারি রীভে।

আন না বুঝিবি চিত্তে॥

ধৈরয নাহিক তায় 🛝

বড়ু চণ্ডীদাসে গায়॥
৪। গাত, গা – শরীর।

..

**এ** ৰাগ

এ ধনি এ ধনি বচন শুন। নিদান দেখিয়া আইফু পুনঃ॥ 24

'না বাঁধে চিকুর না পরে চীর। ় ুনা খায় আহার না পীয়ে নীর॥ দেখিতে দেখিতে বাডল ব্যাধি। ষর্ভ তত করি নহিয়ে সুধী॥ সোনার বরণ হইল খ্যাম। সোঙরি সোঙরি তোহারি নাম। না চিনে মামুষ নিমিখ নাই। কাঠের পুডলি রহিছে চাই॥ जूना शनि पिटन नानिकामाद्य । তবে সে বৃঝিসু শোয়াস আছে। আছয়ে শাস না বহে জীব। বিলম্ব না কর আমার দিব ॥ **छ्छोमाम कर**ह वित्रह वाथा। কেবল মরমে ঔথদ রাধা। >। निर्मान—(শव प्रमूर्ग २६। वाश-वाशि।

> শ্রীকৃষ্ণের স্বয়ং দৌত্য ( বাদিয়াবেশে )

> > বরাড়ী

বাদীয়ার বেশ ধরি বেড়ায় সে বাড়ী বাড়া
আইলেন ভাপুর মহলে।
খুলি হাঁড়ী ঢাকুনি বাহির করে সাপিনী
তুলিয়া লইল এক গলে॥
বিষহরি বলি, দেয় কর।
৫
ভিনিয়া যতেক বালা দেখিতে আইল খেলা
খেলাইছে মাল পুরন্দর॥
নাগিনীরে দেয় থাবা নাগিনী যে হয় কোপা
দম্ভ করি উঠে ধরি ফণা।

অঙ্গুলি মুড়িয়া যায় নাগিনী ফিরিয়া চায় ১০ ছু যে যায় বাদীয়ার দাপনা॥ খেলা দেখি গোপীগণ বড় আনন্দিত মন কহে "তুমি থাক কোন স্থানে।" "থাকি বনের ভিতরে নাগদমন বলে মোরে মোর নাম জানে সব জনে॥ বসন মাগিবার তরে আইমু তোমার ঘরে কুপা করি দেহত আপনি। ছেঁড়া বস্তানাহি লব ভাল একখানি পাব ভালবেসে দেহ অঙ্গের খানি"॥ "বটের ভিখারী হও বহুমূল্য নিতে চাও ২০ নহিলে শোভিতে চায় বটে। বনে থাক সাপ ধর তেনা পরিধান কর मनारे रिकाल ननौकरि ॥" "ভোমার বস্ত্র শিরে ধরি আনন্দিত হব বডি বহুত বাসিবে মনে স্থা। তোমা অঙ্গ পরশিতে সুখ হয় মোর চিতে তুমি যদি না বাসহ ছখ।" "চুপ করে থাক বেদে যা পাও তা লও সেধে ভরমে ভরমে যাও ঘরে।" "চুরি দারি নাহি করি ভিক্ষা মেগে পেট ভরি ৩০ আমি ভয় করিব কাহারে॥ ভোমা লয়ে করি ক্রীডা মনে কেন দেহ পীড়া यूशी कत এই इशी करन।" দ্বিক চণ্ডীদাসে কহে বাদীয়া যে এহ নচে মনে বুঝে দেখহ আপনে॥ विष्ट्रि—मन्त्रा (एवै)। ৮। কোপা—কুপিত। >>। माथना—बज्या। >१। <sup>\*</sup>বস্ত্র দেহ আনিয়া—আপনি, পাঠান্তর। ১৯। দেখি দেও জীঅঙ্গের খানি—পাঠান্তর।

२•। वर्षे--किं। ২২়। তেনা---ছেঁড়া কাপড়। ২৪-২৭। বেদে কছে ধীরে ধীরে ভোষার বন্ত নিব শিরে মনে মোর হবে বড় সুখ। তোমার সঙ্গ করিতে অভিলান হয় চিতে তুমি যদি না বাসহ হুখ॥ পাঠান্তর। ২৮। **সেধে—ভিক্ষা ক**রিয়া। ২৯। ভরমে ভরমে—মানে মানে। ৩২। ভূমি কেন মান পীড়া—পাঠান্তর। দোকানী-বেশে **৭>** বালাধানশী গোকুল নগরে ইন্দ্ৰ পূজা করে দেখি আইল যতেক নারী। নগর ভিতরে মহাকলরব নাগর হই**ল পসা**রী॥ দোকান দাকান মেলিলা তখন দেখিয়া গাছকীগণ। "বহুদ্রব্য আছে কহয়ে পশারী যে চাহে নিতে যে ধন। মুকুতা প্রবাল মণিময় মাল পোতিক মাণিক যত। ১০ বহুদিন মনে আনিল যভনে ভোমাদের অভিমত॥" মুকুতা ঝুলায়া খন্তিকা পু'ভিয়া কহয়ে গাহকী আগে। শুনি গাহকিনী আসিয়া আপনি ১৫ দোকান নিকটে লাগে॥ হ্মধুর বাণী বলে সে দোকানী े किम्प्रत गहरव हुए।। মুকুতার মাল লইবে যে ভাল

কড়ি যে শাগিবে বাড়া॥

শুনি নারীগণ বলয়ে বচন গাছকী নহিয়ে মোরা। "কিবা ভাগ্য মেনে দেখেছি জনমে ্ এমন ধন যে তোরা।।" 🧻 যুবতী রসাল নিল এক মাল ২৫ षिण এक मधी शरल। পরিমাণ হল আনন্দ বাড়িল कराजक नाहेरत वराना॥ সাধ করি মনে আর এক জনে লইল সোনার সূচ। नरे ठिन याग्र বেতন না দেয় পদারী ধরিল কুচ॥ ক**হে মূল্য দেহ মোর**। मधन वनन र र र कत्रास हुन्दन ७৫ ় এমতি কাজ যে তোর॥ কাড়া কাড়ি ঘন না মানে বারণ অরাজক হল পারা। যাহার যে বন ় কাটে সেই জন রক্ষক হইবে কারা॥ চণ্ডীদাস গীভি রজক সঙ্গতি त्रिन यानम रहि। হৈল সমাধান দোকান দাকান সকলি গেল **যে** नूरि ॥ ७+१। श्रांहिका (पिया रेलाकानपात विलक्ष माशिम। > । পোতিক—একরপ মৃ্কুণ। **३४। इड़ा--माना**। ২৭। পরিমাণ হলো—মাপে ঠিক হ**ইল,** গলার মত र्ड्न।

পাইল ৷

বাজিকর-বেশে। 92 ভুড়ি। কামুর পারিতি কুহকের রীতি সকলি মিছাই রক্ত দড়াদড়ি লয়ে গ্রামেতে চড়িয়ে ফিরয়ে করিয়ে সঙ্গ। সই কামু বড় জানে বাজি। বাঁশ বংশী ধরি মদন সঙ্গে করি ঢোলক ঢালক সাজি॥ মদন ঢুলিয়া বেড়ায় ফিরিয়া যুবতী বাহির করে। হুইটি গুটিকা লুফিয়া ফেলায়ে ১০ বুকের উপরে ধরে ॥ গায়ে দড়ায়ে পায়ে উঠয়ে তাহে ি থাকি থাকি দেই ঝোঁকে। थीति थीति याग्र ভঙ্গী করে ভায় রঙ্গ দেখে সব লোকে। 20 পুরাটি আনিয়া ডিমটি খুলিয়া দেখায় যাহাকে তাকে। উড়াইয়া দিয়া পুরাটি ঝরিয়া ঝুলির ভিতরে রাখে। মুকুতা প্রবাল উগারে সকল २० আর বন্ধূন্য হীরা। একবার আসি উ উগারয়ে রাশি নাচিয়া বেড়ায় ফিরা॥ কতক্ষণ বই হাতে বাঁশ লই যুবতী হিয়ায় গাড়ে। ू द्वीरक काटक निया 💎 शारप्रराज इनिया রাইএর অঙ্গিনায় পড়ে॥ বাঁশের উপরে ঝুলিয়া পড়য়ে হেলিয়া যুবতীমুখে।

মুধ্য মুখ দিয়া নিছে গুয়া দিয়া ৩০

যুরিয়া বৃদ্ধয়ে সুখে॥

এ মদ মদন জানিয়া কদন

তারে ডাকে জাথির ঠারে।

মোর মনোহিত নহে কদাচিত

ফুকারী ডাকয়ে তারে॥

৩৫
লোকে নহে রাজি কেমন এ বাজি
রমণী ভূলাবার তরে।

চণ্ডীদাস কয় বাজি মিছা নম্ম
রক্ষ কে বৃঝিতে পারে॥

২৭। বাশের উপরে চড়ে—পাঠাস্তর। ২৮—৩১। চড়িয়া উপারে রুলিয়া পড়য়ে চুম্বই যুবতী মুখে। মুখে মুখ দিয়া পান গুয়া নিয়া-গুরিয়া বেড়ায় স্কুখে॥ পাঠাস্কুর। ..

> ৭০ কা**মো**দ।

নামিয়া আসিয় বসিল আসিয়া কহুয়ে বেজন দায়।

বেজনের কালে – হাত দিয়া গালে সকল যবতী কয়॥ সই বাজিকর নিবে কি। ষত কিছু দিয়ে কিছুই ন। নিয়ে तत्न "भात भागा कि॥ এই মনে কবি দেহ কুচগিরি আর তব নুখ-সুধা। সার এক হয় ্মার মনে লয় ১০ ভাষা গোরে দেহ জদা॥" স্থন্দরী গণে ববিদ্যাসমূল ইহাব গ্রাহক ভূমি। টীটের টীটানি থেতের মিঠানি দকলি জানিয়ে আমি॥ - ১৫ চণ্ডীদাসে কয় ত্ৰে কেন হয় জানিহ চত্রপণা। বুঝালে না বুঝে কহিলে না স্থান ভাহারে বলিয়ে কাণা॥ া আমারে জিঞাস কি। পাঠাওর। ७०। जुना--नुशक्। ্ৰ। তবে কেন নয় জানিয়া চতুর। পাঠান্তর। ে। 'কাণার' পরিবর্ণে 'কালা' পাঠও আছে।

> নাগিতানা বেশ ভ

> > 440127

ধরি নাপিণিনী বেশ নহলতে প্রবেশ থেখানে বসিয়া হাছে রাজ :

হাতে দিয়া দূরপণি খোলে নথ বঞ্জিনা
বলে বৈঠ দেই কামাই ॥
বসিলা যে রসবতী নারী। ৫
পুলিল কনকবাটী আন্দিল জলের ঘটী
ঢালিল সুবাসিত বারি॥

করে ন্থরঞ্জিনী চাঁচয়ে নখের কণি শোভিত করন যেন চাঁদে॥ সালসে অবশ প্রায় বুম লাগে আধ গায় ১০ হাত দিলা নাপিতিনী কালে। নাপিতিনী একে শ্রামা, ননীর পুতলি ঝামা ঝুলাইছে মনের আনকে। ঘদিয়া ঘদিয়া পায় আলতা লাগায় ভায় বচায়ে মনের হর্ষেতে॥ 20 রচয়ে বিচিত্র করি চরণ হৃদরে ধরি ্তলে লেখে নাম সাপনার। নাপিতিনী বলে "ধনি দেখত চরণ খানি , ভাল মন্দ করত বিচার॥" গবে শুনি তার বাণী দেখবে চরণ থানি ১০ ভাষাৰ হৈটে আমের যে নাম। ব্ৰি আন-মনে চাহে নাপিতিনা পানে ক্ষে "বোল কচ গাপনার নাম॥" "শ্রাম নাম কং মোরে জগং মোহিবার ভরে ফিবি আমি নগরে নগরে ৷" ২৫ দিজ চণ্ডাদামে কয়ে নাপিতিনা এচ নচে কামাইয়া যাহ নিজ ঘরে॥

১৬-২৫। বচয়ে বিচিত্র কবি চরণ সদয়ে ধরি
তলে লিখে আপনার নাম।
কত রস পরকাশি ুহাসয়ে ঈশং হাসি
নিরপি নিরপিশাবুরুমা॥
নাগিতিনী বলে "ধনি দেখহ চরণ খানি
ভাল মন্দ করহ বিচার।"
দোখ স্থবদনী কহে, "কি নাম লিখিলে উহে
পরিচয় দেহ আপনার॥"
নাপিতিনী কহে ধনি, "গ্রাম নাম ধরি আন্ত ু

20

२०

30

#### अहिनी

নাপিতিনী বলে শুনগো সই। গানাথিনী লোকের বেতন কই॥ কহ তুমি থেয়ে বাইএর কাড়ে। বেতন লাগি সে বসিয়া আছে ॥ यिक कर्ड उर्त निकर्ष याहै। যে ধন দেন তা সাক্ষাকে পাই। থনি সণি কচে রাইএর কাছে। নাপিতিনা বসি আছুয়ে নাছে॥ বাই কহে তবে আনহ ভাষ। ক্তেক বেতন আখায় চায়॥ স্থী শাই ভবে ডাক্ষে "আইস। আসিয়া রাইএর নিকটে বৈস্থা" আসি নাপিতিনা ক্ছয়ে ভায়। "কে:ন কৈনীনা দেহ আমায় ॥" হাসিয়া কহয়ে ওন্দরী রাই। "েন নাপিতিনী দেখিয়ে নাই॥ এনতে ধন যে করেছ কভা" সে ক*তে.* "ভূবনে আছনে যত॥ এক ধন আছে লোমাৰ গাঁই। সে ধন পাইলে ঘরকে মাই ॥ ফদ্যে কনক কলস আছে। মণিময় হারগভাহার কাছে ॥ ভাহার বার্থ-রভন দেখা দবিদ্র জনারে কিনিয়া লঠ। দ্যা করি দেও দরি দ জনে। **ठा है एक ना एक्स क्राय अरम** ॥ সাবি যে বেতন দেহ সামার। পরশ-রতন পাই তোমার॥" হাসিয়া কহয়ে স্থলরী গোরী। '"ভাবে নাপিতিনী প্রাণে ছবি॥

পাৰশ-রভেন পাইবা বনে এখন চলছ নিজ ভবনে ॥" চণ্ডাদাস কচে না কর লাজ। নাপিতিনী নহে, বসিকবাক॥

১২ ১৪ । বাই বলে ই জলিচায় বৈস্। ট্ৰলা ডুইন্মা নাপিতিনা শ্ৰামা। চতে যে বেশন্দত্ত নামা। —পাইছিব :

७०। भारत प्रति। भारतिकतः

এক দিল মলে বভদ-কাজ। মালিনী হৈলা বসিকরাজ ॥ ফুল মালা গাঁথি ঝুলায়ে হাতে। "কে নিবে কে নিবে" ফকাবে পথে॥ গুরিতে আইলা ভাতৰ বাড়ী। বাই কেছে, "কভ লাইবে কডি॥" মালিনী লইয়া নিজতে বসি। भाषा भूल करत देख आशि॥ মালিনী কহয়ে, "দাজাই আগে। পাছে দিবা কভি যতেক লাগে॥" ! এত কঠি মালা পড়ায় গলে। বদন চ্ছন করিল ছলে॥ <sup>4</sup> ববিষা নাগ্রী ধরিল করে। এত টীটপণা আসিয়া গৱে॥ নাগৰ কছয়ে মহি যে পৰ। চণ্ডাদাস করে কি কর ছব॥

১। রভ্স-কাজ—প্রেমের কাঞ্।
 ৮। মুল করে — মূল্য স্থির করে।
 ১৮। বিটেপরা চিক্র।

38

#### চিকিৎসক-রূপে

ভাটিয়ারী

গোকুল নগরে ফিরি ঘরে ঘরে
বেড়াই চিকিৎসা করি।
যে রোগ যাহার দেখি একবার
ভাল যে করিভে পারি।

শিরে শিরশৃল পিরিভির জ্ব ৫ হয়ে থাকে যে রোগীর। সাঁথি নাহি মেলে অন্তরে সে জ্লে

তাহারে পিয়াই নীর॥ কেবল একান্ত ধ্বস্তরি।

নাহি জানে বিধি এমন ঔষধি ১০

পিয়াইলে যায় জ্বরি॥

ঔষধ খাও ভাল যে হও বট দিও তবে পাছে।

এক জন তথা শুনিয়া সে কথা

ক**হিল রাধার কাছে**॥ ১৫

পরের মুখে শুনিয়া সুখে হরষিত হ'ল মন।

বলে সে যাইয়া আনহ ডাকিয়া দেখি সে কেমন জন॥

এ কথা শুনিয়া বাহির হইয়া ২০

বলে সেই সথী ধাই। আমাদের ঘরে রোগী আছে জরে

দোলনের বর্ণের সোলা আছে আরে দেখ একবার যাই॥

শুনিয়া নাগরে ভাসিল সাগরে । ত্রাপন মনেতে খুসি। ২৫

এই ৰাড়ী হতে আসি যে তৃরিতে এখানে থাকহ বসি॥

সাজ যে সাজিতে চুলিল। ত্রিতে বাজা যে হইলা মনে। চণ্ডীদাসে কয় ধাতৃ জ্ঞান হয় ৩ পূৰ্ণ ভবে সে চিকিৎসা জানে॥

৯ :>। ধরস্তরি ভিন্ন এ ঔবধ কেছ জানেন না, এমন কি বিধাতাও জানেন না। এমন ঔবধ যে ধ্বীত নাইলেই, জর যায়।

২>। ধাই--ধাবমান হইয়া, ক্রত ঘাইয়া।

२२। वाक-- हलना।

ভাটিয়ারী

আপন বরণ ঘুচান তথন
লেপেন কেশেতে মাটা।
তকল্লবি ছ'াদে বসন পিঁথে
রঙ্গে থে চলামৈ হাঁটি॥
মনোহর ঝাল কাঁধে।

তাহার ভিতর শিকড়-মিকড়

যতন করিয়া বাঁধে॥

ঘুচাইয়া লাজে চিকিৎসক-সাজে

বসিলা রোগীর কাছে।

ঘুচায়ে বসন নিরখে বদন ১০ "রোগ যে ইহার আছে"। বাম হাত ধরি ৃ অঙ্গুলি মোড়ি

দেখে ধাতু কিবৃ বয়।
"পিরিতের রসে জারিয়াছে বিষে
পরাণ রহে না রয়॥"

হাসিয়া নাগরী উঠে অঙ্গ মোড়ি "ভাল যে কহিলা বটে।

বল কি খাইলে হইবে সবলে বেয়াধি কিসে বা টুটে ॥''

-- "ঔবধ যে হয় মনে করি ভয় এখনি খাওয়াইয়ে যেতেম। ভাল সে হইত জর যে যাইত
সময় যদি সে পেভাম ॥"

স্থন নাগরী বৃঝিল চাতুরী
টীট নাগররাজ। ২৫
বাশুলী নিকটে চণ্ডীদাস রটে
এমন কাহার কাজ॥

 তকল্পবি অর্থে চলিত ভাষায় চাতৃরী, এখানে বোধ হয় কৌশলময়।

৮। ঘুচাইয়ালাকে—রাধার লজ্জা ঘুচাইয়া।

১৪-১৫। পিরিতের জ্বরে জ্বরেছে ইহারে

পরাণ রহে কিনারয়।—পাঠাক্তর।

১৬। রটে—কহে।

(प्रशामिती (उक्ष १०

দ্যাশিনী বেশ সাজি বিনোদ রায়।
ধীরে ধীরে করি চলে হরষ অন্তর ॥
গোকুল নগরে এই শবদ উঠিল।
এক জন দেয়াশিনী ব্রজেতে আইল॥
ভাহারে দেখিবার ভরে লোকের গহন।
ধণমিল দেয়াশিনীর চরণ কমলে।
বরান ভালিল প্রেমে নয়ানের জলে॥
বিজ চণ্ডাদাসের মনে আনন্দ বাড়িল।
কোধা হইতে আইলে তুমি এ ব্রজমণ্ডল॥
১০

ি । প্রশ্বাসিগণ দেয়াশিনীকে প্রীকৃষ্ণ বলিয়া চিনিতে বিরে নাই। কিন্তু ভগবৎসারিধ্যের এমনি গুণ যে, হাহারা সকলেই প্রেমাশ্রবর্ধণ করিতে লাগিল। विश

"মথুরা পুরেতে ধাম" কপটে বলয়ে শ্যাম "আইলাম এই বৃন্দাবনে। মনে মনে বাঞ্চা এই সকল তোমারে কই শুন শুন বলি তোমা স্থানে॥ দেবী আরাধনা করি ভিক্ষার লাগিয়া ফিরি ৫ আর করি তীর্থেতে ভ্রমণ। হই আমি ভীর্থবাসী সদাই আনন্দে ভাসি এই সতা বলিছে বচন ॥ জিজ্ঞাসা করিলা যেই ভাহাতে ভোমারে কই ব্রজমাঝে রব কিছু কাল।" ইহা বলি দেয়াশিনী চলে পুনঃ একাকিনী ঘন ঘন বাজাইয়া গাল ॥ দ্বিজ চণ্ডীদাস ভাগে আনন্দিত হয়ে মনে **জি**জ্ঞাসিল "কোণা ভা**ন্**পুর। দেখিব তাহার ধাম" কপটে বলয়ে শ্যাম ১৫ রস লাগি রসিক চতুর॥

শ্রীরুষ্ণ কপটিতা করেন নাই—সতাই বলিয়াছেন। 
তাঁহার জন্মস্থান মপুরা, রাধা তাঁহার আরাধাা দেবী, 
রুজাবন তীর্প।

**সিন্ধ**রা

দেয়াশিনী বেশে মহলে প্রবেশে রাধিকা দেখিবার ভরে।

সুরক্ত চন্দ্র কপালে লেপ্র ক্তাল কাণেতে পরে ॥

সাজি ধরল বাম করে ।

প্রিয়া বিভূতি সাজল মূরতি

কন্দাক জপ্যে করে ॥

#### চণ্ডীদাস

কহে "জয় দেবী ব্রজপুরদেবী · গোকুল-রক্ষক নিভি। গোপ গোয়ালিনী স্ভগদায়িনী ১০ পৃষ্ণ দেবী ভগবতী॥" আশীর্কাদ শুনি গোপের রমণী वारेमा (मग्राभिनी कार्छ। ক্ষিজ্ঞাসা করয়ে যত মনে লয়ে, বলে "গোপ ভাল আছে॥ ১৫ স্বাকার জয় শক্ত হবে ক্ষয় মনে ভয় না ভাবিবে। তোমাদের পতি স্থন্দর স্থমতি সবাকার ভাল হবে॥" সঙ্গেতে কৃটিলা আসিয়াজটিলা ২০ পড়িলা চরণে ধরি। "গামাব বধুর পতির ম**জল** বর দেহ কুপা করি॥" শুনি দেয়াশিনী তর্ষিত বাণী জটিলা সমুখে কয়। 20 "বর যে লইবে জালই হইবে নিকটে ত্যাসিতে হয়॥" **ऊ** हिंगा या देश খানিল ধরিয়া আপন বধুর হাতে। দেয়াশিনী পাশে ৩০ বসিলা হরষে খুচায়ে বসন মাথে॥ আনন্দে দেয়াশিনী বলে শুভবাণী "**স**ব **স্তুল**ক্ষণযুকা। গন্ধর্বে পাবনী জগতভারিণী ৈ ্ ারাধা নাম ভাসুস্তা ॥" ৩৫ মনের সাকুতে ধরি ধনীর হাতে নিরখে বদন তার। দেশিতে দেখিতে সুানন্দিত চিতে भवन किन विकार्त ॥

माञ्जिषि थूलिया वाँरभन नागती हुरन। "আনন্দে থাকিবে मकिन शिर्दिर 📝 কলম্ভ নচিবে কুলে ॥" 🕦 🖟 শুনিয়া স্থন্দরী কহে ধীরি ধীরি "এ কথা কহবি মোয়। ৪৫ আমার হিয়ার ব্যথাটী ঘুচয়ে তবে সে জানি যে তোয়॥'' "একটি শপথি রাখহ যুবভী কহিতে বাসি যে ভয়। বেঁধেছ পরাণে ৫০ পর পতি সনে ইহাই দেবতা কয়।" হাসিয়া নাগরী, চাহে ফিরি ফিরি "দেয়াশিনী ঘর কোথা।" "আমার ঘর 🧻 🔪 হয় যে নগর कहिव नित्रल केंशा॥" 🚅 📜 🧸 ৫ 🕻 সক্ষেত বৃঝিয়া নয়ান ফিরিয়া ভাক করে এক দিঠে। নির্থি বদন চিনিল তখন শ্যাম চিকণ টীটে॥ ধারি ধারি করি বসন সম্বরি ৬০ भन्दित हिन्दा नार्ख । স্থবৃদ্ধি যে হয় চণ্ডীদাস কয় বেকত না করে কাজে।

- ৬। বিভূতি—ভশ।
- >> वरम-कर्छा, प्रश्नामुनी।
- ৩৮। স্বাকৃতে—স্বাগ্ৰহে।
- ৫৭। তাক করে- লক্ষ্য করে।

#### विविक्ती (वर्ष

সিশ্বডা

নাগর আপনি হৈলা বণিকিনী কৌতুক করিয়া মনে।

<u> इशा (य इन्सन</u> अप्रला वर्षेन যতন করিয়া আনে॥

কন্তুরী দ্রাবক ৫ কেশর যাবক আনিল বেণার জড়।

সোদ্ধা স্কৃম্কৃম্ কপূর চন্দন আনিল মুখা শিকড়॥ থালিতে করিয়া আনিল ভরিয়া

উপরে বসন দিয়া।

মিছামিছি করি ফেরে বাড়ী বাড়ী বৈলে ভান্ত দ্বারে গিয়া॥

"চুয়া কে লইবে" ফুকরি কহয়ে আইলা দাসী যে তবে।

আনি দেহ" বলে ১৫ "মোদের মহলে "অনেক লইতে হবে ॥"

থালিতে ধরিয়া আসিল লইয়া যেখানে নাগরী বসি।

চ্য়া যে চন্দন করয়ে রচন

বেণানী মনেতে খুসি। ২০ "हन्पन हूवक नहेरव कर्टिक

জানিতে চাহি যে আমি॥"

"সকলি লইব 🔑 ' বেতন সে দিব

∤ √যতেক আনহ তুমি ॥"

্রিশ্মলকী হাতে দিল সে মাথে ২৫ যসিতে লাগিল কেশ।

ঘর্দ্ধিতে ঘসিতে শ্রম যে হইল স্থমধুর বাণী কহে সে বেণানী

"আমি যে মাখায়ে ভালে। • ৩০

মোরে বল সখি খানিক আমলকী মাখায়ে দিয়ে ত চুলে॥"

ব**লি**য়া বেণানী বসিয়া আপনি চুয়া মাথাবার ভরে।

চুল যে ছাড়িয়া সাভ নামাইয়া ৩৫ মাখায় কুচের পরে।

পরশে নাগরী হ**টলা** আগরী পড়িলা বেণানী কোড়ে।

নিদ যে আইল **মতি সুথ হইল** 

সব শ্রম গেল দুরে॥

নেণানী বলে "গেল সে বেলে যাইতে চাহিয়ে ঘরে:"

উঠিয়া নাগরী বসন সন্থরি বলে "কি **লাগিবে** মোরে॥"

বট আনিবারে কহি**লা স**খীরে ৪৫

শুনিয়ে নাগররাজে।

কছে, "না লইব আর ধন নিব না কহি ভোমারে লাজে॥"

"কহনা কেনে কি আছে মনে

্ শুনিতে চাহি যে আমি। থাকিলে পাইবে নহিলে যাইবে

নিশ্চয় কহিল বাণী॥"

"হিয়ার ভিতরে রেখেছ যতনে

বড়ই ধন যে **সে**হ।

কুপা যে করিয়া বাস উবারিয়া ৫৫ সে ধন আমারে দেহ ॥"

তখন নাগরী বুঝিল চাতুরী হাসিল আপন মনে।

গন্ধের বেভন ্ হইল এমন

বুঝিলাম কান "কর সমাধান আর না বলিহ মোরে। এতেক গুণে রাখহ প্রাণে কেবা শিখাইল ভোরে॥ পরের নারী আশ যে করি ৬৫ ফিরয়ে আপন মনে। কোথা বা হয়েছে কোপা বা পেয়েছে ना प्रिथि (य क्लान क्लारन॥" চণ্ডীদাস কয় কত ঠাই হয় যাহাতে যাহাতে বনে। যৌবন ধনে কেবা বা মানে সোঁপে যে প্রাণেতে প্রাণে॥

थायनकी वर्खन--- शांशासतः।

৬। জড়—মুণ।

৫২। থির হইয়া কং তুমি --পাঠান্তর।

বেণানী কহয়ে হিয়ার ভিতরে—ইত্যাদি
 পাঠাস্তর।

५>। त्रमाधान--(শव; व्यात ७ त्रव कथा विनिध ना।

৭০। বনে--মিলন হয়।

#### গ্রহবিপ্র-বেশে

৮৩ ধানশী

শুনিয়া মালার কথা রসিক স্কুজন।

রাহবিপ্র বেশে যান ভান্নর ভূবন ॥

শালী লয়ে কক্ষে করি ফিরে ছারে ছারে।
উপনীত রাই পাশে ভান্মরাজপুরে॥

বিশাখা দেখিয়া ভবে নিবাস জিজ্ঞানে।

শ্রামল স্কুলর লছ লছ করি হাসে॥

বিপ্র কহে ঘর মোর হস্তিনানগর।

বিদেশে বেড়ায়ে খাই শুন্ধ উত্তর॥

প্রশ্ন দেখাবার তরে যে ডাকে আমারে।
তাহার বাড়ীতে যাই হরিব অন্তরে।
দ্বিক্ষ চণ্ডীদাস বলে এই গ্রহাচার্য্য।
প্রশ্নোতে পারগ বড় গণনাতে আর্য্য।
তোমাদের মনেতে যে আছে সে বলিবে।
ইহারে জড়ায়ে ধর উত্তর পাইবে।

७। नह नह--मृद् मृद् ।

8-4 8-4

ধানশী

যাইতে জলে ছলিতে গোপের নারী। কালিয়া বরণ 🔧 হিরণ পিঁধন বাঁকিয়া রহিল ঠারি ৮ মোহন মুরলী হাতে। যে পথে যাইবে গোপের বালা দাঁড়াইল সেই পথে॥ "যাও আন বাটে গেলে এ ঘাটে বড়ই বাধিবে লেঠা।" সখী কহে ''নিতি এই পথে যাই আজি ঠেকাইবে কেটা॥" হয় বলাবলি करत्र ठिमार्छिम হৈল অরাজক পারা। চণ্ডীদাস কহে কালীয়ানাগর ছি ছি লাজে মবি মোরা॥

৮। আন বাটে—অন্ত পধে। ১০। অরাজক পারা—অরাজকের ক্রায়।

### অভিসার

rt

এক দিন বর নাগর শেখর

কদম্ব তরুর তলে।

রক্জামু-মুতে স্থীগণ সাথে

যাইতে যম্না জলে।

রসের শেধর নাগর চতুব ৫

উপনীত সেই পথে।

শির পরশিয়া বচনের ছলে

সক্ষেত করিল তাতে।

গমন করিলা ব্রজে। ১০ নীর ভরি কুন্তে স্থীগণ সঙ্গে ত রাই আইলা গৃহমা্ঝে॥ কাহে চণ্ডীদানে বাশুলী আদেশে

শিশুগণ লয়ে

গোধন চালায়ে

শুনলো রাজার ঝিয়ে :

তোমা অনুগত বঁধুর দক্ষেত : ৫ না ছাড় আপন হিয়ে॥

চন্দ্রের প্রতি আফেপ

69

চন্দন গঞ্জনা চাঁদ গগনে

যদি তোর পাই লাগি।
লোহার মুবলে ভাঙ্গিয়ে ভোমারে

করিমু শতেক ভাগি॥
শিখি সব ভন্ত । রান্থ গ্রহ মন্ত ৫
্ সাধন করিয়া আগে।
উগারে না দিয়া চাঁদ ঘ্চাইয়া
তবেই গরব ভাঙ্গে॥
পৃক্তি দেবরাক্ত সাধিব এ কাজ
' ঢাকিয়া রাখিব মেযে। ১০

শ্বমাবস্তা ভিপি আধারিয়া রাতি তেমতি সদাই লাগে॥ পরাশর তাথে মংস্তগদ্ধা সাথে কুহায়ে স্থরতি রক্ষ।

চণ্ডীদাস ভণে রাধিকার সনে ১৫ এছন শ্রামের রঙ্গ॥

চন্দ্রোদরে অভিসার-গমনে বিদ্ন পটিয়াছে বলিয়া চন্দ্রের প্রতি রাধিকার কোধ। ১। চন্দন গঞ্জনা—যে চন্দনকে বর্ণে গঞ্জন করে ---চাদের বিশেষণ।

চন্দ্রের উক্তি

lr t

ৰ্য ত

শুনগো রাধিকা চাপার কলিকা অধিক উজ্জর কে। কত কোটা চাঁদ উদ্যা করেছে একলা ভোমার দে॥ ভূয়া এক পদ্দ চাঁদ শত নিদ্দে ৫ দস্ত অধিক শোভা।

তোমার তরাসে উছলি আকাশে দেখিয়া ও রূপ আভা ॥

কেবা তোমার অধিক উজর তোমাব অক্লের মলা। ১

বিধি আগে আনি ভাঙ্গি ধানি খানি ধরে মোর যোল কলা॥

সিন্দুরের ফোঁটা অধরের ছটা অরুণ কাঁপিতে থাকে।

অরুণ সাহসে লক্ষাস্তরে থাকে 🔀 আমি পক্ষাস্তর নাথে॥

খঞ্জন গঞ্জন ও যুগ নয়ন নাসা জিনি তিল ফুল।

¢

হেরিয়া বদন আকুল মদন কি আর দিব সে তুল। গৃধিনী জিনিয়া শ্রবণ যুগল নয়ান বয়ান ভ্রসা। নতে নিরীকণ রূপের কথন চণ্ডীদাস করে আশা॥

२२। लगा छ। ২৩। এরপে রপ আর দেখা যায় না।

#### পট্যপ্রয়া

কহিও বঁধুরে নতি কহিও বঁধুরে। গমন বিরোধ হৈল পাপ শশধরে॥ গুরুজন সম্ভাষিতে কৈল যত ভাতি। নিজ পতি সম্ভাবিতে গেল আধ রাতি॥ যদি চাঁদ ক্ষমা করে আজুকার রাতি। তবেত পাইব আমি বঁধুর সংহতি॥ অমাবস্থা প্রতিপদে চালের মরণ। त्म पिरन वँधुत मरन इटेरव भिन्नन ॥ চণ্ডীদাস বলে তুমি না ভাবিহ চিতে। সহজে এ কথা বটে কেন পাও ভীতে॥

১। নতি-প্রণাম। : •। ভীতে--ভয়।

ধানশী

কহিও ভাহার সঁহি যেতে অবসর নাই অফুরাণ হ'ল গৃহ কাজে। শাশুড়ী সদাই ডাকে ননদী প্রহরী থাকে তাহার অধিক দ্বিজরাজে॥ স্বজনি কোপ করেন চুরস্ত।

গৃহকর্ম্ম করি ছলে বিপিনো যাইবার বেলে আকাশে প্রকাশ ভেক চন্দ্র ॥ যে কুলে বিচেছদভয় একুলে নহিলে নয় স্ত্রসারিতে নিশি গেল আধা॥ আসিয়া মদন স্থা হেন বেলে দিল দেখা১ কহ দূতি কি করিবে রাধা॥ লোহার পিঞ্জরে থাকি বেরাইতে চাহে পাখী তার হৈল আকুল পরাণ। দ্বিজ চণ্ডীদাসে কয় আর কি বিরহ সয় তুরিতে মিশব বর কান॥

>। অফুরাণ—গৃহ কাজ করিয়া শেষ করিতে পারি না।

৪। শাশুড়ীননদী অপেকাচন্দ্রপ্রবলতর শক্ত।

৯। সুদারিতে—বোধ হয় সুদার করিতে, অবদর

>•। মদনস্থা—কোকিল; কোকিল ডাকিল,রাতি পোহাইল।

### কুঞ্জভঙ্গ |

**Pical**in

পদউধ কাক কোকিলের ডাক জাগিয়ে যামিনী শেষ। তুরিতে নাগর গেলা নিজ ঘরে বাঁধিতে বাঁধিতে কেশ। অবশ আলিসে 👡 र्क्षमना वानिएम ঘুমে চুলু চুলু অ'াথি। বসন ভূষণ তখন উঠিয়া দেখি। ঘরে মোর বাদী শাশুড়ী ননদী মিছা ভোলে পরিবাদ। 🕠

কানিলে এখন হইবে কেমন
বড় দেখি পরমান॥
চণ্ডীদাস কহে শুনলো ফুন্দরী
তুমি যে বড়ুয়ার বহু।
শ্যামের মোহন মায়ার কারণ ১৫
লখিতে নারিবে কেহু॥

। পদউধ— দৈয়াল।
 । জাগিয়ে— জানাইল পাঠাস্তর।
 । পরিবাদ— নিন্দা।
 ১৪। বড়ুয়ার বছ বড়লোকের বধু।
 :৫—১৬। শ্রীক্ষের মোহিনী মায়া, সকলের চকু

আরত করিয়া রাখিবে। কেত তাহাকে দেখিতে
পাইবে না।
 পাঠাস্তর -শ্রামের মোহন গুণের কারণ
 রাখিতে না পারে কেত।

ধানশী

প্রভাত কালের কাক কোকিল ডাকিল प्रियश तकनी (भव। উঠিয়া নাগর তুরিতে গেল যে বাঁধিতে বাঁধিতে কেশ। সই, তোরে সে বলি যে কথা। সে বঁধু কালিয়া না গেল বলিয়া মরমে রহল ব্যথা ॥ রহিয়া আলিসে 💃 ঠেসনা বালিসে हुन हुन इहि वाथि। ब्रमरन वमरन বদল হয়েছে ১০ এখন উঠিয়া দেখি॥ घटत भात वानी শাশুড়ী ননদী মিছা করে পরিবাদ।

ইহাতে এমন করিব কেমন
কি হৈল পরমাদ॥ . ১৫
চণ্ডীদাস কহে মনের আফলাদে
শুনহে রসিক জন।
সদা জালা যার তবে সে ভাহার
মিল্লে পিরিভি ধন॥

এ পদটি পূর্ব্ব পদের পাঠান্তর মাতা।
১৮—১॰। বাধা বিল্প না থাকিলে প্রেম গাঢ় হয় না।
সেই জন্মে "পরকীয়া রতি সেই সে আরতি
সেই সে ভঙ্কন সার।"

> 4

9

রাধা করে শুন বসিক নাগর পিরিতি বিষম বডি। পিরিতি করিয়ে মরিয়ে ঝরিয়ে কেমনে পিরিতি ছাডি॥ নিশি পোহাইল দিবস হইল ৫ মন্দিরে চলিয়া যাও। উঠিয়া বৈঠব শাশুড়ীননদী তুরিতে তাগুল খাও॥ চূড়ার বন্ধন এলায়ে পড়েছে বাঁধহ যতন করি। শ্রীমুখনওল মলিন হয়েছে আহা মরি মরি মরি॥ মুখে দিয়া কর হাসিয়া নাগর মুছিতে মুছিতে কামু। 🕠 পড়েছিল সে যে ১৫ অতি প্রিয় তথা ॰ লইল মোহন বেণু॥ নিজ পীতবাস 🗼 পরিতে পরিতে চলিক্রনাগর রায়।

হাসিয়া নাগর চতুর শেখর . রাধার পানেতে চায়॥ ২<sup>০</sup> চণ্ডীদাস কহে শ্যাম চলি গেল আর দশা উপজিল। শুন স্থনাগর কি হবে রাধার ইহার উপায় বল।

২২। আর দশা--- অতা অবস্তা। व्यात मना छेशिकल-वर्षा औत्रक ठिल्या (शत রাধিকা ভাঁছার বিরহে কাতর হইলেন।

বিভ†ণ

শ্যাম কহে শুন রাই বিনোদিনী ু লিয়া বদনে চাহ। সরস বদনে হাসি নির্থিয়া আমারে বিদায় দেহ॥ এ বোল শুনিতে বুক্**ভানুসূতে** ৫ পুলক স্পেদ অঙ্গ। আর কি স্বজন শুনিব বচন করিব রসের রঙ্গ॥ গদ গদ বোলে অভি প্রেমছলে কহে বিনোদিনী রাধা। কি বলিব আমি ভোমার চরণে मकि**न २**हेन वाक्षा ॥ 🕻 মুখে না নিঃস্বরে তোমারে বলিতে • কি ঝাঁলৰ আমি বাণী। বলহ আমারে কি বোল বলিব ১৫ কহিতে নাহিক জানি॥ 🔪 📍 (ভোষা হেন ধন . অমূল্য রতন সদাই বেড়িয়া থাকি।

তাহে যেতে চাহ নিজ বশ নহ শুনহ কমল আঁখি॥) ২০ তুরিতে গমন করিলা তখন শ্রাম সুনাগর রায়। ঐছন পিরিতি করি গভাগতি দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥ ু। তোমার মুখে হাসি দেখিয়া আমি চলিয়া যাই। ১৯। গতাগতি--গমনাগমন।

## (गार्ष्ठ नीना।

শ্রীরাধিকার প্রেমোচ্ছ্যাদ।

41Fm

প্রভাত হইল সবাই জাগিল গুরুবিত জনা। গৃহ কাজ যত সৰ সমাধিয়া আন পথে আনাগোনা॥ সৃহ নাঝে গিয়া দেখি এল ধেয়া ৫ শ্যামের চূড়ার মালা। নীল অতসীর ফুল তাহে ছিল তা দেখি হইল জালা॥ ভা দেখি বিষাদ আর কাল জাদ উঠিল বিরহ আগি॥ নয়ন অঞ্চন মুছিল তখন হইয়া বিরহ রাগি॥ খেলে শ্রাম রায় . পথ পানে চায় গৃহ কাজে নাহি মন। কখন হরষ কখন বিরম ১৫ কি বলিতে কিবা কন॥ সময় হইল গোঠে যায় পাল

মনেতে পড়িয়া গেল। 🕠

পুরুষ রঙ্গেতে করিতে বেকত
তাহার লাগিয়া ভেল ॥ ২০
কল কল শুনি রাই বিনোদিনী
গবাক্ষে বদন দিয়া।
চণ্ডীদাস কহে কালু হেমমালা
তুরিতে দেখহ গিয়া॥
৮। বর্ণসাদৃশু হেজু শ্রীকৃষ্ণকে মনে পড়ায় বিরহজ্ঞালা
বাড়িল।

36

तानकान – कृष्णवर्शत व्यक्तावत्रण ।

क र 🎒

ব্ৰহ্মবাজ বালা বাজ পথে আইলা লইয়া ধেমুর পাল। সঙ্গে স্থাগণ ভাই বলরাম ছिদাম স্থদাম प्मान ॥ স্বল সঙ্গাত তার কাঁধে হাত ৫ আরোপি নাগর রায়। হাসিতে হাসিতে সঙ্কেত বাঁশীতে এ ছুই সাঁখর গায়॥ কিছুই না জানে এ কথা আনেতে সুবল কিছু সে জানে। ১০ হৈ হৈ বলি রাজপথে চলি গমন করিছে বনে। দিয়া প্রেমময়ী গবাক্ষে বদন রূপ নিরীক্ষণ করে। নয়ন মি**লল** ১৫ দোঁহার নয়নে 🔒 क्तरत्र क्षत्र थरत् ॥ দেখিতে শ্রীমুখ---মণ্ডল স্থুন্দর বেধিত হইল রাধা। বনে পাঠাইভে এ হেন সম্পদ

• जित्नक ना करत्र वांधा॥ २०

কেমন যশোদ। নায়ের পরাণ
পুতলি ছাড়িয়া দিয়া। :
কেমনে রয়েছে গৃহমাঝে বসি
চণ্ডীদাস কহে ইহা॥

৮। এ ছই আঁখার—'রাধা' এই ডুই অক্ষর।

50

গুল্পরী

বদন হেরিয়া গদ গদ হৈয়া करङ विरनामिनौ बाङ । শুনলো স্বজনি হেন মনে গণি আন ছলে পথে যাই। হেরি শ্যামরূপ নয়ন ভরিয়া ৫ সাঁখির নিমিষ নয়। এক আছে দোষ গুরুজন রোষ তাহাই বাসিয়ে ভয়॥ অাখির পুছলে ভারার মণি যেমন খসিয়া পড়ে। শিরীষ কুস্থম , জ্ঞিনিয়া কোমল পাছে বা গলিয়া পড়ে॥ ননীর অধিক শরীর কোমল বিষম ভানুর তাপে। জানি বা ও অঙ্গ গলি পানী হয় ১৫ ভয়ে সদা তন্ত্ কাঁপে॥ কেমন যশোদা নন্দ ঘোষ পিতা হেনক সম্পদ ছাড়ি। ধরিয়া আছয় . কেমনে হৃদয় এই ত বিষম বড়ি॥ ছারে খারে যাক্. এ সব সম্পদ অনলে পুড়িয়া যাকু।

এ হেন ছাওয়ালে শেসু নিয়োজিয়া · পায় কত সুখ পাকু ৷ চণ্ডীদাস বলে শুন ধনি রাধা ২৫ সকল গুপত মানি। কোন কোন ছলা জিসের কারণে আমি সে সকল জানি॥ ২৬। ওপত---গুর রহসা।

চণ্ডীদাস হেরি মোহিত হইল ২০ নটবর বেশ দেখি। হেন মনে করি রূপের মাধুরী সদাই দেখিয়া থাকি ॥

)। पृष्टे, व्यापिया (**एथर**। ৭। ঠারি—সঙ্গেত করিয়া। ১০। ধেফু নিয়োজিয়া- ধেফু রক্ষায় নিযুক্ত করিয়া। ১৩। মেন-"মেনে"—পাদ পুরণে, কোন অর্থ नाई।

৯৭

বড়ারি

२१। किएमत--याशात।

স্ট হেরনা দেখহসিয়া। আমার নাগর বসের সাগর করেতে মুরলী লয়া॥ ঐ যায় কাকু রাম বাম পাশে স্বলের কর ধরি। ৫ রাই স্থনাগরী মরম স্থীরে দেখান অঙ্গুলি ঠারি॥ বিনোদ চূড়াটি . নালমল করে বেভিয়া কুস্থমদাম। তার মাঝে মাঝে মুকুতা তু' সারি ১০ সাজে অতি অমুপাম॥ ময়ুর শিখণ্ড বি**নি বায়ে** হেদে (হলন দোলন করে। তা দেখে মো মেন নয়ন চকোর 'পিতেঁচাহে স্থাকরে॥ ১ঃ কিবা ভুরু ছই নয়ান নাচনি কটাক্ষ ভঙ্গিমে চায়। চপল পরাণে 🌛 স্থির নাহি মানে সদা মন আছে ভাষ।

**१५**१

সই কি আর বলিব মায়। তিলে দয়া নাহি তাহার শরীরে ় এ কথা কচিব কায়॥ মাহ্যের পরাণ এমনি ধ্বণ তার দয়া নাহি চিতে। এমন নবীন--- কুস্থম বরণ বনে নহে পাঠাইতে॥ ়কেমনে ধাইব ধেমু ফিরাইব এ হেন∙নবীন ভলু। বিষম উদ্ভাপ ১০ অতি খরতর প্রথর গগন ভাতু॥ বিপিনে বেকত ফণী শত শত কুশের অঙ্গুশ তায়। সে রাঙ্গা চরণে • ছেদিয়া ভেদিব · মোর মনে হেন ভায়॥ ১৫ আর এক আছে কংসের আর্ডি कानि वा धतिरय गरा। সঘনে সঘনে শয় মোর মন সদাই উঠিছে ভয়॥ 🕠

চণ্ডীদাসে কয় না ভাবিহ ভয় ২০ সে হরি জগত পরি। তারে কোন জন করিব তাড়ন নাহি হেন দেখি কতি॥

্ড। আরতি এই কথা নানা অর্থে ব্যবজত হই-য়াছে। এখানে বোধ হয় চেষ্টা অর্থাৎ শত্রুতার চেষ্টা।

44

জ গ্ৰী

শুন গো স্বন্ধনি সই। কেমনে রহিব কান্ত না দেখিয়া নিশি দিশি হেদে রোই। নয়ান ভরিয়া হের দেখ রূপ করেতে মোহন বাঁশী। হাসিতে ঝরিছে মতিম মাণিক সুধা ঝরে কত রাশি॥ হেন মনে করি আঁচল থাপিয়া অ'াচলে ভরিয়া রাখি। পাছে কোন জনে ডাকা-চুরি দিয়া পাছে লয়ে যায় স্থি॥ এরূপ লাবণ্য কোথায় রাখিতে মোর পরতীত নাই। হৃদয় বিদারি পরাণ যথায় সেখানে করেছি ঠাই॥ 30 ্সবার গোচর 🔒 নাহি করে কঙ রাখিব যতন করি। शारक मिया निष यत याहे निष কেহ বা করয়ে চুরি॥ চিতীদাস বলে হেনক সম্পদ २० গোপনে রাখিবা বটে।

মাছে কত চোর তার নাহি ওর জানি সিংধ দিয়া কাটে॥

ও। রোই—কাদি। ৮। থাপিয়া—স্থাপিয়া, রাখিয়া। ১০। ডাকা চুরি দিয়া – চুরি ডাকাতি করিয়া।

### সখীর উক্তি।

> • •

**জ**গভী।

খন শুন শুন আমার বচন কহিছে মরম স্থী। গাঁখি আড় কভু না হও ভাহার শুনহ কমলমুখি॥ রাই বলে বড় আছে ওই ভয় পরাণ না হয় স্থির। বুঝে কোন জন মনের বেদনা এ বুক মেলায়ে চির॥ পভস্তর নুই গুরু পরিজনা ভাহারে আছয়ে ডর। 50 যেন বেড়াজালে সফবি সলিলে তেমতি আমার ঘর॥ নহে বা খ্যামের অতি কুতৃহলে হেরি ও বদন সদা। সবার মাঝারে কুলকলিয়নী সব জন বলে রাধা॥ সে সব কলক পরিবাদ বভ সৌরভ করিয়া নিমু। এত দিন যত পাড়ার পরশী • তাতে ভিলাঞ্জলি দিয়॥ ২৽ চণ্ডীদাস কছে. সে খ্যাম ভোমার 👉 তুমি সে তাহার প্রিয়া।

মিছাই বচন লোকের স্চনা আমি ভাল জানি ইহা ॥

৮। এ বুক চিরিয়া দেখাইলে মিলিবে অর্থাৎ দেখিতে পাইবে।

>७। एटना--(माटना।

>.>

শ্রীরাগ।

ঘন শুগাম শরীর কেলি রস যমুনাক ভীর বিহার বনি। শ্রীদাম স্থদাম ভায়া বলরাম সঙ্গে বস্তুদাম রঙ্গে কিন্ধিণী॥ <sup>!</sup> খন চনদন ভাল কানে ফু**ল** ডাল ৫ অঙ্গে গিরি লাল কিয়ে চলনি। লুফিছে পাচনি বাজিছে কিঙ্কিণী পদ নৃপুর ঝুমু ঝুমু শুনি॥ কলা রস গান কত যন্ত্ৰ সুতান বাজায়ত মান করি স্থমেলে। ১০ মৃগ পাখী ঝুরে যব বেণু পূরে পুলাকে তের পল্লব পুস্প ফলো॥ কেহ রূপ চাহে কেহ গুণ গায়ে কেহ প্রেমক আনন্দে বোল কহে। চণ্ডীদাস মনে অভিলাষ ১৫

২। দান।

স্বরূপ অন্তরে জাগি রহে॥

>०। ठारू-- (प्रथ

১•২ বড়ারি।

বিদগধ প্রেম ক্রপ নিরখিতে প্রেম রসমই রাই।

কামুর মরমে রাধার নয়নে সঁপিয়া পশিলা ছুই॥ ইঙ্গিত কটাকে তরল চাহনি দে হৈ দোহা দোহে রীভ। আন নাহি জানে সম্ভেত বেকত গোঠেতে চলিলা চিত। সঙ্কেত ইঙ্গিতে কহিয়া চলিল রসিক নাগর কান। মথুরার পথে বিকি অনুসারে সাধিতে চলিলা দান। দোহে ঠারা ঠারি আঁথি ফিরি ফিরি গোঠেতে গমন কেলি। হই হই বলি চলে বনমালী (थञ्च नर्य (गना हिन ॥ সব ব্ৰজবালা করি নানা খেলা গোঠ মাঝে চলি যায়। কান্থ আন ছলে মথুরার পথে দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥ 20

:—৩। শ্রীরুষ্ণের রূপ দেখিতে দেখিতে রাধিকার ় হুইটি চক্ষু শ্রীরুষ্ণের চক্ষুতে পতিত হইয়া তাঁহার মর্ম্মে প্রবেশ করিল।

>:---:২। শ্রীরাধিকা দধি ছগ্ধ বিক্রয় করিতে যাইবেন, শ্রীরুক্ষ সেই পথে দান সাধিতে চলিলেন।

>•0

শিশ্বড়া।

শ্রীদাম স্থদাম , আর বলরাম
স্থবল চলিয়া গেল।
ইঙ্গিত জানিয়া স্থবল ব্ঝিল °
পাতিতে দানের ছল॥
কুমুদ কাননে চলিলা সঘনে
ধেমুগণ নিয়োজিয়া।

**३**डेल ।

মথুরার পথে চলে যত্নাথে বাজপথ খানি বেয়া॥ তুসারি কদম্ব তরুবর মাঝে বসিলা রসিক রায়। পুরিলা তখনি মধুর মুরলী আন ছলে কিছু গায়॥ নটবর বেশ নাগরশেখর দান ছলে আছে বসি। ক্ষণেক ক্ষণেক রহি পথ চেয়ে ১৫ পূরত মোহন বাঁশী। চণ্ডীদাসে কছে ত্রিত গমন কর রসময়ী রাধে। তোমার কারণে বসি বিনোদিয়া গোঠ রম করি বাধে॥ ३ ०

কুমুদ কানন—রন্দাবনের কোন বনের নাম।

) বেয়া—বাহিত করিয়া।

**>•**8

জন্ম 🗐 ।

রাই স্থনাগরী প্রেমের আগরি
সংক্ষত পড়ল মনে।
বড়াইয়ে ডাকি কহে চন্দ্রমুখী
যাইব মথুরা পানে॥
আনি গোশীগণ যুথের মিলন ৫
চল চল যাব বিকে।
দধির পশরা সাজাহ তোমরা
বিলম্ব না কর মোকে॥
সব,গোশীগণ চলিলা ভবন,
সাজায়ে পশরা লই। ১০
'য়ত ছেনা ছধ ঘোল বিবিধ
, ভাণ্ডে সাজাইছে দই॥

সোণার গাগরি সাজায়ে ছুসারি
ওড়নি বিচিত্র নেত। '
করে অতি শোজা যেন শশী আভা ১৫
বরণ কালিয়া সেত॥
নানা আজরণ পরে গোপীগণ
পশরা লইয়া মাথে।
চণ্ডীদাস বলে সব গোপী মিলে
সব গোপী মিলে রাখে॥ ২০
৫। সুখের মিলন—সকলে মিলিয়া একটা দল
ংইল।
১৬। গোপীগণের রূপের তুলনায় চন্দ্র মিলন বোধ

>•¢

আশোয়ারি

রাধার বেশে শোভা বনাইছে চিকুর আঁচরি চুল। তাহে স্থগন্ধিত অগৰু চন্দন বেড়িয়ে মল্লিকা ফুল। বেণীর স্থর্ছাদ দৃঢ় করি বাঁধে কি কব ভাহার কথা। অতি শোভা দেখি কাল-জাদ সাথী দেখিতে হিয়াতে ব্যথা। চাঁদ ঝল মল <u>শ্রীমুখমণ্ডল</u> ভালে সে সিন্দুর কোঁটা। ১ ১০ ভার মাঝে মাঝে চন্দনের বিন্দু আঙ্গুলি বিধুর ঘটা ॥ নয়নে অঞ্চন শোভে বিলক্ষণ ় . অধর রাতু**ল দৈখি**।

গলে গজমতি স্বাস্থ্য অভি 36 কাচুলি তাহাতে সাখী॥ নিতম্বমণ্ডল ঘাঘর কিন্ধিনী চলিতে বাজয়ে ভাল। বিবিধ ভূষণ নানা আভরণ মোহিত সকলি ভেল। সোণার বরণ তাহে আরোপিত পীতের বসন ভালি। সোণার নূপুর চলিতে মধুর বাজ্ঞয়ে পঞ্চম তালি॥ রাধা মাঝে করি চ**লে** ব্রজনারী পশরা লইয়া মাথে। চণ্ডীদাস বলে রাই বিনোদিনী চলিলা মথুরা পথে॥

१-৮। কালজাদ—ক্ষণ্ডবর্ণের প্রশ্ন বন্ধ। সাক্ষাতে কালজাদখানি দেখিয়া শ্রীক্ষণে মনে হওয়ায় অদর্শনে ব্যথা পাইলেন।

১২। প্রতি অঙ্গুলিতে চন্দ্র বিরাজ করিতেছে।

>••

বড়ারি।

রাই বলে শুন (হেদেগো বেদনি
ঘাটের জানহ পথ।
বড়াইরে রাধা করে এক কথা
"বড় দেখি অমুরথ॥
আর কত দ্র আছে মধুপুর ৫
. কহনা বেদনী বুড়ি।
সহজে আগল পথ নাহি চলে
চলিয়া যাইতে নারি॥
কামু পরসঙ্গ , অলপ ইঞ্চিতে

স্বধাই যন্তন করি।

কহিতে কহিতে
কহ কহ আগো বৃড়ি ॥

কহিছে বড়াই আপনি ডরাই
মাঝেতে ষমুনা এ।
ও পার হইলে যা চাহ তা পাবে ১৫
এ পারে নাহিক সে॥
হাসি কহে রাধা বলে আধা আধা
ও পারে কে আছে বল।
বড়াই বলিছে কহিলে কি হয়
আগেতে দেখাই চল ॥ ২০
হরষ বদনী রাই বিনোদিনী
পুনঃ সে সুধায় তায়।
সে জন কেমন কিবা ভার নাম
দ্বিজ চণ্ডীদাস গায়॥

৪। অমুরগ---সঙ্কট।

৭! আগল---বোধ হয় হুর্বল।

ন : পরসঙ্গ---প্রসঙ্গ।

3.1

বড়ারি

শুন গো বড়াই হেথা।

কহ কহ শুনি সে জন কেমন

ভার পরসঙ্গ কথা॥
কোন নাম ভার সে কোন দেবভা

সে কেনে ঘাটেভে বসি। ৫
বড়াই কহিছে ৃথপনি জানিবে

সঙ্গে আছে ভার বাঁশী॥
বাঁশীর নিশান জানিয়া ভখ্ন

হাসি বিনোদিনী রাধা।

"ভাসনে কিসের পরিচয় মোর ১০

কি আর করহ বাধা"॥

"সে জন চাতুরী ভাহার মাধুরী তার নাম কালা কামু॥ ইথে আন নাই বা চাহে তা দেই অভি সে রসের তমু॥" ১৫ রাধা বলে শুন "বড়াই বেদনী চলিতে না চলে পা।" বড়াই বলিছে রাই পানে চেয়ে "তোমার রসের গা॥ ব্ড়ীরে কি বল एय वन (म वन २० বৃড়ীর নাহিক লাজ। যুবতী জনারে পরশিতে তমু চলই দানের মাঝ॥" চণ্ডীদাস বলে গিয়া দান ছলে ভেটহ নাগর রায়। ২৫ শ্রাম স্থ্নাগর বসের সাগর ক**দম্ব ত**রুর ছায়॥ ৮। বাঁশীর নিশান--বাঁশীর কথা বলাতেই বাধিকা

).h

া গ**লেন যে বড়াই শ্রীক্নকের** কথা বলিতেছে।

পিন্ধুড়া।

প্রেমে চল চল নয়ন কমল
প্রেমময়ী ধনী রাই।
খ্যামচাঁদ মালা জপিতে জ্বপিতে
আনন্দে চলিয়া যাই॥
রাই বলে শুন "রসিয়া বড়াই ৫
কত দ্র মধ্পুর।
নরান ভরিয়া তাকে দেখি গিয়া
তবে মনোরথ পূর॥"
হাসিয়া বড়াই কহিছে দড়াই
, "ও পারে দানের কাজ। ১০

তোমার কারণে বিসি আন ছলে
আছুয়ে রসিকরাজ ॥"

কলে বলে রাধা কণে করে বাধা
"তা সনে কিসের কাজ।
কো জানে তারে দানী বসিয়াছে ১৫
এই রাজপথ মাঝ॥
আমরা কংসের যোগানী হইয়ে
তারে বা কিসের ডর।"
চণ্ডীদাস বলে গিয়ে মিল রাধে
সে হরি রসিকবর॥
২০

৯। দড়াই---দৃঢ়ভাবে।

. ১। করে বাধা--বিরদ্ধ কথা কয়।

১৭। যোগানী—থে প্রতিদিন জিনিষ যোগায়।

> • .•

কুড়ি

শ্যাম পরসঙ্গ বড়াই সহিতে
কহিয়ে চলিয়া যায়।

সব গোপীগণ হাসিতে হাসিতে
গমন করিছে তায়॥

কোন সম্বি বলে ' নিকটে মথুরা ৫
নিকটে চাহিয়ে দেখ।

মেঘের বরণ দেখিয়া সঘন
কাণেক এ পারে থাক॥
বড় আদভূত দেখি য়ে বেকত
মেঘ নামে আচস্থিতে। ১০
কি হেতু ইহার বুঝিতে না পারি
ভাবনা হইল চিতে॥
তাহাতে বড়াই কহিছে ওথায়

ও নহে দেরের মেহা।

১১২ কাৰড়া

• "শুন রসমই রাধা। চল সব গোপী বিলম্ম নাকর কেন বা করিছ বাধা॥ দেখ আগে হৈয়া পশরা লইয়া দানী আগে কিবা চায়। জানিব কহিতে তবে সে সকল হেন আছে অভিপ্ৰায় ॥" বড়াই বচনে যত গোপীগণে চলিলা কদম্ব তলে। "রহ রহ বলি শুন গোয়ালিনী" ১০ দানী সে ডাকিয়া বলে॥ "বহুদিন রাধে পলাইছ সাধে আজু সে পাইয়াছি লাগি। যত এমুডাপ তাপিত আছয়ে উঠিছে দারুণ আগি ॥" চণ্ডাদাসে বলে বিপাকে পড়িলে ঠেকিলে দানীর হাতে। একে আছে তাই সঙ্গেতে বড়াই অপ্যশ ভার মাথে।

১২--১৫। অনেক দিন এই পথ দিয়া গিয়াছ, কিছ দান দাও নাই। সেই জ্ঞে আমার মনে বড় কট আছে। আৰু তাহার শোধ লইব।

• चर्च

কান্থ কহে শুন গোপি আমার বচন।
দান দিয়া মথুরাতে করহ গমন॥
কড়ি নিব আজি বুঝি কড়া কড়া।
রাজার হাসিল কড়ি নাহি যায় ছাড়া॥

বছদিন গেছ তোরা দানী ভাণ্ডাইরা।
আজি সে লইব দান পশরা লুটিয়া ॥
যাবে যদি বিকি কিনি করিড়ে মথুরা।
রাজার হাসিল কড়ি দিয়া যাহ তোরা॥
চণ্ডীদাস কহে শুন রাধা বিনোদিনী।
কতদিন গেছ পথে তাহা আমি জানি॥ ১০

- ৩। আৰু কড়ায় গণ্ডায় প্ৰাপ্য বুঝিয়া লইব।
- ে। ভাণ্ডাইয়া--ঠকাইয়া।
- ৮। शिमन-- श्राभा

> > 8

এীস্গ

শুনি গোপীগণ াল্পৰ বচন কহিতে লাগিলা তায়। "কে জানে কিসের দানের বিচার মোর মনে নাহি ভায়॥ এই পথে মোরা করি আনাগোনা ৫ े (क कारन मारनत कथा। আচম্বিতে শুনি দানের বিচার क्ति किए मिर्टिक (इथा ॥ রাজকর মোরা . গোকুলে দিয়াছি মো সবার পতি জনা। কখন এ পথে তরুণী যাইতে কেহ নাহি করে মানা"॥ তাহে কহে বাণী "अन वितामिनौ কে তোমা রাখিতে পারে। পশরা সুটিব ১৫ আজু সে লইব কে কি বা করিতে পারে"॥ চণ্ডীদাসে কহে শুন ধনী রাধে সুর্থে কর ক্রিনি বিকি।

সরস বচন অমিয়া রচন
বিকি কর স্থামূখি। ২০
১৪। রাখিতে—রক্ষা করিতে।

>>4

**>>। ब्र**हन---छावा।

ভূড়ি

"বিনোদ বড়াই রাধা বলে শুন বড়ই বিষম শুনি। चाटि घानियान এ পথে জাগাত কখন নাহিক শুনি ॥ **य इग्न १ इग्न कारह** नाहि छग्न व কহিব কংসেরে গিয়া। তোমার যোগানী তার ছেন গতি त्रा**थित्य धतिया ग**या" ॥ বড়াই বলিছে "শুন বিনোদিয়া তক্ষণী আগুলি পথে। এ কোন বিচার নহে ব্যবহার বড় হব অমুরথে ॥ ভাহে সে গোয়ালা একে সে অবলা ष्ट्रीत क्लात खत्र। সকলি মঞ্জিব ১৫ জাতি কুলশীল

এ তোর উচিত নর"॥

কামু কহে তাই "শুনহ বড়াই
রাজকর নিব বৃঝি।

যে হয় সে দিয়া তৃমি যাহ লয়া

যতেক গোয়ালা ঝি"॥ ২০
চণ্ডীদালে কয় শুন বসময়

এবার ছাড়িয়া দেহ। পুন বাছড়িয়া চ পথে আসিলে বে হয় বুঝিয়া লিহু ॥

২৩। বাহড়িয়া--- শগ্রসন্ন ইইরা।

>>6

রাগ ৰতি

"ঠেকিমু দানীর হাতে। বছদিন এই পথে আসি যাই পশরা লইয়া মাথে॥ যে বলে জাগাভি যায় ভার জাভি কু**লের** বজর পড়ি। যত **ক**রে নাট আসি এই ঘাট এই সে বড়াই বৃড়ি॥ বুড়ির বচনে এ পথে আসিয়া ঠिकिन मानीत्र ठाँरै। কেমনে ও পারে গেলে সে আমরা ১০ আর সে আসিব নাই॥ হবে পরিণাম কে জানে এমন তবে না আসিতাম মোরা। হেন বুঝি কাজ কুল শীল লাজ এ দানী নিবেক পারা॥ দূরে আওবিক্ ভালে ভালে বড়াই ও পারে লইয়া যা। শুনি হিয়া কাঁপে দানীর বচন থর থর করে গা"। **छिनान वरन** स्थन धनी ब्रास्थ २० কেন বা করহ ভর। আদর পিরিডি কর বিকি কিনি হেন মোর মনে **ল**র।

৪-৫। লাগাত বাহা বলিতৈছে তাহাতে লাভি
কুল নট হইয়া বাইবে।

>৫। পারা- বৌধ হয়।

>>1

বড়াড়ি

বেরাইতে রাধা নাহি পড়ে বাধা পশরা লইতে মাথে। তবে কি এ পথে 💮 পশরা লইয়া আসিথু বড়াই সাথে॥ সব গোপীগণ বিরস বদন ৫ কহিছে কামুর কাছে। "বিকি গেল বয়ে বেলা সে উচর অমুর্থ হয় পাছে॥ অবলা দেখিয়া পথের মাঝারে এত পরমাদ কর। বৃঝিতে না পারি ভোমার চরিভ কুবুদ্ধি ছাড়িতে নার"। রাই বলে "তুমি গোকুলে বসতি উনেছি ভোমার রীত। যমুনার জলে কেহ যেতে নারে ১৫ তাহার হরহ চিত ॥ বসিয়া থাকহ কদম্ব কাননে পরিয়া কদম্ব ফ্ল। অবলা দেখিয়া বাঁশী বাঞ্চাইয়া সবার হরহ **কুল**" 🛭 শুন বিনোদিনী **ठ** छोषारम वरन কান্ত্র চরিভ বাঁকা। কে ধনী আসিব যমুনা ধাইয়া ভাহার যৌবনে ভাকা॥

১—৪। বেরাইতে—বাহির করিরা আমিতে। রাধাকে দইরা পশরা মাধার বাহির হইরা আসিবার সমরও কোন বাধাবির (হাঁচি টিকটিকি ইত্যাদি) উপহিত হর নাই;ভাহা হইলে কি বড়াইএর সকে আসিতার ব १। উচর—উচ্চ, অনেক।

चक्रवथ—विवाप, विश्वपः

২৪। ডাকা-- ডাকান্ডি।

))r

বড়াড়ি

"শুনহ নাগর কামু। কে ভোমা এ মাঠে দানী করিয়াছে ধরিয়া মোহন বেণু। হাসি হাসি চাহ কুল নিডে চাহ আপন বড়াই রাখ। ঠাকুরালি পণা তিলেকে ভাঙ্গিবে আপনি দাঁড়ায়ে দেখ"॥ কামু বলে "আগে বাহাই করিবে তাহা আগে ভূমি কর। ভবে সে ভোমারে ছাড়ি দিব আমি ১০ যাহার ভরসা কর। কংশের যোগানী বলিয়া ভোমার वर्ष व्यश्कात प्रि । কোটা কোটা কংস করিরাছি ধ্বংশ · শুনৰ কমলসুখি ॥" রাই বলে "ভাল জানিয়ে ভোমারে রাখাল হইরে এত। গরু না রাখিতে হাতে বাড়ি করি তবে সে হইত কত ॥" এই ব্যবহার ১০ কান্থ বলে "মোর রাখি যে ধেন্তুর পাল। গোপের গোধন ভূষণ চন্দন তাহার জীবিকা যার॥" "পরিয়াছ মালা শুঞা আছে গলা

গাঁথিয়া <sup>'</sup>পরৰ মালা।

এ বেশে এদেশে রমণী ভূলিব যাহাই বরণ কালা ॥ বনফুলে তুমি চুড়াটি বেঁধেছ এই সে নাগরপণা। যত বড় তুমি ঠাকুৰ বটহ 90 এবে সে গেলই জানা"॥ **ठ**खीमारम वरन শুন গুণনিধি অবলা না দিহ ছুখ। মথুরা যাইতে দে**হ আন ভি**তে থে নিকৰ সোণা পাওয়া যার। করিতে বিকির সুখ।

**૭**૯

১৮। বাড়ি--পাঁচনি।

"কালিয়া বরণে না ছুঁইও রাধার অঙ্গ। কালিয়া হইব সোণার বরণ ভোমার কালিয়া রঙ্গ ॥ লাখবান সোণা মোর নিজ দেহ कानिया ब्हेया याव। দূরেতে থাকহ কাছে না আসিহ भित्र पिथ जिल पिर ॥" নাহি কোন জন "কালিয়া বরণ কালিয়া না বল রাখে। সিনান করিয়া ১০ কালিয়া সায়রে কালিয়া হয়েছি সাধে॥ কালিয়া বরণ এ জিন ভূবন এ সর্ কালিয়া ভাবে। কালা করে আলা কালা জপ মালা জগত জীবন লবে॥ কাল হু আঁথির তাঙ ভঙ্গিনীর যোগীর ধেয়ান কালা।

যোগ অমুরাগ রাগীর অস্তরে সকলে কালিয়া সারা॥ ভব বিরিঞ্চির ভলে নিরস্তর ২০ कानिया वत्रण थानि। চণ্ডীদাসে বলে ডাকি কুতৃহলে পরিহর কালা ধনি॥ ৩। রঙ্গ--বর্ণ। ৪। লাধবান লক পোড়ের—লকবার পোড়াইয়া >৫। লবে—লভে নয়ত ?

ক বিজ্

কালিয়া বরণ ধরিলে যভন মেলহ নয়ান ছুটি। পুথলি উপরে ধরহ কালিয়া তার তেন মুছি হুটি॥ কুণ্ডল করিয়া নোটন বন্ধান তাহা বা পরেছ রাধে। কালজাদ কাল তাহা কেনে ধনি পরিয়াছ নিজ সাধে। নয়নে পরিলে কাল্লল কালি মুছিয়া করহ দূর। হিয়ার কাঁচলি কালিয়া বরণ কেন বা ধরেছ ওর॥ ভাঙ ভূ**জ** হটি উপরে ধরিলে अक्टूब वनन कान। নিরবধি ভর যমুনার নীর ১৫ ভাহা নিভি আন ভাল॥ ভোষার অক্তের নীল নব বাস

<sup>ঁ</sup> ভাহা বা পরিলে কেনে। ,

এ সব চাতৃরী অপার বচন বিজ্ঞ চণ্ডীদাস ভগে॥ ২০

>-৪। দেখিতেছি, তুমিত যত্ন করিয়া কাল বর্ণ ধারণ করিয়াছ, তাহার প্রমাণ তোমার চক্ষুর তারা। কাল বর্ণকে যদি এতই রণা কর, তবে সে হুটিকে মুছিয়া ফেল।

25.2

হই

চণ্ডীদাসে বলে শুন বিনোদিনী
সুখেতে করহ বিকি। ২০
যে হয় উচিত দান সমাধিয়া

**>**23

#### 🖣 পট ৰঞ্জ রী

"তুমি সে বেমন জানিয়ে আমরা রাখাল হইয়া বনে। গোপের গোধন রাখহ বাগাল বোলহ বালক সনে। স্বভি হারায়ে ৫ একদিন বনে কাঁদিয়া বিকল তুমি। নাহি পড়ে মনে সে সব পাশরি সকল জানিয়ে আমি॥ একদিন মায়ে পায়ে দড়ি দিয়ে রেখেছিল উত্বখলে। কাঁদিয়া বিকল বালক সকল তাহা বা পড়য়ে মনে॥ নবনী কারণে বাঁধিয়া যতনে রাখল নন্দের রাণী। দেখিয়া বিকলি হইছ পাগলি ১৫ তাহা সে সকলি জানি॥ এবে সে জানিব 🍎 যত বড় দানী কখন নাহিক ঠেক॥"

৩। বাগাল—রাধাল। ৪। বোলহ—বেড়াও। ১•। উছ্ধল—উধ্লি।

"শুন ধনী রাধা ক্সপের গরব কহনা আমার কাছে। গুণ নাহি যার কিবা রূপ তার শুন কহি তোর কাছে। দেখিতে স্বন্ধর সোণার বরণ ৫ উত্তম সোণের ফুল। রূপ আছে তাথে গুণ নাহি তার ফেলায় করিয়া দূর॥ কেহ নাহি পরে নাহি বাস গন্ধ ভার বা ঐছন রীভ। নিগুণি কে দরে গুণকে আদর বুঝহ আপন চিত ॥ দেখি যে স্থন্দর তাল ফল যেন খাইতে লাগয়ে ডিতা। কটার বরণ নহে স্থােভন ১৫ কি কহ রূপের কথা" চণ্ডীদাস বলে শুন বিনোদিনী দোঁহার আরতি রীত। কে ইহা বুঝিব কাহার শক্তি দোঁহে সে দোঁহার চিত।

১৫। কুটা—গৌর। ১৮। স্বারতি—প্রেম। ১২৩ শ্রীপট্যপ্রায়ী।

"শুন গোয়ালিনী . উপমা দিয়াছ
কংসের আরতিপ্না।
ছাওয়াল বেলাতে পুতনা বধিল
তার রীত আছে জানা।
কি করিতে পারে তোর কংস রাজা ৫
পুতনা বধিল যবে।
ভারে কি দেখাসি যোগানী বলিয়া
তাহারে বধিব করে॥"
চণ্ডীদাস বলে দোহার পীরিতি
অমিয়া রসের সার। ১০

g তুরসসিদ্ধু দানছলা রস

৭-৮। তুমি কংসের ছং যোগাও বলিয়া কি ভয় দেশাইতেছ । তোমার কংসকেই কোনদিন বধ করিব।

অপার মহিমা সার॥

যতি 🕮

রাধা বলে "তুমি কত চাহ দান বলহ কি নিতে চাহ। ষা নিবে তা দিব নাহি ভাঙ্গাইব সবারে ছাড়িয়া দিহ॥" বলিলে আমারে কামু বলে "ভাল বুঝহ আমার কাছে। উচিত হইলে তাহা দিয়া যাবে . আন কথা হয় পাছে॥ অমূল্য রতন নিবত এখন বেণীর যে হয় দান। • ১০ এক লাখ নিব ় ইহার উচিত ইহাতে না হয় আন॥

সিঁথার সিন্দুরে ছুই লাখ নিব নাসার বেশরে রাই। তিন লাখ নিব মুকুতার দান ১৫ বেশের উপমা নাই॥ হাসির সোসর পাঁচ লাখ পর নিব সে এখনি গণি। যাহার হাসির মিশালে পড়য়ে কত মাণিকের কণি ॥' কহে চণ্ডীদাস শুন রসময় এত কি দানের লেখা। এ ঘাটে তরুণী গোপের রমণী আর কি পাইব দেখা॥ ০। ভাঙ্গাইব--কম দিব। ১৪। রাই--বোধ হয় 'তাই' হইবে। ১৭। সোসর-সমান।

1986

বড়ারি।

"কাঁচুলির কড়িদশ লাখ নিব হারের বিংশতি লক্ষ। নয়ানের কোণে আছে কত ধন বঙ্কিম যার কটাক্ষ॥ সাত লাখ নিব ৫ নিতম্ব মণ্ডল নৃপুর সহস্র পর। অমৃশ্য রতন যাহার নাহিক ওর॥ নীলবাস পর শোভিত স্থন্দর ইহা বা কিসের লেখা। म्भ माथ निव কে ভোমা রাখিব পেয়েছি ভোমার দেখা॥ .

কিন্ধিনী নূপুর কোটি লাখ নিব অমৃল্য ভাণ্ডার লেহত জাগাত যাহার উপমা নাই। वृक्षित्म य इंग्र माछ।" নাহি যায় রাখা ১৫ **ठ** छीमारन वरन . य वन रम इय যত হয় লেখা লইব তোমার ঠাঁই॥" এ কন্ত বুঝিয়ে ভাব॥ ২১ এত শুনি রাধা কহে আধা আধা >। রসিয়া--রসিকা। বসিয়া নাগর পাশে। ৮। ভাঙ্গাইয়া লহ – কোনটায় কত লইবে হিসাব এত কিবা সহে দানের বিচার করিয়া লও। কহে দ্বিজ চণ্ডীদাস॥ ە ډ >>। यृ(म-यृता। १। पूँषित এই वाश्म की हेम है। ১১। রাখিব—রাখিবে। > ? 9 ১৫। যে অঙ্ক পাত করিতে পারা যায় না। **কাডারি** 

হাসিয়া হাসিয়া বড়াই রসিঁয়া ধরিয়া রাধার করে।

256

হাসনি রসিয়া রাই পানে চেয়ে হরষে কহিছে তারে॥ "কত স্থধানিধি আমার আঁচকো ৫

করে সে পরশি লেহ।

কিবা চাহ দান রসাল মিশালে

আসি ভাঙ্গাইয়া লেহ॥

এক শত লাখ হাতে গণি পাবে বচন আমিয়া কণি। ১০

আর লক্ষ লক্ষ ়, চাহনি মধুর লেহত আসিয়া গণি॥

আর কোটা লক্ষ লেহত অধর স্থানর কনক ফুলে।

যার নাহি ভুল তার সমত্ল ১৫

• যার নাহি দিতে মূলে॥

"শুনহে রসিক নাতি।

জাতি মিলায়ব ধন বি**লা**য়ব নেহত আঁচল পাতি ॥"

হাসিয়া হাসিয়া রসিয়া বড়াই কহিছে রাধার ঠাঁই।

"কি শুন নাতিয়া বচন সচন কেমনে শুনহ রাই॥

কুলশীল পনা শুনহ নাতিনা নিতে চাহে ও না দানী।

তার কিবা ভয় কিসের সংশয় ১● এই কর বিকি কিনি॥

অমূল্য রতন যাহার বচন কিবা সে লোকের ভয়।

বে চাহে তা দিয়ে এই আন লয়ে ' হেন সে মনেতে ভায় 』" ১৫

রাই পানে বলে বুড়ি কোন ছলে

কাণে কাণে কহে কথা।

বারি হাতে করি শুাম বরাবরি যাইয়ে নাড়য়ে মাথা॥

ì

"নাতিনী নাতিরা ছুইসে মিলন ২০
করিয়া দিব সে ভালি।

রসের প্রশে স্থেবর লালসে
করহ রসের কেলি॥"

চণ্ডীদাসে সুখী এ কথা শুনিয়া
শুসমের বাজারে বিকি। ২৫
হরষ বদনে পশরা মাথায়
হাসি বসে সব সখী॥

३२४ युरे।

🖢। বচন সচন-কথাবার্তা।

"পশরা নামাও রাধা। বিকে পাঠাইতে এ নব বয়সে তিলেক নহিল বাধা॥ তোর নিজ পতি তার হেন রীতি তোরে পাঠাইল বিকে। কেমনে ধৈর্য ধরিয়া আছয়ে সে হেন পাষাণ বুকে॥ যাউক ভাহার ধনে পড়ু বাজ এ হেন **সম্প**দ ছাডি। তাহার নাহিক মায়া দয়া মোহ ১০ সে অতি কঠিন বড়ি॥ বৈস বৈস রাধে বদের মোহিনী বসনে করি যে বায়। রবির কিরণে · সোণার বরণ পাৰে মিলাইয়া যায়॥ উঠিছে সঘনে ভয় অতি মনে ্ শুনহ সুন্দরী রাই। हाँ। यूथशानि মলিন হয়েছে" চগুীদাস গুণ গাই॥

এই পদাও পরবর্ত্তী কয়েকটি পদা রাধিকার প্রতি<sub>়</sub>় শ্রীকক্ষের উদ্ধিন।

>-৩। তোমার নবীন বয়স; তোমাকে দধি ছ%। বিক্রয়ে পাঠাইতে কি তোমার স্বামীর কোনরূপ দিধা বোধ হইল না?

>>>

বড়ারি।

"সোণার বরণখানি মলিন হইয়াছ তুমি হেলিয়া পড়েছ যেন লতা। অধর বাঙ্গুলী তোর নয়ান চাতক ওর মলিন হইল ভার পাতা। বরণ বসন তায় ঘামে ভিজে এক ঠায় ৫ চরণে চলিতে নার পথে। উতাপিত রেণু তায় কত না পুড়িছে পায় ু পশরা বা**জিলে** তায় মাথে ॥ নিকটে বৈঠহ তুমি রাখহ পশরাখানি শীতল চামর দিয়ে বা। শিরীষ কুস্থম জিনি স্থকোমল তমুখানি মুখে না নিঃস্বরে এক রা॥" বসিয়া রসিক রায় বলয়ে বুটিয়া ভায় হাসি রাধা বলিছে বড়াইয়ে। চণ্ডীদাস শুনি দেখি শুনহ কমলমুখি :৫ বৈস ক্ষেণে কদম্বের ছায়ে॥

- ে। একঠায়—একবারে।
- ৭। উতাপিত-উত্তপ্ত। '•
- ৮। তাহাতে আবার পশরার ভারে মাধায় ব্যধা হইয়াছে।
  - ১৩। বৃটিয়া—বোধ হয় রাধিকা।

কাৰড়া।

"আজু দান মোর रहेन मकन পাইল তোমার সঙ্গ। বিহি মিলাইল ভাল ঘটাইল বিকি কিনি হল রঙ্গ॥ ভোমার কারণে দান সির্জিল ৫ বিসল ক**দত্ব ভলে**। দিনে কভ বেরি বুলি ফেরি ফেরি থাকিয়ে কতেক ছলে॥ বাঁশীতে সঙ্কেত সদা নাম নিয়ে গোঠেতে গোধন রাখি। তোমার কারণে এ পথে ও পথে मनारे ছলেতে থাকি॥" আদর পিরিতে রাই মন তুষি নাগর রসিক রায়। দধির পশরা লয়ে দধি ছগ্ধ পিয়ল ১৫ চণ্ডীদাসে ভেল তায়॥

202

৩। বিহি--বিধি।

৭। বুলি—ভ্রমণ করি।

"আইস ধনী রাধা

কাৰ্ড়া !

তুমি তমু আধা

অনস্ত ভাবিয়া ভাবে।
ভব বিরিঞ্চি তারা নিরস্তর
যে পদপল্লব লবে॥
শুক সনাভন পরম কারণ ৫
ও পদ আশে।
বিশ্বপুরে হেতা হয়ে শুলা লতা
ইহাতে করিয়ে বাসে॥

কেনে তরু লভা হইব দেব্যন্তা কিসের কারণে হেন। ও পদ-পকজ · বেণুর **লা**গিয়া এ হেতু ভাহার গুন। ধেয়ানে না পায় যাহার চরণ সে-জনা দানের ছলে। আজু শুভদিন **(शर्य एत्रणन ५**० তোমারে পেয়েছি কোড়ে॥ তুমি সে পরম আমার মরম ভোমারে ভাবিয়ে সদা। হৃদয় ভিতরে ভাবিয়ে তোমারে मनारे व्याहरत्र वाँथा॥ কত ছলা কলা তোমার কারণে দানের আরভি ভাই।" চণ্ডীদাস বলে ঐ ছন পিরিতি খুজিয়া পাইবে নাই॥ 8! न(त-नहरू हेळूक।

৪! লবে—লইতে ইচ্ছুক।
 १। হেতা—এখানে।
 ১২। দেবতারা তরুলতা হইয়া এখানে থাকেন,
 তাহার কারণ জীরাধার পদরেণু পাইবার আশা।

506

श्रृहे ।

"আন জন যত বলে।
সে সব সৌরভ এ চ্য়া চন্দন
করিয়া লইয়াছি হেলে॥

তুমি মোর ধনি নয়ন অঞ্চন
। তুটি সে আঁখির আঁখি।
ববে ভিল আধু ভোমারে না দেখি
মরমে মরিয়া খাকি॥

। শয়নে ভোজনে नग्रुटन नग्रुटन অাখির গোচর যবে। ভবে কি পরাগে **कौ** वहें **कौ** वत्न 20 পরাণ না রহে ভূবে॥ তেজি আন পথ গোপত আরোপি সকল তোমার পায়। নিরস্তর মন সঘন সঘন তুয়া পথ পানে চায়॥ 38 গোলক বিহার পরিহরি রাধা গোকুলে গোপের ঘরে। পরশ লাগিয়া তুয়া আশ বাস, আইনু ভোমার তরে॥ ভোমা হেন নিধি মোরে দিল বিধি শুনহ কিশোরী গৌরী।" চণ্ডীদাসে কয় হেন মনে লয় কাহে আড় করি॥

১।৩। লোকের নিন্দা চ্য়া চন্দনের ক্যায় সৌরভময় বিবেচনা করি।

>•। তেজি আন পথ—অন্ত সকল ধর্ম পরিত্যাগ করিয়া।

200

कानड़ा।

"তুমি সে আঁখির তারা।
আঁথির নিমেথে কত শতবার
নিমিখে হইয়ে হারা॥
ভোমা হেন ধন অমূল্য রতন
পাইল কদম্ব তলে।
বৈস বৈস রাধা কত না বেজেছে
ও রাঙ্গাচরণ তলে॥
শিরীষ শরীর ছটায় রবির
মলিন হুর্য়েছে মুধ।

আহা মরি মরি বিষম গমনে কত না পেয়েছ ছুখ।।" আপনা পীতের বসন আঁচলে রাই মুখ মুছে শ্যাম।, শ্রম দূরে গেল বসন বাতাসে মিটিল অক্সের ঘাম॥ 26 তরুয়ার তলে নীপ কদম্ব সহচরী গোপীগণে। রস সরসিজ সরস বচনে · চাহিয়া শ্যামের পানে॥ কহিছেন ভঠি রসিয়া বড়াই "শুনহ রমণী যত। কর সমাধান' প্রেমরসদান তাহা না বুঝায়ে কত। ইঙ্গিতে ইঙ্গিতে কহে এক ভিতে সেই সে চতুর বুড়ি। ₹@ উগি দিয়া চাহে আনপথে রহে পড়িল হাতের বারি॥ কান্থ করে লই ছেনা হুধ দই वनत्न जानिया (नय्। লইল যতন কার বা বসন কার অঙ্গে হার লয়॥ ঐছন কি রীতি ধরিয়া পিরীতি ধরিয়া রাধার করে। কদম্বের তলে গুপ তরুবর देवर्रम नागतवात ॥ 90 চণ্ডীদাসে দেখি '' ছ'ছ রূপখানি মনেতে লাগিল ভাল। যমুনা কিনার একুল ছকুল সকলি করিল আলো॥ > । विषय भयत- छेळनीठ श्वात भयता

৩৫। মিটিল-মিলিয়া পেল, ওকাইয়া গেল।

. >>8		চণ্ডীদাস ব <b>লে</b>	
ব <b>ড়া</b> ড়ি।		বেকত বুঝি <b>ে</b>	
বড় অদভুত দেখিল বেকত		এই পদে রাধাক্তফের	
নবঘন আসি নামে।		যেখানে সাধন-তত্ত্ব বলিবার ত	
সে জন জলদ পুঞ্জ ঘোর অতি		চণ্ডীদাস প্রহেলিকার ভাষ	
বসিয়া কুস্কুম দামে॥		সাধারণে জানিতে পারুক, ই	
মেঘের উপরে চাঁদ ফ <b>লিয়াছে</b>	¢	ইহার অর্থ টানিয়া বাহির	
হের না আসিয়া দেখ।		তবে সাধক ভক্তগণের নিকট	
এই সব গোপী প্রেমের নবরূপী		চণ্ডীদাদের এরূপ পদ অনেক	
কেমনে জলদ রেখ ৷			
মেঘে চাঁদ ফলে নাহি কোন কালে		70	
নাহি তার পাতা ফুল।	٥, ۲		
চারু শাখা তায় দেখিল তথায়		"আগো বড়াই কি	
মেঘের গঞ্জন দূর॥		- দেখি অদভুত, নয়	
শাখায় শাখায় তার সরু ভালে		কিরূপ করি	
বিংশতি চাঁদের খেলা।		দেখাইয়া দিং	
আর চারু মূলে বিশ শশধর	20	মেঘে উপজ্ঞ	
চাল্লিশ চাঁদের মেলা॥		না জানি কে:	
মেথের উপর নাচিছে ময়ূর		হাসিয়া বড়াই	
তাহার গর্জন শুনি।		ও মৈঘ ও চাঁ	
সহস্র গো ভূষণ মুখেতে		চাঁদ আর পি	
নাচত একহি ফণী।	২৽	ছুই তন্থ এক	
ফ <b>ল</b> যুগল তাহে শশধর		কো কন্থ আ	
বেড়িয়া রহেছে ওই।		ওরা মনমথ (	
এ রস মাধুরী চতুর চাতুরী		আজু যুগল-f	
বৃঝিতে না পারে কই।		<b>কালিন্দীকৃ</b> ফে	
কুলিশ যুগল তার পরে ফুল	২৫	দেখ রাধা বি	
তাহে সে চাতক আশে।		ক <b>দশ্ব</b> ত <b>রু</b> র	
চাতক বাদর মেঘ রসালিয়া		চুঁহ তমু আ	
সে জন আছয়ে শেষে॥		, ठखीमांन प्रा	
এই ছুই আদর পাইয়া বাদর		<ul><li>श्वास्त्रमा श्वास्त्र</li></ul>	
দেখিয়া গোপের নারী।	•	<b>১८। উ</b> ब्बाद—উ <b>र्वेदन</b> ।	
•		. •	

**ज्**यक्ती।

রাই বলে "শুন বেদনী বড়াই মোর ঘরে शिया বল। কামুর চরণে 'শরণ পশিল মনের মানস ভেল॥ ব্ৰহ্মা আদি দেবে যেই পদ সেবে ৫ ধেয়ানে নাহিক পায়। অলসে পাইল হেৰক সম্পদ কি করিব কুল সব যাও দ্র याशाद्य (मिथ्रेटन कि। এ সব ছাড়িয়া কি আবে … যার জাতি কুল সেও মোর ভাল ছাড়ে ছাড়ু গুরু জনা। শরণ লইলাম ১৫ ও রাঙ্গাচরণে কি আর কুলের পণা॥" তোমরা যাইয়া শুন সব সবি কহিও রাধার ঘরে। দিল সে রাধারে খ্যামের বাজারে চণ্ডীদাস জানে ভালে॥

৪। মনের ইচ্ছাপূর্ণ হইল।
 ১০। জি-প্রাণ পাই।
 ১৬। কুলের পণা-কুলের গৌরব।

>•1

"যে পদ বোগীরা জপে নির্নন্তর অনস্ত না জানে রীভি।

মুনি অগোচর যে হ্রখ সম্প্রদ তাহা না পাইল ইভি॥ আর কি ইহাকে আছে কত ধন ৫ বিকাল পশরা মোর॥ দধি ছগ্ধ যত ও রাঙ্গা চরণে বিকাইল সব মোর॥ এই নীপ মূলে কামনার ফল मकल इंडेन विकि। আমার করমে এই সে সকলি ে ভোৱা যাহ যত সধী॥" গদ গদ বাণী करह विरनामिनी नग्रत्न भन्तरम् थाता । क्मक्म हम्मन যে ছিল লেপন ১৫ ভাসিয়া চলিল তারা॥ মোহে লোহে আঁখি পুলক কদম্ব, (यमन यमूना वरह। তেন আঁখি ভরি লোর বহি চলে

৪। এখানে তাহা পাইলাম।

हेरा चरशका दकान् धन चिथक मृग्यदान ?

षिक ठञीमांग करह ॥

১৯। তেন--সেই রূপ।

बेढ़ि २**०**६

"শুন গো বড়াই মোর।
আৰু শুভদিন হইল আমার
বঁধুয়া পাইস্থ কোঁড় ॥ "
বাহার লাগিয়া এত পরমাদ
সে সব সফল মানি।
মনের বাসনা প্রিল আমার
বাটে পাকু ষাত্মণি॥

লোয়ানে যাইয়া এই কছ গিয়া রাধারে স্থ'পিল শ্রামে। রাধা রটে রাধা ভার রাক্ষা পায়ে পশিল মনের সনে ॥ আর কিবা মোর সে ঘর করণে थ्रम महम कांक । •কুল শীল মোর যে হকুলে হকু পড়িয়া যাউক বাক ॥ 50 পাই **ফল** ভাসা বছ পুণ্য দশা সফল করিয়া মানি।" চণ্ডীদান স্থাী দোঁহার পিরিভি এমন নাহিক শুনি॥

১০---১১ নিশ্চরই রাধিকা তাহার চরণে আন্মসমর্পণ করিল।

.

পিকুড়া।

रात्रिपृथ धनौ त्राधा विरनापिनौ চাহিয়া শ্রামের পানে॥ পূৰ্ণ হল কাম যতেক কামনা যে সুখ আছিল মনে॥ ভাহা বিধি আনি ভালে মিলায়ল ৫ কামনা পূরল আজি। প্রেম পরশিয়া লালস পাইয়া পশরা জানিতে সাজি। বিকি কিনি হল কদম্ব ভলাতে মনোরথ হর্সী সিধি। বেলা সে হইল খনে সে যাইতে কহি শুন গুণনিধি॥ পুনঃ কালি মোরা পশরা সাজায়ে স্থাসিব মথুরা পথে।

গৃহ দূর পথ আছে অমুদ্রও ১
গুরু জনা বলে তাতে ॥

हরষ বদনে কহ না সদনে
যাইতে গোকুল পুর।

চণ্ডীদাস বলে চলহ ত্রিতে
পথ আছে বহু দূর॥

২০। সিধি—সিদ্ধি।
১৫। অমুরণ—সকট, বিপদ্।

A a terrory

শ্ৰীকানড়া কহিছে বড়াই "শুন ধনী রাই বে**লা সে উ**চর হ**ল**। তৌলহ পশরা অতি রবি খরা তুরিত করিয়া চল। গৃহপতি তারা অতি সে মুখরা গঞ্জিব কভেক গালি।" শুনি উঠে তাপ বিষম সন্তাপ গমন তুরিতে ভালি ॥ শোক চরচাতে হেন মনে করে সকল বৃড়ির দোষ। আমি না আইলে কেবা লয়ে যায় কাহারে করিব রোষ॥ রাধা বলে ভায় "কিবা আছে ভয় যে করু সে করু পাছে। পাইয়া আমরা এ হেন সম্পদ আর কি জগতে আছে ॥ 🕻 . শুনগো বেদনী বড়াই চেড্রী . ভূমি সে নাটের নাট। গোপনী যে রস্করিলে বেকভ

পাভালে রসের হাট।

এখন কেন বা জয় পরিসর

তথনি জরসা বাঁধ।

কান্ধুর চরণে ভেজাতে যতনে

যতনে তাহাই ছাদ॥"

চণ্ডীদাস বলে চলহ ভূরিতে ২৫

বিলগু নাহিক ধনি।
বহুদুর পথ গোকুল নগরী

সাজাহ পশ্বা খানি॥

১৫—১৬। আমর। এমন সম্পদ্পাইযাছি; ইহাব জুলা জগতে জার কি আছে? ১৯। গোপনী—গুপ্ত। ২৩। ভেজাতে—মিলাইতে।

२८। छोम-त्रोमन कत।

585

শীকানড়া

সব গোপীগণ আহীর রমণী
পশরা তুলিয়া মাথে।
মাঝে স্থনাগরী প্রেমের আগরি
আনন্দে চলিল পথে॥
হাসি রস্থানি রাই বিনোদিনী
বড়াই পানেতে চায়।
"আর কত দূর গোকুল নগর"

ক্ষণেক স্থধায় তায়॥ বড়াই কহিছে "আগে সে যমুনা • ও পারে সবার ঘর।

বড় দেখি রাধা সব দেখি বাধা যমুনা বাড়ল জল ॥ কেমনে সকলে ়পার হৈয়া যাব

কেমনে সকলে ুপার হেয়াযাব ইহা্র উপায় বল। কিসে পার হবে কেমনে যাইবে ১৫

ফিরিয়া সবাই চল॥

সেই সে কদম্ব তলাতে চলহ

যেখানে রসের কাম ।

সেখানে যাইয়া মিনতি করিয়া

নিবসে রসের তমু॥" ২০

এ বোল বলিতে কামু আচ্মিতে

আসিয়া মিলল তায়।

আব এক লীলা পুনঃ উপজিল

দিক্ত চণ্ডীদাস গায়॥

ইতি দান সমাপ্ত। ২০। নিবসে - বাস করে।

# ৩। নৌকাখণ্ড।

285

ককণা লগ।

দেখিয়া যমুনা নদীর ভরঙ্গ উঠিছে দারুণ ফেনা। দেখিয়া নাগরী সকল গোয়ালী লাগিল বিস্ময়পনা॥ যমুনা পেরাব (कम**र**न এ नही মোর মনে হেন লয়। বহিছে ত্থার তরঙ্গ অপার হইছে সবার ভয়। কোন গোপীবলৈ কোন গোয়ালিনী "এ বড়ি বিষম দেখি। ইহার উপায় কি বৃদ্ধি করিব বলহ সকল স্থি॥ কোন বা সাহসে যদি জালে নামি

ভূৰিয়া মরিব **ভ**বে

20

₹•

উপায় হইলে তবে সে যাইবে নহে বা কি আর হবে॥ কিসে পার হব না জানি সাঁতার কেমনে যাইব পার।

• বড়াই কহিছে চাহি রাধা পাশে "শুনগো আমার বাণী। কান্তুর চরণে বিন্তি করহ পার করে গুণমণি॥" চণ্ডীদাস দেখি যমুনা তরক ২৫

ইহার উপায় কই। এই দরিয়াতে আনের শক্তি নাহিক কালিয়া বই ॥

ে। পেরাব--পার হইব। २७। करे-- कहि, वनिट्टाइन।

বডারি

"হেদেহে নাগর চতুর শেখর সবারে করিবে পার। যাহা চাছ দিব ও পার হইলে তোমার শুধিব ধার॥ মনে না ভাবিহ ভোমার মজুরী যে হয় উচিত দিয়ে। ভবে সে গোপিন্টু যত গোয়ালিনা যাবত ও পার হয়ে॥" হাসি কহে কামু করে লয়ে বেণু "শুনহ সুন্দরী রাধা। ٥ ( ভোমা পার করি দিতে সে আমার ভিলেক নাহিক বাধা।

ভবে করি পার ও পারে রার্থিব, শুন গোয়ালিনী যত। ও পার হইঙ্গে কভ দান নিব লইব সবার সূর্ত ॥" বটী কৰে তাতে "কিবা নিতে চাহ কহ্না বেকত করি। ভাহাই করিব যাহা চাহ দিব শুনহ পরাণ হরি ॥" চণ্ডীদাস বলে নাগর চত্তর শুন রসময় কান। রাধা পার কর বিলম্ব না কর ইহাতে নাহিক আন॥ गत्न जना किंद्र जीविस ना।

188

11151

হাসিয়া নাুগর চতুর শেখর যতনে আনল তরি। চাপায়ে রাধারে স্বাবে স্থায় থেয়া দেয়া আছে ভারি॥ একে একে করি সবে পার করি আমার এ না'টি ভাঙ্গ। পাছে দরিয়াতে ভুবহ বেকতে মোটা আছে কার গা॥ ফীণ যার গায় চড়সিয়া নায় সবারে করিব পার। 🚶 . মোর কাছে থোহ বচন শুনহ • যত আভরণ ভার॥ রাধা বলে ভালু দানের বিচার বিষম দানীর লেঁঠা।

ক্লেজন সংহতি কুবচন অভি বড়াই কণ্টক কাঁটা ॥ বড়াই চরিত অভি বিপরীত যা কহে তা জেনে দানী। আভরণ মাগে ্এ বড়ি বি**ষ**ম কি হেতু নাহিক জ্বানি। २० ভয়ে মনোচুঃখ সবাই বিমুখ হইল বিষম বড়ি। ইহার উপায় কহ কহ দেখি শুনগো বড়াই বুড়ি॥" নৌকার উপরে সবা চডাইয়া 20 চালাতে লাগিল তাই। কেরয়াল বাহি যায় আন পথে কহে বিনোদিনী রাই॥ ও পথে বাহিছ চলে ভরিখানি এ দিকে রহয়ে পথ। **9**0 এত দিনে জানি ভোমার চরিত বড় কর অমুরথ 1 पत्रिया (य पिटक বাহ কেরয়াল মাঝারে মকর ভাসে। কের কেরয়াল শুন নন্দলাল কহে বিজ চণ্ডীদাসে॥

৪। থেয়া দেয়া বড় শক্ত। ২৭। কেরুয়াল-দাড়, নাবিক।

রাধার কাকুভি করিছে আরডি "শুনহ নাগর রার। বুঝি হেন মন ্লইবে পরাণ হৈন বুকি অভিপ্ৰায়॥

এবার বাঁচাহ **জীব বতকাল**া ঘুষিব ভোমার গুণে। 👈 কিসের কারণ এত অপমান করহ আপন মনে॥" "ভখনি বলেছি কান্থ কহে তাহে ভাঙ্গা নৌকাখানি মোর। তোমরা গোয়ালী ছেনা হুগ্ধ খেয়ে আছে অঙ্গ ভারি ভোর॥ মোর ভাঙ্গা নায়ে এত কিবা সহে না'খানি ভূবিতে চায়। মোর কিবা দোষ মোরে কর রোষ 24 সকলি চাপিলে না'য়॥" "মকর কুস্তীর ভাসে শত শত ভাহার নাহিক লেখা। পরাণ উড়িছে তাহারে দেখিয়া - কার সনে আর দেখা॥" ١, কান্তু বলে "শুন বিনোদিনী রাধা আমার কি আছে দোষ। ভাঙ্গা নৌকাখানি দরিয়াতে ঘুরে আমার কি আছে দোষ॥" চণ্ডীদাস কহে শুন স্থনাগর ₹@ অবলা কি জানে রীত। ভোমার চাতুরী কিবা সে বুঝিৰ কে জানে ভোমার চিত্ত॥ রাধা বিনয় করিয়া বলিতেছেন।

বেলা

। জীব—বাচিব।

"টेन টेन करत অঙ্গ খোর যুরে চাইতে যমুনা নদী। তারা কলে ভাসে নানা জন্তু আছে দেখহ পরাণমিধি॥

> 0

50

२∙

٥.

ধ্বন মনে করে	এবার কি জীব	¢	. >81	,
় 'কেন বা আইমু বিকে।			<b>क</b> ग्र <b>ी</b>	
ভাল দুরে যাউ	জীবন সংশয়		হাসি কহে তবে	সব গোপনারী
কি আর ব			"আর কিবা বি	ত আছে।
এমন জানিলে	তবে কি বাহির		এ নব যৌবন'>	
আহীর রমণ	ो इद्रग्र	٥.	দিয়াছি তোমার	
	না জানি আচার		ক।য়মন চিত্তে	বিধির বিধান
পরাণ লইতে			শরণ লইয়াছি ৷	
সব গোপীগণ			আর কিবা চাহ 🛛 🤊	াগে তাহা লহ
পড়হ নেয়ার			সামরা জানিয়াছি ॥	
	করহ যতন	50	তুমি তরু লতা মো	রা ফল পাতা
ও পারে রা			তুলিয়া <b>ল</b> ইতে কি।	
	লইয়া চলহ		নহে অতি দূর	বড় পরিশ্রম
হেদেহে রসে			্ ভোমারে বলিব	कि॥
	শর <b>ণ ল</b> ইয়াছি		এ তি <b>ল তু</b> লদী	ভোমার চরণে
	ান ভকু॥	ه د	<b>সঁপিয়াছি</b> জাতিব	<b>ृ</b> ल ।
		•	ভোমা বিনে আর কে	আছে আমার
প্রাণের দোসর এ নব কৈশোর ভোমারে করিল দান।		তুমি সবাকার মূল ॥		
এবার ও পারে			ভুয়া বিনে, আন না	হি কোন জন
শুনহ নাগর			আর বা বলিব স	क्ट ।
	ক্ৰে স্বা হাগে	30	<b>জन</b> र्भ जनस्म	জীবনে মরণে
"ভবে সে ক		7,0	দিয়াছি আপন দে	হৈ ॥
এ নব যৌবন			বে কর সে কর	আপন বড়াই
ভবে লাগাই			আমরা কুলের ন	ারী।
চ <b>ণ্ডীদাস</b> তাহে			আমরা জানিয়ে তু	হুমি প্রাণপতি
	- पार्श्वण गत्राग <b>ड (एथि</b> ।		শুনহ প্রাণের হা	ते ॥
অবলা পরাণ		C 9	খরে পরিবাদ <sup>,</sup>	কলফ তুসারি
			তোমার কারণে এ	•
শুনহ কমল			প্রকর গঞ্জনা ে	•
। মঙ্গল হওয়া দূরের কথা, জীবনসন্ধট হইল। ১-১৩। শ্রীক্লকে আত্মসমর্পণ ভিন্ন পার হওগার			<b>• এ সব সহি যে</b> য	
		জগার	চণ্ডীদাস বলে,	
পার নাই। ১৪।	(42124114C42)			. ~

०। क्न. मभाभन-क्न मभ्भ।

২৭। লোকের তুলনা—লোকে অপরের সঙ্গে ভুলন। করিয়া আমাদের নিন্দা করে।

৩১। / আগে লেহ ভরি—নৌকা অথ্রে তীরে নইয়। গেও।

386

প্টম#রী ।

হাসিয়া হাসিয়া নাগর রসিয়া না'খানি উজান বাহে। দরিয়া হইতে ওপার করিলা নৌকা কুলে গিয়া রহে। জনে জনে সবে আনন্দ হইলা ওপার হইল রাধা। জনে জনে ঘরে চলিলা হরিষে আন নাহি কিছু বাধা। এত বলি সবে গেলা নিজ গৃহে আহীর রমণী যন্ত। গৃহ সমপিয়া পশরা এলায়ে গৃহপতি বলে কত॥ "এতক্ষণ কেনে বেলি অবসানে আইলা গৃহের মাঝ। ছি ছি মুখে যেন লজ্জা নাহি বাস মুণ্ডেতে পড়ুক বাজ। কুল কুলটিনী তোরা কলঙ্কিনী ় স্থানের রমণী ভাল। এ ঘরে কিরূপে কেমনে বঞ্চিব বাহির হইয়া চল।" । ২০ গৃহপতি কৰে সবে কহে তাহে "য়মুনা ছ'ধার বহি।

তে কারণে মোরা পার হতে দারি

বিশ্ব গমন রছি ॥"

চণ্ডীদাসে বলে এই মিথ্যা নহে ২৫

যমুনা ভরদ বড়ি।

হয় নয় ডাকি স্থধাহ ভোমরা

বিদ্যামান আছে বড়ী॥

১>। পশরাশুলি নামাইয়া গৃহে ফিরিয়া লিল। তখন গৃহপতি কত বলিতে লাগিল।

## ৪। বনভোজন।

288

কাৰভা।

হেথা কামু যত পার করি গোপী গোঠেতে পড়িল মন। <sup>'</sup>কেমনে ভা সবা কিরূপ কহিব **চলিতে বচন কন**॥ চ্ছুর মুরারি মনেতে ভাবিলা ইহার উপায় এই। করিল হজন কমল লোচন চোরা ৰলি ছুটি গাই। সেই গাই সনে চলিলা সঘনে কানাই চতুরমণি। গাভীর পুচ্ছেতে বাম কর দিয়া করিলা একটি ধ্বনি॥ হৈ হৈ রব ুশুনি ত্রক শিশু তুরিতে আইলা ধেয়ে। কোথা কার ভাবে গিয়েছিলে ভূমি 20 कश्रित कानाई (छात्र ॥ ভাণ্ডীর কাননে मिना मत्रभटन মিলিলা ত্রভের বালা।

কে পারে ব্কিতে কাহার শক্তি মুরতি রসের কালা॥

শ্ৰীমত্তাগৰত ১০ম কন্ধ, ১৩শ অধ্যায়ে ব্ৰহ্মকৰ্ত্তক (थक्न-वर्ग ७ मिस इत्र वर > म कब्र, २०म प्रशास বনভোজন বণিত আছে। চণ্ডীদাস এই ভুইটি পুথক আখ্যায়িকা একত্র জুড়িয়া দিয়াছেন। এ কেত্রে তিনি ঠিক মূলের অভুসরণ করেন নাই। প্রথমতঃ ভাগবতে আছে, এইক নিজে ত্রাহ্মণ-পত্নীগণের নিকটে অর ভিকা করিতে যান নাই, গোপগণকে পাঠাইয়াছিলেন। তাহাদের মূথে কৃষ্ণ-বলরাম অল্ল প্রার্থনা করিতেছেন শুনিয়া ব্রাহ্মণপত্নীগণ স্বয়ং অর আনিয়া দেন। বিতীয়ত: শীকৃষ্ণ দ্বার কি না, এই সংশব্ধ এন্ধার হর নাই। তিনি डगवात्नत नौना (मिंदवात क्या (स्यू, वर्म ७. (गान-বালক হরণ করেন। তৃতীয়তঃ ব্রহ্মা ধেফু হরণ করেন নাই, কেবল বৎস হরণ করিয়াছিলেন। চতুর্বতঃ এ नकन काम अक्तिरार्ट (नव दश नार्टे। अक्षा ठाँदात अक किं कान चर्बार मानरवत्र अक वरमत्र कान व्याभिन्ना वरम ও শিশুগণকে গোপন করিয়া রাখিয়াছিলেন। চঙীদাস ইচ্ছাপুর্বক অক্তরপ গাহিয়াছেন।

৩-৪। এতক্ষণ অনুপস্থিত ছিলেন, রাখালগণকে কি বলিয়া বুঝাইবেন, ইহাই মনে মনে বলিতে বলিতে চলিলেন।

৮। চোরা গাই-যে গাই চুপি চুপি দল হইতে পলাইয়া যায়।

সারজ।

ল ব**লিছে** হারি

স্থৰল বলিছে হাসিয়া হাসিয়া , কাসুর পানেতে চেয়ে। "চোরা,ধেনু বনে রাখিতে নারিয়া, বুলেছ অনেক ধেয়ে॥ .'

আমি সব জানি তোমার চ্রিত ইহারা বুঝিবে কে। অপার মহিমা প্রহিন গারিমা কেহ সে জানয়ে কে॥

গোপত পিরিতি কেহ না জানয়ে ব্রহ্ম শিশুগণ যত।

١.

২০

এ কপা মরম তোমার গোচর আনে কি জানিবে এত॥" এ কথা কহিয়া ব্রদ্ধশিশু লয়া গোধন রাখয়ে বনে।

কানাই আগেতে বলরাম ভায় ১৫
কহিতে লাগিলা মনে॥
"ভোমারে খুজিয়া আকুল হইয়া

না পাই ভোমার দেখা। কাঁদিয়া আকুল সবে বেয়াকুল

ভোমার যতেক সধা॥"

চণ্ডীদাস কুছে বলরাম আগে ধেলু হারাইয়াছিল।

চোরা ধেফু সনে ফিরি বনে বনে তেঁই সে বিলম্ব হল ॥

। বুলেছ -- ভ্রমণ করিয়াছ।

२२। (वज्राक्न-वाक्न।

>4>

সাৰক।

বলরাম আগে কহিছে কানাই
, "বড় দিল মনে হুখ।
চোরা থেফু হেদে বনেতে হইডে
গেছিল মধুর)-মুখ ॥

### চণ্ডীদাস

<u> ভাঁহা ফিরাইতে</u> ভেঁইছে বি**লম্** শুন বলরাম দাদা। তোমা ছাড়া হয়ে তবে কিবা থাকি পরাণ এখানে বাঁধা ॥" "ভাল হৈল ভাই তাসিয়া মিলিলে" 🖊 বলে "কি খেলাবে খেল। ভূরিত করিয়া থেলিয়া ছলিয়া ঘরে রে যাইব চল। আজি যবে আসি গোঠেতে সাজিয়া দেখেছি ব**নেতে ভ**য়। কংস-চর জাসি স্বারে ধরিয়া লয়েছে মনেতে লয়। কানাই থাকিতে তার ভয় নহি শঙ্কট-তারণ তুমি। স্ঞ্জিতে পারহ কত কত কংস তাহা সে আমরা জানি॥ ভূমি কোন দেব দেবের দেবভা আমরা আহীর বালা। কি জানি তোমার মহিমা অগম্য অপার যাহার লীলা ॥" সব শিশু বলে কানাই গোচরে 20 "শুনহে কমল আঁখি। আজু সে কুধায়ে কুধিত হইয়া ভোগ কিছু নাহি দেখি॥ এই বলে যদি অঙ্গ আনি দেহ সকল বালকে খাই। 9. এই বড় মনে ক্ষ্ধার কারণে শুনহ কানাই ভাই॥" श्रुष वहन বালক, বচনে ্ৰাপাল হইলা বড়ি। কমল নয়ান বলরাম পানে ठांहिना नग्ननं खूष् ॥

কান্তু কৰে শুন "বলরাম দাদা কুধার বালক ছখী। চল চল যাব বজ্ঞপদ্ধী স্থানে" চণ্ডীদাস ভাবে সুখী॥

>৫->৬। মনে হইল, যেন কংস চর আসিরা সকলকে
>০ ধরিরা লইরা গিয়াছে।
২৮। ভোগ—উপভোগের দ্রব্য, ধাবার দ্বিনিস।

>65

कान्छ।।

কৃষ্ণ বলরাম চলিলা ভূরিতে যথা ষজ্ঞপত্মী রহে। তথা চুই ভাই চলিলা সঘনে ত্য়ারে বাইয়া রহে ॥ দেখিলা আহ্মণী কৃষ্ণ বলরাম পুলকে পূরিত অঙ্গ। কহিতে লাগিলা গদ গদ ভাবে "কিবা শুভদিন রঙ্গ। আজু বড় শুভ করম ফলিল ভাগ্যের নাহিক সীমা। নয়ন ভরিয়া দেখিলাম আঁখে রামকৃষ্ণ ছই জনা ॥ कर कर (करन अरम पूरे करन কি হেতু ইহার শুনি।" কছিতে লাগিলা কৃষ্ণ বলরাম "কুধায় আকুল প্রাণী॥ অন্ন দেহ মোরে ে ইহার কারণে আইল তোমার আশে। কুধায় আকুল বালক সকল শন মাগে মোর পাশে॥" এ কথা শুনিয়া তথনি ব্ৰাহ্মণী পঞ্চাশ ব্যঞ্জন অন্ন :

্ স্বর্থের থালি ভরি করি পুর
্ চলিলা কতেক বর্ম ॥

চণ্ডীদাস দেখি বিশ্বয় মানিল ২৫

বনে কোথা হতে ভাত।

রাখালমগুলী করি বনমালী

বিছাইল বটপাত॥

১। তভ করম ফলিল—শুভ কর্মের ফল ফলিল।

----

কানড়া।

সবে অন্ন খায় মাঝে যতুরায় দিছেন সবার মুখে। খাইয়া খাওয়ায় স্থাধ সুথে তায় তিলেক নাহিক চুখে॥ গ্রীদাম স্থদাম কৃষ্ণ বলরাম সুবল যভেক স্থা। বসিয়া বালক রাখালমণ্ডল ঃ তার কিছু নাহি লেখা। কেহ বলৈ "ভাই কানাই বলাই वज्हे प्राम इरा। ١. কোথা হতে অন্ন আনিল নবার সকল বালক খায়ে॥ এ বড়ি মহিমা যার নাহি সীমা এ মহীমণ্ডল মাঝ। বলের মাঝারে এ অন্ন ব্যঞ্জন 24 কে বুঝে ভোমার কাজ। বুঝিল কামুর চরিত অম্ভূত এ মেনে মাঁহুৰ নয়।" চণ্ডীদাস বলে জানি অমুমানে গোলোক-ঈশ্বর হয়॥

। কত রাধান যে বসিয়াছে, তাহার সংখ্যা নাই।

১৫৪ বড়ারি।\*

বিশ্বয় ভাবিলা •বালক সকল কহিতে লাগিলা ভাষ। "এ জন নন্দের ি ভবনে জন্মিল ধরিরা মানুষ-কায়॥ কেবল ঈশর দেব দামোদর নহিলে এমন হয়। নানা সে আপদ সঙ্কট নিকট ঘুচায় সবার ভয় ॥ বিষপান বেলা সবাই মরিলা এই সে যমুনাতটে। অমৃত দৃষ্টিতে চাহিয়া বাঁচায়ে সকল বালক উঠে। অঘাসুর আদি যতেক অস্থর मकलि कतिल ध्वःम। বুঝিল সাক্ষাতে এমন সম্পদ্ >4 কেবল দেবের অংশ॥ আজি হৈতে ভাই সকল রাখাল কানাই-কাঁধেতে না চড়। উচ্ছিফ্ট ভোজন মুখে মুখে দিতে এ মেনে সবাই ছাড়॥" শুন স্থাগণ চণ্ডীদাস বলে অপার যাহার লীলা। রাখালি করিয়া রাখালমগুলে করে নানা মত খেলা॥

১১। ताहारम-नाहारेण।

>८। এমন সম্পদ্ - इस्वत्र १ वन ।

> । हरत-- हन्न ।

# । ধের্বৎস শিশু হরণ।

কাৰড়া।

্ৰড়ারি।

্সকল রাখাল 🕠 ভোজন করিতে रम व्यवमान (वेनि। নিজ গৃহ যেতে ধেমুর সহিতে **पिया** উঠে **क**य़जालि॥ হেন কালে কামু মনে পড়ে ধেয়ু শাঙলী ধবলী কোথা। ভোজন বিশেষ করি অভিলাষ लहेब्रा हिन्न उथा। সেখানে না দেখি শাঙলী ধবলী কোথা গেলা ছুটি গাই। এখানে আছিল কোণা তারা গেল শুনহে রাখাল ভাই॥ আয় আয় আয় ডাকে যহুরায় অঞ্চলি ভরিয়া তুটি। ধেয়ে এস বনে দেহ দরশনে 20 স্বরায়ে আগল ছুটি॥ ডাকিতে ডাকিতে না দেখি সে ভিতে শাঙলী ধবলী গাই। কোন পথে গেল কিছু না জানিল খুঁ জিব কোন বা ঠাঁই॥ বিকল হইয়া বনে বনে ধেয়া ना प्रिथ धवनी शाहे। এ রসমাধুরী ধেন্থ বৎস চুরি দীন চভীদাস গাই ॥

ইহার বিস্তার ভাগবতে আছে কহিয়ে একটি বাণী। যে যে অগোচর গোচর না হয় কি হেডু ইহার শুনি॥ মধুর মধুর এক পথ আছে গন্ধ আমোদিত ভায়। পদ্ম বিকসিত এ মহীমগুল একহি একাদশ কায়॥ ভার রক্ষে চৌদ্দ ব্রহ্মাণ্ড ভেদিয়া উঠিল কোন বা খানে। > পুনঃ এক রন্ধে কোটা কোটা মৃগ গভায়াত নাহি জানে॥ এক রক্ষে 🛊 🛊 আর নাহি তার বেণিত আঁধারে মানি। কোন কোন খানে ভার এক ফুটে ব্ৰহ্ম গভায়াত জানি॥ এক রন্ধ্রে পুনঃ শত কোটী যুত বিংশতি কলার ফুটে। ভার তিন কলা সহস্র পুরিত উঠে॥ তার শত কলা কলার অংশ কিছু সে জানিয়াছে। চণ্ডীদাস বলে বেছবে হকুম এক রন্ধু ভার আছে॥

এরপ পদ অনেক আছে। এগুলির টীকা করিতে

এরপ পদ অনেক ও বুরুপ পদ অনেক ও করিয়া। করিয়া।

১৬। আগল--আইস।

541				
· ্ বেশীয়সায় <del>ক</del> ।				
আর কহি 🖰ন	অদভূত কথা			
কহিতে নহিতে	। नय्।			
মহা অভুরন্ধু	আট সে প্রবন্ধ			
কেহ কেহ জন	क्य ॥			
_একটি কমল	তার তিন দ <b>ল</b>	æ		
ব্ৰহ্মাণ্ড ভেদিয়া	। আছে।			
আর এক দল	এ মহীমণ্ডল			
ব্যাপিত হইয়া	আছে॥			
আর এক দল	ফণি <b>লোক ভরি</b>			
ভিন <b>দল</b> ভিন	লোকে।	٥,		
এক এক দলে	সহস্র বিংশতি			
ভাথে রেখ এব	চ থাকে॥			
সে রেখ গণিতে	কাহার শক্তি			
রেংখতে প <b>ল</b> ক	<b>হ</b> য়।			
একেক রেখেতে	লাখেক নিমিখ 1	>¢		
এই বড় অভিশ	<b>य</b> ॥			
কোটী পলকে	সহস্র বিংশতি			
ক্ষণেক পলক হ	<b>रग्न</b> ।			
নব কোটী শভ	পলক বেকত			
কলার সহস্র ক	य ॥	२०		
লক কলাপর	অংশ যেই হয়			
ভাহে ভবিষ্যতি				
তিৰ তিন কলা	অংশের একলি			
রেখে করে দো				
এক নিমিখ	তার এক রেখ	રહ		
পলটি অলসৈ ৭	शंदक।			
ব্রহ্মার পলক	কলা অংশ ভরি			
সে কেনে এইক্লপে রাখে॥				
কলার গরিমা	<b>রেখে</b> র মহিমা			
	नेन।	•		

চণ্ডীদার্শ কহে এ রেথ গণিতে। শক্তি স্বার হীন॥

সার এক শুন পরম নিগুণ **তিনের উপরে তি**ন। সাতের উপরে এক জ্যোতির্ময় পুরুষ ভূষণ চিহ্ন ॥ এক পদ্ম ভার মুদিভ বেকভ ৫ তা পরে মণ্ডল চারি। ভা পরে বসভি এক সে পুরুষ ். নয়নে মুদিত টারি॥ সেই যোল কলা তিগুণ করিতে ভাহার কলার কলা। কলার যে অংশ সেই শত গুণ তাহাতে নয়ের মেলা॥ নয় নয় গুণ গুণ মিশাইলে ভাহাতে যে গুণ হয়। ত। পর যে রহে সেই গুণ দর ১৫ জগতে সে গুণ নয়॥ অফ অফ মোক্ষ রসে রসে রস ত্রিগুণ গুণের গুণে। ু সে গুণ গাইতে বড় অভিলাষ দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণে॥

>4>

**ब्ल**श्रह्मा।

শাঙলী-ধবলী বনে না পাইয়া আকুল হটলা°কামু। देवपूर्वामी भृति সৰ্যন্তে সহনে তবুনা মিলিল ধেমু॥ আকুল হইল नरन्पत्र नन्पन ধেন্থ হারাইয়া বনে। থান নাহি চিতে চাহি চারিভিতে আন সে নাহিক মনে॥ কি বোল বলিব যশোদা মায়েরে বনে ধেমু হল হারা। এ বোল বলিতে ফুকরি ফুকরি নয়নে গলয়ে ধারা॥ হায় হায় আজি বনের ভোজনে বড়ই পাইল তাপ। কি বোল বলিব মুখে না নিঃসরে 30 ভোজন হইল পাপ॥ নিব গাই বৰে এমন কে জানে भाडमी थवनी शाहे। আজু আচম্বিতে গেল কোন ভিতে কিছু না জানিল ভাই॥ ২০ যাইব সাক্ষাতে কেমনে গৃহেতে সেই নন্দ ঘোষ পাশে। ধেমু বংস বনে হরে কোন জনে करर विक छ्छीमारम ॥

ত-৪। পুন: পুন: বেণু ও বংশীর ধ্বনি করিতে । রহিল—রইলাম।
লাগিলেন, তথাপি গাভী আসিল না। ১১। এই হুইটি গাভীর
১৭। নিব গাই বনে—বনের মধ্যে কে গাই লইয়া রাধিয়া দেন। ,
বাইবে, অর্ধাৎ চুরি করিবে।

কাফি।

আর বাকেমনে ঘর যাব মেনে ধেসুহারা≷য়াবনে।

সেই ঘোষ নন্দ বলে কভ মন্দ মোরে পরতীত বানে॥ ধেমুনা পাইলে গৃহে না ্যাইব শুনহ রাখাল ভাই। রহিল যতনে নহে এই বনে শুন হলধর ভাই॥ অতি বড় স্লেহ যশোদা মায়ের. পরাণ পুতলি গাই। > 0 তাহার কারণে এ পঞ্চ ব্যঞ্জন রাখি যশোমতী মাই॥ আগে তুই গাই গেলে সে সুধাই তবে সে আনের কথা। উঠিছে বিবাদ এই পরমাদ মরমে হইল ব্যথা॥ কহিল সকল রাগাল যতেক শুনহে কানাই ভাই। আগে চল গিয়া খুঁ জিব যাইয়া শাঙ্দী ধবলী গাই॥ ٠ ۶ দেখি সব জনা কান্থর বেদনা খুঁজিতে লাগিল বনে। বিফল হইলা ধেন্তু না পাইয়া দ্বিজ চণ্ডীদাস ভণে ॥

৭। রহিল—রইলাম। ১১। এই হুইটি গাভীর জত্তে যশোমতী পঞ্চ ব্যঞ্জন গাধিয়াদেন। ,

າພາ້

বড়ারি।

শুনহে বলাই দাদা।
আজি বন ভোজনে কি হৈল কাদনে ।
সকল হইল বাধা॥

না শুনি প্রবণে এমন কে জানে 🔪 ्रभाष्ट्रमी थवनी हाता। এ বোল বলিতে হেদে আচম্বিভে यूगन नग्रतन थाता॥ কি বলিব কায় যশোমতী মায় হারাল শাঙ্জী গাই। মোরে কি বলিবে এ মন্দ কহিবে ১০ সেই যশোমতী মাই॥ বলিছে রাখাল শুনহে গোপাল আমরা কহিব গিয়া। আচম্বিতে গাই হারাল তথাই त्राथि भत्रत्वाध मिया॥ যশোদা রাণীরে কহিব তাহারে কামুর নাহিক দোষ। कानि शुंकि वरन বালক সকলে কাসুরে না কর রোষ॥ খুঁজি একে একৈ ২০ সকল বালক আজু না মিলল ভাই। শাঙলী ধবলী কালি আনি দিব চণ্ডীদাস গুণ গাই॥ ৮। काश-काशास्त्र।

>64

>৫। পরবোধ—প্রবোধ।

দেখ দরশন করহ ভোজন
শাঙলী ধবঁলী বলি।
ভূটি কর ভরি এ অল ব্যঞ্জন
ডাকিছেন বনমালী॥
কোথা আছে ভোরা দেখা দেহ সোরে

क्षमग्र পরাণ কাঁদে।

ভোমান বিহনে জানি এ পরাণে
মার বুক নাহি বাঁধে ॥

কাঁদে যতুনাথ বুকে দিয়া হাত
ফুকরি ফুকরি রোই ।

ভোমা না দেখিলে এই বনজিতে
শাঙলী ধবলী গাই ॥

এ বোল বলিতে ফুকরি রোইতে
নন্দের নন্দন কান ।

না যাব গৃহেতে রহি বনভিত্তে ভোমরা চলিয়া যাও। ঘরে গিয়া কচ মায়ের সাক্ষাতে আমার শপথি খাও॥ -ধেনু হারাইয়া না পাইল খুজিয়া কানাই রহিল তথা। ₹• শুনি স্থাগণ বিরস বদন क्रमरत्र भिन वाथा॥ কাঁদিয়া আকুল বালক সকল কালুর বদন চায়। দেব অগোচর সে জন মোহিত চণ্ডীদাস গুণ গায়।

भृतवी ।

২৫। যে জন দেবেরও অগোচর, তিনিও মুগ্ধ ছইলেন, অর্থাৎ কে ধেন্দ্র হরণ করিল, বৃঝিতে পারিতেছেন না।

৮। आयात कारत माखि इहेर्डिह ना।

> । ताई-काल।

পুনঃ শিশুগণে করল হরণ রাখিল গোপন করি। বেক্ষার মনেতে করি কিছু চিতে ইহ কি গোলোক-হরি ॥

ধেমু বংগ লয়া বুঝিতে আঁপন মন। ভেঁই সে হরিল বালক সকল वृक्षिरव कान वा कन॥ হেথা বনমালী খুঁজিয়া বিক**লি** না পাই ধেমুর লাগি 🗠 না ক্মুরে বচন ক্মল লোচন উঠত বিরহ আগি॥ অাসি সেইখানে ভোজনের স্থানে না দেখি বালকগণে। হইয়া বিরস এ কি পরমাদ এমন হইল কেনে॥ वषरम ना नामुद्र একটি বচন नग्रत्न भनरम् वाति। কে হেন করিল বিপদ্ আপদ্ বিরহ দেওল ঢারি॥ কোথা ব্ৰজবালা রাখালের মেলা সে হেন স্থলর গাই। কিছু না জানল কোথায় রহল

৩-৫। (शक् वर्त्र नहेशा विनि में एंडिश चार्हन, **जिनिहे कि शालारकंद्र क्रेन्द्र, उन्ना हेश यस्न क्रिलन।** 

দ্বিজ চণ্ডীদাস গাই॥

৬। আপন মনে বুঝিতে।

> । লাগি—দর্শন।

২)। মেলা---সংহতি, সমূহ।

সূহা।

কোথ৷ আছ ভাই ছিদাম স্থদাম ৈ বস্থদাম আদি যত। ना तरह कीवन

কোন বনমাঝে আছ কোন কাজে উত্তর না দেহ কেনে। ভাই ভাই বলি করিয়া বিকলি वूलक वनिष्ट वरन ॥ কাঁদিয়া আকুল नाम्बन नमन বচন না সরে মুখে। আজি সে ছর্দিন रुरेल भिनन পাইল ভোজন হুখে॥ প্রাণের দোসর রাখাল সকল তারা বা চলিল কোথা। কাটিয়া লইল হৃদয় বিদারি 30 মরমে হানিয়া ব্যথা। কাসুর রোদন বেদন দেখিয়া চণ্ডীদাস বলে ভাথে। এ কথা যে জ্বন করিল তখন জানিয়াছি **অমুরথে**॥

৮। বনে বনে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। ১:->২। আজি বড়ই তুর্দিন আসিয়া উপস্থিত হ'ইয়াছে; ভোজন করিতে গিয়া বড় চুঃখ পাইলাম। ১৯-२•। **এ कांक (य जन कतित्राह्म, आमि छा**ह। व्यक्रमात्न वानित्राहि।

এস ভাই সথা দেহ মোরে দেখা পরাণ কেমন করে। কোথা আছ ভাই 💃 জিতে না পাই একি পরমাদ মোরে॥ খেলিব ৰতনে আর কার সনে वरन किंद्राईव शान। আর না শুনিব मधूत वहन বেশ না করিব ভাল।

١.

20

٥٤

দেখহ ধিয়ানে

কামুর বিষাদ द्यापन द्यपन ্ শুনি পশু পাখিগণে। পাষাণ গলিত শাখিকুল যত লম্বিত চরণ পানে॥ আর আর ভাই ডাক্ষে মাধাই উত্তর না দেহ কেনে। - দিয়া দরশন রাখহ জীবন এত নিদাৰুণ কেনে ॥ ভাই বলি কেনে দয়া নাহি মনে সকল পাশরিবে। प्रिथिय त्वनना আমার যাতনা বড় পরমাদ হবে॥ কহে চণ্ডীদাস কামুর চরণে এক নিবেদন করি।

২০। ত্রক্ষজান দারা ধ্যান করিয়া দেখ।

কে হেন করিল চুরি॥

এ ব্রহ্মগেয়ানে

**a**.

কমলনরন ধেয়ান স্মরণ
মুদিরা নরান ছটি।
ব্রহ্মজানেতে দেখি হৃদয়েতে
ব্রহ্মার হেনক কুটি॥
আমায় ছলিতে আসি বনভিতে
ঐছন ভাহার কাজ।
মোর ভণ্য কিছু জানিতে নারিয়ে

আমি কি বটিরে জানিতে নারিয়ে পাইয়ে মরমে ব্যধা। ভেঁই দিও বৎস হরিয়া লইং। জানিল এ তথ্য কথা॥ ভাল ভাল বলি জানিয়ে জম্ভুৱে নন্দের নন্দন কান।

স্থাল রাখাল থত ধেমুপাল ১৫
ইথে সে নাহিক আন ॥
সেই অন্ধালা তখনি স্থালা
শাঙ্দী ধবলী গাই।

তা দেখি ব্রন্ধার ভাঙ্গিল সংশয়
ভাবিতে লাগিলা তাই ॥ ২
"ইহ দেব হরি দেবের দেবতা
ইহাতে নাহিক আন।"
ফাঁফর হইয়া ধেমু বংস লয়া

r আই**ল কান্**র স্থান॥ করপুট করি, ধরিয়া চরণ

20

পড়িল ধরণীতলে। কাঁদিতে কাঁদিতে আকুল হইয়া কাতরে কিছুই বলে॥

চণ্ডীদাস শ্বলে এক্ষার আরতি ধরিয়া চরণ ছই।

ব**হু স্ত**ব করে কাঁদি উচ্চস্বরে অঝর নয়নে রোই॥

৪। কুটি—কৌটিল্য, চতুরতা।

>। জানিতে নারিয়ে—জানিতে পারে না।

২৯। আরতি—কাতরতা, মিনতি।

>61

তুমি দেব হরি দেবের দেবতা

ুদে দেব হাসু ভুমি হিতক্রী হও। ু তুমি চক্র দিবা তুমি মহীভেনা তুমি ত তারণ হও॥ তুমি সে পুরুষ- . ভূষণ শকতি তুমি সে জগৎ সিন্ধু। তুমি দয়াবান্ এ নব বৈভব অনাথ জনার বন্ধু॥ . তুমি জল স্থল তুমি দিবাকর তুমি সে ঐশ্বর্যা লীলা। তুমি ভ**রুলভা** তৃমি ফল শাখা তুমি সে দরিয়া ধারা॥ যার অগোচর এ মহী ব্ৰহ্মাণ্ড ভোমারে জানিতে পারে। ক্ষেম অপরাধ বিষম বিপাক প্রভু দয়া কর মোরে। আমার হৃদয়ে তম উপজিল পাইমু তাহার চিহ্ন। অপরাধ ক্ষেম প্রভু দয়াবান্ আমি কি জানিয়ে বর্ণ॥ २० চণ্ডীদাস কহে এ রীভ আকুভি কে তুয়া বুঝিতে পারে। চতু**র্বেবদ** যার মহিমা চাতুরী কহিয়া কহিতে নারে॥

৫। পুরুবভ্ষণ শকতি—অনেকবার পাওয়া ঘাইবে। ইহার অর্থ বােধ হয় এই:—শক্তিমান্ পুরুব শ্রেষ্ঠ। ১০-১৪। যে মহী ব্রহ্মাণ্ড বৃঝিতে পারে না, সে কি ভােমায় বৃঝিতে পারে ?

....

বড়ারি।

বেদ বেদ বর্ণ চারু সে প্রিভ এক চ্জেবর্তী সাই। সপ্ত সপ্ত শত সহস্র মেচুল মস্থাহি পল্লব ষাই॥ তাহে শশহর দীপ্ত নবপর **म**भभी **म**ग्रत अःरम । কর্মিশ মানগ ভিপর যাকর ওখন ভেল আতংশে॥ পট কি টাটক ফণী মণি দশপর ' সে দশ যাকর আগি। মেখল খগতি তছপর যো রীভি (वनी (वनीक नानि॥ মমিদ আদপাশ তারপর যো রয়া স্থরস যাঁহাকে লাগে। চৌদহি যে রহে বারহি অক্ষর সোবহি গেলহি ধন্ধ। চূণ্ডীদাস কৰে যাকর আশপর ৰেড়ল সাতহি ধন্ধ॥

363

বড়ারি।

মোর অপরাধ কেম যতুনাথ করিত্ব এমন কাজ। তুমি দয়ানিধি मग्रा ना कत्रित्न পাব অতি বড় লাজ॥ নাজানিয়া যদি কেছ করে দোষ রোষ পরিহর তুমি। অহন্ধার হেতু না জানি বেক্ড কি আর বলিব আমি॥ ষে জন এ ডিন ভূবন ঈশ্বর এবে সে জানিল দঢ়। >•

∖কপট নিকট ছাড়হ সঙ্কট <sup>1</sup>. 'আমারে হইল গাঢ়॥ ব্ৰহ্মাণ্ড অগাধ বহুবৈদগধ যাহার ইহাতে গতি। গুণ শত শত অতি অমুমত 26 চারি চারি গতি বীতি॥ **ুপ্রণয় হুল্ল**ভি সাত গুণ গুণ চক্র সাই যার হয়। নব নব রেখ রেখের উপমা তাহার যে রস হয়। ٥Ç প্রকার আরতি সে রস এ চারু তুমি সে মুরতি কায়া। তার এক কলা কলার অংশ ত্রিকুটি কুটির ছায়া॥ ছায়ার বিস্বুক <u>সামগ্রাহিপর</u> তাপর জ্যোতিক হেম। গৃঢ় অভিতর তাহার ঈশ্বর কে জানে এছন প্রেম। প্রবাহ পল্লব যোগী ফণিবর মুনির মানস সেই। 90 এ রস চাতুরী মধুর পক্ষজ চণ্ডীদাসে মাগে এই।

annetes i

বড়ারি।

প্রভুর আরতি • কি জানি কাকুতি
তুমি সে পরমপতি।
অপরাধ করি ক্ষেম দেব হরি
তুমি অগতির গতি॥
দেব ভগবান্ ইথে নাহি আন ৫
• ইবে সে জানিশ ইহা।

বছ স্ত্রতি করি ধরিয়া চররে ।
ধরণী পড়িয়া দেহা ॥

যাহার মহিমা নাহি পারু সীমা
বেদে অংগাচর যেই। ১০
কি বলিতে জানি যার যেন রীত
বুঝিতে নারিল এই ॥
বহু স্তৃতি করে পড়িয়া ভূতলে
চরণকমল ধরি।
চণ্ডীদাসে বলে এ রসমাধুরী ১৫
কেবা জানিবারে পারি॥

212

गर्धेगाताग्य ।

মোর অপরাধ ক্ষেম। এ দেহ ধরিয়া হেন না করিব হেনক না হয় যেন। আকার **কার**ণ প্ৰভু ভগদান্ করণ প্রবণ ধাতা। নিশা তর তম চন্দ্র দিবাকর ব্ৰহ্মাণ্ডেতে গভায়াতা॥ ত্মি চরাচর ভূমি সে সত্যর ভৈবর আগম সার। যার নাহি পায় গমন বিচার যাহাতে না পায় পার॥ ক্ষেম কেমতম অন্ধকার ভূম অথির নিবিড় গঙা। ., . . . ভুমি সে পুরুষ ভূষণ শক্তি তুমি সে দেবের ধাতা। 🕐 লক্ষ শত্কোটি যার লোমকুণে এ চৌদ্দ বন্ধাও জাতা।

শত শত অংশ **ড়ার** এক কৃট এক ধৃম রেণু বৈসে। ধ্মস পলক • পালটি কটাক্ষ নিমিখ গণিয়ে কি**নে** ॥ নিমিখ গণিতে কাহার শক্তি এক পল কুটি সাতে। তাহার অঙ্কুর তাহাতে যে হয়ে ভাহার পালটি যাতে॥ জামু জামু ভামু কিরণ ছটায়ে ' তাহার কিরণ এক। কোটি পলক দেখি যে অনেক তাহার অনেক রেখ। এ জন যাহার বৈভব নায়েক সে জন ব্ৰজেতে স্থিতি। তাহার মহিমা আগম গারিমা কেবা সে জানিব গতি॥ চণ্ডীদাস কহে এ মহীমগুলে জনম লভিয়াছে। গোপ গোপিনী নয়ন অঞ্জন করিয়া রাখিয়াছে।

শতমুখ দেখ সহস্রমুখ দেখ দশমুখ আছে **ক**তি। ' <sup>(</sup> এ সব দেখল মুদিত নয়ন কে জানে ঐছন গতি॥ মন বিচারিয়া দেখল বেকভ **२**≷ल कॅंाकत मत्न। চরণে পড়িয়া স্তুতি করে শত 🗀 ১৫ কে তোমা মহিমা জানে॥ ক্ষেম অপরাধ কর পরসাদ শুনহ গোলোক হরি। আমি না জানিয়ে অপার অগাধ এ রসমহিমা কেলি॥ চণ্ডীদাস কহে দয়ার সাগর ধরিয়া এ ছুই বাহে। উঠ উঠ বলি কহে বনমালী পাইয়া কিছুই মোহে॥

৩-৪। কোটি ব্রহ্মা আছে, তুমি তাহাদের মধ্যে গণনারই যোগ্য নও। ১৭। পরসাদ - প্রসাদ, অফুগ্রহ।

২২। বাহে—বাহতে।

>12

কহেন কারণ নন্দের নন্দন
তুমি কি জানহ মোরে।
কোটি ব্রহ্মা আছে, কিবা তার কাছে
\_\_\_\_\_\_গণনা আছায়ে ভোরে॥
মুদ্ধ'নয়ান দেখহ গেয়ান
দেখাব কভেক ব্রহ্মা।
এক সে পদকে দেখহ টাটকে
জানহ কতেক জনা॥

### ৬। যশোদার বাৎসল্য

১**१**০ সিদ্ধুড়া।

কারু কহে শুন • রাখাল যতেক হইল উছর বেলা। ছিদাম শুদাম ভাই বলরাম আর কি করহ খেলা॥ ধেমু কর জড় আর খেলা ছাড় ৫ কালি সে খেলিহ খেলা।

আ্ছুচল ঘরে যাব কুভূহলে ু ধেমুগণ কর মেলা॥ আজুকার গোঠে श्रेन मकर्ष বিপাক পড়িয়া গেল। >0 रेर रेर त्रव मिया ধেমুগণ লয়া আজুকার মত চল ॥ প্রাথে চলি যায় মাঝে যতুরায় यूत्रणी वपटन शाय। শিঙ্গা বেণু রবে **আনন্দে** চলয়ে 30 গোকুল মুখেতে ধায়॥ यमुना পूलिन প্রবেশ হইয়া নিজ গৃহে চলি যায়। ধেমুগণ গৃহে রাখিয়ে গোপনে যশোমতী মুখ চায়॥ २० কোলেতে লইয়া नरन्पत्र नन्पन वनन हुन्द्रन तरम। কত শত শত অমিয়া পাইয়া 🕈 রসের আনন্দে ভাসে। "এতক্ষণ কোথা হিয়া দিয়া ব্যথা গেছিলে কোন বা বনে। এখানে এ ধর গৃহমাঝে ছিল পরাণ তোমার সনে॥ আঁখির তারাটি গেছিল খসিয়া এবে আঁখি আসি বসি।" **ठ** छौमात्र वरल क्लरनक त्नशास्त्र ও মুখ বদন শশী॥

२। উছর—উচ্চ**, অনেঁক**। ২৭। ধর—শরীর।

৩ । তারাটি আবার আসিয়া চক্সতে বসিল। তুমি বাড়ী আসিলে, আবার চক্সর দৃষ্টি ফিরিয়া পাইলাম।

তুমি মোর প্রাণ পুথলি সমান যতক্ষণ নাহি দেখি। হৃদয় বিদরে . . তার অগোচরে মরমে মরিয়া থাকি॥ যেন বা কি ধন অমূল্য রতন পাইয়া আনন্দ বড়ি। ভাসি অশুজ্ঞলে আনন্দহিল্লোলে গৃহকাজ যত ছাড়ি ॥ শুনহ কানাই আর কেহ নাই কেবল নয়নভারা। ٥ ( সাঁখির নিমিখে পলকে পলকে \ ক্ত বার হই হারা॥ শ্ৰুক মেন যত ধেমু গাই তোমার বালাই লয়ে। কালি হৈতে বাপু ধেন্তু গোঠ মাঠ না পাঠাব বন দিয়া॥ কি বলিব, নন্দ ভোমার যুক্তি কান্তু পাঠাইয়া বনে। নাজানি কখন কিবা জানি হয় হেন লয় মোর মনে। বৈদে ভয়ন্ধর বনে ভয়ঙ্কর শার্দি ভুজক রহে। জানিবা কখন করয়ে দংশন এ বড়ি বিষম মোহে। আনের অনেক আছে কত জন আমার পরাণ তুমি।

ভাল মন্দ হৈলে

চণ্ডীদাস বলে

• তখনি মরিব আমি॥

দেখিল যশোদা মায়।

আঁখির পদ্ধকৈ

স্বতি বড় স্নেহ

25

এ না কভু শুনি জগতে না দেখি জগতে এ যশ গায়॥

১৩—১৪। যত গাই আছে, সব মরিয়া যাউক, তুমি ভাল থাক।

: 90

শ্রীসূহা।

ঢর ঢর বারি বদন নেহারি ও অঙ্গ বাহিয়া পড়ে। ঘন ঘন দেখি নিশাস হুতাশ অতি সে করুণা স্বরে॥ এ জীর নবনী ছেনা সর আনি দেওলি কানাই মুখে। যতন করিয়া পিয়াইছে রণী দুরে গেল যত ছথে। "কহ দেখি বাপু আজু কোন্বনে চরাই**লে স**ব ধেনু। মাজু কেন বাপু শুনিতে না পাই তোমার মোহন বেণু॥ আন দিন শুনি বেণুরব খানি আজু না শুনিতে পায়ে। মনে উঠে কত বিষম সন্তাপ শুনিলে থাকিয়ে জীয়ে। তখনি বলেছি যমুনা নিকটে রাখিও ধেমুর পাল। আপনি যাইয়া তোরে দেখি গিয়া তবৈ সে জুড়াই ভাল॥ ২৽ ্রি(ক্লীর নবনী শাকর সেবনি রাখি**ল যতন করি।** । কোন শিশুগণে নিবার কারণে না আইংস যতন করি।

এই বড় ছ্থ নাহি হয় সূথ ২৫
উঠিল আগুন বড়।
চণ্ডীদাসে বলে রাণীর করুণা
বড়ই দেখিল দড়॥

२)। भाकत (भवनि-- भक्तायुक्त।

>96

কামোদ।

বিচিত্ৰ পালকে শয়ন করায়ে नन्दरागी किছू वरन। উছর গমন "আজি কেন ধেন্তু আনিলে যতেক পালে॥" গমন বিলম্ব মায়ে কিছু বলে "শুনহ বেদনী মাই। চোরা ধেমু সনে যাইতে যাইতে বনে বনে বুলি তাই॥ বিষম বিপাকে চোরা ধেত্র সনে পাইয়ে যাতনা বড়ি। ফিরাব বাছুরি একলা কত না কাননে যাইয়া পড়ি॥ যদি কিছু বলি ভাই বলরামে ফিরাইতে ধেমুপাল। বসিয়া থাকেন শীতল ছায়াতে কোপেতে লোচন লাল। আর শিশুগণে ু আপন কাজেতে তাদের এমনি রীতি। কেবা করে কার নিজ কাজে দড় স্বার স্মান মতি। ₹• আর বনে আমি না যাব জননি এত কি বেদনা সয়।" ।

শুনি নন্দরাণী করুণ হাদয়
় কার্চের পুথলি রয়॥
"কত না কুধায় পীড়িত হয়েছ ২৫
বাছনি যাত্মা মোর।"
চণ্ডীদাস বলে শুনিয়া যশোদা
তুথের নাহিক ওর॥

ত- ৪। আজি কেন ধেকু বাড়ী আনিতে এত বিলম্ব হইল ?

ে। গমন---আগমন।

>**11** স্হ সিকুড়া।

"আহা মরি মরি পরাণ পুথলি বাছনি কালিয়া সোনা। ক্ষুধায় পীড়িত কত না পেয়েছ বনে যেতে করি মানা॥ এ ছঃখে না জীব নন্দে কি বলিব এ শিশু পাঠায়ে বনে। এ ঘর করণে আনল ভেজাব কিবা সে করয়ে ধনে। ইহাকে অধিক আর কিবা ধন यात्र ना प्रिथित्न मित्र। কালি আর গোঠে না পাঠাব মাঠে কেবা কি করিতে পারি॥" মধুর বচনে কহে নন্দরাণী মরমে পাইয়া ব্যথা। দ্বিগুণ আগুন্ জ্লিছে হিয়ায় 50 শুনিয়া পুত্রের কথা। "তোমারে লইয়া আন দেশে যাব ना त्रव नरमत्र घरत्। তোমা হেন ধন আর কোথা পাই

বিধাতা দিয়াছে মোরে॥

কত কত-কার ছেনা ননী সর্ম পিয়াই রক্ষনী জাগি। কটোরা ভরিয়ে রাখিয়ে থাপিয়ে রাখিয়ে যাহার লাগি॥ এজন কেমনে এই ধেমু সনে ২৫ ফিরিবে বনেতে বনে। অভাগী মায়ের বিষম অস্তর ক্ষেণে কত উঠে মনে॥" মায়ের রোদন বেদন দেখিয়া কহিছে কানাই তায়। ৩০ পরিবোধ চিতে বেদনী জননি ছিল্ল চণ্ডীদাস গায়॥

714

৩১।. পরিবোধ চিতে --চিত্তে প্রবোধ দাও।

रुर ।

চিবাইড়ে দিল কর্পুর তামুল স্নেহে সে যশোদা মা। জাতিয়া দিছেন ধরিয়া চরণ শীতল পাখার বা॥ বদন নেহালে যশোদা স্থন্দরী ঘুমল কমল আঁখি। গৃহকাজে মন করিল গমন আন আন কাজ দেখি॥ "শুন নন্দ ঘোষ পাছে কর রোষ . কহিয়ে ভোমার কাছে। क्षनिण वरनत इरथेत्र विठात কহিতে কি আর আহৈ। চোরা ধেন্থ সনে বছ হুখ মেনে পাইল যাদৰ মোর।

চণ্ডীদাস

শুনিতে শুনিতে পদ্দাণ বিদরে ১৫

ত্থের নাহিক ওর ॥

বল দেখি তুমি এমন ধবলী

কেন বা পাঠাও বনে।

বাজকর লাগি এমন বয়সে

বঙ্কিল ধেমুর সনে॥" ২০

নন্দ কহে শুন এমন সম্পদ্

আর না পাঠাব তারে।

চণ্ডীদাস বলে এছন আরতি

এ লীলা বৃঝিতে পারে॥

> **५**१३ युरु।

এই মন্ত নিতি বনে বিহরয়
অপার যাহার লীলা।
নিতি নিতি নব এ নব কৈশোর
কে হেন জানিব খেলা॥
প্রভাতে উঠিয়া গোঠে আরোহণ ৫
আইলা যতেক শিশু।

ভাই ভাই বলি ডাকে কত জনা ় ছিদাম আছয়ে পাছু॥ স্থবল যাইয়া কান্থ জাগাইয়া কহিছে মধুর বাণী। ''গোঠেতে যাইতে শিশু চারি ভিতে কিনা যাবে ইহা শুনি॥ ব**ল** দেখি ভাই মোরা শুনি তাই" इ' गाँथि कठानि करत। "আজিকার মত কহিয়ে বেকত ১৫ আজি সে রহিব ঘরে॥" সুবল জানল কান্থর চরিত কহিতে লাগল তায়। "আজুকার বড় ভ্ৰমেতে আগল কিছু স্থুখ চায়॥ চল সব গণে ধেনু বৎসগণে ক্ষেতে চরাইব ধেমু।" শুনি সব জন স্থবল-বচন "আজু না চলব কামু॥" मव जन ठिंग २० আপনার ঘরে (सरूराग करत (मना। নিকট আটনে চরে ধেমুগণে চণ্ডীদাস তথা গেলা॥

(गार्षनीला ममाश्व।

# রাই রাখাল।

शानभी।

वैंध् यिन शिन वरन छन छशा मिश । हुड़ा दिंद्य याव हन रिया कमन-जीशि॥ বিপিনে ভেটিব যেয়ে শুাম জলধরে।
রাথালের বেশে যাব হরিষ অন্তরে॥
চূড়াটি বাঁধহ শিরে যত সথীগণ।
পীতধড়া পর সবে আনন্দিত মন॥
চণ্ডীদাস বলে শুন রাধা বিনোদিনী।
নয়নে দেখিব সেই শুাম গুণমণি॥

১৯। আগল - কাতর। ২০। আটনে—স্থানে :

242

ञ्च्हे ।

কেহ হও দাম শ্রীদাম স্থদাম স্থবলাদি যত সখা। চল যাব বনে নটবর সনে কাননে করিব দেখা। পর পীতধভূং মাথে বাঁধ চূড়া ৫ বেণু লও কেহ করে। হারে রে রে বোল কর উচ্চ রোল যাইব যমুনাতীরে॥ পর ফুলমালা সাজাহ অবলা সবারে যাইতে হবে। দাম বস্থদাম সাজ বলরাম যাইতে হইবে সবে। যোগমায়া তখন কহিছে বচন রাখাল সাজহ রাই। मिथिरा नश्रान ১१ চণ্ডীদাস ভণে আমি তব সঙ্গে যাই॥

> ऽ४२ शाननी ।

যোগমায়া পোর্ণমাসী সাক্ষাতে আসিয়া।
লইল হরের শিক্সা আপনি মাগিয়া॥
সাজল রাখাল বেশ রাধা বিনোদিনী।
ললিতারে বলরাম কানাই আপনি॥
বলরামের হেলে শিক্সা বলে রাম কামু। '
ধুরলী নহিলে কে ফিরাইবে ধেমু॥
চণ্ডীদাস বলে যদি রাই বনমালী।
সলিল আনিয়া পত্রে করহ মুরলী॥

১৮৩ বড়ারি 1

আনন্দিত হয়ে সবে পোরে শিঙ্গা বেণু।
পাতাল হইতে উঠে নব লক্ষ ধেনু॥
চৌদিকে ধেনুর পাল হান্ধা হান্ধা করে।
তা দেখিয়া আনন্দিত সবার অস্তরে॥
ইন্দ্র আইল ঐরাবতে দেখয়ে নয়নে।
হংসবাহনে ব্রহ্মা আনন্দিত মনে॥
র্যভবাহনে শিব বলে ভালি ভালি।
মুখে বাছা করে নাচে দিয়া করতালি॥
চণ্ডীদাসের মনে আন নাহি ভায়।
দেখিয়া সবার রূপ নয়ন জুড়ায়॥

ন। ভায় হয়।

748

বিভাষ।

গায়ে রাঙ্গা মাচী কটিভটে ধটী মাথায় শোভিত চূড়া। চরণে সুপূর বাজে সবাকার গলে গুঞ্জমালা বেড়া॥ সবাকার কুচ হইয়াছে উচ ৫ এ বড় বিষম জ্বালা। কমলের ফুল গাঁথি শতদল সবাই গাঁথিল মালা॥ ঠারে ঠারে চূড়া গলে দিল মালা নাসিয়ে পড়েছে বুকে। 📐 ফুলের চাপানে কুচ ঢ়াকুী গেল ' চলিল পরম স্থা। কেহ পীতধটী •় কেহ লয়ে লাঠী গৰ্জন শবদে ধায়।,

্মীদাস ভণে গহন কাননে ১৫ শ্যাম ভেটিবারে যায়॥

১০। 'নাসিয়ে—'হেলিয়ে।

১৮৫ বিভাষ ।

যমুনার তীরে সবে যায় নানা রক্ষে।
শাঙলী ধবলা বলি আনন্দিত অঙ্গে॥
আসিয়া নিভৃত কুঞ্জে সবে দাঁড়াইল।
রাখাল দেখিয়া শ্যাম চমকি উঠিল॥

"কোন্ প্রামে বসতি রে কোন্ প্রামে ঘর্ম। ৫
আমার কুঞ্জেতে কেন হরিষ অন্তর ॥
কাহার নন্দন তোরা সত্য করি বল।"
মূখে হেসে বাক্য কহে অন্তরে বিভোল ॥
রাধা-অক্সের গন্ধে কুফের নাসিকা মাতায়।
আপাদ মন্তক কৃষ্ণ ঘন ঘন চায়॥
১০
ললিতা হাসিয়া বলে "শুন শ্যাম্থন।
রাধারে না চেন তুমি রসিক কেমন॥"
চণ্ডীদাস বলে শুন রাধা বিনোদিনী।
হের গো শ্যামের রূপ জুড়াবে প্রাণী।

রাইরাখাল সমাপ্ত।

# সম্ভোগ-শ্বতি।

266

বিভাব।

শ্যামলা বিমলা মঙ্গলা অবলা আইল রাইএর পাশে। তথাপি রাধারে যদি স্বতন্তরে পরাণ অধিক বাসে। দেখি সুবদনী মিলিল অমনি মিলিল গলায় ধরি। কত না যতনে রতন-আসনে বসায় আদর করি॥ রাইমুখ দেখি হৈয়া মহাস্থ্ৰী ্ৰুফহয়ে কৌতুককথা। রজনী-ব্রিলাস শুনিতে উল্লাস অমিয় অধিক গাপা॥ হাস পরিহাসে ় রসের আবেশে মগনে হইল রাধা।

চণ্ডীদাসবাণী নিশির কাহিনী ১৫ শুনিতে লাগয়ে সাধা॥

৩। স্বতস্তরে— স্বতন্ত্রা অর্থাৎ ললিতাদির ক্যায় অন্তরকানয়।

> ১৮৭ ললিত।

আজুক শয়নে ননদিনী সনে
শুভিয়া আছিমু সই।

যে ছিল করমে বঁধুর ভরমে

মরম ভোমারে কই॥

নিদের আলিসে বঁধুর ধাধসে ৫

ভাহারে করিমু কোড়ে।

ননদী উঠিয়ে বলিছে রুষিয়ে

'বঁধুয়া পাইলি কারে॥

এত টাটপনা জানে কোন জনা

বুঝিমু ভোহারি রীতি। ১০

#### চণ্ডীদাস

পর পতি লয়ে কুলবজী হয়ে এমতি করহ নিতি। যে শুনি প্রবণে পরের বদনে নয়নে দেখিত্ব তাই। করিব গোচর দাদা ঘরে এলে 20 ক্লণেক বিরাক্ত রাই ॥' নিঠর ব্রচনে কাঁপিছে পরাণে মরিয়া রহিন্থ লাজে। ফিরাইয়া আঁখি গরবেতে থাকি সঘনে আমারে যজে। এক হাতে স্থি কচলিয়া অাঁথি নয়ানে দেখি যে আর। চণ্ডীদাসে কয় কিবা কুলভয় কান্তর পীরিতি যার॥

- >। अञ्चल-अधाराः।
- ৩। করমে—মরমে—পাঠাস্তর—ভরমে ভ্রমে।
- १। शाधरम-ज्या
- ২ । যজে-- গর্জন করে।

ললিত।

মার একদিন স্থি শুভিয়া আছিমু। বঁধুরা ভরমে ননদী কোড়ে নিমু॥ বঁধু নাম শুনি সেই উঠিল ক্ষয়া। বলে 'ডোর বঁধু কোথা গেল পলাইয়া॥ সভী কুলবভী কুলে স্থালি দিলি আগি। ৫ আছিল আমার ভালে তোর বধভাগী ॥ শুনিয়া বচন ভার অধির পরাণী। কাঁপয়ে শরীর দেখি আঁখির তাজনি॥ এমত যে ডরি সখি পাপিনীর হাতে। বনের হরিশী থাকে কিরাভের সাথে ॥

দিজ চণ্টাদাস বলে পীরিতি এমতি। যার যত জ্বালা ভার •ভভই পীরিভি॥

- ৭। অধির পরাণী-প্রাণ অফ্লির।
- ৮। তাজনি তৰ্জন।
- ৯। কেমনে এড়াব সুধি তাপিনীর হাতে—পাঠান্তর।

~ (

বিভাগ। পরাণ-বঁধুকে স্বপনে দেখিয় বসিয়া শিয়র পাশে। নাসার বেশর পরশ করিয়া ঈষৎ মধুর হাদে॥ পিঙ্গল বরণ বসন্থানিতে মু'খানি আমার মুছে। মাথাটি বাছতে শিথান হইতে রাখিয়া শুভল কাছে॥ মুখে মুখ দিয়া সমান হইয়া वैधुया कतिन कारन। চৰণ উপক্র চরণ পশারি পরাণ পাই**নু** ব**লে** ॥ অঙ্গ-পরিমঙ্গ সুগান্ধ চন্দ্ৰন কুশ্ব্ম কন্তুরী পারা। পরশ করিতে রস উপজিল জাগিয়ে হইমু হারা। কপোত পাখীরে চকিতে বাঁটুল বাজিলে বেমন হয়।

এমন হইলে চণ্ডীদাস কহে আর কি পরাণ রয় 🛌

१। निथान---वानिम। ১৬। <sup>\*</sup> যথন চেতন হইল, তখন আর বঁধুকে পাইলায

#### বিভাব।

কলি মন্দিরে আছিলা স্থন্দরী কোড়হি শ্রামর চন্দ। ভবন্থ ভাহার প্রশ না ভেল এ বড়ি মরমে ধনদ॥ সঞ্জনি পাওল পীরিতি ওর। পীরিতিশেখর, শ্যাম স্থন্দর কঠিন হৃদয় তোর॥ কন্তুরী চন্দন অঙ্গের ভূষণ দেখিতে অধিক জোর। वाँधिन कवती বিবিধ কুস্থমে শিথিল না ভেল তোর॥ বিমল মধুর বয়ান কমল না ভেল পুলক সাত। পুছইতে ধনি হেরসি ধরণী হাসি না কহসি বাত ॥ 20 কিয়ে রতিপতি বসতি সময়ে ভেজিয়ে দেওলি ভঙ্গ। চণ্ডীদাস কহে এ দোষ কাহার रिएटव ना एडम मक्र ॥

৬। পীরিতি-শেধর – পীরিতি দোসর – পাঠান্তর। ৯। জোর –– উচ্জল।

>२->६। পাঠाন্তর,--

এমন কমল বিমল মধুর
. না তেল পুলক সাজ।
হেরইতে বলি কবরী হেরলি
ু বুঝি না করিলি কাজ॥
১৬।. রতিপতি—ঋতুপতি পাঠাস্তর।

यक्तातः।

সই কি আর বলিব তোরে। অনেক পুণ্যফলে সে হেন বঁধুয়া আসিয়া মিলল মোরে॥ এ ঘোর রজনী মেঘঘটা বঁধু কেমনে আইল বাটে: আঙ্গিনার কোণে বঁধুয়া ভিভিছে দেখিয়া পরাণ ফাটে॥ নহি স্বতন্তর গুরুজনা ডর বিলম্বে বাহির হৈমু। আহা মরি মরি সঙ্কেত করিয়া কত না যাতনা দিসু॥ বঁধুর পীরিতি আদর দেখিতে মোর মনে হেন করে। মাথায় করিয়া · কলদ্বের ডা**লি** আনল ভেজাই ঘরে॥ 20 আপনার তুখ স্থুখ করি মানে আমার হুখেতে হুখী। চণ্ডীদাস কংহ কান্তুর পীরিতি শুনিতে জগৎ স্থী॥

৮। পাঠান্তর,— ' খরে গুরুজন ননদী দারুণ।

**१**७२ ।

সিক্ষডা।

"আমি যাই যাই" বলি বলে ডিন বোল।
কড না চুম্বন দেই কড দেই কোল॥
করে কর ধরি পিয়া শপথি দেয় মোরে।
পুনঃ দরশন লাগি কড চেঠা করে ৮

পদ আধ বায় পিরা চাহে উলটিয়া।
বরান নিরখে কভ কাতর হইয়া॥
নিগ্ঢ় পীরিতি পিরা করেন বহুক।
চণ্ডীদাস করে হিয়ার ভিতরে রহুক।

৪। কন্ত চেষ্টা করে। পাঠান্তর-কত চাটু বোলে।

220

সুহই।

এমন পীরিভি কভু দেখি নাই শুনি।
পরাণে পরাণ বাঁধা আপনি আপনি ॥
ছুঁছ কোড়ে ছুঁছ কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিয়া।
ভিল আধ না দেখিলে যায় যে মরিয়া॥
লল বিনে মীন কুমু কবহু না জীয়ে।
মানুষে এমন প্রেম কোথা না শুনিয়ে॥
ভামু কমল বলি, সেও হেন নহে।
হিমে কমল মরে ভামু স্থুখে রহে॥
চাতক জলদ কহি, দে নহে তুলনা।
সময় নহিলে সে না দেয় এক কণা॥
কুসুমে মধুপ কহি, সে নহে তুল।
না আইলে ভ্রমর আপনি না যায় ফুল॥
কি ছার চকোর চাঁদ ছুঁছ সম নহে।
ভিজুবনে হেন নাই চণ্ডীদাস কহে॥

>>8

শিল্প।।

এমন পীরিতি কভু দ্বেখি নাই শুনি।
নিমিখে মানরে যুগ, কোড়ে দূর মানি॥
সমুখে রাখিয়া করে বসনের বা।
মুখ ফিরাইলে ভার ভয়ে কাঁপে গা॥
- একতন্তু হৈয়া মোরা রজনী গোডাই।
স্থের,সাগরে ভূবি অবধি না পাই॥

রজনী প্রভাত <del>কৈ</del>লে কাতর হিরায়। দেহ ছাড়ি মোর যেন প্রাণ চলি যায়॥ সে কথা বলিতে সই বিদরে পরাণ। চণ্ডীদাস করে সই সব পর্মাণ॥

ং কাড়ে দ্র মানি—কোলে থাকিলেও তৃথি
 হয় না, মনে হয় য়েন দ্রে আছি, আরও নিকট হইলে
 ভাল হইত।

১০। পরমাণ—প্রমাণ—ঠিক, সভ্য।

>>4

সুহই।

াকদিন যাইতে ননদিনী সনে।

কুটাম্ বঁধ্র কথা পড়ি গেল মনে॥
ভাবে ভরল মন চলিতে না পারি।
অবশ হইল তমু কাঁপে থরথরি॥
কি কহিব সথি, সে হইল বিষম দায়।
ঠেকি বিপাকে আর না দেখি উপার॥
ননদী বলয়ে হেঁলো কিবা তোর হইন।
চণ্ডীদাস বলে উহার কপালে যা ছিল॥

756

পা**কা**র।

সাত পাঁচ সথী সঙ্গে বসিয়া ছিলাম রজে
হেন কালে পাপ ননদিনী।
দেখিয়া আমাকে তার কাছে ডাকে
"আইস শুাম-সোহাগিনী॥
রাধা তোমারে কহিতে কি ।
ছুই চারি দিন আমিহ ও কথা
কাণেতে শুনিয়াছি॥

তুমি কোন দিনে যুম্না-সিনানে
গিয়াছিলে নাঁকি একা।

খ্যামের সহিত্তে <del>"কদশ্ব-</del>তলাতে ১০ 🐈 स्टब्रिक्टिन नांकि दिश्या॥ मिटे पिन रेटए এই পথে পথে ৰিতি করে আনা গোনা। রাধা রাধা বলি ্ বাজায় মুরলী তেঁই **হ'ল জানা শুনা**ী ষে দিন দেখিব আপন নয়ানে তা সনে কহিতে কথা। কেশ ছিঁ ড়ি বেশ দুরে তেয়াগিব ভাঙ্গিব বাড়িয়া মাথা॥ দেয় পরিবাদ ২০ এ কি পরমাদ এ ছার পাড়ার লোকে। যে থাকে সদায় পর চরচায় সাপে খাৰ তার বুকে ॥ গোকুল নগরে গোপের মাঝারে এত দিন বসি মোরা। কভুনাহি জানি কভুনাহি শুনি কান্থ কি কালিয়া গোরা॥ বড়ুয়ার ঝিয়ারি বড় নাম ধরি বলই বড়ুয়া বউ। নিরমল কুলে এ কথা যে বলে ৩০ সে নারী গর**ল** খাউ॥" চিত থির করি থাকহ স্থলরি যেন মন নাহি **টলে**। কাছার কথায় কার কিবা হয় বড়ু চণ্ডীদাস বলে॥ é-৭ : পাঠাস্থর,— রাধা বিন্যোদিনি ভোষারে বলিতে কি। চাই হুই তিন কথা বে কণা তোমার ্ বড়ই গুনিয়াছি॥ २०। পরিবাদ--- निम्ना, क्ष्मक। বড় ভাল বধ্ বলিয়া গৰ্ম করিয়া থাকি।

•

আমার পিয়ার কথা কি কহিব সই। যে হয়, ভাহার চিতে স্বভস্তরী নই ॥ তাহার গলার ফুলের শালা আমার গলায় দিল। তার মত ম্য়ের করি সে মোর মত হইল॥ তুমি সে আমার প্রাণের অধিক তেঁই সে ভোমারে কই। এ যে কাল কহিতে লাজ আপন মনেই রই॥ ٥ ( তাহার প্রেমের বশ হইয়া ষে কহে ভাহাই করি। **চণ্ডীদাস** কহয়ে ভাষ বালাই লইয়া মরি॥

794

সপ্তয়ারি।

নিভিই নৃতন পীরিভি ছজন
তিলে তিলে বাড়ি যায়।

ঠাই নাহি পায় তথাপি বাড়ায়
পরিণামে নাহি ক্ষয়॥

সধি হে অনভূত হু হু প্রেম।
এত দিন ঠাই অবধি না পাই
ইথে কি ক্ষিল হেম ॥
উপমার গণ সব কৈল আন
দেখিতে শুনিতে ধন্দ।
এ কি অপরূপ তাহার স্কর্মপ ১০
স্বারে ক্রিল আছু॥

30

>६। मन्द्रय--- अव द्रा

446

व्याभावती ।

চলহ সই জল ভরিতে যাই যে ঘাটে চন্দন চুয়া ভাসে। কলগী ভাঙ্গিয়া ঝিকটি খেলিব যাবত কৃষ্ণ না আইসে॥ এসং সকল সধী বৈসহ আমার কাছে ৫ স্বপন কহি যে ভোমার আগে। নিশি ছু'পছরে স্বপন দেখিকু वेंधूया नियदत कारम ॥ শিয়রে বসিয়া ঈষং হাসিয়া গায়েতে বুলায় হাত। সূতার সঞ্চার ষার নাহি নড়ে কোন পথে গেলা প্রাণনাথ। ডাহুকী ডাকয়ে কোকিল কুহরে চকোর ছাড়য়ে নিশ্বাস। বাশুলী-চরণ শিরেতে বন্দিয়া ১৫

> २०० • १९३१

কহে বজু চণ্ডীদাস ॥

বিরলে বসিয়া আছিল শুভিয়া শুন গো পরাণ-সখি। নিশিতে আসিয়া দিল দরশন , কমল-নয়ান-জাখি॥

পেয়ে, বছ খন অমৃশ্য রতন পুইতে নাহিক ঠাই। কোন্থানে থোব ্লে হেন সম্পদ্ মোর পরতীত নাই। যত ছিল তাপ দুরে গেল পাপ ব্রিশ্বই বেদনা যতি। রাখে পেয়ে ধন আমার তেমন ইহা না রাখিব কভি॥ আজি নিশি দিন ভেল শুভক্ষণ वैंध्या भिनन काल। হাসি বিনোদিনী কহে আধ বাণী शंभिया शंभिया वर्ल॥ না পাই কহিতে বিরশ হইয়া মনে মোর যত আছে। চণ্ডীদাস কচে আসি প্রিয়া মোরে সে কথা কহিবে পাছে॥ २०

৮। পরতীত—প্রতীত, বিশ্বাস। ২০। পাছে—পশ্চাতে, পরে।

4.2

বিভাগ।

প্রথম প্রহর নিশি স্কাশ্বন দেখি বসি

সব কথা কহিয়ে তোমারে।
বিসিয়া কদস্বভালে সে কামু করেছে কোলে

চুস্ব দিয়া বদন-উপরে॥

অঙ্গে দিয়া চন্দন বলে মধ্র বচন ৫

আর বায় বায় বাঁশী সুমধ্রে।
চাহিলেন সুরতি নাহি দিল্পপাপমতি

দেখিল কৃষ্ণ দৌজি প্রহরে॥

ভৃতীয় প্রহর নিশি মুই ক্রক্র-কোলে বসি

নেহারিমু সে চাঁদ্-বদনে।

স্বৰ্হাসন করি প্রাণ মৌর নিল হরি
বিয়াকুল হইল মদনে ॥
চতুর্থ প্রহরে কান করিল অধর পান
মোর ভেল রতি আশোয়াসে।
দারুণ কোকিল নাদে ভাঙ্গিণ আমার নিদে ১৫
রস গাইল বড়ু চণ্ডাদামে ॥

৬। বায়—বাজায়। ৮। দৌজি—বিতীয়। ১৪। আশোয়াসে—আশা।

> २०२ धाननी ।

রঞ্জনী-বিশাস কহয়ে রাই।
সব স্থীগণ বদন চাই ॥
আ'থি চুলু চুলু অলসভরে।
চুলিয়ে পড়িল স্থীর কোড়ে॥
নয়নের জলে ভাসয়ে বুক।
দেখি স্থি কহে কহনা হুখ॥
কুপায়ে কুপায়ে কাদয়ে রাধা।
কহে চণ্ডীদাস নাগর ধান্দা॥

**২০০** শিল্পড়া।

রাই আজু কেন হেন দেখি।
বর্গ করিয়া কহ না আমারে
মনের মরম সখি॥
আখি চুলু ঘুমেতে আকুল
জীগিয়াছ বুঝি নিশি।
রসের ভরেতে — জঙ্গ নাহি ধরে
বসন পৃঞ্চিহেঁ খলি॥

এক কহিছে আর কহিতেহ বচন হইয়া হারা। কিবা রসরকে ১০ রসিয়ার সনে नक रखरह भाता। ঘন ঘন তৃমি মুড়িভেছ অঙ্গ সঘনে নিশাস ছাড়। স্বরূপ করিয়া কহ না ক্রমেস কপট কেন বা কর। ভালের সিন্দুর আধেক আছুয়ে নয়নে আধ কাজল। চাঁদ নিঙ্গাড়িয়া এমন করিয়া কেবা নিল এ সকল। চণ্ডীদাস কয় যেবা সেই হয় ২০ ভালে जूनाहेल काछ। সঙ্গের সঙ্গিনী বঞ্চিতে নারিবে কিবা কর আর লাজ॥

> २•४ धाननी।

প্রছন শুনইতে মুগধ রমণী।
সথীগণ ইঙ্গিতে অবনতবয়নী॥
লাজে বচন নাহি করে পরকাশ।
সথীগণে কহইতে প্রিয়তম ভাব॥
কহইতে না কহসি রজনীক কাজ।
আমার শপথি ভোরে যদি কর লাজ॥
পহিল সমাগমে হইল যত স্থধ।
পুনহি মিলনে পাথব কত স্থধ।
ঐছন বচন শুনি কহে মৃতু ভাবি।
চণ্ডীদাস ইহ রস পরকাশি॥
১০

। ভাবি—ভাবার, কথা কহিয়।>০। পরকাশি—প্রকাশ করিতেছেন।

₹•¢

युर्दे ।

करहं स्वमनी अन (গা, मक्सि ছুখ কি বলিব আর। কি করি এখন জুড়াই জীবন .\_\_\_ বদন দেখিব ভার॥ ভাহার সাঁরীতি কিবা দিবারাতি ভূলিতে নাহিক পারি। মনে হলে মুখ কেটে যায় বুক শুমরে গুমরে মরি॥ সহে নাক আর করি অভিসার আজি হই বলরাম। ١. যশোদা-মন্দিরে যাইব সন্বরে ভেটিব নাগর কান॥ , শুনিয়া ললিডা হাসি কহে কথা वनाइ माक्रित भरत । চণ্ডীদাস ভণে যশোদা যভনে ঈপিবে ভোমার করে॥

সম্ভোগস্থতি সমাপ্ত।

### বাসক-সজ্জ।

**२•**१

গান্ধার।

রাধিকা আদেশে নবের হরবে

 কুস্থুৰ রচনা করে।

# ঐরিফের উক্তি।

কামোদ"।

আজুকার নিশি নিকৃঞ্চে আসি
কৃত্রিল বিবিধ রাস।
রসের সাগরে ডুবাইল মোরে
বিহানে চলিল বাস॥
শুন হে স্থবল স্থা।
সে হেন স্থন্দরী গুণের আগরি
পুনঃ কি পাইব দেখা॥

পুনঃ কি পাইব দেখা। মদনে আগুলি গলে গলে মিলি চুম্বন করল যত।

কেশ বেশ যদি বিধার হ**ইল )**তাহা বা কহিব কত॥
অশেষ বিশেষ বচন ক**হি**য়।
আবেশে লইয়া কোড়ে।

অক্লের পরশে হিয়া জুড়াইন।
কেমনে পাশরি তারে॥
চণ্ডীদাস করে শুন হে নাগর

এ বড় লাগল ধন্দ। সে রাধা রমণী রসশিরোমণি ভোমারে করল বন্ধ॥

৮। यहरन आश्वनि--यहनरक आठेकांडेब्रा द्राविद्रा।

মল্লিকা মালতী আর জাতি বৃথী
সাজাইছে থরে থরে ॥
আজ রচয়ে বাসক শেজ।
মূনিগণচিত হেরি মূরছিত
কলপের মুচে তেজ ॥

٥ د

14

الماوة د

ফুলের প্রাচীর ফুলের আচির क्रान्त श्रेम ध्रा ফুলের বালিশ আলিস কারণ প্রতি কুলে ফুলশর॥ শুক পিক দ্বারী ১মদন প্রহরী ভ্রমর ঝঙ্কারে ভায়। ছয় ঋতু মন্ত সহিত বসন্ত মলয়-প্ৰন বায়॥ উ**ল**রোল রাভি মণিময় বাতি কর্পুর ভামুল বারি। চণ্ডীদাস ভণে 'রাখি স্থানে স্থানে শয়ন করল গোরী॥

> । বায় — প্রবাহিত হয়।
> ৬। উন্ধরোল — উচ্ছল। বাতি প্রদীপ।
> ৯। গোরী — রাধিকা।

### বিপ্রলব্ধা।

शाननी ।

বঁধুর লাগিয়া শেজ বিছাইমু
গাঁথির ফুলের মালা।
ভাসুল সাজির দীপ উজারিমু
মন্দির হইল আলা॥
সই পাছে এ সব হবে আন।
সে হেল নাগর গুণের সাগর
কাহে না মিলল কান॥
শাশুড়ী ননদে বঞ্চনা করিয়া
আইমু গহনবনে।
বড় সাধু মনে এ রূপ-বৌবনে
মিলিব বঁধুর স্বনে ॥

পথ পানে চাহি কত বা রহিব কত প্রবোধিব মনে। রসশিরোমণি আসিবে এখনি বঁড়া চণ্ডীদাস তথে॥

26

>0

- ০। উব্পারিমু—উজ্জ্ব করিমু।
- णन-- द्रथाः

কিশলয় শেক্ত করি কেন জাগি রাতি।
মদন ছরজন তাহে সঙ্গ হইল ভাতি॥
চল্রকিরণ তাহে বৈরী মোর ভেল।
দক্ষিণ-পবন মোর সমূহ ছুঃখ দিল॥
অবহু এখন বঁধু না আইল ইহা।
কেমনে ধরিব প্রাণ এত ছুখ সয়া॥
কালরাতি কাল মোর দংশিল শরীরে।
কি আর ঔবধ আছে বল না আমারে॥
ধন্বস্তরি কাছে গিয়া সাধিব সব ভন্ত।
ঘূচাব সকল জালা কাল বে ভুজজ॥
মৃত মণিমল্লে যেন মৃত হয়ে যায়।
তাহার অধিক যেন হৈল সব কায়॥
চণ্ডীদাস বলে এই সময়ের দোষ।
বিরস না ভাব ভুমি না করিহু রোষ॥

•

বারের আগে ফুলের বাগ
কি সুখ লাগিয়া ফুইনু।

মধু খাইডে খাইতে জুমর নাভল

বিরহ-জালাতে মৈয় ঃ

লাতি কইসূ मृथि क्रहेश्च क्रेंश्रेशक मानजी। ফুলের বালে নিদ নাহি আসে পুরুষ मिঠूর बाखि॥ কুমুম ভূলিয়া বোঁটা ভেরাগিয়া শেজ বিছাইমু কেনে। য়া শুই ভাই কাঁটা ভূ'কে গায় রসিক নাগর বিনে॥ রভন-মন্দিরে স্থীর সহিতে তা সনে করিত্ব প্রেম। চণ্ডীদাস কৰে কামুর পীরিডি 26 .. বেন দরিজের হেম।

২। রুইছু - রোপণ করিলাম।

আর কি মিলব মোরে পিয়া গুণনিধি। কি রাতি স্থরাতি হবে অমুকৃল বিধি॥ গগনে আছিল চাঁদ সেহ অতি মন্দ। হিয়া **জর জর হৈল খসিল পাঁজরে**র বন্ধ ॥ এখনে না আইল পিয়া কে কৈল আটকে। ৫ নিজ ঘরে রৈল কিবা পড়িয়া বিপাকে॥ শরীরে না রহে প্রাণ বাহিরার এখনে। পরাণ গেলে কি করিবে পিয়াদরশনে॥ চণ্ডীদাস কহে প্ৰাণ বাইবেক কেনে। চিত স্থির করি রহ মিলিবে এখনে॥

कारमान ।

- নাহ নিঠুরচিত ভেল কাহার চিত উহি রহল আজু রাতি।

প্রাণ গুনি,গুনি খোরাত্ব র**ভ**নী महस्क **अवना बात्री**कां ि॥ চণ্ডীদাস ভণে মরম সমানে না মিলল আর কান। জীবন যৌবন কেম্রে ধরিব প্রাণ॥

>। नाह-नाथ।

২। উহি--সেই জন্তে।

৩। প্রাণ গুনি গুনি,-মনে মনে চিন্তা করিয়া।

120

कारमाम ।

সামার বাসনা ना देश्य जायना অঁ1/থর হইল আড। নিরবধি বিধি এমতি করিলে কেমন ব্যাপার ভার॥ সায়র নিকটে চাঁদ মিলিব ৫ यूह्यि मत्नत्र छ्थ। স্থা যে ক্ষরিবে অঙ্গ জুড়াইবে পাইব পরম মুখ। পাপ নারী করি জনমিলে হরি পরের পত্তির আশে। ' কহে চণ্ডীদাসে না মিলিল শেষে আপন করমদোবে ৷ ১। তোৰণা—ভৃপ্তি।

२। अनिश्न-अर्थाश्रमान कतिरम।.

নিশি প্রভাত হৈল পিয়া না আইলা ভবনে। হেদে রে মালতীর মালা কেন গাঁথিলাম যভনে। ٔ جنن و د

অগুরু চন্দন চুয়া দিব কার গায়।
জর জর হৈল তম্ব নিশি না পোহায়।
কপ্র চন্দন চুয়া দিব কার মুখে।
রজনী বঞ্চিব হাম কারে লয়ে স্থথে।
নাহ নিঠুর যদি না আইসে ইছা।
যমুনার জলে সব দিব ভাসাইয়া।
চণ্ডীদাস কহে তবে মিলিব আসিয়া।

সুহিনী।

সে যে ব্যভাসু-স্থতা।
সরমে পাইয়া ব্যথা ॥
সজলনয়ান হৈয়া।
রহে পথ পানে চাইয়া॥
ফুল-শেজ বিছাইয়া।
রহয়ে ধেয়ানী হইয়া॥
উক্সর চাঁদনী রাতি।
মন্দিরে রতন-বাতি॥
কহে সব ভেল আন।
কাহে না মিলল কান॥
সকল বিফল হৈল।
আধ রজনী গেল॥
শ্যাম বঁধুয়ার পাশ।
চলু বড়ু চণ্ডীদাস॥

١.

50

२**>७** शानभी।

তু'কান পাভিয়া ছিল এভক্ষণ বঁধু-পৃথপানে চাই।

চমকি উঠিল রাই ॥ পাভায় পাভায় পড়িছে শিশির স্থীরে কহিছে ধনী। বাহির হইয়া দেখ লো সজৰি বঁধুর শবদ শুনি॥ পুনঃ কহে রাই না আসিলে বঁধ মরমে রহল ব্যথা 🗠 কি বৃদ্ধি করিব পাষাণে বাড়িয়া ভাঙ্গিব আপন মাথা॥ ফুলের এ ডালা ফুলের এ মালা শেজ বিছাইমু ফুলে। সব হৈল বাসি আর কেন সই 20 ভাসা গে যমুনা-জলে॥ কুম্কুম্ কন্তুরী লাগিছে গরল হেন। তা**স্থল** বিরস ফুলহাপ ফণী पः भिष्ट **रु**परय (यन ॥ २० যমুনায় ডার **ज्या नहे**या আর ত না যায় দেখা। ললাটের সিন্দুর মুছি কর দূর নয়ানের কাজর-রেখা॥ আর না রাখিব এ ছার পরাণ 20

না যাব লোকের মাঝে।

वानिए निर्वतनारक

চলু চণ্ডীদাৰ

থির হও রাই

দেখিয়া অম্ন

পরভাত নিশি



20

### " পতিতা।

২১৭ চন্দ্রাবলীর উক্তি

কামোদ।

এই পথে নিতি কর গতায়তি

সূপ্রের ধ্বনি শুনি।
রাধা সঙ্গে বাস আমারে নৈরাশ

আমি বঞ্চি একাকিনী॥

বঁধু হে, ছাড়িয়া নাহিক দিব।

হিয়ার মাঝারে রাখিব ভোমারে

সদাই দেখিতে পাব॥
শুন সধীগণ করিয়া যতন

লয়ে চল নিকেতনে।

আজুকার নিশি রাধিকা রূপসী

বঞ্ক নাগর বিনে॥

এতেক শুনিয়া করেতে ধরিয়া

লইয়া চলিল বাস।

রাধা-ভয়ে হরি কাঁপে পর পরি

ভণে দ্বিল্প চণ্ডীদাস॥

ঞ্জীকুফের উক্তি

. 425

41

চন্দ্ৰাবলি, সাজি ছাড়ি দেহ মোরে।
বীদাম ডাকিছে গাব তার কাছে
এই নিবেদন তোরে॥
কালি আসি হাম প্রাইব কাম
ইংগ নাহি কর রোব।
চন্দ্রাবলীনাথ ভ্রনে বিদিত

> ২১৯ বিহাগড়া।

কে বলে আমার তুমি সে রাধার তাহার হুখের হুখী 🖟 করিয়া চাতুরী যাবে বুঝি হরি রাগারে করিতে সুখী॥ বঁধু হে, তুমি ত রাধার নাথ। ৫ তব ভারিভুরি স্থারি রাখিব আপন সাথ॥ এতেক বলিয়া করেতে ধরিয়া চুষ্বয়ে বদন-চাঁদে। রসিক নাগর হইয়া ফাঁপর ১০ পড়িল বিষম ফাঁদে ॥ হেপা স্থবদনী সখী সনে বাণী কহয়ে কাতর-ভাষে। নিশি পোহাইল পিয়া না আইল কহে দ্বিদ্ধ চণ্ডীদাসে॥

्धानम् ।

কুন্তুম-শয়নে **ह**ञ्चावनी मत्न সুখেতে ছিলেন শ্বাম। ভূয়ে ভীত হৈয়া প্রভাতে উঠিয়া আসিলা রাধার ঠাম॥ করিয়া সাহস গলে পীতবাস দাড়াইল রাইএর আগে। তামুলের ডালা দেখে ফুলমালা क्लिशाष्ट्र तारे तार्ग॥ নাগরে না দেখি মানিনী না চান আছেন স্থাপন কোপে। > 0 ভঙ্গিমা দেখিয়া ভয়ে সে ভূকর নাগর ভরাসে কাঁপে॥ রোষেতে নাগরী থাকিতে না পারি নাগরেরে পাড়ে গালি। লম্পটের সনে চণ্ডীদাস বলে कथा किला छवू छानि ॥

> ২২১ **ঞ্জীরাধার উক্তি** দলিত।

ভাল হৈল আরে বঁধু আসিলা সকালে।
প্রভাতে দেখিলাম মুখ দিন যাবে ভালে॥
বঁধু ভোমারে বলিহারি ফাই।
ফিরিরা দাঁড়াও ভোমার চাঁদ-মুখ চাই॥
আই আই পড়েছে মুখে কাজরের শোভা। ৫
ভালে সে সিন্দ্র ভোমার মুনির মনোলোভা॥
বন্ধ নখ দশনে অল জর জর।
ভালে সে কহণ-দাগ হিলার উপর॥
নীল পাটের শাটী কোঁচার বলনি।
রমণী-রমণ হৈয়া বিশ্বিলা রজনী॥

প্রাপ্ত বাবক রক্ষ বিদ্যু কার সাজে।

এখন কর মনের কথা মাইলে কোন্ কালে।

চারি দিকে চায় মাগর আঁচরে মূর্ব মূছে।

চণ্ডীদাস করে লাজ ধুইলে না বুচে।

১১। উরে—উ**ক্লতে**।

ু রাষকেলী।

222

हूं ७ ना हूं ७ ना वंधू विधारन धाक। मूक्त लहेश हैं। एम्थ्यानि एवं ॥ বরালে লেগেছে নয়ানের **কাজ**র কালর উপরে কা**ল**। ও মুখ দেখিলাম ৫ প্রভাতে উঠিয়া 🍍 দিন যাবে আৰু ভাল ৷ বয়ানে লেগেছে অধরের তামুল ঘুরে চুলু চুলু জাখি। 🖁 কিরিয়া দাঁড়া ও আমা পানে চাও নয়ন ভরিয়া দেখি ্॥ 🦈 চিক্ণ চূড়া চাঁচর কেশের সে কেন বুকের মাঝে। আছে সর্ববগায় जिन्मू (त्रत पांग (मात्रा **राज मति गारक** ॥ - वामक इरप्रदह > नील-कमन , मिन इरहर एक । (शरत स्थामिवि কোন্ রসবভী निक्रक नाम्बद्ध त्नक् क्षिन-नग्रादन कहिर्द चुमात्री অধিক করিয়া ভোড়া। करर हजीशंगः, আপন ক্ষাব

ছাড়িতে না পারে চোরা।

৭ । অধ্যক্ষ <del>আকুল না</del>রিকার। ১৫ । বাদক বাদার জার **এভাবী**ন। ২০ । তোড়া পর্জন।

m ( ( ) )

**২**২৩ বিভাব।

৪। ক্লাবতী—ক্লবতী, পাঠাতর।
 १। কপালে সিজ্বরেখা নয়ানে কাজল, পাঠাতর।
 ১০। আমি—ত্বি, পাঠাতর।

২২৪ সিজুড়া।

বঁধু, কহ না রসের কথা শুনি।
ক্রেমন কামিনী-সঙ্গে যাপিলা যামিনী রজে
কত স্থাব পোহালা রজনী ॥
নীল-নলিনী আভা কে নিলে অঙ্গের শোভা
কাল্পরে মলিন অলখানি।
চিকণ চূড়ার হাঁদ কে নিল বরিহা কাঁদ
আজি কেন পিঠে যোলে বেণী ॥
বস্তু সোধাবে নিশান ভার সাখী।

রক্ত উৎপুল রুলে বৈছন অসর বুলে ১০

এছন কিরয়ে ছটি আঁখি।

বিচরা সিন্দুরের বিন্দু কে নিল চুলন ইন্দু

নাসা ছলে নাকের মুকুজা।

বিজ্ঞ চণ্ডীদাস কয় এ কথা অক্সথা নয়
ভাল জানে ব্যজায়ন্তা॥ ১৫

७। वितिश काँम-मन्तर्भः।

२। नाषी--नाकी।

>২। কে নিল চন্দন ইন্দু – কে নিল অমিয়া-সিদ্ধ – পাঠান্তর।

রামকেলী।

করুণার সিদ্ধ এস এস বন্ধ त्रक्रनी (शांक्षारम ভारम। বসিকা রমণী পেয়ে গুণমণি ভাল ভ সংখেতে ছিলে॥ কপালে সিন্দুর ন্যাকে কাজর ক্ষতবিক্ষত হে হিয়া। পশ্বি নীলাম্বর আঁখি চর চর হরি এ**লে হর সাজি**য়া॥ ধিক ধিক নারী পর আশাধারী কি বলিব বিধি ভোয়। ধুষ্ট লম্পট শঠ এমত কপট হাতেতে স'পিলি মোয়॥ কাদিয়া যামিনী পোহালাম আমি তুমি ত সুখেতে ছিলে। লইয়া মাধব রভিচিহ্ন সব প্ৰভাতে দেখাতে এলে॥ এই মিনতি রাখ ঐখানে থাক আজিনাতে না আইস।

1000

২০

ছু ইলে ভোমারে বির্দ্ধি আমারি না করিবে পরশ ॥ গোকমুখে কত শুনিজীম বত প্রতীত আজি হ'ল সব। গুডীদাস কর নাগর দয়াময়

224

লিকিড |

স্থারে মোর স্থারে মোর সোনার বঁধুর।
অধরে কাজর দিল কপালে সিন্দুর॥
বদন-কমলে কিবা ভাস্থল শোভিত।
পায়ের নথের ঘায় হিয়া বিদারিত॥
এস না এস না বঁধু আঙ্গিনার কাছে। ৫
ভোমারে ছুইলে মোর ধরম যায় পাছে॥
শুনিয়া পরের মুখুে নহে পরতীত।
এবে সে দেখিমু ভোমার এই সব রীত॥
সাধিলে মনের কাজ কি স্থার বিচার।
দূরে রক্ত দূরে রক্ত প্রণাম আমার॥ ১০
চণ্ডীদাস বলে ইংগ বলিলে কেমনে।
চোর ধরিলেও এত না কহে বচনে॥

२२१

. 1

ললিভ।

আহা আহা বঁধু ভোমার উপীয়েছে মুখ। কে সাজালে হেন সাজে হৈরে বাসি হুখ। কপালে কছণ-দাগ আই বিরি ছবি।

কে করিল হেন কাজ কেনন গোঙারি।

দার্নিণ নথের বা হিয়াতে বিরাজে।

রক্তোৎপল ভাসে যেন নীল-সরঃ মাঝে।

কেমন পাষাণী যার দেখি হেন রীভি।

কে কোথা শিখালে ভারে এ হেন পীরিভি।

ছল ছল জাখি দেখি সনে ব্যথা পাই।

কাছে বস আচলেতে মুখানি সুহাই।

বড় কক্ত পাইরাছ রজনী ভাগিরা।

চণ্ডীদাস কহে শোও হিয়াছ আসিরা।

386

শ্রীকৃষ্ণের উত্তর গাদকেশী।

শুন শুন স্থানির আমার যে রীত।
কহিতে প্রতীত নহে জগতে বিশ্তি ॥
তুমি না মানিবে তাহা আমি ভালে জানি।
এতেক না কহ ধনি অসম্ভব বাণী ॥
সক্ষত কহিলে ভাল শুনিতে হয় স্থা।
মহা কথায় কত পাপ জান ভ জাপনি।
আনিয়া যে না জানে লৈ অথম পাপিনী ॥
পারে পরিবাদ দিলে ধরম সবে কেনে।
তাহার এমন রীত হইবে কেমনে॥
১০
চণ্ডীদাস বলৈ যদি মিছা বলে খাকে।
সেই লে ঠেকিবে পাপে তামার কিবা যাবে॥

- >। जुल्बि जुलब्रि। वार्डास्त्र।
- वनक्छ दरेल भारेत वेड इव। ,,
- ७। जानिता मा बारन (व राहे छ शालिनी। "

১০। खोबाह अमूक्त बाब बहेरन खन्नरमा श्रीठीखत । ১১। চলীদান বলে মেবা मिছा क्यो करत । "

222

### জীরাধিকার গ্রত্যুত্তর নাবকেনী।

কালিয়া নাগর ভাল ভাল ভাল শুলালে ধরম-কথা। পরের রমণী मकारण यथन ধরম আছিল কোথা ॥ চোরের মুখেডে ধরম-কাহিনী শুনিতে পায় যে হাসি। পাপ পুণ্য জ্ঞান ভোমার যভেক कानस्य वदक्रवाशे॥ माश्व डेशहम्भ চলিবার তরে পাথর চাপিয়া পিঠে। বুকেতে মারিয়া চাকুর স্বা ভাহাতে সুনের ছিটে॥ ष्यात्र नी मिथिय ও কাল মুখ এখানে রহিলে কেনে। বাও চলি যথা মনের মাতৃষ रयथारन मन रव छोरन ॥ কেন দাভাইয়া পাপিনীর কাছে পাপেতে ডুবিবা পাছে। কৰে চণ্ডীদাস যাও চলি যথা **धत्रस्यत्र थनी जार्ड** ॥

> ংগ্রু-শ্রীকুফের উক্তি গাননী।

না কর না কর ধনি এত অপমান। তক্ষণী হইয়া কেন একে দেখ আন॥ বংশী পরশি-নামি শপথ করিয়ে।
তোমা বিদ্ধু নিবানিশি কিছু না জানিয়ে।
কাগুবিন্দু দেখি সিন্দুরবিন্দু কছ।
কতিকে কন্ধণ-দাগ মিছাই ভাবহ।
এত কহি বিনোদ রায় চলি যায় ঘর।
চণ্ডীদাস কহে রাই কাঁপে থর থর।

২। তুমি ত বয়সে নবীনা, তবে কেন ভোষার চক্ষুর দোব ঘটিল ? দৃষ্টিশ্রম হইতেছে কেন ?

**₹**0)

थाननी ।

লালতা কহয়ে শুন হে হরি।
দেখে শুনে আর রহিতে নারি॥
শুন শুন ওহে রসিকরাজ।
এই কি ভোমার উচিত কাজ॥
উচিত কহিতে কাহার তর।
কিবা সে আপুন কিবা সে পর॥
শিশুকাল হতে স্বভাব চুরি।
সে কি পারে রহিতে ধৈর্যা ধরি॥
এক ঘরে যদি না পোষে তায়।
ঘরে ঘরে ফিরে পায় কি না পায়॥ ১০
সোনা লোহা তামা পিতল কি বাছে।
চোরের কি কখন নির্শ্তি আছে॥
এ রস দিজ চণ্ডীদাস কয়।
চোরের কখন মন শুদ্ধ নয়॥

৯-১০। এক স্থানে বদি তাহার আর্কাজকার ভৃতি না হয়) পুত্রে কিছু পাউক আর নাই পাউক, নানা হারে বেড়ার। थाननी।

করক বরণ করিরা মনে।
ভ্রমই মাধব গছনবনে ।
হিমকর হেরি মুরক্তি-পড়ি।
ধূলায় ধূলর যাওত গড়ি ॥
"অপরাধী আনি কোখায় যাব।
রাই স্থামুখী কেমনে পাব॥"
এতেক কহিতে মিললি রাই।
চণ্ডীদাস তব্জীবন পায়॥

>। কনকবরণ—রাধিকা। ৮। তব্—তবে।

#### মান।

২**০০** ভা**টি**য়ারি।

রামা হে কি তার বলিব আন। ভোহারি চরণে শরণ সো হরি অবৰ্ত না মিটে মান। গোবর্দ্ধন-গিরি বামকরে ধরি যে কৈল গোকুল পার। বিরহে সে ক্ষীণ করের কম্বণ মানয়ে গুরুষা ভার ॥ কালীয় দমন করল বে জন চরণযুগলবরে। এবে সে.ভুৰঙ্গ ভরমে ভুলল क्षप्र ना थरत हारत ॥ সহজে চাতক না ছাড়য়ে প্রীত ् ना देवरम नमीत्र छोरत्। ্বরিখণ বিনে না পিয়ে ভাহার নীরে॥ . ১৫ বীন্ধ দৈবলোবে শ্বনিক প্রিরাসে
পিবরে হেরিরে থোর।
তবছ তাঁহারি নাম লোঙরিরা
গলরে শতগুণ লোর ॥
চণ্ডীদাস-বাণী শুন বিনোদিনি
কি মার করছ মান।
তুরা অমুগত শুনম মরকত
তো বিহু ভাবে নাংআন ॥

শ্ব পাঠান্তর ঃ—
 চণ্ডীদাস তথে . শুন বিনোদিনি
 কি আর বলিব ভোর।
 ভাষ রতন
 কার বলিব ভোর।
 কারতন কারতন
 না ঠেল মানেতে যোর॥

---**-**

क्रुइडे ।

শুন লো রাজার ঝি। লোকে না বলিবে কি॥ মিছাই করসি মান। ডো বিছু জাগল কান॥ জানত সঙ্কেত করি। ভাহা জাগাইলা হরি॥ উলটি করসি মান।

**†0**¢

ঞ্জিরাধিকার উক্তি

বিভাব।

উহাঁর নাম করে। না নামে মোর নাহি কাজ। উনি করেছেন ধর্ম্ম নক্ট ভুবন ভরি লাক্তম ানি নাটের শুরু সই উনি নাটের শুরু ।

ানি করেছেন কুলের বাহির নাচাইরা ভুরু ॥

ানে চক্র হাতে দিলে যখন ছিল উহার কাজ। ৫

াখন উহার অনেক হল আমরা পেলাম লাজ॥

াহে বজু চণ্ডাদাস বাশুলী আদেশে।

াহার সনে লেহ করে তমু হৈল শেষে॥

२**०७** शामनी ।

#### ( সখার উক্তি )

ভোদের দোঁত্রের দৈবের ঠাম। নিতি নিতি তোরা কলহ করিবি কত না সাধিব হাম। নিতি নিতি তোদের এমতি করিয়ে কথাতে কথাতে খন্দ। সে বলে নাই রসিক নহে তু বলিস উহ মন্দ॥ সে হেন নাগর গুণের সাগর 🦟 জগৎত্ব্বভি লেহা। তু হেন নাগরী প্রেমের আগরি ১০ কেন ৰাড়াইলি লেহা। নিতি নিতি ভোরা এমডি করিবি देख कि भन्नान नग्न । চণ্ডীদাস কছে অবলা পরাণে এত কি ,বেদনা সয়। 24

>। দৈবের ঠাম--সাধ করিয়া বিছা কলহ। ১০। আগরি---জঞ্জনী, শ্রেষ্ঠা। श्रामकी ।

আসিয়া নাগর সমূবে দাঁড়াল গলে শীতবাস লৈয়া। সে চাঁদ-বদনে ফিরি না চাহলি ভূবড় কঠিন মেয়া॥ সো শুমা নাগর স্কর্গৎ ত্রুভি ৫

সোখ্যাম নাগর জগং হলভি কিসের অভাব ভার।

তোমা হেন কত কুলবতী সতী দাসী হইয়াছে তার ॥ তার চূড়া মেনে সুখেতে থাকুক

ভাহে ময়্রের পাথা। ১০ ভোমা হেন কড কুলবজী সভী

ত্য়ারে পাইবে দেখা। অভিমানী হৈয়া মোরে না কহিয়া তেজালি আপন সুখে।

আপনার শেল যতনে আপনি ১৫ হানিলি, জাপন বুকে॥

মনের আগুনৈ মরহ পুড়িরা .
নিভাইবে আর কিসে।
শ্যাম জলধর আর না মিলিবে
কহে দ্বিক চণ্ডীদাসে॥ ২

## কলহান্তরিতা।

( রাধিকার উক্তি )

গানশী।
আপিন শির হাম আপিন হাতে কাটিছু

 কাহে করিছু হেন মান।

 ভাম সুনাগর

 কাহা সুধি করক প্রায়ুন ॥

ত্রপ বরত কত করি দিম-যামিনী ৫
থা কার্ছ কো নাহি পায়।
হেম অমূল্য ধন মরু পদে গড়ায়ল
কোপে মুই ঠেলিছ পায়।
আরে সই, কি হবে উপায়।
কহিতে বিদরে হিয়া ছাড়িছু সেহেন পিয়া ১০
অতি ছার মানেরই দায়॥
জনম অবধি মোর এ শেল রহিবে বুকে
এ পরাণ কি কাজ রাখিয়া।
কহে বড়ু চন্তীদাস কি কল ছইবে বল
গোঁড়া কেটে আগে জল দিয়া॥ ১৫

ে। বরত--বত।

.

রাইম্থে শুনল এছন বোল।
স্বীগণ কছে ধনি শুরু উতরোল।
ত্য়া মুখ দরশন পাওল সেহ।
কৈছে আছল কছু সমুঝল এছ।
তুঁহু কাহে এত উৎকৃষ্ঠিত ভেল।
ভোহে হেরি সো আকুল ভৈ গেল।
এছে বিচার কহত যাঁহা রাই।
তুরতহি এক স্থী মিলল তাই।
এ ধনি পছ্মিনী কর অবধান।
তোহারি নির্দ্দে মুঝে ডেজল কান।
চণ্ডীদান কহে বিধুম্থী রাই।
অভিশর বাাকুল ভেল কানাই।

২। নহ উতরোল—উৎক্টিত হইও না। ১। 'পছ্ষিনী — পদ্মিনী।
১০। নিরভে— নিক্টে। ' बासबै

রাইক ঐছন সকরুণ ভাষ।
তানি স্থী আওল কাতুক পাল ॥
কহুইতে সকল সংবাদ।
গদ গদ কহুই বিধাদ ॥
চল চল নাগর রসশিরোমণি।
ভূয়া বিত্ম রাধিকা অধিক ভাপিনী ॥
চণ্ডীদাস কহে বিনোদ রায়।
বাট চল রাইক মাঝ হুদয়॥

2 8 ¢

91

### ( শ্রীকৃষ্ণের উক্তি )

হাত দিয়া দেখ বড়াই মোর কলেবর।
ধান দিলে খৈ হর, বিরহ অনল ।

জিতা খণ্ড খণ্ড হল রাধা রাধা বলি।
তাহার বিচ্ছেদে মোর বুক হৈল সজির আমি মৈলে মরিব বড়াই তার নাহি দার।
রাধা বিনে মোর মনে আন নাহি তার ।
মরিলে পোড়াইও বড়াই বমুনার কুলে।
সে ঘাটে আসিবে রাধা জল আনিবারে॥
মরিবার বেলৈ রাধা লেগ আনিবারে॥
দরনম জনমে বেন মিলার বিধাতা॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদানে বলে রাধহ জীবন॥
দরশন দিরে রাধে রাধহ জীবন॥

50

- 8। निल्—की**प**।
- »। त्रीधन्नाथ—वन्ने क्वांदेख।

**(4)** (4)

**a** i

### • (সধীর উক্তি)

হেদে হে বঁহুরা আসিগা আমি।
পথে আন ছলে দেখা হ'ল ভালে
কি আর বলিবে ভূমি॥
ভাল না হইবে কাজ।
চক্রাবলী ছানে যদি কেহ কহে ৫
শুনিলে পাইবে লাজ॥
সে যে করিবে দারুণ মান।
এ কুল ও কুল ছুকুল যাইবে
পাথারে ভাসিবে খ্যাম॥
ইথে তোমার ভাল না হইবে। ১০
চণ্ডীদাস ভণে রাই যদি শুনে
কুল্লে উঠিতে না দিবে॥

**₹8**₹

**a** 1

আসি সংচরী কহে থীরি থীরি

"শুনর নাগর রায়।

অনেক যতনে ঘুচাইলাম মানে

থরিয়া রাইএর পায়॥

তবে যদি আরু মান থাকে তার

শুনরি আপন দোব।

ডোমার বদন মলিন দেখিলে

ঘুচিয়ে এখনি রোব॥

ভূরিত গসনে এস আমা সনে

গলেতে ধরিরে বাস।"

সোহেন নাগর হইয়া কাতর

দিভাইল রাইরের পাশ॥

রাই কমজিলী হেরি গুণমণি বঁধুয়া লইল কোলে। ত্তঁক জনয়ে আনন্দ বাড়িল দিজ চণ্ডীদাস বলে॥

२६०

थाननी ।

ললিভার বাণী শুনি বিনোদিনী ध्रमञ्जयमदन कंग्र। "আমি ভ কেবল ভোদের অধীন যা বল শুনিতে হয়॥ সখি, ভোরা মোর কর এই হিছে। আর যেন কখন না করে এমন পুছ উহায় ভাল মতে ॥ পুন যদি আর এমভ ব্যাভার कद्रस्य এ खब्र्ण्ट्रम्। উহার প্রণতি **শ্রবণগোচরে** না করিব⁄এ জনমে॥" এত শুনি হরি গলে বাস ধরি কহয়ে কাডর-বাণী। "শুন বিনোদিনি कनरम कनरम আমি আছি প্রেমে ঋণী ॥" এত শুনি গোরী ছু বাহু পসারি বঁধুয়া করিল কোলে। এই মনে হয় **রসাম্ভম**য় **हिंगारित हैश वरन ॥** 

₹88

গানৰ। জিছি মানের লাগি ভাস বঁধুরে হারাইয়াঁ ছিলাম। ভাষৰ স্থান ক্ষিত্ৰ কৈ সংগ্ৰাপুৰ বিভিন্ন কৈ প্ৰাণ্ড কৰি ।

হারা-খন যেন পুনহি মিলল

সদয় হইল বিধি ॥

বিজ্ঞান প্ৰান্ত প্ৰাণ্ড কৰে চণ্ডীদালে এ লাগি আমার

त्रहरे।

मरनरङ উঠয়ে ছখ।

क्रि कि लाक्न व মানের লাগিয়া বঁধুরে হারারে ছিলাম। শ্রামস্থলর রূপ মনোহর দেখিয়ে পরাণ পেলাম। সই, জুড়াইল মোর হিয়া। 🔪 শীতল প্রন শ্রাম অক্সের তাহার পরশ পাইয়া॥ তোরা সখীগণ করহ সিনান व्यानिया यमूना-नीरत । আমার বঁধুর যত অমক্ল সকল যাউক দুরে॥ **শ্রীমধুমঙ্গলে** আনহ সকলে ভুঞাহ পায়স দধি। বঁধুর কল্যাণে प्तर नामा मारन जामादत मनत्र विधि॥ 30 কহে চণ্ডীদাস শুনহ নাগর এমন উচিত নয়। না দেখিলে যুগ শতেক মান্ত্র . ইথে কি প্রাণ রয়॥

রাইয়ের বচন শুনি স্থীগণ আনল বমুনা-বারি। সিনান করিল নাগর স্থন্দর উলসিত ভেল গোরী ॥ ললিভা আসিয়া হাসিয়া হাসিয়া পরাইল পীতবাস-পরিয়া বসন হর্ষিত মন বসিলা রাইক পাল ॥ वारे वित्नापिनी ভেরছ চাহনি হানল বঁধুর চিতে। নাগর স্থন্ধর প্রেমে গর গর অঙ্গ চাহে পরশিতে॥ মনে আছে ভয় মানের সঞ্চয় সাহস নাহিক হয়। . অতি সে **লালসে** না পায় সাহসে দিক চণ্ডীদালে কয়॥

>0

স্বপ্নদৃষ্টে মান।

( ঞ্জীকুষ্ণের উক্তি )

কাৰোম।

হেরয়ে রসিকবর রাইক চরিত।

কি হেতু দেখিরে মান অভি অমুচিত॥
তোমাবিনে নাহি জানি মরমকি বাত।
কেন বা মুলিন মুখ অ্বনত মাখ॥
স্থপনক বাজ নাহি কর পরজীত।
নরনে দেখিলে কর বে হয় উচিত॥
কোন রমনী দেখ রহল ছাপাই।
চন্ডীদাস কহে বঁধুর কোন দোঘ নাই॥

50

50

# নাপিতিনী-বেশে মিলন । शाननी ।

না ভাঙ্গিল মান দেখি চতুর নাগর। বিশাখারে ডাকি কহে বচন উত্তর ॥ শুনহ আমার কথা বিশাখা সুন্দরি। আমারে সাজায়ে দেহ নবীন এক নারী। চূড়া ধড়া ভেয়াগিয়া কাঁচলি পরিল। নাপিতিনী-বেশ ধরি নাগর দাঁড়াইল। জয় রাধে জীরাধে বলি করিল গমন। রাইএর মন্দিরে আসি দিল দরশন॥ कि नागिरत्र धृनात शर् वितानिनी ताहै। এস এস তুয়া পদে বাবক পরাই॥ চরণমুকুরে শ্রাম নিজ মুখ দেখে। যাবকের ধারে ধারে নিজ নাম লেখে॥ সচ্কিতে হয়ে ধনী চরণ পানে চায়। আচন্ধিতে শ্রাম-অঙ্গের গন্ধ কেন পায়॥ ইক্সিতে কহিলা তখন বিশাখা স্থন্দরী। নাপিতানী নহে তোমার নাগর বংশীধারী॥ বার্ছ পদারিয়া নাগর রাই নিল কোলে। आंत्र ना कतिय मान छ्छीमान वरन ॥

নাপিত্তিনী-করে ধরি রাই চক্রমুখী। কেমন নাপিভিনী ভূমি হের এক দেখি। व्यक्तित्र देशम ध्रति शाष्ट्रिया स्टिंग मृद्रः। রমণীর বেশ গেও রসিক গোটরে॥ পড়িল কল্পিড কুচ অম গেও দুরে। मधीश्रा क्षेत्रिक इंडिटिश नागरंत ॥

কি ছার মার্নের লাগি রমণী সাজিল। এত বলি ফুল্মরী বামে কাডাইল ॥ মানজনিত হুখ দুরে পরিছুরি। চণ্ডীদাস বলে দোহার প্রেমের বলিহারি॥ ১০ মান সমাপ্ত।

# আক্ষেপানুরাগ।

নায়ক-সম্বোধনে।

शामनी ।

जामरत रमिश्यू नहेहारम । সেই হৈতে উঠে মোর কামু পরিবাদে॥ এতেক যুবভীগণ আছয়ে গোকুলে। কলত কেবল লেখা মোর সে কপালে ॥ সামী ছায়াতে মারে বারি। তার মাগে কুকথা কয় দারুণ শাশুড়ী॥ ननिनी रमथर्य रहार्थत वालि। শ্রাম নাগরু তোমায় পাড়ে গালি। এ ছুখে পাঁ**कन रेश्न कान**। ভাবিয়া দেখিমু এবে মরণ সে ভাগ। चिक हशीमात्र भूनः कय । পরের বচনে কি আপন পর হয়॥ )। नवेकारम---न**डेक**रसम्। ভাদ্র যাসে নইচজ रित्राहिनाम, ठाँटै जामात्र এरै कनक स्टेब्राहि। ৬। তার আগে-স্থামীর সমুধে।

🎀 পীরিভি কৈল। আনি চাঁদ হাতে দিলা আপনি করিতা মোর বেশ। আঁখির আড় নাহি কর হিয়ার উপরে ধর এবে ভোমা দেখিতে সন্দেশ।

একে হাৰ পরাধীনী जारः कृतकामिनी ( चत्र रेटरङ जानिना विरम्भ। এত পরমাদ প্রাণ তবুত না জানি আন আর কত কহিব বিশেব ॥ ननशे विरयत्र काँठे। বিষমাধা দেয় খোঁটা তাহে তুমি এত নিদারুণ। विक छ्डीमान क्य কিবা তুমি কর ভয় বন্ধু ভোর নহে অক্সণ।

श्राम्य न्या । >->২। পাঠাবর---नममी विरवत्र कांठा বিষ্যাৰা তার বোঁটা ৰীবন হেছু তোষার পীরিতি। বিজ চঙীদাস কয় এখন কি.আর হয় এই ছিল আগেতে উচিতি।

পটমঞ্জয়।

ভোমার প্রেমে বন্দী হৈলাম শুন বিনোদ রায়। ভোমা বিনে মোর চিতে কিছুই না ভার॥ শরুদে স্থপনে আমি তোমার রূপ দেখি। ভরমে ভোষার রূপ ধর্ণীতে লেখি # श्वक्रकनमार्य यपि थाकिरत्र यजित्र। भवनक नाम **अ**नि मत्रवदन्न हिन्ना ॥ **शुन्दक शृतरम् जन जीएम जरत्र कन**। ভাহা নিবারিডে স্থামি হইয়ে বিকল। ি নিশি দিনি ছোমায় বঁধু পাসরিতে নারি। ্চতীদাস কৰে বিয়া রাখ ছির করি ॥

- 8। **जत्र---अर**न।
- ७। भन्नमान-धानकारमः । वन्नवाद्य-जन रत्र।
- ৭। ভবে-ৰবে-পৃঠিভিত্ন।

পীরিডি করিলা যখন নাগর ञ्रू ( भेत ना हिन । ভাসাইরা কালা সোতের সেওলা কাটিলা প্রেমের ডোর॥ মুই ত অবলা অখনা ভদর ৫ ভাল মক্ষ নাহি জানি। বিরুক্তে বসিয়া চিত্ৰেভে লিখিয়া विभाषा (मधारम जानि । পীরিতি মূরতি কোথা ভার স্থিভি विवत्र कर भारत। পীরিভি বলিয়া এ ভিন স্বাধর এত পরমাদ করে। এ ডিন আঁখর পীরিভি বলিয়া **जूरान जानिएन (क**। অমৃভ বলিয়া গরল ভখিমু ১৫ विरयस्ड कांत्रिन रम ॥ নদীর উপরে ্ডাহার উপরে ঢেউ। ভাহার উপরে রসিকের বসভি পীরিতি না জানে কেউ॥ ष्ट्र এक रय চণ্ডীদাস কয় ভবে সে পীরিভি রর। (নতু) খলের পীরিতি ্ভূ বৈর অনল ধিকি ধিকি বেন বর।

७-६। पृतिः भाषात्र (क्षेत्रक्टम वैवित्र) दावित्रा-हिरम, त्रहे थ्यम-क्रम्म अस्म हिन्न कविरम । देनवास रामन লোতের বেণে জুন্ধান্ন অবস্থার চালিত হয়, আমাকেও তেখন সংসারস্রোতে অসহায় অবস্থায় বিক্লেণ করিলে। > 1 (Y--(ĞE |

1 yes

पररे ।

कि माहिनी जान वैधू कि माहिनी जान। অবলার প্রাণ নিডে নাহি ভোমা হেন॥ রাতি কৈছু দিবস, দিবস কৈছু রাতি। বৃঝিতে নারিমু বঁধু ভোমার পীরিতি ॥ ঘর কৈন্দু বাহির, বাহির কৈন্দু ঘর। পর কৈতু জাপনু, জাপন কৈতু পর॥ কোন বিধি সিরজিল সোতের সেঁওলি। এমৰ বাণিত **माहे ভাকে** রাধা বলি॥ वैधू यपि कृषि भारत निमात्रण इछ। মরিব ভোমার আগে দাঁড়াইয়া রও॥ 20 বাশুলী আদেশে দ্বিজ চণ্ডীদাস কয়। পরের লাগিয়া কি আপন পর হয় ॥ ৮। এমত ব্যধিত নাই ডাকি বন্ধু বলি-পাঠান্তর। >>->२। छ्छीमान वर्त्त अहे वाश्वनीकृशाय । এমন পীরিতি আমি না দেখি কোুখায় ॥" পাঠান্তর ।

> २८६ कृष्

ভোমারে ব্রাই বঁধু ভোমারে ব্রাই।
ভাকিরা অধার মোরে হেন জন নাই॥
অকুক্ষণ গৃহে মোরে গঞ্জরে সকলে।
নিচর জানিমু মুই ভবিব গরলে॥
এ ছার পরাণে মোর কিবা আছে অধ। ৫
মোর আগে দাঁড়াও ভোমার দেখি চাঁদমুধ॥
খাইতে সোরান্তি নাই নাই চুটে ভুক।
কে মোর ব্যথিত আছে কারে কব হুধ॥
চণ্ডীদাস কহে রাই ইছা না জুরার।
পরের বোলে কেবা প্রার ছাড়িবারে চায়॥ ১০
৪। নিচর—নিভর।

थरर <u>।</u>

আরে মোর বিনোদ রার !
ভাল হৈল ঘুচাইলে পীরিভের দায় ॥
ভাবিতে গণিতে মোর তমু হৈল কীণ ।
ক্লগৎ ভরি কলম্ব রহিল চিরদিন ।
ভোমা সনে পীরিভি করি কিবা কাক্ল কৈছু । ৫
মমু লাক্লে মিছা কাক্লে দগদগি হৈমু ॥
না জানি অন্তরে মোর কি হৈল ব্যথা ।
একে মরি মনোছ্থে আরে নানা কথা ॥
শারনে অপনে বঁধু সদা করি ভয় ।
কাহার অধীন যেন ভোর প্রেম নয় ॥
১০
ঘারে না মরিয়ে বঁধু মরি মিছা দায় ।
চণ্ডীদাস কহে কার কথায় কিবা যায় ॥

441

.

সকলি আমার দোব হে বন্ধ সকলি আমার দোষ। ना कानिया यपि করেছি পীরিডি কাহারে করিব রোব ॥ স্থার সমুজ সম্মুখে দেখিয়া আইমু আপন সুখে। কে জানে খাইলে গরল হইবে পাইৰ এতেক ছুখে ৷ সো বদি জানিভাম অলপ ইন্সিতে **जरव कि ध्वमम कति**। ৰাভি কুল শীল মজিল সকল वृत्रित्रा वृत्रित्रा मति॥ অনেক আশার দে**খিতে** করয়ে সাধ।

33.

প্রথম পারিতি <sup>শ্</sup>উাইার, নাহিক ১৫ বিভাগের আধের আধা। বাহার লাগির। যে জন মরয়ে সেই যদি করে আনে। চণ্ডীদাস কহে এমনি পীরিতি কররে স্কুজন সনে। ২০

১৩ – ১৬: বেলী আশা করি না। কেবল একবার দেখিতে ইচ্ছা হয়। প্রথমে যেরপ প্রেম দেখাইয়াছিলে, তাহার সিকিও এখন নাই।

7...

#### কামোন।

বঁধু, কহিলে বাসিবে মনে ছখ। যভেক রমণী ধনী বৈঠয়ে জগত মাঝে ना जानि (तथरा जुरा पूथ। লোক মুখে জানিফু লখি আগে না দেখিতু আমারে কুমভি-দিল বিধি। না বুঝিয়া ক্রে কাজ ভার মুণ্ডে পড়ে বাজ তুখ রহে জনম অবধি॥ কেন হেন বেশ ধর পরের পরাণ হর স্ত্রীবধে ভয় নাহি কর। গপন ইন্দু আনিয়া করে কর দর্শাইয়া ১০ এবে কেন এমতি আচর ॥ পীরিভি পরশে যার হিয়া নাহি দর্বয়ে সে কেন পীরিতি করে সাধ। · বিজ চণ্ডীলালে কয় মোর মনে হেন লয় ভাঙ্গিলে গড়িতে পরমাদ ॥ >। शांठांखत--वंधू ना कहिला कतित्व मतन वृथ। त्न कामि (एचरत्र कृता पूर्व ।

ह । निष्—नक्ष कतिया, विद्युष्टमा कतिया।

ভা**টি**রারী।

ভূমি ভ নাগর যেমন ভ্রমর রীত। সামি ভ ছঃখিনী কুলকলম্বিনী হইমু করিয়া প্রীত॥ গঞ্জয়ে আমারে ভোমারে কহিব কত। কহিলে কি যায় বিষম বেদন পরাণ সহিছে যত ॥ পীরিভি বঁধু হে অনেক সাধের कि जानि विष्ठा इयः 5 " विरम्हा इरेटन পরাণে মরিব এমতি সে মনে লয়। পীরিতি বিষ্ম চণ্ডীদাদ কছে শুন বড়ুয়ার বছ। ় পীরিভি বিচে**ছদে** হইলে মরণ এমতি না হউ কেছ। ১৫-১৬। পীরিতি বিশদ र्घश्रव विश्रम এমতি না হও কেত। -- পাঠান্তর।

# আক্ষেপানুরাগ।

मधी-मत्यांधरन ।

তুদ্ধি। ভূদ্ধি।

কানড় কুন্থম যিনি কালিয়া বরণখানি তিলেক নরানে বদি লাগে।
হাড়ায় সকল কাল তেলি কুলভয় লাল
মরিব কালিয়া অমুরাগে॥
সই, আমার বচন যদি রাখ।
ফিরিয়া নয়ান-কোণে না চাহিও ভার পানে
কালিয়া বরণ যার দেখ।

পীরিভি আরভি মনে যে করে কালিয়া সনে কখন ভাহার নহে ভাল। কালিয়া ভূষণ কাল। মনেতে গাঁথিয়া মালা১০ জাগিয়া জপিয়া প্রাণ গেল। নিশি দিশি অমুখণ প্রাণ করে উচাটন বিরহ-আনলে জলে তমু। ছাডিলে ছাডন নয় পরিণামে কিবা হয় কি মোহিনী জানে কালা কামু॥ দারুণ মুরলীস্বর না মানে আপন পর মরমে ভেদিয়া যার থাকে। विक ठखीमारम क्य তমু মন তার নয় যোগিনী হইবে সেই পাকে॥ )-8 · ছাড়িয়া সকল কাজ জাতি কুণ শীল লাজ মরিবে কালিয়া অমুরাগে॥ - পাঠাস্তর। >। জপিয়া জপিয়া প্রাণ গেল---

সজনি লোসই। খানিক দাঁড়াও শ্রামের বাঁশীর কথা কই। শ্রামের বাঁশীটি ছ'পুরে ডাকাতি সরবস হরি নিল। হিয়া দগদগি পরাণ পাগলী কেন বা এমতি কৈল। এমতি বেভার না বুঝি ভাহার পীরিতি তাহার সনে। গোপত করিরা ু কেন না রাখিলে বেকত করিলে কেনে॥ 50 দোষ পরিহরি মো হয় ভাকর দাসী। চণ্ডীদাস ভপে সম্বরহ মনে ় \* কালার সরবস বাঁশী॥

e->৪। এই কর<sup>ে</sup> চরণের পরিবর্তে কোন পন্তকে এইরপ আছে;--

থাইতে গুইতে আন নাহি চিতে विधित कतिन वैभी। সব পরিহরি করিল বাউরী यानरम् (ययन नामी। কুলার করম देशत्रक धत्रभ সরম মরম কাঁদি। চণ্ডীদাস ভণে এই সে কারণে কামুর সরবস বাশী॥ ১২। মোহয়—আমি হই। তাকর—তাহার।

स्रहे।

বিষম বাঁশীর কথা কহনে না যায়। ডাক দিয়া কুলবতী বাহির করয়॥ কেশে ধরি লৈয়া যায় শ্রামের নিকটে। পিয়াসে হরিণ যেন পড়য়ে সঙ্কটে॥ হারে সই, শুনি যবে বাঁশীর নিশান। গৃহ-কাজ ভুলি প্রাণ করে আনচান॥ সতী ভূলে নিজ পতি মুনি ভূলে মৌন। শুনি পুলকিত হয় তরু-লতাগণ॥ কি হবে অবলা জাতি সহজে সরলা। কহে দণ্ডীদাস সব নাটের গুরু কালা॥

६। निर्भान--- निःश्वन-- भक्ष।

धाननी ।

কুঁলের বৈরি कतिल नकल नार्म। মদন কিরাতি ধরিতে আইল দেশে। 1 , cke

🕒 🏸 जहें, जीवन मन 🔭 ग्र वाँनी । পীরিতি আটা . ननमी कांठा ় আনলা হইল বাঁশী॥ বেড়ায় সেজে বৃন্দাবনমাঝে ধরিতে যুবতী জনা। ষমুনার কুলে গাছের তলে ১০ ্বসিয়া করি**ল** থানা॥ থাকি লুকাইয়া এক পাশ হৈয়া দেখে যে বসিল পাখী। भीति भीति याग्र ভার পানে চায় আনলা চালায় দেখি॥ গাছের ডালে বসিয়া ভাগে তাক করে এক দিঠে। জড়াল আটা . লাগায় কাঁটা লাগিল পাখীর পিঠে। পড়িয়া ভূমেতে ধড়ফড়াইতে ২০ কিরাতে ধরিল পাথে। পাখে পাখা দিয়া ' বাঁধিল টানিয়া ঝুলিতে ভরিয়া রাখে। চণ্ডীদাস কয় মহাজন হয় কিনিয়া লয় যে পাখী। পাখা খুলি দেয় পাখা সে ধোয়ায় তবে সে এড়ান দেখি॥ ৭। আনলা-নল। ব্যাধেরা নলের অঞ্চেহটী বা

গানলা—নল। ব্যাধেরানলের অধ্যে হটা বা
 আঠা রাধিয়া তদ্বারা পক্ষী ধরিয়া থাকে।
 ১১। থানা—আভ্রা।

১৭। তাক—লক্ষ্য।

২৬৪ তুদ্ধি।

মুরলীর স্বরে বিষরে গোকুল যুবতীগণে। আকুল হইয়া বাহির হইবে না চাবে কুলের পানে॥ মিলায় শিলা ৫ কি রঙ্গ লীলা গুনিলে সে ধ্বনি কাণে। যমুনা পবন স্থগিত গমন ভূবন মোহিত গানে॥ আনন্দ উদয় শুধু স্থাময় ভেদিয়া অন্তরে টানে। জীয়ে কি অবলা মরমে জালা शनरा मनन वारन ॥ কুলবতী কুল ेकन नित्रभून নিষেধ নাহিক মানে। রাখিও মরমে ১৫ চণ্ডীদাস ভণে কি মোহিনী কালা জানে॥

>-৪। পাঠান্তর ,—

্বুরলীর স্বরে বাধির কি করে

গোকুল আকুল প্রাণে

কালিয়া নাগরে কাল নদী খুঁাহে

বিষ মিশাইলা তানে ॥

৫। মিলায় শিলা--পাবাণ দ্রব হয়।

>>। মরমে--রয়ে রয়ে--পাঠান্তর।

२७० धाननी ।

কালার লাগিয়া হাম হব বনবাসী।
কালা নিলে জাতি-কুল প্রাণ নিলে বাঁশী॥
ভরল বাঁশের বাঁশী নামে বেড়া জাল।
সংসারের স্থাক বাঁশী রাধার হৈল কাল॥
মন মোর আর নাহি লাগে গৃহকাজে।
বাঁশি দিশি কাঁদি আমি হাসি লোকলাজে॥
হাঁ রে স্থি, কি দারুণ বাঁশী।
বাচিয়া বৌবন দিয়া হলু খামের দাসী॥

অস্তুরে সরল বাঁশী বাহিরে প্রবল।
পিবয়ে অধর-স্থা উগারে গরল॥ ১০
যে ঝাড়ের ভরল বাঁশী ভার লাগি পাও।
ভালে মূলে উপাড়িয়া লাগরে ভালাও॥
চণ্ডীদাল বলে বাঁশী আমার কি করে।
আপন করম-দোষ দোষ দিব কারে॥

৪। সংসাবের—সুবার— পাঠান্তর
 ১। অন্তরে অসার বালী বাছিরে সরল— ,,
 ১১। বে না দেশে বালীর ঘর সে না দেশে যাও ,,
 ১৩-১৪। দিক চণ্ডাদাস করে বংশী কি করিবে।
 সকলের মূল কালা তারে না পারিবে।— ,,

266

সান্ধাইল বিষম্বরে বাঁশীর নিঃস্বান কাণে এ অঙ্গ জ্বিয়া গেল মোর। সেচয়ে বা কোন জন কেবা করে প্রাণ দান ্তবে যায় এ ছখের ওর॥ •সই, হিয়া মোর কেন কাঁপে। নয়ানে ঝরয়ে নীর পরাণ না রহে স্থির এই বাঁশীর মধুর আলাপে॥ চকিত হইল শশী মিলাইছে শিলারাজি মোর কাছে নাচিছে আসিয়া। তাতে তার আছে মন ১০ নারীর যৌবন ধন তেঁই পূরে হাসিয়া হাসিয়া॥ কহে দ্বিজ চণ্ডীদাসে শবদ যায় আকাশে মুনীন্দ্র মুরছি পড়ে যাতে। সে ধ্বনি নারীর কাণে হানয়ে মরমস্থানে কেমনে সে ধরিবেক চিতে॥

>। সান্ধাইল-প্রবেশ করিল। ৩। সেচরে-সেচন করে। धामने ।

কালা গরলের জ্বালা আর কি সহে অবলা
তাহে মুই কুলের বৌহারি।

অস্তরে মরমব্যথা কাহারে কহিব কথা
শুপতে গুমরি মরি মরি ॥

সথি হে, বংশী দংশিল মোর কাণে।

ডাকিয়া চেতন হরে পরাণ না রহে ধড়ে

তন্ত্র মন্ত্র কিছুই না মানে।

মুরলী সরল হয়ে বাঁকার মুখেতে রয়ে

শিখিয়াছে বাঁকার স্ভাব।

ভিজ্ঞ চণ্ডীদাসে কয় সঙ্গানোহে কি না হয় ১০
রাভ্যুখে শশী মসী লাভ॥

পাঠান্তর---

>। আর কি সহে অবলা আর তাহে অবলা পাঠান্তর—

৩। কাহারে কহিব কথা না ওনে ধরম-কণা

રંક્ષ્ટ

মরি মরি যাঁই শ্রামের বাঁশীয়া নাগরে।
কুল ছাড়া বাঁশীটি কলঙ্ক হৈল মোরে॥
নিতি নিতি ডাকে বাঁশী রইতে নারি ঘরে।
মরম সন্ধান দিয়ে হৃদেয় বিদরে॥
যদি বা বাজাবে বাঁশী না হও ত্রিজ্জ।
কুলবতীর কুলবন্থ না করিহ জ্জ॥
শাশুড়ী কুরের ধার ননদিনী জালা।
মরমে মরমের ব্যথা নাহি জানে কালা॥
কালা কালা বলিয়া আস্য়ে জ্গং জনে।
চরণে শরণ নিল না বাসিল ভিনে॥
বিকে ভ অবলা জাভি পরের ক্থীন।

নিরমল কুল ছিল তাহে দিয়ু কালি। হাতে হাতে মাথে নিমু কলঙ্কের ডালি॥ ، 8 لا ح

র্বিজ চণ্ডীদাস বলে শুন রীজার ঝি। ১৫ বাঁলীয়া দংশিল ভোমায় আমি করিব কি॥

১০। না বাসিল ভিনে—ভিন্ন মনে করিল না।

265

गरे, পশिन विषय वाँनी। বাহির করিতে যতন করিম্থ মরমে রহিল পশি॥ তেরছ নয়ানে বাণের সন্ধানে না বাজে এমনি নয়। বাজিলে অস্তরে আকুল করয়ে যভনে পরাণ রয়॥ नारि पिया निभि যেমন করিছে এ কথা কহিব কায়। জ্বলিছে দ্বিগুণ ১০ মনের আগুন কে না পরতীত যায়॥ যে মীন থাকয়ে অীধুয়া পুকুরে वांभरत्र शैवत्र कारन। তেন আছি হাম এ ঘর করণে গুরু জনা যত বলে॥ 30 ক্ষুরের উপরে রাধার বস্তি নড়িতে কাটয়ে দেহ। আচার বিচার আমার হুখের এ কথা বুঝিবে কেহ। বণিক জনার করাত যেমন ২০ ত্বদিক কাটিয়া যায়। তেমন আমার গুরু জনা কার্টে ' বিব্দ চণ্ডীদাস কয়॥ ১৪। ভেন-ভেমন।

२ । विषक समात्र-भागविषकः ।

সিম্মুড়া। ডাকিয়া শুধাও না প্রাণ আন চান বাসি। কেবা নাহি করে প্রেম আমি হৈলাম দোষী। গোকুল নগরে কে বাকি নাকরে তারে নাই নিষেধ বাধা। সতী কুলবভী সে সব যুবতী ৫ কামু-কলফিনী রাধা॥ বাহিরে বেড়াতে লোকচরচাতে বিষ মিশাইল ঘরে। জগুৎ হৈল বৈরি পীরিভি পীরিভি করি আপনা বলিব কারে॥ ভোমরা পরাণের মরম ব্যথিত জীবন-মর**ণে সঙ্গ**। অনেক দোষ দোষী হইলে সে কি ছাড়ে আপন অঙ্গ। গোকুল কানাই :৫ भरन्पत्र नन्पन সবাই আপনা বলে। 🕐 সোপুন ইছিয়া লইল নিছিয়া भानन जनम करण । রাধা বলি ডাকি শুধাইতে নাই এখনে এমনে মৈলে। চণ্ডীদাসে বলে সকল পাইবে বঁধুয়া আপন হৈলে॥ >। তোমরা মোরে ভাকিয়া শুধাও না প্রাণ আন-চান বাসি। - পাঠান্তর। । তাৰে কি নিবেধ বাধা---৭। বাহির হইতে লোকচরচায়— ৯। পীরিভি করিয়া <del>অ</del>গতের বৈরি— >>। মরম ব্যথিত ব্যথিত আছিলা— ১৩-১৪। অনেক দোবের দোবিণী হইলে ে ছাড়ে স্বাপন স্বন্ধ।

১৯। রাধা বলি আর ডাকি না ওধাও 💃

415

निष्ण ।

দেখিলে কলন্ধীর মুখ কলন্ধ হইবে।

এ জনার মুখ আর দেখিতে না হবে॥

কিরি হরে যাও নিজ ধরম লইরা।

দেশে দেশে ভরমিব বোগিনী হইরা॥

কাল-মাণিকের মালা গাঁথি নিজ গলে।

কামু-গুণ-যশ কাণে পরিব কুগুলে॥

কামু-অমুরাগ রাঙ্গা বসন পরিব।

কামুর কলঙ্গ-ছাই অঙ্গেতে লেপিব॥

চণ্ডীদাস কহে কেন হইলা উদাস।

মরণের সাখী ষেই সে কি ছাড়ে পাশ॥ ১০

১০। ক্কে-প্রেম যে মরিলেও ছাড়িবে না।

\* 34

ভুড়ি।

আগুনি,স্বালিয়া মরিব পুড়িয়া কত নিবারিব মন। আপনি মরিব গরল জখিব নতুবা লউক শমন॥ महे. जानर जानन हिछा। সীমস্থিনী আনিয়া কেশ বাঁধিয়া जिन्दूद (पर (य मीं था। তমু তেয়াগিয়া সতী ধে হইব माधिव मरनत युष् । আসিবে সংহতি ১০ মরিলে সে পভি আমারে সেবিবে কত। তথনি জানিবে বিরহ-বেদন পরের লাগরে বভ। তাপ সে জানয়ে তাপিত হইলে

় তাপ হয় যে ক্ত।

24

विना द्व द्वन्य ना काटन कर्ण्य पत्रस्त पत्रमी नम् ।

পর দরদের , দরদ ক্লানিবে সেই সে স্থবদ হয়॥

আপনি মরে কি করে পরে ২০

সোদর নহে বা কেনে।

কাহার কারণ কে সহৈ মরণ চণ্ডীদাস বলে মেনে॥

গরল ভিৰিয়ামো পুনি য়রি া—পাঠায়ৢর।

৬। সীমস্তিনী লইয়া কেশ সাঞ্চাইরা - "

৮। সতী---সিদ্ধ

>০। মরিলে পতি থাকিব সংহতি— "
>৬-১৯। বিরহ-বেদন না ফানে আপেন

**पदापद पदानी नद्र**।

ठ•ीमान ७८९ পর দরদের দরদী হইলে হয় ॥-- পাঠান্তর।

**पत्रम**ः (वष्टमा ।

< 10

সিল্পড়া।

সই, কেমনে জীব গো আর।
বুকে থেয়েছি খ্যামের লেল
পিঠে হৈল পার॥
মরু মপু মপু গো স্থি
কালিয়া বাঁশীর গানে।
স্থলম দেখিয়া গীরিভি করিছ এমতি হবে কে খানে।
স্বল্ধ গোকুল হইল আকুল

ভানিয়া বাঁশীর কথা।

খলের সহিতে পীরিভি করিয়া ১০ কি হ'ল-অভারে ব্যথা।

**ূপ্রাণের স**খি গো খব হৈতে নারি বুকে খেলেছি খা। পথ নাহি দেখি আঁখির জলেভে . मूर्च ना वाहितात ता ॥ পীরিভি যভন পীরিভি রভন পীরিভি গলার হার। শ্রাম বঁধুয়ার নিদারুণ বাঁশী পরাণ বধিলে আমার॥ পীরিতি এমন ২০ কে জানে কেমন পীরিতি কৈল সব নাশ। গঞ্জে গুরুজন সেহ স্থখমন কহে দীন চণ্ডীদাস॥ ২ । সেহ সুধ্মন—তাহাতেও মনে সুধ হয়, রুক্ত-क्षत्रक इत्र विश्वा।

शाननी ।

मक्ति, ना कह ७ भव कथा। কালিয়া পীরিভি যার মরমে লাগিয়াছে জনম অবধি তার ব্যথা। কালিন্দীর জল নয়ানে না হেরি বয়ানে না হেরি কালা। আন নাহি জানি क्रिक्त ब्रह्मनी কালা হৈল **ভণ**মালা ॥ ষোগিনী হইব ব্ধুর লাগিয়া কুণ্ডল পরিব কাণে। বিদায় হইয়া ২০ সবার আগে যাইব গহন-বনে॥ গুরু পরিজন वरण क्वान না বাব লোকের পাড়া।

চণ্ডীদাস কছে बाजि-कून नव हाज़ा ॥ ১-৩। পাঠান্তর:---महे, ना कह **७ गर कथा**। কালার পীরিভি যাহার লাগিল জনম হইতে ব্যথা। ৬। তথাপি সে কালা অন্তরে জাগরে-পাঠান্তর। ১:-১১। শুকু গরবিত করিব বিদিত কালা পরিবাদ জানে-**১२। श्वक-- चरत्र। >८। त्रय—भीन।** ক্ষ-প্রেম করিতে হইলে জাতি ক্লশীল সব বিসর্জন দিতে হইবে। "স**র্ব্বর্ণান পরিত।জ্য মামেকং** শরণং বৰ ।"

> राः प्रदेश

কাল জল ঢালিতে কালিয়া পড়ে মনে।
নিরবধি দেখি কালা শয়নে অপনে॥
কাল কেশ এলাইয়া বেশ নাহি করি।
করে কর জুড়িয়া কাজল নাহি পরি॥
আলো সই, মুই শুনিমু নিদান।
বিনাদ বঁধুয়া বিলে না রহে পরাণ॥
মনের মরম-কথা মনে সে রহিল।
ফুটিয়া সে শুাম-শেল বাহির না ভেল॥
চণ্ডীদাস কহে রপ শেলের সমান।
নাহি বাহিরায় শেল দগ্ধে পরাণ॥
১০
৪। কাল জন্ম আমি মুন্নে না পরি।—পাঠান্তর।

416

সই, আর বে কহিব কত। আপনা থাইমু হাড়িতে নারিমু হইতে নারিমু রঙ॥ 50

ঝাপ বে দিয়া ৰলেভে পশিল্প যমুনায় থাকিব মরি। গোঠেতে যাইতে ধেক চরাইতে त्मधात्म तमिश्व इति ॥ এখনি ডখনি বচন ছুখানি পরিমাণ কিছু নয়। কহিতে কহিছে সোনা যে বরিখে त्रांत्कत जूनना नग्न ॥ ধাঙ্গড় চতুর চোর যে টীট সব যে মিছাই কয়। তাহার অধিক দ্বিগুণ চাতুরী টীট ঢক্তেতে কয়॥ এমভি নাগর গুণের সাগর এমতি বচন ভার। করিয়া প্রমাণে এমতি বচৰে কেবা কোথা হৈল পার॥ চণ্ডীদাসে কয় त्कांथी (य**वा इ**य সৈই ত এতেক কয়। আপনা বুঝি মনেতে সম্বরি মনের মনেতে রয়॥

> 111 ভুড়ি।

পাশরিতে চাহি ভারে পাশরা না যায় গো। না দেখি ভাহার রূপ মনে কেন টানে গো॥ পথে চলি বাই यनि চাহি লোকপানে গো। তার কথায় না রয় মন তারে কেন টানে গো॥ খাইতে যদি বসি ভবে খাইতে না পারি গো। ় কেশ পালে চাহিলে নয়ান কেন ঝোরে গো॥ বসন পরিয়া থাকি চাহি বসনপানে গো। সমূখে ভাহার রূপ সদা মনে ঝাপে গো॥

না জানি কি হৈল মোর কোথা আমি যাব 🕬। না জানি ভাষার সঙ্গ কোথা গেলে পাব গো॥ ১০ চণ্ডীদাস কহে মনে নিবারিয়া পাক গো 🖟 সে জনা ভোমার চিভে সদা লাগি আছে গো॥ .

- २। होत्न--- পড পাঠান্তর।
- ৯। ঘরে মোর সাধ নাই—ইত্যাদি

বরাডি।

কানড় কুস্থম করে পরশ না করি ডরে এ বড়ি মরমে বড় ব্যথা। যেখানে সেখানে যাই সকল লোকের ঠাই · কাণাকাণি শুনি এই কথা ৷ मरे, लाक वर्ण कामा-পরিবাদ। কালার ভরমে হাম জলদে না হেরি গো ত্যজিয়াছি কাজরের সাধ। যমূনা-সিনানে যাই আঁখি তুলি নাহি চাই তক্ত্ম কদম্বতলা পানে। বেখানে সেখানে থাকি বাঁশীটি শুনিয়া গো ১০ ছটি হাত দিয়া থাকি কাণে॥ চণ্ডীদাস ইথে কহে সদাই অস্তুরে রছে পাশরিলে না যায় পাশরা। ৰূপিতে ৰূপিতে হরি তমু মন করে চুরি না চিনি যে কালা কিন্তা গোরা॥ ৬। তাহার রসভ্রমে জলদ স্তামের সনে—পাঠান্তর। ১৪। দেখিতে দেখিতে হরে

212

स्रहे ।

नहें, मत्न भात अबे खग्न छेर्छ। খ্যাম বঁধুর পীরিভিখানি ভিলে•পাছে ছুটে॥ গ্রুন ভাঙ্গিতে সই আছে কত ক্বম।
ভাঙ্গিলে গড়িতে পারে সে বড় স্কুলন॥
এমন বঁধুরে মোর যে জন ভাঙ্গাবে।
তথ্যা রাধার বধ ভাষারে লাগিবে॥
চণ্ডীদাস বলে রাধে ভাবিছ জনেক।
ভোমার পীরিভি বিনে না জীবে ভিলেক॥

ू इस्हें।

এই ভয় উঠে মনে এই ভয় উঠে।
না জানি কামুর প্রেম তিলে জনি ছুটে॥
গড়ন জালিজে সই আছে কত খল।
ভালিয়া গড়িতে পারে সে বড় বিরল॥
যথা তথা যাই আমি যত দ্র পাই।
ঠাদ-মুখের মধুর হাসে তিলেক জুড়াই॥
সে হেন বঁধুরে মোর যে জন ভালায়।
হাম নারী অবলার বধ লাগে তায়॥
চণ্ডীদাস কহে রাই ভাবিছ অনেক।
ডোমার পীরিতি বিনে সে জীয়ে তিলেক॥ ১০

...

কামু পরিবাদ মনে ছিল সাধ
সকল করিল বিধি।

কুজন বচনে ছাড়িব কেমনে
সে ছেন শুণের নিধি॥
বঁধুর পীরিতি শেলের ঘার্তি
পহিলে সহিল বুকে।

দেখিতে দেখিতে ব্যথাটি বাড়ল

এ চুখ কঁহির কাকে ॥

করে নিরম্ভর হিয়া পর পর यादा ना स्थित भति। কি শেল সাধাইল হিয়ার ভিতরে বল নাকি বৃদ্ধি করি॥ অন্ত ব্যথা নয় বোধে শোধে যায় হিয়ার মাঝারে পুরা। কুলবজী হৈয়া কুল ভেক্নাগিয়া ১৫ क्यान तरहा**र गे**शा । আমরা অথল समग्र नज्ञ কথায় ভুলিয়া গেন্তু। পীরিভি করিয়া পরের কথায় क्रनम काँ मिया मणू॥ ভ্রমরা বুলে সকল ফুলে কি তার **আপন** পর। **় কান্তুর পীরি**ভি চণ্ডীদাস কৰে কেবল ছুথের ঘর॥ >७। (वार्य भार्य यात्र (वार्य भार्य द्रा --- পাঠান্তর। ১৫-১৬। কোন কুলবতী কেমনে রয়েছে ওয়া। পাঠান্তর।

> २५२ शाम**नी** ।

কাহারে কহিব মনের মরম
কো বাবে পরতীত।
কামুর পীরিতি ঝুরি দিবা রাজি
সদাই চমকে চিত।
সই, ছাড়িতে নারি যে কালা।
কুল ভেরাগিয়া ধরম ছাড়িয়া
লইব কলঙ্কের ডালা।
মাথায় করিয়া দেশে দেশে ফিরে
মাগিয়া খাইব তবে।

কুলের বিচার ১০ সভী চরচার ভবে সে আমার বাবে। কলম্ভে কি ভয় চণ্ডাদাস কয় যে জন পীরিতি করে। পীরিতি লাগিয়া মরমে ঝুরিয়া কি তার আপন পরে। >। निर्व (त, यस्मत (वनना কাছারে কহিব - পাঠান্তর । ভর্ম ছারিত্ব ৫-৭। কুল তেয়াগিল্ সইফু কলক্ষের ভালা। আমারে বল (य क्न (यु रन ছাড়িতে নারিব কালা॥—পাঠান্তর। 🦼 ৮। त्र डांगि याथाव्र कति (मर्ग्य (मर्ग्य किति —পাঠাস্তর।

> ्र २५० धान**ी** ।

আগো সই, কে জানে এমন রীত। খ্যাম বঁধুর সনে পীরি**তি** করিয়া কৈবা যাবে পরভীত॥ খাইতে পীরিতি **শুইতে পী**রিতি পীরিতি স্বপনে দেখি। আকুল হইয়া পীরিভি লহরে পরাণ পীরিতি সাখী॥ পীরিতি অ'াধর জ্ঞপি নিরস্তর এক পণ ভার মূল। শ্রাম বঁধুর সনে পীরিভি করিয়া ১০ নিছিদ দিলাম কুল। চণ্ডীদাস কর অসীম পীরিভি কহিতে কহিব কত।

আদর করিয়া যভেক রাখিয়ে

পীৰিতি পাইবা তত ॥

>4 .

২৮৪ তৃত্তি।

আমার মনের কথা শুন লো সজন।

শ্যাম বঁধু পড়ে মনে দিবস রজনী।

, কিবা গুণে কিবা রূপে মোর মন বাঁধে।

শুখেতে না সরে বাণী ছটি আঁথি কাঁদে।

চিত্তের অনল কত চিতে নিবারিব।

না যায় কঠিন প্রাণ কারে কি বলিব।

চণ্ডাদাস বলে প্রেম কুটিলতা রাত।

কুলধর্ম লোকশজ্জা নাহি মানে চিত।

১৮**६** शानमो ।

জাতি জীবন ধন কালা। ভোমরা আমারে যে বল সে বল কালিয়া গলার মালা॥ সই, ছাড়িতে নারিব ভারে। অন্তর সহিত সে প্রেম জড়িত কে তারে ছাড়িতে পারে॥ যে দিন যেখানে সেই সব লীলা করেন কালিয়া কামু। হৈয়া বহিন্দ সঙ্গের সঙ্গিনী শুনিভাম মৃত্ব বেণু॥ হিয়া পরভীত এত রূপে নহে যাইতাম কদন্ত্বের তলা। চণ্ডীদাস করে এত প্রাণে সতে · বিষম বিষের জ্বালা। । সই ছাড়িতে যদি বল ভারে। পাঠান্তর। . १ । (योकिन दिशास य त्र भी दिखि

লীলা করয়ে কাছু॥~ পাঠান্তর।

২৮৬ সি**স্কুড়া**।

वर्ण वर्णुक भारत भन्न **आरह ये जन**। ় ছাড়িতে নারিব আমি খ্রাম চিকণ ধন॥ সে রূপ-লাবণি মোর হিয়ার লাগি আছে। হিয়া হৈতে পাঁজর কাটি লইয়া যায় পাছে॥ স্থি. এই ভয় মনে বড বাসি। a অচেতন নাহি থাকি জাগি দিবা নিশি॥ অলসে আইসে নিঁদ যদি চুটি আঁথে। শয়ন করিয়া থাকি ভুজ দিয়া কাঁখে। এমন পিয়ারে মোর ছাডিতে লোকে বলে। ভোমরা বলিবে যদি খাইব গরলে ॥ কামু রূপের নিছনি নিছিয়া দিমু কুলে। এভ দিনে বিহি মোরে হৈল অমুকৃলে। পুরুক মনের সাধ ধরম যাউক দূরে। কামু কামু করি প্রাণ দিবানিশি ঝুরে॥ চণ্ডীদাস বলে রাই এমতি চাহ বটে। 50 স্বঘরের পীরিতি হৈলে কভু নাহি টুটে॥

৪। হিয়া হৈতে পাঁজর ধসিয়া যায় পাছে।—পাঠায়য়
१-৮। অলস আইসে নিদ য়িদ আইসে ইবে।
শয়ন করিয়া থাকি ভুজ দিয়া মাথে য়—পাঠায়য়
১৫-১৬। চণ্ডীদাস কহে রাই ভাল ভাবিয়াছ।
য়নের য়য়য়-কথা কারে জানি পুছ॥ পাঠায়য়
য়্বরের স্পলনের।

२৮१ मान शक्तिया।

দূর দূর কলছিনী বলে সব লোকে গো। ॰ ॰ ॰ না জানি কাহার ধন নিলাম আমি গো॥
কারো সনে না কহি কথা থাকি জন্ম করি গো।
তবু ত দারুণ লোকে কহে নানা কথা গো॥

ভার সনে মোর দেখা নাই মিছা কথা রটে গো। দেখা হইলে কইত বদি ভার বেলে সইত গো। মিছা কথা কইরে পরের মন ভারি করে গো। হয় কি না হয় মনে আপনা বৃকি দেখ গো॥ পর কুচ্ছার ধরম মেনে কেমন করে সয় গো। চণ্ডীদাস কয় লোকে মিছে কথা কয় গো॥ ১০

৬। একে নাড়ী কুলের বৈদ্ধী দেখিতে খোরে নারে গো।
— পাঠান্তর।

৯। পরকুচ্ছা অধ্য বিনাকেশন করে রহে পো। —পাঠান্তর

ভূড়ি।

স্থলন কুজন যে জন না জানে ভাহারে বলিব কি। বে জন জানয়ে অন্তর-বেদনা পরাণ কাটিয়া দি॥ সই, কহিতে বাসি যে ডর। যাহার লাগিয়া সব ভেয়াগিত্ সে কেনে বাসয়ে পর ॥ \* কামুর পীরিভি বলিতে বলিতে পাঁজর ফাটিয়া উঠে। শঙ্খ-বণিকের আসিতে যাইতে কাটে॥ যেন বিশ্ব ভরি সোনার গাগরী शृह्यराज जित्रा मूथ । বিচার করিয়া যে জন না খায় পরিণামে পায় ছখ ॥ 50 **ठ**खीमारम क्य শুনহ সুন্দরি এ কথা বৃঝিবে পাছে। শ্বাম বঁধু সনে পীরিভি করিয়া কেবা কোথা ভাল আছে।

>৭। পাছে--পশ্চাতে, ইহার পরে। •

শিশ্বভা।

পিয়ার পীরিতি লাগি যোগিনী হইমু। তবু ত দারুণ চিতে সোয়ান্তি না পামু॥ কি হৈল কলন্ধ-রব শুনি যথা তথা। কেন বা পীরিতি কৈমু খামু আপন মাথা।। ना वन ना वन महे (म कासूत छन। হাতের কালি গালৈ দিল মাথে কালি চুণ॥ আর না করিব পাপ-পীরিভের লেহা। পোড। কড়ি সমান করিত্ব নিজ্ঞ দেহা॥ বিধিরে কি দিব দোষ করম আপনা। সুজনে করিমু প্রেম হইল কুজনা॥ ٥, ۲ চণ্ডীদাসে করে তুমি না কর ভাবনা। স্থজনে স্থলন মিলে কুজনে কুজনা॥ शास्त्र कानि भारन मिनाम माधिनाम চুণ।-- পাঠাखत

ভুড়ি।

এক জালা ঘরে হৈল আর জালা কাতু। জালাতে জ্বলিল দে সারা হইল তমু॥ কোথাকারে যাব সই কি হবে উপায়। গর**স সমান লাগে বচন হিয়া**য়॥ কাহারে কহিব আমি কে জানে প্রভীত। মরণ অধিক ভেল কাতুর পীরিত। জারিলেক তমু মন কি করে ঔষধে। জগং ভরিল এই কাুসু-পরিবাদে। লোকমাঝে ঠাই নাই অপবশ দেশে। वाक्रमी-वारमस्य करह विक हशीमारम ॥ >। এক আলা গুরুলন ইত্যাদি--পাঠান্তর। २। (म-व्याप।

>>> 1

সিশ্বড়া।

এ দেশে বসভি নাই যাব কোন দেশে। যার লাগি প্রাণ কাঁদে তারে পাব ।কদে॥ 1 বল না উপায় সই বল না উপায়। জনম হইতে তুখ রহল হিয়ায়॥ खिका देकल (पर And नमही-वहरन। কত বা সহিব জালা এ পাপ-পরাণে॥ বিষ খাইলে দেহ যাইবে রব রহিবে দেশে। বাশুলী-আদেশে করে কবি চণ্ডীদাসে।

শিক্ষ্ডা।

সই, এ কি সহে পরাণে। কি বোল বলিয়া গেল ননদিনী শুনিলে আপন কাণে॥ পরের কথায় এত কথা কছে ইহাতে কহিব কি। ভুবন ভরিল কামু-পরিবাদে বুথায় জীবনে জী। কামুরে পাইত এ সৰ কহিত ভবে বা সে বোলে ভাল। বাদিনী হটয়া মিছা পরিবাদে জর জর প্রাণ হৈল। কে আছে বুঝায়ে শ্রামেরে কহিয়ে এ ছুখে করিবে পার। ধৈয়া ধরি রহ চণ্ডীদাস কহ কে কিবা করিবে কার॥

৮। •বদি কামুকে আমি পাইতাম, তবে এ কণা বলিলে অন্তায় হইত না।

२३७

(वीवन मॅमिटन পর পুরুষে আশা না পুরয়ে ভায়। বিছুরিলে বুতি আপন রতন দ্বিগুণ সুথ সে পায়। সই, বিধি করিল এমত রীভি। কুলবতী হইয়া পতি ভেয়াগিয়া পরপতি সনে প্রীতি॥ প্ৰিলে স্থিল এবে সে জানিল তুকুল ভাসিল জলে। পীরিতি করাভিয়া শিরে চড়াইয়া > 0 कूल इंटे कांत्र किरल ॥ ए पिरक जानिन উড়ু ডুবু দিতে কিনারা নহিল দেখি: চোরে চুরি করে মহাজনের ঘরে পড়শী দেয় মাসিয়া সাখী॥ 30 ভ**লাদ** করিয়া বেড়ায় ফিরিয়া ध्रात्तत्र ना भाग्न (लगा মনেতে বুঝিয়ে মরমে ঝুরিয়ে তাহারি কপালে দোষ॥ এমন ডাকাতি বঁধুব পীরিতি हित निम भात मन। আপন পর विভूतन मन ত্যজিল গৃহ গুরুজন। বাশুলী-কুপায় চণ্ডীদাস হিয়ায় দোসর খোবিক জনা। • সকলি পাইবে 🌎 কুলে সে রহিবে 👝 🔑 व्यक्तिकरन नक्तनकना॥

ূ-৪। ত্রী যদি আপন স্বামীকে ভূলিয়া যায়, তবে

কি ভাহার সুধ হয় ? • ় ,

পড়নী সকল এবে সে জানিল इक्न क्षात्रिन करन । পীরিতি করিতে ব্দাসিবে বটাই इरे कून कांक रूल ॥ হু দিকে ভাসিতে উঠু ডুবু করিতে কিনারা হইল দেখি। ১৮-১৯। মনেতে বুঝিরা শেশিকু ভাবিয়া ভাহা র কপাল-দোৰ।। পাঠান্তর। যে দূৰিল সৰ-পাঠান্তর। আপন পর ২৪-২৭। রাখ চিহ্ন পায় চণ্ডীদাস-হিন্নার (नामत्र (शांविकक क्रमा। সকলি পাইবে কুশলে রহিবে আসিবে নন্দ-নন্দনা॥ পাঠান্তর।

৮-১৩। পাঠান্তর---

₹ ≈ 8

সিমুড়া।

আমার ,ধঁধুরে গোকুল নগরে সবাই আপনা বাসে। হাম অভাগিনী আপন বলিলে **माक्रम (माक्रिक शास्त्र ॥** नरे, कि कानि कि रेश्न भारत। আপনা বলিয়া পুকুল চাহিয়া না দেখি দোসর পরে। কুলের ক্লামিনী হাম একাকিনী নহিল দোলর জনা। तिक मांगत , शुक्र समा देवति এ বড় **মুরখপণা** ॥ ৰিধিয় বিধান এমন করণ वृत्तियु कत्रमाता । আগেতে বুৰিয়া না কৈছ ছবিয়া करव विक विश्वीमारम ॥ 20

श्रक्रममा देववि ০-১১। বুলিয়া নাগরী ্এ বড়ি মুরখ জনা॥ --পাঠান্তর। >२->¢। . दिशित विशान এমন করল वृत्तिक कत्रमरमारवः ন্দাপে পাছে বুঝি না কৈলে সম্বি কতে বিজ চণ্ডীদাসে॥ - পাঠান্তর।

গান্ধার।

পীরিভি লাগিয়া আমি সব ভেয়াগিমু। তবু ভ শ্রামের সনে গোঙাভে নারিমু॥ विधित्त कि मिर्व प्लाय जाशन क्रवम। কি ক্ষণে করিয়ু প্রেম না জানি মরম। ঘরে ঘরে চাতরে কুলটা হল খ্যাতি। কামু সনে প্রেম করি না পোহাল রাতি ॥ চল চল আলো সই ওঝার বাড়ী যাই। কালকুট'বিষ আনি হাতে তুলি খাই ॥ পীরিতে মরিতে লাগি যেবা করে আশ। পীরিতি লাগিয়া মরে বিজ চণ্ডীদাস।

- ৫। চাভরে-বাহিরে -পাঠান্তর।
- १। जाला नहे-जात पिथि যাই--বাও
- b | 418--- 18---
- ১। মরিভে -মরভে---

প্টম্পরী।

নিখাস ছাজিতে না দেয় খরের গৃহিণী। वाहित्व वाजारम श्रीष्ट शास्त्र ननिमनी ॥

শুন শুন প্রাণপ্রিয় সই 🗓 তুমি সে আমার হও তেঁই তোমায় কই ॥ বিনি ছলে ছার দেশে সদাই ধরে চুরি: হেন মনে করে জলে প্রবেশিয়া মরি॥ সতী সাধে দাঁড়াই যাদ স্থাগণ সঙ্গে। পুলকে পুরয়ে তমু শ্যাম-পরসঙ্গে॥ পুলক ঢাকিতে নানা করি পরকার। নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার॥ পোড়া লোকে না জানে পীরিভি বলে কারে। कृमि यमि वन महे ममाधिया घटत ॥ চণ্ডীদাস বলে শুন আমার যুক্তি। অধিক যাতনা যার ছিঞ্প পীরিতি॥

- ৫। চুরি⊹চুলি পাঠান্তর।
- ঃ। পরকার প্রকার।
- >२। जूमि यनि वन नमाशान (नहे चरत -- भाठा छत्।
- ১৪। অতিক জীল। যার তার অধিক পীরিতি ---

পাঠান্তর।

निकुष्।।

ভাহারে বুঝাই সই পেলে ভার লাগি। ননদী বচনে যেন বুকে উঠে আগি॥ কাহারে না কহি কথা রহি ছখে ভাসি। ননদী বিগুণ বাদী এ পোড়া পড়শী। কাহারে কহিব দ্বখ যাব আমি কোথা। কার সনে কহিব কালা কামু-রসের কথা # যত দূর যার মন তত দূরে যাব। 🏲 দীরিভি পরাণভাগী কোথা গেলে পাব ॥ ভাহারে কহিব ছুধ বিনয় করিয়া। চণ্ডাদাস কৰে তবে জুড়াইবে হিয়া॥

20

महे, कि यात्र जीवत्न मार। তৃকুল ভরিয়া কুল ও কুল বাড়াইলা পরমাদ। गरश्च मिवाबां डि भाराष्ट्री ननमी ভাহা বা সহিব কভ। পাড়ার পড়শী ইঙ্গিড আকারে কুবচন বলে যত। এত কিনা সয় অবলা-পরাণে শুন গো পরাণ-সই। মনের বেদনা যতেক যাতনা আপন বলিয়া কই॥ এ ঘর করণ কুলের ধরম ভরম সরম গেল। कनिक्रनी विन জগৎ ভরিল निन्छत्र मत्रग (खन ॥ চণ্ডীদাস বলে শুন শুন রাধা সে শ্রাম ভোমার বটে। কি করিতে পারে গুরু তুরুজনা

>৩। ভরম সন্তম, মান। >৮। ত্রুজনা—ত্র্জন। ১৯। বাটে—পথে।

.

কানু সে রয়েছে বাটে॥

কান্থ সে জীবন জাভি প্রাণ ধন এ ছটি আঁখির ভারা। পরাণ-অধিক হিরার পুঙ্গি নিমিধে নিমিধে হারা॥

ভোরা কুলবভী ভল নিলপতি यात्र भटन (यवा नम्र। ভাবিয়া দেখিলাম শ্যাম বঁধু বিদে আর কেছ মোর নয়॥ কি আর ব্কাও थ्यम क्यम মন সভস্তর নয়। ٥ 🕻 কুলবজী হৈয়া পীরিভি আরভি আর কার জানি হয়। লিখন আছিল যে মোর করমে 1 বিহি ঘটায়ল মোরে। দেখিদে কুমভি ভোমরা কুলবভী 10 কুল লইয়া থাক ঘরে॥ গুরু চুরজন বলে কুবচন সে মোর চন্দন চুয়া। শ্রাম অমুরাগে এ তমু বেচিমু তিল তুলসী দিয়া॥ Ş٥ পড়শী হুৰ্জ্বন না যাব সে লোকপাড়া।" চণ্ডীদাস কয় কামুর পীরিভি ভাতি কুল শীল ছাড়া।

৩। পাঠান্তর---

হিরার মাঝারে পরাণপুতলি
১৩-১৬। পাঠাস্তর—
বে মোর করম কপালে আছিলা
\* বিধি মিলাওল তার।
তোরা কুলবতী ভল নিল পতি
ধাক বরে কুল লই॥

২১২৪। পাঠান্তর— "

শুকু চুকুজন বলে কুবচন

না বাব সে লোকপাড়া।

জানদাস কয় কাছুর পীরিতি

লাতি কুল শীল ছাড়া॥

ভাতি কল শীল ছাড়া—ক্ষেত্র সাল প্রেড করি

কাতি কুল শীল ছাড়া— কুফের সজে প্রের কবিলে । কাতি কুল শীল সব ত্যাগ কলিতে হইবে। '় शक्ती।

কে আছে বৃষিয়া বলিবে স্থাৰীয়া আমার পিয়ার পালে। গোপত পীরিতি না করে বেকতি শুনিয়া লোকেতে হাসে॥ গোপত বলিয়া কেন বা বলিলে এমত করিলে কেনে। না বুঝি ভাহার এমছ ব্যাভার পীরিভি যাহার সনে। সই, এমতি কেনে বা হল। পরের নারী মন যে হরি निम्ह्य ছाष्ट्रिया (शम ॥ আমি অভাগিনী **पिवम तक्रमी** সোঙরি সোঙরি মরি। কুলের কলঙ্ক হইল সালয় ্, ভবু যে না পানু হরি॥ 26 পুরুষ পরশ হইল তুরস বিছুরি আপন মতি। না পাই সোয়ান্তি জনম অবধি कांषिया मित (य निष्णि॥ চণ্ডীদাসে কয় স্থল যে হয় এমতি না করে সে। ভাহার পীরিভি পাষাণে লেখভি मूहिरलेख नाहि चुरह ॥

>8। नानक--- व्यनकार्ते।

> । ৰভি--ৰাভি ----পাঠান্তর।

২২। পাৰাণে লেখভি--পাৰাণে খেয়াভি--পাঠান্তর।

4.5 शामनी ।

সই, কেমনে ধরিব ছিলা। আমার বঁধুয়া স্থান বাড়ী যায় । আমার আঙ্গিনা দিয়া ॥ সে বঁধু কালিয়া না চায় ফিরিয়া এমভি করিল কে। আমার অন্তর रयमन कतिरह তেমভি হউক সে॥ যাহার লাগিয়া সব ভেয়াগিত্ব লোক অপষশ কয়। সেই গুণনিধি ছাড়িয়া পীরিভি আর জানি কার হয়॥ আপনা আপনি মন বুঝাইডে পরতীত নাহি হয়। পরের পরাণ হরণ করিলে কাহার পরাণে সয়॥ 50 ষুবজী হইয়া শ্রাম ভাঙ্গাইয়া <sup>‡</sup> এমতি করিল কে। আমার পরাণ যেমতি করিছে সেমতি হউক সে॥ करह हजीमाम করহ বিখাস যে শুনি উত্তম মুখে। কেবা কোথা ভাল আছয়ে সুন্দরি **षिया श्रम्यान कृत्थ**॥

गोषात ।

॰ দেখিব যে দিনে আপন নয়ানে ' কহিতে ভা সনে কথা। বেশ দুর করিব ভালিব,আপৰ মাথা ॥

় সই, কেমনে ধরিব হিয়া। এ্মত সাধের বঁধুয়া আমার (मिथित्न ना हाम्र कित्रिया। সে হেন কালিয়া যা বিনেক হিয়া এমতি করিল কে। कपि भीपि আমার ধেমতি ভেমতি পুড়ক সে। কৰে চণ্ডীদাস কেন কর ত্রাস সে ধন তোমারি বটে। ভার মুখে ছাই **मिया (म कानावें** আসিবে ভোমা নিকটে॥ >6

भौति (ক্রিক্রি) কট পাওয়। আমার মনে
বয়প কট হইতেছে, সেইয়প নে পুড়ুক।

शाननी ।

गरे, ভাহারে বলিব कि। এমতি করিয়া শপথি করিলে বৃথায় জীবন জী॥ थत्रम शर्प ভয় না মানে এমন ডাকাতি সেহ। বুঝিলাম মনে ডাকাভিয়া সনে সুচিল ভাল যে দেহ ॥ বিনি যে পরখি রূপ যে দর্খি ভূলিত্ব পরের বোলে। পারিভি করিয়া কলত্ব হইল **पृतियू ज्ञाशं करन** ॥ গুরুর গঞ্চন সহি সদাতন ना जानि किरंत्रत बर्ण। শ্মিয়া হইয়া

এমতি বুবিলাম লেখে #

26

আগে যদি জানিত্ঁ সভর্কে থাকিত্

এমত না করিত্ মনে।

সে হেন পীরিতি হবে বিপরীতি

কে জানে এমন মনে ॥

চণ্ডীদাস কহে ধৈষ্য ধরি রহ ২০

কাহারে না কহ কথা।

কথা যে কহিবে যথা লেভি

দর্শি —পরীকা করিয়া — দর্শি — দেখিয়া।

২২। সহি সদাতন — সহিদ অমন — পাঠান্তর।

সদাতন — সর্বদাই।

২০। না জানিত্ব সেই রসে — পাঠান্তর।

রথায় হইবে

इषाचे मरभव राषा--- পাঠाखन ।

uta**a** 

२२-२७। कथा (य कहिर्द

পাঁরিভি পদার (पश्चिर्य क्रश्यम् । যভেক নাগরী কুলের কুমারী কলম্বী আমারে কয়॥ मि, कानि कि श्रेट स्थात । সে খ্রাম নাগর গুণের সাগর কেমনে বাসিব পর ॥ সে গুণ সোঙারিতে, যাহা করে চিতে তাহা বা বলিব কড। গুরুজনা কুলে ডুবাইরা মূলে ভাহাতে হইব রভ 🛚 थाकिल त्व (मत्म ক্হিতে না পারি কথা।

10

10

वारवामा स्वारक अवक दमन स्वारक ता जात विश्वन यांचा । কছে চণ্ডীয়াম বাণ্ডলীর পাশ এমন বৃদ্ধি হয় মনোরীত। পীরিভি করয় यात्र जटन क्ये কহিলে সে হয় পরতীত।

সই, সরম কহিয়ে তোকে। পীরিভি বলিয়া এ ভিন আঁখর কভু না আনিব মুখে। পীৰিভি-মৃর্ভি কভুনা হেরিব ' এ ছটি নয়ান-কোণে। পীরিভি বলিয়া নাম ওনাইতে मृषिया त्रहिव कारण ॥ শীরিভি নগরে বসভি ড্যঙ্গিয়া भाकिव शहनवरन। পীরিভি বলিয়া এ তিন আঁখর दिन ना পড़रा मति । শীরিভি-পাবৰ পরশ করিয়া পুঞ্ছি এ নিশি দিবা। गातिक विस्कृत সহনে না যায় करर हजीमान किया।

চ্ছু দা হেরিব

পীরিভি বলিয়া নাম শুনাইডে 🖸 मुनिया बहिय कारन ह স্থি, আর কি বলিব ভোরে। পীরিতি বলিয়া এ তিন আখন এত ছখ দিল মোরে॥ পীরিতি আরতি কভু না করিব भंद्रान अर्थान मान । পীরিভি নগরের বসভি ভ্যক্তিয়া त्रहिव शहनवरम ॥ পীরিতি পবন পরশ লাগিয়া ভেজিব নিকুঞ্বাস। পীরিতি বেয়াধি ছাড়িলে না ছাড়ে ভালে জানে চণ্ডীদাস॥ 50

ও সই, আর বলিং যোরে। পীরিভি বলিয়া বলিতে নয়ান ঝুরে ॥—পাঠান্তর। ৮। কছুনা শরিব ১২। পীরিতি অবশ

শুন সহচরি না কর চাতুরী महत्व (पर উखन्। কামুর শীরিতি কি লাভি সুরতি কোঁথার তাহার ঘর॥ **চলে कि वाहरन हिंक क्वांन् हारन** সৈভগণ কেবা সঙ্গে। কোন্ অন্ত ধরে **क्यात धारात्म जान ।** ना नव ভारात्र वा।

·मग्राम खेवरण বচনে ভাজিব সোঙরি ভাহার পা॥ স্থী কহে সার দেখি নিরাকার স্থরূপ কছিবে কে। অমুরাগ-ছরি বৈসে মনোপরি ভাতির বাহির সে॥ মন ভার বাহন वक्क महन ভাবগণ ভার সঙ্গী। মুজন পাইলে না দেয় ছাডিয়ে শীরিতি অন্তত রঙ্গী। २० কহে চণ্ডীদাসে বাশুলী-আদেশে ছাড়িতে কি কর আশ। পীরিভি-নগরে বসতি করেছ পরেছ পীরিভি-বাস॥

शाननी ।

শুন শুন সই কহি ভোরে।
পীরিতি করিয়া কি হৈল মোরে॥
শীরিতি-পাবক কে জানে এত।
সদাই পুড়িছে সহিব কত॥
শীরিতি ছরস্ত কে জানে ভাল।
ভাবিতে পাঁজর হইল কাল॥
ভাবিতে পাঁজর হইল কাল॥
ভাবিতে বহে নয়ানে নীর।
নিলাজ পরাণে না বাঁধে থির॥
দোসর ধাতা শীরিতি হইল।
সেই বিধ্ মোরে এতেক কৈল॥
১৩ীদাস কহে সে ভাল বিধি।
এই অমুরাগে সকল সিধি॥

লাসর বাতা ইত্যাদি,—দীরিভি বিভীন বিধা ভার ব্যার আবার ভাগ্য নির্দিষ্ট করিভেত্তে।
 ১২-৮ নিবি—নিদ্ধি।

**प्रमध्ये**।

कि वृत्क शक्ति वासा। म (मर्ग वाहें व स्व स्मर्म भा स्व পাপ গীরিভির কথা। गरे, क दल शैतिष्ठि छान। হাসিতে হাসিতে পীরিভি করিয়া काँपिट जनम शान ॥ कुनवजी देशस কুলে দাড়াইয়ে যে ধনী পীরিভি করে। তৃবের অনল বেন সাঞ্চাইরা এমতি পুড়িয়া মরে॥ হাম অভাগিনী এ ছবে ছবিনী (धारम इन इन वांथि। **ठखीमांग क**ट्ट বেমতি হইল পরাণ সংশব দেখি ॥

সিমুড়া।

এ দেশে না রব সই দ্রদেশে বাব।
এ পাপ পীরিভের কথা শুনিতে না পাব॥
না দেখিব নরনে পীরিভি করে বে।
এমভি বিবম চিভা জালি দিবে সে॥
পীরিভি আঁথর ভিন না দেখি নরানে।
বে করে ভাছারে জার না দেখি বয়ানে॥
পীরিভি বিবম দারে ঠেকিয়াছি আমি।
চণ্ডীদাস কহে রামি ইহার শুরু ভূমি॥

৮। বিশ্ব চতীয়ান কৰে ইয়ার ওক্ত ছুব্নি...পাঠান্তর।

20

٠.,

স্থাৰ লাগিয়া এ বর বাঁধিত্ব আগুনে পুড়িয়া গেল। অমিয়া-সাগরে সিনান করিভে সকলি গরল ভেল ॥ স্থি, কি মোর কপালে লেখি। শীতল বলিয়া ও চাঁদ সেবিফু ভাতুর কিরণ দেখি॥ উচল বলিয়া অচলে চড়িন্তু পড়িত্ব অগাধ জলে। লছমি চাহিতে দারিজ্য বেড়ল মাণিক ৰারাভ হেলে॥ নগর বসালেম সাগর বাঁধিলাম মাণিক পাবার আদে : সাগর শুকাল মাণিক লুকাল <del>অভাগীর করম-দোবে।।</del> পিয়ান, লাগিয়া জলদ সেবিসু বজর পড়িয়া গেল। কহে চণ্ডীদাস শ্রামের পীরিভি

নিচল ছাড়িয়া উচলে উঠিতে...পাঠান্তর।

>>। (>) পিরাণ লাগিরা জলদ দেবিছ

পাইছ বজর-তাপে।

জানখাস করে পীরিতি করিরা

পাছে কর অসূতাপে।

(২) জানখাস করে কাছুর শীরিতি

वद्भ व्यक्ति त्वेत... शांत्रास्त्र ।

मद्राम द्रश्न (नन ॥

कि देश मन्तर পীরিভি হইল কাল। অস্তর বাহিরে পশিয়া রহিল কেমতে হইবে ভাল। সই, বল না উপায় মোরে। গঞ্চনা সহিতে নারি আর চিত্তে মরম কহিন্দু তোরে। ननमी-वहरन স্বলিছে পরাণে আপাদমস্তক চুল। কলম্বের ডালি মাথায় করিয়া পাথারে ভাসাব কুল। ভাসিয়ে যায় चूट रम मात्र না বলে ছাড়য়ে লোকে। চণ্ডীদাস কয় না করিত ভয় কি করিবে অধম লোকে। 🥞 30 ১৩। এ বেলি এ ছার লোক...পাঠান্তর। : ८। छ्लीमान करह এমতি হইলে মরিব তাহার শোকে॥ - পাঠান্তর।

> ०)० पुरुषे ।

পাপ পরাণে কড সহিবেক আলা।
শিশুকালে মরি গেলে হইত বে ভালা ॥
আলা জঞ্চাল সই তবে সে পরিহরি।
ছেমন করিয়া দেও শীরিতের ভূরি ॥
তেমতি নহিলে বার এমতি ব্যাভার।
কলম্ব-কলনী লৈয়া ভালিব পাধার ॥

চণ্ডীদাস কৰে এই বাশুলীকুপার। শীরিভি লাগিয়া কেন ভাসিবে দরিয়ায়॥ ৪। ভুরি—রক্ষু।

.

শুন গোমরম সই।

জনম হইল যখন আমার नग्रन मूमिया बरे। দিতে ক্ষীর সর জননী আমার नश्रन भूषिक (पश्रि। জননী আমার করে হাহাকার कश्नि नकरन छाकि॥ শুনি সেই কথা জননী যশোদা বঁধুরে লইয়া কোরে। আমারে দেখিতে ় আইল তুরিতে সৃতিকা-মন্দির ঘরে॥ দেখিয়া জননী কহিছেন বাণী এই কি ছিল কপালে। করিয়া সাধনা পেলাম অন্ধ কন্তা বিধি এত ছখ দিলে॥ :0 উঠ উঠ বলি করে ধরি তুলি বসান যতন করে। হেনই সময়ে মায়ে ভেয়াগিয়ে वैधू পরশিল মোরে॥ পায়ে দিভে হাড মোর প্রাণনাথ অস্তুরে বাড়ল সুধ। হাসিরা কাঁদিরা আঁথি প্রকাশিরা কুচিল অন্ধ বাড়িল আনিদ जननी यर्गामात्र मरम्। ₹\$ আমার কল্যাণে আনন্দিভমনে
করিল বিবিধ লামে ॥

স্কল বে জন আনে সেই জন
কুজন নাহিক জানে।

অনুরাগে মন সুদাই মগন ৩০
বিজ চণ্ডীদাস ভণে॥

•>4

আপনা আপনি দিবস রজনী ভাবিয়ে কভেক হুব। যদি পাখা পাই পাখী হয়ে যাই না দেখাই এ পাপ-মুখ ॥ **नरे, विधि मिन भारत ल्यां ।** পীরিতি করিয়া আশা না পুরল कनक शावित्र लात्क ॥ হাম অভাগিনী ভাতে একাকিনী নহিশ দোসর জনা। . অভাগিয়া লোকে যভ বলে মোকে ১০ ভাহাও না যায় শোনা যদি বিধি শুনিত মরণ হইত ঘুচিত সকল দুখ। চণ্ডীদালে কর এমডি হইলে শীরিভির কিবা সুধ।

१। विवि—काङ्... शांठांचत्र ।

•>•

পরের অধীনী খুচিবে কখনি এমডি করিবে ধাড়া।

व्यक्ति चरत्र घरत (शाक्न नगरत मा अनि श्रीविकिक्श। 🧓 সই, যে বল সে বল মোরে। শপ্থি করিরা বলি দাড়াইয়া না রব এ পাপ-ঘরে॥ 色夢育 り替う মেঘের গর্জন ৰুভ বা সহিব প্ৰাণে। বর যে ভেজিয়া ' যাইব চলিয়া ১০ রহিব গহনবনে। বনে যে থাকিব শুনিভে না পাব এ পাপ জনার কথা। গঞ্চনা খুচিবে **হিয়া জু**ড়াইবে অস্তরের যাইবে ব্যথা॥ 30 স্বতন্ত্রী হয় চণ্ডীদাস কয় ভবে সে এমন বটে। সে সর কহিলে করিতে পারিলে ় ভবে সে তাপ বে ছুটে॥ >। अधानी-- त्रमणी · পाठाखत । > । चृहिरव मत्नव वाषा... " ১**>**৷ তাপ – পাপ ··

यश्रहे ।

· **না জানে শী**রিভি যারা নাহি পায় ভাপ। পরবশ পীরিভি অ'থার ঘরে সাপ। गरे, नीविष्ठि वष्टरे विवय। . ना शाहे मत्रमी बना कहि (य प्रत्रम ॥ शृंदर शक्तमक्षम कृष्ठनव्यामा । क्छ वा महिरव हुन भन्नामीन वाणा ।

नीतिष्ठि-त्वत्राधि यपि जल्लस्त नामादेण।.. ঔবধ খাইতে ভবে পরাণ জারি গেল।। চণ্ডীদাস কহে প্রেম বড়ই বিষম। जोग्रटस्य मद्रग करत मर्छक **ममन** ॥ >। নাহি জানি নাহি গুনি তারা পায় তাপ.. शाशिक्ष । २। भन्नवण---भन्न (म .. ... ৮। धेरद बाहेरछ छर्द भून खदि (गन... >०। यत्री--- ध्यन...

यायने ।

দৈব যুক্তি বিশেষ গডি যাহারে লাগয়ে ভায়। করিয়া যভনে আন আন জনে প্রেমেতে গড়ায়ে দেয়। সই, এমন কামুর রূসে। विरम्भ ना श्रव (भारत ॥ ভাহা না হইল ষেই মনে ছিল সোভরি পরাণ কাঁদে। লেহ দাবানলে মন যেন আলে ১০ रितिगी পिएन काँदि ॥ পথ নাহি পায় পলাইভে চার দেখি যে অনলময়। इष्ट्य है करत वरनंत्र मांबादत কড বা পরাণে সয়॥ ১ ১৫ বাহিরে আসিয়া বাণ বে খাইয়া পশিতে ভাহাতে পুনঃ। भन्नीतु विवन গরুল আনলে

শাসাইতে নারে বেন 🛚 🗷

করিবর আদি না পায় সমাধি ২০ করিয়া চীৎকার করে। একে কুলনারী ফুকারিতে নারি ' ननमी व्याष्ट्रिय घटत ॥ র্এমতি আকার পীরিতি তাহার রহিয়া দহিছে মনে। ২৫ দগধে পরাণে ननमी वहरन পাঁজর বিধিল ঘুণে॥ নয়ৰ-পিঁজৱে नग्रदन नग्रदन রাখয়ে আপন কাছে। জ্ঞলে যাই যবে সঙ্গে চলে তবে ৩০ স্থামেরে দেখি যে পাছে॥ চণ্ডীদাস কয় ৰাশুলী সহায় মনেতে থাকয়ে যদি। य कन या विरन ना कौरत्र भन्नारा তার কি করে নন্দী॥ ১২। পলাইতে মনে চাই পথ পানে .. \cdots পাঠান্তর । ২৪-২৫। এমতি আমার পীরিতি ভাহার সহিতে সহিছে মনে। ··· " ৩২। বাতলীর সায় \cdots वानवै ।

জনম অবধি পীরিতি বেয়াধি
অন্তরে রহিল মোর।
থেকে থেকে উঠে পরাণ ফাটে
জালার নাহিক ওর।
সই, এ বড় বিষম কথা। ৫
কামুর কলঙ্ক জগতে হউল
জুড়াইব আর কোপা॥

বেয়াধি অবধি সমাধি ক্রিয়ে পাই এবে যার লাগি। এমতি ঔষধ হয় অল সূল্য লয় ১. হিয়ার ঘুচায় আগি॥ জনম অবধি कफेक ननमी कागारक क्रिन भन। তাহার অধিক দ্বিগুণ স্থালায় খলের পীরিতি শুন॥ ১৫ খলের সংহতি ছাড়িমু পীরিভি ছাড়িমু সকল সুখ। চণ্ডীদাস কয় যদি দেখা হয় এবে কেন বাস ছখ।

> eq• \_

धानने ।

বেসালি ধুইয়া যতন করিয়া नौरक नाकारेन पूर्व। ," দধি সে নহিল জ্বল শে হইল পাইসু বড়ই ছুখ॥ সই, দধি কেন ছিড়ি গেল। কামুর পীরিতি কুলের করাতি পরাণ কাটিয়া নিল ॥ পীরিভি ঘুচিল আর্ডি না পুরিল না ঘূচিল কলঙ্কজালা। তবু অভাগিনী ना चूरह काहिनौ ১० পরিবাদ দেই কালা ॥ বৃঝিলাম যতনে প্রবোধিসু পরাণে ছাড়িমু ভাহার আশ। চিতে সার কত ভাবি স্ববিরম্ভ रिपर्य कतिन नित्राम ॥ 36 আর কেহ বলে ক'পে দিব জলে তেজিব এ পাপ দেহ। চণ্ডীদাস কহে ছাড়িলে ছাড়ন নহে শুধু সুধাময় লেহ।

৮। আরতি না খুচিলপ..... পাঠান্তর। ১। পরিবাদ হৈল কালা.....

०२১

## याननी ।

না বল না বল সথি না বল এমনে।
পরাণ বাঁধিয়া আছি সে বঁধুর সনে॥
ভাজিলে কুল-শীল এ লোকলাজ।
কি গুরুগোরব গৃহের কাজ॥
ভাজিয়া সব লেহা পীরিভি কৈছু।
বে হইবে বিরভি ভাবে ভাজিয়া মৈমু॥
বে চিভে দাঁড়ায়েছি সেই সে হয়।
ক্ষেপিল বাণ যে রাখিল নয়॥
ভৌকিল প্রেমকাঁদে সকলি নাশ।
ভালে সে চণ্ডীদাস না করে আশ॥ \*

०२२

शामने ।

ইকু রোপিফু গাছ যে হইল নিঙ্গাড়িতে রুসময়। কামুর পীরিতি বাহিরে সরল অস্তরে গরল হয়॥

° কোৰাও এই পদ জানদাসের ভণিভার্ক গছে।

महे, (क वर्ल भिन्ने। हेक्कू ७५। c পরের বচনে চাকিমু বদনে খাইমু আপন মুড়॥ চাকিতে চাকিতে লাগিল জিহ্বাতে পহিলে লাগিল মিঠ। মোদক আনিয়া ভিয়ান করিয়া ১০ এবে সে লাগিল সীট। মশল্লা আনিমু আগুনে চড়াফু বিছুরিমু আপন ভাব। কামুর পীরিভি বুঝিন্থ এমতি কলক হইল লাভ। আপন করমে वृक्षिषु भवरभ বস্তুর নাহিক দোষ। চণ্ডীদাস করে পারিতি করিয়া কেবা কোথা পাইল যশ। । नहें, रक बरन हेक्कूबम खड़...शांशिवत । ७। চাকিছ...थावार कोद्रनामः ৭। মুড়...মন্তক। ১১। সাঁট...অসার পদার্থ।

०२ व

महात ।

দিবস রজনী শুণি গুণি গুণি গুণি
ক হৈল অস্তুরে ব্যুপা।
খলের বচনে পাতিয়া শুবণে
খাইমু আপন মাথা॥
কে বলে পীরিতি ভাল গো সখি ৫
কে বলে পীরিতি ভাবিতে ভাবিতে
সোনার বরণ ভাল॥

বিবের গাগরি শীর মুখে ভরি ্ৰেবা আনি দিল আগে। ১০ ক্রিমু আহার না করি বিচার এ বধ কাহারে লাগে॥ নীর-লোভে মৃগী আনন্দে ধাইতে ব্যাধ শর দিল বুকে। জলের সফরী আহার করিতে ১৫ বড়শী লাগিল মুখে॥ পিয়াসে চাতকী নব্ঘন হৈরি চঞ্ পদারল আশে। করল প্রন বারিক বারণ কুলিশ মিলল শেষে॥ ২০ বিষে মিশাইয়া ক্ষীর নাড়ুকরি व्यवना वानात्क पिन। সুসাদ পাইয়া খাইতে খাইতে निकर्षे भद्रग (छन । লাখ হেম পেয়ে যতনে বাঁধিতে ২৫ পড়িল অগাধ জলে। হেন অমুচিড করে পাপ বিধি विक हशीमात्र वरन ।

e-७। তুন তুন ছতি কি কহ যো প্রতি বচন না লাগে তাল।...পাঠাবর। ১। সোনার গাগরি বিষক্ত তরি... "

428

শিশ্বভা।

সই, কি হইল কালার আলা। রাজি দিন মন সদা উচাটন অপনে ছেখি বেঁকালা॥ मूजिङ-ल्लाहरन विज्ञ युगाहे ছদয়ে কানুরে **দেখি**। · মনের মরম ভোষারে কহিতু **७**म (१) मत्रम-मशि॥ ঘরে নাহি মন মন উচাটন কি না হৈল মোর ব্যাধি। कि कानि कीवन वाँहिए मः मग्र কহ না ইহার বুধি ॥ আমার পরাণ नपारे रूपग्र কামুর চরণে বাঁধা। যে অন পীরিতি পাড়ার পড়সী সদাই করয়ে বাধা। দুরে রহু তার আদর পীরিতি (म कन जांशित वानि। না যাব সে ঘর পাড়ার পড়সী দেই যত গালি॥ চণ্ডীদাসে কছে লোকের বচন কিবা সে করিতে পারে 🗓 আপনা হৃদয়ে মনের মানসে নিরবধি ভব্দ তারে।

> ध्रद दाव**ने**

না জানি পীরিতি এমন বলিয়া
তবে কি বাড়ামু পা।
পীরিতি বিচ্ছেদে ভীবন না রহে
এলায়ে পড়িছে গা॥
কহ কি বৃদ্ধি করিব দেখি।
একে লোকলাক এ পাল পদ্ধাণ
বরে খিরি নাহি থাকি॥

আপনার বুড়া অঙ্গুলি বিনিরা व्यक्ति का कि दिव शिद्र । আমার করমে ' বিধির লিখন ১০ " विश्वा त्यांव पिव कादत ॥ ভাবিতে গণিতে কামুর পীরিতি পরাণ হইল সারা। **गर्वत गर्वत** · मक्वनग्रदन নিরবধি বছে ধারা ॥ ১৫ **চণ্ডাদাসে কহে •** শুন বিনোদিনি দেখি বে অবোধপারা। মিছা লোককথা চাঁদ স্থা যার কিবা করে লাখ ভারা॥

७२७

धानना ।

😎ন গো মরম-সখি। কামুর পীরিতি পরাণ না ব্লছে বড় পরমাদ দেখি ॥ क्वा दंग कूषिन प्रश्वन राष्ट्रिन राष्ट्र নয়ান পসারি তুটি। সেই দিন হতে আন নাহি চিতে শীরিভি-আনলে ছুটি। আন সে আনল বারি ঢালি দিলে তখনি নিবায়ে যায়। मत्नत्र व्याश्चन निवरिव किरम ১० षिक्षन समिद्र छोत्र ॥ বন পোড়ে বলে বনে আগুনি (मध्दत्र कंगर लाटक। এ বড়ি বিশ্বস শুন গো সঞ্জনি • चरन डेर्फ विनि कूरन । ১৫ হের দেখ সুধি অন্তে হাত দিয়া ় **উঠিছে বিরহ আগি।** ১৯

সে শ্রাম-বিচ্ছেদে কুধার বিবাদে সদা কাঁদি ভার লাগি॥ **छ्छोनाटम वटन छन विद्यानिति २०** মিছাই ভাবনা কর। শ্যামের কলক যত পরিবাদ श्वमद्य वर्ष्ट्रान भन्न ॥ 8। (नश्त= जाशकः। ৮। আন সে আনল= অপর আগুন।

সই, বড়ই প্রমাদ দেখি। কামুর সনে পীরিভি করিয়া নিরবধি কুরে আঁ**খি**॥ কাহারে কহিব মনের আগুন ব্দলিয়া ব্দলিয়া উঠে। বেমন কুঞ্জর বাউল হইলে অঙ্কুশ ভাঙ্গিয়া ছুটে॥ কিসে নিবারিব নিবারিতে নারি বিষম হ**ইল লেঠা**। হেন মনে কুরি উচ্চৈ:স্বরে কাঁদি ১০ তাহে গুরুজন কাটা॥ ষাইয়া নিভূতে বসি এক ভিতে সদা ভাবি কালা কামু। কুরিতে কুরিতে বিরলে বসিরা কবে হারা**ই**ব ভন্ম ১৫ ধীবর দেখিয়া জলে যত মীন বেমন ভরাসে কাঁপে।· ্পামার তেমতি খরের বসভি गत्रिक गत्रिक सार्थि ॥ चरत्र शुक्रकन वरण क्राउन २० বদি বা সহিত্ৰে পারি।

বাহার লাগিরা এতেক সহিব

কে বহে ধৈরক্ত ধরি।

চণ্ডাদাসে বলে শুন বিকোদিনি

সকলি স্থপন মানি। ২৫

তুমি সে কালার কালিয়া তোমার

স্থপতে স্বাই কানি।

৬। বাউল-পাগল, উন্মন্ত। ২২-২৩। শ্রীকৃষ্ণ বদি আমার জক্ত একটু চঞ্চল হইতেন জানিভাম, তবে গুরুজনের কুবচন সম্থ করিতে পারিতাম।

> 92 **ب** آ

সই, রহিতে নারিমু ঘরে। নিরবধি বলে কামু-কলঙ্কিনী এ কথা কহিব কারে॥ যত আছে মনে ঘরে গুরুজনে কালার কলত সারা। বিরুলে বসিয়া সেখানে বসিয়া नग्रत्न गलएत्र थात्रा ॥ ইহার উপায় কি করিব বল শুন গো মরম-স্থি। नमारे हक्क >0 এ পাপ-পরাণ খরে স্থির নাহি থাকি। বিষ ভেল গৃহ ভোজন না রুচে খুম নাহিক হয়। **শ্রাম-পরসঙ্গ** বিনে নাহি ভার ্ঞাবণ ভা পানে রয়। ১৫ গুহকাকে চিড্ না রয় বেক্ত কালার ভাবনা গাঢ়া। চণ্ডাম্বাসে বলে কালার পারিভি

नक्लि स्टेर्ड हाज़ा ।

शंतकी।

সই, মন্নিব গরল খে কান্দুর পীরিতি বিষম বেয়াধি আমারে বেরল গিয়ে॥ কভ না সহিব ব্দবলা পরাণে কুবচনে ভাজা দেহ। মনের বেদনা বুঝে কোন্ জনা व्यान कि वृक्षिरव रंक्र ॥ হেন মনে করি বিষ খেরে মরি দুরে যাউ যত ছখ। অখলা রমণী কুলের কামিনী ১০ সবার হউক স্থুখ ॥ সেই কুবচন কভ না সহিব সহিতে হইমু কালী। হেন মনে করি এ ঘর করণে **हकी लाटम वटन अमन नी ति** जि বিষয় প্রেমের লেহা। পীরিতি আরতি যার উপজিল তার কি আছয়ে দেহা॥

পানী।
সই, আর কিছু কৈয় না গো।
সকল বজর পাড়িয়া পরল
গোকুলে নন্দের পো॥
কে জানে পাইব এত অপবাদ
স্থপনে নাহিক জানি। ৫
ভবে কি ভা সনে বাড়ামু মরমে
অথবা কুলের ধনী॥

দেখিয়া কালিয়া কান্স। "..

শরুনে স্বপনে

**জান নাহি মনে** 

বিরহ বেয়াবি কভ না সহিব ১০ কৰে সে ভেজিব তমু। শুন্হ সঞ্জনি হেন মনে করি গরল ভখিয়া মরি। ভবে স্বচে ভাপ বিষম সস্তাপ গোপতে শুমরি মরি 🛭 30 কহে চণ্ডীদাস হিত আশাস পীরিভি এমভি রীভ। কেন এত তুমি করিছ বিবাদ 🅶 েক ধৈরজ চিত॥ ধানশী। সই, কি কাজ এ ছার ঘরে। খ্যাম নাম নিতে না পারি গৃহেতে তবে ভারা হেদে মরে॥ কেবল রাধার পরিবাদ সার ্সে সব কুলের মণি। ৫ লোক চঁরাচরে সমু মনু মনু মনু কি ছাড় পড়সী গণি॥ আমি সে লয়েছি শ্রাম-হেমমালা ব্দদের পরিয়াছি। **বহে যত জ**ন শত কুবচন ১০ সে বহি লইয়াছি॥ চণ্ডীদাস কৰে শ্রাম স্থনাগর ভলহ কিশোরী গোরী। লোক-পরিবাদ মিছা যত হয় গোকুলে গোপের নারী । >0

4: 1 গাঁজে মিবাইল বাতি কত পোহাইৰ রাতি . তথপুৰ অময় বিষয়ে।

ना एत मजन ना ग्रंटर जीवन মরম কহিব কারে 🛭 সই, কি ছিল আমার করমে। রোপিল কলপলভা না হল ভাহার পাজ **ভকাইয়া গেল ঠামে ॥** জনম অবধি क्रीत नीरत कति সিচিল ও লভামূলে। ক্ষীরের গরিমা नीरवव मोमा ১० হরিয়া লইল আনলে॥ যাৰার লাগিয়া সকল ছাড়িয়া मन देशन वनवाती। চণ্ডীদালে কয় তাহার কি ছাটি হয় পরশে করিবে স্থা। b। कोत नीरत कति—कोत **उ जग दिया।** ১৪। ঘাটি-অপরাধ।

বিহাগড়া।

শুন ও গো সই • আর ভোমা বই কহিব কাহার কাছে। লোকমুখে ভূমি ইহা বলে লোক কাসু সনে রাধা আছে 🛭 গোকুল নগরে গোপের মাঝারে ৫ এত দিন আছি মোরা। লোকমুখে শুনি কখন না চিনি কামু কাল কিবা গোরা॥ चरतत्र चत्रभी व्याटक् कांगवाहिनी -পাপমতি ননদিনী। . ১০ ভ্রনাইরা মোকে আর কাকে ভাকে আইস শ্রাম-সোহাগিনী। কিবা সে ভাম . কামু কার নাম ় । ভাহা না বলিব कि ।

শ্ৰনাইরা মোকে আর কাকে ডাকে ১৫ ্ আই মাইকে জানাই দেখি। একা প্রাণপতি সেই মোর গতি তা বিশ্ব আন নাহি জানি। চণ্ডাদাস বলে ভাঁড়াইলা ভালে ধশ্য রাধা ঠাকুরাণি॥ 20

क्षश्मि।

পীরিতি বলিয়া এ ভিন আখর ভূবনে আনিল কে।

ছানিয়া খাইসু মধুর বলিয়া ভিতায় ভিতিল দে॥ 

হিয়ার ভিতর বসতি করিয়া কখন কি জানি করে॥

পিয়ার পীরিতি প্রথম আরতি ভাহার নাহিক শেষ।

পুন নিদারূণ শমন সমান ১০ দয়ার নাহিক লেশ ॥

কপট পীরিভি আরতি বাড়ায়ে মরণ অধিক কাজে।

লোকচরচায় কুল রক্ষা দায় ব্দগত ভরিল লাবে। ১৫

হইতে হইতে অধিক হইল সহিতে সহিতে মসু।

कहिएक कहिएक जुजू कई व ় পাগলী হইয়া গেন্দু॥ •

এমন পীরিতি না জানি এ রীতি ২০ জনন অবধি ভাবি নির্বাধ পরিধামে কিবা হয়।

পীরিতি পরম ্ৰ বিৰু চণ্ডীদালে কর।

गरे, ७ कथा करन नार-भागासत।

१। क्यन कि जानि क्ट्-

১৪। লোকচরচার কুলের থাঁকার---

২২ ৷ পীরিতি পরম হয় তথ ভাধ —

' একটি ক্মল পীরিভি বলিয়া রসের সায়রমাবে।

প্রেম পরিমল লুবধ শ্রমর ধাওল আপন কাজে।

ভ্রমর জানয়ে ক্মল-মাধুরী ৫ তেঁই সে তাহার বশ।

রসিক জানয়ে রসের চাতুরী व्यात्न करत्र व्यशयम ॥ ় সই, এ কথা বুঝিবে কে।

বে জন জানয়ে সে যদি না কছে ১০ কেমনে ধরিব দে 🛭

লোক্চরচাতে ধরম করম এ কথা বুকিতে নারে।

এ ভিন জাঁধর বাহার মরমে সেই সে বুৰিভে পারে॥ ১৫

কহে চণ্ডীদাস 😇ন হে নাগরি পীরিভি রসের সার।

পীরিতি রসের রসিক নহিলে কি ছার জীবন ভার।

२। नायद-- नागद--- भार्तिसद्धः।

সই, পারিডি আধর ডিন।

না কামি রাভি 🏞 বিস 🛚 🐪

नीविधि नीविधि नव घन घर পীরিভি কেমন রীড়। ¢ রসের পীরিভি রসের স্বরূপ কৈ না করে পরতীত। गरे, कि जान कून-विচাदि। भाग वैधु वित्न ভिल्लक ना जीव কি মোর সোদর পরে॥ ১০ পীরিতি মস্তর ব্দপি নিরন্তর নাহিক তাহার মূল। বঁধুর পীরিতে আপনা বেচিত্র নিছিয়া দিফু জাতিকুল। সে রূপ-সায়রে নয়ান ভূবিল ১৫ (म शारा वैधिन हिशा। ভূবিল যে চিতে সে সব চরিতে निवांत्रिव किवा पिया ॥ খাইতে খাইছি শুইতে শুইছি আছিতে আছয়ে খরে। • ২০ ইঞ্চিত পাইলে **ठछोमार्**न क्य . আগুন ভেজায় ঘরে॥ ৬-१। রদের শ্বরূপ প্রীরিতি মুরতি কেষা করে পরতীত।—পাঠান্তর। ১৭-১৮। সে সৰ চরিতে ভুৰু ভুৰু মন व्यानिव कि ७० मित्रा ।--- शांठा खत्र ।

901

ধানী।

পীরিতি বলিয়া ় এ তিন জাঁধর
সিরজিল কোন্ ধাতা।
আবধি জানিতে শুধাই কাহাকে
স্কাই মনের ব্যথা।
পীরিতি রঙন ৫
া বার চিতে উপজিল।

সে ধনী কতেক जन(च जन(च কি ভাগ্য করিয়াছিল 🖁 💛 गरे, भीतिष्ठि ना कात्म वाता । . . . এ ডিন ভূবনে मानूव कन्दम ১० কি হুখে আছয়ে ভারা। বে জন যা বিনে না রছে পরাণে সে যে হল কুলনাশী। ভবে কেন ভারে কলম্বিনী বলে অবোধ গোকুলবাসী **॥** গোৰুল নগরে কেবা কি না করে चरवांध मृष् (य लारक। ্ৰ মক্লক সে জন চণ্ডীদাদের মন পরচরচায় থাকে। ে। পীরিতি মুরতি পীরিতি রতন—পাঠান্তর। ৮। ভাগ্য—ৰ**জ—** ১০। এ ভিন ভূবনে জনমে জনমে কি ত্রথ জানয়ে তারা ॥--পাঠান্তর। ১৮। চঞ্জীদাস ভনে मक्क (म क्र —পাঠান্তর।

909

ধান**ী** ।

স্থান লাগিয়া পীরিতি করিমু
শ্যাম বঁধুয়ার সনে।
পরিণামে এত ত্ব হবে বলে
কোন অভাগিনী জানে॥
সই, পীরিতি বিষম মানি। ৫
এত স্থান্থ এত ত্ব হবে বলে
অপনে নাহিক আনি।
'সে হেন কালিয়া নিঠুর হইল
কি শেল লাগিল বেন।
দরশন আশে বে জন কির্মে ১০
সে এত নিঠুর হেন্ন।

বল নাকি বুদ্ধি ক্রিব এখন ं · ভাবনা বিষম হৈল। হিয়া দগদগি পরাণ পোড়নি कि पिटन हरेंदि छोन ॥ ১৫ চণ্ডীদাদ কছে শুন বিনোদিনি মনে না ভাবিগ আন। তুমি সে শ্যামের সরবস ধন শ্যাম সে তোমার প্রাণ॥ ে। সই, এ বড়ি আক্বতি শুনি-পাঠান্তর। ৬-৭। তত হুপে এত তুৰ হবে ৰলে স্বপনে ইহা না জানি ॥—পাঠান্তর। ১২। বল নাবল নাসই কি বুদ্ধি করিব—পাঠান্তর। ১৪-১৫। হিরাদগদগি কি দিরা জুড়াবে কেমনে হইবে ভাল॥—পাঠান্তর।

**a** ı

ম্বধের লাগিয়া রন্ধন করিমু ঝালেতে ঝালিল দে। স্বাস্থ নহিল জাতি সে গেল ব্যঞ্জন খাইবে কে ॥ সই, ভোজন বিশ্বাদ হৈল। ৫ কানুর পীরিতি রস এই মতি কি জানি কেমন হল। পীরিভি রসের নাগর দেখিয়া আরতি বাড়াইন্মু ভাবে। ভবে সে সঞ্জনি मिवम ब्रक्तनी ५० ব্দানল উঠিল চিতে॥ অধিক উঠিল ' ভারিত ভারিত পীরিতে ডুবিল দেহ। निरम इंथ नियो वक्क कतिया ঐহন কামুর লেহ।

**ह** छोतांत्र क्य হিরার সহয সকলি গরল ছৈল। কিছু কিছু স্থা বিষ্ঠুণা জাধা **जिल्लोबी एक्ट देवल ।** २। जानारक जानिन (म-भाठी खन्न) ৬-৭। কাহুর পীরিতি হেন রসবতী স্থাদ গন্ধ দুরে গেল।--পাঠান্তর।

**a** ,

স্থাবের পীরিতি আনন্দ যে রীতি দেখিতে স্থন্দর হয়। কাঞ্চন পীযূবে মদন সহিতে মাখিলে এমতি লয়। সই, কেমন কারিকর সেহ। ৫ কেমনে করিলে এ সব সংযোগ **क्यान शिक्टल एम्ह** ॥ সিদ্ধর ভিতরে অমিয়া থাকয়ে কেমতে পাইল এ। ়ু মাটীর ভিতরে কাঞ্চন, গড়য়ে ১০ সম্পেহ এ বড়ি এ 🛭 মদন-মাদন থাকে কোন স্থানে বুঝিতে সন্দেহ হয়। এ তিন আনিয়া একত্রে ছানিয়া গড়িল কেমন দেহ। তিন তিন গুণে বাঁধিলেক ঘূণে পাঁজরে পশিয়া গেল। যতন করিয়া ু অবলা বধিতে আনিল এমতি শেল। এমতি **অকাজ** করে কোন রাজ ২০ বুকিতে নারিল মোরা। কুলের ধরমে

এমতি হউক ভারা 🛊

ভাজিত্ব মরুদে

চণ্ডীদানে কর - মিছা গালি হর না দেখি জনেক লোকে। ২৫
জাপনা জাপনি বলার কুবাণী
আপন মরম স্থান ।
১২-১৫। সাগর মাঝারে থাকরে অমিরা
কেমনে পাইবে সে।
মোদন মাদন পাইল কোন্ ছানে
রলে নিরমিল দে॥—পাঠান্তর।
১৭। পাঁজর ধনিরা গোল— "

আপনা খাইতু সোনা যে কিনিমু ভূষণে ভূষিব দেহ। সোনা যে নহিল পিতল হইল এমতি কামুর লেহ॥ **जहे, महत्र दर्शानांदर्श ना हिंदन दर्शाना ।** @ সোনা যে বলিয়া পিতল আনিয়া ্ গড়ি দিল যে গহনা॥ পরিতে,অঙ্গেতে ঝলকে দেখিতে হাসয়ে সকল লোকে। কাজ না হইল ১০ ধন যে গেল শেল রহি গেল বুকে॥ বেমত মতি তেমত গতি ভাবিয়া দেখিতু চিতে। খলের কথায় পাথারে সাঁভারি উঠিতে নারিমু ভিতে॥ ১৫ অভাগিয়া জনে ু ভাগ্য নাহি জানে না পুরে এ সব সাধ। খাইতে নাই ঘরে সাধ বহু করে বিধি করে অসুবাদ ! চণ্ডীদালে কয় বাশুলী কুপায় ২০

. " আর নিবেদিৰ কায়।

তবু ত পীরিতি নাহি পার বদি
পরাণে মরিয়া বায় ॥

ে। মদন এমনি দৃষ্টিহীন বে, সোনা ঠিক চিনিতে।
পারে না। মদন-মোহিত লোকেরা ভাল বিচার করিতে
পারে না। পালচাতেরা ত মদনকে অভ বলিরাছেন।
ভামাদের গোবিন্দদাসও বলেন,—''আঁধল প্রেম।"
৮। পরিতে অলেতে প্রতি অকুলিতে—পাঠান্তর।

983

91

কামুর পীরিতি চন্দনের রীতি বসিতে সৌরভ্যয়। হিয়ায় লইতে বসিয়া আনিয়া দহন বিগুণ হয়। সই, কে বলে পারিতি হীরা। সোনায় কড়িয়া হিয়ায় করিতে ছুখ সে লাগিল ফিরা॥ পরশ পাথর रय पि नीउन बनाय मकन (नारक। পীরিতি না জানি ১০ আমি অভাগিনী কতেক পাইসু শোকে। করয়ে পীরিডি সব কুলবভী এমতি না হয় ভারে। এ পাপ পড়সী সকল ডাহিনী मकिन (मायस्य स्मास्य ॥ গৃছের গৃহিণী मद्य ननिष्नो বলয়ে ব্চন যত্। কি করি উপায় कहिरल कि यात्र , পরাণ সহিবে কত। গ্রামের নিকটে ২০ শালুরের মাঠে वास्त्रो जाहरत्र वर्षा ।

ভাহার মানেশে করে চঙীদানে 🖖 ় স্থখ যে পাইবে কোখা ॥ ১০-১১ ৷ মুই অভাগিনী লাগিল আঙ্নি পাইন্থ এতেক হুখে।—পাঠান্তর। ডাকিনী সদৃশী ১৪-১৫। এ পাড়া পড়সী এমত না খার তারে।—পাঠান্তর। ২০। নিকটে—হাটে—পাঠান্তর।

কামুর পীরিভি মরণের সাথি বুঝিল এতেক দিনে। মরিলে ছাডিবে সঙ্গে কি যাইবে कर ना देशांत्र विधारन ॥ সই, জীয়ন্তে এমন স্থালা। ৫ আভি কুল শীল সকলি ভূবিল ছাড়িলে না ছাড়ে কালা॥ শয়নে স্থপনে না করিয়া মনে धत्रम गणित्य शकि। व्यानिया मनन \_ (एय कर्ल्यन ১० অন্তরে উঠয়ে উকি ॥ गरतावत्र मारक . मीन त्यन शास्क উঠে অগ্নি দেখিবারে। ধীবর কাল হাতে লয়ে জাল ভূরিতে কাপয়ে ভীরে॥ ১৫ কামুর পীরিভি কালের বসতি যাহার হিয়ায় থাকে। খলের গরলে জারিল সকলে कनको वनरत्र रमारक ॥ চণ্ডীপালের মূল বাশুলী চরুর ২১ **७**भएनम त्र**क**को नाती। সহিতে সহিবে কিছু না ভাবিৰে কহিবে একাস্ত করি।

- >। महत्वत्र माथि —महत्म द्वाराधि <del>—</del>मीक्षास्त्र । २। वृत्तिम-भाष्ट्रम-৩। দৈলে কি ছাড়িবে সঙ্গে না বাইৰে—" ३०। कमर्थन-कृभनामर्ग। ১৮-১৯। थरनत वहरन वहरत दगहे वरन কলম্ব হোবরে লোকে।—পাঠান্তর। বাঞ্চলী চরণ २०-२०। हश्वीमांन मन व्यारमर्भ द्रष्टक नादी। সহিতে সহিতে কিছু না ভাৰিৰে ৰলিবে একাস্ত করি।—পাঠান্তর।

সিস্কৃতা।

আমরা সরল পীরিভি গরল লাগিল অমিয়া ময়। মহানন্দ রীতি বিছুবল পতি . कनक नवरि करा।। महे, रेनरव रहन रहन मि । व्यसुद्र कृतिम পরাণ পুড়িল এছন পীরিতি রীতি॥ माणि त्थानारेया थान वनारेया উপরে দেওল চাপ। আগে আহার দিয়া মারল বাঁধিয়া ১০ এমন করয়ে পাপ॥ নৌকায় চড়ায়ে দরিয়াভে লয়ে ছাড়য়ে অগাধ জলে। **जु**र्यू करत , ভূবিয়া না মরে উঠিতে না পারে কুলে॥ ১৫ এমতি করিয়া পরাতে মারিয়া চলল আপন খরে।

তুমি দে ভাবহ ভারে।

**हशीमारम क्य** 

এমতি বি, হয়

১-৪। আনমা সরলপ্রাকৃতি, তাই গরলসমূপ পীরিতি আনাদের নিকট অনুত বলিরা বোধ হইরা-ছিল। পীরিতির রীতি প্রথমে সহানক্ষমর বোধ হইরাছিল, তাই পতিকে ত্যাগ করিরা-ছিলাম; কলে কলম্ব হইল।

16 C

a i

বিবিধ কুন্থম ত বভনে আনিয়া গাঁথিকু পীরিভি-মালা। পরিমল গেল শীতল নহিল খালাতে খলিল গলা। সই, মালী কেন হেন হৈল। শালার করিরা বিৰ মিশাইয়া हियाब मावादब पिल ॥ चानाग्र चनित्रा छेत्रिन (र हिन्ना আপাদ মস্তক চুল। • এমন না দেখি শুন ওলো সধি ১০ • चाक्षन हरेन सून॥ কুলের উপরে চন্দন লাগল সংযোগ হইল ভাল। हुरे अक रेरज़ শোড়াইল হিয়া পাঁজর ধসিরা গেল। ধসিতে ধসিতে नकनि धनिन নিৰ্মাল হইল দেহ।

চণ্ডাদাসে কর কিছু নাহি ভয়

কি করিৰ সুধি

কৃছিলে না হয়

---পাঠান্তর।

আখন হইল হুল।—পাঠান্তর।

ঐছন কাসুর লেহ।

२०-२२। ना छनि ना एए थि

১৮। কিছু নাহি ভয়

शंस्त्र । নিঠুর কালিয়া না গেল বলিয়া জানিলে যাইত সাথে। · **গুরু**গরবিত বস্তি আমার পরাণ লইয়া হাতে ॥ नरे. कि चात विनव ভোরে। ৫ আপন অন্তর না কর বেকড তবে সে কহি যে ভোরে॥ মনের মরগ জানিবে কে। (अहे (अ कांटन मत्नत्र मत्नत्र मत्नम এ রুসে মজিল যে ॥ চোরের মা বেন পোয়ের লাগিয়। ফুকরি কাঁদিতে নারে। কুলবতী হৈয়। পীরিতি করিলে এমতি সঙ্কট ভারে। কে আছে ব্যথিত বাবে পরতীত ১৫ এ ছুখ कहि (व कांद्र । হয় ছুখভাগী পাই ভার লাগি তবে সে কহি বে তারে । পর কি জানয়ে পরের বেদন সে রভ আপন **কালে।** ২০ · বনের ভিতরে চণ্ডাদালে ৰলে কভু কি রোদন সাবে॥ ৫-१। এই কয় পঙ্ক্তির পরিবর্তে কোন কোন প্রকে এইরপ খাছে:--এমত ব্যাভার না কানি তাহার .

পীরিতি বাহার সনে।

ৰেকত করিলে কেনে।

পুৰাপত করিয়া কেন না রাখিলে

शन्ति । সই, কাহারে করিব রোষ। রা জানি না দেখি সরল হইমু সে পুনি আপন দোষ॥ বাভাগ বুঝিয়া ফেলাইড পা বাড়াই বুঝিয়া থেছ। ৫ মানুষ বুঝিয়া কথা যে কহিয়ে রসিক বুঝিয়া লেহ। मत्रक वृत्यिरम ধরিয়ে ডাল ছায় সে বুকিয়ে মাথা। গাছক বুঝিয়া গুণ প্রকাশিয়ে ১০ ব্যথিত বুঝিয়া ব্যথা ॥ অবিচারে সই করিল পীরিভি **८कन देकन ८१न काटन**। চণ্ডাদাস কৰে थी वह ञ्चलवि কহিলে পাইবে লাজে 20 < । (थर-देश्या। 38। थी ब्रह—दिश्चा शांत्रण कवित्रा शांक।

ধানী।

হিরার মাঝারে বৃত্তনে রাধিব
বিরল মনের কথা।

মরম না জানে ধরম বাখানে

সে আর বিশুণ ব্যথা॥

বারে নাহি দেখি শ্যনে স্থপনে ৫
না দেখি নয়ন কোণে।
ভবু সে সজনি দিবস রজনী
সদাই পড়িছে মনে॥

হাম অভাগিনী পরের অধীনী
সকনি পরের বশে। ১০

**08**7

সদাই এমনি পুড়িছে পরাণী ঠেকিয়া পীরিভি-রসে। কল্পে উচাটন অসুখন মন না সরে মুখেতে কথা। **हशोशांट**मत्र मन **जरून नग्नन >**৫ ভাবিতে অন্তরে ব্যধা। ६। भवरन-कनम-भिरासत्। १। छद् (म मक्ति-वद्ध (म क्ति।-भागासः। বিভাগ। আমি ত অবলা তাহে এত স্থানা বিষম হইল বড। নিবারিতে নারি শুমরিয়া মরি ভোমারে কহিল দড। সহজে আপন বয়স যেমন ৫ আর নহে হাম জানি। স্বপনে ভালিয়া সে রূপ কালিয়া না রহে আপন প্রাণী॥ .' সই, মরণ ভাল। সে বর নাগর মরমে পশিল ১০ ভাবিতে হইল কাল ৷ কহে চণ্ডীদাসে वासको भारमरभ এই ত রদের কৃপ। এক কীট হয়ে আর দেহ পায়ে ভাবিয়ে ভাহার রূপ ॥ 24 ১১। व्हेल-व्हेलाम।--लिशिखत। ১৪-১৫। একরপ বোলতা আছে, তাহারা আরহুলা ধরে। অনেকের বিখাস বে, আরম্বলাটা ধরা পড়িলেই ভাজিত হইরা বার এবং বোলভার রূপ ভাৰিতে ভাৰিতে বোলতা হইয়া বার। চতীদাস ৰলিতেছেন,—শ্ৰীরাধিকা কাল খ্রামের রূপ

ভাৰিতে ভাৰিতে কাল হইয়া পিয়াছেন।

91 বড়ন করিয়া ভুবন ছানিয়া • আনিমু প্রেমের বীজ। রোপণ করিভে গাছ যে হইল जाधिल बद्रग निष्म ॥ महे<sub>,</sub> (थ्रम-७ऋ (कन रेहन। ৫ হাম অভাগিনী দিবস রজনী সিচিতে জনম গেল। পীরিতি করিয়া স্থা যে পাইব শুনিমু সধীর মুধে। অমিয়া বলিয়া গরল কিনিয়া ১০ ধাইসুআপন মুধে॥ স্বাত্ন লাগিত অমিয়া হইত হইল গরল ফলে। কামুর পীরিতি শেষে হেন রীতি কানিসু পুণ্যের বলে॥ : ৫ যত মনে ছিল সকলি পুরিল আর না চাহিব লেহা। পরশন বিনে চণ্ডীদাস কহে **८कमटन ध्रतिट्य एम्टा ॥** পীরিভি জানল ছুঁইলে মরণ 🗢নছ কুলের বধু। আমার বচন না শুন এখন कानिद्य अक्मन मधु॥

महे, ७ (वान ना वन भारक। १

পীরিতি আনলে পুড়িয়া মরিবে

मना इष्कृष् मूत्रनी विकृष

ভনম বাইবে গ্ৰে।

· \* নটপটা ভার বেশ।

আর বিব খাইলে তথনি মরিরে ১০
বিবে ত জীবন শেষ॥
নয়ানের কোণে চাহে ঘাহা পানে
সে ছাড়ে জীবন-আশ।
পরশ পাথরে ঠেকিয়া রহিলে
করে বড়ু চণ্ডীদাস॥
১৫

530

শুন কমলিনি চল কুল রাখি আর না করিও নাম। সে যে কালিয়া মুরতি কালিয়া প্রকৃতি কালা খল নাম শ্যাম॥ ভেজিয়া আপনি ৫ জনক জননী অস্তের হইয়া মজে। জানকী সীভারে রাম অবভারে বিনি অপরাধে তাজে ॥ আছয়ে বিদিত উহার চরিত वीनो विधवात्र कारम । বলিকে ছলিয়া পাডালে লইল কি দোব উহার পেলে॥ উহার চরিত আছুরে বিদিত হৃদয় পাবাণময়। বেমত রাবণে ১৫ উহার শরণে (य≷ (अंभेत्री व्यः ॥ ृं. মরুক সে জনে চণ্ডাদাস ভণে ষেবা পরচরচায় থাকে। পীরিভি লাগিয়া মরে সে ঝুরিয়া

কুলেড়ে কি করে তাকে । ২০

## আক্ষেপানুরাগ।

স্বগত।

श्रीकांत्र ।

কেন বা পীরিতি কৈলাম শ্রাম বঁধুর সনে। ভাবিতে রসের তমু জারিলেক ঘূণে॥ কত খর বাহির হইব দিবা রাতি। বিষম হইল কালা কাসুর পীরিতি॥ না রুচে ভোজন পান কি মোর শয়নে। বিষ মিশাইল মোর এ ঘর করণে घटत शक्त प्रतक्त ननिमी व्यक्ति। তু আঁখি মুদিলে বলে কাঁদে কান্তু লাগি। আকাশ যুড়িয়া ফাঁদ যেতে পথ নাই। কৰে বড়ু চণ্ডীদাস মিলিবে এথাই ॥

- ১। কেন বা পীরিত কৈছু কালা কাস্থ্র সনে।—পাঠান্তর।
- । त्यांत—त्यन— शांठां खत्र ।

262

ধরম করম গেল থাকু গরবিত। **অবশ করিল কালা কান্যুর পীরিত**। चरत शरत कि ना वरन कतिव हाम कि। কেবা না করহের প্রেম আমি সে কলভী। বাহির হইতে নারি লোকচরচাতে। হেন মনে করে বিব খাইয়া মরিতে 🛭 একে নারী কুলবভী অবলা বলে লোকে। কামু পরিবাদ হৈল পুড়িয়া মরি লোকে। খাইতে নারি যে কিছু রহিতে নারি ঘরে। ভাবিতে ভাবিতে ব্যাধি সাধাইল অন্তরেশ আরিলেক তমু মন ব্যাপিল, শরীর। **ठ**श्चीमान वरन जान हंदेरव क्वक्रित ॥

>- ১০। একে নারী কুলবভী পুড়ে মরি শোকে। তাহে কান্ত-পরিবাদ দের পাপ লোকে।

<del>---পাঠান্ত</del>ৰ ।

¢

٥٤

उडि ।

কি হৈল কি হৈল মোর কামুর পীরিভি। আঁখি ঝোরে পুলকেতে প্রাণ কাঁদে নিভি। क्षेट्रेल मात्रान्डि नाहे निंग, रशन मुद्र । কামু কামু করি প্রাণ নিরবধি ঝুরে ॥ নবীন পাউসের মীন মৰণ না জানে। নব অমুরাগে চিত নিষেধ না মানে 🛚 এনা রস যে না জানে সেনা আছে ভাল। হৃদয়ে বিঁধিল মোর কাম্ব-প্রেম-শেল ॥

ইথে চণ্ডীদাস কবি হইল ফাঁফর॥ ে। নৰীন পাউস--নৃতন চস।

নিগৃঢ় পীরিভিখানি আরভির হর।

- निदेवध-देशब्ब-शाठीखत् ।
- এনা-এই; সেনা-সেই। বিধিল--রহিল--পাঠান্তর।
- ১০। कवि—व**फ**।—शांठीखन्न।

সেই হৈতে সোর মন নাহি হয় সম্বরণ নিরস্তর বুরে চুটি জাঁখি। একলা মন্দিরে থাকি **ক্**ভূ তারে নাহি দেখি ৫ সে কছু না দেখে আমারে। আমি কুলবতী রামা সে কেমনে জানে জামা कान भने कहि पिन **डा**रत ।

না দেখিয়া ছিন্দু ভাল দেখিয়া অকাল হল না দেখিলে প্ৰাণ কেন কাছে।

চণ্ডীদাস কৰে ধনি কামু সে পরশ্যণি ঠেকে গেলা মোহনিয়া ফাঁদে।

জনম গোঁয়াতু ছুখে কভ বা সহিব বুকে কামু কামু করি কত নিশি পোহাইব। অন্তরে রহিল ব্যথা কুল শীল গেল কোথা কামু লাগি গরল ভখিব ৷ কুলে দিমু ভিলাঞ্চলি **७**ऋ मिर्छ मिश्रू वांनि ৫ কামু লাগি এমতি করিমু। ছাড়িমু গৃহের'সাধ কাসু কৈল পরিবাদ তাহার উচিত ফল পাইকু ॥ অবলা না গণে কিছ এমতি হইবে পিছু তবে কি এমন প্রেম করে। **डांग मन्द्र नाहि कारन** পরমুখে ধেবা শুনে ঠেই ত অনলে পুডে মরে॥ वष्रु हशीषाटम क्य প্রেম কি আনল হয় च्धूरे (व च्धांमग्र नार्ग। ছাড়িলে না ছাড়ে সেহ এমতি দারুণ কেই ১৫ नमारे विद्याद माटक काटन ॥ ে। শুরু দিঠে দিছু বালি—শুরু জনকে অপমানিত ও ছ:খিত করিলাম।

१८१—काटन—शांत्रकः

কাহারে কহিব मटनत्र मतम কেবা বাবে পরতীত। হিয়ার মাঝারে मन्म दक्ता

সদাই চমকে চিত। দাড়াইভে নারি ৫ मन इन इन जारि।

পুলকে আকুল দিক্ নেহারিতে সব শ্রামমর দেখি ॥ স্থীর সহিতে অলেরে বাইতে সে কথা কহিবার নয়।

যমুনার জল करत वंशमन ভাহে কি পরাণ রয় 🛭

कुरलत धत्रम রাখিতে নারিমু কহিলাম স্বার আগে।

কহে চণ্ডীদাস শ্রাম স্থনাগর ১৫ ननारे हियाय कार्या।

वर्रे ।

আনিল অমিয়া-পানা চুধে মিশাইয়া। লাগিল গরল যেন মিঠ তেয়াগিয়া। ভিভায় ভিভিল দেছ মিঠ হবে কেন। चलस অনলে যেন পুডিছে পরাণ॥ वाहिद्र अनम चरम स्मर्थ भव स्मर्थ । অস্তর পুড়িয়া উঠে তাপ লাগে বুকে 🛭 পাপ দেহের তাপ মোর খুচিবেক কিসে। কামুর পরশে বাবে করে চণ্ডীদানে ।

১। অমিরা-পানা---অমৃতের সরবৎ।

२। मिठ-मिहेच।

একে काल देशन भारत नग्रीन द्योवन। व्यात काम देशम (मात वाम क्रम्मावन ॥ व्यात कान दिन स्मात कपरश्चत छन। আর কাল হৈল মোর যমুনার জল। আর কাল হৈল মোর রভন ভূষণ। জার কাল হৈল মোর গিঞ্জিগোবর্দ্ধন 🛭

¢

>0

¢

١.

এত কাল সনে আমি থাকি একাৰিনী।

এমূন ব্যথিত নাই শুনরে কাহিনী॥

• বিল চণ্ডীদাস কৰে না কহ এমন।

কার কোন দোৰ নাই সব এক জন॥

465

यहरे ।

কেন বা কামুর সনে পীরিতি করিমু।
না মুচে দারুণ লেহা ঝুরিয়া মরিমু ॥
আর ছালা সইতে নারি কত উঠে তাপ।
বচন নিঃস্ত নহে বুকে খেলে সাপ॥
জনম হৈতে কুল গেল ধরম গেল দুরে।
নিশি দিন মোর মন কামু লাগি বুরে॥
নিষেধিলে নাহি মানে ধরম বিচার।
বুকিমু পীরিতের হয় স্বতন্ত্র আচার॥
করমের দোষ রে জনমে কিবা করে।
কহে বড় চণ্ডীদাস বাঞ্জীর বরে॥

•••

**a** ı

যাহার সহিত যাহার পীরিতি
সেই সে মরম জানে।
লোকচরচায় কিরিয়া না চাই
সদাই অস্তরে টানে ॥
গৃহকর্ম্মে থাকি সদাই চমকি ৫
শুমরে শুমরে শুমরে মরি।
নাহি হেন জন করে নিবারণ
যেমত চোবের নারী॥
ঘরে শুরুজনা গঞ্জয়ে নানা
ভাহা বা কহিব কি।

বন্ধর কারণ সে 🛙

মৰণ সমান

কাহারে কছিব কেবা নিবারিবে

কে জানে মরম-ছুখ।

চণ্ডীদাস কছে করছ ঘোষণা ১৫

ভবে সে পাইবে স্থুখ।

১৪-১৬। ছঃধের কথা প্রকাশ করিয়া বদিলে ছঃখ কমিয়া

गोरेदा ।

গান্ধার। ,

धिक तक कोवरन (य भवाधीन कीरय । তাহার অধিক ধিক্ পরাধীন হয়ে। এ পাপ কপালে বিহি এমতি লিখিল। ফুধার সায়র মোর গরল হইল॥ অমিয়া বলিয়া যদি ডুব দিসু ভায়। Œ গরল ভবিয়া যেন উঠিল হিয়ায় 🛚 শীতল বলিয়া যদি পাষাণ করি কোলে। পীরিতি-অনল-ভাপে পাষাণ সে স্বলে। ছায়া দেখি বসি যদি তক্ষলতা বনে। খুলিয়া উঠয়ে ভমু লভা পাভা সনে 🛭 20 यम्नात करन शिया यपि पिरे याना । পরাণ জুড়াবে কি অধিক উঠে তাপ ॥ অতএ এ ছার পরাণ যাবে কিসে। निहरत अधिम मुद्दे अ शतन विद्य ॥ চণ্ডীদাস কৰে দৈব গতি নাছি জান। 24 দারুণ পীরিতি মোর বধিল পরাশ । আমি ক্লফ-প্রেমের অধীন হইরাছি বলিরা অপরে বাহাতে হ্ৰৰ পার, আমি ভাহাতে পাই না।

১৩। এডএ—অডএব। • ১৪। নিচয়ে—নিশ্চয়।

968

কালিরা বলিরা বলিরা বলিরা জনমে কি হুখ পাসু। হিল্লা দগদগি পরাণ পোড়নি মনের আগুনে মনু॥ **শরিয়া গেম্থ** ৫ মরিকু মরিকু ্ঠেকিছু পীরিভি-রদে। আর কেহ জানি এ রসে ভুলে না र्छिक्ल जानित्व (भाष ॥ বিহি নিদাকুণ এ ঘর করণ বসভি পরের বশে। মাগ এই বর মরণ সকল কি আর এ সব আশে॥ এখনি কানিলে আর কি জানিবে জানিবে পীরিতি শেবে। পেয়েছি সে ধনে ১৫ অনেক যতনে তাহা জানে চণ্ডীদাসে #

•

সতী কুলবতী সে সৰ যুবতী, হাম কলৱিনী রাধা ।

এ ঘর করণ বিধি নিদারুণ পীরিভি পরের বলে।

হেন করে মন হউক মরণ

আর বত অপবশে ।
বাহির বেড়াতে লোকচরচাতে
. বহুষ হইল ব্বে ।

পীরিভি বলিয়া বভেক বৈরী ১৫

আপন বলিব কারে 
রাধা মেনে কেহ নাম নাহি লবে

এখানে অমনি মলে।

চণ্ডীদাস বলে সবারে পাইবে
বঁশু আপনার হলে॥ ২০

**a** ,

কত ষর বাহির হইব দিবারাতি।
বিষম হইল কালা কামুর পীরিতি॥
খাইতে না ক্রচে অর শুইতে না লর মন।
বিষ মিশাইলে বেন এ ঘর করণ॥
পাসরিতে চাহি বদি পাসরা না যায়।
ভূবের অনল যেন জলিছে হিয়ায়॥
হাসিতে শ্যামের সনে পীরিতি করিয়া।
নাহি যায় দিবা নিশি মরয়ে কুরিয়া॥
পীরিতি এমন জালা জানিব কেমনে।
ভবে কেন বাড়াই লেহা কালিয়ার সনে॥
স্বীরিতি-গরলে মোর হেন গতি জেল।
আহিল সোনার দেহ হৈয়া গেল কাল॥
ভিলেক বিচ্ছেদ পাপ পরাণে না সহে।
এমন পীরিতি ভিল্ল চণ্ডীদাসে কহে॥

७७१ यहरे ।

পীরিতি লাগিয়া দিসু পরাণ নিছনি।
কাসু বিনে দোসর ত্ন কাণে নাহি শুনি॥
রূপ নিরখিয়া আরতি নাহি ছুটে।
বোল কি বলিতে পারি বত উঠে চিতে॥
মনোদ্ধবে জন্মে,সদাই সোঙ্রিয়ে।
কাসুপরসন্থ বিসু ভিলেক না, ভায়ে॥

>•

বাহার লাগিয়া আমি কাঁদি দিবারাতি।
নিছিয়া লয়েছি তারে কুল শীল জাতি॥
আর যত অভিমান দিসু বঁধুর পায়।
বড় চঙীদাস কহে বেবা বাবে তায়॥

\_\_\_\_

-----

যদি বা পীরিভিথানি স্কলনের হয়। নয়নে নয়নে মিলন হইলে ভবে সে ফিরিয়া লয়॥ বে মোর পরাপের মরম ব্যথিত

ভাবে বা কিসের ভয়। অভি দ্বরন্তর বিষম পীরিভি

সৰলি পরাণে সয়॥

অবলা হইয়া বিরলে রহিয়া

না ছিল দোসর জনা।

হাসিতে বাঁশীতে গীতের ঝামরু ১০

এ বড় **স্থগড়**পণা॥

বেন মলয়জ শিলায় ছবিতে

অধিক সৌরভ হয়।

শাম বঁধুয়ার ঐছন পীরিভি

विक हशीमांत्र कय ॥ >৫

১-৩। বদি বা পীরিতি স্থলনের হয়।

নয়নে হইণ মিলন

তৰে কেন প্ৰেম ফিরিরা না লয় ॥—পাঠান্তর। ১০-১১। হাসিতে হাসিতে পীরিতি করিয়া

পরাণ উপরে হানা ।—পাঠান্তা।

४२। यनत्रज्ञ- ठलन।

\*\*\*

SINIT I

ষক্ত নিবারিয়ে চিতে নিবার না যায় রে। আন পথে চলিতে চায় আন পথে ধায় রে। এ হার রসনা মোর হইল কি বাস রে।

বার নাম না কইৰ তার নাম কর রে॥

এ হার নাসিকা মুই কত করু বন্ধ।

তবু ত দারুণ নাসা পার তার গন্ধ॥

পে কথা না শুনিব করি অনুমান।

পরসক্তে শুনিতে আপনি বার কান॥

ধিক্ রন্ধ এ হার ইন্সির মোর সব।

সদা সে কালিয়া কানু হর অনুভব॥

চণ্ডাদাস বলে রাই ভাল ভাবে আছ।

মনের মরম-কথা কারে জানি পুছ॥

¢

١.

১। চিতে—ভার।—পাঠান্তর।

২। আন পথে বাই সে কান্তু পথে ধার·রে II—পাঠান্তর।

•

**a**.

কোন্ বিধি সিরজিল কুলবতী নারী।
সদা পরাধীন ঘরে রহি একেশরী॥
ধিক্ রক্ত হেন জন হয়ে প্রেম করে।
বুধা সে জীবন রাখে তথনি সে মরে ॥
বড় ডাকে কথাটি কহিতে যে না পারে।
পরপুরুবেতে রতি ঘটে কেন ভারে॥
এ ছার জীবনের মুই খুচাইমু আল।
চণ্ডীদাস কহে কেন ভাবহ উদাস॥

....

বিহাপড়া।

ধাতা কাতা বিধাতার কিখানে দিরে ছাই।
জনম হৈতে একা কৈলে দোসর দিলে নাই।
না দিল রসিক মৃচ পুরুবের সনে।
এমতি আছিল মোর এ পাপ বিধানে।
বার লাগি প্রাণ কাঁদে তার নাহি দেখা।
এ পাপ করমে সোর এমতি লেখা কোঁধা।

¢

>0

া বাৰ মুখানে আগুন দিয়া বাৰ বঁ ধুর পালে।
আয়তি পীরিতি তবে ক্ষে চণ্ডীদানে।

গাতা কাতা বিধাতার কপালে দিয়াছি ছাই।

ফাতা—কর্তা ]

—পাঠান্তর।

০। না দিশ বসিক জন মোর পুরুবের সনে।—পাঠান্তর।

१। वान व धून भारम-नान प्रतराम !--

৮। আরতি পুরিবে কহে বিজ চণ্ডীদানে ॥---

914 B :

কাহারে কহিব ছখ কে জানে অন্তর।
বাহারে মরুমী কহি সে বাসয়ে পর॥
আপনা বলিতে বুঝি নাহিক সংসারে।
এত দিনে বুঝিতু সে ভাবিয়া অন্তরে॥
মনের মরম কহি জুড়াবার তরে।
বিশুপ আগুন সেই জালি দের মোরে॥
এত দিনে বুঝিলাম মনেতে ভাবিয়া।
এ ভিন ভুবনে নাহি আপন বলিয়া॥
এ দেশে না রব একা বাব সূর্দেশে।
সেই সে যুক্তি কহে বিজ চঞ্চাদাসে॥

७१७ शन्ति ।

শিশুকাল হৈতে প্রবণে শুনিস্
সহজ্প শীরিতি কথা।
সেই হৈতে মোর তম্ম জর জর
ভাবিতে জন্তরে ব্যথা॥
দৈবের ঘটিতে . বঁধুর সহিতে ৫
মিলন হইবে ববে।
মান অভিমান বেদের বিধান

থৈরজ ভালিবে তবে ॥ জাতি কুল বাল দিভাম ভিলাঞ্চলি . ° ছাড়িমু পভির আশ । शतम क्त्रम সকলি করিতু নাশ 🛚 कूल कनकिनो विन (सम्र गानि 🖰 -প্রকু পরিজন মেলি। কাডর হইরে चामन कतिएव ১৫ লইমু কলছের ভালি 🛭 চোরের মা বেন পোরের লাগিয়া क्कति कैंक्टिक नारत । কুলবভী হয়ে পীরিডি করিলে এমতি ঘটিবে ভারে 🛚 মুই অভাগিনী क्तरण प्रभिनी नकनि भरतत्र आए। পীরিভি করিমু আপনা খাইয়া লোক শুনি কেন ছাসে। পীরিভি লক্ষণ ২৫ চণ্ডীদাস বলে শুন গো বরজ-নারি। পীরিভি ঝুলিটি কাঁধেতে করিয়া

415

পীরিভি নগরে কিরি॥

ে। ষ্টিভে—ষ্টনার।

কালার পীরিতি গরল সমান
না খাইলে থাকে স্থাধে।
গীরিতি জমলে পুড়িরা মরে বে
জনম যার ভার ত্থে।
আর বিব থেলে তথান মরণ ৫
এ বিবে জীবন শেব।
সলা ছট্কট্ যুক্লিন নিপট
লট পট ভার বেশ ঃ
ময়নের কোণে চাহে বাঁহা পারে
সে হাড়ে জীবনের আশ। ১০

ঠেকিয়া রহিল ' কহে বড়ু চণ্ডীদাস॥ নিৰুড়া। ধে জন না জানে পারিতি সরম সে কেন পীরিতি করে। আপনা না বুবে পরকে মজায় পীরিতি রাখিতে নারে। বে দেশে না শুনি পীরিভি মরম ৫ त्नि एएट हाम बाव। মনের সহিত ক্রিয়া বডন मनरक প্রবোধ দিব । পীরিভি রভন করিয়া যতন পারিতি করিব তায়। ১০ চুই মন এক করিতে পারিলে ভবে সে পীরিভি রয়॥ কৰে চণ্ডাদালে মনের উল্লাসে এমতি হইবে বে। সহজ ভজন পাইবে সে জন ১৫ সহজ মানুৰ সে । সিম্বড়া। পীরিতি বিষম কাল। পরাবে পরাবে মিলাইতে জানে 👺 ভবে সে পীরিভি ভাল 🛭 ভ্ৰমরা সমান আছে কড জন মধুলোভে করে প্রীত। উড়ি বার চলি मधु कुत्रादेख ্ এমতি ভাদের রীভ ॥

হেন জনরার

🧭 সে মধু করিতে পান।

, সাধ নহে কডু

পীরিভি পীরিভি কি রীতি সুরতি क्रमरत्र गांत्रिम रम । পীরিতি না ছাডে পরাণ ছাডিলে পারিতি গড়ল কে। পীরিভি বলিয়া এ ডিন জাখর ৫ না জানি জাছিল কোণা। পীরিতি কণ্টক सम्दर्भ कृष्टिन পরাণ পুতলি বধা । পারিভি পারিভি পারিভি সানল বিশুণ স্বলিয়া গেল। পীরিতি আনল নিভাবে না নিভার े ভদরে রহিল শেল । 💙न विदनांतिन চণ্ডাদাসের বাণী পীরিতের না ৰও কথা। পীরিভি লাগিরা

পীরিতি লাগিরা পরাণ ছাড়িলে ১৫ পীরিতি রহিবে কোণা ৪ ৬। প্রবণে শুনিভাদ কণা ।—পাঠাভর।

>>->২। বিষম জনল নিভাইলে নছে হিনাম রহিল শেল ঃ—পাঠান্তর।

১৪। পীরিভি না করে কথা।—

১৬। পীরিতি বিশাস তথা।—

च्यावि ।

- কেনে কৈন্দু পীরিভির সাধ। পীরিভি ব্যব্ধ হৈতে বভ তুখ পাইন্দু চিভে **अनिटल शर्भिटर शत्रवाप ॥** मूं रे यति जानिजू এড ভবে কেন হব রভ ূনা ক্রিডুঁ হেন সব কাজ। ভূলিমু পরের বোলে কুলটা হইমু কুলে অগৎ ভরিয়া রইল লাভ। বখন পীরিভি কৈল জানি চাঁদ হাতে দিল পুন ভাছে না পাই দেখিতে। কি করিতে কি না করি বুরিয়া বুরিয়া মরি ১০ जबरनरव थान हात्र निष्ठ ॥ পীরিতি ভাঁখর তিন यांहात्र स्रष्टत्र हिन ভার কিবা লাজ কুলভয়। কৰে দিক চণ্ডাদাস যে করে পীরিতি আশ ভার বুঝি এই সব হয় ৷ ১৫

41

পীরিতি বলিরা এ তিন জঁখির

এ তিল জুবন-সার।

এই বোর সলে হর রাতি দিনে

ইহা বই নাহি আর ।

বিহি একচিতে ভাবিতে ভাবিতে ৫

নিরমাণ কৈল পী।

স্থার সাররে , মধন করিয়া ভাহে উপজিল রি !

পীরিভি-রসের সারর যথিয়া ভাহে উপজিল ভি। ১০

সকল হুখের এ ভিন জাঁথর

• উপৰা বলিব कि ॥

বাহার সরমে পশিল বডরে এ ভিন জাখন সার।

ধরদ করদ সরম ভরদ ১় ় কিবা ভাতি কুল ভার ৷ এ হেন পীরিতি না ভানি কি রীতি

পরিণামে জানি হয়। পীরিতি বন্ধন না বার খণ্ডদ বিজ চণ্ডীয়াসে কয়।

৭। রনের সাগর সহন করিছে।—পাঠান্তর।

৯-১০ ) পুনঃ বে মথিরা অধিরা হইল ভাহে ভিরাইল ভি।—পাঠান্তর।

১২। ভুলনা দিব বে কি॥—

১৬। কি ভার জনমে আর।—

১৯। পীরিতি বন্ধন না বার বঙ্কন।— "

**W**o

ৰী। পীরিভি পীরিভি মধুর পীরিভি এ ভিন ভূবনে কয়।

পীরিতি করিয়ে বেশিলাস ভাবিয়ে কেবল গরলময় ৷

পীরিভের কথা শুনিব হে বেখা ৫ তথায় নাহিক বাব।

সনের সহিত করিয়া পীরিড শুরূপে চাহিয়া রব ॥

এমতি করিয়া স্থমতি হ**ই**র। রহিব স্বরূপ আশে।

স্বন্ধপ প্রভাবে সে রূপ নিলিবে ক্তে বিজ চণ্ডীদাসে ॥

41

শ্রামের পারিতি মূরতি হইলে ভবে কি পরাণ কলে।

পরাণ পীরিতি স্থান করিলে ் কে ভারে জীয়ন্ত কলে। ৰদি হাম খাম বঁধু লাগি পাউ ৫ তৰে সে এ ছখ টুটে। জান উপায় শুনি মনের আগুনি वंगदक वंगदक छेर्छ । পীরিভি পরশ পৰাৰ ৰডন **जू**किन् समग्र पूरण। পীরিভি রভন অধিক হইল পরাণ উঠিল চুলে ॥ লাভি কুল বলি দিয়ে ভিলাঞ্চলি কি আর সভী চরচাতে। कोवन दर्शवन ১৫ তমু ধন জন নিছিমু কালা পীরিতে। হিয়ায় রাখিব কারে না কহিব পরাবে পরাণ জোডা। ৰি স্বানি কি স্কেণে कि पिया कि कित মরিলে না যায় ছাভা ॥ ভিবেক সরিবে यकि ना दक्षिद्रम नग्रत चन्ति रच्छ। करह हखीमांग মরমে রহিল পীরিতি অমিয়া সিজু। . ६-७। नहें, बाँच (न छात्र ধনের লাগি পাউ क्दन दन ज इन इटि ।--- शांतिका । ৭। স্থান মত গুণি— ) श्रांव गंगान পীরিতি রতন— " ১১। পীরিভি বেয়াধি বিশ্বণ হইল---১৫-১৪। चांकि कुन वनि पिष्ट चनाक्षण আর সভী চরচাতে।---পাঠান্তর।

•••

বিধির বিধানে হাম আনল জেলাই।

যদি সে পরাণ বঁধু তার লাগি পাই ।

শুকু সূরজন যত বঁধুরে বেষ করে।

সন্ধ্যাকালে সন্ধ্যামূনি তার বুকে পড়ে ।

আপন দোষ না দেখিয়া পরের দোষ গায়।

কাল সাপিনী যেন তার বুকে খায় ॥

আমার বঁধুকে যে করিতে লহে পর।

দিবস স্থারে বেন পুড়ে তার হর ॥

এতেক মুবতী আছে গোকুল নগরে।

কে না বঁধুকে দেখে বুক ফেটে মরে ॥

১০

বাশুলী আদেশে ছিল চণ্ডাদাস ভণে।

তোমার বঁধু তোমার আছে গালি পাড়িছ কেনে ॥

১। বিধির বিধান---গার্হস্থা ও সামাজিক রীতি-নীতি।

४। नक्तांत्र्नि— এक त्रकम नान ।

**3** 

ছার দেশে বসতি নাহি দোসর জনা।

মরমের মরমী নৈলে না জানে বেদনা ।

চিড উচাটন করে মন বাপু বাপু ।

ননদীর বচনে পাঁজরে বিঁধে মুমু ।

ভালার উপরে ভালা সহিতে না পারি।

বুধু মোর বিমুখ হৈল ননদিনী বৈরা ।

ভরজন কুবচন সদা শেলের ঘার।

কলভে ভরিল দেশ কি হবে উপার ।

বাশুলী কহার বলে চণ্ডীদাস গাঁড।

আপনার চিড ধনি করহ সভিত ।

০০০। চিত উচাটন সদা কত উঠে মনে।

ননদী-বচনে মোর পাঁজর বিধে পুণে ।—পাঠাভর।

৯-১-। বাওলী আদেশে কৰি চঙীদানের গীত।

ৰাপনা ৰাপনি চিত করহ সহিত ।---

41 পীরিভি পীরিভি সব জন কছে পীরিতি সহল কথা। বিরিখের ফল নহে ভ পীরিভি नाहि मिल यथा उथा ॥ গীরিভি **অন্তরে** পীরিতি মন্তরে ৫ পারিভি সাধিল যে। পীরিভি রডন ' লভিল যে বন বড় ভাগ্যবান্ সে॥ পীরিভি লাগিরা আপনা ভূলিরা পরেতে মিলিভে পারে। পরকে আপন করিতে পারিলে भौतिजि विलहत्र जादत । कृरे चुठीरेया এক অঙ্গ হও থাকিলে পীরিতি আশ। পীরিভি সাধন বড়ই কঠিন ১৫ . কৰে বিজ চণ্ডীদাস ।

পীরিতি বলিয়া এ তিন জাঁখর
বিদিত ভূবনমাবে।
তাহে বে পশিল সেই সে জানিল
কি তার কুল-জয় লাজে।
বেদ-বিধিপর সব জগোচর ৫
ইবা কি জানে জানে।
রসে গর গর রসের জন্তর
সেই সে মরম জানে।
ছঁত্তক অধর ভ্রথারনবানী

>•

🕟 ভাহে 💆পঞ্জিল পী।

०। विति(धत-वृत्कत।

হিরার হিরার পরশ করিতে
তাহার তুলনা কি ॥
কহে চণ্ডীদাস শুন বিনোদিনি .
পীরিতি রসের ভোর।
পীরিতি করিরা ছাড়িতে নারিবে ১৫
আপনি হইবে চোর।।

.

পীরিতি নগরে বদভি করিব পীরিতে বাঁধিব ঘর। পীরিভি দেখিয়া পড়সী করিব তা বিন্দু সকল পর 🛚 পীরিতি খারের কপাট করিব ৫ পীরিতে বাঁধিব চাল। পীরিভি আসকে সদাই থাকিব পীরিতে গোঁয়াব কাল। পীরিতি পালঙ্কে শয়ন করিব পীরিভি শিখান মাথে। পীরিভি বালিসে আলিস ভ্যবিব থাকিব পীরিভি সাথে 🛭 পীরিভি সরসে সিনান করিব পীরিতি অঞ্চন লব । পীরিভি করম ১৫ পীরিভি ধরম পারিতে পরাণ দিব । পীরিভি নাসার বেশর করিব ष्ट्रशिद्य नग्नान कार्य । পীরিতি অঞ্চন লোচনে পরিব ছিল চনীদাস ভণে। ৭। আসকে—আসক্তিতে অধবা 'আসক্' বা 'এসুক্' वेर्क् ७ भारती मृत्यत वर्षदे 'दबाव', भौतिष ।

সাগর দেখিয়া পীরিভি রসের নাহিতে নামিলাম ভার। নাহিয়া উঠিয়া কিরিয়া চাহিতে লাগিল ছুখের বায় 🛭 কেবা নির্মিল (अम-मदबावब ৫ সুধাময় তার জল। কিরে নিরস্তর তুখের মকর প্রাণ করে টলমল ॥ গুরুজন-ছালা स्टाय (महला পড़मी किंडन मारह। কুল পানীফল কাঁটাভে সকল সলিল ঢাকিয়া আছে । কলঙ্ক পানায় मना नाटम भाग्र इंगिया थारेन यपि। অস্তর বাহিরে कूठू कूठू करत ১৫ ञ्र्थ ছूथ मिल विधि॥ 🕶 বিনোদিনি কৰে চণ্ডীদাস হুখ ছুখ ছুটি ভাই। যে করে পীরিভি স্থাৰে লাগিয়া ছুখ ভার ঠাই ঠাই। 2. ) । बरमब—<del>श्र</del>ूरथब ।—शांठीसब । । स्थामब-निवमन।-- " ১২। ঢাকিয়া—বেড়িয়া।— " কুলের ধরম ভরম সরম

नक्लि रिक होड़ा।

**এ**द्रित रहेन गांग ।

় পীরিভি করিত্র

হাসিতে হাসিতে

পারিপামে হব ৫ কে জানে এমন এমন পাইব ছুখ। ক্রিমু আরতি তবে কি পীরিতি এ হেন প্রেমের হৃষ । এই দেখি ধারা প্রেম হৈল হারা বাঁচিতে সংশয় ভেল। আছিল আমার সোনার বরণ কাল হৈয়া গেল ॥ চণ্ডাদাস বলে শ্রামের পীরিভি (य धनी कत्रिय़ाट्य । পীরিভি আদর সে জন করিয়া ১৫ কেবা কোপা ভাল আছে ৷

चरहें।

জনম গেল পরছুখে কত বা সহিব।
কামু কামু করি কত নিশি পোহাইর ॥
অন্তরে রহিল বাধা কুলে কি করিবে।
জমুরাগে কোন দিন গরল ভবিবে ॥
মনেতে করেছি কুলে দিব তিলাঞ্চলি।
দেশান্তরী হব গুরুদিঠে দিরা বালি ॥
ছাড়িমু গৃহের সাধ কামুর লাগিরা।
পাইমু উচিত কল আগে না বুরিয়া ॥
জবলা কি জানে এমত হইবে পাছে।
ভবে এমন প্রেম করির কেন বেচে ॥
তবে এমন প্রেম করির কেন বেচে ॥
তবৈ সন্দল পুড়ি বার দের প্রাণ ॥
চঙ্গাদান কর প্রেম হর স্থাময়।
কপালক্রমে জমুডেতে বিষ উপজয় ॥

.

পারিতি নগরে বসতি করিব পারিতে বাঁধিব ঘর। পারিতি পড়সী পারিতি প্রেয়সী অক্ত সকলি পর॥

পীরিতি সোহাগে এ দেহ রাখিব ৫
পীরিতি করিব বল ।
পীরিতির কথা পাই কহিব

পীরিতে গোঁয়াব কাল ।

পারিভি-পালম্বে শরন করিব পীরিভি-বালিশ মাধে।

পীরিভি-বালিসে আলিস করিব রহিব পীরিভি সাধে ॥

পীরিতি সায়রে সিনান করিব

পীরিতি জল বে খাব। পীরিতি ছখের ছখিনী বে জন ১৫

ু পরাণ বাঁটিয়। দিব ॥

পীরিভি বৈশর নাসাতে পরিব

ं ब्रहिव वर्षुय्रो जत्न ।

क्षमग्र-शिक्षरत शीतिष्ठ धूरेव

বিজ চঙীদাস তণে॥

**A**.

**a** 1

থিক রছ কুলবতী কুল তেয়াগিয়া।
মররে থলের সনে লেহ বাড়াইয়া।
চিকণ চাঁচর কেশ রেশ থোরাইয়া।
ধূলার ধূসর কাঁদে নিশি পোহাইয়া।
ভাতি কুলশীল দোবে ভার গুরুজন।
কাহারে না কহে সেই মরম বেদন।
কে ভার মরমে আছে মরমে পশিরা।
মরস্-বেদনা ভার লইবে বাঁটিয়া।

চণ্ডীদাস কৰে সেই বেদনা জানিয়া। পীরিভি বেয়াধি রহে মরমে লাগিয়া। ১০

## स्राजनीमा।

---

শারদ পূর্ণিমা নিরমল রাভি উম্মর সকল বন।

মল্লিকা মালভী বিকশিত তথি মাতল জমরাগণ॥

ভক্লকুল-ভাল / ফুল ভরি ভাল ৫ সৌরভে পূরিল ভার।

দেখিয়া সে শোন্তা স্থামনোলোন্ডা ভূলিল নাগর রায়॥

निध्रतम जोटह त्रजन त्रविका

মণিমাণিক্যেতে বাঁধা। > ক্টিকের ভক্ন শোভিয়াছে চারু ভাহাতে হীরার ছানা॥

চারি পাশে সাজে প্রথান মুকুডা গাঁথনি জাঁটনি কড।

ভাহাতে বেড়িয়া **কুঞ্জ-কুটীর ১৫** নিরমাণ শভ শভ ॥

নেতের পতাকা উড়িছে উপরে কি তার কহিব শোভা।

অভি রম্য স্থল দেব অগোচর

কি কহিব তার আভা। ২০ মাণিকের ঘটা কিরণের ছটা

এমতি **মগুপ ঘ**র।

চণ্ডীদাস বলে অতি অপরূপ নাৰিক ভাষার পর॥

 মূল হইতে চণ্ডাদাসের 'রাসলীলার' বড় পার্থক্য নাই। তবে তিনি কৰিস্থপত কল্পনার বেপে অনেক স্থার কথা বলিরা কেলিরাছেন। প্রীরাধিকার মান, প্রস্কুক্তের গায়িকা-বেশে রাধিকার নিকট আগমন ও সলীতে তাঁহার চিত্তবিমাংল, এ সব কথা তাগবতে নাই।

कांत्रांष । . রমণী-মোহন বিলসিতে মন • হইল মরমে পুনি। शिया बुम्मावटन বসিলা বভনে রমিতে বরজ ধনী॥ পূরে বনমালী ৫ मध्य गूत्रनी রাধা রাধা বলি গান। একাকী গভীর বনের ভিতর বাজায় কভেক তান॥ অমিয়া নিছনি বাজিছে সঘন मधूत भूतनी गीछ। অবিচল কুল রমণী স্কল শুনিয়া হরল চিত॥ ভাবণে বাইয়া রহল পশিয়া বেকত বালিছে বাঁশী। ভাৰুয়ে মুরলী ১৫ আইস আইস বলি বেন ভেল স্থারাশি # পুলক মানস আনন্দ অবশ ञ्क्माती धनी तारध। গৃহকর্ম যত হৈল বিসরিত সকল করিল বাধে। বতেক রমণী রাইএর অগ্রেভে কহয়ে মধুর বাণী। ঐ ঐ শুন কিবা বালে ভান কেমন ক্রিছে প্রাণী। সহিতে না পারি মুরলীর ধ্বনি ২৫ পশিল হিয়ার মাঝে। হইল বাউন্নী ' वंत्रण-७ऋगी হরিল কুলের লাজে। ক্ষেহ পতি সনে আছিল শন্ননে ত্যবিরা তাহার সদ। 9.

কেহ বা আছিল স্থীর সহিত কহিতে রম্ভল রঙ্গ ॥ কেহ বা আছিল ष्ट्रयं जावर्स्टरन চুলাতে রাখি বেশালি। ত্য**জি আ**বর্ত্তন হই আগুয়ান ৩৫ े इन रन राम हिन ॥ কেহ শিশু লয়ে কোলেভে করিয়ে হ্বশ্ব করার পান। শিশু কেলি ভূমে চলি গেল জ্ঞমে শুনি মুরলীর গান॥ ৪০ কেছ বা আছিল শয়ন করিয়া नग्रत्न चाहिन नोप । বেমন চোরাই হরণ করিল মানসে কাটিল সিঁদ 🏽 কেহ বা আছিল রন্ধন করিতে ৪৫ ভেমতি চলিয়া গেল। ক্ষমুখী হৈয়া यूत्रनी छनिया সব বিসন্নিভ ভেল 🛭 সকল রমণী ধাইলু অমনি কেহ কাহা নাহি মানে। ৫০ যমুনার কুলে কদন্বের মূলে মিলল শ্রামের সলে॥ **ত্রজনারীগণে** দেখিয়া ভখনে হাসিয়া নাগর রায়। রাস-বিশসন कतिम ब्रह्म ৫৫ বিব্দ চঙীদাস গায় ॥ রম**ী**মোহন त्रमश्च त्मास्टिक त्म प्रिंग क्यम (वर्भ । চূড়ার টালনি কি বা সে বাঁধনি

বিচিত্ৰ স্থান কেশ 🏽

ा (एचि त्रम्भा कोएर)। ্বৈজিয়া ছুধারে ৫ মণি হেমমালে তাহাতে মুকুতা-মাল। নব মধু ধেন পিয়ে॥ হাসির হিলোলে ভারা। প্রবাল গাখিয়া তাহে ধরি দিয়া ে দেখ না শোভিছে ভাল । অমিয়া বরিখে ধারা 🛭 নব নব ফুলে মল্লিকার মালে নবীন চাতক যেন। খনরস পিয়ে খন ॥ ভ্ৰমর ধাওল কোটা। 20 উড়ি বৈসে ভাহে চাহনি চঞ্চল শরে। পরিমল আশে ভারা কি রহিবে ঘরে॥ কিবা ভাহে পরিপাটী॥ ছুকাণে শোভিত কদ**ন্থে**র ফুল নব নব বেশখানি। त्रहिट्य कान वा धनी॥ কি শোভা কহিব তায়। মুরলী অপার গান। 54 ময়ুর শিখণ্ড यनमन करत ১৫ পাষাণ গলিয়া যান॥ তাহে সে উড়িছে বায় । সে নৰ চলন গভি। নাগর বরণ दयन नवघन মদন মোহিত তথি॥ অঞ্চন গণিয়ে কিসে। চণ্ডীদাস রূপ হেরি। ভাঙ-ধন্ম বাণে কামের কামানে মূর্চিছত ধরণী পড়ি॥ २० त्रमशे दानएत्र किएन ॥ মন্দ মন্দ হাসি করে লয়ে বাঁলী মৃগমদ মাথা গায়। दरहें। সোনার বরণ নানা আভরণ বেশ সে স্থবেশ অতি মনোহর <sup>\*</sup> রভন-মূপুর পায় ॥ মোহিতে অবলাগণে। করিতে বতন ২৫ त्रमणी त्रमण নানা আভরণ করল শোভন নাগরশেখর রায়। अन्नो नाहिक जारन ॥ নিভূতে উঠিয়া এমত মুরভি স্থাের আরতি নাগর শেখর ৫ বিজ চণ্ডাদাস গায় # ত্যজিয়া আনহি কাজ। १। পরি-সারি-শ্রেণী। বাঁশী লয়ে করে **চ**िना मद्दर ১১। পরিমল-মধু-প্রকৃত ব্দর্থ স্থান। নানা বেশ ফুলসাজ। চলিতে গমন মদমন্ত হাতী অঙ্কুশ নাহিক মানে।. क्रांन्डा । উপজে তখন মদন বেদন মোহন বুরতি কান। আপন পর কি জানে॥ অবলা কি রহে প্রাণ। বিদ্ধিল ধামুকী মনসিজ শরে চূড়ায় মহুরের পাখা। আর কি চেতুন রহে। ় ভাহে ইন্দ্ৰধসু দেখা।

नाना श्रृंभ क्रूँটि शक्के छेनोति ১৫ নিষারণ নতে মরম বেদন ১৫ ্ মনহি মাকারে রহে॥ মধুকর মধু পার। ৰরজ-রমণী রমণ কারণ চণ্ডীদাস কয়ে কিবা স্থাশয়ে ি চলিলা গভীর বনে। নিভূত স্থচার বনে। এই রসভব সঙ্কেত বেক্ড সেখানে একাকী বৈঠল নাগর কেহ ত নাহিক জানে। ২০ প্রবেশ করিল বৃন্দাবনমাঝে এ क्षें (कह ना कारन । २० দেখিয়া নিভূত স্থান। রভন বেদিকা অভি স্থুশোভিড বৈঠল নাগর কান 🛭 कृष्टि । **অপরূপ** রাস ২৫ চণ্ডাদাস কহে নিভৃত নিকুঞ্চে কুঞ্চ-কুটীর বিহার করিল কামু। মণি-মাণিকের স্তম্ভ। করিতে পীরিভি রস-স্থুখ অভি রতন-<del>জ</del>ড়িত পরশ-পাণ্ডর স্থুই রদের ভমু। অতি **অমু**পম র**ল**॥ ২৭। রস হ্রথ রতি—পাঠান্তর। উপরে জড়িত হেম মরকভ ৫ মুকুর কিসে বা গণি। চারি পাশে শেভে মুকুতা প্রবাল গাঁথিয়া মাণিক মণি 🖁 🦚 লয় 🗐 । ষমুনার ভট অভি রম্য স্থল ঝালর ঝলকে অভি মদোহর রতন-বেদিকা ভায়। ঐছন কুটীর শোভে। নানা ভরুবর পুষ্প-বিকসিভ পূম্পের সৌরভে দশদিক্ মোহে নানা পক্ষগণ গায়॥ মধুকর ধায় লোভে। ভরুগণাবভ ফুলভারে ভারা ৫ নেভের পতাকা উড়ে অনুপাম লম্বিত ধরণীতলে। কুটার উপরে দিরা। मधू वरत कड़ ... राष्ट्र त्वकड শত শত কোটা এ কুঞ্জ-কুটার ১৫ ু মধুকর জ্ঞানে ।। সকল ভাহার ছায়া। मबूत मबूती नाट किति किति বৈঠল নাগর • চতুর-শেখর কেকম ধরিয়ে ভারা। চতুর নাগর কান। চাতক চাতকী ডাত্তক ডাত্তকী এমন আনন্দ দেখিয়া সে কুঞ্ হংস ক্লোড়ে ডাকে তারা ॥ ृ চণ্ডীদাস শুণ গান। रम्मात नीरत , जनहत्र किरत २०। **উদ্দে—অ**ভি**—পঠি। ए**त्र। भकती कितिएई जात्र।

कि ।

वन वन वन অভি নিরমল ं শরৎ পূর্ণিমার শশী। নটবর কান্সু यूत्रली वत्रत नम्दन कुणिदत्र विन ॥ কলরব করু **বভ পাৰিগণ** ৫ मञ्ज मञ्जी नाटम । ভ্রমর ভ্রমরী বাহুরু শবদে ভাহুক ভাকিছে সাধে। महन (वहन नरम्बत नम्बन ক্রিতে রাসের লীলা। ১**০** নিভূতে বসিয়া নাগর রসিয়া কামেড়ে হইয়া ভোলা। वहत्व ज्रुवन मूत्रली जनन বা**ল**য়ে কতেক তান। সংহত নিশান বাজে আন্সভান ১৫ ় ছুটল পঞ্চম গান॥ প্রিয়,রাধা বলি ডাকিছে মুরলী अनिम अवर्ष युद्ध । ষভ গোপনারী ্ৰান নহে কিছু কাননে চলুহ ভবে। ২০ বিশ্বল মরুমে হিয়া আনচান কৃহিতে কাহারে নারে। মনের বেদুন নাহি জানে আন **७नि यन हिन्नो बूद्**न ॥ .শুনিতে মুরলী . বেমত পাগলী ২৫ वटनब स्तिनी थात्र। ,ক্রাধ বাণ খেয়ে ধাওল হইয়ে 📍 विशिद्ध विम्हार । চণ্ডীদাস রলে **ত্ৰজ জনা**-চিত ٠, ্ পাকুল হইয়া গেল।

্নাহি আন কথা পাই-হিয়া ব্যথা कि वृक्षि कत्रिय वल ॥

धान 🖣 ।

শুন গোমরম স্থি।

थे अन अन मधूत मूत्रनी **डाक्टब क्यम कांचि ॥** रेथवृक्त ना भरत थांग रकमन करत ইহার উপায় বল। আর কিয়ে জীব গোপের রমণী রন্দাবনে বাব চল।। এই অমুমান করে গ্রেপীগণ শুনি সে বাঁশীর ুগীত। শুধু তকু দেখ এই তকু মোর ১০

তথায় আছয়ে চিত। মুগধ রমণী কুলের কামিনা

না জানে আনহ পথ। ষেনক চাঁদের রুসের প্রশ

চকোর অমুহি রুপ॥ সে জন পাইলে ্টাদের স্থাটি স্থাবের নাহিক ওর।

কভক্ষণে মোরা ভেটিব নাগর পাবহ তাকর কোড়।

বেন মেনুরুস ভাহাতে আবেশ ২০ চাতক না পায় বারি।

সে জন পিয়ারে না পাই জাবেশে সে জন হতাশে মরি॥ ব্দলের আবেশে চাত্র ব্রয়ে

**ट्यान**्याग्त्राहरू। २८ **अधित** तम**ो** ভবে সে **জা**য়ই जनम गिंडिक दगृहे॥

চণ্ডীদাস বলে চলছ নিকুঞ্জে
ভেটিতে নাগর কান।

ব্য শুন বাঁশী বাজে এই নিশি ৩০
দ্বিতে চলিয়া বান ॥

---
১০
জী।

কি করিতে পারে গুরু ছুরুজন
হয় হউ অপ্যশ।
চল চল যাব গুলানের বশ ॥

যা বিন্তান বা জীয়ে প্রাধিত্ব প্রস্কুর ব

চল চল যাব প্রাম দরশনে

ইথে কি আনের বশ ॥

যা বিনে না জীয়ে আঁথির পলক ৫

তিলে কত বুগ মানি।

সে জন ডাকিছে মুরলী সঙ্কেতে
ভূরিতে গমন মানি॥

কেহ বলে শুন আমার বচন
রহিতে উচিত নহে।

চল চল চল যাব রন্দাবনে

মোর মনে হেন লয়ে॥

কোন গোপী ছিল গৃহ পরিবারে
করিতে গৃহের কাজ।

গৃহ-কাজ তাজি চলিল তখনি ১৫

গ্ৰ-কাজ তাজ চলিল তখনি ১৫ বেমত আছিল সাজ॥

. আবেশে তুর্মেতে তালিয়া দিয়াছে

গাগন্ধি ভরিয়া বারি ॥ :

চলিশা তুরিতে সব তেয়াগিয়া

ছুগ্ধ আবর্ত্তন ছাড়ি। '
বুক্ষাবন মুখে তখনি চলিলা
বুহুল ডেমতি পড়ি ॥

কোন গোপী ছিল রন্ধন করিতে ২৫
তথুই হাঁড়িতে জাল ।
আনহি ব্যপ্তনে আনহি দেওল
আনহি হাঁড়িতে কাল ।
রন্ধন উপেধি চলে সেই স্থী
শ্রেবণে শুনিরা বাঁপী । ৩০
চণ্ডীদাস কহে আবেশে গমন
হয় হউ কুল হাসি ।

**30₹** 

কেহ বা আছিল শিশু কোলে করি পিয়াইভেছিল স্তন। ছ্থপোষ্য বালা ভূমে কেলি গেলা ঐছন তাহার মন॥ চ**লিল** গমন সেই বুন্দাবন ৫ कॅमिएड नाशिन भिछ। .' তেমভি চলিল সব পরিহরি চেতন নাহিক কিছু॥ কোন জন ছিল পভিন্ন শন্ননে খুমে অচেতন হয়ে। হেন বেলে শুনি মুরলীর ধানি উঠিল চেতন পেরে॥ বিচিত্ত বসনে মুখানি মুছিয়া চলল পতিরে ত্যক্তি। পতি-কোল সেই • ভ্যঞ্জিল ভখনি ১৫ **চ**निन बरमरक मानि ॥ কোন গোপী ছিল কোন আরম্ভনে তাজিয়া তথনি চলে।

রসের আবেশে কিছু নাহি আনে

कारत किছ नावि वरण । ' २०

কোন জন ছিল বেদনে হু:খিড অঙ্গেডে আছিল দোব। শুনি বংশীগীত অহ পুলকিত সৰ দুরে গেল শোষ॥ কি বা সে দেখল ২৫ **हशीमांत्र वटन** অপার অধল রামা। তেঁই সে প্রেমেডে বন্ধন সবাই 🕝 গোপের রমণী জনা ॥ 8। जब इस (भेग (भेर--भिक्र)

8। त्नांय--(वप्रना।

কাষোদ।

এক গোপী ছিল পতির শয়নে ভ্যবিয়া বাইতে ভারে। তার পতি ইহা জানিল শগ্ননে • ভাহারে ধরিল বলে॥ এত ৰিশি বল কোণারে পমন ৫ সরম নাহিক ভোর। লোকে অপবশ কুষণ কাহিনী কুলেতে নাহিক ভর। দেখি তোর রীভ বড় বিপরীত এ নিশি কোখায় বাবে। কুলটা হইলি কলম্ব রাখিলি মারি ছুখ বার ভবে 🛭 ভ্যজিরা আমারে • বাহ কোথাকারে এ বড় বিষম দেখি। বছত গঞ্জনা শুনি নিঃশবদে ১৫ রহিল কমলমুখী 🖁

ব্যন ভাষার সুমাইল পতি

. \* তথ্য ত্যজিয়া গেল।

রসের আবেশে চলিক হুন্দরী কিছুই নাহি শুনিল 🛭 💮 ২০ চলিল হুन्দরী ভয় পরিহরি বেখানে নাগর কান। **हशीमांग छर्**ग किंदूरे ना मारन এমনি বাঁশীর ভান ॥

কাৰোগ।

আর এক গোপী বাইতে বাহিরে দেখিল তাহার পতি। তাহারে রুষিয়া কভিছে গঞ্জিয়া নিশিতে বাইবে কভি ॥ একে ঘোর রাতি 🌷 ভাষাতে ত্রী জাতি ৫ ভয় নাহিক মনে। নাহি লাজ-ভয় কুলের কলঙ্ক कि कति यारेवि वतन 🧦 অনেক গঞ্জিয়া তাহারে ধরিয়া लहेग्रा भूरेन चरत्र ।

কানড়া।

ঐছন রমণী यूत्रनी अनिया আৰুল হইয়া চিতে। নিজ বেশ করে মনের সহিতে শুনিয়া মুরলী গীভে 🛭 রসের আবেশে পদ-আভরণ ৫ কেছ বা পরিল গলে। গলা আভরণ , কোন অভরামা

পরিছে চরণে ভালে 🛭

ৰাহ্য ভূষণ কনক-কন্ধণ **शतिन समग्रमात्व ।** হিয়ার ভূষণ পরিছে বডন কটিতে ভূষণ সালে॥ একহি কুণ্ডল ক্ষেহ বা পরিল শোভই একহি কাণে। এছন চলল বরজ-রমণী ১৫ रेधव्रक नाहिक मात्न॥ এক করে পরে কনক-কঙ্কণ সিন্দুর পরল ভালে। কোন জন পরে নয়নে অঞ্চন একহি নয়ন চালে॥ ২০ নানা আভরণ পরে কোন্ধানে তাহা সে নাহিক জানে। আবেশে রমণী গমন করল त्मरे दुम्मावन भारत ॥ কেছ নবরামা বসন ভূষণ ২৫ উলট করিয়া পরে। আহীর-রমণী চণ্ডীদাস কছে চলিয়া বাইতে নারে 🛭 ৮। পরিছে চরণতল<del>ে পাঠার</del>র। **a** এই মত সব গোপের রমণী চলিল, নাগরী রামা। রাই পাশে গিয়া চলিল ধাইয়া সঙ্কেত বনহি, ধামা। চল চল ধনি বাই প্রেমমণি '৫ চল চল যাৰ বনে। . রসের আবেশে করে নবরামা

क्बिट्ड वनीतः शास्त्र ॥

रेश भनि जानि ताथात अनुत्र পশিল ষভনে ভাই। তঃল ক্ৰ্ন রমণী অন্তর কহেন স্থন্দরী রা**ই**ুঃ পুন শুন শুন বন ডাকে বন বন মধুর মুরলী-ভান। শুনিতে. চমকে यूत्रमी भगरक ১৫ চিতে নাহি কিছু আন। রাধার আরভি ত স নহে পীরিতি তথাই আছুয়ে মন। র**ন্দা**বন বেতে রসের আবেশে <sup>4</sup> कश्रिष्ठ भक्त बन्। ' २० স্থময়া রাধা বেশ বনাইল বন্ধন করিল জাল। নানা ফুলদাম বেড়ি অসুপাম দিয়া মুকুভার মাল 🛚 দ্বসারি মাণিক ভার পাশে পাশে ২৫ প্ৰবাল গাঁৰিয়া মাল। 🥂 কনক চম্পক कवबी त्वज्ञ ভ্রমরা গুঞ্জরে ভাল। সিঁপায় সিন্দুর ভার মাঝে মাঝে **पिटग्रह् इम्मन-दर्काछ। ७**० বেন, শূলধর চৌদ্ধিকে বেড়ল কি,ভার,কহিব ঘটা। নালার\_বেশর ,অতি মনোহর হাসিতে মুকুডা খনে। কনক কাঁচুলি ভার পরিপাটী ৩৫ মুকুতা গাঁথুনি পালে ॥ যাঘর কিছিনী বাজে, হিণি,ঝিনি পিঠেতে ছলিছে বাঁপা। ্ভাহার,মাঝারে গাঁথি থরে থরে স্বাস কনক-চাঁপা # '

নীল উড়নি ভুবন-মোহিনী
সোনার মৃপুর পার।
চলিতে চরণে পঞ্চম বাজরে
হংস-সমনে যায়॥
চণ্ডীদাস বলে বিনোদিনী রাধা ৪৫
রূপে করিয়াছে আলো।
দেখিতে নয়ম পিছলিয়া পড়ে
দেখিতে বাইবে চল॥

809

কাষোদ।

দেশ সখি অপরূপ মনোহর।

এ ভব সংসারমারে হেন কভু নাহি দেখি
বেশে যেন করে চল ঢল ॥

মারে রসবতী রাধা অজ্ঞলন হয়ে বাধা
পাছে দেখি ধরিয়া রহায়।

ও ভরেতে আকুল হয়ে ভুরিতে রাধারে লয়ে
ব্রন্দাবন মুখে সবে ধায়॥

মন্দ মন্দ গভি চলে রাই কহে কুভূহলে
আল বড় আনন্দ অপার।

সে রূপ আনন্দনিধি আলু সে মিলাব বিধি ১০
দেখিব চরণ তুটি তাঁর॥

ভাসিব আনন্দ-রসে পূরিব যতেক আশে
ভবে হয় কামনা পূর্ণিত।

চণ্ডীদাস কহে ভাবে একা হোখা বচুনাথে

\_\_\_\_ o \_\_\_ इंदरें ।

রাধানামে বাঁশী গায় গীত॥

26

অসীর অপার वर्षं विषग्ध ৫ ञ्च्यती ८म धनी ताहै। क्षोम पंत्रभटन हिना (धराटन হুধা শ্রাম-গুণ গাই॥ মন্দ মন্দ গভি ठलन माधुती বেমন সোনার লভা। কিবা সে ভড়িৎ চলিল ভুরিভ কি কব ভাহার কথা। कोमिटक र्गाभिनी माटक विटनामिनी চলে সে আনন্দরসে। কেহ কোন যেন সম্পদ্ পাইয়া ১৫ হুখের সায়রে ভাসে ॥ পর্বে যেতে করে রাধা বিনোদিনী কত দূরে বৃন্দাবন। কহ কহ দেখি কোন্খানে আছে রম**ণী জ**নার ধন 🏻 আগে হের দেখ ছু আঁখি চাহিয়া এই উপবনমাঝে। ঐখানে বসিয়া নাগর আছেন रमथह रकीन वा कारण। চণ্ডীদাস বলে গোপিনীর বোলে ২৫ চাरिया संविध बाई। चन चन त्रव मूबनोब भवन তাহাই শুনিতে পাই। >७। नात्रद<del>्य--- नावाद्य---- नाठाड</del>त।

8.2

**कानका** ।

রাধার আরতি পীরিভি দেখির।

\* কদেন কোন বা সখী।

আজি সে ভোমারে

কমল নয়ন আধি 

•

जांचि छन छन ए প্রেম অঞ্জেলে ं र समग्र श्रुलक मानि। প্রেমের হুডাশে কহিছে নিকশে करहन व्रमण धनी ॥ কেমনে এ বনে যাইব সঘনে পাছে কোন দলা হয়। এই হ্লখ উঠে মরম-বেদন মোর মনে ছেন লয়॥ শ্ৰাম ছেন ধন অমূল্য রতন सप्रत्य পড়িয়াছি। এ দেহ তাহারে मदनत्र मनिएम ১৫ যতনে লইয়াছি ! কহিতে কহিতে শ্রাম পরসঙ্গ চলে त्रममग्री तांथा। প্রেমের তরকে আছে আন বোল নিগৃঢ় আছয়ে বাঁধা।। গোপীগণ বলে হাসি রস রসে চলহ ভুরিত করি। কাননে কালিয়া নিষ্ণতে বসিয়া করেভে মুরলী ধরি ॥ ঐছন ঐছন मधुत मूत्रली २৫ এস এস বলি ভাকে। তুরিত গমন চণ্ডাদাস কৰে **हल वृत्सावन मूर्थ ॥** 

8>0

চলল গমন হংস বেমন বিজুরি ভেমন উয়ল ভূবন . লাখ চাঁদ লাজে মলিন হইল 'ও চাদ-বদন হেরিয়া। সরল ভালে সিন্দুর্রবিন্দু
ভাহে বেড়ল কডেক ইন্দু
কুস্থম স্থান মুকুতা-মাল
নোটন ঘোটন বাঁথিয়া ॥
বিশ্ব অধর উপমা জোর
হিলুলে মণ্ডিত অভি সে ঘোর >>
দশন কুন্দ বেমন কলিকা
কি বা সে ভাহার পাঁভিয়া ।
হাসিতে অমিয়া বরিখে ভাল
নাসিকার পর বেশর আর
মুকুতা নিখাসে ছলিছে ভাল
দেখহ বেকত ভালিয়া ॥
চণ্ডীদাস দেখি অথির চিত্ত
অজে অজে অলে অনক রীত
রসভরে ধনী স্থান্দরী রাই

চলল মরমে মাতিয়া॥ ২০

8>> कांनडा ।

রাধার আবেশে গমন মন্থর
চলিলা আবেশ হৈয়া।
শ্রাম-মন্ত্রমালা জলিতে জলিতে
প্রবেশ করিল গিয়া।
উপবন মাঝে প্রবেশ করিল ৫

প্রেমরস-ভরে , আধ আধ বোল
স্বনে কহিছে ভাই ॥
এক সধী গিয়া সেধানে বাইয়া
কহিছে রাধার কাছে ।
কি আর বিশ্বস্থা করিছ ভোমরা
চলহ ভূরিভ বেশে ॥

নাগর শেশর একলা আছয়ে চলহ ভুরিভ করি। TICTIV: शिया बन्मावटन ं मिना मन्नभन ১३ ত্তন হে কমল-আঁখি। চণ্ডীদাস কহে ভালি॥ এ দেহ সেখানে পরাণ এখানে ' **७४ (पर जांद्र जांशे ॥** সকল ডেজিয়ে পুরণ লয়েছি 875 ও সূটি কমল পায়। कारबाव । ঠেলিয়া না কেল ওহে বাঁদীধর কামু কৰে শুন আমার বচন বে ভোর উচিত হয় ৷ যতেক গোপের নারী। নিশি নিদারুণ কিসের কারণ मतरम ना अपन जान। ব্দগতে এ সব বৈরী ॥ দেশিলে জুড়ায় অবলার কুল অভি নিরমল ৫ এ পাপ পরাণ ১০ ধড়ে আসি রহে প্রাণ। ছুঁইভে কুলের নাশ। বেমন ঘরের मोभ निषादेख তাহার কারণে कश्मि मद्दान অন্ধকার হেন বাসি। যাইতে আপন বাস॥ তেন মত তুমি রাধা কছে ভাঝে লোচন সবার শুন যতুনাথে হেনক আমরা বাসি 🛭 আর কি কুলের ভয়। ় ১০ একদিৰ জাতি কুল শীল পাঁতি সকল ছাড়িয়ে বে লয় শর্প ঁদিয়াছি ও ছটি পার॥ ভাহারে এমতি কর। ভূমি সে পুরুষ ভূষণ শক্তি আর কিঁ কুলের গৌরব সূচনা वाशांत्रिकि नाम धत्र ॥ আর কি বেতের ভর। চণ্ডীদাস বলে শুন গোপনারি ২০ ভোমার পারিভে এ দেহ সঁপেছি ১৫ कि श्विन माक्रण वाणा। এ**খন** কি কর ছল ॥ সরস বচনে সিচহ যতনে কেবল গোপীর নয়ন অঞ্চন বভেক কুলের নারী 🛭 হিয়ার পুডলী ভূমি। ১৩। বাসি—মনে করি। তাহে কর হেন ্তুকন ভুয়া মন २२। निष्ठह—त्नष्ठन कत्र। এবে দে জানিমু জামি॥ ভাল ভূমি বট **ত্রজের জা**বন 878 এমতি ভোমার কাল। শুন হে নাগর রায়। **ठशोमारम वरम ७ नरह উ**हिङ • कि বলিব রাজা পায়॥ ভন হে নাগররা<del>জ</del> ॥ আমরা কুলের বি। ভোমারে বলিব কি॥

20

30

বে ভলে ভোমার পার।
বে ভন ভোমার খার ॥
ভান কি ভানিয়ে মোরা।
ভূমি নরনের ভারা ॥
বে বল সে বল মোরে।
ছাড়িতে নারিব ভোরে ॥
ভোমার মুরলী শুনি।
খাইয়ে আইমু আমি ॥
শুন হে পুরুষ ভূষণ।
ভূয়া মুখে এমন বচন ॥
কি বলিব আমরা অবলা।
ভামি হই দাসী পনসারা ॥
চণ্ডীদাস কিছু গুণ গায়।
অদভূত শুনি যে হেথায়॥

कारबाव ।

শুন হে নাগর রায়।

তোমার উচিত এই নহে চিত এ কথা কহিব কায়। সব ভেয়াগিমু ভোমার কারণ কুলেতে দিয়াছি ভোর। ছেন করিবারে অবলা অখলে এ নহে উচিত ভোর॥ আমরা স্বপনে আন নাহি জানি (करन छ्थानि भाग्र। ভোমার কারণ ১০ এতেক বেদন 😎ন হে নাগর রায়॥ ভবু না পাইমু ' স্কল ভেজিমু হৃদয় কঠিন বঞ্জি।

এবে কেন কর ডেরি॥

ব**দ্ধি**মে চাহিয়া

हानिया हानिया

তুমি প্রাণমণি পর্ন বাখানি ছুঁইলে রতন হর। ইথে নাহি আন রাজের সমান এমন গভিক নয় ৷ व्यमृता द्रजन २० বহু রত্ন ধন যাহার নাহিক মূল। এ ধন লাগিয়া পাইয়া আমরা না পাইয়ে কোন কৃল। আমি জানে ভালে **हशीमान** यत्न কালার পীরিভি লেঠা। रयमन क्रानिरव সরোরহ ফুল তাহার অঙ্গেতে কাঁটা। ১৫। ডেরি—চাতুরী।

১৫। ডেরি—চাতুরী। ২২-২৩। লাগিরা—লাগ। এমন ধন পাইরাও আমরা কোন কুল পাইলাম না।

8>6

কানড়া।

ভূমি বিদগধ হুখের সম্পদ আমার স্থাধের ধর। লইল চরণে যে জন শরণ ভাহারে বাসহ পর। এঁভব সংসারে ৫ দেখি বল নাথ আর কি আছরে মোরা। এ গোপী জনার হৃদয় মানস কেবল আঁখির ভারা ৷ গৃহ পতি ভা্সে ্হাহামরি লাজে ভনহ নাগর রায়। মনে নাহি গণি এ সব না জানি সকলি গোচর পায়। যে লয় শরণ শীতল চরণ

ভাহারে এমনি রোব। '়

व्यवना कारन केड (कर्न (कर्न ) ८ কত শত হয় লোব # প্রাণ-পতি ভূমি কি ৰলিব আমি ं আনের অনেক আছে। আমার কেবল ভূমি সে পরাণ দাঁড়াই কাহার কাছে। চণ্ডীদাস বলে শুন স্থলাগর ইহাতে নাহিক আন। সব ভেয়াগিয়া ভোমার লাগিয়। ভূমি সে সবার প্রাণ ॥ 91 ভূমি বিদগধ রায়। বলিতে কি জানি কি আর বলিব

সকলি গোচর পায়॥ (य वल त्म वल त्मारत नागत-(मधत। পর কৈল আপন আপন কৈল পর॥ মনের আগুন কত উঠে অনিবার। কাহারে কহিব ইহা আচার বিচার ॥ এমন ব্যথিত পাই আপনা বলিতে। ষান কথা কহিলে কহয়ে অফুচিতে॥ व्याकात्म शांखिया काँक शांश ननिमा। মিছা মিছা বলে সদা খাম-কলঙ্কিনী ঃ ভোমার কলত হেমমালা করি গলে। मिছारे (यायना भाभ ननिपनी वटन ॥ খনে হইল পরিবাদ,লোকের গঞ্জনা। তাহাতে নিষ্ঠুর তুমি এবে গেল জানা । পরের পরাণ হরি হাসিতে হাসিতে। विलाक्त तथा भिन्न कतिला भीतिए । ভোষার পীরিতে গোপী ভ্যক্তিরা সকল। দাভাইতে নারি মোরা হইল বিকল।

٥٤

50

চণ্ডীদাস দেখিরা গোপীর প্রেমবাণী। হরবে পরশমণি পরিবে এখনি॥

, ১। विष्णय---व्यक्तिकः।

৮। जानना-- वाठात्र ..... नाठावत् ।

৯। কংরে অমুচিতে—কররে অঞ্চ চিতে।⋯"

874

मानि।

নয়ন তরল বহু প্রেমবারি অথির কুলের বালা। ক্ষেণে ক্ষেণে উঠে বিরহ আঞ্জন

বিশুণ হইল জালা।

মলয়-চন্দন মুগমদ যত ৫

অক্সেতে আছিল মাধা।

হৃদয় কাঁচুলি ডিভিল সকল

ডাহা নাছি গেল রাধা।।

প্রেমে চল চল যেমন বাউল

বনের হরিণী তারা। ১•
ব্যাধবাণ খেয়ে ধাওল ছইয়ে
চারি দিকে নাহি সারা ॥
ক্ষাণ গোপাগণে চাহি চারি পানে
বিরহ-বেদনা পাইচা।
কার্চ সব যেন চিত্রের পুভলি ১৫

সারি সারি দাঁড়াইয়া॥

কি শুনি কি শুনি বিষম বিপদ

হুদায়ে হইয়ে ব্যধা।

আর কি জীবন সৃষ্ট হইল

কি আর দেধহ হেখা। : ২০ যাহার লাগিয়া এত পরমাদ তাহার এমন রীত।

চল গিয়া জলে পশ কুতৃহলে মরিব এনহে চিত।

Ø

>1

কি আর পরাণ রাখিব আসরা ২৫

কি শুনি দারুণ বোল।

যার লাগি এত বিষম বিবাদ

নয়নে বহিছে লোর॥

এই অমুমান করে গোপীগণ

কহত ইহার বাণী। ৩০

শাগর বচন বিষের সমান

এবে সে ইহাই জানি॥

চঞ্জীদাস কছে শুনহ গোপিনি এই মোর মনে লয়।

ভক্তি আদরে সরস বচনে ৩৫ বিনতি করহ পায়॥

- ৩। আগুন---(বদনা---পাঠান্তর।
- ৫ ৷ মলর—অমিয় ৷⋯⋯"

852

41<sup>4</sup> i

ভূমি বঁধু অঞ্জের জীবন।

জাতি কুল করিরা রোপণ ॥
ভূমি নহ নিঠুরাই পণা।
কেনে দেহ বিরহ-বেদনা ॥
বে ভজে ভোমার ছটি পার।
ভারে নাথ হেন না জুরার ॥
গৃহ পরিবার পরিহরি।
ভোমারে মজিল অজনারী ॥
দেখ নাথ মনে বিচারিরা।
বত তুখ ভোমার লাগিরা ॥
শাশুড়ী ক্ষরের অভি ধার।
খরতর ভাহার বিচার ॥

ক্ষাদিতে না পারি তব লাগি।

ভবু বলৈ খামের সোহাগী॥

বরে পরে ভোমার বিবাদ।
বাহির হইরা বাইতে সাধ॥
চণ্ডীদাস দেখিয়া ছঃখিত।
শ্রাম কহিছে অসুচিত॥

धर∙ शंन¶ः . Se

রাধা কহে 🗢ন আমার বচন নিশ্চয় করিয়া কও। করিলে বেকভ কেন হেন চিত এত নিমারুণ নও॥ ভোমা ছেন ধন পরম কারণ ৫ পাইল অনেক সাধে। বিহি দিয়া পুন: করিল এমন কি আর বলিবে রাধে ৷ যে দেখি ভোমার আচার বিচার কু টিল অন্তর বড়ি। • নাহি ভার কোন मत्रल (घ कन কুটিল কুটক ছাড়ি। ভুজকে আনিয়া কলসে পুরিয়া বতনে তাহাকে পুৰে। কোন কোন দিন সেই বাদিয়ারে ১৫ দংশয়ে আপন রোবে ॥ ভূতক সমান ভেন ভুয়া মন ভৌহার চলন বাঁকা। ভোমার অস্তর ু সেই সে সোসর এ চুই ভুলনা একা। যেন মুখে আছে অমিয়া কলসী रुप्तरत्र विरयत त्राणि। অস্তব্যে কুটিল मृत्य मधु शत আমরা এমন বাসি 🛊

ভাহাই করিল ২৫ বে ছিল তা হল শামরা হইরে কুলের বৌহারি নিরমল বেবা ছিল। কি বলিভে মোগ পারি। '' ভাহে দিয়া কালি ঠাকুয়ালি ভালি ভাহার উচিত করিলে বেকভ কলহ উঠিল ভাল॥ শুনহ প্রাণের হরি॥ চণ্ডীদাস কহে ত্ৰ ধনী রাধা চণ্ডীদাস কৰে अन विमािति २० ঐছন কামুর লেহা। সকল স্থপন সম। কাত্মর ঐছন পীরিতি কেবল অমিয়া সেচনে गत्रम वहरनं কে নবা করিছ ভাম। সঁপহ আপন দেহা । >१। योकत-वाहात। ১৮। কঠিন-কুটিল-পাঠান্তর। 843 भूववी । পুরবী। বঁধু ভূমি কঠিন পরাণ। বঁধুর আদর ८मिथ कानामत ইবে মোরা জানি অমুমান। ক্ৰেন কামিনী যত। (कन जुमि विव्रम वहन। তুষি শ্বনাগর গুণের সাগর কহে যত গোপী সখাগণ # কি জানি ভোমার রীত। ওতে তুমি বিদগধ রায়। হাসি রসাইয়া কুল ভাঙ্গাইয়া ৫ মো সবারে ছেন না জুরার ॥ • নিদানে এমতি কর। ন্ত্ৰীবধ পাতকী ভয় পাবে। এ নহে উচিত ভোর অমুচিত মরিব তোমার নিজ ভাবে # कानिया-वद्रश-धद्र॥ माँज़िया स्मथह जाभारत। কালিয়া বরণ धत्रदेश (य कन रश नग्न तूरा निक मटन ॥ বড়ই কঠিন সেহ। একে একে অঙ্গের রমণী। তা সনে পীরিভি না জানি এ গভি (इंडे मार्थ क्रुँ **डेर**ब भवनी ॥ এবে সে জানিল এই। পাসরিলে সে সব পীরিতি। তখন প্রথমে পীরিভি করিলে পরিণামে হেন কর গতি॥ **দেখাইলে আকাশের চাঁদ**। ভুয়া বিনে আর কেবা আছে। কভ মুখে হাসি ু বচন সেচন ১৫ আমরা দাঁড়াব কার কাছে । এবে সে পাতিলে ফাঁদ 🛚 हशौषांत्र करह रहन छाति। ব্দর বাকর কালিয়া বরণ স্থা রসে কর রাস কেলি॥ সে মেনে কঠিন বডি। १ ৮। ज्ञोबर भाउकी खत्र नारत। হাসিতে হাসিতে পীরিতি করিলে मत्रिव नकरन उब चारत ॥ ∙ • • • नांठां खत्र । ় • এবে সে হইল গাড়ি॥ २०

.

**a** 1

কার্মর বচন শুনি গোপীগণ রমণী হইয়া ব্দামরা পরের বজর পড়িল মাথে॥ পরের পীরিভি আগে না গণিয়া ৫ যে জন পীরিতি করে। বিষ ধরি খায় আপনার হাতে পরিণামে হেন করে।। ছায়াতে মিশায় ছায়ার আকার জলের বিস্থৃকি প্রায়। ষেৰ নিশাকালে নিশার স্বপন তেমত পীরিতি ভায়॥ যেমন বাদিয়া কাঠের পুতলি নাচায় যভন করি। দেখিতে মিছাই সকল ছায়াটি ১৫ বাজিকর করে কেলি ॥ তেমতি ভোমার পীরিতি জানিমু শুন হে নাগর রায়। হরিয়া যড়নে পরের পরাণ ভাসাইলে দ্রিয়ায় ॥ সরস বচন মুখে কত যতন হিয়াভে কুটিল সারা। না জানি কখন তখন এমন এমত ভোমার ধারা॥ চণ্ডীদালে বলে শুন বিনোদিনি ২৫ কে বলে পীরিতি ভাল। **পীরিভি-গরঙ্গে এ দেহ জারল** ' व्यस्त रहेन कोन॥ , ২১। মুধ্ কত জন সুরল বচন পাঠান্তর।

৪২৪ শিক্ষুড়া।

সে নারী মরুক জলে নাঁপ দিয়া 🔌 বে করে পরের প্রেম। পরিণামে পায় এভ পরাভব বেমত পঙ্কল হেম 🛚 ভাহে কি বলিব नकन कानइ ৫ যার লাগি বেবা জীয়ে। সে কেনে নিদয়া 🗼 নিঠুর হইয়া এতেক বাতনা দিয়ে। ভোমার মুরলী ডাকিল হুস্বরে আইমু ধাইয়া বনে। ১ ১০ ওহে বাঁশীধর তাহে হেন কর ফিরিয়া না চাহ কেনে॥ তোমা হেন নিধি মিলাইল বিধি পুন তা হইল বাধা। এু সব বচন কছিতে কছিতে ১৫ শোকেতে মরিবে রাধা॥ তোমার কারণে এ ঘর ছুয়ার বেঁধেছি অনেক ছুখে। তাহা ভাঙ্গাইতে এ নহে মহিমা আর সে বলিব কাকে॥ ২০ চণ্ডাদাস দেখি বড়ই ছঃখিভ मूर्य ना निःचरत वानी। চিতে বেয়াকুল হইগ আকুল याजक जाकत धनी॥ ३ । ष्ट्चरद्र— गत्रात्र ः शीठीखत्र ।

> নিছুড়া। বঁধু, কি আর ঘরের সাধ।

হেদে গো সজনি কছ মোরে বাণী এ স্থাধ হইল বাদ ঃ

বে জন'ব্যবিভ সে জন নৈরাশ মনে না পুরল সাধ 🛭 Ć, কার্চ্চের প্রভলি রহে সারি সারি চাহিয়া নাগর পানে। রসের লাগিয়া যেন সে চাঁদের **ट्रिकांत्र श्रोकरत्र शार्ति ॥** ভেমতি নাগরী রসের গাগরি ১০ মুগধ ভাহাতে বড়ি। বেন বা ক আর্শে ধনের লালসে তৈছন গোপের নারী॥ বেন মেঘবর চাডক অবশ র্করিতে রসেরি পান। ১৫ শকরী-জীবন ্বেন জল বিন সে জন কুলেতে যান॥ স্থধামাথে ধেন করে স্থান চান ২০ ্ চণ্ডাদাস কহে ভবে॥ ৮। दबन दम-दबमन गर्भावेखत । >8 । **(मच्द्र---(मच्**द्रम ।···\* **a** , বে দিন হইতে ভোমার সহিতে পহিলে হয়েছে দেখা। সে সব বচন রয়েছে ঘোষণ বেমত শেলেরই রেখা॥ শপৰি করিয়া পীরিভি করিলে ৫ ভাহা বা রাখিলে কৈ। কে আছে ব্যথিত কাহারে কহিব

🕝 বে ছুখে আমরা রই 🛭

আপনি ৰলিলে আপনি কহিলে আবার এমত কর। . . ১০ আমরা হইলে মরিয়া বাইডাম পুরুষ ৰলিয়া সার 🛭 একটি বচন कत्रि निर्वापन শুন হে নাগর রায়। সে पिन याँहेग्रा कि कांच नागिया ১৫ भदब्रहिटन छूटि भाग्र ॥ रहां नद क्रि निर्देशन শুন হে নদ্দের স্থত। সে দিন বাইয়া কি কাজ লাগিয়া দশনে ধরিলে কুট ॥ তেসর বচন করি নিবেদন দাঁড়ায়ে শুন হে ভূমি। এ জনমের মত ফিরে চাও ভূমি বিদায় হয়ে যাই আমি 🛭 এ কথা শুনিয়া রসিক নাগর ২৫ ভাসিল নয়ানের জলে। रहेण काउन রসিক নাগর विक हशीमांत्र यत्न ॥

881

क्रिका ।

এ কথা শুনিয়া রাধা বিনোদিনী
বড়ই আকুল হয়ে।

যা লাগি এডেক হল পরমাদ
রহল বিয়োগ পেয়ে ।

উপজল মান যেন বিষ্ডুল ৫
দেন ব কিশোরী রাধা।

বিমুধ বিয়োগী হইলা ক্লিশোরী
কম্পিত ও জমু আধা।

নরুন-ক্ম্ল বেন রাভাপল ் - ভ্যক্তিয়ে বানের কাছে। ১০ বৈদল কিশোরী আপনা পাসরি . মাধবী-তলার পাছে॥ মাধবী ভলাভে বসি এক ভিভে অতি সে বিরস ভাবে। বড়ই মলিন ১৫ 🕮 মুখ বিধৃটি ৰছু না বচন না লবে॥ অঙ্গুলি সন্থনে বাম সে চরণে धत्रभी खखादव थूँ रहे। নিখাস হুতাশে ভাহার হুতাশে নাসা আভরণ ছুটে॥ ২০ ঐছন মনের উঠিল আগুনি त्म धनो किटमात्री ताहै। কাছে একজন ছিল গোপনারী ভাহাতে উঠাল ভাই ॥ ভূমি হেখা কেন কেন কভিমান ২৫ তুমি যাও শ্রাম পাশে। অতি সে বিমুখী রাধা চন্দ্রমুখী কৰেন এ চণ্ডীদালে ।

১। রাতাপল---রজেৎপল।

১৫। विष्
हे मिलि—ध्नात ध्नतः भागिकः ।

822 चररे ।

রাধার চরিত দেখি সেই সধী চলিলা আনের কাছে। ऋशामूची धनी হয়েছে মানিনী অতি কোপমনে আছে। ভবে কি বা হুখ 💮 উঠে কভ হুখ ৫ সে ধনী ভাৰিয়া কিবা।

**हम दर्भाता यांव** नार्था मानाहेव করিয়া ভাহার দেবা 🛭 ছই চারি সধী নাই পালে গিয়া কহিতে লাগিলা ভার। ১ কেন অভিযান কিসের কারণ এ ছথী হইয়াছ কায়। শ্রাম স্থনাগরে এ দেহ সঁপেছি তার কিছু নাহি ভয়। ' অভিমান কেনে ১৫ সে জন বচনে এ ভোর উচিত নয়॥ শ্রাম পরসঙ্গ না কহ আরভি ভোমরা ভুরিতে গিয়া। শ্যাম-সোহাগিনী বভেক গোপিনী ভোমরা সেবছ গিয়া। আমি না বাইব আম সাধ গেল কিবা সে রহল তোরা। চণ্ডীদাস দেখি মনের বিপথ थारेया हिना प्रता ॥ ১২। কার—কি জ্ঞা।

**>१। कर---कत्र ः शिवाह ।** 

688

दरहे। গেলা বভ সধী বচন না শুনি যুক্তি করিছে কভি।

রাই মানাইতে না পারিল ভারা

কি কৰ ইহার গভি॥ চলে ব্ৰন্ধনারী 🔻 ূবেখানে গোপিনী ৫

কহিতে লাগিল ভায়। রাই মানাইতে না পারি বেক্ড

এ কথা কহিব কায় #

হেপা স্থান রার রাধা না দেখিয়া পুত্ৰ বসময় কান।

25

कृद्ध अर्क मधी अन खुनांशत মান **ভাঙ্গাই**ভে পুরিল মুরলী রাধার না খুচে মান। রাধার হয়েছে মান॥ অনেক বউনে বুকাইল রাধা অভি সে কোপিড না হয় দরল 🗔 দ্বিজ চণ্ডীদাস গান॥ কহেন বিষয় আন॥ **द्भारत वा मानिनो इत्हारह रम धनी ১৫** ১२। ভাৰিবা অভ্রি ভাই···পাঠান্তর। किरमत्र कात्रत्व वन। ক্তে সুনাগরী 🤝ন প্রাণ হরি মানেতে হয়েছে তল। युर्हे । ক্ছিলে য্থন রাই রাই নাম আর সৰ আন চিবুকে মুরলী দিয়া। (कन वा चाहरण वरन। २० দেই সে কারণে অভি অভিমান রাধা নাম হুটি আঁখর অপিছে विक हजीमान जर्ग ॥ কোথা ছে রদের প্রিরা। **८कर**ण त्रांशांक्रभ (ध्यान कतरत्र ए ৩। তারা—মোরা…পাঠান্তর। অস্তরে ও রূপ দেখি। ক্ষেণ্ড নিখাসে অভি সে হুডাশে पानुनी । রাধা নাম ভাহে লিখি। নিকুঞ্জে বসিয়া নাগর রুসয়া नमा बाधा नाम মুদিত নয়ন • বড়ই হইলা ছুখী। গাইয়া আপন মনে। >• মনে হয় ভথি রাধার পীরিভি ৰেশ পরিপাটী ভাজল স্কল হিয়াতে না হয় স্থী॥ त्रहरे এकिंग शास्त्र ॥ বাঁশী মুখে দিয়া ব্যথিত হইয়া ৫ করের অঙ্গুলি জপি কভ বেরি পূরত স্থার বাণী। कशटत्र ज्ञांशांत्र नाम । এই ভল্ল মল্ল এই সুধারস ১৫ রাধা রাধা বই আন নাহি কই मचरन करहे जीम ॥ ভূরিভে গমন ধ্বনি॥ মুগধ মুরারি রসের চাজুরি **এই वाँगी क**य स्थूतन श्राय আকুল হইয়া চিডে। ঘ্নে খনে কৰে রাই। ১০ আন নাহি মনে त्राधा वाधा विदम বাঁশীতে সকল , নিশান বেকত বসিল কুঞ্জের ভিডে॥ : ২• ভরিয়া অমৃত তাই ॥ • (कांबा तममहे प्रकार ত্তনি পশু পাথী পুলকিত মানে . ভো বিনে সকলি আন। वरमञ्ज रुजिनो यङ । जूनि कृष्टाचनो जूनि तम माधुनो মিলাইছে শিলা ১৫ ৰাউল হইয়া ভোর সদা করি গান। ় \* ७वि त्म मुक्तो-भीख ॥

১৮ <b>৬</b> চ <b>ওাখাস</b>				
ভোমার কারণে	वांभोडि वषरन २०	কোণা না পড়ল	मधून मृतना	
্ ভনি বা কেমন রতি	ভূনি বা কেমন রভি।		<b>ন্পুর পড়ল ক</b> তি।	
	• •	নয়নে গলয়ে		
* *	•	চণ্ডীদাস ছুখ্মভি ॥		
এই সে বাঁশীতে	সঙ্কেত নিশান			
বাজই রসিক রায়। ৩০		रहरे।		
ভবু না ভাঙ্গল	মান অভিমান	ক্ষেণে রাধাপণ পানে চাই।		
চণ্ডীদাস গুণ গায় ॥		মুগধ সে লুবধ মাধাই ■		
৫০। বাজই—গাওয়ই পাঠান্তর।		কুঞ্জে লুটভ মহি ঠান।		
		রাধা রাধা নাম করি গান 🛭		
843		কোৰ। রাধা স্তৃকুমারী গোরী। ৫		
_	state. Sans	হেরত নয়ন পদ	ांति ॥	
বাঁশী দূতপণা কতেক প্রকারে বাজিল রলের ভান।		পুনঃ মূদিত ছই জাখি।		
ভবু না আওল <b>ব্যভামু-স্ত</b> া		ধনিমণি কভি নাহি দেখি॥		
রহল নিভ্ত মান ॥		একলি কুঞ্চে দ্বিকুঞ্চে।		
বিনোদ নাগর		় গান করত কত পুঞ্জে॥ ১০		
ভাজন সকল স্থধ।		হা রাধা হা রাধ		
রাধা পথ পানে		হেরইতে পুন ভেল সাধ।		
বাড়ল বিরহ ছুখ	ল বিরহ তথ ॥			
<b>ক্ষেণে</b> কত বেরি	উঠল মুরারি	<b>হুদিপর</b> যাভায়		
সম্বনে নিশাস নাস	71 I >•	এছন কান্তর মূ	`	
্ৰলসে কাতর	রসিক নাগর	গদ গদ নয়নক বারি॥ ক্ষেণে উঠে ক্ষেণে করে গান।		
না কৰে একহি ভাষা॥		রাইক পথ পা		
না জানি কোণারে		চণ্ডীদাস কৰে পুন বেরি।		
পিঞ্ মুকুট চূড়া।		व्यामि भिनव श्र		
্কোণা না পড়ল		৩। মহি—মণিপাঠান্তর।	n	
সে পীত বসন ধ্য			-0	
কোণা না পড়ল বলয়া বাহুর বাল		•	196 <b>a</b> 1	
क्लांश ना अल् <b>न</b>		alasin	न। गुषिठ <b>हरे</b> ना	
	ह्यान प्रवास विकास		क त्रोत्र । ° .	

রাই-ভাবে তমু পুরিত হইরা চলি একমন দুতীর গমন ভামূল নাহিক খায় ৷ বেখানে আছমে সেহ # বিসরি সকল পুরব পীরিভি ৫ সেইখানে গিয়া पिन प्रत्रभम এবে ভেল অভিযান। कहिट्ड मिन डाई। '১॰ কহে স্থনাগর চতুর-শেখর দৃতি বাহ রাধাঠাম 🛊 রাই মানাইয়া সানিবে যতনে দূর হতে দেখি দূতীর গমন ভবে সে জীয়ই কান। कतिम 🕮 मूच वक्त । ভূরিভ গমন করহ এখন হেনকালে দূতী माँ ए। इ मन्यू (४ ) १ ইহাতে না হয় আন # करहन ब्राटमत ब्रक्त ॥ বড় অভিমানী রাই বিনোদিনী দুতী বলে ভাল ভোমার চরিত वित्रया माथवी मासः। বুকিতে নারিল এ। সঙ্কেত-মুরলী ডাকিল স্থপ্তরে ১৫ সে হেন নাগর পরিহর ধনি অনেক মানের কাজ ॥ বাহারে স্পিলে দে॥ তাহে বে গোপিনী গেছিল সেখানে যার লাগি ভূমি পথের মাঝারে ना ७:८ऋ ज्ञांशांत्र मान। मचरन मचरन हां । দেই গোপবালা পরাভব সানি সে হেন বঁধুরে ত্যঞ্জি রহু দূরে ঁ. আওল আমার ঠাম॥ কত মেনে স্থুখ পাও 🛭 বেণীর বাঁধন ২৫ চণ্ডীদাস কর 🖰न त्रममग्र যাহার কারণে রাধার বড়ই মান। দিনে কভ বার কর। আনে আনিবারে কেহ না পারিবে কালিয়ার সাঁধে কাল জাদখানি ভাবে বেণীপর ধর॥ পয়ান করহ কান ॥ চণ্ডীদাস কৰে শুন স্থামূখি কুঞ্চেতে আকুল কান। তুরিভে গমন বিলম্ব নাকর काटबांच । ্ তেজহ দারুণ মান॥ এ কথা শুনিয়া শ্রাম-মুখ চেয়ে २१। कान बाप--कान बान-भागि छ। দূতী কহে এক বাৰী। রাই দানাইরা এখনি জানিব শুন হে নাগরমণি । 7611 সে হেন রসিক্ ফেলে রবি তথা কহিছে নাগর চভুন্ন-শেশর ৫

मिन अभूश-हैं। ए।

ं এপনি চলিয়া বাহ।

যেন সেই বিধু ভাহে নাহি সধু वावव । কেবল বিষের ফাঁদ। কি আর দেখহ রাই। অমিয়া চলকে ৫ ⋯ বিষের কাছেতে কান্তু ভুয়া গুণ গাই॥ কেবল গরল সারা। চরিত আবার পড়িয়া নিকুঞ্জ ঠাম। বে দেখি ভোমার বিষম বিপাক ধারা ৷ কেবল ভোমার নাম 🛭 শুনহ বচন ভুয়া পথ কত বেরি। হেন লয় মন ¢ এই সে বাসিয়ে ভাল। হেম রতন হার তোড়ি। সে হেন নাগর ভোমার হুতাশে ভারল আভরণ ভার। বিরহে হয়েছে ঢল ॥ ভাত্মল দুরে কবি ভার॥ শীতল পঞ্জ-দল বিছাইয়া হেম নূপুর করি দুর। শয়ন করিতে চায়। না কহি বরণ পূর। >0 বিরহ হুতাশে (अह मनजन ১৫ সে হেন নাগররাজে। ক্ষেণে শুকাইছে গায়। অভিমান কভু সাজে। সে চুয়া চন্দন মৃগমদ আদি চণ্ডীদাস কৰে ভালি। লেপন করিতে অঙ্গে। ভোহার ধেয়ান বনমালী # তাহা কেণে কেণে গরল সমান ৬। তোড়ি—ছিড়িয়া ফেলিয়া। **७कारेन (मध त्राज्ञ ॥** ৭। ভারল—ত্যাগ করিল। মলিন বয়ান ক্মল নয়ান ১০। কথা ৰলিভেছে না। সন্থনে ভোহারি ধ্যান। ১৪ ৷ উহু থারে বনমালী···পঠি;স্কর / রাধা রাধা বই আন নাহি কই किष्टे नाहिक खाम ॥ **ाष्ट्रन व्यक्तित्र** বেশ আজরণ ২৫ সোনার মুকুট চূড়া। কি আর বিলম্বে কাজ। **ভ**তি প্রিয় বাঁশী তাহা পড়ে কভি আর সে পীতের ধড়া 🛭 ভুন্নিত গমন করহ বড়ন শুনহ স্থন্দরি করছ গমন ভেটৰ নাগররাক। বিলম্ব না কর রাধা। কিসের কারণে Ł শানিনী হয়েছ ভূমি নাহি গেলে চণ্ডাদাস কৰে শুনহ কিশোরী গোরি। সক্লি হইল বাধা । সে স্থাম নাগর ভাবে পরিহরি >। व्रशिक-वरमद्र···भौठीखद्र। এ তোর মহিমা বড়ি। ২৫-২৬। ত্যজন নাগার দেখিল বেমন 💌 ও নৰ মুক্ট চুড়া 🎶 পাঠান্তর। শ্বহ কারণ निशन (श्रीन श्रीदम । '्र

ভোমার বেণীর পদ্ম পড়েছিল ১০ ভাছাই ধরিয়া বামে ৷ সেই পল্ল ধরি নিজ করে করি ं छ। হাতে महेग्रा कैं।एए। দেখাইব চল এমনি দেখিল वज़र निषान ছीटम ॥ ষেন যোগী **জ**নে ভোমার ধেয়ানে বেমত দেখিয়াছি। তাহার কারণে আমি সে আসিয়ে তোমা নিতে আসিয়াছি। কাম করে ধরি करत्रत्र अत्रुलि २० জপই ভোমার নায ভুরিতে যাইয়া মান তেয়াগিয়া ভেটহ নাগর শ্রাম ॥ চণ্ডীদাস বলে শুন শুন রাধে বিলম্ব কেন বা কর। 20 শ্যাম সম্ভাষণে কাসুর মালাটি ঁ. যভন করিয়া পর । ে। কিখোরী—নাগরী লগাঠান্তর।

> \$**৩**৯ ক্ৰিছা।

এই দেখ ধনি চাঁদমুখ তুলি
কাতুর সন্দেহ লহ।
তোমার লাগিয়া রজনী জাগিয়া
নিদান হইল সেহ ॥
এই লহ রাধা , ভাসের কুস্ম ৫
অতুল ভাস্থল হার।
বালায় পরিলে মান দুরে বাবে
মুখ ভোল একবার ॥
বে হরি ভিলেক দেখিতে না পেলে
. \* লদমু ফাটিয়া মর।

সে জন কুঞ্জেডে একাকী বসিয়া এখন এমত কর 🛭 ভূমি স্থনাগরী প্রেমের স্থাগরী সে বস ছাড়িয়ে কেনে। এত অভিমান কিসের কারণ ১৫ ভিলেক না কর মনে॥ মুখ ভুলি চাহ क्षन विद्नापिनी वांधा । পরিহর কেনে সে হেন নাগরে সে রসে করহ বাধা॥ দেখি নিকক্লণ অভি নিদারুণ না দেখি না শুনি কছু। গুণের সাগর সে ছেন নাগর তোমার বিরহে প্রভু ॥ পুরুষ-ভূষণ कमन-नग्रन २० তুরিতে ভেটহ কানে। বিনয় কহিল রাধার বচন

ৰিঞ্চ চণ্ডাদাস ভণে॥

२। मास्मर-मास्माना । ७। जजून-व गरं गर्नाठीखन्।

880

কাৰং!

রাই, তুরিতে শ্রামেরে দেখ গিয়া।

ধেন মরকত মণি ধূলায় লোটায়া॥

কোথা না পড়িল চূড়া মালতীর মালা।

কোথা না পড়ল সেই দূপুর বলয়া॥

কোথা না পড়ল পীত ধড়ার অঞ্চল।

কোথা না পড়ল নব মঞ্চরীর দল॥

নিকুঞ্চে পড়িয়া অঙ্গ ধূলায় ধূসর।

রাধা রাধা বলি কাঁদে ক্রি উচ্চস্বর॥

মধুর মুরলী যার অতি প্রির স্থধা।
সে কোথা পড়ল তার নাছিক সংবাদা॥ ১০
আচেতন মুদিতনয়ন কলেবর।
রাধা বিন্দু বিকল হইল বংশীধর॥
তোমার কারণে ধনি ত্যালৈ স্থখোলাস।
ক্লেণে ক্লেণে উঠে যেন বিরহ হতাশ॥
মুখ তুলি কহ কথা শুন রসমই। ১৫
চণ্ডীদাস ব্যথিত শুনিয়া ইহা হই॥

>>०। नश्वामा--- नमांथाः भोठीखत्र।

**a** ,

দুতীর বচন শুনি স্থামুখী

বয়ানে নাহিক বাণী।

েইট-মাথে রহে ও চাঁদ বয়ান ভাষাতে অধিক মানী॥

একে ছিল মান তাহাতে বাড়ল ৫

শতগুণ করি উঠে।

বিরহ আগুনে নহে নিবারণ

সে যেন সন্থনে ছুটে॥

বিরহ আগুন নহে নিবারণ

নাহিক বচন ভাষা। 🔭 ১০

मत्न व्यक्तिमानी त्राहे विरनांत्रिनी

সহনে নিশ্বাস নাসা॥

বিরস বদন আন ছলা করি

. উखत मा (तर किছू।

माधवो जलारज् विम धनौ तार्थ ১৫ ।

নখেতে ধরণী নিছু॥

ৰঙ্কিম ফটাক্ষে চাহে দুভী পানে ক্ষেণেকৃ মুদিত জাখি। তা দেখি ব্যথিত মনে গুণি আর চণ্ডীদাস ভাবে সাধী। ২

১২। নিখাৰ নাৰা · · নাৰিকা দিয়া নিখাৰ খন খন ৰহিতেছে।

:७। निष्ट्र--निविट्टरहन।

১৯) १७नि छन्ना कतित्रा, श्रावित्रा।

२०। नाषी जनको।

222

नानव ।

তবে কহে রাই দূতীর গোচরে কেন বা আইলে ইথে।

কিসের কারণে ভোমার গমন

কহ কহ শুনি ভাবে॥

কহে সেই সখী শুন চন্দ্ৰমূখি ৫

ভোমারে আইমু নিতে।

নিকুঞ্জে একলা বসিয়া নাগর

চাহিয়া ভোমার পথে।।

কেন বা ভা সনে মান অভিমান বারে না দেখিলে মর।

সে হৃদ পীরিতি তেজিয়া আরতি কিসের শুমান কর॥

সে নব নাগর ভেন্সিয়া বৈভব

ভোমার ধেয়ান রাধা।

ভুয়া গুণ-গান জপিতে জপিতে ১৫ সে শ্রাম হইল স্মাধা ॥

जूमि विषग्ध ' जूमि देवलगधीं

গুণের নাহিক সীমা।

চড়ুর নাগরী **গুণের আগরি** মান পথে দেহ ক্ষমা ।

জগজনে কয় রাধা ধীরময়

সকল গোচর আছে।

সমূবে সমূবে	ক্ৰি ভার মাঝে	এ কোন চরিত	कांत्रही हांत्राष्ट
কহি বে ভুরার কাছে॥		এ কোন চরিত আচার বিচার সেই সে আছরে আশে।	
ভূমি শ্রেয় সমা	ভূমি কুলরামা ২৫	চল চল রাধা বুন্দাবনেশ্বি ২০	
ভূমি সে রঙ্গের নদী।		निक् <b>श-</b> मन्दित हम ।	
যার রসগুণ	নিগৃঢ় মরম		
পঞ্চ ভন্ম বার সিদ্ধি॥		চণ্ডীদাসে বলে ভুরিভে ভেটহ সে শ্যাম ভাবেতে চল।।	
অটি গুণ গুণ	তার পহত্তণ	>१। द्यारमञ्जूषात्राचाः	
এ নব <b>যাহার গভি</b> । ৩ <b>০</b>		0	
	রসভন্থ লাগি	468	
<b>কুঞ্জে</b> ভে যাহার ন্থিভি ॥		<b>a</b> .	
১২। কিন্সের—তাহার :-পাঠাস্তর।		তুমি বড় নিদয় নিদান।	
২০। সমুঝে সমুঝে—দে বুঝে দে বুঝে ··পাঠান্তর।		উহারি কেবল ধেয়ান ॥	
0		সে জন ছাড়িয়া এখনে।	
88.		একলা বসিয়া কুঞ্চবনে ।	
পড়া।		শুন্হ ফুন্দরী রাই। ৫	
শুনহ ফুন্দরী রাধা।		क्लारंग दिवार स्वाहित । क्लारंग क्लारंग विवास स्वाहित ।	
যে জন পরশে	লাখ স্থানিধি	এত কিবা সহ <b>ই</b> পরাণ।	
· সে জনে কেন বা বাধা॥		্ করি দেখ	
তোমার লাগিয়া	যেমন যোগিনী	কাহারে করহ	
ভঙ্গয়ে পরম	भए। ए	স্কল সে জন	
তেন মত শ্রাম	ভোমার ধেয়ানে	<b>ত্রনি সে</b> নাগরী রামা।	
ভারে কেন কর বধ।।		চিতে দেহ ধনি ক্ষমা ॥	
রস রস পর	আর রস পর	চলহ নিকু# মাঝ। ভাৰু আনহি কাল ॥	
পাঁচ রস আ	है मिठे।	ठाव जानार क हशो <b>रा</b> टन <b>का</b> न	
(वष खन खन	গুণ রস পর ১০		
সায়র অমিয়া বিঠ ॥		কেছে দূভী কভ অসুমান॥ ৮। কাট্…শীঘ।	
त्म अन तरमत		>७। अधूमान · · अधूर्यावः	
পিয়াসে মরয়ে কেন।		O	
	চকোর পাণীরে	5 d q	
	६ (कन । >१	• <b>25</b> 5	
ভূমি সে প্রেমের	গাগরি <b>থাকি</b> তে	<b>কালার স্থালাটি</b> বড় উপ <b>ত্র</b> ল	
• আন জন মে	व ८भारव ।	বেশ কথা কিছু	क्या।

ভাহে কেন রাধা সেই স্থা বাধা চলহ বিষুধ চেয়া 🏽 ... পরশ রভরে ভেজহ স্থনে. ৫ ' রসকথা কিছু কয়। দের দেখা দিয়া ত্রহ না আসিয়া এতন তামূল লয়। মুখ-রস-মধু কত শত বিধু **উল**টা কহত বোল। ১০ উত্তর না দেহ পরমাদ এহ শ্যামে কর গিয়া কোড়॥ মুখ তুলি বল মানে আছ চল এ কোন বিচারিপণা। একে নাম ধরি ভরুর ছায়াভে ১৫ আছ হরি মন-মনা ॥ আমি আমু নিতে কিবা ভোর রীতে কহ কহ চন্দ্ৰমূখি। কিবা কহ শুনি শুন বিনোদিনি এত পরমাদ মান পরিহর স্করী শ্যাদের প্রিরা। চণ্ডাদাস দেখি: ব্যথিত হইরা বিবস পাওল হিয়া॥

ভান্ধিতে ভোমার মান 🛊 সে হেন নাগর পরিছর ধনি আছৰ মাধবী-তলে। শ্যামের বিধাতা ( ? ) শুনি ভার কথা কহিতে পরাণ ঝুরে॥ कटर धनौ त्रांधा 💝 म त्यांत्र कथा ব্দানিল ভাহার চিত। ভা সনে কিসের নান অভিমান ১৫ ব্দানিল ভাষার রীভ ॥ পরের বেদনা পর কি জানয়ে পর কি আনের বশ। পরের পীরিতি আধারে বসতি किया (म क्यांनरम् त्रम् ॥ २० রসিক হইলে রস কি ছাড়য়ে মুখর চতুর জনা। যত যত তেঁই নুসের রুসিক সে সব গেলই জানা॥ कटर हकीमात्र छन टहु सम्मित २० তুরিতে গমন কর। भागारमञ्ज्ञ जटम्मभ व्यक्तरग्रज माना বতন করিয়া পর ।

সে বেন নাগর আমি সে আইল

२२। मूचत--ञ्जूष...क्षश्रीखत्।

----0---

দূতি, না কহ স্থানের কথা।
কালা নাম ছটি আখন শুনিডে
হাদয়ে বাড়য়ে ব্যথা।
আমি না বাইব সে স্থাম দেখিতে
পরশ কিসের লাগি। ় ৫

91

কহে ধনী রাধা কেন তুমি হেখা
কি হেজু ইহার বল।
কৈন বা আইলে কিনের কারণে
কে ভোমা পাঠাইয়া দিল॥
ভবে কহে দুতা শুনহ আরভি ৫
মােরে পাঠাইল শ্যাম।

প্রবংশ শুনিতে শুনি পরসঙ্গ অন্তরে উঠরে আগি॥ কিলের কারণে তা সনে মিলন চলিয়া ভুরিতে বাও। ভাহার মরম জানিল এখন ১০ রহিল মাধৰী ছাও। ভাহার কারণে সব ভেয়াগিমু কুলে তিলাঞ্চলি দিয়া। তবু না পাইল সে নব নাগর বেমন রসের প্রিয়া॥ ১৫ কুল শীল ছিল সকলি মজিল নিদানে কলক সারা। হুখের লাগিয়া পীরিতি করল ভাহার এমতি ধারা॥ স্থাের আরতি করিল পীরিতি ২০ 'স্থ গেল অতি দুরে। চুখের সাগরে করিল পয়ান মনোরথ পরিপুরে॥ পাড়ার পড়শী করে লোকহাসি শুনিয়ে এ সব কথা। . . ২৫ অস্তুর বেদন বুঝে কোন জন কে জন বুঝিবে হেখা। কামুর পীরিভি ু দিল সমাধান না কহ জামার কাছে। কেবল বিষের শরাশির সমান ৩০ হেন কে বা আর আছে॥ কারে কি বলিব ু বলিতে না পারি তুমি বাহ সৰি কামুর সমাজে গুপতে গুমরি গৈছা। ় • আমি সে নাহিক বাব।

চণ্ডীদাস কৰে বড় অভিদান আমি শ্রামে বেরে কব॥ . . ৩৫ ७। भेदमञ्चल अग्रहा ३३। इडि छोत्र। २०। मरनात्रथ পूर्व कतिएछ। २৮। जैक्स्केन गर्म त्थम (भव वहेन। क्षिण । বেরি বেরি দুডি বচন সরস ্ কভ সে আর শুনব। যথা না শুনব শুাম নাম তুধা সেখানে চলিয়া বাব n **उट्टर प्राप्ताल का अधिमाल का** তবে সে ভালই হব। বেরি বেরি দুতি বচন সরস এ কথা না 🗢নি তব ॥ শ্রবণে না শুনি কছে জান বানী কথা কে মনে না বাসি। ১০ শুন গো সঞ্চনি বে জন গরল খায় সে বিষের লাগি। জানিয়া শুনিয়া বিব হাডে শয়ে ১৫ খাইতু করমভাগী। বে খায় গরল বিষে চল চল ভখনি মরিয়া যায়। \* আমি সে ভখিল কাল কাল-বিষ • কাজিলে রহে সে গায়।

কালিয়া বরণ দেখিতে স্থলন
করিতে রসের লেহা॥
ভাবিতে গুণিতে মরিয়ে ঝুরিয়ে ২৫
ভাবিতে গুণিতে মরিয়ে ঝুরিয়ে ২৫

\* \* \*!

বেন সে জলের বিস্কৃক উপজে
তেমতি কামুর প্রীত। ৩০
এবে সে জানল সে জন লালস
চণ্ডাদাস কহে ছিত॥

১। বেরি বেরি প্রনঃ পুনঃ। ২২। শুপতে প্রোপনে। গেহা প্রোলাম। ৩১। লালস প্রালসাপুর্ব, লম্পট।

\*\*\*

कानदा ।

আন কৈল পর কালা হৈল খর কালা সে করিল সারা। আর নাহি গন কালার ধেয়ান কালিয়া অ াখির ভারা ॥ হিয়ার মানস ৫ পরাণ অধিক কালিয়া স্বপনে দেখি। অপেতে কালিয়া গমনে কালিয়া नग्रत कांशिया (प्रिः ॥ সেখানে কালিয়া গগনে চাহিতে ভোজনে কালিয়া কাসু। क्षवय गुनितन সেখানে কালিয়া কালিয়া হইল তমু 🖁 🧢 ভন হে সন্ধনি 🗼 কহিতে আগুনি উঠয়ে কালার শালা :

त्म कन विमूच পরাণ হইল সারা ১ আরতি পীরিভি তা সনে কিসের স্থাক রসের লেহা। সব ভেয়াগিমু যাহার কারণে পরিহরি নিজ গেহা॥ ভার কিবা হয় কুজন স্থজন গরল অমিয়া ন্য়। **সরল না** হয় कृषिन क्षत्र কাজেতে বুকিলে হয়॥ কহে টণ্ড দাসে এই সভিলাবে ২৫ আশাপাশ তুয়া কাছে। ভূমি দে ভাহার সে ব্দন ভোমার কোণা বা খুজিলে আছে ৷ ২১·২২। বে কুজন, সে কখন ভুজন হয় না, বেমন গরু ক্থন অমৃত হয় না।

व:म्य ।

पृञी करह छन আমার বচন করিয়ে আদরপনা। গুণের সাগর দে হেন নাগর অভি সে স্থল জনা। ভোমার লাগিয়া রজনী জাগিয়া 🦚 সে হরি কাতর হয়। কর পরশন पिया पत्रभन 🕆 ৃष्ण्यात्र मस्तर्छ नत्र ॥ এখনে ছাড়িয়া বাহত চলিয়া দ্বপুণ উঠয়ে ছুখ। কিবা পরিচয় ভাষার সনেভে

এ দেহা রসের সুখ ।
জানিল তাহার যত বড় ভেঁহো
কালিয়া বিবের রাশি।

কুলের ধর্ম 🥒 সরম ভরস ১৫ जक्त रहेन राजि । সে দেশে বাইব यथा ना अमिव 'कालिया-वद्म भाम। সেই দেশে বাব শুনহ সন্ধনি রহব সেই সে ঠাম॥ অনেক ষ্ত্ৰ করিল সখন রাধার না খুচে মান। কার্চের পুতলি রহে দাঁডাইয়া মনেতে ভাবয়ে আন # মান না ভাঙ্গিতে পারিল সজনী ২৫ চলিল শামের পাশে। দুঙী গেল যথা নাগর-শেখর কহেন এ চণ্ডীদাসে॥

১৩। ভেঁহো—ছেই।

শ্রীমতী কি করিতেছেন। \* স্বয়ং দৌত্য। ••১

۱ 🖨

মাধবী ভলাতে দূতী পাঠাইরা
বিসয়া চিবৃকে হাত।
আকুল সখনে নিশাস হুভাল
কাহা না বোলই বাত ॥
এক নৰ রামা আছে রাধা কাছে ৫
ভা সনে না কছে বোল।
মাধবী ভালেতে , এক পিক বসি
বহুত পঞ্চম বোল॥
চাহিয়া দেখিল মাধবী উপরে
রসনই ধনী রাই। ১০
কালার বর্বন দেখি স্থনাগরী

. ' হেরিয়া দেখিল তাই।

করতালি দিয়া দিল উডাইয়া পিকেরে কৰিছে কিছু। 🕟 🐪 কি কারণে বসি ডাকহ হৃষ্বে ১৫ ं उँदे स्म पिनाम निष्टू 🛭 যাহ খ্যাম পাশ নিকুঞ্জ-বিলাস এখানে কিসের বাণী। এই অমুরাগ রাগের আর্ত্তিক करहन किरमात्री धनौ॥ উড়ি যাহ ঝাট ছাড়িয়া নিকট এ ডাল ছাড়িয়া যা। চণ্ডাদাস বলে পিক চলি গেল কহিতে বলিতে রা॥

----

়ঃ। দুভী পাঠাইয়া—দুভীকে বিদাণ দিয়া।

২৪। গান গাছিতে গাছিতে চলিয়া গেল।

ই, যন্তি।

ময়ুর ময়ুরী নাচে ফিরি ফিরি আসিয়া মাধবী-ডলে। দেখিয়া কুপিত হইল বেকত তারে ধনী কিছু বলে॥ হেথা কেন তোৱা नाट रहा (जाता ए मिट्ड **(म ट्यां**डना मादा। ঝাট চলি যাও যেখানে রসিক নাগর শেশর ভোরা॥ নিকুঞ্জ-ভবনে যাহ সেইখানে এখানে নাচহ কেনে। হেণা কিবা স্থ স্থার বিচার ভাবিয়া দেখহ মনে 🛚 🐪 ভূমি না ধরিতে শ্রামল বরণ ভবে সে হইভে ভাল। দেখি মোর মন ১৫ কালিয়া বরণ

আনল উঠিয়া গেল।

কালা আছে যথা তোরা বাহ তথা
এখানে কিসের কাল।
কালিয়া বরণ বরণ মিশাহ
বেখানে রসিকরাল । ২০
কোপে অ্থামুখী করতালি দিয়া
মরুর উড়ায়ে দিল।
চণ্ডীদাস বলে অপার মানেতে
সে ধনী হইল চল ॥

७। বিশেষ কট দিবার জল্প।১৬। মনে ছংখানল জলিল।

840

मानि ।

মাধ্য ভলার ফুলের সৌরভে ষতেক ভ্রমরা তারা। মকরন্দ পানে মুগধ হইয়া মাতিল সে রসে ভোরা॥ ा दिश्व किटणांती विश्व मुशी ताती व কহিতে লাগিল তায়। বরণ ধরিয়া ভূমি সে কালার কেন বা ধরিলে কায়। এখানে হে ভূমি কেন জমি ভ্রমি ফিরহ কিসের লাগি। ১০ মোরে দিজে চাহ বিরহ-বেদনা উঠাতে দারুণ আগি॥ ভোমার চরিত আছে বেয়াপিত ে শ্রে শ্রাম অকের মালে। 'মধু থেয়ে শেরে রসেতে প্রিয়ে ১৫ আইলে মাধৰী ডালে 🛭 🔒 একে মরি স্থালা 🔠 সাহিয়ে একলা ार्ट्स रमधी मिरन खोरन।

ঁ অভি সে বিষাদ চণ্ডীদাস কিছু বলে॥ कारि । শুন হে জ্বমর কেন বা ঝছারে৷ ভোমার কালিরা তমু। ভোমারে দেখিয়ে • বাঢ়ল বিষাদ বিয়োগ উ**ঠিল হুমু॥** শাট চলি যাও কেন ছুখ দাও ৫ চমকে আমার হিয়া। যাহ রুন্দাবনে নিকুঞ্জ-ভবনে যথায় রসের প্রিয়া। ফুলে মধু খেরা সেইখানে গিয়া থাকহ বেখানে কামু। ১০ হেথা ধেন তুমি মধুর লালসে ভোমার কালিয়া ভমু॥ . দেখি মোর মন कालिया वद्रश विश्वन कलिया यात्र। मरनत द्वलना वृत्य दकान् कना ३६ এ কথা কহিব কায়॥ এ কথা শ্রবণে শুনি মধুকর ভখনি চলিয়া গেল। কোথাও না দেখি মেলি ছুটি আঁখি **७८व (म रेथतम रखन ।** २० নীল কাল-জাল ু কেলিল ছিনিয়া কিছু না রাখল ভালে। অংকর কাঁচলি কেলি দুর করি

় নীলের উড়নি দুরে॥

কাল আভরণ ভেলিয়া ভখন ২৫

পরল ধবল বাস।

₹•

## হিয়ার কাঁচলি পরল ধবল **বহেন** এ চণ্ডীদাস i

पूष्।

নর্ন-কাজল মুছিয়া ভারল কাল আজরণ যত। স্থী এক সঙ্গে ক্রে কিছু রঙ্গে কহিছে রাধার মত। শুন স্থামুখি আমার বচন ৫ •ভাজহ দারুণ মান। যে দেখি ভোমার অভিমান অভি পাছেতে তেজহ প্রাণ । ধৈরজ করছ শুনহ স্থন্দরি এতেক কেন বা মান। ্ সরম ভর্ম দুরে ভেয়াগিয়া ় কোপিত কহত আন। যদি আছি ভূমি বি**রস** বদনে ं भुनर सुन्मती बारे। কেন বা অভ্যের **कृष**ण मकल ১৫ ভেবিয়া ভেবিলে ভাই॥ তুমি স্থনাগরী হসের আগরী ভেত্তৰ দাক্ষণ মান। मधोत्र वहत्व क्रमल-नश्मी ঈষৎ কটাক্ষে চান ॥

শুন গো সক্ষমি ৫ কালিয়া বরণ

চণ্ডীদাস কৰে হেন মনে হয়

त्मित्त्र छेठत्त्र जान ।

মানদে দক্ষিণ পাপ।

कृरकात निक्रे ' পুনরায় দূভীর গমন। . .

সোহারি।

মাধবী তলাতে রহে এক ভিতে (म (इन स्मार) ताई। মানে মন রীভ এ ভার চরিত অনেক বুঝাল ভাই 🛭 ভোমার কুস্থম-হার মনোহর ৫ দুরেতে ভারিয়া দিল। এ তিন ভামুল কিছু না ছোয়ল কোপেতে কুপিত ভেল। অনেক প্ৰবন্ধ প্রকার করিয়া বুকাইল রাই পাশ। হেট মাথে রছে বচন না কছে মুখেতে নাহিক ভাষ॥ যে দেখি দারুণ মান উপজ্ঞন এ মান ভাঙ্গিতে গাড়া। আপনা যাইতে মান ভাক।ইতে ১৫ রুঝল এমন ধারা॥ আপনি গমন করহ এখন তবে সে আসিবে রাধা। নহে বা এ মান আর কোন জনে তাহারে করিব বাধা॥ দূতীর বচন শুনি জুনাগর 'বড়ই হইলা ছখী। ন্ধানিল বেৰুত এ কথা উচিত্ত চণ্ডীদাস আছে সাধী 👢

৩। মন রীত—মনচিত হইলে একরণ অর্থ হয়। ১৫-১৬ তুমি নিজে না গেলে মান ভালিবে না, এইরূপ ৰুবিলাম।

91

ক্তে যতুমণি শুনহ সঞ্জি া বাধা আনিবারে গেলে। কি শুনি বচন কহ কহ দেখি **जघान जघान वर्ण ॥** স্থী ক্লেডায় 🗡 স্থাম রায় ৫ রাধার বড়ই রো**ব**। ভুমি গেলে যদি ভার মান খুচে আমার কি আছে দোব 🛚 স্থীর বৃচনে ক্মল-নয়ন আপনি সা**জ**ত কান। ১০ অতি মনোহর বেশ সে স্থবেশ ভাঙ্গিতে রাধার মান॥ বাঁধল কুম্ভল তাটন ক্ষম্মর বেড়িয়া মালভীদাম। ভাহার পাশেতে মুকুভার মালা ১৫ শোভে অতি অমুপাম॥ নানা আভরণ কৃষণ ভূষণ নিবিড় **কিছিণীজাল**। নীল বসনের ওড়নি স্থন্দর करत्र वोशा यञ्ज छात ॥ २० এক স্থী সঙ্গে চলে বেশ ধরি কেবল একছি রামা।

চলত নাগর বেশ মনোহর **त्रहे (त्र माथवो** थांगा ॥ নারা-বেশ ধরি চতুর মুরারি ২৫ <sub>২০। স্থ</sub>—ছথে।

া মাধ্যা-ভলাভে বার। · किवा (त्र अ**डू**ड (एथर (वक्रड

ं বিজ চণ্ডাদাস গার্॥

৮। পরিমল— স্থগন্ধ:।

रमिष नवतामा पूर्वि दकान पना कर कर एमचि (मारत । '.

**\* ভুঞ্চি।** 

চলন-চাতুরী মন্দ মন্দ গতি কুঞ্জর-গমনে চলি।

যেমন কুঞ্জর চলন কুন্দর এ ছুই চলম ভালি।

মদ**ন**মোহন নব্বন-শ্রাম ৫ কিরায়েলাপন বেশ।

काँट्य करे वीना ' नवचन-छाम পরিমলে ভুলে দেশ 🛭

চলিতে চরণে বাঙ্গয়ে স্থভানে বাজল নৃপুর পায়। ' ১০

ফুলের সৌরভে অলিকুল যত

यृत्व यृत्व नव थाग्र ॥ দুর হৈতে রাই দেখি নবরামা বিশ্বিত হইলা চিতে।

কোন নবরামা কাঁথে যন্ত্ৰ করি ১৫

আমারে ভাইল নিতে। এই অসুমান করে ছুঁই জন রাধা বলে হের দেখ।

রাধার বচনে দেখে মুখ জুলি
চন্দ্রবদনী সুখ ॥ ২০
হেনাই সমর আসিয়ে মিলন

সেই সে মাধবী-ওলে। চণ্ডীদাস ভাহা নৰ পরিচয়

হাসিয়া হাসিয়া বলে।

यहरे ।

কেন বা এথানে ভোষার গমন कर कर वरन छोटते। সধী কৰে ভাৰে শুনহ স্থানরি ৫ গৈছিল কানন-কুঞ্চ। বৰা বসময় ব্ৰন্থমাগণ আহরে কতেক পুঞ্জে 🛭 মোরে বোলাইয়া গেছিল লইয়া আমি সে বটি যে যতি। কিছু ভান মান করিয়াছি গান বে ছিল আমার শক্তি॥ গৌরী নট আর কেদার স্থান্দর ঁ পূরবি সিন্ধুড়া ডাকো। শ্যামনট আর কানড়া মাধবী ১৫ हिल्लान मञ्जना (मा॥ পাহিড়া দীপক স্থার বেলাবলি স্থরট মলার রাগ। গাইতে প্রবন্ধ প্রকার করুণে ', ভাহার মরমে লাগ॥ এ রাগ শুনিতে 🕝 বিনোদ নাগর মোহিত হইলা গীতে। ইহার উপর পুনঃ পুনঃ কহ আর কিছু শুনি চিতে। ভবে কৈলা গান যে ছিল স্থভান ২৫ ভাছাই করিলা গান। রাধাকুঞ্চ নাম অতি অসুপাম বীণাতে উঠিল ভান॥ এ তান ভ্ৰিয়া 🛂 নাগর রসিয়া হরব হইল বড়ি। ৩ সেই সে গানের মধুর শুনিয়া व्यामास्य ना मिन हाड़ि । রহ রহ ধনি আর গান শুনি ं वस्ड প্ৰথম নাম।

শুনিতে মধুর ও ছুটি জাধৰ ৩৫ রাধা নাম অসুপাম ॥ কাসুর স্থারতি বে দেখিল রীতি এ কৰা কহিব কভ। রাধা নামে কভ অমিয়া পাওল র**স** উপ**জিল বভ** 🏽 গাও গাও ধনি ক্ৰে গুণমণি রাধা নাম কর গান। धे बन वह আন না শুনিব ় এ বড় মধুর তান 🛭 স্থালাপে রাগিণী রাগের উড়নি ৪৫ রাধা বলি যেন বাজ। ভোমার ও গানে মোর মনে হানে বেমতি অদরে বাজ। চণ্ডীদাসে বলে এই গাঁতে মোহ রসে ভেল অভি ভোর। ৫০ মুগধ মাধব বছ বিদ্যধ স্থাধের নাহিক ওর॥ ৯। ৰোলাইয়া—ডাকিয়া। ০৭। আরতি—পীরিভি...পাঠা**ন্ত**র।

> हरू. यूर्वे ।

শুন ধনী রাই তান কিছু গাই
রাগেতে রাগিণী মেলা।
গাইতে গাইতে মুগধ হইলা
নক্ষের নক্ষন কালা ধ
পুন: কহে শুসম কতি অমুপাম ৫
শুনিতে মধুর ধ্বনি।
রাধা রাধা বলি তাকিছে বীণাটি
মুগধ হইলা শুনি।

ু এই রস ভা্ন অনেক সন্ধান শুনিল রসিক শ্যাম। ১০ শুভি<sup>'</sup> বড় সুখী **সুখে**তে মোহিত . গাইতে রাধার নাম ॥ ভাবে গদগদ অতি সে আমোদ সে হেন রসিক কান। त्राधा नाम विदन जान नाहि जादन ১৫ প্রবংগ উনল গান। নয়ন-কমল বেন ঢল ঢল লোরেতে কমল আঁথি। বেমন ঘনের বরিখে জ্ঞাবণে ভেমতি ধরণ দেখি॥ ২০ রাধা রাধা রাধা আন সব বাধা কেবল রাধার ধ্যান। রাধা নাম ধ্যানে কমল-নয়ানে কিছুই নাহিক জ্ঞান । এই সব রস শুনিয়া অবশ ২৫ রসিক নাগর কান। সে নব নাগর রসের সাগর ভাবণে শুনয়ে গান॥ যধন বাজামু রাই-নাম-স্তধা কাদিয়া আকুল শ্যাম। ৩০ হইয়া মুগধ 🦈 অভি সে আমোদ দিল মুকুতার দাস ॥ দেখ দেখ ধনি সামার উরসে এই মুকুডার মালা। সে নব নাগর শুণের সাগর ৩৫ ं রাধা নামে বড় ভোলা ॥ এই সব রসে 🤰 ভাঁহা মন ভোষে 🕡 ় বীণাতে করিল গান। 'বিৰুল কিলে বা না জানি কেন বা किरमत कातर्थ थान ॥ 80

কুলে একাকিনী কানতে বাঁণীটি ধরিয়া নাগর রায়। ভোমারে কিছুই ভান গুনাইডে व्यादेश माथवी हात्र ॥ চণ্ডীদাস দেখি অভি অপরূপ ৪৫ অপার দৌহার লীলা। কে ইহা জানিব নিগুড় মরম দৌহে ছুঁহু রস মেলা।

১৮। বোর—অঞা ७२ । माय-माना।

(क्षेत्र । শুন শুন রাধা কহে সেই গুণী উনহ রসের গান। ভোমারে এ গান প্রাবেণ করাভে व्याहेल मांधवी ज्ञान ॥ মুধ ভূলি চাও - রসের প্রেয়সি ৫ গাইয়ে একটি রাগ। প্রবণ পরশি এ গান ভনিতে কভি যাব অপুরাগ ॥ এ কৰা শুনিয়া কহে স্থামুখী **७**नर क्ष्मती तांगा। ১० কহ কিছু গান শুনি কিছু ভান नवीन नागड़ी भगामा ॥ বীণাডে কেদার 🔻 ্রাগ আলাপন গাওই মুগধ রসে। রাধা কৃষ্ণ নাম উঠে অনুপাম ১৫

ত্ৰিতে প্ৰবৰ পালে 🛚 এ চারি আঁখর বাজগ সধুর বীণাতে কহত বাই।

**क्न वा मानिनो** राष्ट्र भारमाज রসের নাগরী ভোরা। मशून मशून शह । পিও হুধাকর-ধারা॥ লে হেন নাগর পরিহরি রোবে বাহার সমুখ বারি। ি কি হুখে আছহ বসি। পিয়াসে কেন বা পুড়ি। মলিন হইল त्म मुचमश्रम যেমন চাতক পাখী। वंतरक (त्र मूथ-मणी॥ হুধাকর তেন সাখী। मारन मन इन्रू प्रिंच कीन उन्न २० (चमन मकतो मीटम। তেজি আন্তরণ-ভার। नाहि बोर्य कल विदन ॥ ₹• ৰচন কহিছ তাতে নাহি রস এমভি ভূমি সে গভি। এত বা কিসের ভার ॥ ভাহাকর হেন রীভি॥ সে হেন নাগর ভাজহ বিরস মান। वित्रम वत्रत আছমে মাধবীতলে। চণ্ডাদাস গুণ গান। २२। তাহাকর—ভাহার। বীণা গাঁত-ভানে বুঝায় সঘনে मीन हशीमांज वरल ॥ ৮। কভ অমুরাগ সঞ্চার হইবে। कानका । ३৮। बौगाउ बाहे नाम खनिल हहेन। রাধা বলে শুন আমার বচন করহ কিছুই গান। ভোমার বীণাটি অপক্লপ বাজে प्रहरे। আর কিছু শুনি ডান 🌡 ভাৰহ দাকুণ মান। গাও গাও রামা মধুর বচন ৫ চলছ নিকুঞ্ব-ধাম 🚜 শুনিতে বড়ই হুখ। সে হেন রসিক রায়। কোধা না শুনিল হেনক বাজন ভাসুল নাহিক খায় 🛭 দূরে বার অভি ছুখ। ্ ভূমি সে নিদয় বজি। नग्रामा स्थन 🕆 কোণা ভোর ঘর ¢ কেমনে আছহ ছাড়ি॥ কেমনে আইলা ভূমি। এ রসে কেন বা ভল। কিবা ভোর নাম वनह जामाद्रव

**অতি মধুরল বাণী ।** 

त्मात्र नाम वटहे भागा।

তন রসবতী-রামা।

व्यामदा शादाद्वन

नवारे नामरत ১৫

ৰসভি গোকুলে

थ्यो थ्यो जानि

>•

মিলহ তাকর সহ 🛭

কোপ পরিহর ধনি।

जूमि त्म ब्रम्गी-मनि ।

এ রস হুখের সার।

এ সভি অমিয়া-ভার 🛭

মোরে রোলাইয়া গেছিল লইয়া नरम्पत्र नम्पन कान । , সেখানে এ গুণ কিছু সে গাইল · কিছুই রসের তান ॥ ২০ নেখানে হ**ইতে আইল হে**থাতে দেখিয়া ছুঃখিত কান। সে হেন নাগরে ভেটহ স্থদরি ভেলিয়া বিষম মান। চণ্ডীদাস কহে অতি বড় মোহে ২৫ क्षमती किट्यांती बाहे। ইহার কোপের বিপাক বিষম ভাঙ্গিতে নারিল কই ॥ ১৫। আমাকে সকলে আদর করিয়া গুণী বলিয়া ডাকে।

ৰাফি।

গুণী, না কহ কাসুর কথা। শুনিতে মরমে সেইখানে হানে উঠত দারুণ ব্যথা ॥ মনের আগুন বাড়ল দ্বিগুণ নিভাইতে যদি সাধ। বে জানে বেদনা মরমে পশিত্ তমুখানি হল আধ ॥ এ বড়ি বিষম বাঁশীটি বিদ্ধল বুকে বাজি পিঠে পার। টানিলে যতনে বাহির না হয় ১০ এ ছথে জীব কি আর॥ माक्रण (भन (य नहरू निवादण ' . আর সে বিরহ-আগি। এ ছুই বাহার স্বস্তুরে পশিল কি ছার জীবার লাগি ॥ >6

কাননে আনল কোন কোন আপনি নিভার সেই। কেবা নিভাইব হৃদয় আনল বিষম আগুন এই । কাহারে কৃছিব এ সব বিচার ২০ মরম জানয়ে কে। চণ্ডীদাস কৰে , যে জানে মরম ় সে জন ব্যথিত দে॥ । निष्ठांदेख यहि देख्यां कति। ১৫। তাহার জীবন সম্বট।

4

শুন নব রামা ঐ পরসঙ্গ না কহ আমার কাছে। আন কথা কহ এ যন্ত্ৰ বাজাহ ও বোল কি বোল আছে॥ ' (य जन कूजन अपन एम नरह मत्रम ए গাও গাও কিছু শুনি। এ কথা শুনিয়া হাসিয়া হাসিয়া वोना काँट्य निम खनी॥ গাইতে লাগিল হিলোল নায়ক রাগিণী ভুঞ্জার ভার। ১০ মধুর মধুর তান মান রাগ এ স্বর মধুর প্রায়॥ প্রথম রাগেতে . বাগিণী ভূঞায়ে গাওল প্রিরার নাম। রাধা নাম উঠে ১৫ हरें है या परत শুনিতে মধুর তান। এই ছুই নাম বাজে অমুপাম

মুগধ ছইল রাধা। •

क्हें। क्लिंग्स क्लिंग्स क्लिंग्स वितर्थ কড কড বংগ প্রধা ৷ ২০ শুন খাষা সধি গাও হার দেখি শুনিয়ে শ্রেবণ ভরি। গাও গাও পুনঃ রসাল রচন শুনহ শ্রামরু গৌরী॥ রাধা কান্ম বলি वौगांि वाक्यस २० শুনিতে আনন্দ বড়ি। হার মনোহর মুকুভার মাল দিছেন হিয়ার ভোড়ি। আগে আসি লহ গাইলে মধুর তুরিতে দিয়াছি হার। 💮 😕 🗼 চণ্ডাদাস কৰে কিবা সে অন্তুত কামুর পীরিতি পাইয়া পরশ স্থাধর নাহিক পার॥ ১৩। ভূঞায়ে--ভূবায়ে । পাঠান্তর। ২৯। আগে—সমুধে। মগন হুইলা গীতের আলাপে

সে ধনী কিশোরী রাই। আগে আইস শ্যামা তেদে নব রামা ভোমারে মরম কই॥ তু ৰাছ পসারি রাই স্থনাগরী ৫ গুণীরে করিল কোড়। শ্যামের অক্সের পরশ পাইয়া মনোরথ ভেল ভোর ৷ অঞ্জের সৌরত , পরশ স্থাক পাইতে কিশোরী গোরী। কটাব্দ চাহিতে হাসি ন্নসপর জানিল সুরস প্যারী । ৰবিয়া চাতুৰী কণট মুরারি ় • মান লয়া প্রিয়া মোর।

षूरत राज भाग अत्र राज १८ হুখের নাহিক ওর । জানিল কপট নারী-বেশ ধরি 🕟 ভাঙ্গিতে দারুণ মান। অতি ভেল স্থ সুরে গেল ছুখ ৰিজ চণ্ডীদাস গান ৷ ২০ ১৪ ৷ আমার মান লইলেন, হরণ করিলেন, ভালিরা मिर्गन ।

বিহাপ**ড়া**।

মানেতে মোহিত ছিল। হাসি নাসাপর . অঙ্গুলি ভেজায়ে ও নৰ নাগরী দিল। কে জানে এমন ভোমার ধরণ ৫ কণট আগুন ইথে। ৰপট অস্তবে বহুদিন মান ভাঙ্গল ৰূপট চিতে॥ আর কিবা আছে মান অভিমান **हल इ निक्श-रान।** >0 করহ বেশের পরিপাটী যভ চলহ সধীর সনে॥ শ্যাম স্থনাগর চভুর-শেধর **हिलल निक्**श्वधारम । হেৰা স্থামুখী বেশ পরিপাটী ১৫ কত সে মনের সনে॥ চলল কিশোরী म्यांम-पत्रभटन বদনে মধুর ছাসি। नत्त्र नहहत्रो मनूत्र भमन চাতুরী বদন্শশী॥

বেমন চিত্তের পুতলি চলিছে ্বান করে লই গন্ধ। ं ७ ठाँमवनमी त्रांथा। দক্ষিণ করে কুন্তুম কুগদ্ধ ॥ व्यारश्य ७एनी भिन्त निद्ध-माव। . নীল-লোচনী হেরয়ে নাগংরাক। বচন কহত আধা ৷ গদ গদ ভেল ২৫ **म्याम-वारम देवर्रम ब्राह्य ।** শ্ৰীষঙ্গ চলিতে শোভা বৰ্ণনে না আই ॥ বচন চপল আধ। চলিতে মধুর ठन्मन जुगक जुहाति। বাজ্বে পঞ্ম 36 ্মধুর মধুর নাদ ॥ **(मखन चुक्मात्री (गात्री ।** স্থান্ধ মলয় **ठम्पन करा**ही প্রীঅঙ্গে লেপন ভাল। - অগুরু সৌরভ পায়। গলে দিল মালভীর মাল। মন্ত অলিগণ কুন্থম কোকিল চণ্ডীদাস গুণ গান। এ সব সম্বনে ধায়॥ রাধাশ্যাম অসুপাম 🛭 বিচিত্র তুসারি ন্থগদ্ধ কুন্তম **১८। चाहे ∵चाहे**(म। বিছাই বনের পথে। নবীন কিশোরী প্ৰথে পদ তুটি ৩৫ আবোপিয়া যায় তাতে॥ চণ্ডীদাস কৰে দেখ চুই রূপ भाग-एत्रभटन অভি রসকৃপ স্থের নাহিক সামা। ্' **চলিছেন ধনী রাধা।** হইল মোহিড मिषिए मिषिए বিরস বদন কডি গেল মান যতেক জ্বনের রামা॥ আন কাজ গেল বাধা॥ 8. बारे जि नामिनी ए শ্যাম মরক্ত এ घृरे मिश्ट नरत । এ কিয়ে কাঞ্চন এ কিএ জলদ भात रहन नरत्र । রাই অভিসার করু। এ বিএ অতসী এ কিন্তে চম্পক (वर्भ कृषा कत्र श्रक्त ॥ কি দেখ বরণ শোভা। इः ज-जमनी त्रांथा । (यथन कनम 🔧 🔒 (जानात्र विक्रूती) **Бटन शह जांथ जांथ**॥ তেষতি দেখনে আতা ॥ वेष शित्रा शाबी। ७ पूरे कार গমন করত ভালি। দেখিতে নরান ছটি। ं क्षरवर्भ कद्रम वरन। আঁথি পিছলয়ে (रम ज़र्भ स्ट्रज ३८ क्य क्यं त्रानिशत् ॥ কি ছার বিধুর কুটি।

শ্লপ মলোহর त्माट्ड (माडा छाल मिटन । বৈহরত সেই गुथक ठड्डम বিহরও দৌহে ভালে।। ২০ নবীন নাগরী " এ রস নাগর রূপে করিয়াছে কালা। ठ**ओमांन करह** কিবা সে আন**ন্দ** কলপভরুর ভলা।। ৬। লখিতে—বক্ষা করিতে, দেখিতে। ৮। (वांप व्य 'त्मात मत्न (वन लात' व्हेट्य। १७। कृष्टि—चरम ।

> 89. कारवार ।

রাধা-শ্যামরূপ দেখিয়া মোহিত नव नव वद्रनादी। কে ছেন আনন্দ রস পরিপাটী ্রপ অপরপ ভালি॥ বিহি সে রসিয়া কেমনে পশিয়া ৫ গড়ল কেমন ছাঁদে। কত স্থা দিয়া গড়ল এ দেহা **गूथानि वक्कान वाँए।** ছ হ রূপ দেখি নয়নিয়া পাখী र्व क्र मन চাঁদের ভরমে

নাগর রলের সিজু। भौषांत्र ऋरभए७ व्यारमा वृष्णायन ১৫ ' কৈল মুখ কোটা ইন্সুাদ র্ঘ রূপ ছেরি वक्रक-नागपी

এ বর-নাগরী , রসের গাগরি

় শৈহিত হইল সবে।

সুধারস পিতে কন ॥

**उन्होमान करक** दमाबात हुन् भवन मानदा जिंद । २० a > २। क्वे बात्रत क्षण (पश्चित्रा नत्रनक्षण हरकात्र-णकोत मन চঞ্চল হইল ও চক্তমনে মুখা পান করিতে ইচছুক

TICTIV I

সই, হের আসি দেখসিয়া। নবীন নাগরী নাগরের কোলে আছে আরোপিড হৈয়া॥ লখিতে লখিতে জাখির পুতলি সে অঙ্গে নাহিক থাকে। বড় অপরূপ কিবা রসকৃণ অমিয়া বরিখে লাখে ॥ দেশ না চাইয়া ছুঁহু রূপখানি এমতি না দেখি কতি। বহু দিন থাকি গোকুল নগরে ১০ না শুনি না দেখি রভি॥ নাগরী ভেমন যেমন নাগর ছুঁ হো শোভিয়াছে ভাল। নৰ বুন্দাবন যত উপবন नकिन कतिन कारना॥ যত গোপনারী নাগর ছেরিয়া স্থাবে নাহিক ওর।

মিলনের পর সেবা।

চঞ্জীয়াস দেখি আনন্দে মোহিত

विद्यामिनी भाग-दकाछ ।

अर्थाद निष्कृतिया वाय-अध्य नम ३६ नद्धि त्मधून।

क्लान् ।

যভ গোপনারী চন্দন ব্যার লেপিছে দৌহার গায়।

কোন কোন জন **শ্ৰীপদ** চাহিয়া করিছে পাথার বায়॥ কোন কোন কনে গাঁথি ফুলদামে ৫ দিয়াছে শ্যামের গলে। কোন কোন গোপী শ্রীঅঙ্গ নেহালে চামর ঢুলায় ভালে 🛭 কোন কোন গোপী নিজ সেবালকে () সেবন করিছে গাঢ়া। এ অই রমণী কুলের কামিনী नकिन व्हेग्रा हाज़ा । অন্ট অন্ট সধী গুণের আর্ত্তিক মোক সক অন্ত লিখি। এ কুঞ্জ-কুটীর কুটীর ভিতর ১৫ বেকত আছুয়ে সখী॥ কোন কোন রস রসেতে বেক্ত রসিক নাগর রায়। এ রস-চাতুরী কে জন বুঝিব চণ্ডাদাস গুণ গায়॥ २०

অথ হস্পাবন-শোভা।

890 प्रश्रे।

নাগর রসিক এইরূপে নব করিতে রসের লীলা। গুপত পীরিভি করিতে আরভি রচিল নাগর কালা। নানা ব্ৰহ্মগণ করে স্থাপেন ৫ ' ' বিৰূপি কুন্তম ভারা। ফুলকুল ভারা ভরুকুলে যভ ব . . मकतम्म स्टब्स् जाता ॥ মৰুর মৰুরী চাডক চাঙকী रः निनो रः न त्व क्लाए ।

বেড়িয়া রঙম- মন্দির স্থন্দর কলরব বড রাজে। खमता खमतो क्रूर्म अञ्चिति " ্ স্থাপানে ভেল ভোরা। যমুনার বভ 🧈 জলচর কভ ১৫ কোড়ে কোড়ে কিরে ভারা।। ক্ষল-নলিনী বিক্সিত বত তাপরে জন্ম গান। শুনিতে মধুর বৃদ্ধার শ্বদ **क्** एमि इस्मित्र छीन । २० নানা জন্তু কিরে উপবন-ধারে আরোপি চামরু ষ্ত। হরিণী ছরিণ দেখিতে শোভন বানর বানরী কত॥ **८मिट ७ ५ नव-नाग**ती २० মোহিত হইলা চিতে। চণ্ডীদাস কৰে কি শোভা আনন্দে ত্ব স্থাবি মজিল ভাতে ॥

রাধা কতে শুন - শ্যাম স্থনাগর কহিতে বাসিয়ে লাজ। এক নিবেদন আছে রাঙ্গা পায়ে অধিক আছয়ে কা**ল** ॥ কহেন চতুর নাগর-শেশর ৫ কহ কহ ধনী রাধা। যাহাই বলিবে 🔒 তাহাই করিব रेश ना कत्रिव वांधा ॥ হাসি বিনোদিনী ক্ৰে আধ্বাণী শুনিতে আছয়ে সাধ। 🦠 ১০ ভোষার চূড়াটি মোরে বাঁধি দেহ

করহ বাঁশীর নাদ ॥

চূড়া বাঁশী বেহ মুরলী শিখাহ নব নব নব বরিছ-শিখর এই সোর মনে হয়। দেওলি চূড়ার পরে। সাধ আছে মনে বদি পুর কামে ১৫ নয়ন অঞ্চন অভি ফুলোভন ছেন মোর মনে লয় ॥ আকর্ণ পুরিত ধরে॥ ১৫ হাসিয়া নাগর 🦠 রসিয়া চাহিয়া সিধার সিন্দুর মুছিয়া ভিলক চাহিয়া রাধার্ম পানে। দিল সে রাধার ভালে। रहत এम धनि कूँ (लग्न तमगी **म्ग-मन्बिन्द्र म्बर**ानत विन्दू শোভিত স্থন্দর সরে॥ শিখাব বাঁশীর গানে॥ ২০ गलाय हम्पन অকে স্থলেপন ২০ নাগর বসিলা তরুৱে তলাতে ্অগোর কন্তুরী সনে। বনাইতে রাধার চূড়া। নীল সে নিচোলে পরিলা গোচরে চণ্ডীদাস বলে অপরূপ দেখি পীত ধড়া পরিধানে॥ নাগরী আগরি বাড়া। সোনার ঘাঘর বন্ধরি দেওলি নৃপুর দেওত পার। ২৫ **१२ । (इत्र .... अर्था**त्न । রসিক নাগর বেশ বনাইয়া শ্রীমুখ নেহালে ভার॥ **ष्टिमान वटन ८१४ क्**ष्ट्रस्त ্মহারাদে শ্রীমতীর চূড়া বাঁধিয়া কিরূপ সাজল রাই। বংশী-গীত শিকা। বসিয়া নাগরী দেখ মনোহারী ৩০ ও রূপ হেরয়ে ভাই। **>२। वित्रह-निथत...यशुर्वभूछ्यः।** বেশ বনাইছে শ্যাম। ১৯। দরে ∙ ইহার পর এই কথাটা অনেক বার আছে রাই বামকরে দিয়াছে মুকুরে ভাল অৰ্থ ৰোধ হইতেছে না। চূড়া বাঁধি অমুপাম ॥ মুকুতার মালে বেড়িয়া বসনে মাঝারে প্রবাল পাঁতি। ৫ **१३** । রাধা**রূপ অ**তি দেখিয়া মূরতি বিকল হ**ইল** তারা। তাহার উপরে , কুন্দের কলিক। কি তার দেখিলা ভাতি॥ ভার পরিমল পেয়ে অলিকুল • কোথা হৈতে এভ রূপ লয়েছিল এমনি মাধুরী ধারা॥ ধাইয়া পড়িছে ভায়। তাহার **উ**পরে মাণিক গাঁপুনি ১০ বেমন নাগরী ভেমন নাগর ৫

ज इर्रे जर्क्क थान ।

় • দেখি মন সুরছার ॥

¢.

তেমতি বান্ধিল আপনার চড়া ইথে সে নাহিক জান॥ রাইবাসকরে নাগর-শেখরে धतिया शहेल कुरक्ष । মরলী শিখাব বস ধনী রাধা এই সে কৃটীর-কুঞ্চে । क्रवस-बारमी ও মুগনরুনী কছেন হাসিয়া রসে। ধনী কৰে হাসি ১৫ দেহ করে বাঁশী বৈঠহ আমার পাশে 🛭 মধুর মুরলী যেমত বাজাও তেমতি শিখাও মোরে। শিখালে মুরলী যা চাছ ভা দিব অধীন হইব ডোরে ৷ খলের স্বভাব নহ খলপণা শিখাহ মুরলী গুণে। হাসি রসপানে শিখাব যভনে बिक हशीमांत्र छर्ग ॥

461

রসিক নাগর বলে শুন বিনোদিনি।
তোমারে শিখাব বাঁশা আমি ভালে জানি॥
রাধা কহে কুটিল ছাড়িতে বদি পার।
তবে গুণ শিখাইবে শুন বংশীধর॥
কামু বলে কুটিল সে জানিল কেমনে।
ধর বাঁশা কহে হাসি শিখাই যভনে॥
রাই কহে বিনোদ নাগর রসময়।
ভালমতে শিখাইতে আমার মনে হয়॥
করেতে মুরলা দিল। হাসিয়া হাসিয়া।
মনের হরিবে বাঁশা শিখাই বসিয়া॥

কামু করে শুন ধনি আমার বছন।

ক্রিভঙ্গ হইরা থাক পদ আবোহণ॥

চরণে চরণ বেড় দাঙাহ জলিমে।

অঙ্গুলি খুরাহ রাধা বলে ঘনশ্যামে ।

ক্রে চঙ্গাদাসে বড় অপরূপ বাণী।

চূড়া বাঁধি মুরলা শিখরে বিনোদিনা॥

ভাবোদ।

লাগর চতুর-মণি।
কাহেন একটি বাণী॥
তান শুন স্থকুমারী রাগে।
দাগুটাইডে শিখ আগে।।
ভবে সে ভালই লাগে।
ভবে বাঁশী শিখাইব সাথে॥
ধরহ আমার বেশ।
আরহ চরণ শেষ ॥
পদের উপরে দেহ পদ।

١ŧ

ত্রিভঙ্গ হইয়া রও বাঁশীসনে ক্থা কও ১০
বাঁশী বার্ও হইয়া আমোদ।।
শুনিয়া আনন্দ বড়ি সে নক-কিশোরী গোরী
ক্রিভজিম ভঙ্গিম সুঠাম।
ধরিয়া রাধার করে নাগর রসিক্বরে
অঙ্গুলি অুরাইতে শিখান।। ১৫
রক্ষে রক্ষে সে অঙ্গুলি শিখাইছে বনমালী
দেই ফুঁক সুজুমারী রাধা।
বাজাহ মধুর ভান মন্দ মন্দ কর গান
ভিজেক নাহিক কর বাধা।।
হালি কহে বিনোদিনী এবে কিশিনিতে জানি ২০
অলপে অলপে যদি পারি।

কংহন রসিক্সাক ভালে সে পাইবে লাজ চঙীদাস বায় বলিহারি॥

৮। আরহ---আরোপণ কর। চরণ শেষ --গদের শেষ-ভাগ।

>>। वाखःग्वाचाव।

## বংশীবাদ্দ।

• বল কেদার।

অঙ্গুলি খুরিয়া রাই মুরলী মধুর পূর শুনি ষেন ভাবণ পুরিয়া। দেহ ফুক ধীরে ধীরে অঙ্গুলি নাড়হ রাধে ভাহে শ্রাম দিছে দেখাইরা।। রাই, ছের দেখ চেয়ে মোর পানে। রজ্ঞেরজ্ঞের 'ও' রা-ধ্বনি করের অঙ্গুলি ঢ়াক প্রথম রন্ধ্রেতে কর গানে।। এ বোল ভনিরা রাই আম-মুখপানে চাই कूँक फिन जब बजगान। না উঠে কোনই গান ফাঁক কাঁক পড়ে যেন ১০ হাসি কামু না বায় ধরণ।। পুনঃ কছে স্থনাগর 💛 নহ নাগরী গৌরি নহিল নহিল এ না গান। পুনঃ দেহ দৃঢ় কুঁক বাড়ুক অনেক স্থ পুন: ধনি পুরহ সন্ধান।। কাসুর বচন শুনি • ব্রবভাসু-নন্দিনা करह क्षारे विनय्न-वहरन। এখন মুরলী শিক্ষা কেবল হয়েছি দীকা বিক চঙীদাস কিছু ভবে।।

बावन्द्र ।

পুনরপি রাই मूत्रनो बाकार উঠিল একটি ধ্বনি। উঠিল সঘন প্রথম সন্ধান कृष कृष উঠে वानी। বাজে অপশ্বর ৫ ক্তে শ্যাম পর ना উঠল রাধা নাম। আগে গাহ ধনি রাধা নাম 🤝নি তবে স্থধা সমুপাম॥ তবে হাসি ধনী ताकात निक्तनी কহিছে কামুর কাছে। মুরলী শিখিতে বড় সাধ আছে শিখাহ যে আর আছে ॥ ভূমি গুণমণি গুণের সাগর ্ৰামি যে অবলা জনে।

मूतनो निश्रात्म यादा ठाव निय ১৫ विक ठ छोनाम **छ**र।॥

অপশ্বর
 অপর শ্বর, বাহা বালা উচিত, তাহা নহে।

847

আহীর।

শুন হে নাগর গুণমণি।

এক রক্ষে ত্রুলনাতে বাজাহ ভাগই মতে

বেমন মধুর উঠে ধ্বনি॥

শুনিয়া রাধার বাণী ছাসিল সে গুণমণি

মধুর বাঁশীতে দিল ফুক।

এবাধা কৃষ্ণ ছটি নাম ধ্বনি উঠে অমুপাম

শুনিতে মধুর অভি স্থা॥

এক রক্ষে ছই জনে বাজে বাঁশী ঘনে ঘনে

মৃত ভক্ত মুঞ্জিতেড চাহে।

বমুনার যত নীর কুলে পড়ে হংখীর ১০ গান <del>তা</del>নি পরাণ মিলায়ে ॥

রাই কহে শুন হরি এই সে বিনতি করি ं ভাল মতে মুরলী শিশাও। ্কোন্রকে, কোন্কয় ফুঁক দিলে কিবা হয় (कान् त्रस्क, (कान् त्रन शांग्र॥ সপ্তাঙ্গুলি পরিচয় দশাঙ্গুলি করে হয় কোন অঙ্গুলে কিবা বোল। শ্যাম কৰে শুন রাই যে হেতু শুনহ ভাই বাঁশী কিবা পরিচয় ছল। कानरन मधुत वरल कान्धारन कान् पिरल २० আগে আছে ভাগৰতে লেখা। পুরবে সে এক কালে মধু বারি আনি ছলে তিন জনা আনি দিল দেখা 🛙 সেই তিন বসি তথা কহিতে কানন-কথা সেই মধু গাগরিতে ছিল। 20 ভিন জন অভিপ্রায় তালে মধু তথায় সকল চালিয়া ভায় দিল॥ मध्रता तारे मध्र हालि पिन क्यांन विध् त्महे मध् छेशिकन दीय। হইয়া নারীর কার দিব্য স্লিগ্ধ রূপ পায় ৩০ সেই রামা হইল রস ছায়॥ এবে ভার শুন কথা কোন কর্ম্ম সধী হেখা বড় পুণ্যবভী সেই নারী। দিল ভার পরিচয় मत्न मत्न कथा करा **ठछोमान वरन विन्हांतो ॥** >>। मिलारत-भिलारेबा बाब, खब इब।

ers.

दर्हे

আট রন্ধে আট গুণের মহিমা পাঁচ রস করে গান। এ রাগ-রাগিণী প্রথম আঁখর কনিষ্ঠ অস্তুলি তান॥ ভাবে মধু আছে - অঙ্গুলির কাছে ৫ অতি সে স্থারে বটে। রাই-ক্রে ধরি রসিক মুরারি 🖊 ্গানের মাধুরী উঠে। গাৰ গাও কিছু মধুর মধুর কালিয়া অ'াখর শুনি। প্রেমরসে রাধা আবেশ হইয়া ক্ৰেন একটি বাণী॥ রাধাশ্যাম বলি " বাজ্ঞয়ে মুরলী যমুনা উজান ধরে। খগ মুগ পাখী ছুসারি কাননে .৫ वाँगीर्छ अनिया बुदर । वानी कुँक पिन একবার রাই পুনঃ ফুক দেয় শ্রাম। ঐ রাগ-রাগিণী মধুর মধুর বাজাই অমুহিপাম ॥ রাধা নাম কেণে শ্রাম নাম ক্লেণে বেমন রসের বাঁশী। ছু ছৈ সে রসিক চণ্ডাদাস কৰে মরমে মরমে পশি 🛚

२०। जञ्चिशीम । जञ्जभा।

कारमार ।

ছঁত বাবে মধুর মুরলী।
অপরপ ছঁত রস-কেলি॥
এক রজে, ছফুনে বাজায়।
রাধাকুক নাম উঠে ভার॥
রাই কবে শুন নাগর কান।
পূরল মনের অভিমান॥
সাধ ছিল শিখিতে মুরলী।
ভাহাও শিখালে বনমানী॥

কান্দু কৰে আর কি শিথিবে।
নিশ্চর কহিবে ভূমি এবে॥
হাসি ধনী ধরণে না বায়।
দীন স্মীণ চণ্ডীদাস গায়॥

)। वादि···वांबात्र।

**७। ज**ियान...**ज**िनार।

**१**५१ ।

491.1

(इप्त (इ मुत्रनीधत । 'না বাস আপন পর॥ হাসিয়া কহ না এক বোল। বে ছিল মনের সিন্ধি (?) তাহাই পুরালে বিধি मूत्रली निश्चिल ताम जुत ॥ (१) আর এক শুন কান আকুল রমণী-প্রাণ আপনি বাজাহ নিজ বাঁশী। শুনি গোপ স্থনাগরী শুনিতে আনন্দ বড়ি খুবে বেন হেন নিশি দিশি । মধুর মধুর ধ্বনি গাও দেখি গুণমণি ১০ নিজ মুখে শুনিতে মধুর। কি জানি কি গাও গুণে বিষ ভরি মুখ খনে(?) **७**निटल परभारत्र हिशा स्मात ॥ ষেই ভূ**ত্তর**গণ করিলেই দংশন চেত্ৰন গেয়ান নাহি থাকে। 26 ভেমতি ভোমার বাঁদী কুল লেই হাসি হাসি एः भन **कन्न**रत्र व्यानि वृदक ॥ কড়ু বাঁশী প্রেমধারা কখন ভুজঙ্গপারা গরল সমান কভূ হয়ে। কেন বা এমন হয় এ ব্যবলা প্রাণ সয় ২০ मीन क्लोमांत्र देश करत्र।

হাসিল্লা নাগর त्रोधादत किछूरे वरन। কহিল সকল ভোষার গোচন বাঁশীর বচন ছলে॥ কখন কখন বাজয়ে কেম্ন ৫ কখন মধুর সম। কখন কখন গরল সমান ়গাইতে হইয়ে জ্ৰম॥ কোন অভিলাবে বাজয়ে কেমন না জানি ইহার রীত। মধুর মধুর বাজয়ে স্থস্থর কত আনন্দের গীত।। বাঁশী পরবশ নহে নিজ বশ কখন হয়নি ভা**ল**। বাঁশীর চরিত বুঝিতে না পারি ১৫ ভূমি বা কি আর বল।। তুমি কি জানিবে মধুর মুরলী নহে পরিচয় তার। বাঁশী আগৈ কর বশীভূত পণা তবে কিবা রূস হয়।। যখন নাছিল পরিচিত রাধা এবে হল জানা 💝না। চণ্ডীদাস বলে আমি জানি ভালে বে দেহ চুকুলে হানা।। ২৪। হানা…ধ্বংস।

হের শুন আদি কহে হাসি হাসি এক মনে অমুমানি॥ <sup>···</sup> কছে গোপীগণ হর্ষ বদ্দ ৫ ক্রেন নাগর রায়। কি হেতু হাদয় করল নাগর কহনা শুনিয়ে তায়। মনের বেদনা মরুমের খেলা কহিল স্বার কাছে। এক অভিলাব মনের মানস া ইহাই কহিতে আছে॥ কছ না বিচারি কহিল নাগরী চাহিয়া নাগর পানে। কহিতে লাগিলা রসের রসিক ১৫ উগারল খেবা মনে॥ এই বৃন্দাবনে রভন-আসনে त्रांशादत कतिव त्रांका। র্মণী মাঝারে জয় জয় দিয়া বাঁধিয়া রাখিব ধ্বজা॥ ২০ সবার মাঝারে ছত্ৰ দণ্ড দিব ধরিয়া আড়ানি মাথে। চতীদাস বলে অনভূত লীলা ইহা বা বুঝিবে কভে ॥ ১-२। औक्रक गकल (भाषीभगरक बिगटल लाभिटलन। ৪। অমুমানি-করনা করিতেছি। ৭-৮। গোপীর উক্তি। তুমি কি মনে করিতেছ, বল। ১७। 'উগারল---छेम्ब इहेन। এ বোল গুনিয়া হাসিয়া হাসিয়া কছেন গোপের নারী। বড় আৰ্ভুড ্ শুনিল বেকড देश প्রমাদ বড়ে॥

ভাল ভাল বলি ৰলে গোপীগণ বাহাই করিবে ভূমি : সেই সে হুদিন সেই সভা ফল কি আর বলিব আমি॥ কেহ বলৈ শুন নাগর মোহন ना प्रिंथ ना स्त्रिन कार्य। ১ রাধারে রাজত্ব দিব সে বেকত **पिरिय मानत मान ।** আনন্দ অধির হইয়া নাগরী কছেন কাফুর পালে। রাধা পাঠাইয়া সকল গোপিনী ১৫ বদনে বসনে হাসে অপরপ লালা কিবা সে স্ভিলা রসিক নাগর কান। এমন আনন্দ সর্বাসর লহরী চণ্ডীদাস গুণ গান। क्†िंग । কেহ কেহ গোপী যমুনার নীর তুলল পক্ত ফুল। কোন গোপী ভুলে নান সে কুন্তম ञ्चम मृशान कृत ॥ কোন গোপী ভূলে চাঁপা নাগেশর ৫ মলিকা মাধবী লভা।

কানড়া কুন্থম 🕠

कुम कत्रवी

কিবা সনোহর

ভূলল ঝামক্ল পাভা 🖁

চম্পক কেডকী বেলি।

ाट चुन्दर हारमनी ॥ '्

ধাতকী স্তৰম

আমলি স্থন্দর

ভুলন গোলাপ

নানা জাতি কুল 🦠 ভূলন জ্বার নাগরী গোপের রামা। কৈহ করে ভালি গাঁথে বন্মালা ১৫ নিকুঞ্জ সহরে জানা । ' নিকৃঞ্জ-বেদিকা বেড়িয়া কোপল 🕆 ञ्च्यत करकी-एव । স্বর্ণের ঘট বারি সে পুরল আমশাধা ভার পর॥ কোন বন্ধনারী এ ভৈল হলুদি বিবিধ সৌরভ করি। নানা গন্ধ আদি আছিল সে বিধি বঁসাইল আসন পরি ॥ সহস্র ধারা করি তাহা বারি ঢারি ২৫ স্নান করাইল গৌরী। ক্রিয়া গোপিনী নানা বেদধ্বনি সবাই মগন কেলি॥ জয় জয় ধ্বনি ষতেক গোপিনী ় দেওলৈ নিকুঞ্জমাঝে। অভিষেক করে বিনোদু নাগর শব্দ খণ্টা বোড়া বাজে 🛭 স্থান সমাধিয়া রাধারে লইয়া করত বেশের শোভা। বিনোদ পাগুড়ি বিনোদ বন্ধান ৩৫ বাদ্ধল আনন্দ লোভা। মাণিকের ঝুরি তাৰে আন্নোগিত দেওল পাগুড়ি পাছে। ভমু আছোদন • নীল ভমুত্রাণ অভি সে রন্থিম কাছে।। নেতের পটুকা ভাহে সে বান্ধল বেড়ল ভালই ভাগে। চণ্ডাদাস অভি দেখিয়া মুরতি ় \* বৈছন চাঁদের মতে॥

২৫। নালধার সহল ছিত্রমুক ইাড়ি।
৩৭। কুরি—হোট হোট মণিমুকার গাথা ৫৬ অলুনী
দীর্ঘ-শুজু মালা।
৪৪। বেন টালের মত।

8**८%** बाजद ।

অসীম স্থ্সর শাকল স্থান্দর নবীন কিশোরী গোরী। মঙ্গল বচন বত ত্ৰহ্ম কনা কুঞ্জেতে লইল সরি॥ রত্ন-সিংহাসনে বসাই যভনে ৫ উয়ল করল রাধা। হুলাহুলি দিয়া যভ গো**পী**গণ আনদ্দে নাছিক ৰাধা ॥ কেহ শিরে দেই দুর্বাদল আনি কেহ সে দিছেন ধান। কেহ কেহ কেঁকে শিরের তুপাশে গুৰাক স্থান্ধ পান 🛚 मधि मीन चंछे নানা ফল পুষ্প त्रांचन मन्यूर्य धति। রতন-প্রদীপ জালল ছুসারি ১৫ হেম ঘটে থাপি বারি # मलग्र हम्मन भूगमह धन অগোর কন্ত,রী চূয়া। নিকুঞ্জ-মাঝারে কুটার-ভিডরে ডারল গোপিনী নয়া। ` ২০ ত্মগদ্ধ কুত্ম বিছাই চৌদিকে অতি সে সৌরভ বাসি<sup>'</sup>। মধু-লোভে অলি লাখ লাখ কোটী ভাহাতে উড়িয়া বিস য় তাল মান রসে ২৫ माना वामा वाटन मूमम वाक्ति वीशा।

শব্ম করতাল সদন ভেউর ররাব ধঞ্চরি পিনা 🛭 পাথোয়াল বাজে কাহাল রসাল বেণুর শবদ রসে। বাঁশী করভাল এ সব মগুল ঘণ্টা কলবর শেষে॥ এই সব বস্ত্ৰ বাজ্যে সুভন্ত জয় জয় উঠে ধানি। মঙ্গল স্থচার বেদ সে বিধান ৩৫ করল যতেক ধনী। टेवर्ठन किटमात्री আসন উপরি রাজ-আভরণ সাজে। क्या क्या जिल গোপিনী-মণ্ডল রাধিকা করল মাঝে॥ ময়ুর ধরিল আড়ানি শিরেতে মরুরী ধরিল তা। ক্ষেকন ধরিয়া রাই শিরে দিয়া এই ছুই রহল ভথা। রাজভাট ডাকে ্ কোকিলা কোকিল ৪৫ ভাহকী ভাহক বলে। শ্রমর-বঙ্গারে শানাই শবদ ভাহা সে গাইল ভালে 🛭 **हश्रीमारम वरम** অপরূপ লীলা কুঞ্জে রাধা ভেল রাজা। রমণী-মাঝারে রমণী-মোছন वाँथिया फिल (म भ्वका ॥ >>। (वैटक··· क्षाटक्य करत-- इक्षांदेश (एव । मक्ता ।

নিকুঞ্জ সহর

সাজাইল পারি সারি।

সব গোপীগণ

ছদিছে কুটার আয়ারি বাছল রসিক চভুর ধারী । বাজার তুসারি ষভ ত্রজনারী ( সহরে বৈঠল তারা। চিত্ৰা দেবী ভেল রাজকারবার ঐছন স্বার ধারা॥ সহর-কোটাল হইল রসাল এ নব-নাগর কান। ১০ রসিক নাগর রাজকর সাধে মনে ভেল অমুপাম ৷ কোটাল প্রহরী রসিক নাগরী সাধয়ে রসের দান। রাজার দোহাই দোসারি ফিরাই ফিরিয়া চলত ভাই। ফিরাই স্থন্দর করহ চৌদল রচহ উপায় এই । , ' ২০ চৌদল করল এ নৰ নাগরী রাধা চড়াইল তায়। লইয়া সহরে ফিরায় স্থন্দরী मीन **ह**शीमांत्र गांग्र ॥

ক্লোর।

সহর কিরায়ে ধনী রমশীর শিরোমণি
লীলাবতী চামর ঢুগার।
চম্পাবতী আদি নারী এ নব অক্ট নারী
সেবা করে মনে অভিপ্রায় ।
কিরাইল বিনোদিনী নব নব গোপিনী ব

এই नोना बट्ट कान व्यक्ति दन कुक्कशम (तथ देश गर नवशूरक s ক্রিভে রাদের রস মদনে হইছে বল রচিলা নাগরবর কান ৮ ক্রেন রসিক রায় শোর মনে হেন ভায় विद्धल महन भन्न वांग ॥ পুনঃ ধরি করে বেশ বাঁধল চাঁচর কেশ (वनीत वकान करत्र छोएन। বেড়িয়া কনকজাল ১৫ নব মল্লিকার মাল • মাণিক কোঁপনি দিয়া বাঁধে॥ সিঁথায় সিম্পুর শোভা যেমন রবির আভা তাহে শোভে চন্দনের বিন্দু। মেঘ হইতে যেন শশী আসিয়া যেমন বসি कछ घटे। इटें। (कांटी रेन्द्र । অধর রাডুল দেখি হিঙ্গুল কিলে বা লখি নাসার বেশর ঝলমল। কাঁচুলি সে অনুপাম বেড়িয়া মুকুভালান • অমুপাম কি ভার ফুব্দর॥ নানা আভরণ সাজে কিহিণী সূচারু বাজে ২৫ **চরণে নৃপুর করে ধ্ব**নি। কি আনন্দ দেখি ভায় মনমৰ মুরছায় **ठ** छोमान याहेर निक्ति ॥

२४। निक्रनि-विल्लादि। "কাহার বাছনিরে নিছনি লয়ে মরি।"—ভারতচন্ত্র।

णाम-बारम देवर्डन किर्भाती। मिट्य दिन मिन्दर विश्वति ॥ লোনার কমলে মধুকর। ভেমতি সাজন কলেবর।

ছঁহ রূপ না বায় কথন। (कांग्री क्लांग्री मृत्रद्ध महन ॥. मरुवतो कूक्ष-निदक्खान । কেহ করে চামর ব্যঞ্জনে । **(कर ठन्मन मिट्ड शाय ।** কেছ চুয়া চন্দন বোগায় ॥ কেহ করে পাথা মন্দ বায়। চণ্ডীদাৰ ছ'ত গুৰ গায়।

यूशनकाभ।

চাহিয়া ছু আঁখি (एथ (एथ मिथ কিশোর-কিশোরী-শোভা। বিজ্ঞারি বেচল যেমন খনেতে কি দেখি বরণ আ**ভা**॥ স্থাগণ ক্ৰে **(इन मटन लट्य )** মেঘ আসি কিবা নামে। আসি আচন্দিতে গগন হইতে কলপ-ভরুর ঠামে ॥ কোন সখী কছে এই খন নছে ও দেখি শ্রামের দেহা। বিজন্নি বলিয়া দেখিলে ভালিয়া ও রূপ কিশোরী সেহা॥ पिश्यू यक्तभ যার অপরপ কহিলে কি জানি কি হয়। ছু হ অমুপাম বেশের আভাতে ১৫ বুন্দাবন শোভাময়॥ .

কালিয়া বরণ এক ভক্লবর আর ভরুবর গোরা। कि रहकू देशन বড় অপস্থত বিচারি কহ না ভোরা।

স্থীর বচনে আর স্থী ভাছে 🖖 🕟 চাহিল বনের পানে। দেখিল বেকত আধ সে গউর · আধ সে কালিয়া সনে 🛭 এক সখী ছিল চেডন গোন্নালী ২৫ বিচারি কহিছে তায়। এ কথা কহিতে কাহার শক্তি কে না পরতীত বায় 🛚 রসের সায়র রূপের দরিয়া তাহে আছে এক স্থা। সেই সুধা আনি বিহি সে রাখিল বেকত করিয়া জুদা॥ আর কৃপমাঝে বে ছিল অমিয়া লইল যতন করি। সেই হুই স্থা বিহি সে আনন্দে ৩৫ রাখল একক ধরি॥ চণ্ডীদাস কছে অপার চাডুরী (क कन वृत्तिव देश। বিহি সে রসিরা তাহাতে পশিয়া গড়ল দোঁহার দেহা॥ 8• च्हरे । ছুই সুধা লয়ে বিছি গেল ধেয়ে

গড়ল মূরতি দুই। কুন্দন স্থন্দর অভি মনোহর মূরতি **হইল দেই** ॥ ্যখন গড়ল্ প্রথম পৃথক্ ৫ नित्रमाण देकल एएका। সম্পুরে আছিল ক্রপের স্থায়ে পড়িল কাজর রেহা।

সেই হ্রা করে গড়ল মুরতি কালিয়া হইল শ্রাম। আর হুধা ছিল আন ঘটে পুরি ভার কহি পরমাণ 🛭 🔻 ভবে সেই বিহি গড়ল মূরতি অনেক বতন করি। চামণ করকলা (়) পড়ল ভাহাতে ১০ ভাহাতে হইল গৌরী 🛭 বিহি নির্মিয়া চলল সেখানে বেখানে রসের নদী। (महे नेपोखन (थांग्रल स्थलते भाजन दक्छ निधि । १ क्लानभारन रेकल (गई राज जन्नान এ তিন ভূবনে ধাতা। চণ্ডীদাস বলে এ তুই সুরঙি কে জানে এ হুখ-কথা। ४। (त्रहां ·· (त्रथा।

ধানশী।

এক এক দেহ দেহের গণন এ দেহ ভাছয়ে বহু। নব নব শভ সহত্র পৃরিত व्यवस्य जमस्य कर्रः ॥ কোন অঙ্গ কোন করত সেবন ৫ সহস্ৰ পুটকে ছটা। रेन्प्र् विन्द्र् , विवह जांकांव देवश दन नव चढे। ॥ সাত পুট ঘাট সারল্য শব্দক চিহ্ন ভিহ্ন ভড়িশর। >• এক এক দেহ দেহ ভিন্ন নহে

দেহে রস ভার হর 🛊 🕟

কোন সে বভাবে কিসে কোন রডি রতির পার্তিক কড। 🦒 কোন লৈ প্ৰথানে - কোন সে বেকভ ১৫ কোন লে ৰোক্ষক বড । চারি চারি অঙ্গ অঙ্গ বহু এ অহ কে রতি পায়। চণ্ডীদাস কৰে কোন কোন জন কেহ সে খু জিয়া পায় 🛭 ক**হিল বেক**ত এই সব ভদ্ব ,ইহা কে কহিতে পারে। ছায়ার মুকুর (पर (म (म ४२ এ क्था (म्बिट्व इटन ॥ কালার ছটায়ে কালরূপ ধরে ৫ এ সব ভরুর কুলে। গৌর দেহেভে গোর বরণ ্ধরিয়াছে অবহেলে॥ স্থীর বচন হাসিয়া সঘন ্ সকলি গৌর দেখি। সাপনার দেহ দেখল গৌর দেশল সকল সধী॥ নিকুক্ষ-ভূবন সেই ভ গৌর গৌর কালিয়া কামু। সকল গৌর দেখল বেকত ১৫ গৌর আপন ভন্নু ॥ नक्न लोब দেখিয়ে স্থিনী मरमर् गांगम धन्म। व्योगान करव ও নৰ নাগর গোর ঘইল কুঞ্চ 🛚 🛊 তক্ত হয় ত এই পদে গৌরাদ অবভারের স্ফন। रम्बिर्ग्न ।

यर्हे । टेडचटन एत्यन আর অ্পরপ ভমাল ভরুর গাছে। সে গাছে কভেক চাঁদ ফলিয়াছে দেখি অদস্ত সাজে ! কোপা হতে এল এত শশধর ৫ অক্লণ সেখানে কেনে। ময়্র ফণীতে একত্র দেখিয়ে কি হেতু ইহার সনে 🛭 স্থার বচন শুনিয়া তখন কহেন কোন বা সধী। ও নব ভমাল ও নব কিশোরী তাহাতে বেড়িয়া থাকি। ফুলে ফুলে এক দেখ পরতেক **ज्यम** ना रहा अरे। ভুজক সমান রাধার বেণী সে ১৫ **(फ्लना इटेर्ड उटे**॥ বিধু যত দেখ ও নখ-চন্দ্রক উপমা গণিব কিসে। प्र इ प्र ए है । निश्र नश्र কহেন এ চঙীদালে। क्नां । স্কল গোপিনী মোহিত হইল দেখিরা দোঁহার রূপ। ক্ষেণে ক্ষেপ অনন্দ বাড়িছে প্রেমের রসের কূপ। **ट्य एम्थ** नग्नान ভतिश्रा ৫ কি শোভা আনন্দ বড়ি।

তা পানে-না রছে

পিছলি পড়ায়ে ছড়ি॥

এ ছুটি নয়ান

কোন সে বিধাতা রূপ নির্মিণ • এমন রসের সার। 5. ও क्रिश्नहरो (एषिए कि एर्सि . কেবল অমিয়া ধার ৷ এভ দিন বসি গোকুল নগরে ना एषि अधन कना। নিকুঞ্জে শোভল এড রূপ বেন ১৫ কেবল কালিয়া সোনা॥ ভাবের আবেশে ও নব নাগরী স্থাৰের নাহিক সীমা। চণ্ডীদাস বলে দোহার রূপেতে মোহিত ত্রকের রামা। ₹•

899

काटनांच ।

রাই শ্রাম একই পরাণ।

হৈরি নাগর ধরণে না বান ॥
শ্রাম-কলেতে কল হেলাইয়া।
বাহ বাছ আছেয়ে বেড়িয়া ॥
সোনায় সোহাগা বেন মিলে।
ডেমভি নাগরী নাগর কোলে॥
এক অল ছু ছু নহে ভিন।
চণ্ডীদাস দেখি নিশি দিন ॥

100

∓icate ı

বেশ অপদ্ধপ সিরা।
ধরণী উপরে এ চারু পঞ্জ
বেশয়ে নয়ানে চেয়ে॥
পঞ্জ উপরে বিশ দাশধর
চাঁদের উপরে গজ।
এ চারি গজের উপরে যুগল
কেশরী শোক্তি প্রাক্ত ।

কেশরী উপত্রে এ ছই লাবুর সায়র উপরে গিরি। গিরিন্ন উপরে এ ছুই তমাল ১ চাক্ল শাখা ভাছে ধরি # ় একটি ভষাল তাহে এক শুন ৻ नवचन मम (मि । একটি ভদাল সোনার বরণ শুন গো মরম-সধী॥ · অক্ল**ণ**-বৰণ তাহে কলিয়াছে এ চারু উত্তম ফল। ফলের ভিতরে কুল কুটিয়াছে নাহি ভার শাখা দল ॥ ' তাহার উপরে কিয়ের বসতি ২০ তা পরে চকোর চারি। ভা পরে চাঁদের এ ছই বৈসভ পিতেই ভাহার বারি ॥ ভাহার উপরে বিধু দে অরুণ **ा भरत मह्त चरि।** ं २० **ठछोमारम रमि** মোহিত মানল এ কথা জানিবা কহি ৷ )। **जर्भक्र**ने (स्वट्न ।

> ६०५ **चर्**र-मण्ण ।

२१। कहिः (क।

দেখ নব কিশোর কিশোরী।
ও নব নাগরী দেখ নাগরের কোলে গো
আন্তে অক্টে আছিরে পসারি॥
নবঘন বেন শ্রাম রাই সে চম্পক্লাম
ছুঁছ তুমু এ ছুই সমান।
মন্ত ক্রিবর কাছে বেমন সুরঙ্গ রাজে
মন্ত ভুক্ত কুমুম মুঠাম॥

শিখিপুদ্ধ উড়ে বার এক বেশী শোভা পার

, এক কপালে শাশবর ধরে।

আর কপাল মাবে কিবা সে জরুণ সাজে ১০

নীল পীত বসন ফুল্মরে ॥

কলরা বাহটি টার আর বৈসে মভিহার

বেশর সে আভরণ সারা।

এ মণি-মঞ্চরী পার তাহে সে পঞ্চম গায়

আর পদে মৃপুর বিকারা ॥ ১৫

ছঁ হু সে মধুর হাসি জমিয়া বরিখে রাশি

রুক্ষাবন কি শোভা আনন্দে।

চণ্ডীদাস বলে ভাল ছুঁ হু রূপে করে আলো

গোপীগণ মোহিত সানন্দে ॥

क्ष्ट्र-त्रज्ञ ।

গুণের সাগর এ নব নাগর রাধার বদন হেরি। অমিয়া বরিবে হাসি রসে রসে বামে শোভিয়াছে গৌরা 🛚 (एथ (एथ ज्रथ निश्रा। রূপ মিরমিল কোন বিধি এত **क्र का**रन कि खुश मिश्रा ॥ কেমনে গড়ল এডস্ক্রপথানি थक्क (म त्रिम्मा करन। রূপ নির্মিল ১০ কোন বিধি এত कुन्मन मरनद नरन ॥ ७७ क् किटन অমিয়ার সনে

মুখেতে দিয়াছে ঢালি।

হিয়াতে রাখিয়ে ভালি।

চণ্ডীদাস কৰে

**३३। कूक्ना∙क्ॅबिन**।

ছুঁ ভূ রূপধানি

>0

क्र्रे-नक्त ।

শুন গো মরম-সই কি রূপ দেখিতু ওই বেশ কি দিব তুলনা। কি আর কুলের ভয় হেন মোর মনে লয় मत्न ब्राट्ट वर्ड्ड रचावना । হেন মনে করি সাধ यमि नट्ड शत्रमात ए श्रुत्र करन कछह छत्राहै। হিয়া কাড়ি বধা ওফু রাধিতে কালিয়া কাঞু সেইখানে করিভাম ঠাই 🛭 নারী জন্ম করে বিধি নহে এই গুণনিধি নিশি দিশি রাধিসু সম্মুখে। বেখানে মরম স্থান রাখিলাম সেইখান না পাইয়া শেল রছে বুকে। শাশুড়ী ননদী পাপ তারা দেই বড় তাপ **উ**চ कथा ना शाहे कहिएछ। हशीमाद्य कट्ट **जांग्र** ट्रिन त्मांत्र मृत्य कांग्र ३६

৪। বোষণা···বাসনা।৯। নহে···ভাহা হইলে।১০। রাধিয়্^·রাধিভাম।

১७। ना (शह—(वांध इत्र·•कांशह)

**६०**६ (क्षांत्र ।

এ কথা না গেল মোর চিতে ।

রসিক নাগর চতুর-শেধর
করিতে রসের রক।
মনমধ বেন কুঞ্চর ছুটল
রমনী মোহিতে সক্ষম

ধৈরজ না মানে আন নাহি শুনে ৫

• মন্তচিত ভেল তার ।

নাগরী সকল দেখিকা বিকল

কটাক লহতে চার ॥

ঈষৎ হাসিয়া নাগর রসিয়া করিতে রমণ কেলি। বেগন কুন্তুম দেখিয়া ক্লখম লোভিত হইয়া অলি॥ যেন করিবর করিণী দেখিয়া रेधब्रक नाहिक मारन। मृशिगी (प्रिया ১৫ মত্ত মুগ বেন ছুটিয়া বুলয়ে বনে # তৈছন লুবধ মাধৰ মুগধ মোহিতে তরুণীগণে। অভি রসলীলা নাগর চলিলা विक हंशीमांत्र छट्न ॥ ৩। মনমথ---উন্মত্ত (বাধ হয়, উনমত।

বিহাগড়া।

নিকুপ্প শোভিত কি রস-কেলি
এ মণিমগুণ করিয়া মেলি
রতন-মণ্ডিত পরেশ দোল
শুস্ত স্থাকা গড়ল ভাল

রতন-মন্দিরে শো**ভি**তে। ৫

ঝঝর ঝলকে এ চারু পাশ
মুকুতা ছসারি গাঁথনি সারি
গল্প মল্লিকা বাতি হুবাস
কুঞ্জ-কুটীরে চৌদিকে ভাল

স্থান্ধে আমোদ মোহিতে ৷ ১০

চৌদিকে ভ্রমরা ভ্রমরী গান
চক্ষোর চকোরী গাওত তান
হংস হংসীকর জোড়েতে ক্রিরত
নিকুশ্ধ-মাঝে মাঝে খুরি

মণ্ডলগণ সারিতে। ১৫

মৰ্না মৰ্নী সরস ভাল কোকিল ভাত্তী ভাকে নসাল শানী শুক পিক ভাকত সার

ब्रम् ब्रम् क्थ भारिए ।

₹•

ৰবিণ হবিশী সাবস পাখী
ভূলোক গগন ক্ষেত্ৰত আঁখি
বৈছে দিক উজন বেধি
ভূচাক্ল গমন করত কেলি

হেরি নয়ন মোহিতে।

চামর চামরু কুঞ্জররাজ ২৫ দেওত নি**কুঞ্জ-মন্দির-মাঝ** ভাহাতে **সাজল রাজ** ভাহার বামে নারী গৌরী হেরি চণ্ডীদাদ গাইতে ম

विद्याशकः।

ফুটল ফুল মাধবী বাতি
পারল কিংশুক ধাবক ভাতি
কেতকী কুন্দ কদম্ব পাঁতি
ধরণী লম্বিভ রসাল ফুল

বরণ কুন্তুম-কাননে॥ ৫

ক্যো আমলকী পলাশ ফুল কুটল মলিকা ছুসারি কুল করবী গুলাল সৌরভ পূর গছে আমোদ কাননকুঞ্জ

বধুকরকর শোভনে॥ ১০

বাঘনধি আর কুবল আদি
ফুটল ফুল সব সমাধি
চণ্ডীদাস গুণ গাওত সাধি

অপরূপ রূপ কাননে 🛭

গাওত কডেক তান মান 30 ধরিয়া মাগরী माश्रद्धत कत ্ হেরি বুরুতি মলের প্রাণ निकृश-वांकाटन किरन । অভি মগন এ পাঁচ বাণ এ নৰ কুঞ্জৰ चाकात्र श्रुष्णत ए রসিক নাগর শোভনে # प्रिचित्रा नागत्रताम । িঃ। রসাল-জাম, অথবা রসযুক্ত। এক শত নারী **कुश्चर जाकात** ১०। कत्र गण्यम् আসিয়া মিলল মাঝ ॥ ১৩। गांविः गांद्य—मदनत्र व्यानत्मः। ा (मधि मत्मत नवान वानवा চড়িয়া কুঞ্চর পরে। রাধা স্ঠাম তাই চড়ল ভাহাই कांटनांच । বিহার করই তারে ॥ বস্তু ভাল মান কুঞ্জর কামিনী वक्षक व्रमण অধল রমণী করত গান ফিরই বে কুঞ্জে কুঞ্জে। মগন হইয়া গাওয়ে বাওয়ে এই রস-কেলি करत प्रदे करन ३० वब्रक-प्रमण धनौ ॥ जकन कामनभू(अ । ঝাঝরি গান মুদক্ষ ভান **हशीमांग** सिंध कामना-मशन ররাব ঠমকি ভান মান স্থাবে নাছিক ওর। মূরজ কেরি ভেরী বায় নাগর নাগরী প্রেমের লহরী দুমি দুমি খন বাজনি॥ মনমধে হল ভোর ৷ বীণা ব্লেপু সব মণ্ডলী গায় পাখোৱাজ সৰ কি গভি বায় স্থানী পিণাক মধুর গাওনি। (4614 1 (एवं (एवं व्यश्तिश । চণ্ডীদাস দেখি মগস ভার শোভিছে সুন্দর এ নৰ কুঞ্জর গোপীর মণ্ডণী কি শোভা পার বড় আনক্ষের কৃপ। আনন্দ বড়ি সে রসের সার নিকুঞ্জ-ভৰনে বিলাসি সম্বনে ক্ষেরি ক্ষেরি মগন চিত্ত 20 লহরী মনন ভাতি। विषय विष्ण कामिनी। হিয়ার মাকারে महन दश्यन ছেরিয়া ধবল রাভি। শব কুঞ্জ-লীলা। (गांभिनी स्माहिटड গমন মোহিত ভেজিয়া কুয়ের বাস। श्रानुको शतुक ১० নাগর নাগরী **প্রেমের সাগরি** विद्यम मनन ध हुई भ्रमन महन्। **ছাড়িয়া नाগর পাশ** ।

পরের রমণী নিশিতে প্রথম জানিরা নাগর রায়।

এইখান হইতে মূল পুথির ৮টি পাতা নাই। অনেক চেটাতেও পাই নাই। ৪০টা পদ বাদ গিরাছে। ৫১০ নং পদ পড়িয়া বুঝা যাইতেছে, কোন সবী প্রীক্তকের সহিত বনমধ্য দিরা বাইতেছিলেন, পথে ক্লান্তি বোধ হওরার উাহাকে কাঁবে করিতে প্রীকৃষ্ণকৈ অনুরোধ করেন। তাঁহার অহলার হইরাছে বুঝিরা প্রীকৃষ্ণ সহসা অনুশ্য হন। ৫১০ সংখ্যক পদের প্রথমাংশ পুথিতে নাই।

630

### আগল শ্রেম অভিভরে বিকল হইল প্রাণ ॥ রাস-জাগরণে जगम मचरन कांथि पुन्न पुन्न करता। ব্দার আমি মেনে চলিতে না পারি ৫ শুনহ নাগর রে ॥ পারি এ কাননে তবে সে ৰাইতে यपि कैरिथ कति नह। তবে সে বাইতে পারি বনভিত্তে শাগে এ কবুল কহ। হাসি কৰে কিছু রসময় কান ইহার এমন রীত। রাধার বেমভ मणा छेशकत ভেমভি ইহার চিত। ভাল ভাল বলি करह वनमानो ১৫ ভোমারে লইব কাঁথে। বড নহে.এই . তার পরিণাম ' কহিলা শ্রামর চাঁদে। সরুস বচুম পেয়ে সেই গোপী

উঠিয়া বস্ধ বাঁধে।

₹•

ভার আসি করে আরি করা মোহে
মোরে আসি লহ কাঁথে ।

মুখর শেশর আনিল অন্তর্গ
ইহার এমন দশা ।

মদ অহজার হইল ইহার ২

গাওল বিষম দিশা ॥
হাসি শুপমণি কহে এক বাণী
ভূমি কি চড়িবে কাঁথে ।

চণ্ডীদাস কয় বিপাক পড়িল

সে গোপী পড়ল ধন্দে ॥ ৩

4>>

শুন গুণমণি কহি এক ৰাণী কাঁধেতে করহ মোরে। তবে সে এ পথে পারিয়ে চলিতে

নিশ্চয় কৰিয়ে ভোরে॥ আইস ধনী রামা কাঁধে করি ভোমা । সেধানে বসিলা হরি।

শ্রামের সরস বচন পাইয়া দাঁড়াইল গোপনারী ॥

বসন নিবিড় করিয়া বাঁধল সেই বে চড়ব কাঁধে। ১ হেন বেলে তথি চলি সেলা কতি

সে নব গোকুলচাঁদে॥
সেই নব-নারী কার্ছের পুডলি
দাঁড়ায়ে চেডন হরি।

বেষন আকাশে <sup>\*</sup> বজর ভালিয়া ১৫ পড়ল শিরের পরি ॥

কান্সরে করুণে পড়িয়া কাননে ধুলায়ে ধুসর ভন্ম।

বৈষন হরিণী বিকল হইয়া কাননে বেড়ার পুসু ॥ ২০

द्रांषम (वषन चटिएम गर्दे · হারায়ে পরাব-পতি। ভোগা গোলে নাথ ছাড়ি মোর সাধ ভোষারে না দেখি কভি । সেই নব-রামা भारमदा पुलिएत २० একাকী কাননে পড়ি। মুখে নাহি বাণী বেন অনাথিনী শিরে করাবাত পাড়ি। (यम (म धवनि সোনার পুডলি পডিয়া কামন-বনে। 90 বিকল হইরা मुब्रहा भारेटब्र होन हश्रीहान छटन । २२। यवनि-भन्नी । एंट्रेड भारत ।

> ४)२ (क्यांत्र ।

প্ৰছে নাথ কি করিয়া গেলে। বন্ধর পাড়িরে মোর ভালে। আমি সে করল কোন কাজ। পুরিহরি সভীপণা লাজ ॥ আও পাছ কিছু বা ওপিতু। ছার মুখে কি বোল বুলিমু।। ভূমি পতি পুরুষ-রতনে। ইহা না জানিল পরিণামে 🛭 चशत्रांथ (क्या এইवात । ভন নাথ মহিমা ভোগার ॥ व्यवना कि कारन खनवानि। আমি ভোমার ভরণের স্বাসী # আপনার ঋণে কর দযা। লইরাছি ভুরাপদ-ছারা ॥ मीन हि हश्रीमान बरन। कांग्र प्रकारत थनी हरण ॥

>•

8 | 明要求(4...獎;4)

410 द्श्य व्राथा विदनाणिनी ब्रम्बीब निरंबामंनि कैंबिट कैंबिट तारे भर्य। প্রিয় সহচরী সনে **ट्राल जथी जारबार**न वछरे बरेन चनुत्राथ । বিরহে আকুল ধনী ব্দার বভ গোপিনী ৫ সেই বনে প্রবেশিল গিয়া। (मधिन हत्रनहिस् বিহি পদ আছে খন তার কাছে কাছে আর্নিয়া॥ त्रम्भीत शह जाटड । त्र शहरत काटड काटड औ एमच नयन ठाविया। এট प्रिथ क्षणमनि आनिया वा काम धनी (वन किन इत्रव इहेग्रा । ভার চিহ্ন দেখ আরে সিন্দুর দেওল ভারে পত্তে মথি পরাইল ভালে। সেই পত্ৰ ঐ দেখ कांकरमत्र कार्र्ड (त्रथं ) ए ऋरवण करल कुष्ट्रला। हमान प्रियोटक व्यक्त जोत्र हिस्स एम्प त्राप এই দেখ ভাহার নিশান। নয়ন আগুন হয়ে वल्दन वनन नद्य অতি বড় উঠি গেল মান। বেশ কনাইল ভালে ভুলিয়া বনের ফুলে এই দেখ কুত্ৰম ভুলিয়া। কুমুন ভাঙ্গল হরি এই বৃক্ষ-গভা ধরি ভার চিহ্ন দেখ না আসিয়া। ভা দেখিয়া অমুরাগী বিরহ উঠিল আগি ২৫ (कान ब्रामा अल कुक नरव ! हिशान करह कानि नरम नरत रागिधनी তারে কামু গেছেন ছাড়িয়ে। এই পদ হটতে বুঝা বাইতেছে বে, প্রীকৃষ্ণ কোন গোণীকে गहेबा ख्रीबाबिकांब निक्षे स्टेटि अश्वरिष्ठ स्त । त्रहे গোণীর অংকার দেখিয়া প্রক্রক ভাষাকেও ভ্যাপ করেন।

-६५८ कोनको ।

দেখিয়া বিকল অভি সে আকুল সে নব কিশোরী রাই। মানেভে মোহিভ অভি গুরন্তর কিছু মা বোলয়ে ভাই । कूरलव व्रमनी क সে কোন কাৰিনী কেমন ভাহার কাল। বঁশুরে লইয়া সবারে ভেজিয়া বিহুরে বলের মাঝ ॥ বিয়োগ বিরাগে একে বিগ্ৰিণী তাহে ভেল অভিরাগী। তাহা সে করিব (र जाए मत्रम বদি বা পাইয়ে লাগি ॥ এ সব থাকিতে সে এত বাধিত সে হইল এভেক ভাল। व्रागिनी चल्डरत ১৫ এই অসুরাগ विद्योग छैठित्रा राम ॥ সেই পথে চলি যায় সবে মিলি রাধার সক্ষেতে দেখা। মূৰ্চিছত হইয়া সেই গোপনারী পড়িয়া আছিল একা। চণ্ডাদাস বলে 🗢न विरनामिनि देशत जेहन प्रभा। निष्ठेत वहम কহিতে ইহার পাইলা পর ভাষা॥ (१)

कामका ।

স্থি, এমন ভোষারে কেন বেখি। একতা গহন বনে পড়িয়া আছহ কেনে আভরণ ককল উপেথি॥

রাধা আগে ক্রহে বাণী কি আর পুত্র তুদি कहिराज वस्टा हरत गांच। ৰচন-চাতুরী করি ষুই অভাগিনী নারী করিলাও জাপনি জকাজ। बन्नावन बागबरम जागि गव भागी भारत **উक्षा**शव विभित्मत्व এहे । কামুর চরিতে কাঁথে ১ রাধার বাসনা সাধে ভোষারে ভেজিয়া গেলসেই। আমারে লইয়া শ্রাম আইলা সে বনঠাম আগে দে কহিল কলভাষা। ভাঙ্গি মোর অহকার ' তুখ গেল ছারধার আমার হইল হেন দশা-॥ ভোমার ভাঙ্গিতে মান তেজি গেল কোন স্থান সেই মত একাকিনী বনে। अभि स्थामधी ताथा अन्तरत शाहरत वाथा मीन ह्योगांत्र देश खर्ग ॥ রাধিকাও পূর্বে শ্রীক্লফের কাঁবে চড়িতে চাহিয়াছিলেন ভাহাতেই শ্রীক্লফ ভাঁহাকে ভাগে করিয়া যান।

434

এ কথা শুনিরা বিনোদিনা।
অধিক হইলা বিরহিণী।
কি আর করিব স্থি বল।
কাসু বড় নিদয় হইল ।
বনে বনে গুঁজিতে মাধাই।
ভার দরশন নাহি পাই।
ভার দরশন নাহি পাই।
তোর দরশন নাহি পাই।
তোর দরশন নাহি পাই।
আনল দোহে জেল নাম।
আনল দোহে জেল বাম।
আমরা কি পাওব কান।
বার লাগি ডেজল গেহ।
ভচু পদে সোপসু দেহ।

¢

>•

শুরজন পরিজন আশ।

দূরে ভারসু অভিদাব।

কুবচন করিল ভূবণ।

পাড়ার পড়লি দিল ভোর।

লে কামু করিল নিজ কোর।।

নিশ্চর ভেজল শুণমণি।

জমুরাণে বভেক গোপিনী।।

দৌন চণ্ডীদাল বলে ভার।

এধনি মিলব যতুরার।।

 ই। কাঁবে চড়িব বলার আমার প্রতি ও অপর একজনের
 প্রতি বিরুপে হইরাছেন।

১৬। সপথ---ফুপথ।

. =1<del>---</del>1=

कारवाव ।

শুন গো সন্ধান সই কি বুদ্ধি করিব।
কালিয়া কামুর লাগি আনলে পশিব॥
বাহার লাগিয়ে হল এত পরমাদ।
সে জন করিল স্থা সম্পাদেতে বাদ॥
সকল গোপিনী বলে আর কিবা দেখ।
সে খ্যাম নৈরাশ হল কি আর উপেখ॥
বে জন করিত দয়া সে হল নিঠুর।
ডেলিয়াবিমুখ ভেল কৈল অভিদুর॥
বমুনতে গিরে চল মরিব ভুবিয়া।
এ ছার জীবন কেন খাকিয়ে ধরিয়া॥
দীন চপ্তীদাস বলে এত পরমাদ।
এখনি মিলব কামু মিলিবেক সাধ॥

**८**)४ कोवडी । >•

ভনহ সজনি আর কি দেখহ মরণ হইল সারা। বাইরা ব্যুনা মরিব সঞ্জনি এ শুন আমার ধারা॥

**এই मन्त्र जी**नि मक्न (गामिनी € वरिया वम्नाकृत्न। সব গোপীগণ হেন কৈল মন বাপ দিতে সেই জলে। বুঝিল নিশ্চয় সেই বছুরায় দ্ৰীবধ পাতকা ভয়ে। ন্সাসি দেখা দিল সেই সে নাগর वहन मधुत करत्र॥ দেখিয়া নাগর শুণের সাগর নবীন ত্রজের রামা। চণ্ডীদাস বলে नांगतो नकन ১৫ উঠলি উপল প্রেমা॥

ঠানি—অভুমান করিয়া, ভাবিয়া।

4>>

यहरें।

নাগরী সকল নাগর পাইয়া হুখের নাহিক ওর। বেন বা কে ধন পাইয়া তেমন বঁধুয়া করিল কোর ॥ খসিয়া গেছিল ৫ নয়নের ভারী আসিয়া বসিল পুনঃ। भक्त्री विक्न ৰণ ছাড়া হয়ে সে অল পাইল হেন॥ বেমন চাঁদের রসের বিহনে চকোর অবশ হয়ে। পরাণে জিয়ল রস পেয়ে বেন **८७न (म णार्मित (भर्म)** ॥ লাগিয়া চাতক বেন মেঘরস

পিরাসে পিঙ্ক সে পিঙ ।

**এ तम नी कांद्रन (कह ॥** 

রস ভালাপনে

চাতক বাঁচল ১৫

পাইয়া নাগর নাগরী সকল • • কহিছে লাগিল ভারে। এ্যম পীরিভি নাছি দেখি কভি **ठ**श्रीमात्र श्वन भारत्र । २० ≥। ठीरमत तम ·· ख्यां। >६। चाराभित---चाचाम्यन। शमी । বঁধু, ভাল সে বটহ ভূমি। এক অপরাধ জনম অবধি করিয়া আছিল আমি # সেই অপরাধ বিষম বিবাদ করিলা নাগর রায়। আমরা অবলা অখলা কি জানি সকল গোচর পায়॥ কালিয়া যে জন কঠিন সে জন এবে সে कानिल प्रत । কালার সঙ্গেতে বে করে পীরিভি ১০ **श्रिशारम हरत्र व्यात्र ॥** যুখন না ছিল ভোমার মিলন তখন আছিল ভাল। হাসিয়া হাসিয়া ভাতি কুল নিয়া निषात्न जानन जान ॥ 24 পরের পরাণ হরিতে ভোগার **जित्नक नाहिक मग्ना।** পরবল ভূমি কি বলিব আমি বেমন বায়ার ছারা । বেমন জলের বিশ্বক সম্মুখে ২০ দেখিয়া মিলায়ে বায়। ভোমার পাঁরিভি দেখিতে ভেমন २०। कष चूर्य विश्व पृष्टिन। मीन हखीमान गांत्र।। ১৯। বার্ত্তিন বার্ব। কারার,নর ত १

445 ভাল হইল বঁধু ভোষাৰ পীরিতি ১ নিশির স্থপন বেন। ক্হিতে ক্হিতে দেখিতে দেখিতে সে সব মিছাই মেন। আমরা অবলা অখলারমণী ৫ ভিলে কভবার ভূলি। দোৰ গুণ আদি কিসের অবধি ধরিয়াছ বনমালী।। ভাল সে ভোমার চরিত বেন্ডার এবে সে জানিসু কাসু। নিষ্ণবশ নহ পরবল হও ভোমারি স্থপন ভমু॥ ভূমি দয়া কর দয়ার সাগর কলপভক্ষর গাছে। শীতল দেখিয়া ও হুটি পক্ষ ১৫ শরণ লইয়াছি কাছে॥ এ নহে ভোমার মহিলা করিতে অবলা জনার তুখ। এড়িয়া কাননে পেল কোন ভানে কত না হইল হুখ। চণ্ডীদাস বলে (व रग (म रग এখন পাইলা কান। পর্শ-রভন क्तिया कृष्य रामदम कत्रर चान ॥ १-৮। जामता जनमा, जामार्ट्य कड रहाव स्त्र, छाहा कड पूत्र पत्रित्राष्ट् ? >>। पूमि एकवम, देशदे कि वर्ष नरह ? ১২। ভোষার সকলি অনীক।

रश्या (इ कमन-कान का जान कबर मान (माय ७१ किइरे मा गछ। পরবর্ণ রস প্রেম এবে সে জানিল ছেম व्यभित्रा (महत्न कथा कथ । ভোমার অমৃত বাণী কত বোল পেয়ে জানি ৫ হালি পরকিত স্থাময়। পাইয়া অবলা জন এমন রভন ধন ' কোথা ছিল হেন মনে লয়। ভোমার কারণে হরি গৃহকাল পরিহরি গুরু গরবিত বত জনে। ভোষার কলম্ব-মালা ক্রান্যে পরেছি কালা महेमांड कदिया हम्मरन ॥ বে বল সে বল কামু ভোমারে সঁপিমু ভমু মো সবা ছাড়িবে জানি পাছে। দেখদেখি ত্রিভূবনে,কে বা আছে ভোমারিনে ১৫ ু স্থার সে দাঁড়াব কার কাছে। যে কর উচিত কাজ প্রন হে নাগররাজ পরভাব না করিছ মনে। ব্রজনারী মনকাম কে পুরাবে ওহে শ্রাম मोन कीन हरी मात्र छटन ॥

650

। পর্কিড-প্রকৃত।

সিতুড়া।

কি আর বলিব পায়। শুন হে নাগর রায় 🛭 তারা 🏺 পরাণ এড়ি। कानदन ३ हिमा हाछि । व्यामना व्यवना नाती। দোবঙৰ নাছি ধরি।

कृमि (न भन्नां विकृ। **क्विक क्क्न**शिक्ष । मीन हशीमान क्या। স্থারস ভূমি ময়॥

১০। ভূমি ভ্রারসমর।

সিভুড়া।

শুনিয়া রাধার বিনয়-বচন কহিতে লাগিলা ভায়।

ভোমার পীরিভে ध (पर गॅंट्शक এ কথা কহিব কায়॥

আঁখির পলক ৫ ভোষা না দেখিয়া যদি বা নাহিক দেখি।

দেখিলে জুড়াই না দেখিলে মরি শুন শশধরমূখি॥

হাসিয়া হাসিয়া নাগর রসিয়া ভূষিতে লাগল ভায়।

কৰিয়া সেচনে রসাল বচনে कठाक नग्रत्न हांग्र ॥

দদে না ভাবিছ যাহল তাহল र्छन्द ऋन्द्रजो द्रांषा ।

ভোমার মরমে व्यामात्र मत्राम ১৫ नमारे जाहरम बांधा ॥

রমশীমাঝারে তুৰিয়া নাগর চাহিয়া সবার পানে। এমন পারিতি কোণাও না দেখি

চণ্ডীদাস রস ভণে॥

...

नुबरो ।

দেখিলা নাগর ৰাগন্ত্ৰী সকল

দিয়া লে বলের ভারা।

मधुत नत्रत ন্মেহে বশোমতী (रामन क्यूम আদর সভাবে 🔞 অলিকুল পিয়ে ভারা। এ क्रोत्र नवनी जानि। খতে খতে খতে লাখ শত শত ৫ কানাই-বদনে **मिया (म यज्द** রমণী একেক রয়। ক্রেন মধুর বাণী। **তাতু** যনে তৃমি কাসু সে লুবধ ভ্ৰমর বেমন বাবে যাত্ত্মণি মধুপানে অভিশয়॥ শুনিতে লাগয়ে জর। লোকমুখে শুনি বিষম কাহিনী মধুর সে মাতি যেন মন্ত হাতী অঙ্কুশ নাহিক মানে। থাকয়ে কংসের চর । কামু বলে মাতা না কর সংশয় সবারে ভূষিয়া নাগর রসিয়া कक्रण वाँभीत्र शास्त्र । ভোমার চরণ আশে। বাঁশী বাজাইয়া মধুরসম্বরে নাগর চতুর রায়। তারে বা গণিয়ে কিসে॥ বাঁশীর আরভি ১৫ গুপত পীরিতি মায়ের করুণ বচন শুনিতে এ क्था ना कारन मात्र॥ সে ছেন যাদব রায়। নিজ নিজ গুহে গেলা গোপীগণ মধুর বচন করিয়া ছন্দন না জানে গৃহের পতি। আরভি কহিছে মায়॥ বেমন যে ছিল তেমন পৈশল কোটি কংস তারে কটাক্ষ নিমিবে ঐছন আরতি গতি॥ করিতে পারিয়ে ধ্বংস। . বতুনাথ গেলা নন্দের মহলে শুভলি মায়ের কোলে। আমি বছুকুলবংশ 🛭 জননী না জানে এ রস বেভার মারের ভূবিয়ে চতুর কানাই ২৫ मोन हशोमांत्र वरन । अन (भा (वहनी भाग्र। । चट्ड चट्ड--- म्रह्म मृद्या । বেশের রচনা করছ রচনি २७। (वर्षात्रः वावश्रंत्र। দীন চণ্ডাদাস গায়। রাসলীলা সমাপ্ত। २। अभिकृष्यः । अभिकृषः। **>८। जाएग...जानीकीर**नः অকুরাগমশ। · গোৰ্ছ। নিশি গেল দুর এভাত হইন (नगर्वात्र । উঠল খ্যামক্লচন্দ্র। বেশ বনাইছে মায়। মুখ শশীখানি . স্থাসিড জলে চাঁচর চিকুম वनारे ज्ञान (थात्रम् (गोक्नहस्य । চূড়াটি বাঁধিল ভার 🛭

नौन मरहम

শার বহুদাম

বেড়িয়া মালভী আনি জাভি বৃথি হেন মনে হয় .कुरम्बत्र कशिका पिरत्र। e হিয়াতে ভরিয়া রাখি 🛭 ভাহার উপরে মুকু ভার মালা ৮। ছ্থরি∙∙ছসারি। २৮। बाह्य---बाह्यका **अवाम-भावादि मिर्**य ॥ সোনার ছ পরি শালা দিয়া ফেরি মাণিক খোপনি সাজে। বেলয়ার। গাঁথি থরে ধর ১০ পরশ-পাথর দেখ দেখ নন্দ রায় কি আনন্দ শোভা পায় कि लांडा तक ना मार्य ॥ विश्व (यन एन एन एन समूनाय। মরুর শিখণ্ড দিয়া ভার পর नव नील चन ठाँक मनमथ किनि काँक ৰিনি বায়ে দেখ উড়ে। অমিয়া-সাগর স্থ্যায়রে ভাসায় 🛚 ফুলের সৌরভে অলিকুল বত पिथिया जानम रिष् नम स्वाव क्रेश रहित ए **४त्र८**१ नाहिक रमन यात्र । উড়িয়া উড়িয়া পড়ে 🛭 क्लांटन नट्य नम्मत्रांनी । ও মোর বাত্রামণি व्रिंग्टिक क्रुकारन কদন্বের ফুল চুম্বন করিয়া কাঁদে মার॥ কি শোভা পেয়েছে দেখি। ध दिएम दिमान वरन याहेरव दश्यूत महन নালমণি ষেন হেন লয় মন পদ্যুগ অভি সে কোমল। ै. নবঘন কিসে পেখি॥ বিষম ভাসুর তাপ লাগিবে সে উভভাপ কপালে মলয় চন্দন-ভিলক ২০ জানি বা গলিয়া হয় জল ॥ ভাৰে গোৱোচনা কেঁটো। এই বড় উঠে ভর হেন মোর মনে লয় धैमूथ बनाक বেমন অলকে ज्नाकृत वाटन वा हत्रान । शृनिमा ठाँदित चहा । বরে বসি থাক বাপু ভোমা না গাঠাব কভু ১৫ অধর বান্ধুলি যেন রাভাগুলি मीन हशीमांत्र देश छर्। कि कानि रिकूरन पनि। ७। जानत्त्र ज्योत हरेतन। নয়ন চাতক তাহাতে কাৰুল অভি সে শোভন ভালি। বাহে টার বালা 🔹 গলে বনমালা কটাতে মুসুর বার। अविद्कृषि । করেতে মুরলী শোভে দেখ ভালি ৩০ 🔸 হেন বেলে ঘত রাধাল বালক রতন-সূপুর পার ॥ • ভাইল কানাই নিজে। व्लोनारम क्य **ंञ्चीमाम ञ्**मान ू নটবর রূপ नषार सिविद्य वाकि। বাঁশা শি**লা** বৈৰু গুীতে ।

<b>290</b>		<b>इंधीपांग</b>			
চল ভাই কামু	কি কাজ বিলম্বে	¢			
়      হইল উছর বেলা।			त्रांग्रहित ।		
এখন কি কাজে	আছ গ্ৰমাৰে		পুনঃ পুনঃ কহি রে।		
করহ ধেমুর মেলা ॥			শুন বাপু হলধরে ॥		
•	ু <b>অ</b> ভি চোরা গাভী		কেবল আঁখির আঁখি।		
	ः चाल कामा गाना । हरू।		ভারার পুতলি সাধী॥		
		>•	ভূমি ভ প্রবীণ বট।		
_	কোণা পড়ে ধেয়ে		আমার যাতুয়া ছোট ॥		
এই উঠে মনে <del>ভ</del> য়॥			আপনার কুধার বেলে।		
	কি আর বিলম্ব		খাইডে দিও ত ভালে॥		
রাখাল <b>পাসিনা ভরা</b> ।			সন্মুখে রাখিওকামু।		
क्टब व्यथत	যশোদা গোচর	>6	ভূমি চরাইবে ধেতু॥		
ভূমি সে ক	রহ শরা ॥		কামুর ধরাতে বাঁধি।		
এ কথা 🗢নিতে	যশোদা-হৃদয়ে		ক্ষীর ছেনা ননী চাঁছি 🛭		
উঠিল বেদনা বড়।			ষাভূৱে করিয়া কোলে।		
কেমনে পাঠাব	এ হেন ছাওয়াল		আপনি খাইবে বলে॥		
জুমি সে হইও সড়॥ ২∙		ર•	ছুখিনী অভাগী আমি।		
বলরাম-করে	ধরি কিছু বলে		কেবল ভরসা তুমি ॥		
ত ভন হলধর তুমি।			ভিলে না দেখিলে <b>মরি</b> ।		
ভোমার করেতে	সঁপিল বাছুৱে		এই নিবেদন করি।		
কি <b>ভার বলিব আমি</b> ॥			এ কথা যশোদা বলে।		
<b>ক</b> ভ শভ বেরি	কটোরাতে ভরি	20	চণ্ডীদাস কৰে ভালে ॥		
রাখিয়ে এ ক্ষীর সর।			১৪।   ৰন, আপনি ভাষাকৈ পাওয়াইবে।		
নিশিতে পিয়াই	ভার নাহি লেখা		0		
ভরিয়া এ !	क्छिकत्र॥		(*)		
কছেন বচন	বলরাম হেন				
এ হরি স্ব		<b>9</b> •	চলিলা রাখাল সকল মধ্বল		
আমি সে ধাৰিতে			লইয়া ধেমুর থাল। হৈ হৈ বলি		
			स्टर्स पाण स <b>्मात सम्मात कोन</b> ॥		
i	-  -   -   -   -   -  -  -  -  -  -  -	•	কেছু নাতে গায় কেছ বেণু ৰায়		
৬.। উত্তর—অভিরিক্ত।			কেছ বেণু দের সাড়া।		
<ul><li>উচর:: চকল, বিপথগানী।</li></ul>			কেহ ভাল মান করে অভি পান		
•	·g		কেছ নাচে অভি গাঢ়া 🖁		

কেহ বলে ভাই কোন্বনে বাবে ক্ছত বোলত ভেয়ে। . সেই বৰ্ন পাৰে চলে ধেমুগণে তবে বাই ধেনু লয়ে। বলরাম ভায় কহিছে সবছি कानारे वाहारे वरण। সেই দিকু পানে চালাহ রাখাল ১৫ আমি সে কহিয়ে ভালে॥ যভেক রাখাল • কৰে বারে বারে 🖰ন হে রাখাল কামু। ভাজু কোন্ বনে বলহ বচনে 'কোথারে চালাব ধেমু॥ ₹• কাসু বলে আজু চালাহ সঘনে ভাণ্ডীর-কানন বনে। সেই বনমাৰে চালাইবে পাল मीन हशीमांत्र खर्ग ॥ \_\_\_\_\_ 403 বেলোহার। ভাণ্ডীর কাননে চলে ধেমুগণে সকল রাখাল মেলি। নানামত খেলা া সকল রাখালে मिरत **উঠে क**त्रज्ञानि ॥ আর বত লীলা বিস্তার আছমে ৫ ভাগৰভ হুখ কেলি। কিছু কিছু আছে সংক্ষেপ রচনা क्विन कृष्ठेक विश **।** আর পরমাদ পড়িল সংশয় গোকুলে নন্দের ঘরে। ज क्यां ना कारन গোঠের লীলাতে ভোলে॥

নানামত খেলা নকল রাখাল (धनरव मरनव मरम । অবসান-কাল আসিয়া রুইল ১৫ জানিস ৰালকগণে ॥ আজিকার মত (थना मर्गाधिया व्यव रंगाकून भूरत । কালি আসি বনে খেলাব বডনে শুন ভাই হলধরে॥ অড় কর পাল সকল রাখাল শিঙ্গাতে দেহত সান। **চ**लि यात्रं भव রাখালম এল **বিজ চণ্ডীদাস গা**ন ॥ ৮। क्रेक ... এक हू-- नामान । ৯-১০। अञ्चर्शशमनक्रम विश्रम्। १० । व्यक्तः वक्तः।

भूवशे ।

চলত নাগর কান।
রাখাল চলিয়া বান ॥
কেই নাচে গুণগানে।
যমুনা সরস মানে ॥
উঠিল বেণুর সান।
ধেমু চলে আগুরান ॥
মুরলী ফ্রুর রবে।
পাবাণ হইছে জবে।।
কামুর বাঁশীর গানে।
যমুনা উজান পানে ॥
চলি বার নানা রজে।
নবীন রাখাল সজে ॥
গোকুল মুখেতে চলে।
হৈ হৈ বৰ কলে॥

ভাবে আবেশিয়া গদগদ হৈয়া সে রাঙ্গা চরণে লোটারে পড়িব ১৫ সুখের নাহিক ওর॥ নিজ আপনার দেহ ॥ .आजू (मंथव চরণ ছুখানি ৫ কিবা স্থদশা স্থৰে নাহি স্নানা লোটায়ে পড়িব ভায়। জনম সকল মানি। প্রেমে কড শত প্রণাম করিব প্রভুর চরণ দেখিব নয়নে সে তুটি কমল-পার॥ কহিব বচন বাণী।। ২**০** ধরি ছটি হাভ ভবে বছনাথ ষে পদ-পরশ আশে অবিরভ পরশ করব মোরে। बकामि यरजक रमवा। আলিঙ্কন রসে ' গদ গদ হব বুন্দাৰনে আসি ভরুলভা হয়ে वित्रा कत्रारा (नवा ॥ ও নব নাগরবরে॥ পাইয়া পরশ হইব হরষ দেব শূলপাণি অবিরত গুণি ২৫ 'ভাসিব আনন্দ-জলে। গাইছে পরম স্থাবে। এ সব কাহিনী কহিতে চলল ১৫ মুনি ঋষিগণ করুয়ে শুৰন मौन हशोमान वटन ॥ অভি সে পরম রসে॥ গোকুল-ঈশর গোকুলে আসিয়ে **अभिना** नत्मत्र घटत । ৩**०** চঙীদাস বলে হেনক সম্পদ গড়া। (रुबिव भएनत्र मरत्र ॥ এ সৰ<sup>\*</sup>ৰচন ভাবিতে ভাবিতে ১৬। 'निक कार्यनात', 'बहन वाती', '८क्त्र ८म्थ', \* অঞ্র চলিয়া যায়। 'গরল বিষ', এরপে ছিক্সক্তি চণ্ডীদাসের পদে প্রেমের স্বভাবে রসে আবেশিয়া विव्रम नरहाँ পুলক হইছে গায় 🛭 ৩২। 'সরে' কথাটা নানা অর্থে নানা ছানে বেমন কদশ্ব- কেশর ফুটল ৫ ব্যবদ্ধত হইরাছে। ইহার প্রাকৃত অর্থ তৈছন অক্র দেহা। व्हित करा कठिन। আঁখি চল চল প্রেম অঞ্চল্প विमत्रम निष्म (गर्ग । স্বেদবিন্দু অভি ু ক্লেণেক চেডন বিশ্বৃড়া। (क्रांविक क्रांविश हत्र। ভাবের বিকারে আপনা পাশরে মুনিগণ বাবে ভাবে নিরস্তরে व्यवस्य महत्य मूर्रः। আপনার বশ নয়। সেঁজন না পায় মহিমা অপার কংস রাজা হইতে আমার হইল **সান কি স্থা**নিব লোকে ii ও পদ দর্শন লেহ।

নগর সফল ৫ ধন্ত সে গোকুল . . जनारे त्मच्या कांग्रु । थक दन वरणाम। थक दन भागिनी সঁপিল আপন ভমু॥ ত্ৰজবাসী বালা ভাল পেয়ে মেলা कानारे गट्हाए (चटन। - )० ভাই ভাই বলি কাঁধে করে লয়ে চরায় ধেমুর পালে॥ ना कारन त्नारकरङ (शारनाक-क्रेश्वर বিহরে গোলোকপতি। নয়ন ভরিয়া **ठाँ त्र्य (म**र्थ ) ए व्यानतम्म এ मिन शेष्ठि॥ স্নেছভাবে সেই নন্দ যশোমতী করিয়া বালক-ভাব। পতিভাবে গোপী পীরিতি ক্রিয়া ভারে শেষে হরিলাভ॥ ২০ কানাই রাখাল ক্রিয়া মানল গোকুল পুরের লোক। কুঞ্চরূপ হেরি **আনদ্ধে বিহ**রে নাহি কোন ছখ শোক। চণ্ডীদাস আশ করে পদতল ২৫ ভাহার কণিকা পেতে। মন নছে ভাল िख नरह मण কেমনে পাইবে ভাৰে 🛚 3 श्रम श्रम (प्राटम श्रम श्रम वाज्ञ हिन व्यानमः इहेवा विक । ७िजिन मॅक्न ্ রথের উপরে পড়ি 🚜

এই মত কত ভাবের উদয় ज्ञात्र महा त्म मि । শুভ দুশা মোর আজি সে কলিল দেখিব গোলোকপতি॥ বে পদপল্লব বোগীর ধেয়ান করিলে নাহিক পায়। সে জন দেখিব নয়ন ভরিয়া ত্র আঁখি জুড়াব তার॥ · ভক্ত বিচার এই সব কথা कति शिला भरन भरन। বিষম পডিল গোকুল নগরে ১৫ मीन हखीमात्र छट्न। শ্ৰীরাধিকার স্বপ্ন। टेडबरी। विटनामिनी त्राधा প্রভাতে উঠিয়া কহিতে লাগিলা কথা। ভোমরা শুনিলে এ সব কাহিনী হিয়ায়ে পাইবে ব্যথা। বাজুর নিশির স্থপন দেখিল ৫ অতি অদভুত বাণী। শুনহ সঞ্জনি ভোমরা চেডনি কি হয়ে নাহিক জানি॥ সৰ সধী বলে কৰ কৰ রাধা কি হেতু ইহার শুনি। ১০ রাই কহে সব নিশির অপন कश्दि नाभिन वानी॥ নিশি অবশেষে যুমে অচেডন হেনক সময় কালে। রণ আরোহণ ক্ষি একজন ১৫

আইল গোকুলপুরে॥

আমি বেন বিকে বড়াইএর সাথে গেছিল গোকুল পুরে। হেন বেলা দেখা হইল আমার ৰহিতে লাগিল ভারে।। ২০° व्रथ यादवाहरण কোথারে গমন এ প**ৰে** যাইছ তুমি। <sup>'</sup> কছিবে গোচর কি নাম ভোমার তাহারে কহিল আমি॥ কহিতে লাগিল ' সব বিবরণ ২৫ অক্র আমার নাম। কুষ্ণ বলরামে আনিতে যতনে এ কংস রাজার ধাম ॥ এ কথা শুনিয়া বেদন পাইয়া আসিতে গৃহের মাঝে ৷ ৩০ চণ্ডাদাস বলে নিশির স্বপন মিছা হয় সব কাজে॥ (8) ভৈত্ৰবী ৷ এ কথা কহিতে স্ব স্থিগণ কহিছে রাধার কাছে। স্বপন আপন না হয় কখন শয়ে এক সাঁচা আছে। হেন বেলে মোর নি দ দুরে গেল ৫ विग्रादा रहेन छून। সেই সভ্য মোর কিছু নাহি ভায়ে অঙ্গেতে নাহিক স্থখ 🛭 কোন সৰী বলে অমুভবৈ দেখি ঐছন ক্ষিয়া হিয়া। ১০ কি জানি অপন কি না হয়ে পুন সেই গৌরী-শিরে

গণাহ গণক লয়া ৷

**छात ना कहिरत मत्रम्-निध रह** মনেতে লাগল মোর। • • দেয়াশীর বর বাহ একটন ১৫ বুৰৰ ইহার ওর 🛊 এক গোপনারী দেয়াশীর ঘর গেল সে বিরসমতি। গৌরীর মাধায়ে ফুল চড়াইয়া বুঝহ এ কাজ গভি । ফুল চড়াইল গৌরীর মাধায়ে (प्रयामी कहिरक कारन। যে কারণে পোপী আরাধল আসি पिट्य **टम माथात कूटन**॥ कृत नाहि नए जुरम नाहि भए २० দেয়া**শী কহল** ভায়। অতি অমঙ্গল পড়ল গোকুল না জানি কি জানি হয়॥ চণ্ডীদাস বলে শুন গোপনারি नकल भिष्ठांहे नग्न । কখন কখন কাব্দের গোচর কিছু কিছু সত্য হয়॥ ৩-৪। নিজের অপন শতকরা একটা সত্য হয়। e-৮। রাধিকার **উ**ত্তি। ১৩-১৬। ब्राधिकांत्र फेक्कि, खान ना कहिरत, खानहे बनिरन -- 'ना'त निरुष चर्च नरह। रेक्ट्रवी ।

সেই গোপ-নারী রাধার গোচর কহিতে লাগল গিয়া। পুষ্প চড়াইডে

(मग्रानी विनयू देख्या ॥ ं ...

না পড়ল ভার শিরে এক কুল ৫ . . ७ नह खुम्पत्री द्रांधा । অমল্ল বেন অনেক অন্তর সকল দেখিল বাধা॥ এ ৰথা শুনিয়া সুবার চিত্তেভে বিশ্বায় ভাবিল বড়ি। ১০ গণক আনিয়া ভারে গ**ণা**ইব সে জন পাড়িয়ে খড়ি॥ আসিয়া গণক বসিলেন ভথি লিখিল বোলই ঘর। ভাতে আঁক রাখে তেল পরিমাণ ১৫ খড়ি দিল ভার পর। প্রথম বাদের বর ছাড়াইয়া তার পাশে পড়ে খড়ি। সীতার ঘরেতে খড়ি বসাইল এ কথা কহিল ডেড়ি॥ ২০ সীভার মরেতে বছ মুখ বোলে গণক কহিল তায়। মনে করি কিবা কছে খড়ি দিয়া ২৫ গণক কছিল পুন:। এই মনে কর বহে গিরিধর মপুরা না যায় যেন॥ সাতার ঘরেতে এ খড়ি উঠল সামাল কহল তায়। ৩• এ কথা শুনিয়া ব্যখিত হইল বিক চণ্ডাদাস গায়। १-৮। অভারে অনেক অমদণ দেখিলাম।

4: শাসিতে অক্র দেখি অদভূত পথের মাঝারে চিহ্ন। শথ চক্র গদা পদ্ম সে পভাকা রহিছেন অশু অশু ॥ পড়িয়া স্বন ৫ দেখি সে চরণ লোটাইয়া পড়ে অঙ্গ। . স্থধের আমোদ প্রেমে গদগদ উঠিল আনন্দ রঙ্গ ॥ প্রদক্ষিণ করি অফ্টাঙ্গ প্রণাম मरुख मरुख करत्र। , ১٠ নয়নের জলে অঙ্গ বাহি যায় ষেমন যমুনা-নীরে॥ অচেতন পেয়ে পড়ে মুরছিয়ে চেতন নাহিক হয়। বহুক্ষণে ভবে চেতন পাইয়ে ১৫ উঠিল সে মহাশয়। যমুনা দেখিয়া প্রণাম করিলা তুমি সে স্থখন্য মানি। ভোমার তীরেতে বিহরি খেলয়ে সে হরি গোকুলমণি ॥ এ বোল বলিয়া গেল পার হইয়া প্রবেশে গোকুল পুরে। নশ্দের তুয়ারে রখ আরোপিয়া চলিলা মন্দির পরে॥ **ट्रिंथ नम्म द्याय इहेना मटखाय २**० বসিতে আসন দিয়া। পাদ্য অৰ্ঘ দিয়া তাহারে ভুবিল অভি সে আনন্দ হয়া 🛭 मामा व्यार्थाकन বিবিধ ব্য**ঞ্জ**ন

রন্ধন করায় তথি।

ন্থত তুগ তথি মিকীর সাকরি
বিবিধ ভোজন রীতি ॥

চণ্ডীদাস বলে নন্দের সনেতে
দোঁহে করে কোলাকুলি ।
আনন্দ মগন ভেল তুই জন ৩৫
কথার চাতুরী মেলি ॥

৪। অন্ত মন্ত শপ্ত ভাবে।

----0 ---

৩১। সাকরি \cdots শর্করা।

८८८ '(मोबी ।

৩৬। ছুই জনের মধ্যে নানা কথা হইতে লাগিল।

বিচিত্র আগনে বসিলা সন্থনে র**ন্ধন** করিলা ভায়। ভোজন করিল অতি বিলক্ষণ আচমন করি ভায়॥ আচমন করি বিচিত্র পালকে ৫ ্ণুডল অক্রুরায়। কপুর ভাস্থল আনল মধুর • नन्म বোগাইল ভায়॥ তবে পুছে বাণী কৰ কহ শুনি কেন বা আইলে ইথে। ১০ কহ সমাচার কি হেতু বেভার অক্র বলেন ভাথে॥ করে নরপতি 😎ন নন্দ ছোব রায়। কৃষ্ণ বলরাম তুল্পনে লইতে ১৫ আইল আরতি ভায় **৷** মোরে পাঠাইল ় গোকুল নগরে गरेए अ दूरे छारे। 

व्योधाव मानिन छोहे। २०

কি বোল বলিলে বেমন বজর
পড়িল নন্দের মুঙে।
বেমন আকাশ কুলিশ পড়ল
শুনিতে তাহার তুঙে ॥
চণ্ডীদাস বলে আর কি বাঁচিব ২৫
গোকুলে গোপীর প্রাণ।
বিফল করল সকল অধির
ছাড়ব নাগর কান ॥

शननी ।

এ কথা বখন শুনিল যশোদা কহিতে লাগল তায়। কি বোল কি বোল

কি বোল কি বোল আর আর বল ঘন ঘন পুছে ভায়॥ কাঁদি কহে নন্দ অফুচিল আনন্দ ৫

জক্র আইল নিতে।

কৃষ্ণ বলরাম লইতে ফুজন

এই সে কংসের চিতে॥

এ কথা শুনিয়া নম্দ পানে চেয়ে

পড়িল ধরণীতলে। ১০

কি হল কি হল গে।কুল নগরে
কাঁদিয়া কাঁদিয়া বলে॥

বেমন কুলিশ ভাঙ্গিয়া পড়িল ভেমন ৰশোদা মাৰে।

কি শুনিল মুই দারুণ বচন ১৫
অক্তব্য আইল নিতে।
বাহার ভয়েতে বেথিত অক্তর
নিতি পাঠাইত চর।
বাহু ধরিবারে গহন কাননে

আছে কও ছয়ে ভর॥ ২•

ভাহে কংস ঠামে বাব ছুই জনে · · না জানি কি জানি করে। মায়ের অন্তর বাবে জর জর . এমন নাহিক সরে। চণ্ডীদাস বলে अन नमन्त्रीं २० বে জন গোকুলপতি। কি করিতে পারে কংস নৃপবরে সে জন রহিব কভি॥ ०। छत्रः छी जिल्लामर्थक। >। यांच ·· वांटव । পোরী। হেন বেলে শিক্ষা বেণু বাজাইয়া রাখাল আসিছে পথে। কৃষ্ণ বলরাম নাঝারে করিয়া (धन्यूभांन नारम् याज ॥ टेर टेर त्रदव প্রবেশ করল ৫ গোকুল নগর পুরে। নিজ গুড়ে গুছে গেলা ব্ৰজবালা লইয়া ধেতুর পালে॥ নিজ গৃহে গেলা কৃষ্ণ বলরাম यटमामा व्यानमा विष् । ধেমুগণ যভ সব সমাধিয়া সহনে নিখাস ছাড়ি॥ কোলে লয়ে কামু এ ক্লীর নবনী পিরায় মনের হুখে। বিবিধ শাকর চিনি ছেনা সর ১৫ ০ पिट्न ७ ठाँप-मूर्थ **॥** 

কানাই পুছল

ষারে বা কিলের রথ।

শুন গো জননি

करबन यरणाला कानांवे रणाठत বড় হল অসুর্ধা कर कर स्त्रि যশোদা জননি-शित्रा भारत्रत (कारण। কিসের কারণে কহ গো জননি ত্টনি কি ভাহার বোলে। क्श्म भोगेहिएस व्यक्त्र वानिएस २० ক্বঞ্চ বলরাম নিতে। ধন্দুর্বায় যজ্ঞ করে নরপতি সেই সে তাহার চিতে 🛭 হাসি যত্নাথ বচন ভারতী কহেন মায়ের পাশে। ' ৩**০** তার কি বা ভয় না কর সংশয় करहन এ हखीमारम ॥ হেনক সময় অক্রুর দেখল আয়ল অক্রপতি। চরণ-ক্ষলে পড়ল তৈঁ**খ**নে ় করেন আরতি রীতি॥ কৃষ্ণ বলরাম ধরি ছুই জন ৫ করিল ভাহারে কোড়। আলিঙ্গন দিয়া বচন মধুর স্থের নাহিক ওর॥ कर कर एमचि কিসের কারণে व्यक्ति (शाकून् भूत्र। ) ভোমা লইবারে আমার গমন 😎नर वहन थोरत्र ॥ বলরাম আর ८५व माटमान्त्र কহিল নৃপতি মোরে। ধনুর্বায় বজ্ঞ করে নরপতি ১৫

সায়ল গোকুল পুরে।

কৃষ্ণ বলরাম আনহ ভূজনে ভুরিভ গমনে গিয়া। এথ আরোহণে কর**হ** গমনে ভূরিতে ভাসিবে লয়া।। ২০ এ কথা 🛡নিয়া অক্রে তুবিয়া কৃষ্ণ বলরাম ছই। कृष्क-मूच टाइ गनगन स्टा চণ্ডীদাস গুণ গাই। **a** 1 অক্ৰে পড়িয়ে করয়ে ন্তবন স্মরণ ধ্যান । পরশ করিতে नरेन जन्महि छोन ॥ তুমি চক্রপাণি ভূমি বেদধ্বনি ৫ • ভূমি যে পরমকায়া। না পায় ধেয়ানে যে জন স্তবনে বুঝিতে না পারি মায়া॥ 🐪 তুমি চন্দ্র আদি দিবাকর সিদ্ধি তুমি ভ ভুবনধাতা। ভূমি চরাচর ভূমি সে আকাশ ভূমি যে দেবের কর্তা॥ ভূমি হুডাশন ভূমি সে কারণ তুমি সে করুণাসিন্ধু। এ ভবসায়র 'করণ ধরম ১৫ ্ তুমি সবাকার বন্ধু॥ বেদে দিতে নারে প্রাহার সীমা • वनस्य मस्य मूर्य । বলিয়া বলিতে না পারে বলনে

আন কি জানিব মোকে.॥ ২০

जूमि बाद्यापव क्रिम, बातावन অচ্যুত অনস্ত হরি। 🗼 🔻 **जू**मि क्रवोत्कम जूमि नात्नांनत ভূমি দে ও বনমালী॥ ভূমি সে মাধব ভূমি পুণালাভ তুমি পুগুরীকধারী॥ তুমি জনার্দ্ধন ভূমি পুরুষোত্তম কি জানি মহিমা ভার। ৩০ দেব অগোচর ना एस (शांहत চন্ডীদাস গুণ গায়॥ ৪। ব্ৰহ্মান জ্মিল। ১৯-२०। **जनस** गर्भ मृत्य मृत्य विद्य भारति गां, ভাহার জনত্যে তখন লামি কেমন করিয়া জাঁহার মহিমা জানিব। बढ़ानि । করপুট হইয়া গদ গদ ভাবে এ সব কহিলা যবে। হরষ বদন মদনমোহন কহিতে লাগিলা ভবে॥ পবিত্র মানল ৫ ভূমি **সে পরম** ক্ষেন গোলোকপত্তি। হাতে ধরি ভবে উঠায়ল হরি করল পীরিতি রীভি॥ करहर जाक्त्र বচন মধুর व्याक् शुष्ड मिन स्मात्र । . . . ১७ এভ দিন মুই ভোমার পরশে ় পৰিত্ৰ করল কোড়॥ জন্ম শুভদিন হইল আমার

পাইল পরম খদে।

কি কহির আমি কহন না বায় ১৫ তুরিভ গমন করহ এখন ं '७ श्रम भीरेन गांट्य ॥ वारेट्य नटक्क भाव । করে ধরি হরি বসাইল বেরি সেই গোপ-নারী ভুরিত গ্যন · আনন্দ-রসের কথা। कर्त्रण नरम्पत चरत्र । বিবিধ বিধানে यारेग्रा ८५ चन নানা উপচার वृत्रंग गक्न ১৫ পূজন সে নন্দ তথা ৷ বঙ্গর পড়িল শিরে ॥ কহে নন্দ ছোষ ঘোষণা সকল প্ৰভাত হইলে কৃষ্ণ বলরাম ডাকিয়া আনিল গোপে। यादेव मधुनांभूदत । দধি ছুগ্ধ স্থতে সাজাই শকটে এ কথা শুনিয়া সেই নব-রামা আরতি হইল ভূপে 🛭 ভুরিতে গমন করে॥ ২০ শক্ট লইয়া ञ्च पि नग्न २० রাধাবে কহিতে **চলে সেই म**शे সাবাহ ভুরিত করি। 💙নহ আমার বাণী। 🗀 প্ৰভাত হইলে যাইব মধুরা कहिरल कि इग्र **হেন মনে** লয় রাম হলধর ধরি 🖁 শুনহ সম্প্রী ধনি । চণ্ডাদাস বলে বিষম হইল কহ কহ শুনি 🕟 🍴 কি হৈল গেছিল ২৫ আকুল গোকুলবাসী। কহিতে লাগিল বাণী। স্থ গেল দূর তুখ অবশেষ **উठेल छूट्यत्र** त्रोणि ॥ অক্র বলিয়া একজন আইল কুষ্ণ বলরাম নিতে। ৩০ . . ৰাশকেলি। রথ আরোহণ করিয়া আইল পড়িল খোৰণা নগর চাভরে এবে সে দেখিল ভিতে॥ ষভ যভ গোপগণে। চণ্ডাদাস বলে নিশ্চয় বাইব শকটে শকটে পুরিল সকলে কৃষ্ণ বলরাম ছুই। দধি চুগ্ধ স্থত সলে।। স্রছিত হয়ে পড়িল গোপিনী ৩ঃ नत्मत्र छुत्रादत्र 🕜 বাজায় বাজনা পড়িয়াছে ধারা ধাই। এত দিনে গেল এই ॥ ध कथा समन **ভ্ৰম**রামাগণ )। को छद्य · क्युद्य । किरमंत्र वाकना ७३॥ २०। बिलाल मा खानि, छूमि कि कतिरव। विषय भान এক নব-রামা রাধা পাঠাওল করিবে।

বুৰহ কি হেছু বাজ।

>0

etall :

बनिछात कथा छनि शनि शनि वितासिनो কছিতে লাগিল ধনী রাই। আমারে ছাড়িয়া শ্রাম মধুপুরে বাইবেন এ কথা ত কছু শুনি নাই ॥ विदाय मांबाद्य त्मात अ चत्र मन्मिद्य (१)। ए রতন-পালম্ব বিছা আছে। অনুরাগের তুলিকায় (१) বিছান হয়েছে ভার च्यां महीत चुमारत तरत्र है। মধুপুরে যাইবেন ভোমরা বে বল শ্রাম दिकान् भर्ध वैश्व भनाहरव । এ বুক চিড়িয়া বৰে বাছির করিয়া দিব তবে ত শ্রাম মধুপুরে বাবে। শুনিয়া রাইএর কথা ললিভা চম্পাকলভা মনে মনে ভাবিল বিশায়। रतक रहेन (गा ) ८ চণ্ডীদালের মনে ় সুচে গেল মাধুরের ভর।

413

বেলহার।

অতি আনা গোনা বিষম বাজনা
শুনিয়া গোশিনী বত ।

হিয়া হট্ কট্ অতি সে ব্যথিত
তাহা না সহিব কত ॥

অব কি করব , পরাণে কি জীব ৫

কি শুনি মারণ বাণী ।

বে দেখি স্থানে সেই কলে আসি
নিশ্চয় স্থানন মানি ॥

দেয়াশী জানল গণক কহল

মিছা নহে কোন কথা ।

্ভাহা সে দেখল मदन विठातन বিফল নহিল হেখা। कारम रगाभीगन रहेवां विवन উপার কহ না স্থি। কিলে বৃন্দাবনে ब्रष्ट् वनमानी ১৫ সে হেন ক্ষল-আখি। প্ৰভাত হইলে वादव मधुशुदव (चावना अनिया विक । গোপগণ করে मधित्र चाठेन **नके गिक्ल गांति ॥** नटन्द्रत छुश्रादत বিষম বাজনা বাজত না-কড়ি। চণ্ডীদাস বলে প্ৰভাত হইলে বাইব গোলোক হরি। १-৮। चर्त्र बांश (मिथनाम, छांशर मछा रहेता। चन्न সভ্য ৰটে।

প্রমন্ত্রী।

গগনে দারুণ নিশি।
প্রভাত হইল হেন বাসি॥

নিশি ওড়ারে করিয়ে মিনভি।
প্রছন থাকহ তুমি নিভি॥
প্রভাত না হও তুমি চাঁদ।
বেকত রহিত গতি হাঁদ॥
কেহ বলে শুন ধনী রাই।
উপায় করিতে আহে তাই॥
আঁচলে ঢাকিব নিশি চাঁদে।
বেন মতে অক্কার বাঁধে॥
চাঁদে বেন থাকিয়ে গরাসি॥
বেমনে নহত পরভাতে।
তবে রহে প্রভু আগরাবে॥

. >0

২০

কেই বলে হব দিঠি বাধা।

অমসল উঠারু সমাধা ॥

কৈই বলে হইব শৃগালী।

দক্ষিণে চলিয়া বাব ভালি ॥

কেই বলে সম্মুখে যোগিনী।

বাধা মানি রহে গুণমণি ॥

কেই হব বজর কুলিশে।

বধিব অফ্রের মরে জিলে ॥

ভবে সে রহেন গুণমণি।

চণ্ডীদাস কহে কিছু বাণী।

448

## প্টসঞ্জী।

এই অসুমান করে গোপাগণ আকুল হইয়া প্রাণ। কেমনে রহিবে কহ কহ দেখি রসিক নাগর কান ॥ ৰুহে গোপীগণ শুনহ বচন ৫ এই সে ভালই মানি। কুফ ছাড়ি গেল কি আর করিব তবে সে.ভেজিৰ প্ৰাণী। र्य कर मा सिंच আঁখির পলকে ভবে সে মরিয়া থাকি। দেখিলে জুড়াই এ পাপ-পরাণ **७म (गा मत्रम-मशि ॥** ভিলেক কখন যা সলে বিয়োধ যদি বা কখন হয়। লাখ যুগ মানি কি হয় না জানি ১৫ এৰত গভিকে কয়। বাঁচিব কেমনে সে জন বিহনে **७८**व कि भूतारण कोव।

আঁথি পাড় হৈলে অবলার প্রাণ
তথনি মরিরা বাব ॥ ২০
বাহার কারণে সব তেয়াগিল্
কুলেতে দিয়াছি ভোর ।
গুরু গরবিত এ হেন বেণিত
বভ জন প্রাণ মোর ॥
চণ্ডীদাস বলে শুল ধনী রাধে ২০
ঐহন পীরিতি ভার ।
এমতি পীরিতি

....

## প্টমশ্রী।

প্ৰভাত হইল হেনক সময় माञ्चल मकल (कांक। দ্ধি ছুগ্ধ স্র পাইল দারুণ শোক 🛭 করিতে তখন ৫ রুপের সাজন সেই সে खळात्रू मि । চল চল বলি পড়ে হলাহলি পরমাদ পড়ে তথি ॥ নন্দ বলে ৰাপু कुक रुमध्य করহ বেশের কাজ। মধুপুর হর বাইতে হইল ভূপতি কংসের মাব। নানা পরিপাটি নীল ধড়া আ চি वैंथिन विद्यान हुए।। নানা কুলদাম বেশ অমুপান ১৫ ভাহে মালভীর বেড়া॥ বেড়ি ভান্ন দালা হেন মুকুডার কি ভার গাঁথনি পালে।

		•	480	
ভা দেখি সকল	নাগরী ভুলন	ভোষার বিহনে	यदिव मद्दान ১०	
ভূলল গোকুল দেশে॥ ২০		• যাব সে বা	ভোষার বিশ্বন মরিব স্বানে ১০  যাব সে বাছির ছয়া ।  কেবল নয়ান ভারার পুডলি	
ভাহা স্থােভন	অতি বিলক্ষণ	কেবল নয়ান	তানার পুত্রলি	
		८०।ना ना स्मान्द्र भाषा		
যেমন আৰ <b>েশ</b>	আসিয়া বেড়ল	- यथन प्रिचिद्य	७ ठॅाम-यमम	
व् <u>ज</u> िथमू पिन पिथा ॥		ভবে সে চে	তন ধরি॥ 🐪	
চন্দনে লেপিত	শ্ৰীবন্ধ শোভন ২৫	ষবে যাহ গোঠে	ধেমুগণ ধ্ব	
এ ভাড় বলয়া সাজে।		সেখানে থাকয়ে প্রাণ।		
সোনার যুক্র •	বাজয়ে মধুর	যবে সে শুনিয়ে	কুশল-বারভা	
সোনার নৃপুর বাব্দে॥		ভনিয়ে বেণুর সান ॥		
গু হু এক বেশ	সমান সাজল	অনেক তপের	ফল প্রশান ১০	
কি ভার কহিব কথা। ৩০		পাই সে ভোমা সে ধনে।		
क्रिंड (मास्न	বাশাট শোভন	বিহি নিকরণ	এবে সে জানল	
দেখিতে হৃদ	য় ব্যথা ॥	मोन हजीमांत्र एटन ॥		
হলধর হাতে	শিঙ্গটি সাজল	३०। मण्टनः भोष्र।		
ছুঁহু সে মায়ের কাছে।		১৯। সান • সংক্ <b>ত</b> শক্ষ		
<b>छोनाम वटन</b>	प्रिष्म खनुनो ७०		) <del></del>	
· ুপরাণ তেজয়ে পাছে॥		eeg		
•		<b>A</b> 1		
Translational Community		আর কি পরা <b>ণে জা</b> ব।		
মশোদা-বিঙ্গাপ।		ভোমা ধন ছাড়ি		
<b>००</b> कृष्		এখনি পরাণ		
		বশোদা রো <b>হিণী</b>		
<b>८काषाद्य गांक्टग्रह</b> ।			यद्य। ए	
		হিয়া আনচান		
এ বেশ বনায়ে		পরাণ কেমন		
-	यरभाषा जननी			
পড়ে মুরছিত।		विषम (वनना ८	• •	
	ভিলেক না জীব	•	•	
দেশৰ বেকত হয়ে 🛙		হলধর পানে চে		
	এ ঘর করণে	আর সে কাহারে কে কান	_	
<b>শাশুনি ভেন্সা</b> য়ে দিয়া।		त्म <b>हाम-ब</b> ग्नाटन्	, । प्रवा	

मुद्रत रादि छूथ चरन चरन ग्रथ এ শোকে কেমনে জীব। >¢ ক্রন নন্দ হোষ আমার বচন গোপালে বিদায় দিয়া। এ ঘর জয়ারে আনল ভেজায়ে যাব সে বাহির হয়া ঃ তাঁখি গেলে ভার कि हात्र जीवरन २० বাঁচিতে কি জার সাধ। অনেক ভপের ফল পরশ্বে বিহি সে করিল বাদ। क्लीलांग करह শুন গো জননি **এই সে ভালই মানি ॥** क्विड़ा । কানাই করিয়া কোলে। वर्णामा किंड्डे वरन ॥ তুমি कি ছাড়িবে মায়। 🗢ন হে বাদব রায় 🛭 কি দোব পাইয়া মোর। किছु ना जानिल ७३॥ मारव्रव कि लाव धवि।

দোৰ **গু**ণ না বিচারি ।

**ভোরে উদুখলে বাঁ**ধি।

কি দোব তাহার সাধি।

त्म लाव शांदेश वित ।

हाष्ट्रि वाटव **क्ष**णनिथि ॥

অনেক তপের কলে। তোমারে পাইল কোলে।

मूरे रा चर्णागनी नाती। )ŧ ছাড়হ অনাথ করি। মায়ের করুণ শুনি। বেঁট মাথে গুণমণি॥ চণ্ডীদাস গুণ গার। किंडू ना कहरत्र मात्र ॥ ١, কি শুনি দারুণ কুলিশ বেমন মাথার পড়িয়া গেল। আচন্বিতে হেরি এই সে অক্র কোথা বা হইতে এল # পরাণ লইতে এই ভার চিতে ৫ ন্ত্ৰীবধ পাডকী লাগি। এ সব গোকুল আকুল করল স্বার বধের ভাগী। কিবা দেখ নন্দ খুচিল আনন্দ বেড়ল আপদ আসি। স্থুখ গেল দুর ছুপ রুহে পাশে (कमत्न विकाय निर्णि ॥ হিয়া কর কর मन मन मन নন্দ যশোষতী মায়। हैं। म निविषया > 0 বাছর সে মুখ-**प्लिट्स कैंट्स छेख्ना**य ॥ বুক নাছি বাঁধে চণ্ডীদাস কাদে । (यनक वांचन (भन। ৰুকেতে পশিয়া পিঠে পার হয়

বাহির হইরা গেল।

महिशान । বশোদা বলেন শুন গো হোহিণি व्यात्र कि मैं। ज़ारत्र (मथ। ছাড়িয়ে চলিল কুক বলরাম আর কি পরাণ রাখ ॥ অনেক বডনে পাইয়া রতনে ৫ বিধি দিয়াছিল মোরে। পুন হরি নিল , কোন অপরাধে ভাষার করমকলে। দেব আরাধিয়া বখন পুজিল . ববে দিয়াছিল বর। গৌরীর ছয়ারে অপরাধ ফলে না পুজিলা তাতে হয়। সেই দোষে রোষ দেবের হইল ভাহাতে এ দশা ভেল। রাখিতে নারিল ১৫ কোলের বালক আবৈ সে ছাড়িয়ে গেল। দেবী রঙ্গ বৃদ্ধি বুঝিতে না পারি ঐছন কাজের গতি। भिव कुके हरन जारह कन धरत 🛡নহ ইহার রীতি॥ বালুকা উপরে वथन कोटबार করিল অনেক তপ। বিধি বহুমতে দেৰা সে সাধিতে করিল অনেক তপঃ यथन टेनट्वला मव माञ्जाहेग्रा २० খনেরে হইতে যাই। পুরপ (१) এক গোটা গড়ুরের বেটা উড়িয়া লইল ভাই॥ त्नहे त्न स्मरका উচ্ছिके रहेग সেই অপরাধকলে।

ভাষার কারণে স্থানন্দ ছাড়ল এই সে স্থানিয়ে ভালে।

চণ্ডাদাস কৰে শুনহ লগনি একটি কৰিয়ে বাণী।

ধন্য ধন্ম ক্রম জুমি জাগ্যবভী ৩৫ ভেজিবে গোকুলমণি॥

> ८७) दश्हें।

আরে মোর বাছনি কানাই। এ বেশে সাঞ্চিলা কোন ঠাই। এ নব বরণ ভমুখানি। আতপে মিলায়ে হেন জানি। यथन याहरू पृत्र वन । त्रविदत्र कतिथु नमर्भन ॥ वनामत्व शृष्टिश्रु रहशाहै। ভাল রাখ কানাই বলাই॥ প্ৰবনে মিন্তি বছ সাধি। মন্দ মূন্দ বাভাস স্থ্যাধি ॥ >• क्रिनमिश ना कानि कि करता। পাছে নাহি অঙ্গে ছায়া ধরে। অগোচর গোচর না হয়। সেই সে বাসিয়ে মনে ভয়। নর্ম ভরিয়া দেখ আগে। >6 बह्म हुन्दम क्य कारण । তবে কর বে আছে উচিতে। গোপালেরে নারিল রাখিতে 🛭 চতীদাস ধূলায় লোটায়। এত कि সহিতে পারে মার।

२०

८७२ द्वर्षे ।

শুন শুন বাছা জীবন-কানাই
তুমি কি ছাড়িবে মার।
ক্রীবধ পাতক ভয় নাহি মান
এই সে ভোমাতে ভায়॥
ভাহাতে অকাল অঘাত বচন ৫
আসি ধুচাওল সাধ।

কে জানে আনন্দ তুখ দিবে বলি
স্থপনে নাহিক জানি। >০
মথুরা গমন এ কথা শুনিতে
ফাটয়ে মায়ের প্রাণী ॥
এ পোক পড়িল বখন হিয়ায়
ডখনি জানিল ইহা।
ভোমা না দেখিলে আর কি বাঁচিব >৫
ভেজৰ আপন দেহা॥
এ ববে আনল প্রেক্তায়ে এখনি

এ বরে আনল **ভেজা**য়ে এখনি মরিব বয়ুনা-জলে। এত পরমাদ ভোমার কারণে

मोन हशीमांत्र वरण ।

(60

निम्हें।

কোলে লয়ে যাত্মণি বদন চুখায়ে রাণী
দর দর বাহ প্রেমবারি।
ধরিয়া গোপাল করে কাতর হইয়া বলে
তুই নান্ত ধরিয়া পানারি ।
শীমুখমণ্ডল দেখি ভাছাতে নয়ন রাখি ৫
পড়ে রাণী মুরছিত হয়ে।
বাশোলা রোহিণী কাঁদে ছির নাহিক বাছে
গোপী রহে চাঁদমুখ চেয়ে ।

গোপের রমণীগণ সবে হৈয়া একমন ধূলায় ধূলর কলেবর। क्यात कतिरव रचना हरेया वान के रमना कादर पिर (इना नमी जर ॥ কে আর বাইয়া খরে মহটা লইয়া করে এ সর নবনী দিব মুখে। এ সব ছাড়িয়ে মায় কোণারে বাইতে চায় ১৫ মারের অন্তরে দিতে চুখে।। करह कछ नन्म रचाय कारत कछ मिव रमाय ্ আমার করম হীন বড়ি। নয়ন ছাড়িয়া গেলে কি কাজ জীবনে বলে উচিত মরিতে হয় ভারি।। এই মনে অনুমানি নন্দ বলে শুন রাণি চল যাব বাহির হইয়া। किया घटत ब्याट्ड माथ क्रिक्टिल एम मिन वान চণ্ডীদাস পড়ে মুরছিয়া।।

663

**4** 

একবার চাহ মায়ের পানে।

কৈ ভোরে যুক্তি দিল নিশ্চয় আমারে বল
এই সে আছিল ভোর মনে ॥

গোকুলের বত লোক পাইয়া দারুণ শোক
তথনি মরিব ভুয়াগুণে।

বেজালিশু বত জনে ভাবিতে ভোমার গুণে
ভারা এবে ভেজিব পরাণে।।

গোঠে মাঠে ধেমু সনে কে আর কিরিবে বনে
কে আর করিবে নানা খেলা।

আর না শুনিব বাণী
মধুর বচনধানি >

কৈ আর করিব পাল মেলা।।

শীমুখ বদন মেলি
দিব ছেনা ছুধ ননী
কে আর ভাকিব মা বলিরে।

কাঁদে নন্দ খোৰ রার শ্বাবনীতে গড়ি যায়
় কাঁদে রাণী গলার ধরিরে।। ১৫
চণ্ডীদাস মুরছিতে পড়ে কাঁদি এক ভিতে
যশোদার ধরিয়া চরণে।
এ সকল কথা শুনি আহীর-রমণী ধনী
ধাইয়া আইল সেইখানে।।

## গোপী-বিলাপ।

----

• বেলহার।

কি শুনি ক শারুণ বচন ষেনক বাজল শেল। বুকে পশি গলি (?) মরম ভেদিয়া পিঠে পার হৈয়া গেল ॥ বেমন হরিণী विद्याल विद्याधि ए •ু লইয়া ধেনুক শর। আচন্ধিতে বাজে পড়ে বনমাঝে • খাইয়া বিষম শর॥ তেমন ধাওল হরিণীর প্রায় (न जन दिने पिटक होत्र । )० কান্তের পুথলি বহে দাঁড়াইয়া চিত্তের কায়ার প্রায়॥ কেহ বলে কোথা হইতে আইল অক্র কহিয়ানাম। व्यति देशा व्यानि , हिशा निशा गाँनि ১৫ সাধিতে আপন কাম । এত দিন মোরা স্থের সাগরে 🗼 নাহিন্দু মনের হুখে। এখন ছুখের সায়য়ে সিন্হি বেড়ল আপদ ছখে। ર•

চণ্ডীদাস আশ করিতে আছিল দেখিতে নয়ন ভরি। অক্রে আসিয়া লয়ল কাড়িয়া হিয়ার হইতে চুরি॥ ৫। বেয়াধি।

\*\*\*

एक्ट्रे-निष्कृ

🗢নহ নাগর শুণের সাগর এই সে মহিমা ভোর। অবলা অখলে কেলাইলা জলে কে আর আছয়ে মোর। ভোমার শীতল **চরণ দেখিয়ে** ৫ দেখি এ কুলের বালা। ছায়ার কারণে শীতল বলিয়া ভাহে ভেল এত ভালা ॥ সিন্ধু দেখি মোরা তৃকা পাই ভোরা **शिग्रांम यारेव पूत्र**। অধিক বাড়ল পিয়াস অন্তর মৰমৰ নাহি পুর 🛭 ছায়ার কারণে ভক্লরে সেবিদ্যু ভাপ হইল বড়ি। চন্দন সৌরভ দুরে কভি গেল ১৫ কেশাই (?) নহল পড়ি ॥ ফলের কারণ করিমু বতন সেবিসু অমিয়া-লঙা। ফল ধরি মেনে শাখা গেল দূরে উড়ি গেন কভা পাভা । . ২০ নব জলধর সেবিসু ভাষারে ় পাইডে রসের বারি। विन्यू ना भवना गत्राम् जाना

वितर्व शाक्त भूते ।

50

24

२०

চণ্ডীদাস বলে এ কথা নিশ্চরে ২৫
ত্বনহ স্থানরী রাধা।
আহিল সম্পদ্ বেড়িল আপদ্
এ স্থান করল বাধা॥
২। মনমধ—মনোরধ।

८७१ श्रुहे-तिबूढ़ा।

শুন ছে নাগর গুণমণি। गांत्रदा किनिय वित्नामिनी ॥ এ কুল ও কুল নাহি ভাবে। ভাসাইলা মাঝ দরিয়াতে ॥ এত যদি ছিল তোর মনে। ভবে প্রেম বাচাইলা কেনে পরিছর কি দোব দেখিয়া। তবে তুমি বাইবে ছাড়িয়া। কে ভোমা লইয়া বেতে পারে। ল্লীবধ পাতকী দিব তারে । (महे जन एमिन (कमन। পরবধ করিতে বতন ॥ দোৰ গুৰ আগেতে বিচারি। उंवह याहरव मधुभूती ॥ जूमि यादि मधुश्रुत समा। গোপীগণে দিয়া অভি ক্লেশ # বত কৈলে লহরী রসিয়া। সে সকল রহ পাসরিয়া॥ বে দিন माध्वी जल्हाता। किं रवान बनिएन बहु ब्रोग्न ॥ कर् पिन ७कि (१) सम्बद्ध । **जारनक कतिरण इन्म राज्य ।।** ४ সংহতে আছিল এবে। কোন সাহগে ছাড়ি বাবে।।

দেশ দেশি মনে বিচারিয়া।
সভ্য সিশ্বা দেশহ ভাবিয়া।।
ভশন করিলে ভূমি পণ।
এবে কর এখন এমন।।
কহিলে বথারে বাবে ভূমি।
কহিলে ভোমারে নিব আমি।।
চণ্ডীদাস কহে ভাহে পূরি।
নিদান কহিছে নব গোরী।।

२। किनिय ... (किनिद्य)

৬। বাচাইলা ন্যান্ত করিলে—বাাধ্যা করিলে, উৎপত্তি ও বিভাগ করিলে। এইরূপ অর্থে এই কথা এ অঞ্চলে প্রচলিত আছে।

১৭। লছরী অধ্যান্ত লহরী, রসিয়া অর্থাক।

🗘। পুরি…সার দিরা।

a i

পাষাণ নিশান ভোমার পীরিভি ইথে কি করহ আন। ভোমার বচন ছাড়িব ক্লেমনে এ নব নাগরী প্রাণ । তুমি জল হরি व्यामत्रा भक्ती ৫ ভূমি চাঁদ মোরা হুধা। ভূমি তরুবর শোরা তাহে ফল ভাহাতে আছিয়ে বাঁধা 🛭 ভূমি নবখন আমরা চাডক ভশিব ভাহার রলে। ভূমি বিধুবর 🕐 আমরা চকোর স্থার লালস-রসে 🛭 তুমি কারা বঁদি আসরা ত্রিবলী বেড়িয়া রহিব ভাবে। ভূমি সে নর্ন (मात्रा कामचन >৫

বেড়িয়া রহিব নাথে 🛭

ভূমি দিবাকর আমরা কিরণ ৰুজু না ছাজিব ভোৱে। তুমি চক্র বদি ব্দামরা স্থায়ে রহিব ভানন্দ হেরে॥ দরিয়া অথাই ভূমি জলনিধি আমরা ইহার মীন। ভূমি বদি বট বট্পদ হও আমরা পাখাহ চিহ্ন ॥ **जूमि यणि इ. मनमथ (प**रा २. আমরা হইব কাম। এ রস বিরহ ব্রফশিশু লাগি षिक চণ্ডীদাস গান। १५। व्यक्ति...व्यक्तीसः।

ভোমারে ছাড়িভে নারিব কালিয়া ं विवन भारत वन भारत। ভোমার কারণে প**রাণ ভেজি**ব **शि**रय चयूनात नोरत ॥ মরিলে ভরিব মুরভি হইব ৫ मत्मन्न नमन कान्। দেশিবে বেকড নহে ব্যানমভ এ কথা না হবে জান। नत्स्वत नस्वन হইব বখন ভোমারে করিব রাই। ১০

বেষন বেদনা পাই 🏽 পরের বেদন না বুকা এখন পরিণাদে পাবে সাধী।

वित्रह-त्वप्तन , प्रिव त्म औड्न

পান ধন ছখ পাসু কভ হুখ ১৫

শুন হে ক্মল-জাখি।

**২**8৯ ভোষার কারণে সৰ ভেয়াগিল क्रान्त रगोत्रवशका। শাশুড়ী ৰনদী বাসিত শ্বধি বেমন কাণের সোনা ॥ এখন বাসয়ে বেন কালকূটী নয়নে আছমে মিশি। কথায়ে ছেদনা वष्**रे** याजना

**पिছरिय এ पिन वां**जि॥ সকল ছাড়িল জিসের কারণে ২৫ ভাহার এমনি রীভে।

হাসিরা হাসিরা; প্রেম বাড়াইলে ভাঙ্গিল গৃহের ভিতে॥

এখন এমন কেমন ধরণ মপুরা বাইতে চাহ। সৰ গোপীগৰ করিয়াছি পৰ

সবারে সংহতি লহ।

যদি **বা** পরাণ-পুৰলি ছাড়িল কি স্বার নয়ান ছটি। চণ্ডাদাস বলে কি হৈল গোৰুলে ৩৫ ঘেরল আপদ কোটি

मानका ।

স্বপনে কালিয়া নয়নে কালিয়া · চে**ডনে কালি**য়া মোর।

শুইতে কালিয়া ৰসিতে কালিয়া কালিয়া কলম কোর॥

गमत्न कालिय<u>ा</u>' @ **ভোজনে কালি**য়া কালিরা কালিয়া বলি। কালা হাই বালে (?) কালিয়া মুরভি ভূষণ করিয়া প্ররি।

গগনে চাহিতে কালিয়া বরণ - দেখিরে মেখের রূপ। তৰে গে জুড়ায়ে এ পাপ পরাণ উঠয়ে রদের কৃপ 🛭 নীলঘন শ্রাম বে দেখি সন্মুখে ভাহাই দেখিয়া রই। বেশী করি পরি नौल जामधानि कुखल वैधिया त्राधि। কন্ত,রা কালিয়া বরণ ভালিয়া তাহে সে বডনে মাৰি॥ স্থান্ধি কুস্থম-হার বনাইয়া রাখিয়ে জাপন পালে। ভোগার বরণ **धत्र**द्य मध्य २७ মরূর পাধীর গায়ে। ভোমার বরণ ना प्रिचि वचन এ চিত রাখিরে ভারে॥ নৰ নীলপত্ত লইয়া করেভে ছেরিয়ে নয়ন ভরি। অভসীর ফুল তুলি মনোহয় যতন করিয়া পরি ॥ এ সৰ যাকর বেদন উঠয়ে সে জনে ছাড়িতে চার। চণ্ডীদাস কৰে এতেক বিরহে ৩৫ কো ধনী বাঁচিবে ভায় 🏽 oo-os। बाहात करेड थ गर (बहना हम, त्महे बाह्यि শামাকে ছাড়িতে চার।

বঞ্চি। जूमि निषाक्रण नछ। তুমি ছাড়ি বাবে উচিত কহিবে নিশ্চয় করিয়া কও। তখন কহিলে **অনেক য**তন সে সব বিসর এবে। নাহি পড়ে মনে कमध-कान्टन कि ৰোল বলিলে ভবে॥ ভোমার বচন পাৰাণ নিশান এবে সে রাক্ষের পারা। পুরুষ বচন নহে নিবারণ ১০ এ দেখি বেমন ধারা ॥ कुछा पत्रभन বেড়ায় যখন এ নাহি লুকয়ে আর। যেমন বচন স্থচল স্থচন দেখহ এ গতি তার। ভোঁমার পারিতি ঐছন নহিব কিসের রসের রীত। এমতি পীরিভি বানহ বারতি সরল বাহার চিত # ভোমার কালিয়া ৰরণখানি বে ২০ ष्टिष्टिं क्रभम वज् । উপরে মধুর দেখি মনোহর অন্তরে আহমে গাঢ়। পরের পরাব ইরিভে স্বন ঐছন ভোমার রীভ। এত বলি ছিল ্ভোমার মনেতে তবে কেন কৈলে প্রীত। প্রেম বাড়াইরা নিদারুণ হয়া वाहरव मध्या भूत । **ठ**श्रीमांग वरम পাকুল করিল ৩০ গোকুল অনেক দুর 🛭

वन्त्र विकासका ।

वंधू, छेनिए करण अक त्यान।

নিশ্চর মধুরা বাবে কি না পারা দরা কি নাছিক ডোর ৪

হানয় কঠিন বেমন পাবাণ

তার কি আছয়ে মোহ।

ভোমার কারণে এত পরমাদ

ভেজিল আনন্দ গৃহ॥

কুবচন বোল ভোমার কারণে

**इन्सन कतिया निल।** 

পাড়ার পড়াস বি আপন রহসি ১০

তাহে পরিহার দিল।

বে বোল সে স্থাম- পরসঙ্গ-কথা

তাহারে বাসিয়ে ভাল।

শ্রাম নাম নিডে যে করে নিষেধ

তারে তেয়াগল দিল।। ১

আপন্ধে জ্বন তারে কৈল পর

° পরেরে করিল ধর।

ভোমান্ন কারণে এভ পরমাদ

😎ন হে মুরলীধর।।

অনেক বাডনা গুরুর গঞ্চনা ২০

ভাহা না কহিব কওঁ।

পরিবাদ বলে ভোমার ঘোষণা

ভাহা না কহিল যভ।।

**छ्छोमाञ वटन** स्थन विटनामिन

বড় পরমাদ দেখি। চিক্তি

তুমি না হইও ° নিঠুরহি পণা বিমুখ ও রাজা জাঁধি।।

।০-১১। প্রতিবেশীরা সকলেই আমার নিজের লোক •

**ছিলেন, ভাঁথাদের আমি** পরিভাগে করিয়াছি।

ং ২০। তোৰার সহজে নানা অপৰায় ঘোষণা করে।

(10

यक्षि ।

জাতি কুল শীল সকলি ঋৰিল

ও রাঙ্গা চরণতলে।

হাসিতে হাসিতে পীরিভি করিয়া

নিদানে ডারিলে জলে ॥

তখন আনিয়া চাঁদ করে দিলা ৫ '

অনেক কহিলা মোরে।

ভোমা না ছাড়িব সঙ্গে করি নিব

বলিলে মাধৱীতলে 🛭

এবে কোণা বাহ ছাড়িয়া রাধারে

সংহতি করিয়া লহ।

বিষম দারুণ শেল বুকে বাঁধি

এবে কেন তুমি দেহ॥

জাঁখি আড় হলে এখনি মরিব

এখানে দাঁড়ায়ে দেখ।

হয় নয় এই দেশ ভবে যাই ১৫

ক্ষণেক দাঁড়ায়ে থাক।

একটি বচন কৰ কৰ শুনি

জুড়াক রাধার প্রাণ।

রাই করে ধরি তাক গোরালিনী

কহিতে লাগিল আন। ২৭

এমন কুমারী নবীন কিশোরী

রাখিয়া বাইবে কোথা। অলপ বয়সে প্রেম বাড়াইয়া

এবে দিয়া হিয়া ব্যথা #

চণ্ডীদাস বলে শুন শুনাগরি ২৫

কেমনে বঞ্চিব এ গোপনাগরী

• ইহানাকরিহ বাধা।

**C18** . दरहे। আমার কিশোরী কিছু না জানয়ে বঞ্চিব কেমন করি। সব পাসরিয়া চলিলে ছাড়িয়া আঁধার গোকুল পুরী 🛭 এ নব হোৰনী কুলের কামিনী ৫ রমণী এ রস-বালা। কোণা রাখি লেহ বাঁচাইয়া যাহ দিয়া বাহ এত জ্বালা॥ কি করিব স্থার রস পরিপুর নিবিড় রসের প্রেম। নবীন কিশোরী তা ত্যেক এমন বেন লাখ বান হেম ৷ ভেবিয়া গোকুল নাগরী সকল মপুরা গমন এবে। তা সভা তোমার মনেতে পড়িল ১৫ সে নৰ কৈশোর লোভে নিঠ্র না হও এ গোপ গোপিনী মরিব ভোমা না দেখি। ত্ৰীবধ পাভকী ভয় না গণহ শুনহ কমল-আখি। रय जना ना जीरत वाहा ना स्मिर्टन क्मान जीवह (म। চণ্ডীদাস বলে কাতর হইয়া এ কথা জানয়ে কে। कांगडा । শ্ৰীমূখ-পঞ্চজ চাহি গোপীগণ नव्रत्म वस्टब्र लोव । বেদ প্রধুনী- ভরন্থ ভেদনি ভিজিল বসন জোন।

গাগরি গাগরি ় বেন বারি ঢারি ৫ লোচন-কমল ভায়। চিত্রের পুর্বলি সে নব কিশোৱা কাষ্ঠের পুর্বলি প্রার ॥ স্বপনে না জানি লোকমুখে শুনি ছাড়িব গো**কুল পু**রে। ১. মনমৰ কাম ভেল সেই ঠাম এ সব করিয়া দুরে। ज्ञिम कि वाहरत • मधुलूत मृत কেমনে জীবই মোরা। কেবল রাধার পরাণ-পুথলি ১ঃ কেবল নয়ান-ভারা।। এখনি মরিব গরল ভবিয়া সায়রে তেজিব প্রাণ। রাধার মিনভি আরতি শুনিতে দীন চণ্ডীদাস গান 🛭 ছত্রিশ অক্ষরের করুণা ।. कांगड़ा । েকন তুমি যাবে কামিনী তেজিয়া কাতর করিয়া কান। কেমনে বাঁচিব কহ কহ শুনি কাতর হইল প্রাণ ঃ করমের ফল कि कत्रण विधि व कांन कांन का मानि। কার কত কন . করি অপরাধ কখন নাহিক জানি। কেন বা করিলে কামিনী সহিত কঠিন পীরিভি লেহা। ১০ কামনা রভিক ক্ৰন ছারাব

কুলে দিলে কালী ় করিলে কুলটা কলত হইল সারা। द्रकमन कंत्रिज्ञा कामिनी वक्षव ১৫ কুল শীল হল হারা॥ কানন নিকুঞ্জে করিলে কালিয়া কামিনী করিতে রাস। কামে মন্ত হয়ে কালিন্দার তীরে করিলে কঠিন রাস॥ ২০ কত কত ভেল ১ কানন-বিরহ করিলে কপটপনা। কুলবতী শভ করিলে বেকভ ·ছাড়িয়া কুলের বামা ॥ कश्नि ट्डामाटन काँट्स कनिवादन २० কোখারে চলিলা কালা। কাডর পরাণ কালা করি কঠিন পাইল স্থানা। ক**ছে চণ্ডীদাদে কাভর হুই**য়া ্ কামুর চরণে বাণী। ৩০ করে কর ভরি না জানি কখন विष भान करत धनी ।

খলপণা ছাড় খল খল কহ কেপেক খনাহ বোল। খল সান খলে খরতর দুখ थनिक (क्रमेर ७३॥ ক্ষো ভব নাহি কীণ ভ*মু ভেল* ৫় খসল নয়নভারা।

ক্ষেণেক বিষম ক্ষেণেক ক্ষেণেক পরাণ সারা।

• ह क्षेत्रांग

(थांकड (म नव रनह। . . ) >

ধল খল খল সে মৃত্ হাসিয়া ক্ষেণক দণ্ডাহ সেহ।।

थारेट ना क्रट थ्यनमहानो

খুঁ জিতে এমন নাগর স্থন্দর খোয়ল খঞ্চনী রাই।

ক্ষিতিভলে ক্ষীণ হি মন্তর ১৫ :

পড়িয়া রহল ভাই 🛊

थनल करवी ক্ষীণ চাঁদমুখ ক্ষেমা সে নাহিক চিত।

ক্ষেপণ যভেক ক্ষীণ ভমুখানি

চণ্ডীদাস সে ছঃখিত।

কানড়া।

গুণিত গোপত পীরিতি \* \* \* গাইতে ভোমার গুণে। গুমরি গুমরি শুনিতে শুনিতে পঞ্চর জারিল খুণে॥

গরবিত গুরু গঞ্জনা যে দিল ৫ (गोत्रव भित्रमा भेगा। গাখানি গ**রজি** গ**ংক্তি জারল** 

গুরু পরিবা**রপণা** ॥

গোকুলে গোপের • গরিমা বডেক (गण (म गारे (म ७८७। )

গোপবালাগণ বত স্থাগণ ভা সব পাসর কেনে #়

গোধন কইয়া গভীর কাননে গো চার করিবে কে।

গৌতুল হইয়া গোধন লইয়া '১৫ গাই**য়া ভূ**ড়াৰ সে॥

গোরী আরাধিয়া গোবিন্দ পাইরা গোপিনী রসের লেহ। গোপত পীরিভি গাইতে গাইভে কালিয়া হইল সেহ। গৃহে যত কাজ গ্ৰুন সমান গরক্ষদৃশ ভেল। গোধন দোহন গ্ৰন কানন গোরস বাধক দিল 🛭 গোপ**গৈ**ণ **ব**ভ মপুরা গমন ২৫ মাধায় পসরা গোরী। গাইভে গাইভে সে গুণ-মাধুরী চণ্ডীদাস কহে ভালি॥ নটনারাম্ব। ঘেরল আপদ্ খুচিল বিবাদ পরের ঘোষণা কাতি। যুবিতে যুবিতে ঘোষণা সেচনা খনয়া খোষণা মতি খুনে বেন খর मन करत कत ह বেরিয়া বেরিয়া কাটে। মূৰিভে মুৰিভে গুণ খর মর ষন কাটি উঠে॥ ঘোৰ নন্দ খোৰ • খনের বাহির খন খন শ্রাম করে। খোৰ ঘটা করি शृष्ठ छ्या चर्हे পুরিয়া 🛊 🛊 ধরে 🛭 ঘোষণা নগরে এ স্বত পসারে पत्ततः वर्षेट जाता খন ঘটে পূরি বেসাঘেসি করি ১৫ উরল উপরে ারাখয়ে এ ঘট পানে,॥

খোরভর খন . নন্দ ঘোৰ মন धन तथ कति (महे। षदत्र नम्मत्रांगी यूर्व श्रुवमृति বরেতে লইয়া বাই॥ য়ত ঘোল সব রাখি কর পুর ष्ठन (षत्रन विधि। चन नव धन धन धन धन चूमारम (इत्रव निधि ॥ वत्र इाफि याव व्यवस्त्र (चत्रल २० व्यानिम এ चत्रभाना। বোষণা খুনায়ে ঘরে রথ লয় ঘরেতে আইল ভারা 🖟 . ষর সে আঁধার ঘর সে **দীঘ**ল व्यक्त व्यक्ति यद्य । ०० শুন নবখন ধাউল হইল ঘরের বাহির এবে । ঘট গুলে বাঁধি তোমার অবধি মরিলে ভবে সে যেও। খোৰণা রহিল এই ঘোরতর ৩৫ চণ্ডীদাস বলে রও॥ यस्य-वद्गाति । উ কি এ ভোমার উন্মত চিত উচিত ভোষার নয়। উ সব আচার विठान ना नारा উচিত কহিতে হয় ॥ উ রাজা চরণে **७ गव नागबी** ए छनम्छ स्टब्स् मन्।

छ छूडि চরণ

রাখল করিয়া পণ ॥

			ं २१४
উজাগর নিশি	় উদিত এ বাসি	চন্দন চৰ্চিড	সে <b>অহে লে</b> পিভ
উপরে <b>শু</b> নি এ ডান। ১.			
,७नन७ (२४।	भारम श्रह्या	চপল রমণী	८७ ठॅंक्ट्रक्नी
		চূড়ার সজেতে মিশা। ১০ চপল রমণী নে চাঁদরখনী চলিব করিরা দিশা॥	
	পুরি আবর্ত্তন	. ठाँम मान ठाँम	মুণ নিয়বিয়া
উনানে রহল ভাহা।		চঢ়াইব উর	म्शद्य ।
উন্মত বালা	জ্ঞমে কেনি গেলা ১৫	চিনি চাঁপা কলা	ছেনা চাহি সর ১৫
জমা উমা রবে রহা ॥		<b>पिव (म जानत्म कारत ॥</b>	
<b>७ मूब </b> हनन     •	বরজ-নাগরী	চাঁদ-মুখ পর	চৰ্চিত কপুৰ
উপরে নাহিক মন।		চাহিয়া মাগিব কারে।	
উনমন্ত হৈয়া	<b>ज्ञत</b> मः भव	চপল রমণী	চেডন করিয়া
	क कन॥ २•	চলিয়া আপন বশে॥ ২০	
উরজ-উপরে	নিজ পতি করে	চাহিব কা পানে	চামর তুলাব
বসায়ে আছিল স্থধে।		দিব সে <b>শি</b> কাকে না।	
७ ४नो मधुत	মুরলী 🤫নিয়া		করিব শয়ন
উছটি ফেলিল ভাকে॥		চৰ্চিত সোনাৰ গা 🛊	
উ গুণ গাহিতে	উ সব নাগরী ২৫		চাপা নাগেশ্বর ২৫
্, বেশের উ নহি চিত।		চামে <b>লী চম্পৰ্</b> লতা।	
	চণ্ডীদাস ভাহে	এ চন্দ্রমলিকা	চুয়া মিশাইয়া
উঠল বিরহ চিত 🛚		আসন করিব হেণা॥	
		ठखीमात्र करह	চেডন হেরিয়া
ers .		চা <b>হিলা</b> গোঁশিনী পানে। ৩ <b>০</b>	
ers কানাটি।		চিরকাল রহ	. ठाँममूच ८मच
কলাল। চেতন হরিয়া চলিল ছাড়িয়া		জুড়াক সবার প্রাণে॥	
তত্ব ব্যৱসা ক্ <b>হিভে প</b> রাণ			) <del></del>
		20	•
চিভ বেয়াকুল ইয়া হালে বে		८४२ नहेंमै ।	
টাদ ছাড়ে বে টাদ সে বয়ানে	ন্দ নাচে।। চন্দ্রমূখী রাই ৫ .		
णा एन प्रशासन ना <b>छन जां</b> मां			क और ।
_		ह्ना कति हुँ इना कति हुँ	
চাঁচৰ চিকুৰ চূড়া না বাঁধব চাঁপাৰ কুল সে জানি ॥		ছলা লে করি	
मानाम पूर्व ६०	ा चाराचा <sub>.</sub>	2-11 A-1 41 H	· ·· · · · · · · · · · · · · · · · · ·

ছেনা ননী স্থত দধির পদরা ৫ ছান্দিৰ পদরা পৰে। ছন্দ বৃদ্ধ ছাদে ছলা বে করিব भारुषो ननमो त्वातम ॥ हाँ मित्रा ठत्रव हाटन मान जावि . ছেনা দ্ধি নিব ছলে। ১০ ছল ছল ছল গোপিনী সকল हि हि हि ली वनि वल ॥ ছলা করি তবে বড়াই যাইয়া इम्म कति कथा करत्र। ছাপিয়ে রাধারে বসনের ছায় ১৫ त्म नव किरमात्री मरत्र ॥ ছটা বেশ দেখি ছটার উপমা ছাভিতে করিয়ে ঠাই। इना भानवार्षे मित्रव्ये (क्वा চণ্ডীদাস গুণ গাই॥ नकृति। জর জর জর

জবে সে শুনিল ইহা। যাইতে মৰ্রা নাগর চভুরা জারল রাধার দেহা।। বার লাগি বাই নিকুঞ্জ-ভূবনে ৫ বোলা ভেন্সাইৰ ভালে। यम्भा किनादत यत्भामा-नम्मन রহিব **কদম্বভলে।।** মচিয়া বাচিয়া বতন করিয়া **८क मिंव कमच-कून। ১**०

यद्य दम कामन यद्य काईन तथ ববে সে পড়ল সারা। बारे अकलन वूबन कांत्र >१ জারল বিরহ গাঢ়া॥ व अन वाहेव ट्यांमादत नहेग्रा বমুনা হইলে পার। জীবনে ভেজিব বডন করিয়া व्यक्तित्व विष्ठात्र छात्र ॥ २० कारन हशीनांज ं यदिव मधूता যবে সে শুনিল কানে। জর জর তমু জারল অন্তর रिश्रक नाहिक मान्।

न्हेर्नात्रांद्र्य ।

ঝর কার কার বাছে প্রেমবারি कामक नग्न छूटि। यमरक यमरक अंत्र संत्र संत বিরহের বারি উঠি। ঝাঁঝর পাঁজর वंत्र वंत्र (छन । কটকে পরাণ বায়। ঝট করি জিউ ঝমরু ঝমরু বটকে ব্যথাটি পায়। त्रम् सन् कटत कश्चन वहेकि कत्राम स्वत्य भ्वति । ১० विद्युत क्रमण वंहे क्रि जानि

বৃষ্ভাসু রাজা রাণী 🛭 বৰ্ বৰ্ পাটে বলক আয়াটে वदा बाद यह याथि। तन् वन् वन् वंगक वंगक ১৫

वन्ति द्रत्व शिष्टि ।

नहेनात्रात्र्य ।

ঞ কি মণুরা এ কি চড়ুরা

ঞ কি পরের বশে।

ঞ কি নিদান এ কি পাষাণ

ঞ কি ছাড়িব বাসে॥

ঞ কি গোধন ডেজিয়া সদন ৫

ঞ কি তেজিব মায়ে।

ঞ কি বালক তেজিব সকল

ঞ কি মণুরা বারে॥

ঞ কি গোপিনী ডেজিব এখনি

ঞ কি নিদারা হয়। ১০

ঞ কি গোকুল ডেজিব সকল

अ कि अ लाक शिया. II

ঞ কি পাৰাণ স্বাদ্য নিদান कि मध्दा गात।
 ... ঞিহার কারণে ইঙ্গিতে আকারে ১৫ . এখনি পরাণ দিব॥ अ कि मथुता नागृती विलातन ঞ কি বঞ্চিব তথা। এঃ কি সেধানে বঞ্চিব সন্থনে ঞ কি ছাড়িব হেখা॥ ২০ এ কি রাধার মরণ দেখিয়া ষাইব মপুরা দেশ। এ কি মক্র সঙ্গেতে যাইব দিয়ে শুভি বড় ক্লেশ। এ কি হুখের লালস ভেঞ্জিয়া ২৫ গোপিনী ছাড়িব পারা। ঞ কি বঞ্চিত করব সকল **ठश्रीमाम वृदक** शाता॥

বভিঞ্জী।

টল বল করে টল টল দেছে

টেরা সে বিষম গাঁসি।

টানিলে না টলে বুকে টেরা হয়।
ফলয়ে রহল পশি॥

টাটক হইরা স্থামুখী ধনী ৫

টেরা সে নয়ানে চেরা।

টারিয়া বাইবে ডটফ রমণী

টুটিল বিরহ দিয়া॥

টানাটানি করে টেরেডে লইরা

, মরিডে টাকর দিয়া।

টান টোন করি টাকাই ডা সনে

টের দূর দিকে বরা॥

२०

টিপ টাপু করে টেটালির পারা विकामिनि भात्रा त्रांथा। **वेल वेल करत অবলা পরাণ** ১৫ সকল করিল বাধা॥ টাটক হইয়া টানিয়া রাখিব আপনার নিজ পতি। টেৰেতে থাকিয়া টেট্কারি দিয়া অক্রুর মহা সে মতি॥ টাটক হইয়া **ह** छोमारम करह টারল গোকুলনাথ। টিপানে জানিল টেরা হয়ে নাথ ছাড়ৰ গোপীর সাথ॥

বেলয়ার ৷

ঠালল রমণ र्वगदक देवर्जन ঠারা ঠারি করে ভারা। ঠাট করি রথ ঠেলা ঠেলি गङ ঠালিল রমণ সারা॥ ठीन दान भित्र र्ठमटक गरिएव त्ररथ। ঠকের ঠাকুর ঠক্ষকি সারা ঠাকুর বলিয়ে ভারে। ঠাকুর হইলে ঠাকুরালি পনা ठेमक (म क्य करता। ठेकाइया अदव ঠমকে যাইৰে ১০ ठानिन शाला त्रामा। ঠার নাছি চিতে **অবলা** বধিতে ঠারে ঠেলিব ভোমা॥ प्रानिन मद्र ঠাকুর তখন ঠারে যোগাইব রথ। 24 ठांदन हखीमान হয়ে একমন ঠারে বোগাইব রখ।

বেলয়ার।

ডাহিনে শৃগালী ডাকে এক জনা ডাহিনে কাটিয়া বাব। ভর পেয়ে মনে ব্দশুভ দেখিয়া ডরে ডরাইয়া রব॥ ডোর দিলে ঘরে ডোর দিলে পরে ৫ ডাগর হইল বাণী। ' ডরেতে ডরিয়া ডরে ডরাইয়া ডাহিন নাহিক গণি॥ ভারিলে দরিয়া ডহর দেখিয়া পড়িল সকল জলে। ' ডোর দিলে বড়ি স্বত্তি তড়াৰ্বডি এমন কে জন জানে ! ভাগর দেখিয়া বামেতে ভারিয়া ভাগর কদস্ব ফুল। উড়ে শিখিচুড়া ১৫ ডগ•মগ ডগ বাঁধিয়া চাঁচর চুল ॥ ভাহে চণ্ডীদাসে পড়িল চরণে ডারিলা সাগরকলে। ডহ ডহ ডহ ডাহয়ে অন্তরে क्रमरत्र स्थानरम क्रांटम ॥

বড়ারি।

हर हर हर বহে অনিবার চরকি চরকি লোর। ঢলিয়া পড়ায়ে ' তাকিলে না রহে নাহি ভোর দিলে ওর। ঢারিয়ে অমিয়া व**रू** छात्रि मिर्टन व एन एन करत करा। ঢারি পুন দিলে ঢারি আগর

তারে তারিলে সক্ষ

তোর পরিবলে তাকির তোরসে

তাপন বিরহ কোর। ১০
টোকল তাবলে তারির তাপনে

তিবৰ তঙ্গ স্থতোর ॥

তর তর বের গোপ স্থনাগরী

তরল বিরহ সবে।

তারিলে বিরহ জানল বিশুণ ১৫

তালি চণ্ডীদাস ঝুরে॥

€70

81

আনন্দ ছাড়িয়া আনল জারল

আন কি পরাণে সয়ে।

আনহ গরল হইয়া সরল

আন কি পরাণে সয়ে।

আন আন ছলে আন কুতৃহলে ৫

করিপু আনহি খেলা।

আন জনা কভ কহিপু বেকভ

আন দিখ অভি স্থালা।

আন পাণা সব থান কি দিয়াছে ভোর।

আন সত করি ডোমার কারণে ১০

থান করি বাহ ভোর।

আনল স্থালিলে আনন্দের ঘরে

আন কি জানিয়ে ইহা।

\* \* \* \* \* \* \* \*

আন আন বার বার আন বার সত ১৫

আন আন বত আন আন মত ১৫ আনহ বারন ভালে। আন আন লাগি এত প্রমাদ

তগুদাস আন বলে।

ভাটানি-মঙ্কল ৷

ভূমি কি নিদান ভাহা সে না জানি-ভবে কি এমন করি।

ভবে কি অনন কার।
তার তর তম তখন করিপু
অথলা কুলের নারী।
তরল সরল তো বিদু গরল ৫

তথনই খাইব আমি। তবে তাপ যাবে তখনি মরিব তবে সে জানিবে ডুমি॥

ভোমার করিবে ভেঞ্জি গুরুজনে ভাহা সে সকলি জান। ১০

তুমি নিদারুণ তাহে কর ছেন তাহা তুমি যদি জ্ঞান॥

তোমার পীরিতি স্থদয়ে পুরিতে তাহা না কহিব কত।

ভাপেতে ভাপিত ভাহা কব কত ১৫ ভোমার কারণে যত॥

তাগেতে তাপিত গ**ঞ্জ**য়ে সতত তাপিনী বড়ই স্নামি।

ভোমার চরশে সকলি গোচর তাহে নিদারূণ তুমি॥ ২০ তাহে চণ্ডাদাস তাপিত হৃদর

ভাবে চন্তাদাস গাসত ক্ষর ভুমু জর জর ভেল। ভাগে বভ সধী তাহা মুধ দেখি

क्रमरत्र वा**क**रत्र (मन ॥

30¥ |

থাকি থাকি বেথিত সম্ভৱ
, কান্দিয়া কান্দিয়া উঠে।
থির নাহি চিতে থাকিয়া বেথিত
ধেমন আনল, ছুটে॥

খোর দরশন খাকিড থোকিড ৫ ं थित्र थित्र नाहि मान। ্থাপিল ভোমার যুগল চরণ থল সে নাহিক জান। থির করি চিত ধর ধর করে থাকি থাকি কেন কাঁদে। ধাকুক থাকুক ভোমার পীরিভি थित आत नाहि वाँदि। পল না রাখিলে পুইবে খেয়াভি থাকুক ভোমার লেহা। कट्ड विटनामिनी ३० থির থির ভাছে शंहि ना तहल (नहा। থির করি চিড থাকহ গোকুলে পারী সে হইয়া থাক। **छिमान करह** পল রাখ নাথ গোপীর শুমান রাখ। २०

47.0

यहरे-तिकुछ।।

मिक्निश नश्रदन নাচিল যখন प्रिश्न विशक मना। দিয়া সে দেবতা দেবীরে পৃক্তিতে দেখল আপদ ভাসা॥ দেৰতা উপরে मित्र। कुनमन দেয়াশী জুড়ল কর। দেহ মাতা দেবি দরিয়া হইয়া चटत्र तटर माटमामत्र ॥ एंदी एन ना विन মাথার সে ফুল তাহাতে জানল মনে। দিব বহু ছুখ ছুখের সাগরে ি ফেলাব নাগর কালে॥

>•

দেখিয়া দরাল শুণের সাগর

দর দর ছটি আঁখি।

দরাতে মোহিত দেবের দেবতা ১৫

শ্রীমুখ বহিমে রাখি ॥

দোষ শুণ যদি দেখিরা রাখার

ছাড়িয়া যাইতে চাহ।

দেখিব লও দেশির নাহিক

চগুদিাস শুণ গাহ॥

২০

478

কানড়া।

**४त्रम क**त्रम नकिल मिलल ধাধসে পরাণ রাখি। ধেয়ান ভোমার ধনী সে আকার एधू प्रव चाह्य माथी। ধন জন যত সে সব বেকত ৫ ধরম ভরম তুমি। ধরিয়া চরণ লইমু শ্রণ ভোমা না ছাড়িব আমি # ধরিব যেমন ধরে মীনগণ ধাধসে শক্ষী যত। धनी विटनां किनी धांधरत उज्जन ধৈরজ ধরিব কত॥ ধক্ ধক্ ধকি পরমাদ দেখি ধরিতে না পারি হিয়া। চণ্ডীদাস করে धतित्रा इंगरत ३४ বচন চরণ সেরা॥

केर ' विनष्टे।

দ্বীন নাগরী নবীন লোরেডে দেখিতে নাহিক পায়। নীরস বচন নাহিক কখন মভিকে কেমন ভায়॥ নব নৰ রামা না ফেল পাথারে ৫ নাহিক আপন কেহ। না জানি পীরিতি' না জানি কি রীতি (करन स्<sup>\*</sup> भिन (मह॥ भिलिल (य पिन नग्रान नग्नन . সে দিনে আছিলে ভালে। নাগরী আগরি বমুনা নাগর সেই সে কদম্বতলে ॥ নানা রঙ্গ তথা নানা রসকথা আন আন ছলে কয়া। नीत व्यानि इटल नाना ८२म धति ১৫ • কহিমুবদন চেয়া॥ নাগরীর প্রেম পাসর কেমন কেমন ভোমার প্রীতি। নাহি গণ এবে সে স্ব আর্ডি চণ্ডীদাস কহে রীভি ॥

674

ৰুড়ারি।

পতি ছুরুম্ভি ় ভাহার পীরিভি ভেলিমু অবহি হেলে॥ পাথারে ফেলহ পরিহরি বাহ পাসর পরম লেছা। পাতি স্বাতি কুল পহিলে সকল পরিহার দিল পেহ:॥ পথে কত শত পাওল বেদনা পহিলে বিকের ছলে। পরিয়া কদম্ব-মালা মনোহর ১৫ পাইথে কদশ্বতলে ॥ পরিহাস-রসে প্রেমে রহাইদে পাইয়া প্সরা জভি। পথে লুটি নিতে দধি ছুগ্ধ যভ সে সব তে**জিলে** কভি॥ পরশ-রভন পাইয়া সগন পরাণে মিশিয়াছিল। প্রেমে দিয়া ইবে ছাড়ি কার নোলে চণ্ডীদাস হুখী ভেল।

ে। খরখালা — যে খর ভাঙ্গিয়া দেয়, গৃংবিদ্ধেদ ঘটায়। এ কথাটি নালুর অংশলে ত্রীলোকদের মধো প্রচলিত আছে।

421

**∓1(**∓ |

ফিরিয়া না চাহ ফিরি কথা কছ

ক্ষের দিয়া কোথা বাবে।

ফসল পাইয়া ফাঁফর করিয়া

ফিরিয়া চলছ ঘরে॥

ফিরাইতে ববে ফিরিয়া ফিরিয়া ৫

শান্তলী ধবলী গাই।

ক্ষোতে চাহিলে কাঁফর হইলে कितिवा कैंगिएव गाँडे॥ कठेल यथन क्षेत्री विषयत ফুয়ল **জীঅঙ্গখা**নি। কের কিরি কিরি গোপিনী ছুসারি कृत्रलं अत्नक वांगी॥ ফাটয়ে পরাণ काष्ट्रप्त अन्य रक्लार पतिया भारता। ফুরল সকল কাঁফর গোকুল ১৫ **छिनाम मदन मादन** ॥ •

esv

युरहे ।

বল বল দেখি বিকল পরাণ বুক বিদরিয়া মরি। বেদনা জানৰ বরজ-রমণী বিৰুল হইয়া ৰজি॥ বলরাম হৈতে বড় দে জানিয়ে ৫ বড় সে করিয়ে প্রেম। विषृत्र (यमन বহু রত্ন ধন लाय लाय भाग (रम ॥ বড় যেন চুখ বহু গেল তুখ বড়ই মানন্দ তার। > 0 ৰ্ভমূল্য ধন তুমি সে তেমন **जू**बन कतिन मात्र ॥ वरि कि वा नग्न वूक तनभग्न . ৰলিল গোচর পার। বেণী কালজাদ বসিয়া বিরক্তে ১৫ ৭ রূপ নির্বিয়ে ভায়। বেশ পরিপাটি বেশের বন্ধান (विन अवनामकार्ताः)

বলি রাধা রাধা বাজাও মুরলী তথনি বা**ইণু জলে** # ১ বৃন্দাবন বন্ধান সন্ধেত-মুরলী व्यवरा छनिएत्र वरव । বেক্ত কামিনী কুলের রমণী পরাণ না ধরে ভবে॥ विकल इट्रेग्रा সক্ষেত পাইয়া ২৫ • কনক-গাগরি কাঁখে। বলে চণ্ডীদাস বেদনা পাইয়া **८वन धन (शया ब्राट्य**॥

432

কাকি। ভালের বড় ভূ ভামিনীর প্রিয় ভালে সে জানল ভোরে। ভরম সরম ভাসল সকল ভাসালে দরিয়াপরে ॥ ৃ ভাল মনদ মোরা কিছুই নাজানি ৫ ভরশা কেবল পায়। ভরসা অন্তরে ভারি ভারি ভাহে ভস্ম হইল গায় 🛭 ভর্ম সর্ম ভরসা করিল ভালে সে জানিল মোরা। ১০ ভাল মন্দ কেৰা ৰানে ভাল মতে এমন ভোমার ধারা॥ ভৈগেল ভাবের • ভরসা সকল ভেল সে গরল পারা। ভাবিতে গণিতে সারা 🛚 ভিগল মরমে ভোষার ভাবনা

ভালে সে পশিরা গেল।

ভাবিতে গণিতে 🐪 ভাসল সায়রে জানহ সকল •ভণে চণ্ডীদাস ভাল॥ ২• ভূবনমণ্ডল মাঝ॥ যদি নাকি চাবে সে হেন **শ্ৰী**মূখ 🕆 ৫ कत्र करत्र (महा। श्रीयर्। मरनद मदम যাইয়া বমুনা জল ভরি ছলে মনেতে জানহ দেখিয়ে বাড়য়ে লেহা॥ মানস মরমে যতি। যদি যাহ নাথ যমুনা উপারে मनञ्च यञ मानरम कानिरय যগন ধেমুর পাল। মদন-তরঙ্গে মাভি॥ यद नाहि प्रश्वि प्रश्वित जूड़ाहे মদন-মোহন রমণীর মন ৫ বি**কের ছলায়ে ভাল**॥ ্মোহিলে মনের হুখে। যাহার বেদন৷ জানে কোন জনা মথুরা-নাগরী যাহার হৃদয়ে পশি। মনে সে পড়ল তাকে। জানে সেই জনা বিরহ-বেদনা ১৫ মনেতে লাগিল মনোহর রূপ যেমন র**লের** রসি॥ মগন হইয়া 6িভে। বাবে **মধুপু**র যবহু 🐯নল মনে নাহি ভয় গোকুল নগরী তবে কি পরাণ জীব। কি রূপ ৰাছয়ে ইথে॥ ' যমুনার জলে বেয়ে কৃতৃহলে মনমস্ত হাতী মারিয়ে কেশরী তখনি পরাণ দিব 🛚 • শৃগাল মারিতে চায়। যদি না হইবে ন্ত্ৰীবধ পাভৰ মাণিকের কাছে ভুলনা থাকয়ে ১৫ তবহু তেজৰ গেহা। কাঁচের ফলের প্রার॥ বভনে বাইয়া যমুনা মরিভে পর বে যজিয়া মন বে মজিয়া ভেক্সৰ আপন দেহা॥ রঙ্গে ভেন অতি ভোরা। कत कत (जल कांत्रिम जस्तुत २० শেতিম ভেজিয়া (?) কোলিসে পাওব **हछीमात्र ७**१ ब्रुट्स । চণ্ডীদাস ভেল ভোরা॥ এত দিন ছিল যতেক আনন্দ २०। मनमछ—छेनमछ। शुर्स अकवात अहे चार्स যুচল গোকুল পুরে॥ रावक्छ रहेशाई। কাফি। যাহার কারণে রসে রসাইয়া রমণী ভেজিয়া জগজন ভরি

র**ভদ'রদে**স ক্রেছি ।

বভ বড় ভেল লাজ।

রসিক হইয়া ় রস ভেয়াগিয়া এবে সে জানিল ভালি॥ . : রাতুল চরণ রঙ্গিয়া নাগরী ৫ রস্যা রসান ছিল। রসের ঘরেভে রস ভাঙ্গাইয়া বিহি নিকরণ ভেল॥ রাত্রি দিন ঝুরি বিরহে স্থন্দরী রহই তুহারি ধ্যান। ٥ ( রব শুনি যব মুরতি কৈশর রাঙ্গিয়া মুরলী গান ॥ 🕠 রাধা রাধা রবে অঙ্গ পুলকিত মুঞ্চরে ভরুর ডাল। রহে সে বমুনা व्रट्ट निव्रमल ১৫ **छकान इहेग्रा छात**॥ রাস অসুরাগ রহত অন্তর রমণী এতেক সয়। রাস অমুরাগে যে জনা রহল তার কি পরাণ রয়॥ রাগরসে মাতি রাগ উঠে ঘব রাগ সে বিষম বডি। রাগে উনমভ রাগ সে বেকভ রাগে সে পরাণ ছাড়ি॥ রাগে সে মগন রছই ধেয়ান ২৫ রাগে সে মরণ গাটা। রাগিণী অন্তরে রাগ বচ পেলে পরাণ ভেজৰ সারা ॥ রাতৃল চরণ লয়েছি শরণ बहिंव ७ भएरम्या । রহিল বিরহে: বেকড পড়িয়া চতীদাস পুছে কেবা॥

নহ নিদারুণ নবল নাগর ললিত ত্রিভঙ্গধারী। नव नव (वर्भ নট মনোহর লহ লহু মৃতু বোলি॥ नान्त्र नान्त्र নবীন নাগরী 🧯 নোটন হোটন বেশে। নব অফুরাগ নব নব রসে নব রামা জিয়ে কিসে॥ निनो नखग्रा সেজ বিছাইয়ে লওল স্থগদ্ধি তাথে। লওল বিচিত্ৰ চামর ঢালর না**ইৰ স্থাং**র যূথে॥ লাগাইৰ অক্তে এ ছয় রসাল মিশান কুম্কুম্ ভায়। নবীন কিশোরী त्रमाम (म (गांभी )व লেপব শ্রামের গায়॥ লাবণ্য-লহরী লেছ না কুরব লে চলু অক্র রায়। নব নব গোপী লাজ পরিছরি **ट**खीमांत्र खन भाग्न ॥

908

ৰড়ারি।

বল বল সখি , বিরস হইলে
বাঁচিব কেমন করি।
বিনোদ বিনোদ বিনোদ জামোদ
এ কি এ ডেন্সিডে পারি॥
বিনোদ বেশের বিনোদ মাধুরী
বিনোদ কেশের চূড়া।

বিনোদ কুস্থম- হার বনাইয়া 'বিনোদ দিয়াছে বেড়া। বিনোদ ময়ুর- পাখা তাহে দিয়া বিনোদ বিনোদ উড়ে। विताम नागत्री বিনোদ মরম পরাণ রহে সে ছাড়ে॥ বিনোদ বিপিনে রাস-জাগরণে নিমোদ গোপের রামা। আর না করিব বিনোদ চাতুরী ১৫ विताम विताम तथा। विरमान गुत्रली विरमान वालव শুনিব শ্রাবণ ভরি। বিনোদ বেশের বেশ না করিব বিনোদে ষাইব চলি॥ विताम भोत्रङ হার মনোহর ञ्गिक ठम्मन करत्र। বিনোদ নাগরী বিন্যেদ আকুতে ঁ লেপিত শ্রীষক্ষ পরে॥ বিকায়ল পায়ে বিনি মূল পেরে ২৫ চণ্ডীদাস গুণ গায়। বিনোদ নাগরী কি কহিব গভি হেন মন মোর ভায় ॥

40€

কান্ডা।

শুন হে নাগর শরণ যে লয়

তারে সে এমন কর।

সরল হাদয় সরল হাজাবে

সবারে করিয়া জর ॥

শ্যাম শ্যাম বলি শ্যামরী সকল ৫

শ্যামল হইয়া সেল।

সঘনে সঘনে সে গুণ জাৰিতে कूरन जिलाञ्चित पिन 🖁 🔻 হ্মান পীরিতি হুখের আর্ডি সে ভেল গরলময়। হুখ দূরে গেল . চুখ ব্যৱশেষ মরণ হইল ভয়॥ সময় হইল দশমী দশার এই সে সকল মোয়। শরণ যে লয় সে জন ডেজার ১৫ क्रम व्यविध द्वारा॥ শাশুড়ী ভাপিনী সহতে অবলা সকল জানহ ভূমি। সহিতে সহিতে সে যে করে চিতে বিষ খেয়ে মরি মামি॥ সৰ গোপীগণ সাহস ধাধসে कार्छत्र भूथनि श्राग्र। শ্যাম-পদে পড়ি करत्र निरंत्रप्रन চতীদাস গুণ গায়॥

> ५०५ यह है।

সকল ভেজিয়া

শ্যাম স্থ্যাগর রায়।

সম্ভোল নাঠেল পায়॥ শুনিল যখন শ্রাবণ ভরিয়া

শরণ লয়েছি

সকল কুলের নারী।
সরল হাদরে সুমুখ দুইরা
শুন হে মুরলীধারী॥
শুল্ফ করি বাবে সব গোলীগণে
সবাই মরিব শোকে।

সব গোপীগণ • সম্বনে ছক্তপে ১০ শেল দিয়া গেল বুকৈ ॥

শাশুড়ী ননদা সবাই সবাই সে সব আরতি স্থাধের আরতি • ় শাসিল সবার আগে। সে দিন পাসর দেখি মনে কর স্বরূপে লইব নগে॥ 26 সব পাসরিয়া. সমুদ্রে ভারিয়া শেষেতে করিলে হেন। 405 সহজে অবলা হইয়া অখলা তাহে নিদারুণ কেন॥ স্থের ঘরেতে তুখ সার হৈল ২০ শোচনা রহিল বডি। চণ্ডীদাস বলে আশ পাশ গেল এবে হল বড় ভেড়ি॥ 609 হিয়াতে হুতাশ भी भड़े मञ्जूती । শ্যাম শ্যাম বলি সদা শ্যাম হেরি नकल मंभिल भारिय। শ্যাম পরিবাদ সকল গোকুল এ তমু সঁপিমু শ্যামে॥ সব তেয়াগিমু শ্যামের কারণে ৫ সবাই করিল সারা। শ্যাম কলক্ষিনী শবদ উঠিল তাহার এমন ধারা॥ সহিতে সহিতে সে সব কারণ শুনিতে পরাণ ফাটে। ১০ শথবণিকের করাভ যেমন ভ দিক্ও দিক্কাটে ॥ শরণ যে লয়ে শীতল চরণে > । (शास्त्र-पूर्व। সে জন এমন দশা। '

যুচিল সে পৰ আশা।

কে জন ভাঙ্গিয়া দিল। চণ্ডীদাস বলে সেঁজন অক্রুর 🕫 শ্যন স্থান ভেল ॥ সুহট। হা হরি হা হরি 🐪 হরি হরি হরি হব সে হুতাশে সারা। হরি কি হিয়ায়ে হানি বাণ সব হরি বা কেমন পারা॥ হের দেখি হরি হর্য প্রশ ৫ তেজহ কিসের লাগি। **হয় নছে হ**রি বিদারি দেখহ সাগি॥ হার পরিহার রভর হারাস হরি নিদারণ হও। • ः হরষে গোপিনী যমুনাতে গিয়ে मित्रत्न ज्राव (म (ग्रह ॥ হরিণী ধেমন হাণে ব্যাধগণ হিয়াতে বিশ্বয়ে শর। হোরে গিয়ে যেন পড়য়ে হুতাশে ১৫ বাণেতে হইয়া জর॥ হরিণী হুতাশে হরির বিরহ হেমতি সমান বাণ। হিয়াতে বাজল • হরিণী সমান চণ্ডীদাস গুণ গান॥ ₹ 0

नहेनातात्रः।

কণে কত শত কমা নাহি চিত ক্ষত উঠে কত বেরি। ক্ষেয়াতি রহল ক্ষিতি মহীতল ক্ষমা কর বছ হরি॥ ক্ষণেক ক্ষমহ দোষ অপরাধ ক্ষমা সে করিতে চায়। ক্ষেপল সকল গোপিনী যভেক ক্ষমা চিতে নাহি লয়॥ ন্দণেক ক্ৰেক বিরহ-আগুনি कर्ण कींग कति मिल। ক্ধায় আকুল পীরিভি বিহনে क्रांक ভाक्रिया देवन ॥ ক্ষিতিতলে লুটি রাধা স্থধামুখী ক্ষণেক বদন চাহি। ক্ষণেক বোধত ক্ষীণ তমু হয়ে ১৫ ் চণ্ডীদাস গুণ গাহি॥

রাখাল-বিলাপ।

#30 ·

হেথা সে অক্রুর রথ সাজাইয়া
কর জোড় করি কয় ।

মধুপুর দেশ চল ক্রমীকেশ
বিলম্ম নাহিক সয় ॥
এ বোল শুনিয়া \* শ্রাবণ প্রিয়া ৫
কুফা বলরাম ছুই।
ভাল ভাল বলি তুরিত গমন
মধুর মধুর কই ॥

মোর স্থাগণ তুষি তার মন
. ভবে সে চড়িব রথে। \* ১০

স্বান্তে লইয়া ব্দানল যতনে কহিতে লাগল ভাথে।। चानक (चनिन শ্ৰীদাম সুদাম . স্থল স্বার সনে। किছू ना ভाविर मन्नाम नाथिर ১৫ না কর ভাবনা মনে। ভোমাদের চিতে আছি অবিরতে रियात्य हियात्य त्मना। এই স্থাগণে লয়ে ধেমুগণে জনম করিয়ে খেলা॥ ২০ এ যত্নন্দৰ কর্ময়ে রোদন ছলে সে কমল আঁথি। (यन इद्रश्रूकी-ভরঙ্গ তেমনি বনে তেয়াগল লক্ষ্মী (?) ॥ कृलि कृलि मृथ त्म विधूमधन २० কহিতে না ফুরে বাণী। চণ্ডীদাস কহে সাঁথি ভরি লোহে किंदिन कि स्टाप्न कानि॥

333

শ্ৰাপ্তা।

গদ গদ বোলে শুন বাঁশীধর
কোথাকারে যাবে তুমি।
এ ব্রজ-বালক করিয়া বিকল
কিছু না জানিয়ে আমি॥
কেমন ভোমার চরিত ব্যাপার ৫
এই সে করিলে পাছে।
তবে কেন এত প্রাত বাড়াইলে
গাকিব কাচার কাচে॥
স্পান নয়নে শ্রেজন গ্রমনে
সদাই ভোমাণ্ডে দেখি।

কেমনে ভোমার লেহ পাসরিব শুন হে কমল-সাঁধি॥ কাদে শিশুগণ হয়ে অচেতন শ্ৰীৰূপ পানেতে চেয়ে। নাহিক সংবাদ ১৫ কেহ কোথা পড়ে অ**তি সে** বেদন পেয়ে॥ (कह वर्रण वाम (?) आत ना **छ**निव মধুর মধুর বাণী। আর না খেলিব ধেসু নিয়োজিয়া না নিব বাঁশীর ধ্বনি॥ ডাই ভাই বলি আর না শুনিব विश्वन देवकान दवरन। অতি বড় মোহে চত্তীদাস কছে পড়িয়া চরণতলে॥

> **५**ऽ२ यङ्गद्वि।

কহেন বচন এ যুত্নন্দন শুন হে স্থবল ভাই। ভোমাদের ঠাই আছিয়ে সদাই हैर्ष जान कथा नाई॥ আমি গিয়া আসি **কংসরাজ তু**ষি ৫ পুনঃ সে খেলিব খেলা। বিদায় করছ मत्रल रूपर्य পুন সে হইব মেলা॥ এ কথা শুনিয়া গদ গদ হৈয়া কাঁদয়ে বালক যতে। रुष्य कल्लवन করাখাত হানে মাথে॥ কি বোল কি শুনি কহে সবে বাণী নিঠুর হইল কাতু'।

আমরা ভোমার বরহ-বেদনে ১৫ এখনি ভেজিৰ ভমু॥ . আর কি বাঁচিব ও ভন্ম রাখিব ' ना एमि ७ ठाँम-मूथ। এবে সে জানিল বিহি নিকরণ मिर्ग्र अ**ভि वर्फ प्र**थ ॥ ভোমার বিহনে জীব বা কেমনে ইহার উপায় বল। তবে সে याहेर्दि भेशूबा नगबी শুনিতে কানাই ঢল॥ হেটমাথে রহে वहन ना ऋदत २० নাগর চতুর রায়। কাঁদে ব্ৰজবালা वित्रह-(वर्गाः চণ্ডীদাস কাঁদে তায়॥ २८। এ कथा ७ नित्रा शक्तिक विख्त हरेतन।

> **७**ऽ० कान्द्रा ।

উঠ উঠ ভাই

চাহত আমার পানে।

সরল হৃদরে

তবে সূখ হয় মনে॥

এক বোল বল

মণুরা গমন

যাইতে বলহ মোরে।

কহিতে কহিতে

কহিতে না পায় লোরে॥

তন হে সূবল

ভূমি সে আমার প্রাণ।

হুদরে হৃদরে

মন্দরে হ্লারে

মন্দরে হ্লারে

স্কান্তে না হয়ে আন॥

ইহাতে না হয়ে আন॥

বছ সুখ-কথা 'ভোমার সহিতে সকল জানহ ভূমি। ভোমার মায়াটি ছাড়িব কেমনে ১৫ পরবশ হই আমি॥ स्त्रवल मन्नम-(रापन ভোমারে না দেখি যবে। হিয়া জর জর করয়ে অন্তর দেখিলে জুড়াই ভবে॥ <sup>°</sup> ২০ স্থবল কছেন • কামুর গোচর তুমি সে নিঠুর এবে। তবে কেন লেহ বাড়াইলে মোহ মোর কোন গতি হবে ॥ পীরিভি করিয়া ছাড়িয়ে সবারে ২৫ এ নহে উচিত পণা। কে আছে এ মহী- মণ্ডল মাঝারে এমন বেথিত জনা।। চণ্ডীদান কছে কমল-নর্ম • ছল ছল সুটি আঁখি। ব্দন, না ফুরে বেথিত অন্তর বয়ান বৃদ্ধিম রাখি॥ २१। हाफ़िरत्र न्वारत...नकनरक काफ़िश्र हिनग्रा যা∕ও।

418

(बनद्राद्र।

তবে কেন প্রীত 🕠 বাড়াইলে হিত গোপের বালক সনে। করিবে বেকত পরিণামে এভ हेश वा (क जन जांदन ॥ षषि वा कानिश् স্থপন ই**লি**তে ৫ নিদান হইবে ভূমি।

বাদিয়ার ঘরে গরল ভখিপু আমি 🛭 এ সব কেমনে পাসরিব মনে ভোমার পীরিভি-লীলা। যবে পড়ে মনে দে রস-মাধ্রী गलिङ मानस्य भिना । দেখ মনে ভাবি বালক সংহতি ক্রীড়াতে বঞ্চিলে নিশি। ধেমু বনে বনে রাখিয়া সঘনে ১৫ ভাণ্ডীর-গভরে বসি॥ নানামত পেলা তুমি সে ক্লিলা বঞ্চিমু ভোমার সনে। যবে সেই লীলা মনে পড়ি গেলা (कमत्न कीव (म पित्र ॥ २० তো বিমু মরিব সকল বালক जिलक नाहिक कीत। ভোমার সম্মুখে মরিব স্বাই এখনি প্রাণ দিব॥ কি ছার বাঁচিতে সাধ নাহি চিঙ্গে ২৫ **डाड्डिया जानमनि**धि। চণ্ডীদাস মোহে ছল ছল লোৱে (क देकरल निषया विभि ॥ ७। निषान...निषश्। ১২। পাৰাণও গলিয়া বার।

## সুবলের করুণা।

(有明集[第二]

্বনে অভিমুখ ষ্থন করিলে নীলা সে পেলিলে গেলা। वभिरम नित्रंत्र काउक बायुत হয়। বালকের মেলা॥

नमञ्ज कामग्र कामिएड कामिएड দহের সম্মুখে ৫ (य मिरन को निक्ती (म करन गतन हिन। সে জল খাইয়া সেখানে বালক সবে ভমু ভেয়াগিল। কূলে পড়ি সবে মরিল বালকে তুমি সে গেছিলা কতি। ১০ আগিয়া দেখিলে কিবা মাত্র দিলে করিলে সবার গতি॥ কেন বা জীয়ালে এ হুখ দেখিতে তথনি মারিতে ছিল। মণুরা গমন कत्रिरव এथन ১৫ ইহাই দেখিতে হল। **८कमरन विकय** তোমা না দেখিয়া শুন হে কানাই ভেয়া। নিঠুর নহিও বচন কহিও কহত বদন চেয়া॥ এ যতুনন্দন না ফুরে বচন হেটমাথে রহে কামু। কিবা না বলিব মুখে নাছি বাণী পুরল বিরহে তন্তু॥ চণ্ডীদাস কছে শুন হে বচন ২৫ চলহ যমুনা-জলে। ঝাঁপ দিয়া মরি করিয়া ধেয়ান ञ्चल देशह चरल॥ ৪। বালকগণের সহিত মিলিত হইয়া।

স্বল পানেতে চায় 🛊 🦈 . নাবল নাকহ ও সব বচন ' ৫ কহিতে পরাণ ফাটে। হিয়াজর জর পুড়য়ে মন্তর অধিক জ্বলিয়া উঠে॥ শ্রীদাম স্থদাম স্থার বস্তদাম অপর যতেক সখা। আর নাহেরব 'ও মুখমণ্ডল আর না হইব দেখা।। त्मा नवा विनित्र - वादव मध्रूभूती শ্রবণে শুনিতে ইহা। জীব স্থাগণে ১৫ কিদের কারণে কি ছার রাখিতে দেহা॥ কহে বনমালী লোবে আঁখি ভরি সবারে তুষিয়া কহি। **म**तल<sub>ः</sub>रूपग्र করহ বিদায় लाटक मूथ वाँदक तक्षि॥ . . २० (कमन वहून কহে স্থাগণ এ বোল কেমনে বলি। মনে বিচারিয়া হয় নহে দেখ শুন কামু বনমালী ॥ **ह** छोषारम वरल ७ (वाल (कगरन २० कहिरम् न। लरम भन। প্রাণের দোসর তুমি সে স্বার যেমন বাপের ধন II ১১-১৬। স্বাগ্দের উল্ফিট

े बढेबातायन ।

कृति कृति कारम श्वित नाहि वास्त्र সৈ হেন রসিক্রায় ১

কি বা করে ধনে কি বা করে জনে তোমারে অধিক কি।

٥٤

এ ধন সঞ্জ	মনের সহিতে	ত্ৰি <b>ভঙ্গ পোক দে</b> খ	वान को व मार्य	
ু জানয়ে গোপের বি <sup>।</sup> ।		সে হয় ভা	ঙ্গর কায়॥	
প্রেমের স্বরূপ	রদের চাতুরী ৫	পুরবে সাছিল	এক মুনিগণ	•
জানয়ে কি	* * *	তপেতে মঃ	গই তেজা।	١.
রস পরিপাটি	জানে গুণি গুণি	কল মূল মূল	পদোর মৃণাল	,
মো পঁছ তু	্পুণ গাই॥	ভক্ষণ করি	् अन्। इ.सम्।	
রদের আগরি	সে নৰ কিশোৱী		হরিণ হরিণী	
	দানয়ে নাই। ১০	সঙ্গেতে তা		
			এক ব্যাধ শৱে	50
কি জানিয়ে ভব	গুণের মহিমা	বিশ্বল থাবি	ধ্যে পাছ।।	, ,
•	তে গান।	ছই জনা মারি	ব্যাধ চলি গেল	
	যুগ ফিরি ফিরি	হরিণী চাওব	न तरह ।	
ত <b>স্থ সে</b> না	হিক পান॥ ১৫		সেই মুনিবরে	
এ ধন পাইয়া	রাখিতে নারল	দেখিতেন ভ	মতি মোহে॥	٥.
করম <b>অ</b> ভা	গী ৰড়ি।		এ বড় আকৃতি	
হিয়া সে দারুণ	শেল পশি দিয়া	শুনহ নাগ্র		
<b>মধুপুর</b> যাত	<b>ব ছাড়ি</b> ॥	ভাগবতে আছে		
কে সার ডাকিব	ভাই ভাই বলি ২০	এবে কহি ভ	**	
<ul> <li>মধুর বচনর৷</li> </ul>		-		
পড়িয়া চরণে	কাঁদয়ে সঘনে	•	,	
কহেন এ চণ্ডীদাসে॥			۶۶	
২। তোমা অপেকা প্রি	ষ্ঠার আন্তর্গত কি আন্তর্গত	কান	91 i	
		সেই মৃনি সেই	হরিশী ছাওয়াল	
		রাখল সে মূ	निवदत्र ।	
6	<b>1</b> 4	প্রতিদিন দিন		
<b>.</b>		করয়ে অবহি	েলে॥	
	কেল উঞ্চীয়া	क्ड मिन वरे	সেই মুগশিশু	æ
ভবু না ছাড়ি	ব ভোমা।	পাইয়া হরিণী	-সঙ্গ ।	
ভোমার বিরহে	মরিলে এখনি '	আন বনে গেলা	,	
পরিণামে পাবে প্রেমা ॥		' করিতে রসের	ा मञ्जा	

यथन मन्नरत्र (

যারে যেবা ভাবি

সে জনে অবশ্য পায়।

করিতে রসের সঙ্গ॥

বড়ই বিয়োগী

ना प्रिंच (महे मृगी

হরিণ হরিণ . স্পণে অসুক্ষণ পাইরা বিয়োগ রোগ॥ যবে সেই মুনি কাল উপস্থিত हत्रिन (थग्रांटन मदत्र। হরিণ হইল আনহি জনমে ১৫ ছুখ হল মৃগবরে॥ যারে যেবা ভাবে তারে তাহা লবে মরিলে পাইব ভোমা। আনহি জনমে পাইব সঘনে কানাই **ভে**য়ের প্রেমা ॥ ২০ চণ্ডীদাস কছে রসভত্ত-কথা শুনিতে নাগর কান। হেট মাথে রছে বচন না কছে উঠল বিরহ মান। ভাগবত ৫ম হন্ধ, ৮ম অধ্যায়—ভাগবতে ঠিক এরপ নাই।

७२०

তুমি সে নিদয়। নিঠুরাই পনা
এবে সে জানিল দঢ়।
পীরিতি করিয়া হিয়া ব্যথা দিয়া
এবে সে জানিল দঢ়॥
কেন প্রীত কৈলে বালক সংহতি ৫
নাচিলে খেলিলে রকে।
ডেয়া জেয়া বলি প্রেমে ঢল ঢল
করিলে এ সব সঙ্গে ॥
আরতি পীরতি স্থাখের কি রীতি
ইছারি শরীর কিসে। ১০
ডোমা না দেখিলে ভিলেক না জীব
নিদান করিলে শেষে॥

মরিলে তরিব মরিয়া হইব
তোমার চরণে সধা।
শ্রীদাম স্থদাম সার বস্তদাম ১৫
আর না হইব দেখা॥
কহে গুণমণি কাঁদিতে কাঁদিতে
স্থবল পানেতে চেয়ে।
চণ্ডীদাস কহে সতি বড় মোহে
পড়ে মুরছিত হয়ে॥
---

গড়া।
স্থবলে কছেন কমল-লোচন
কছ কছ এক বোল।
মধুপুর দূর যাইতে বলহ
তেজি মায়া মোহ কোর॥

স্থালের কাঁধে কর আরোপিয়া ৫
আলিঙ্গন রস আশে। 
বল বল ভাই মুখ পানে চাই
যুচাহ শোচনা ক্লেশে॥
ভোমার হিয়াতে সদয় হৃদয়ে
তিলেক নহিয়ে ছাড়া। ১০

তেকে নাহয়ে ছাড়া। ১০

হাসির সম্মুখে বিদায় করহ

তোহে মোহ প্রেম বাঢ়া॥

ন্থার এক কথা শুন হয়ে বেথা

শুনহ স্থবল জাই।

নবীন কিশোরী ও বর-কামিনী ১৫

বরজ-রমণী রাই॥
ভাল মন্দ কিছু তেহো না জানিরে
কেবল আমাতে চিত্ত।
গোপত বেকত কহিবারে মহে
তোমারে কহিয়ে রীত॥ ২০

		K. Alaska			
			7 · .	•	<b>૨</b> 9૭
	' সব ভূমি জান		কাঁদত কক্লণে	় সৰ স্থাগণে	
	পত কথা।		🎒 यूथ उपन	(हर्स ।	
	গতি দূর এই		ধরণী পড়িল	বালক সকল	26
সে মোর ম			বড়ই বেদন	। ८९८म ॥	
	বিরহ-বেদন	२०	ধরিয়া শ্রাম	নীল বসনে	
আনবি রহা	-		ধড়ার আঁচ	न थिते।	,
এবে অগোচর	গোচর না নয়ে			কানাই বলাই	
যাইব মথুর	পুর॥			य्रामिति॥	
জানিবা কখন	বিরহ-বেদন		উঠ উঠ ভাই	স্ব স্থাগণ	
মরমে পশি	न यदि।	৩	কাঁদিয়া নাগ		
<b>प्रभाग प्रभारत</b>	<b>পাছে</b> দরশায়ে		প্ৰবোধ বচন	ক্রিল তখন	
এ উঠে অং	हर्देश मृद्य ॥		বিজ চণ্ডীদা	স গায়॥	
কোন ছলা রসে	সিঞ্চিবে সে শেষে		<i>2</i>		
হাসিবে আ	নহি ছলে।				
মর <b>ম-বেদন</b>	কহিল কারণ	<b>9</b> ¢	<b>6</b> 20		
দীন চণ্ডীদা	म बदल ⊯		■有≦』!		
০। স্বাইতে বলহব	• াইবে বলিভেছ।			ধরিয়া ধরিয়া	
•			রসিক নাগ		
	<b>।</b> २२		উঠ উঠ ৰলি	স্থানে কছে-	
	मि <b>ग</b> ।		ডোমরা আ		
	গদ গদ হৈয়া			नटमत्र नमन	¢
পড়ল ধরণী				চ মেলি।	
	হিয়া ব্যথা দিয়া		ভেয়ের করেতে		
যাবে সবে				দন করি॥	
	সচল সঘন	¢	কেহ লোটে ভূমে		
নিশ্চয় মথু	वा यादव ।			हे मृत्त्र ।	
	° করিয়া সকল			ভাই রহাইবা (?)	
স্বার পরাণ লবে॥		•		। भटत्र ॥	
	স্বল সামাতি		(कह वर्त कारे		
বিদায় করা		>•	এবে সে নি		
AL					
পড়ল অধনী . সব জন হি৷			গোকুল নগরে ় শোকের সা		24

২ •

কান্দিয়া বিকল , বা**লক সকল** শ্ৰীমুখ নিরখে সদা। চণ্ডীদাস বলে পড়িয়া <mark>ভূতলে</mark> সকল হইল বাধা॥

গোপী-বিলাপ।

**4**28

ৰড়ারি।

এত বলি যত বালকমণ্ডল শ্রীমুখ পানেতে চেয়ে। কেহ কান্দে ভাই ভাই বলি পড়ে মুরছিত ইয়ে॥ চল ছল বারি চতুর মুরারি উঠব রথের পরে। হেন বেলে সব গোপিনী ধাওল পাইয়া নিশ্চয় সরে (?)॥ কতি যাবে ছাড়ি অখল রমণী মো সব সঙ্গেতে লহ। কিবা আর সাধ সব হল বাদ এই সে কারণে গেহ। লেহ বাড়াইয়া নিদান করিলে স্ত্রীবধ পাতকী সারা। মধুপুর দেশে বাইবে ছাড়িয়া ১৫ এই সে ভোমার ধারা॥ এত ছিল মনে লেছ কৈলে কেনে व्यवला त्रमणे मत्न। আর কি দেখহ মথুরা গমন দীন চণ্ডীদাস **ভ**ণে ॥ , ২০

. 656

कारमांग ।

রাধা বলে শুন রসিক নাগর" মোর সে কোন বা গতি। তুমি দয়ানিধি সব পরিহরি রাখিয়া চলহ কভি॥ প্রেম বাড়াইলে অমিয়া সিঞ্চনে ৫ করিলে অনেক স্থুখ। কে জানে এমন 'ডোমার ধরম পরিণামে দিলে ছুখ ॥ মোরে লেহ সাথ শুন যতুনাথ সাধ গড়ায়া যাব। এ ছুখে এবে সে ভোমার বিহনে কেমন করিয়ারব॥ শাশুড়ী তাপিনী ননদী পাপিনী তাহা সে সকল জান। এ দেহ সঁপেছি ১৫ তোমার চরণে তাহে নিদারুণ কেন॥ 🕡 ভোমা না দেখিলে ভিলেক না জীব মরিব ভোমার গুণে। এমন পীরিতি নাহি দেখি কতি দীন **চতীদাস ভ**ণে॥ ২০ ১৮। তোমার ৩০৭ মরণ করিয়া, ধ্যান করিয়া যরিব।

**क्रम्**री :

প্রাণনাথ বঁধুর। আদরে।
কোই হা কহিবারে পারে॥
মরিব গরল বিব থেয়ে।
কাজ দাই এ ডমু রাখিয়ে॥

এত বদি ছিল তোর মনে। তবে প্রেম বাঢ়াইলা কেনে॥ একে मति गृह-পরিবাদে। भाक्षे ननहीं देवन वाद्य ॥ ভাহে ভেল ভোমার বিরহে। কতেক সহয়ে তার দেছে॥ রাধা বলি কে আর ডাকিব। শুনি ধ্বনি সে স্থুখ পাইব॥ বিধি বড়ি নিকরুণ ভেলি। মহাত্রখ-সায়রে পসারি॥ নিক্রণ নহ ত মাধাই। শরণ পশিরাছিল রাই। দীন হীন চণ্ডীদাস গায়। काटम्म श्रृंह धत्ररण ना याग्र॥ २२। अनि ..'धनी' कतिरण अर्थ हम ।

क्रम्पा।

প্রাণনাথ, একবার চাহিয়া কহ কথা। সে স্থা পাসর এবে ভু**ঁত মধুপুর** যাবে त्रमणी मत्राम निया वाशा ॥ এমন করিবে তুমি স্বপনে নাহিক জানি उत्त कि कतिथू नव लिहा। তাপেতে তাপিনী যত তাহা না কহিব কত কুৰচনে ভাজা এই দেহা॥ অনেক কহিলে বাণী \* শুন ওছে যতুমণি সকল গোচর রাকা পায়। এবে নিদারুণ কেনে বধিয়া রমণীগণে ১০ কি হুখে মণুরা পুরী বাও॥ वित्रल छू निक्रा चत्र प्रथा छना नित्रखत . শীতল চামরে দিব বা। '

কুস্থম-শয়ন শেযে কিচিত্র-পাল্ম সাজে জাভি জাভি দিব ছটি পা॥ কর্পুর ভাম্বল দিব বাটা ভরি পান নিব पिव जूनि श्रीम्थमश्रत। শ্রম নিবারণ হব এ চুয়া চন্দ্ৰ দিব চরণ পাখালি কুভূহলে॥ এ স্থান সম্পদ ছাড়ি কোথারে যাইবে এড়ি ২০ রহ রহ প্রাণের কানাই। চণ্ডীদাস বলে ভায় क्षन नांश रहतांश আমরা দাঁড়াব কোন ঠাই ॥ 30 >। জাতি জাতি...টিপিয়া। ১৯। পাৰালি ধুইয়া।

बढ़ाबि।

শুন ধনি রাই কহি ভুয়া ঠাই না কর বিষাদপণা। ভোমার হৃদয় আছিয়ে সদ: ভায়া সে আছিয়ে জানা ॥ তুমি রসমই েগারে কিছু কই শুনহ আমার বাণী। পরবশ হয়৷ পুন সে আসিব ধনি ॥ यथन देवर्ठन রথের উপর রসিক নাগর ধারী। দেখায় রসিয়া অঙ্গুলি তুলিয়া বসি এক হেন ঠারি॥ সারণি ভুরিত হেনক সময় **हाला**त्य स्मान तथ । সব গোপীগণ . হট্য়াবিমন ১৫

সবে আগুলিল পগুণ

হু বাছ প্ৰায়ি . নবীন কিশোরী
পড়ল রথের তলে।
বাহ বাহ দেখি রাধারে মারিয়া
সকল গোশিনী বলে॥ ২০
পড়ল রথের . চাকার সন্মুখে
অবলা অখলা রামা।
বধ করি বাহ এ সব গোপিনী
জানিল ভোমার প্রেমা॥
চন্ডীদাস দেখি রাধার হুভাল ২৫
বিরহ-বেদন চিত।
গিয়া শ্যাম পাশে কর জোড় করি
বুঝাইছে কোন রীত॥

**৬২১** বড়ারি।

কেহ কোথা রহে কামুর বিরহে ধূলায়ে ধূসর তমু। গোকুল ছাড়িয়া অনাথ করিয়া কোথারে যাইবে কামু॥ কে আর করিব দয়া মোহ অভি ৫ কারে সে করিব মান। আর না শুনিব শ্রবণ পুরিয়া মধুর বাঁশীর তান॥ रेशरे विनया বরজ-রম্ণী পড়ল কভহি ঠামে। > 0 উচ্চ স্বর করি কাঁদে ব্ৰজনারী করিয়া যাহার নামে॥ কেহ রথ হাতে ধরিয়া রহয়ে क्ट कारत नाहि (मिथ)। त्कर कांत्र शांत्व , ठांश्टित् वमत्व ३० लाहबू ना दंग्यदत्र जीथि॥

धत्रे किट्या प्रथित किट्या प्रथित वत्रक-त्रमणी धनी। নাহি কোন ভাষ**்** নাহিক নিশাস কপালে ছু কর হানি॥ •২• কেহ কার অঙ্গে অঙ্গ পরশিয়া পড়ল ঐছন গতি। কোথায়ে পড়ল আভরণ-ভার তাহা সে না জানে রীতি॥ কেহ বা ষমুনা- কিনারে পড়ল ২৫ যেখানে উঠিল রথ। সেখানে রহল যত গোপনারী আগুলি রহল পথ ॥ কেহ কার মুখে বারি ঢারি দেই চেতনা নাহিক হয়ে। উর্জবাহ্য করি ধূলায়ে পড়িয়া চণ্ডীদাস তঁহি রহে॥

\*\*0

কেছ বলে ভাল মেরা বাব চল
মপুরা নগর পুনু ।

কিবা কুলভয়ে হেন মনে লয়ে
ধরিয়া রাখিব কামু ॥

বাহার লাগিয়া কত পরমাদ ক
হল সে লোকের হাসি ।
কেহ গোপনারী বসনেতে ধরি
কাড়িয়া লইব বাঁলী ॥
প্রেম বাড়াইয়া নিদান করিয়া
মপুরা সালল এবে । >
এত কিবা সহে অবলা পরাণে
কেমন ভাহার ভাবে ॥

কুল-শীল পণা ' খুচাইল এবে .শুন গো মরম-সখি। এবে সে হইল ১৫ বাঁচিতে সংশয় বড় পরমাদ দেখি ॥ কেহ বলে আর রাখিতে নারল এ হেন পরাণ-পতি। এখন কি কর এ দেহ রাখহ শুনহ আমার রীভি॥ ৰমুনার জলে এখুনি মরিব কি কাজে পরাণ রাখ। হয় নয় আস দেখগে রহসি • তিলেক দাঁড়ায়ে দেখ॥ ভাবিতে গুণিতে ২৫ চণ্ডীদাস বলে এখনি মরণ হবে। সবার মরণ দেখ নবঘন তবে সে মথুরা যাবে।

497

कानड़ा ।

এত বলি বিনোদিনী রাই।
ক্লেণে ক্লেণ ধরণী লোটাই॥
জ্যুততন চেতন না হয়।
খ্যাম পানে নয়ন পাপায়॥
ক্লেণে আঁখি মুদি রহে রাই।
ধুন রাই পথ পানে চাই॥
বেন চাঁদ মুখের বয়ান।
ভেল বেন অধিক মেলান॥
হতাশ পাইয়া চন্দ্র-মুখী।
সদা খ্যামরূপখানি দেখি॥
১০
সোনার পুথলি বেন লুটে।

অবনী উপরে বেন উঠে 🛭

বয়ানে নাহিক কিছু ভাব। .
চরণে লোটায়ে চথীদার্গ ॥ ••

৪। থাপায়…হাপিত করে।

৮। (यनोन स्विन।

404

প্টম্প্রবী ৷

হেদে হে রমণ রমণীমোহন বধিয়ে যাইবে তুমি। তবে সে ছাড়িব অক্সের বসন পড়িয়া রহিব আমি॥ কোন গোপী বলে শুনহ নাগর দেখহ বদন চাই। ব্দবনী গড়ায়ে রহেছে পড়িয়া তোমার কিশোরী রাই॥ চাহ রাই পানে कमल-नग्नादन বয়ানে তোষই বোল। একবার চাহ क्त्र (म(ल (लक् ভিলেক হইল ভোর॥ রমণীমোহন इरल (म नग्रन गलरा (अरमत धाता। চাহিয়া দে ভিতে 😘 কটাক ইঙ্গিতে পড়িয়া রহল সারা॥ এক গোপীগণ দেখল ভখন (एडन कत्रा त्रांधा। না হয়ে চেত্ৰ হয়ে অগেয়ান ভমু সে হয়াছে আধা॥ ৰড়ই বেথিত **छ** छीमांत्र सिथ क्राधात प्रभागे प्रभा। বহু দেখি মেনে হেন নবখনে

विषय प्रिचित्र मिना ॥

কাৰড়া। রাই-মুখ হেরি নাগর মুরারি (वानन (नन (भेषा) হেরিয়ে সঘন রাধার বেদন রথের উপরে রয়া॥ ভুরিত করিয়া পুন সে আসিব ইহাতে নাহিক আন। তুমি দেহ বাণী মথুরা যাইতে অথল রমণী প্রাণ ॥ এ বোল বলিতে বরজ-রমণী মরমে বেশ্বল শর। হিয়া ছট্ফট্ পরাণ-পুথলি ভুমু হল জর জর॥ এ বোল শুনিয়া নাগর রসিয়া विक्रम-नशांदन हांग्र। ভূরিত গমন ১৫ রথ ঢালাইয়া অক্র লইয়া যায়॥ দেখল সকল গোপিনীমগুল মথুরা চলিয়া গেল। নয়ানে চাহিতে দেখল বেকত যেনক বাজিল শেল ॥ २० চলে সে ধাইয়া সন্বিত পাইয়া ও বর-রমণী রাই। কান্দি কহে কিছু থাকি গোপী পাছ

908

मीन **ह**खीमांत्र गारे ॥

শুনিয়ে আজীরিণী চিতগত বোল।
মাধব কৰে কেন এত উতরোল।
হাম মাপুর নাহি করব পয়ান।
দৃত্তর বচন বিচল নংহি জান॥

অবহু বিরহ-ছখ দূরে দেহ ভারি। কবহু না বাওব তুয়া গুণ ছোড়ি॥ কত পরবোধই রসময় কান। বৈছে অবলাকুল প্রবোধই মান ॥ नकल नमाधिरत हलल मूत्रांति। চণ্ডীদাস তহি হৃদয়ে বিচারি॥ > नशंथित्य-- त्याहिया । কানড়া। ক্ষেণেক দাঁড়ায়ে রও। চাদ-মুখখানি আগে নিরখিয়ে তবে সে মথুরা যেও॥ চকোর সঘন আমার নয়ন পিতে চাহে ঐ বিধু। লুবধ•ভ্রমর যেমন জীয়য়ে भारेल क्ला मध्॥ . একবার দেখি নট-বেশখানি জুড়াক রাধার হিয়া। তখন এ বেশে **जिक्**ल असुरत >० এবে কেন কর ইয়া॥ मक्न मिक्न এ দেহ সঁপিল ক্ষাতি কুল দিমু তোরে। তোমার কারণে এত পরমাদ गश्चना এ चरत्र भरत् ॥ সকল ছাড়িল • ভোমার কারণে ভাহে নিদারুণ তুমি। কি বলিব পায়ে সকল গোচর

কি আর বলিব আমি॥

মিনতি করিয়া কত।

কামুর চরণে ২০

কহে চণ্ডীদাস

কুলবভী **জনে ঁ** কি হবে উপায় পরাণে না সহে এভ ।।

- २। निव्र**विरयः...व्यागवा** स्वरिश
- । भोत्रायः...भौविष्ठ शांकः।

**৬১৬** সুষ্ই।

হেদে হে পরাণ-বন্ধু, ফিরিয়া না চাহ একবার।
পাসরি সে সব স্থা উলটি না চাহ মূখ
বড় নহে মহিমা তোমার।।
আগু পাছু না গণিয়া সে ধনী করম থেয়া
থ্রেম করে পরের পুরুষে।
পরিণামে পায় ছুখ কখন নাহিক স্থা
আগম পাথারে পড়ে শেষে।।
কহিবার কথা নয় কহিলে কি জানি হয়
হাতে চাঁদ দিল হাসি হাসি।
পড়ে বা না পড়ে মনে বসন লাইল দিনে ১০

পাও বা না পড়ে মনে বসন লইল দিনে ১

• কদম্ব-তরুর তলে বসি ॥

সে সব, করিয়া সত্য ভাহার নাহিক নতা (१)

বড় জনার এ বড় পীরিভি।

হাসি রসে চেম্নে কথা মরমে মরমে ব্যথা

কত বার পাঠাইতে দূভী ॥

এপন করমফলে বিহি নহে অমুকৃলে

সে জন পরের বশ সে কি জানে আন রস কহিতে হিয়ায় হয় বাথা॥

পতিকুলে যে করিল ধাতা

কারে সে করিব রোষ "সকল আমার দোষ ২০ সেই দোষ ফলে এত দিনে।

না চাছ **ক্ষিরিয়া নাথ সকল** ভোমার হাত ছাড় নাথ মধুরা-গমনে ॥

এত বলি বিনোদিনী ধলারে ধ্সর ধনী আভরণ দুরেতে চেলিয়া। विकल व्यक्त-धनी मूट्य ना निः भंदत वानी हरीनाम मूत्रकि टलाहोश।

१। আগম...অগম্য, অগাধ।

২০। মধুরাগমনে নিয়ত হও।

404

যত কণ নয়নে চাও ও রথ দেখিতে পাও
পেখ দেক উড়নি স্কুন্দর।
ভবে সে তৈত্ত আছে সারি সারি গোপীমানে
যবে শুনি গমন উত্তর॥
গগনে উঠয়ে দলি যব রণ চলে ভালি ৫
ঘোড়ার শবদ উভরোল।
যবে না দেখল দেজ পড়ল ধরণীমাঝ
আর দশা আসি ভেল ভোর॥
পড়িয়া সকল জনে ঠাবে করে জমুমানে

প্রিয়া মাপুর দূরদেশে। ১
বিধিয়া রমণীগণ এমন জানিয়ে কোন
সীরিভি ছাড়ল নব লেশে॥
স্বপনে জানিপু যদি সে হেন গুণের নির্ধি
লুকাইশু হৃদয়-মাঝারে।

আসিয়া অক্রুর রায় আয়ল শমন প্রায় ১৫
থাবেশিলা গোকুল নগরে॥
করি লয়ে গেল দূর তার মনোরণ পূব
মথুরা-নাগরা পুণাবান।
কেরিব নয়ান ভরি পাইয়া গোলোক করি

চ ন্টাদাস পড়ি কাঁদে হিয়া স্থির নাছি বাজে রাধা সে পড়িয়া আছে ভূমে॥ । উত্তর একদাবনের উত্তর মধুরায় ।

গোকুল হইল বন সম॥

১৯ ৷ কেরিব...হেরিবে -

4.0

## न्द्रेनात्राष्ट्रव ।

কেহ আউদত্ কেশ নাহি বান্ধে মণুরা পানেতে মন। কেহ অচেডন• পড়িয়া আছেন তেজি আভরণগণ ॥ অঙ্গ লোটাইয়া (कर म धृमारत्र আছুয়ে মূর্চিছত হয়।। কেহ নব-রামা বেমন ওনল वाँनीव शास्त्रिक (ध्या ॥ কোন নবরামা শ্যামরূপ হেরি চলয়ে কদস্বতলে। কোন নবরামা নব অভিসার कत्रद्र मत्नत्र इत्न ॥ এ সব প্রলাপ দেখি ঘন ঘন গেয়ান নাহিক হয়। কেণে অচেডন কেণে সচেত্তন ১৫ (कर्णक खिमशा क्या। কেহ বলে স্থি পুন সে গোকুলে (गाविन्म बाहेन किति। পশিতে কাহার এ কথা ভাবণে উঠ া চেত্তন ধরি॥ স্থপন সমান নাহিক গেয়ান ঐছন প্রলাপ হয়। কান্দিতে কান্দিতে রাধা পাশে গিয়া **हिंगांग किছू क**न्न ॥

৭-৮। বেদ বাশীর পান ওনিয়াছে মনে করিয়া

ক্রত চুলিল।

405

महेमाश्राप्त ।

সোনার পুথলি ু व्यवनी खेशदत যেন খন গড়ি বার। নিখাস হতাশে নাদার মুকুডা হেলিছে তুলিছে বায়॥ তা দেখি গোপিনী মনে অমুমানি ৫ রাধা মেনে আছে জিয়া। হেন মনে ছিল 'রাধা কি বাঁচিব এহেন বিরহ পেয়া॥ উঠ উঠ ধনি त्रांश विटनामिनि এত অগেয়ান কেনে। থে দেখি তোমার চরিত বেভার পরাণ হারাবে মেনে॥ মর্ম্মসখী ছিল এড বলি এক ধরিয়া তুলিল রাধা। **गूर्थ ज**न मिश्रा ধরিল তুলিয়া ১৫ দেখল সকল বাধা॥ टोमिक त्मशांन नग्नत्य खानि সকল আন্ধার হেন। ঘরের প্রদীপ বেনক নিভারে व्यक्तकात्र रूटत्र (यन ॥ গোকুল উজর আছিল তখন এখন কানন ভেল। চণ্ডীদাস কৰে অক্র সাছিল কানু হরে নিয়ে গেল। >>। (वणात्र.ं.व)वहात्र<sup>®</sup>।

> ५६० सामे :

গোৰুল ডেকল নাকি কান্। মাধুর করল পয়ান॥ े अ मिश्र कानम निषान । नवं करन रहन भन्नान ॥ যৰ সাসি পশিল অঞ্জ । ¢ তবহি পড়ল মডি দুর 🕽 ভাকর ভাশ গ্রীয়াসে। त्न कन देश देनब्राट्य ॥ (का अड क्यून विविति। সে হউ ইং পাতকিনী॥ ١. कर कर करत कारि। का करह मनम हामानि॥ কুঞ্চ নিকুঞ্চ ডেল শৃক্ত। गृह दिन हहेल खत्रगा॥ भूववानी नग्रत्न ना एमि। 20 বারি সহন দো আঁথি। हेर वड़ प्रथम (जन। প্ৰাণ ভাহা সঙ্গে চলি গেল ॥ চণ্ডীদাস পড়িয়া বেধিত। क्रिंगक देशतक भित्र किछ।। २०

ँ। সুৰু জনে ..সুৰু জনের। १। বাহার জাশা প্রভ্যাশ। করি।

विवित्ति...विद्र।

>>। वाति...वौर्य कतिन ।

२१ । नवश्न...वर्थ, कडे ।

**७**८५ **७३३** ।

পেনুগণ সৰ করি হান্দা রব

মণুবা মুখেতে ধার।

পেনুব বাছুরি বিরোগ পাইরা

সেহ তুথ নাহি খার॥

পুন্হ উচ্চ করি মারে পরিহরি

मधूना भगन मिर्ग।

যথা সে রসিক দাগরশেখর সে দিক গমন ভাগে॥

খগ মৃগগণ রোদন বেদন
আহার নাহিক খায় । ১
ডালে বসি খগ খাম খাম করি
রাভি দিন নাম লয় ॥

মূগগণ অভি 'চেয়ে আছে কভি নয়নে বহুয়ে লোর।

কুকের বিরহে পেয়ে অভি মোহে ১৫ এ সব হইলা ভোর॥ সেই পিকুরবে এ পঞ্চ শ্বদে

সেই পিকুরবে এ পঞ্চ শ্বদে শুনিতে আনন্দ বড়ি। সে সব শ্বদ নাছিক আপদ

সে বাৰণ নাছিক আপদ সে ভাল চলল ছাড়ি॥ ২ অমর অমরী সদাই গুঞ্জরি

সে নাহি শবদ করে।

চকোর ডাক্তকী চাতক চাতকী

তাহা না শবদ বলে।

হংস হংসিনী শুক শারী গণি ২৫ ভাহা না শবদ একে।

নিশবদ হই নিরন্তর রোই না জানি কোথার থাকে॥ পুরবাসী যত অধার নয়ন

যুবা বৃদ্ধ বাল যত। ৩০ শোকেতে আকুল বিয়োগ সকল ভাহা বা কহিব কত।।

চণ্ডীদাস-বাণী শুন বিনোদিনি .
থৈরজ করহ মন।
হেন্দ্রবাসি চিতে দেখহ বেক্তে ৩৫

মিলব সে রস-ধন॥

90

**५**8२ **अ**} ।

মিলি রাধা পাশে সব স্থী আসি ব্যুতক বিরহ পেয়ে। রামা নবরামা সম্বোধ পাইয়া रेवर्ठन किल्मात्री नरत्र ॥ রাধারে তৃষিয়া সম্বোধ করিয়া বৈঠল সখীর মেলা। কেহ বলে শুন আমার বচন ওহে বৃষদ্ধানু-বালা॥ হেন মনে বাসি হকু কুলে হাসি চল মধুপুর গিয়া। ८म ठाँप-वपन দেখিয়ে নয়নে তবে সে জুড়াবে হিরা॥ এক ভিল যারে যদি নাহি দেখি শভ যুগ হেন মানি। আঁথির পলকে शत्रोहे डिल्लारक ১৫ হেনক যে জন জানি॥ তিলেক না জীয়ে वकु ना (मिथरग्र আর কি পরাণ রয়। রাধার বিরছ বচন শুনিয়া मीन हछौनांत्र क्या॥ २०

680

गड़ा ।

কেন বা লইয়া আইলা মোরে।
দেখি নবঘন যুবঙী-মোছন
নয়ন চকোর সোল(?) মরে॥
নয়নে নয়নে ভরি রূপ পিতে মনে করি
হেন বেলে চালাইল রথ। ৫
দেখিতে না পায় রূপ উঠিল বিরহ কূপ
এই সে হইল অনুর্ধ ৪

সে জন কঠিন বড় এবে সে জানল দঢ় বড়ই কঠিন ভার হিয়া। মপুরা নগর মুখে লইরা চলল স্থা ১০ त्रमधित विद्यांत्र विद्या वाथा॥ ধন্ত ভার মাভা পিডা কি আর কহিব কথা चक्रृत्र विद्या श्रेन नाम। প্রথম আঁখর সার দেখাইলে অস্ককাল শেষের জাঁখর সেক ধাম ॥ (?) কে বলে জ্বজুৰ সেহ বড়ই কঠিন দেহ গৃহ ভাঙ্গাইয়া সেই জনা। মথুরা নাগরীগণে (म मव रत्रव मत पिन स्माद्य वित्रह-**दब्हना** ॥ এ সব কারণ স্বরে বিষম নিশাস ছাড়ে ২০ কাঁদে যত আহীর-রমণী। চণ্ডীদাস কহে ভাল আমরা ভুরিতে চল (मिथ गिया भारतात्कत मणि॥

488

নটৰাবাৰণ :

শ্যাম-মুখ ছেরি আকাশের বিধু মলিন হইরাছিল। হয়ে উদয় হউক এখন পূৰ্ণ কলা এখন সে চাঁদ গেল॥ কাসুর সে হুটি নয়ান হেরিয়া খঞ্চন আছিল কভি। এখন স্বাসিয়া ফিক্তক নাচিয়া মাপুর পরাণপতি। পিয়ার নাসার গঠন দেখিয়া थरमञ्ज भिक्ति प्रव এখন আনন্দে পরম সামন্দে দেখা দেও অমুকৃল।

কাশুর অধর স্থরক দেখিয়া আর না হেরিব 🕠 সে চাঁদু-বদন वांकृणि मिनन हिल। দান চণ্ডাদাস ভণে 🖟 আপনার রঙ্গ করুক ফুন্দর ১৫ এবে শুভদুর্শা ভেন॥ দশন হেরিয়া কুন্দ সে কুস্থম कलिका नाहिक रुखा। कान्छ। বিকশিত দশা লক্ষিত হইয়া েরাদন গুমান সুব পরিহরি षीन **ठ**शीषांत्र करत्र॥ ₹ 0 নিজ নিজ গৃহে চলে। 8। (न हाँन... में कुकाहता বিরহ-বেদনী যভেক গোপিনী ৮। প্রাণপতি মধুরা গিয়াছেন। রাধারে কিছুই বলে। ১৩। ज्यक...ज्यत वर्ग। বিরহ-সমূদ্রে নাছিতে আমরা বিহি সে করল কাজ। 😘 রু পরিজন করিবে তাড়ন পাইৰ অনেক লাজ ॥ খামের জলদ রূপ হেরি হেরি ভবে বিধি যদি **অসুকুল হ**য়ে জলদ গগনে যত। মিলব রসের পিয়া। नाटक नुकारेया त्रहल मकन এখন চেডন ধরহ যভন রহল শত হি শত।। এ বুকে পাষাণ দিয়া॥ বিকশিত হ'ট এখন আনন্দে এই অমুমান করে গোপীগণ আর কি ভাহার ভয়ে। निक निक शुरू हरता। দেখিয়া তথন বাহুর গঠন वित्रम-वत्री (म ठाँप-वपनी ১৫ করি গেল অভিশংয়।। मधीरत किছू हे वरत ॥ করুক সঘনে এবে যত জনে পাসরিতে নারি খাম রূপখানি আপন আপন কেলি। मनारे शियारय सार्ग। হয়ে নিকরণ হরি নিদারুণ कत्रारा (यमन হিয়া আনচান মোহে निम्नां क्रम जिला। কহিব কাহার আগে॥ আর না হেরিব আর না শুনিব •७न द्रममहे • চণ্ডীদাস কর (म नव मधुत ध्वनि। আমি সে মধুরা বাব। না জানি স্থপনে ভেজিৰ সে জনে ১৫ সৰ বিবরণ শ্রাম ক্রেবণ মোরা কি এমন কানি।। ভোমারে আসিয়া কব 🖖 षाकृत करत (शाकृत नकत ভেজন গোপিনীগণে i

কৃষ্ণ-বলরামের স্থুরাগমন। श्रीयश् । কৃষ্ণ বলরাম রণ আরোহণ চলয়ে অক্র সাথে। শিঙ্গা বাঁশী রবে পাষাণ জ্বয়ে এই রঙ্গে পথে॥ নানা হ্বাসিত বিচিত্ৰ মোদক ৫ भिक्षांत्र भाकति हिनि। ছেনা চাঁপা কলা ছাঁচি সীতামিশ্রী হ্ৰথ্য আবৰ্ত্তন ঘনি॥ স্নান আচরিল ভাই হুই জনে সেই সে যমুনা-নীরে। এ সব ভোজন করি হুই জন উঠিল রথের পরে॥ কপ্র তামূল বদনে দেওল বেশ বনাওল ভায়। বেশ করে অভি এই ছুই মূরতি ১৫ করল অক্রুর রায়॥ ভাহাকে অধিক বেশ বনাওলি **४त्रेगी शूलक मा**नि । গগন হইভে দেবগণ মোহে পা হালের যত ফণী ॥ তিন লোক দেখি পুলক মানিল মোহিত অক্রেরায়।

অভি পুলকিভে

শুনহ এথাই ২৫ '

কাঁদিতে কাঁদিতে

কহে তুই ভাই

ধরিয়া পড়ল পায়।।

করহ সিনান সেবা।

পুজহ আপন দেবা 🗓

স্নান আচ্রিয়া যাইৰ চলিয়া

শুনিয়া অত্তৰু বচন মধুর প্রভুর ভারতি পেরা। . ৩. নামি কুতৃহলে' যমুনার জলে নামি হরষিত হয়া॥ অক্র ডুবিলা জলের ভিভরে त्रान कृष्ण घृष्टे (मिथि। বড় **অদভূত** ব্দলের ভিতর ৩৫ लिथल (कमन लिथ ॥ বিশ্মিত মানল " আপন অন্তরে উঠन मखक जूनि। যমুনার কুলে রথের উপরে দেখে রাম বনমালী। পুনরপি ডুবি জলের ভিতরে তথা দেখি ছটি ভাই। বিশ্মিত হইয়া তুরিতে উঠিয়া চরণে পড়ল যাই। তুমি'দেব হরি **रे**दि तम कानल 80 মুই কি জানব ভোমা। চণ্ডীদাস বলে ষৰ অবভেলে বরিখে কতই প্রেমা॥ श्रीयहा । পড়িয়ে চরণে অক্র সঘনে

করয়ে অনেক স্বাভি।

তুমি হিতকারী , তুমি সে প্রলয়

তুমি সে সবার গভি॥

তুমি চরাচর তুমি দিবাকর ৫

আকাশমণ্ডল ছায়া।

তুমি সনাতন পরম কারণ

তুমি পূর্ণ পূর্ণ কারা॥

	v . *		• .	
	•	<b>है औ</b> षा	ન · ં	
ত্রকা মহেশ্বর	'বে জন না পায়ে		বিধি দিয়াছেন	. যুগল নয়ন ২৫
.ভোমার গু	ণের রীতি।	>•	ইহাতে এ	দ্বিৰ কত।
<b>हं छी मान</b> वटन	আমি কি জানিব		<b>उदा रम रमिथ्</b>	ন্যান ভরিয়া
অতি হই য	্ঢ়মতি ॥			য়ান হত॥
-			আপনা আপনি	ম্পুরা-নাগরী
_			<b>অভি</b> মান	করে <b>অ</b> তি। ৩ <b>.</b> .
	85			কলার অংশ
	<b>4</b>			পের কতি॥
	অক্র গোহারি			Citizen Spirites
করল নিজ কালিকন দিয়া	াহ কোড়। শ্রী <b>অঙ্গ</b> স্পর্শিয়া			
আলসন দিয়া <b>হ্বপের</b> নাহি				<b>60</b>
	ংক ওর॥ প্রেমের <b>অবশে</b>			হয়।
্ৰাপন শৰ্মণ উঠল <b>অ</b> ক্ৰু	ভোগের অবলে	ď		ষভ রয়া যূথে
ভাগ করা করে। ভালিক করে।	্ম সাম। যে কিছু আছিল			রিছে রয়া এক ভিতে।
পাওল আ	- <del>-</del>		যতেক সধী তারা রূপ নির্বধিয়ে	
	<sup>তেন ভার</sup> ।। মথুরার মুখে		न्ना । नन्नाच्छ	প্রেম ঝলকে
	भारा ।	١.		রসের ভারা চিতে ॥ ৫
	''"। প্রবেশিল গিয়ে	, ,	শ্রামল বরণ	ভমু সে রতন
ুন্ত গণ রুগের আন			<b>कर्न्र</b> (यन इँह	রূপে খালো করে
শিকা মুরলীর				যেমন মদন ভামু।
মথুরা নগর		,	ছু ক্রপে আলা	কিবা বরণ কালা
	বাহির হইয়া	26	বরজ পথটি	আলা করে ১০
<b>দেখয়ে গো</b>			_	কিবারসের তমু॥
	- নয়ন পদারি		যত নাগরী জনে	চেয়ে কামুর পানে
ে দেখে রাম :			मरनत्र भरन	স্থধা পিয়ে
এত ক্ষণে কেহ	• নাহিক পালটে			পেয়ে রসের কাসু।
নিমিখ নাহি	क धटत ॥	२०	<b>ठ औमारम</b> क्य	<b>८६२ मत्न लग्न</b> ् ५०
শাহা মরি মরি	কি রূপমাধুরী	•		মনে করে
লখিতে নাৰি			1	প্রেদের সিফু
ছেন মনে করি				
অঙ্গে অঙ্গে	यमि भएत्र॥			

રક્ષ્મહ			চণ্ডীদাস			
	, 403	•		সব ছাড়িয়া	ব্ৰ <b>তে</b> র নারী	¢
	র <b>ালবিজ</b> য়।				ठेकून।	
٠.	এমন রূপের ছট	11		বিনোদ নাগর	রদের সাগর	•
	र्वनरभाइन			মজাল্ছে গে		
	<b>বেমনু মে</b> ছের ছ ন-ফুলে	াটা ॥		হেন আমরা		
ব	ন-ফুলে	[চূড়া বাঁধে		পরিহরি লা	<b>ज</b> ।	١٠
	কিবা ছলে নাট			হেমের মালা		
	দানার থোপে			রাখি হিয়ার		
	বেন মুকুতার হ			আর যুবতী		
म	ণি মাণিকে	গাঁথা মালা		কহিলে ভাল	(सरम् ।	
	ভায় দিয়াছে বে	ড়া।		চক্ষে ভরা	এই য়ে নাগর	20
	য়ুর-পাখা		> .	রাখিব মনের	<b>ज</b> टन ॥	
	কিন্দ্রণ-মাখা চূড়			আর রমণী	কহে ভাল	
	কান যুবঙী			কহিলি ও বে	नामिपि।	
	সেই সে আপন			वित्रल (भारत	কহিব ভালে	
হ	াসির ঠাটে	व्यग		় কাল স্বাসে	গোকুল দি (?)॥	२०
	মধু ঝরে ঘনে॥			এমন করে	থাকি স্ব্বন	
গ	লায় মালা	় ভুবন মালা		ছাড়ি গৃহের	কাজ।	
	হাতে মোহন বাঁ			হিয়ার ভিতর	রাখি সদাই	
ম	मन (मिर्च			এই সে নাগ	ররাজ॥	
	मायादा कलम	পশি॥	•	চ <b>ণ্ডীদা</b> স	কহিছে শুন	ર¢
C	প্রম নাগরীর	কথা শুনে	२०	এই সে ভাল	रे गानि।	
	কহে চণ্ডীদাস।			প্রেমে ভোমরা	বান্ধ তারে	
9	রূপ দেখি	কোন্ যুৰতী		স্থা রসের খ	वि ॥	
	চলে যাবে ৰাস			-		
	-				•	
٠.	. 418					
•	् शक्यिक			नहेनात्रा		
Œ	ামন বেশে	•		মধুরা নাগরী		
_	নিয়ে তাসি ভবে 	• •		লাগল রসের		
র	লের ঠাটে			কি জানি কি করে		
	नषारे कपमञ्दर	T 11		ছাড়িয়া আপ	ন গেহা 🛭	

কোন কুলৰজী সে,কোন যুব্জী ্ ঐছন দেখিয়া থাকি। कूल नरत योग्न घरत ॥ . নহি শ্বভস্তর হাসির মিশানে কত স্থ্যা করে 🗀 পরবশ হয়া থাকিয়ে এ বাঁধা পাখী। তাহাতে বাঁশীর গীত। গৃহপতি মোর বড় খরতর হাসিতে কি জীয়ে স্থর রমণী কথায়ে যাতনা দেই। চেতন ধরিৰ চিত॥ মনের মরম আপন বেদন এই অসুমান মধুরা নাগরী ২০ শুন গো মরম-সই॥ মোহিত হইল ভায়। . অতি সে মগন বত সধীগণ চণ্ডীদাস বলে শুনহ ভরুণি দেখিয়ে দোঁহার রূপ। ভজহ কমল-পায়॥ नरत्री छेठन ১৫ অভি সে.রসের উঠল রসের কুপ॥ কৃষ্ণ বলরাম দেখিয়া তুজন ধরিতে না পারে হিয়া। कानफ़ा। চণ্ডীদাস কৰে ও রূপ দেখিতে রূপ দেখি যত মণুরা-নাগরী কুল শীল যাবে দিয়া॥ २० মোহিত হইল ভারা। তাথে প্রেমরসে কুলের কামিনী চৈত্ত নাহিক কারা॥ यहरै। **क्टिंग अल्ला किंद्रमान केंद्र** केंद्र হেদে লো মরম-সই। কত হ্রখা দিয়া রাশি। ও রূপ দেখিতে হেন লয় চিতে গড়ল হরবে এমনি পরশে ৰয়ান তাকিয়া রই॥ এমভি গতিকে বাসি॥ এ বেশে সে দেশে ভেঁই সে ভুলল ধশ্য সে রসিয়া এমন কালিয়া যতেক বরজ-নারী। নিরমাণ কৈল দেহা। সব ভেয়াগিয়া গুরু গরবিভ করি একমন গঠন স্থঠন দেখয়ে नयन ভরি॥ নয়ন খঞ্চন রেছা॥ কিবা সে বিনোদ \* চূড়ার টালনি উ্ঘ রাভাপল চৌরস কপাল উড়িছে ময়ুর-পাখা। **मन्य क्रम्बर क**िं। নাৰা ফুৰদাম অভি অনুপাম ১০ प्रिशा ७ निया क्ला अत्र ३० रेख्यश्य मिट्ड मिथा॥ উড़िয়া বুলিছে व्यलि॥ নয়ন বন্ধিমে চাহিলে যা পানে বাহু সে মুণাল অভি সে বিশাল

त्म किरत्र देशब्ब भरत ।

করীর বদন করে যেই জন

নিভস্থ ক্ষীণ হি দক্ষ॥ ২০

যেন বা হিঙ্গুল দলিয়া অঞ্চন

যাৰক মিশায়ে ভায়।

এমন না শুনি চন্তীদাস গায়॥

464

শীস্থা।

রূপ দেখি হিয়া কেমন করে। না দেখিয়া ছিফু ভাল দেখি পরমাদ ভেল (कन वा लहेग्रा आहेल (माद्रा ॥ হুদয়ে পশিল আসি এ হেন রূপের রাশি অবলার পরাণ তরল। পাছে আছে এক দোষ জানি কবে অনিরোষ গুরু জন জানি করে বল। শুনহ মরম-প্রিয়া এ হেন রসিক লয়া कतिथु तरमत नव रणश। আর কিবা প্রয়োজন ১০ অসুল্য রতন ধন গুরু জন পরিজন গেহা। কোন সধী বলে শুন এত অভিমান কেন (य कक़ (न कक़ शुक्र बात । শ্যাম সে পরশমণি যভনে ভজিব ধনী মোর মনে এই সে ভালই। এই মত সে নাগরী হাসিয়া আনন্দ বড়ি

চণ্ডীদাস তছু গুণ গাই॥

বডারি। রথ চড়ি যান ্করত্রে গমন-কৃষ্ণ হলধর চুই। বাজার চাতর প্রবেশে নগর শিঙ্গা বেণু উত্তরোই॥ कृत्का मालिनी । হেনক. সময় রাজপথে চলি যায়। শুন লো স্থন্দরি 💎 চন্দন কটোরি হরে মন হরে তায়॥ গাঁথিয়া স্থ্যম তুগদ্ধি কুত্বম লইছ কাহার তরে। কুবুজা কছেন দোঁহার সদন কাতর হইয়া বলে। আমি সে মালিনী কংসের যোগানি লই যাই কংস ভরে। এই গন্ধমালা দেহ মোর গলে ১৫ সরসে কানাই বলে॥ করল চাতুরী শুনিয়া স্থন্দরী নুপতি যে কবে মোরে। নিজক গন্ধক निष्ट्रन कुम्बत्री मिट्टन **(मैं**। हात्र छेटत्र ॥ জানিল এ নছে মানুষ আকার এ ছুই দেবের শক্তি। পরশ হইয়া কুবুজা হুন্দরী পাওল আনন্দ মূর্ত্তি॥ বিলক্ষণ রামা 'যেন কাঁচা সোনা ২৫ उर्वनी किएन वा लिथि। গোবিন্দ পরশে তাহে মন তোবে চণ্ডীদাস তাহে স্থী॥ ৪। উভরোই...উজন্বরে বাশিতেছে। **३৮। त्राका (र जागारक छित्रकात कतिरायन)** .

464

. 🦣 1

কুবুজা হৃদ্দরী অতি মনোহারী দেখিল আপন অঙ্গ। ত্ৰিভঙ্গ আছিল মোহিনী হইল এ বড়ি রসের রঙ্গ ॥ মোহিত হইল নগর সকল এ কি অদস্ত শুনি। जिष्क र हिल स्मारी इहेल এমন নাহিক জানি॥ কুবুজা দেখিতে নগর হইতে দেখিতে আইল ভারা। निम्हय अनिम नग्र**टन ए**मिन এই সে কেমন ধারা॥ কেহ বলে ভাই রথে হুই ভাই माथल हन्मन हान्म। মালা বিলক্ষণ দেখিল সঘন ১৫ তু ভাই হাসল মন্দ॥ হেনক সময় ই ইহার পরশে কুজ গেল কতি দূরে। অতি বিলক্ষণ দেখিল নয়ন এ কথা কহিব কারে॥ ২০ এ নহে মামুব জানিল স্বরূপ কেবল জগৎপতি। ব্রিভঙ্গ শরীর হইল সুন্দর বু**ৰল কাল্কের** গতি ॥ চণ্ডীদাস বলে যাহার নামেতে ২৫ এ তিন ভুবন ছোৰে। এই ভাগ্যবভী পেয়ে প্রাণপতি शांहेन वांहात्र न्भार्म ॥

কুবুজা কছেন চরণে পড়িয়া . তুমি সে পরাণ-পতি। মুই কি জানিব · ভোমার শক্তি **অৰ**লা যুবতী মতি ॥ কৰেন গোবিন্দ কুবুজা পরশি ৫ তুমি সে উত্তম রামা। তোমার ভক্তি স্বভাব শক্তি দেখিল কটাক্ষ প্রেমা॥ পড়িয়া ভূতলে কান্দি কিছু বলে মোর অপরাধ ক্ষেত্র। মুই মৃঢ় জাতি করিল যুবতী **जित्म कछ दहे ज़्म**॥ তুমি সনাতন পরম কারণ দেবের দেবতা তুমি। কেনে হই মুই অধম দুৰ্গভি ১৫ কিসে বা আমারে গণি॥ চণ্ডীদাস বলে ভেকতি নিবিড়ু অন্তরে লেহা। পরশ পাইয়া ভথির কারণে

রজকের বস্ত্র-ছরণ।

विनक्षण इन (प्रश्रा

**66**0

ধাননী।

কেনক সময় এক সে রক্ষক শুলাইয়া বসন করে। সে বায়ে চলিয়া রাক্ষপথ দিয়া কংসের কারুতি ধরে॥

পুছিল কারণ ৫ কুষ্ণ বলন্তাম কাহার বসন এ। কহিছে রব্ধক ভাহার উত্তর তুমি সে বটহ কে 🕈 ॥ তোমাকে কহিলে 🕟 কিবা জানি হয়ে কংসের যোগানী আমি। ভাহার বসন কাচিয়া সঘন কি আর পুছহ তুমি॥ কানাই কহেন উত্তম বসন দেহ পরি হুই ভাই। কোপে কছে ধোৰ। তুমি বট কেবা ১৫ রাজার বসন এই॥ পরমাদ হব ' এ কথা শুনিয়া ভাড়ন করিব রাজা। চণ্ডীদাস বলে ও নব নাগর তাহার রূপের ধ্বজা॥ २ ०

> **৬৬১** যতি :

এ কথা শুনিয়া কুষ্ণ বলরাম
লইল বসন কাড়ি।
পরিলা বসন ভাই ছই জন
ভাহে মলবেশ ধরি॥
কাড়িয়া বসন মৃত্তিকা ভূষণ ৫
রাঙ্গা ধূলা মাখি গায়।
নিবিড বসন বান্ধিল সঘন
শীত ধড়া দিল ভায়॥
নবীন মুঞ্জনী পরি ছটি ভাই
সমান দোঁহার বেশ। ১০
দেখিয়া মূরতি জাকুপম বেশ

শুনে কংস রাজা কৃষ্ণ বলরাম আসি ধরে মল্লবেশ। . রজক বধিয়া বসন কাড়িয়া' ১৫ नहेल (म श्रवीत्वन ॥ ক্রোধে কংস রায় ধরণ না যায় ডাকিল কুবল হাডী। শুণ্ডে জড়াইরা মার ছই জনে এই সে বাড়িয়ে রীভি॥ চণ্ডীদাস দেখি 'হাসিতে লাগিল শুনিরা কংসের কথা। যে জন গো**লোক** সম্পদ ভা সনে কিবা হঠ কর হেখা॥

> **२०**२ ११३ ।

কুৰল্লয় হাতী ধার বেগে অতি মারিতে এ হুই ভাই। গরজি গরজি দশন ফিরজি ছু ভাই চিরিতে বায়॥ লটাপটি শুণ্ডে বেন বাহদণ্ডে ৫ প্রচণ্ড প্রতাপন্তরে। গিয়া সে কামুর ধরল তু বাছ **অভি সে নিবিড় সরে ।** ধরি করিশুগু মু ভাই প্রচণ্ড উপারি দশন ছই। **্ শ**ভি **অনু**শয় কুবলয় পায় দশন এ চুই লই॥ দেখিল পড়ল কুবলয়-বল কংসের হইল ভয়। দ্বির নাহি মালে ভাই ছুই জনে ১৫

करत्राष्ठ प्रभन नम् ॥

হেনক সময়ে চাণুর মৃষ্টিক · जिया वानिन कः म। তোমরা হুবনে বল পরিক্রমে कृष्ठ वलत्रारम ध्वःम ॥ २० চাণুর মুষ্টিক আসি দেখা দিল कृषः वनत्राम शाए। वाकिन वहन (वाना हाति धन (१) करहन এ छ्छीमारम ॥

>>। च्यूनंत्र--वाशी। ১২। 🖲 রুফ বলরাম তাহার ছুইটি দাত ভালিয়া हेलन ।

यहरे । ঢাণুর মৃষ্টিক তুই জন জাসি . শিলল দোঁহার পাশে। হাতাহাতি তথি মুটকা মুঠকি মহা ঘোর খেলা আসে॥ মহা মল্লযুদ্ধ **ৰাজিল চুজনে** ৫ দেখিল যতেক পুর। ধরিয়া চাণূর মুষ্টিক অস্তর ভার মাধা কৈল চুর॥ বধিয়া অফ্র প্রচণ্ড প্রচুর গেলা বথা কংস রায়। বোর অতিভর • কৃষ্ণ হলধর বাঞ্চিল ছুন্ধনে তায়॥ কৃষ্ণ হাতে ভালি ধরি তার চুলি 🍐 क्रान्द्र विधन हित्र। উগ্রসেন ব্যানি ১৫ ছত্ৰ দণ্ড দিয়া

. **স্প্**রিতি রাজা করি'॥

বস্থদেৰ পিভা ় দৈৰ্কী দে মাভা উদ্ধার করিলা হরি। \* \* গৃহমাঝে গিয়া মাভা পিতা লয়া ২০

**অনেক করিলা স্তু**তি। চণ্ডীদাস বলে বহুদেব কোলে লইলা গোলোকপতি॥

रिषवकी वद्यस्तरवत्र करूपा।

थर्हे ।

এত দিন ছিলে কোথা। ছাড়িয়া জননী বাছা যাতুমণি হিয়ায়ে মারিয়ে ব্যথা॥ ও মোর বাছনি চাঁদ-মুণখানি দেখিয়ে নয়ান ভরি। তুষ্ট কংস লাগি ভোমা হেন পুজে ভেজন গোকুল পুরী॥ শোকেতে অকুল এই দেখ ওম্ব সারা। যেন আঁখে আসি ২ তারা ছটি বসি ১০ দেখিল উজোর পারা॥ পরাণ-প্রদীপ কেবল লোচন এত দিন ছিলে কোথা। कारल यहमान व की ह नवमी वन्ता (मधन (ठामा । . . ) ১৫ बस्तानबन्द्र नोला सम्पूर्व ' অপার মহিমা যার।

কুলের আখ্যান

ক্ষিতে আছুয়ে তার॥

বিজ্ঞকুল যত

क हुड़ा क्वन . . विविध विधान २० আয়োজন করে শতি। শুন হলধর ভাই। . 5 छीमांत्र कटर नत्मन विमाय কেমন করিয়া নদের বিদায় আগে দে করহ ইভি॥ ৰুহিব কহ ত ভাই॥ নন্দ-বিদায়। এ কথা শুনিয়া মোহিত হইয়া 'রোদন যশোদা-হুত। 1 仲安季 হলধর পাশে নিখাস এড়ই এ কথা পরোকে যথন শুনল তরল করল চিত ॥" শ্রবণে পশিল আসি। নন্দ হেন পিতা কি কহিব কথা পাইল বেদন गरमञ्ज नमन যার স্নেহে নাহি সীমা। শ্ৰীবুকে ঠেকিল বাঁশী॥ বহু স্থুখ অতি কি তার পীরিতি ১০ **हांप-मूच मही-**তলে নির্থিয়া ৫ যশোমতী অভি সমা॥ ভাবিতে লাগিল মনে। যশোদার ক্লেহ কি করিব এছ কেমনে কহিব नत्मत्र विषाग्र এ দেহ পূরিত **স্থাং**। **চাহি হলধর পানে**॥ এ জন विषाय क्यान क्या ভানেক করিল বিলাস বৈভব ঁনালয় আমার মুখে॥ , ১৫ ধক্য দে যশোদা মাই। छन मारमामन কহে হলধর যার এক কলা গুছের কথন এই সে উপায় মানি। পুঞ্জিয়া পাইতে নাই॥ গমন করিব প•চাতে গোকুল কত কত আছে এ মহীসগুলে আগেতে চলহ তুমি। আছে অনেকের মাতা। এ কথা রচিল ক্ষ হলধর ২০ এমন না শুনি ના હામિ ના જાવિ ১૯ আগেতে হু ভাই গিয়া। তাহে নন্দ ঘোষ পিতা॥ দণ্ডাই তুজনে নন্দ মুখ পানে এ হেন ঘোষেরে বিদায় করিতে গদ গদ ছেয়া হিয়া॥ মোর মনে নাহি লয়। বিমুখ হইয়া বছে আনপানে বিদায় করিতে যুবে মনে করি গোকুল-ঈশর হরি। ২**৫** . পরাণ নাহিক রয়॥ ২০ চণ্ডীদাস বলে মোহিত হইয়া

আন সে কহিতে নারি॥

১৮-১৯। सन्दर्क जायता अहे कथा वनिव,---

"তুৰি আগে চল, আৰয়া পৰে বাইব।"

চণ্ডীদাস কছে : অতি বড় মোছে

নন্দের নন্দন পাইয়া বেদন

বড় পরমান দেখি॥

লারে ছল ছল আঁথি। •

कृत्य गिष् वाय कात्मु नम्म वाय সন্বিত নাহিক চিতে। ক্তে বলরাম এক নিবেদন क्रीिं क्या गंन বেমন পাটল रान नन्म (घोष ब्रोग्र। **पिक पिभा नाहि তাথে**॥ কত দিন মোরা রহিলা কহিলা শুন হলধর দেব দামোদর এ বস্তু দৈৰকী মায় ॥ তুমি গোলোকের পতি। এ কথা শুনিতে বলরাম-মুখে ৫ মানুষ গেয়ান করেছিল মন ১০ নন্দের বেদনা অতি। এবে সে জানল রীতি॥ বেন আচম্বিতে • গাসি হিয়াচ্ছেদে পরোকে শুনেছি यथन अन्तिल মরমে বাজিল ভথি॥ (দবকী-জঠন হতে। নহে নিবারণ নিঠুর বচন চতুভুজ হয়া ক্ষোভ দেখাইয়া ত্রবণে শুনল যবে। वृक्षिए जननी চिए ॥ ব্যথাটি পাইয়া মৃচিছ ত হইয়া পুন মায়া ধরি বিভুজ পদারি ধরণী পড়ল তবে ॥ রাখিল গোকুলপুরে। এই সে ভোমার মনেতে আছিল রাখি কুতৃহলে যশোদার কোলে রহিতে মথুরাপুরে। **बञ्चरमव हरन পুরে**॥ রাখিয়া এখানে হিয়ার পুথলি ১৫ স্থার হাতাশে ২০ পুত্রস্থেহবশে • কেমনে যাইব ঘরে॥ লালন পালন করে। কিবালয়া আমু কিবালয়া যাব চণ্ডীদাস বলে অপার মহিমা কিবা গে বলিব লোকে। কে ইহা বুঝিতে পারে॥ যশোদা রোহিণী গোপের রমণী কি ভারা বলিব মোকে॥ চণ্ডীদাস বলে শুন নন্দ রায় 663 কি আর দেখহ ভূমি। नड़ाजि। ' করহ সাজন যখন এ ভর ভরজান করে শকট আটন ভাল মতে জানি আমি॥ জানল জগৎপতি। অন গুণ আনি গুণে পরাইতে এ গুণ বিখাতে রীতি॥ এক দশ গুণ CONTE ! (यथारन भवन श्वान। নন্দের করুণ শুনি। সেখানে উঠিল , স্বাখ্যান খকতি পাষাণ গলিত দেখই বেকত

· क्राय (१) क्राव धनों॥

न**रञ्जत भर**न्द्र व्हान ॥

পুন মান রাগ . এ তিন প্রকার চারি চারি করে শুণি। >0 প্ৰকাশি কায়াতে া যথন এ ভার पृद्ध राम उदयानि॥ সে যে ছিল জ্ঞান ' গেল কোন স্থান আর দশা আসি ঘেরে। ষে তত্ত্ব পাগলী ১৫ বাছা বাছা বলি উন্মত হৈয়া ফেরে॥ তত্ত্ব দুরে গেল মায়া প্রবেশিল জানল তনয় সোর। · বুঝল শক্তি **छोमान वटन** মানুষ ভিতরে তোর॥ २०

রামকেলি।

আরে মোর যাত্রয়া তুলাল। অনেক তপের ফলে এ ধন পেয়েছি কোলে मधूर्रात शताहेल खाल ॥ ভাল হল যা করিলে দরিয়াতে ভাসাইলে এ নহে তোমার ঠাকুরালি। বাঢ়াইলে অতি প্রীত এবে কর অমুচিত हियारत्र जानल पिरल जालि॥ বিরহ কঠিন বড় এ কথা জানিহ দঢ পরবশ না গুণিছ মনে। উগারিয়া মধুরাশি প্রেম কৈলে অহর্নিশি ১০ हेश जूमि यूहाह टक्स्स्त ॥ গোকুলের গোপিনীগণ আন স্থা আন জন (म नक्न भागत (क्मान।

যশোদা রোহিণী কান্দে ভারা বুক নাহি বান্ধে ১৫ যবে আসি এবেশিলা পুরে।

আছে তারা পথ চাই কবে আসিবে কানাই কবে দেখি নয়ন গোচরে। এ कथा श्वनिव यदत जात्रा कि जिल्लक कोर्व मत्रिव रम कल्ल প্রবেশিয়া। না কর নিঠুরপনা শুন বাপু চুই জনা রহা নহে জননী তেজিয়া। मत्र मत्र ध्येमवाति চতুর মুরলীধারী পূরব পড়িয়া গেল মনে। পীতবাস করে ধরি ভাষির পুছয়ে বারি ২৫ দেখে বলরাম অভিমানে॥ চাহি কান্দে বলরামে কুষ্ণের বদন পানে ছুঁহে মুছে নয়নের বারি। कहिरल रेविकी माग्र চণ্ডীদাস কহে তায় রহি হেথা চতুর মুরারি॥

এ কথা শুনিয়া নন্দের বিরহ বাঢ়ল বিষম জ্বালা। বহে প্রেমজল . বসন ভিগঁল (यमन कालिन्मी-धाता॥ ক্ষেণেক নিখাস কেণেক হতাশ ৫ ক্ষেণেক সম্বিত হয়। এক দৃষ্টে চাহে **অতি বড় মোহে** नयान भिनिया यय ॥ দৌহার বরানে (चार्यंत्र नग्रांत टिड्न (मिर्स्स इय । এত কি সহয়ে নন্দের পরাণে

विषम मोक्रन व्यांशि।

এ শোকে জার কি	· ভিলেক বাঁচিব		না হলে এভ কি	শানের শক্তি	
क्षपदा तरल जांशि॥		>4	কছেন এ চ	श्रीमारम् ॥	ەد
	গোকুল নগরে		-		
কৃষ্ণ বলরাম					
यत्नामा द्राहिनी			•	190	
বড় পরমাদ			ম্	(डें। •	
	গোপী কিসে জীব	ه د	বহুক্ষণে ভবে	চেতন পাইয়া	
যত সংগ্ৰ		₹0	উঠে नन्म त्याय त्राग्न ।		
<b>ह</b> शीमांत्र वटन			করুণ-নয়নে	বিরস-বদনে	
	<del>-</del>		ছুঁত মুখপা		
বুঝল এমতি	417111			* কমল-লোচন	¢
•			রহিবা মণুর		
•	ાર		•	বরণ ছেরিব	
হৈ হ	₹ ।		দুখ যাউ অ	_	
कृषः रहाशत				বছে প্রেমজল	
লাজেতে না	_			न (हति।	
	कट्टन वहन			ৰাণ অতি শর	
• কেই সে না			মরমে রহল		
	करह वञ्चरापव	٨		আনল তথাই	
७० ५० पाण <b>७</b> नश वहन		ď	वन्न हुन्दन		
ভোমার নিবিড়				ক্মলিয়া <b>আঁ</b> পি	\ <i>a</i>
·			गाउन पूर सार किड्रे नाहि		, ,
আন কি জা				করি আলিঙ্গনে	
নন্দ যশোমতী				দহে বাণী।	
	বৈ কত।	>0		विषाय मांगिट्य	
এ মহীমগুলে				ा कानि॥	
আদর পীরি					•
নেহ ভাবে ভাল				•	
ভূমি সে পরি			় নন্দঘোষের গোক্ল-	গমন ও যশোদার বে	। भा
এ মহীমগুল	গণিতে বিস্তর	>0	618		
এমন নাছিব			_	₹₹!	•
	কেবল ভোমার		সাজল শকট	চলল, নিকট	
নহেন আনের বংশ।			কান্দেতে ব	ানিছে পথে।	

করল গমন **७४ (पश (यन** পরাণ র**হিল ইথে**॥ ্লোরে পথে কিছু দেখিতে না পায়ে শোকেতে আকুল মানি। স্থন নিখাস বিষম হুডাশ কহে গদ গদ বাণী॥ এইরূপ পাই বিরহ-বেদনা যমুনা হইল পার। ٥ ( শকটের ধ্বনি क्षनम खेरान कराय्र व्यानतम नात्र॥ কোন স্থাগণ তুরিতে গমন শक्र-भवन रामि। গৃহকাজ ফেলি ভুরিতে বাহির ১৫ হইলা নন্দের রাণী॥ কেহ পুরজন হাতে নড়ি ধরি বাহির হইলা কেন্ত। বালা বৃদ্ধ যত চলিলা ভুরিতে আর সে কুলের বছ। २० যত গোপীগণ শুনল প্রবণে রাম কৃষ্ণ আইলা ঘরে। এ কথা শুনিছে মরা ভরু যেন মুঞ্জরে শাখার সরে॥ চণ্ডীদাস ভেল অতি আনন্দিত ২৫ পুরল মনের কাম। নয়ান ভরিয়া আজু সে হেরব সেই নবঘন শ্যাম॥

> ं नहेनाबाह्य। त्वटल श्राट्यांनल श्रूटब

হেন বেলে প্রবেশিল পুরে। ' শুনি শঙ্কটের রোল করে সবে উভরোল চলে সবে শুগম দেখিবারে॥

যশোদা রোহিণী ধায় মৃত তরু বেন প্রায় কোপা কৃষ্ণ হলধর মোর। দেখিয়ে नग्नन छति वमन इश्वन कंद्रि স্থের নাহিক কিছু ওর। গোপ গোপী পুরবাসী চলে সবে প্রেমে ভাসি কৃষ্ণ হলধর আইল পুরে। গিয়ে যমুনার ধারে দেখিল শক্টপরে ১০ তাথে নাই কৃষ্ণ হলধরে॥ বিশ্মিত হইয়া চিতে ক্ষে ৰশোমতী চিতে কোথা কৃষ্ণ দেখিতে না পাই। এ কথা শুনিয়া নন্দ कारम्य वह मन्य मन्य মোরে তেজি রহে চুই ভাই॥ কি আর পুছহ তোরা কৃষ্ণ বলরাম হারা রহি ছত্ মধুরা নগরী। মোর মাথে পড়ে বাজ সাধিতে আপন কাজ মোরে দিল ডারিয়া পাথারি॥ **शिष्ट्रं विनिद्यं कारम** २० শকট হইতে নন্দ লোরে আঁখি দেখিতে না পায়। ধরে নন্দ খোবে তুলি চণ্ডীদাস বেয়াকুলি সব জন ধরিয়া রহায় 🛭

> **७१७** भैश्हा ।

তুমি নন্দ বড়ই নিদয়া।
কোথা না রাখিলা মোহ মায়া॥
বারে না দেখিলে আমি মরি।
কেমনে বাঁচিব গোপনারী॥
কি লয়ে আইলা তুমি ঘরে।
ছাড়ি মোর কৃষ্ণ হলধরে॥
কান্দে রাণী ভূমে অচেতন।
ধারে যত গোপ গোপীগণ॥

٥ (

রোদন বেদন উপজ্ঞল।
শোকেতে হইয়া গেল ঢল।
চণ্ডীদাস শুনিয়া মূর্চিছত।
ইহা কিবা শুনি আচন্দিত।

७११ एवरे ।

কি লয়ে সাইলে তুমি।
এ ঘর করণ . দূরে ভেয়াগিয়া
জলে প্রবেশিব আমি॥
অন্ধনার নড়ি বাছারে কানায়া
কৈশিশা না রাখিয়ে এলে।

ব**ড় হুখ মেনে দিলে**॥ কোথা হতে এল রাজা কংস-দূত অক্রুর তাহার নাম।

তাহা না দেখিয়া

কেমনে বাঁচিব

শমন সমান প্রবেশি গোকুলে ১০ ত লইল সবার প্রাণ॥

<sup>ব্যমনু</sup> সোনার পুথলি ধ্সর অবনী উপরে দেখি।

নয়নের জলে তিতিয়া বদন যমুনা-তরক দেখি:॥

কেহ কার অঙ্গে অঙ্গ হেলাইয়া মুদিয়া নয়ন চুটি।

বেমন চামরু তাছার চামর অবনীমাঝারে সুটি॥

বেমন ধাউল • হইয়া বাউল ২০ খাইয়া ব্যাধের শর।

ভেমত বিরহ- বাণে ভসু জ্বর না চিনে আপন পর॥

 এ বড়ি বিষম ...নহে নিবারণ
হিয়ায় পৈশয়ে জন্ম।
চণ্ডীদাস বলে কি আর বাঁচিব
এ হেন বিরহ-শরে।
আনল স্থালিয়া তাহে প্রবেশিয়া ৩০

্ণ বড়ারি। দ ঘোষ আমার

कि हात्र की वस शहर ॥

শুন নক্ষ ঘোষ আমার বচন জ্বালহ আনল ভালি। তাহে প্রবেশিব যশোদা রোহিণী দেহ ত আনল জ্বালি॥

কেহ বলে যদি কৃষ্ণ নাহি এল। ৫ বিসরি রহল গেহা।

কি ছার জীবন কিলের কারণ এখনি তেজিব দেহা॥

যাহার লাগিয়। এ ঘর করণ সেই পুস রহল দুরে। ১০

নয়নের তার। পরাণ দোসর
বাঁচিব কাহার তরে ॥
কান্দে নন্দ ঘোষ যশোদা রোহিণী
সঙ্গের বালক যত।

পুরবাসিগণ বত গোরালিনী ১৫
কান্দে লাখে কত শত ॥
হাতে নড়ি করি কত শত আছ

কান্দয়ে করুণস্বরে। আছিল সম্পদ বেড্ল আসদ

কি হৈল গোকুলপুরে॥ ২০ • চান্দ তেজি গেল **হইল আন্ধা**র

रवमन कानन नम।

বিষম দারুণ কাল সে স্থন
থেন তিমিক্সিল শুম॥

, জগত জীবন পরম-কারণ ২৫
গোকুলে স্বার প্রাণ।
উন্মত হই মূর্ছি কান্দই
চণ্ডীদাস গুণগান॥

413

aylfa i

কোণা গেলে পাব রাম কৃষ্ণ চুই জগত-জীবন ধন। আর কি হেরব সবার গোচরে তথাই আছয়ে মন॥ শুন নন্দ ঘোষ আমার বচন চল যাব সেই ঠাম। তু বাহু পসারি কোলেতে লইয়া (मथि · : भनगाम ॥ ছেনা ছগ্ধ চিনি এ ক্ষীর নবনী **पिय एम (माँ) होत पूर्य ।** ভবে সে যাইব আদর আঞ্চন হইৰ অতি সে স্থাখে॥ দোহার বদন মোহন সদন **हल बार्ग गिया (मिथा**। वषन চুম্বন করিব যতন ১৫ এই সে তাহার সাখি॥ এই वनि कात्म যশোদা রোহিণী ভিল শ্বির নাহি বান্ধে। কানাই কানাই বলিয়া বলিয়া नित्रविध तांगी कात्म ॥ • চণ্ডীদাস, বলে বজর পড়িল <sup>°</sup> কি আর দেখ**হ** ভৌরা।

সবারে তেজিয়া রহল তথার সেই সে নয়ানতারা॥

40

शमनी ।

অনেক ভপের ফলে বিহি আনি দিল মোরে সে হেন আদর নটরায়। কোন অপরাধ হল জননী ছাড়িয়ে গেল হেনক আমার ভার। সে হেন নবীন তমু যেন পদ কর ভামু ৫ হিঙ্গুলে গঞ্জিত বিষধরে। অপ্তনে দলিত শ্রেণী নবঘন ভমুখানি নয়ন কমল শশধরে॥ কিবা সে মধুর হাসি মধু ঝরে রাশি রাশি নবীন কোকিল জিনি বোলে। করিশুণ্ড হল জিনি বাহুর সে স্কুরলিনী তা দেখি সদাই মন ঝুরে ॥ त्म द्वन वाहर धरन वाशि कारेटल (कामशान मनारे म यूत्रस्य व्यस्ततः। (य भात हरशह मन अ कथा जानित्व दकान >१ এ কথা সে কহিব কাহারে॥ কর ভরি দিতে সর মুখ দেখি শশধর वनन চাहिया यदव व्याति। ভাবিতে গুণিতে সেহ মলিন হইল দেহ मत्न त्यात्र शर्फ़ निभि प्रिमि॥ যশোদার করুণা শুনি গলিভ পাষাণ মানি मृश जक्र कान्मरत्र वर्कातः। স্বন নিশাস নাসা শুনিয়া করুণ ভাষা চণ্ডীদাস পড়িয়া ভৃতলে॥

আর কি শুনব তার বাণী। শুনিয়া জুড়াব মোর প্রাণী। এ कीत नवनी पिर कांग्र। আর কে ডাকিবে বলি মায়॥ মুই বড় অভাগিনী রামা। ত্রিভুবনে নাহি কোন জন।।। যে পুত্র নবীন তমুখানি। আতপে মিলায়ে হেন জানি॥ रिय अन हित्रारत्र शिरत्र क्र्थ। হেন বা করয়ে অমুরোধ॥ ٥ ( मि श तरल मधुभूत। মথুরা রহল বহু দূর॥ मतिव भवन विष त्थरत्र। কিবা ছার এ তন্ম রাখিয়ে॥ কানিল বিধাতা ভেল বাম। >0 যবহু তেজল খনশ্যাম ॥ এমন বা জানিথু স্বপনে। তবে কি ছাড়িথু নবগনে॥ চণ্ডীদাস ব্যথিত হিয়ায়। नत्मत्व तम धविष्रा ब्रह्मां ॥

कामड़ा।

কাহারে কহিব मर्ने द्रवन्ना ছাড়িল গোলোকপতি। उत्थन बाटमान বৈভব বসতি ভাঙ্গল এ দিন রাতি॥ আর কিবা দেখ কানাই ছাড়িল ভাঙ্গিল রসের হাট।

শাসিয়ে অক্র · কৈল এত দুর সেই সে পড়িল বাট॥ তার সনে ছিল কিসের বিবাদ সাধিল আপন কাজ। তার মনোরথ श्रुवल ञ्चन भात्र भिरत मिरत वाक ॥ কিসে প্রবোধিব প্ৰবোধ না মানে জলে প্রবেশিব গিয়া। 20 করে কর ধরি यम्भाषा ञ्चनक्री তুলল চেতন ধনী। मूर्थ कल मिया গৃহে গেলা লয়া কহেন ঐছন বাণী॥ व्हित्र नाहि वादक २० **ठ** छोमाम कात्म স্বনী গড়িয়া যায়।

## শীরাধিকার শোক।

(यमन शांधांग कांग्र॥

লোরে পথ অতি

२०

না দেখি মুরতি

বিভাব।

এ কথা শুনল শ্রেবণ ভরিয়া কৃষ্ণ না আইলা আর। মধুপুরে রহে রহিলা যমুনা পার॥ नवज-व्यभेगी কুলের কামিনী मटव (भना जांधा भारण। नम (शांव वानि পুরেতে প্রবেশি (गाविन्म माथुत (मर्म ॥ এ কথা শুনিয়া • সবে এল খেয়ে এ কি পরমাদ শুনিন .

**हा**ष्ट्रिन गाकून , রহে বন্তু দূর স্বপনে নাহিক জানি॥ . আছিল মনেতে আসিব গোকুলে ভা মেনে নৈরাশ ভেল। · কুলের কামিনী ১৫ সবার পরাণ গেল॥ যাই একজন নন্দের ভূবন বুঝহ কি কীতি তার। ভবে পরিণাম করি যত জ্বন श्विति डाहात थात ॥ . २० **हर्शकारत्र वरल** श्रन विस्नाविति বজর পড়িল মাথে। মধুপুরে রছে কামু গুণমণি বড় ভেল অমুরথে।

यहाँ ।

পীরিতি ভাবিতে কামুর আদর शीकत इहेल (भग। করম বিফল সেই সে ফলব হ্যথের নাহিক লেশ। বিরহ-বেদনে ৫ জনম গোয়াতু তিলেক নাহিক সুখ। পরিণামে সারা এই হল পার৷ मिना वित्र**स्त्र प्र**थ॥ क् भारत निर्वृत হইব সবারে मधूता ब्रह्म शिरय । কখন না জানি স্থপনে না শুনি ় ছাড়িয়া বাইব প্রিয়ে॥ बानाभ देकिए विश्व वानिश् भन्नवाम इत्व कान ।

নিজ কেশপাশে নিবিজ বন্ধনে ১৫
বাঁধিয়া রাখিপু শ্যাম ॥
পরিহুরি দুর রহে মধুপুর
কি জানি করিব বল।
এই মনে গুণি হেন অসুমানি
সে দেশ যাইব চল॥ ২০
যাহারে না দেখি তিলেক না জানি
কেমনে বঞ্জিব ঘরে।
চণ্ডীদাস বলে নিকটে মিলব
সেই সে মুরলীধরে॥

**৬৮৫** সুত্ই।

মরিব গরল ভথি। ভাহার বিহনে ভাবিতে গণিতে পরাণ হারাব দেখি॥ कालिया वद्रश अत्राह्म भत्राह्म अत्राह्म अ সে জন কঠিন বড়। পরের পীরিতি স্থের সারতি এবে সে জনল গাঢ়॥ হরিতে কি দুখ পরের পরাণ স্থের নাহিক লেহা। ভাবিতে গণিতে মলিন হইল ১০ व्यत्तभ इरेल (मरा॥ অনেক বডনে সে পঁছ রডন আছিল নিজহি কোড়। বিহি নিকরুণ াহে ভেল বাদ সকল হইল ভোর॥ পহিলা পীরিভি यथन कत्रिटन शांख यानि पिना ठाँप। কুল ভেয়াগিয়া কলম্ব রাখিল नागंदिया त्थामकाम ॥

চঞীদাস শুনি রাধার বিরহ ২০ উঠিল দারুণ তৃথ। নিরমল বর রসের নাগর হেরব ডাকর মুখ॥

> ৬৮**৬** ধানশী।

সখি রে, মধুরামগুলে পিয়া। সাসি আসি বলি পুন না আসিল কুলিশ পাষাণ হিয়া॥ আসিবার আশে লিখিমু দিবসে খোয়াতু নখের ছন্দ। উঠিতে বসিতে পথ নির্থিতে তু আঁখি হইল অন্ধ॥ কেহ কি না বলে এ ব্ৰজমগুলে আসিবে কি নন্দলাল। মিছা পরিহার ভেজিয়ে বিহার রহিব কভেক কাল॥ চণ্ডীদাস কছে মিছা আসা আশে থাকিব কতেক দিন। করি একে কালে বে থাকে কপালে মিটাইব আঁখর ডিন ॥ 10

> ७৮१ युर्हे ।

ও পারে বঁধুর ঘর বৈঁদে 'গুণনিধি।
পাখী হইয়া উড়ি বাউ পাখা না দেয় বিধি॥
বমুনাতে দিব ঝাঁপ না জানি সাঁতার।
কলসে কলসে ছিঁচো না ঘুচে পাথার॥
মধুরার নাম শুনি প্রাণ কেমন করে।
নাধ ছবে বড়াই গো ভানু দেখিবারে।

আর কি গোকুলচাঁদ না করিব কোলে।
হাতের পরশমণি হারাইসু হেলে॥
আগুনিতে দেউ ঝাঁপ আগুনি নিভার।
পাষাণেতে দেউ কোল পাষাণ মিলার॥
তর্কতলে বাই বদি সেহ না দের ছারা।
বার লাগি মঞি সে হইল নিদরা॥
কহে বড়ু চণ্ডাদান বাশুলীর বরে।
ছট্ফট্ করে প্রাণ বন্ধু নাহি ঘরে॥

1 586

কামু অঙ্গপরশে শীতল হব কবে।
মদন-দহন-জ্বালা কবে সে যুচিবে॥
বয়ানে বয়ান হেরি কবে সে ধরিবে।
বয়ানে বয়ান দিলে হিয়া জুড়াইবে॥
করে ধরি পয়োধর কবে সে চাপিবে।
চুখদশা ঘুচি ভবে মুখ উপজিবে॥
বাশুলী এমন দশা কবে সে করিবে।
চণ্ডীদাসের মনোত্বখ ভবে সে ঘুচিবে॥

৬৮১ সিধাড়া

পিয়া গেল দূর দেশে হাম অভাগিনী।
শুনিতে না বাহিরার এ পাপ পরাণী॥
পরশি সোঙরি মোর সদা মন ঝুরে।
এমন গুণের নিধি লয়ে গেল পরে॥
কাহারে কহিব সই আনি দিবে মোরে।
রতন ছাড়িয়া গেল ফেলিয়া পাথারে॥
গরল আনিয়া দেহ জিহ্বার উপরে।
ছাড়িব পরাণ মোর কি কাজ শরীরে॥
চঞীদাস কহে কেন এমতি করিবে।
কামু সে পরাণনিধি আপদি মিলিতে

় অগরু চন্দন চুয়া দিব কার গায়। পিয়া বিন্তু মোর হিয়া ফাটিয়া যে যায়। ভাম্বল কর্পুর আমি দিব কার মুখে। রজনী বঞ্চিব হাম কারে লয়ে স্থাধে। কার অঙ্গপরশে শীতল হবে দেহা। কান্দিয়া পোহাব কত নাহি ছুটে লেহা॥ কোন দেশে গেল পিয়া মোরে পরিহরি। जुमि यपि वन मिथ विष त्थ्रा मित्र ॥ পিয়ার চূড়ার ফুল গলায় গাঁথিয়া। স্থালহ আনল সই মরিব পুড়িয়া॥ সে গুণ সোঙরিতে মোর পাঁজর খসে যায়। দহনে দগধে মোর এ পাপ হিয়ায়॥ ভোমরা চলিয়া যাহ আপনার ঘরে। মরিব অনলে আমি যমুনার ভীরে॥ **छि। पार्य किन कर (इन कथा।** 34 শরীর ছাড়িলে প্রাতি রহিবেক কোথা।।

৩। আমি-আদি ৬। পোহাব—গোঙাব >•। जानर-जानर >२। पर्दान पराहे (त नहें अ भाभ हिम्राम्र...

ধানশী ৷

कालि वनि काना গেল মধুপুরে সে কালের কত বাকি। বোৰন-সায়রে সরিতেছে ভাটা ভাহারে কেমনে রাখি॥ জোয়ারের পানি ন্রীর যৌবন श्रांक मा कित्रिये जात ।

জাবন থাকিলে বঁধুরে পাইব যৌবন মিলন ভার॥ বোবনের গাছে না ফুটিতে ফুল ভ্রমরা উড়িয়ে গেল। এ ভরা যৌবন বিফলে গোঁয়াত্র वैधू किरत नाहि এल। যাও সহচরি জানিহ আসহ বঁধুয়া আসে না আসে। নিঠুরের পাশ আমি যাই চলি ১৫ কহে পিজ চত্ত্ৰীদাসে॥

নিশুড়া।

मिथ (त्र, বরষ বহিয়া গেল বসন্ত আওল कृष्टेल गांधती लङा। কুত কুত করি কোকিল কুহরে शक्षाय खमती गडा ॥ আমার মাথার কেশ স্তচারু অক্সের বেশ পিয়া যদি মথুরা রহিল। ইছ নব যৌবন পরশ রভন ধন

কাচের সমান ভেল। কোন সে নগরে নাগর রহল নাগরী পাইয়া ভোর। গুণেতে বেঁধেছে কোন গুণবতী লুবধ ভ্রমর মোর॥ মথুরামগুলে

বলিও আমার কথা। পিয়া এই দেশে व्यारम वा ना व्यारम ১৫ জানিয়া আইস হেথা॥ ষিধুমুখী বোলে সহচরী চলে

निषद्म निर्देश भाग।

যাও সহচরি

२०

গৃহচরী সনে • ভণয়ে ভৎ সয়ে কৰে বড়ু চণ্ডীদাস ॥

৮। কাচের জার মূলাহীন।

## শ্রীরাধিকার দশা।

630

ভুড়ি।

অথল বেয়াধি সেই কহনে না যায়।

যে করে কামুর নাম ধরে তার পায় ॥

পারে ধরি কাঁদে তার চিকুর গড়ি যায়।

সোনার পুথলি যেন ধূলায় লোটায় ॥

পুছয়ে পিয়ার কথা ছল ছল আঁখি।

তুমি কি লেখেছ কালা কহ না রে সখি॥

চণ্ডীদাস কহে কাঁদ কিসের লাগিয়া।

সে কালা রয়েছে তোমার হৃদয়ে লাগিয়া॥

১।

শক্থা বেদনা সই কহনে না বায়…পাঠান্তর।

438

বিরহ-জ্বের তাপে ছল ছল আঁখি।
রাইকে বেড়িয়া কান্দে কত শত সখী॥
রাই মোর বেন কাঁচা সোনা।
জ্বেম পড়ি গড়ি বাইছে বেন চাঁদের কণা॥
চমকি শ্যামের নামে রাই উঠে কত বেরি।
ধ্লার লোটার বেন হংগদ্ধি কবরী॥
কহিজে কহিতে চিতে হৈলা অচেতন।
রাই মুরছিত কাঁদে আর সখীগণ॥
কহে কবি চণ্ডীদাস বিরহ বেদন।
এমন বিরহে কেমনে রহয়ে জীবন॥

(वनावनि । দেখিয়া রাধার উঠিল বিরহভালা। দশমী দশার এ সব লক্ষণ (मिथिएय विषय वाला ॥ কোন নবরামা কছে রাধা পালে রথ আরোহণে শ্যাম। মাধল ত্রিতে গোকুল প্রবেশি শুনি কিছু ছয়ে জ্ঞান ॥ চমকি চমকি মিলিভ নয়ন চাছেন সদয় গৌরী। করে কর ধরি কোন নবরামা মুখেতে ঢারয়ে বারি॥ ক্ষেণেক চেত্তন পাইল কিশোরী চকিত নয়নে চায়। সোনার পুথলি বেন গড়ি যায় ১৫ এছন দেখিয়ে প্রায়॥ ঐচন অবনা উপরে ফুটল কনক-কমল প্রায়। কাত্রব বিরছে त्म खन सम्बर्ध ধুলাতে ধুসর কায়॥ শীতল চামর ঢারি কোন রামা मलय हन्द्रन विद्या। শীতল পাধার বাভাগ করয়ে কোন নবরামা গিয়া॥ ভাহে বাড়ে স্থালা विव्रहरवम्न १३० হুতাশ উঠয়ে হুসু। অক্সের চন্দন বে ছিল লেপন

ভাহা শুখাইল ভমু॥

कि कंद्रि भगग्रतात्व।

হিয়ার ভিডরে

বিরহ জাগুন

>•

20

চণ্ডাদাস বলে, কে এভ জানব

व कन এ तरन मत्क।

चामण्डा ।

हाय देव पासन विधि। **डाडारेटन क्शनिधि**॥ বে এভ দিল ভাপ। তারে ধরু বহু পাপ॥ এত কি সহিতে পারি। বিরহে এ তমু মরি। जिल्क निवांत्र माथ। এ ছথে मिल कि वाम ॥ কবে পাপ তার মেলি। পুন সে কবর রস-কেলি ॥ আর কি হেরব মুখচন্দ্র। ভাঙ্গৰ সকল দন্দ॥ श्रेन इति भिलव (मात्र। পিয়ারে করব নিজ কোড়॥ भून कि कत्रव त्रांग-(किना নৰ নৰ গোপী হব মেলি॥ বাঁশী কি শুনৰ কাৰে। যাব বৃদ্ধাবন পানে I चित्रा हन्सन माना। कारत निव चात्र गना ॥ **हशीशांत क्या**। ডিলেক না কর ভয়।

> ०५१ स्रह-तिषुष्। ।

বেদে গো সমনি সই তোষারে কিছুই কই এ ছুখে জীবারু দহে রাধা।

त्म पिन भारकत्र निकं । বে জন পরম বন্ধ ভাবিতে গুণিতে সেই লেহা। ব্ঝিল আপন চিতে মরণ আইল নিভে ভার কি রহিব পাপ দেহা॥ শুন গো মরম-সখি বভ পরমাদ দেখি এ ভমু ভেজিব ভামি যবে। কুফের মালতী তথা সেঁচি তাহে সর্বাণা নিতি তাহা মার্চ্ছন করিবে॥ তেজিব পরাণ ববে তোমা বেই বিসুরত (?) ভাজহ রবির তাপে। জীতে না ভেটল হরি ১৫ রাখিহ যতন করি বেন পিয়া রাখি কোন রূপে॥ যা সনে পীরিতি করি তারে না দেখিলে মরি (म नकल प्रथ विमतिया। কেমন ধরণ ভার সে হিয়া পাষাণ সার কেমনে বান্ধৰ সেই হিয়া॥ এই সব ধনী কছে কাঙর বচন নোহে लाट्ड जागतन हुई जाँथि। দারুণ কঠিন প্রাণ এমন করুরে কেন **हिंदी मात्र डाट्ड जाट्ड जांची** ॥

...

ं काबूडे।

ক্ষেণেক দাঁড়ারে দেখ।

२२। जानवन ..बद कविन, इ**रे ठकू जल्ल**पूर्व रहेन।

নর ইহা বুৰ পর ঠীও কি আর রহারে রাধ॥

আনহ চন্দ্ৰন কান্ত পরিবল ভালে সে মেলাহ চিডা।

भटनत व्यनित्म	·এ দেহ পোড়া <b>ই</b>				
়কি কৰ ভাৰার কথা॥					
এ কাজ যথন	শ্রবণে শুনিল				
বেথিত কোন	হি জনা।				
রাই গলে ধরি	অপার রোদন	20			
বেদন হানল ৰ	ামা॥				
ভোমার এ অঙ্গ	লাখ বাণ সোনা				
শ্রীমুখ-মণ্ডল (	বিধু।				
বার হাসিরসে 🕠	মণি কত হয়ে				
ঝরয়ে কভেক	মধু ॥	>4			
এ অঙ্গ দাহন	কিসের কারণ				
শুনহ কিশোরী	ী গোরি।				
কোন শুভ দিনে	প্রসন্ন হইলে				
শো বর নাগর	হরি॥				
এ তমু রহিলে	তমু তমু মিলে	२०			
কোন দশা ফ	লৈ কেত।				
চেত্ৰ সমাধে	শুন প্রিয় রাধে				
• নিকটে মিলব					
সে হেন রসিয়া	রহিলা বসিয়া				
	লেহা।	२१			
রাধা বলি যদি	কভু কোন সাধে				
মনে পড়ে এই					
অনেক আর্ত্তি	করিলা পীরিভি				
এ নৰ নায়রী					
निकर्छे मिलव	(इन मरन लर्ग	•			
বিজ চণ্ডীদাস	<b>ड</b> ्न ॥				

১০-১১। রাধিকার গলে ধরিরা অনেক রোদন দরিল ও ছঃখ জানাইল। ১৮-২০। বদি তুমি ভোষার এই শরীর নই না দর, তবে কোন দিন সোভাগ্যের ফলে স্থাম-অলের সহিত ভাষার অজের মিলন হইবে। অতএব চেডন হও, বাষার কথা ভন, হরি ভোষার নিকটে আসিবেন। ५३३ सन्देश

স্থীর বচন **भुनल श्रम्भती** -त्राकात निमनी धनी। মিলল নয়ান মৃছল বয়ান কহে আধ আধ বাৰী ॥ যেন লাগে আসি সবার বচন গরল সমান মানি। বিনে নাহি আর সেই স্থনাগর কিছুই নাহিক জানি। মুখে দিয়া জল রাই উঠায়ল গৃহমাঝে নিল থুয়া। স্চাক পালকে রাই 😎 ভায়ল पुष्टे ठावि मशी लग्ना॥ বসনের বায়ে রাই অঙ্গ তুষে ক্রেন মধুর বাণী। সে নব নাগর ১৫ ভুরিতে মিলব আমি সে ভালই জানি॥ বিষম বিবাদ কেনে পরবাদ সে শ্রাম কতেক দূর। এক জন গিয়া আনিব ডাকিয়া চণ্ডীদাস মন পুর॥

900

ভুড়ি।

একে হাম হব বনবাসী।

রামেরে ছাড়িয়া সীতা বনবাসী ভেল গো

তেন হাম মনে কবিয়াছি ॥

কাননে রহব একা না হয়ে কাহারে দেখা

থাকি বেন বোগীর ধেয়ানে। ৫
তুলিয়া মূল আর ফল নবীন ফুডুমদল

এই গুরি রাখিব বতনে ॥

৪। কাঠ পরিমল...পুণদ্ধি কাঠ।

10

তুলিয়া সিশ্বভার এ জটা ধরিব সার অমুবাগে ভ্রমিব কাননে। তবৈ সৈ ঘুচিব তাপ এ দেহের অমুরাগ ১০ ইহা মেনে করিব যভনে॥ এ ছথে জীবাব নই . শুন গো মরম-সই কি ছার গুছের সাধ। ন্ধানিল নিঠুর বড়ি সবারে রহিল ছাড়ি দিল পঁত বত বিসম্বাদ। শুনিয়া রাধার বাণী হেটমাথে গোয়ালিনী কহেন ৰচন কিছু ভাষ। কহ কহ ধনী রাই পুরব শুনিয়ে ভাই कहिए नाशिमा हछीमात्र॥

श्रश्-दिकायनि ।

পূরব সে অবভারে পূর্ণ পূর্ণ অবভারে সূঠ্যবংশ রাম অবভার। নব দূৰ্নবাদল ভম্ব করে ধরি শর ধন্ম দশরথ-স্থত অনিবার॥ পালিতে বাপের সভ্য এ চৌদ্দ বৎসর গভ শিরে জটা পরিয়া বাকল। করিয়া সীভারে সঙ্গ বন ভ্রমি নানা রঙ্গ সীতাপতি শ্রীরাম স্থুন্দর॥ সেই সীতা দশানৰে হরিয়া লইয়া বনে লক্ষাতে লইয়া গেল ভারে। 'কেবল ঈশ্বর স্থাংশ স্বাবণ করিয়া ধ্বংস করি **পঁহু সী**ভার উ**দারে**॥ সাভার উদ্ধার করি অবোধ্যাতে অবভরি . : ছত্র দণ্ড দিয়া কৈল রাজা। কোন লোক অপরাধে পাইয়া সে রঘুনাথে ১৫ সীতা ব্নবাসে দিল ভেজা॥

তেজি রঘুনাথ সঙ্গ স্থপথে হইল ভঙ্গ পূরব-কাহিনী কছে রাধা। রাধার যুক্তি এই নিশ্চয় করিব সেই **छिशांग करह किছु वांधा ॥** 

108 वश्हे। অমুরাগে রাধা বেথিত অন্তরে পাইয়া বিষম জালা। ঁ উঠে অমুরথ কেণে কত শত দেখিয়া কদম্বতলা॥ সেই সে যমুনা জল-কেলিপগ ঘাটের মাঝারে গিয়া। পূরব পীরিভি যেখানে করিল দেখি পড়ে মুরছিয়া॥ যেখানে বসন হরণ করিল রসিক নাগর কান। তা দেখি কিশোরী সকল বিস্থবি फैठिल पारुष मान॥ যেখানে সঙ্কেত দেখিল বেকত ধরিয়া মাধৰী-ডাল। বিষম বিরহ ভাহে উপজিল ১৫ नग्रत्न वंश्राय भाता। যেখানে সঙ্গত করল নাগর গিয়া সে কিশোরী রাই। ভাদেখি লুটভ মহীর উপরে চতীদাস গুণ গাই॥ ર•

> 300 क्र्हे-महे

नरे, क यात्व मधुताशून । এ হেন যাডনা তারে নিষেধিয়ে তবে পরিহর দুর॥

কেনে বা অবলা <sup>1</sup> করিয়া বিকলা সেই সে আছয়ে ভাল। ব্রজ-রমণী কুলের কামিনী তাহার পরাণ গেল। কে বাবে বাহ ভ কামুর সম্মুখে তারে দিব এই হার। গৰুমতি ছড়া গাপুনি স্থসারি ১০ গণনা নাহিক যার॥ এহ হার ভার গলায়ে পরাব কে এত মাছয়ে হিতু। এক নবরাসা करह शीरत शीरत ट्यांद्र निर्विष्ट्र किছू॥ অল্ল কটাক্ষে **গুপথে** যাইব কেহ সে লখিতে নারে। দেখাই হইলে যাহাই কহিব বেবা সে অন্তরে আছে॥ সেই নবরামা করিল পয়ান ২০ যেখানে রসিক রায়! চণ্ডীদসি বলে কামু অৱেষণে তুরিত গমনে যায়॥

चानावडी ।

স্থি, কহিও তাহার পাশে।

যাহারে ছুঁইলে সিনান করিয়ে

সে মোরে দেখিলে হাসে॥

কার শিরে হাত দিয়ে।

কদস্ব-তলাতে কি কথা কহিলে ৫

যমুনার জল ছুঁয়ে॥

মোর রক্ষাবন আছে সাখী।

মার এক হয় যদি মনে হয়

কপোত নামেতে পাখী॥

এ কথা কহিও ভারে। >০
সে গুণ ঝুরিয়া বে জন মরিবে
সে বধ লাগিবে ভারে॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদাস ভণে।
বাহার লাগিয়ে য়ে জন মরয়ে
সে ভারে পাশরে কেনে॥ ১৫

कानड़ा। স্থি, কহিবি কামুর পায়। দে ত্রথ-সায়র দৈবে শুকায়ল তিয়াবে পরাণ যায়॥ সখি, ধরিবি কামুর কর। আপনা বলিয়া বোল না ভেন্ধবি ৫ মাগিয়া লইবি বর॥ সখি, যভেক মনের সাধ। শয়নে স্বপনে করিমু ভাবনে বিহি সে করল বাদ। সখি, হাম সে অবলা তায়। ১০ হৃদয়ে বিশুণ বিরহ আগুন সহন নাহিক যায়॥ স্থি, বুঝিয়া কাসুর মন। বেমন করিলে আইসে দে জন বিজ চণ্ডীদাস ভণ॥

সথীর উক্তি।

104

>>। कपरत्र विश्व-परात्र विश्व-...भाशेकतः

১৪। चाहरत रत्र क्रम-चाहरत्र क्रतिरव... ,,

ওতে বড়াই, তাহার বিষম নারা। (?) কিছু নাছি খায় সে তেহুয়ে কায়
শীক্ষর হৈয়াছে সায়া।

ভনি কি না ভনি ষেন সরু বাণী যেন রুধিরের ধারা। देशप्राद्ध भलिन চকিত লোচনতারা॥ এবণ নয়ন করে অনুক্ষণ বেনক শায়ন ধারা। मृहिर्द (कगरन ১० নেতের বসনে এত বল আছে কারা॥ এখন তথন ভাহার জ্ঞাবন না চলে কণ্ঠের লালা: **ठ** छीमारम करह তুরিতে চলহ বালা॥ 20 भाग्रसः, आद्याः

দূতীর মধুরা-গমন।

क्ष्मित्री।

ওহে ও কুবুজার বজু।
পাসরেছ রাইমুখ-ইন্দু॥
ওহে ও পাগধারী।
পাসরেছ নবীন কিশোরী॥
রাই পাঠাইল মোরে।
দাসথত দেখাবার তরে॥
যাতে মোরা আছি সাথী।
পদতলে নাম দিলে লেগি॥
তুমি ত্রজ যাবে যবে।
করতালি বাজাইব সবে॥
গালি দিব যত আছে মনে॥

ं १०৮ पान**ी** ।

খ্যাম শুকপাথী স্থান নিব্ধি त्रारे धतिल नग्रान कारम । হৃদয়-পিঞ্চরে वाथिल मान्द्र মনোহি শিকলে বান্ধে॥ তারে প্রেম-স্থানিধি দিয়ে। ভারে পুষি পালি ধরাইল বুলি ডাকিত রাধা বলিয়ে॥ এখন হয়ে অবিশ্বাসী কাটিয়ে আকুদি भनारत्र अरमरह भूरत । . পাইমু শুনিতে ১০ সন্ধান করিতে कूत्का (त्र श्रष्ट थरत ॥ আপনার ধন করিতে প্রার্থন রাই পাঠাইল মোরে। চণ্ডীদাস থিজে তব তজবিজে পেতে পারে কি না পারে॥.

102

31

বিরহ-কাভরা . निर्नापिनी बाहे भन्नारम बाह्म ना वं।रह । নিদান দেখিয়া আসিমু হেথায় কহিন্দু ভোহারি কাছে॥ যদি দেখিবে ভোমার প্যারী। চল এই ক্ষণে রাধার **শপথ** আর না করিহ দেরি॥ कालिको भूलित ক্মলের **শেষে** রাখিয়ে রাইএর দেহ। কোন সধী অক্তে লিখে শ্যাম-নাম ১০ নিখাস হেরয়ে কেহ॥

কেহ কহে ভোর <sup>1</sup> বকুয়া আসিল ্সে কথা শুনিয়া কাণে। र्भालाया नयन ट्रोमिंग निश्रत দেখিয়া না সহে প্রাণে॥ 30 যমুনা পার যথন হইন্ম দেখিতু সখীরা মেলি। রাখে অন্তর্জলে যমুনার **জলে** রাই-দেহ হরি বলি॥ দেখিতে যদাপি সাধ পাকে ত্ত্ব ২০ शाहे हल खरक गाँहै। বলে চণ্ডীদাদে विलग्न इंटेस আর না দেখিবে রাই॥ ধিক্ধিক্ ধিক্ ভোরে রে কালিয়া কে শোরে কুবুদ্ধি দিল। . কেৰা সেধেছিল পীরিতি করিতে मत्न यपि এ । जिला। ধিক্ধিক্বকু লাজ নাহি বাস ৫

কে শোরে কুর্দ্ধি দিল।

কেবা সেধেছিল পীরিভি করিতে
মনে যদি এত ছিল॥

ধিক্ ধিক্ বন্ধু লাজ নাহি বাস ৫
না জান লেহের লেশ।
এক দেশে এলি অনল জালায়ে
জালাইতে আর দেশ॥

অগাধ জলের মকর যেমন
না জানে মিঠ কি ভিড। ১০
ম্বেস পারস চিনি পরিকবি
চিটাতে আল্লর এড॥

চণ্ডীদাস ভণে মনের বেদনে
ক্ছিডে পরাণ ফাটে।
ভোমার
সোনার প্রভিমা ধ্লার গড়াগড়ি ১৫

কুবুজা বসিল খাটে॥.

ধিক্ধিক্ধিক্ নিঠুর কালিয়া কে ভোরে এ বুদ্ধি দিল। কেবা সেধেছিল পীরিতি করিতে मत्न यमि এठ हिल ॥ धिक् धिक् निर्वेत कालिया लाख्य नाहिक (लभ। এক দেশে এলি অনল স্থালায়ে জ্বালাইতে আর দেশ। জনম অবধি কালিয়া বদন ना भूलि लाटकत चाटि (इ। ব্ৰদ্ৰ-গোপী হতে মপুৱা নাগরী কত রূপে গুণে বটে হে॥ কিংবা কুবুজা নামে কুবুজিনী ভেঞি সে লেগেছে মনে। আপনি ধেন ত্রিভঙ্গ মুবারি ১৫ विहि भिलाईए (कार्न॥ কিংবা কুবুজা গুণে গুণবতী গুণেতে করেছে বল। পীরিতি স্থথের কি জানে ষজিতে किवा (म (त्र (थए मण ॥ পীরিতি করণ ম যতেক ভোমারে তেমন পীরিতি ছবে না। কুবুজার নাপ রাধানাথ বিনে কেহ ভ ভোমারে কবে না॥ मदनत्र दगनना हैए কি আর কহিব কৰিতে বেদনা

পরাণ ফাটিয়া বায়॥

# ন্ট্ৰারারণ ৄ

বন্ধু কানাই, ভোমার চরিত এত দূর। সে হেন কিশোরী রাধা ় তো বিসু হইয়া আধা তুমি কেনে এতেক নিঠুর॥ ্চম্পকবরণী ধনী লাখ বাণ হেম গণি সে রাধা মলিন মুখচাঁদে। গিয়া নিপ ভরুমুলে লোটাইয়া ভূমিভলে निर्मि पिमि भिग्ना विन कारम ॥ সে অঙ্গ ভাষিয়া চলে খলিত নয়নজলে ভিতে অঙ্গ নীলের বসন। **थक्षन-नग्रनी त्रांह** কান্দিয়া আকুল তাই ়১০ एक्षि (यन **अ**क्रग वर्ग ॥ জীয়ে কি না জীয়ে রাই কহিল তোমার ঠাঁই পরদশা আসি উপজিল। বড়ই কঠিন দেখি শুনহ কমণ আঁথি ভুরিত গমনে ভূমি চল। আছে যদি রাইএ কাঞ্চ তুরিতে দেখানে সাজ (एथ शिया धनी वित्रशिशी। ভূয়া দরশন আশে তেঁই সে পরাণ আছে চণ্ডীদাস ভাল মতে জানি॥

450

### সুহা-বেলয়ার।

স্থার বচন শুনিতে নাগর
বিস্মিত ইইলা বজি।
(বেমন দাকণ শোল পশি হুদে
তেমনি নিখাস ছাজি॥
বাংকুল বিরহ বচন স্বরূপ ৫ বিভন্মনে চায়।
ব্যাথাটি পাইয়া স্বোনব নাগর

স্থী মুখ পানে 🤚 চাহি কহে বাণী রসিয়া নাগর কান। রাধার সংবাদ পুন পুন কহ শুনিতে শুনিয়ে আন। স্থী পুন কহে আঁখি ভরি লোচে মোহেতে আকুল হয়ে। সে নব কিশোরী তোমার বিরহে ১৫ আছেন মূৰ্চ্ছিত হয়ে॥ ভোমার সঙ্কেত ं भाषवी (मिथिया সেখানে নিদান রাই : সন্থিত না হয়ে মুদিত নয়ানে দেখিয়া কাইসু তাই॥ মুখে বারি ঢারি গাগরি গাগরি নাহিক চেতন রাধা। (मिथरंग विषम বুঝিয়ে মরম যে কর মনেতে সাধা॥ ভুরিত গমন করহ এখন ২৫ যদি বা দেখিবা এস। চণ্ডীদাস পুন আইলা ভুরিতে শ্যাম স্থনাগর পাশ।

418

এ কথা শুনিয়া নাগর-শেখর
গদ গদ ভেল তমু।

কমল-নয়নে ধারা বরিখারে
মুগধ হইল কামু॥

শীত বসন ধরিয়া সখন ৫
মুছত নয়ন লোর।
দশমী দশার শেষ রব শুনি
ভাছাই চইল ভোর॥

শুনহ সজনি	। কহিতে কি ছয়ে		কেমন গোণের	রমণী যভেক	æ
.কেমন দেখিলে রাধা।		>•	কেমন বালক স্থা।		
নিশ্চয় কহিবে	আছে কি বাঁচিয়া			সে নন্দ যশোদা	٠,
আমার বে	ণ তমু আধা॥		পুন সে না	হিকৃ দেখা॥	
সে নৰ কিশোরী	ভারে কি পাসরি		(कमन नगत	' চাতর বান্ধার	
क्तरत्र बाहरत्र कांगि।			কেমন আছয়ে রীভি।		١٠,
সে হেন পীরিভি	করিতে না পেয়ে	20	সে হেন যমুনা-	পুলিন কানন	
नमार উঠিছে আগি॥			পুরবাসিগণ যতি॥		
যারে না দেখিলে	ভিলেক না জীয়ে		কছ সেই বলি	বচন উত্তর	
<b>ब्रि</b> श विनितिश मति ।			্শুনিতে পিয়ার বাণী।		
দেখিলে জুড়াই	সে মুখমগুল		কি ভার কহিব	ञ्चाह्या (प्रच	20
কহিল মরম ভোরি॥			চণ্ডীদাস ভালে জানি॥		
	গোঠে মাঠে ঘাটে		- 3-	 >e-	
চরাই ধেমুর পাল।			দগীর উক্তি।		
পথের মাঝারে	कमश्च-छलारम		13 <b>७</b> <b>₹</b> 1नड़ा ।		
দান সির্রা	केन ভাन॥		তুমি হে নি	দয়া বড়ি।	
मध्य मूत्रमी	করিয়া অঙ্গুলী	<b>૨</b> ৫		প্রেমের লছরী	
• বদনে মিশ			কেমনে রয়ে	াছ ছাড়ি॥	
অারের মিশালে	ফঁকিয়ে রসালে		নিশি দিশি রাধা	কান্দিয়া বিকল	
সদা রাধা রাধা বলি॥			নয়ানে নাহিক খুম।		¢
সে নব নাগরী	কেমনে পাসরি		कारत किंदू धनी	না ক <b>হে উন্তর</b>	
শুনহ বচ	ন মোর।	٥.	ভিলেক হয়ে	१८६ खम् ॥	
<b>छीमांग क</b> रह	তুরিত গ্মন		বদন–উপর	কর আচ্ছাদিয়া	
নহে বা হইবে ভোর॥			লোরেতে ভরিয়া আঁখি।		
	·			ভিতৰ সকল	٥,
			আবেশে যে		
436			গিয়া ভরুবরে	कमय क्रा	١
दरहे ।				र ब्राह्म 🛴	
পুছে পুন পুন	ক <b>হত সহ</b> ন	<b>CONTRACT</b>	_	বাড়িল সম্ভন্	
সে বর-নাগরী-গুণ।				न्मरत्र डार्रे ॥	>¢
পুলক হাদয়	ছুখ দূরে গেল		जन्न कर किष्	না চল্যে ভার	
, कटर बनमत्र शून ॥ ·			সদাই জুহারি খ্যান।		_
			٠,	,	

প্রিরা প্রিয়া বলি . কথা রস-কেলি কেণে কেণে হয় জ্ঞান ॥ ্ৰদি বা ভুৱিত कत्रह शमन २० তবে সে মানিয়ে জ্ঞাল। এ ৰুণা শুনিতে ' রসময় কান वित्रदं इहेल एल ॥ চণ্ডীদাস বলে শুন স্থনাগর ঐছন দেখিল রাধা। ₹¢ ভোমার বিরহে সে নব কিশোরী সোনাৰ বরণ আধা ॥ . 939 নটনারারণ। শুন গো সঞ্জনি পরমাদ শুনি রাধার ঐছন দশা। বিরহে আকুল রসময় কান সঘনে নিশাস নাসা। মোহন মুরলী করেতে আছিল তাহা না পড়ল কতি। লোর বহি খনে कमल-नग्रत ভাসিয়া চলল তথি ॥ অঙ্গের সৌরভ এ চুয়া চন্দন **ज्रव**न (कोखृख-मनि। এ সব ভিতিয়া চলল ভাসিয়া বিরহে চতুরমণি॥ সে মোর প্রেয়সী প্রেমময় রাধা শুধুই শুধার রাশি। माँजारम तमथरे ও মুখমগুল হেনক মনেতে বাসি॥ বাহার লাগিয়া বনে ধেন্দু রাখি তাহার দরশ আপে। मधुक मूत्रली गाँह निभि निभि थित तहेवन-दिएम ॥ ₹•

রাইএর দশা স্থার মুখে।
শুনিয়া নাগর মনের ছুখে।
নয়নের জলে বহয়ে নদা।
চাহিতে চাহিতে হরল সুধী॥
অব যতনে ধৈরজ ধরি।
বরজ গমন ইচ্ছিল হরি॥
আগে আগুয়ান করিয়া তার।
স্থা পাঠায়ল কহিয়া সার॥
এথনি আসিছি মথুরা হৈতে।
ইথে আন ভাব না ভাব চিতে॥
১০
অধিক উল্লাসে স্থিনী যায়।
ব্জু চণ্ডাদাস তাহাই গায়॥

৭১৯ ্সোরারি।

চল চল বাব রাই-দরশনে
শুন গো মরম-সখি।
সে গোরী নাগরী কেমনে বিসরি
শয়নে স্থগনে দেখি॥
মধুপুর বদি খাকয়ে একলা ক
সদাই ভাবিয়ে রাই।
নিশির স্থপনে দেখিয়ে স্থনে
সদাই সে গুণ গাই॥
বিসিতে রাধিকা গাইতে রাধিকা
শংশতে রাধিকা দেখি। ১০

**खांक्र**न ब्राधिका । शमरन ब्राधिका मनारे द्राधिका मांथी॥ হাস-পরিহাসে রাধার মহিমা महारे भड़रत्र मत्न । কাহারে কহিব मत्नन (वषना ५० আপন মরমে জানে।। আন কি ক্লানব হৃদয় পোড়ান সদা উচাটন চিত। মনে পড়ে ববে • রাধার মূরতি বাঁশীতে গাইয়ে গীত।। ২০ কহিবে রাধারে তাহার অন্তরে महारे चाहित्य वाँधा। করে করি কর জপিয়ে অস্তর এ সুই অক্সর রাধা॥ আগে যাহ সখি রাধার গোচর ২৫ কহিবে যতন করি। আমি গিয়া পুন দেখিব সে জন • চণ্ডীদাস কহে ভালি॥ 4 আই সেই সথী ভেটে চন্দ্ৰমুখী শুন স্থমই রাধা। শুনহ সংবাদ মুখ তুলি চাহ না কর ভিলেক বাধা॥ মুখ তুলি রাই ু সধী পানে চাই ৫ কহত শ্রামের কথা। শুনি কিবা রীভি তাহার পীরিতি ঘুচুক হিয়ার ব্যথা॥ -কহ কহ শুনি জুড়াক পরাণী কেমনে আছয়ে পিয়া। >0

.कर एमि रहें হুখের বারতা শুনিয়া জুড়াক হিয়া। কছে সেই সথী শুন চন্দ্ৰমুখি 💘 শ্যামেরে দেখিয়ে আমু। কহিতে কহিতে ' শ্রামের কাহিনী ১৫ মনের হুতাশে মমু॥ তোমার কাহিনী শুনি গুণমণি কান্দিয়া আকুল বড়ি। नशरनत (लारत विकास करिकारकारक সম্বনে নিশ্বাস ছাড়ি।। মথুরা নগরে বসি এক ভিতে নিভূত হইয়া কান। মোরে বেরি বেরি পুছয়ে সে হরি ভোহারি গুণের খ্যান। কহ কহ আগে রাধার কাহিনী ২৫ সে অঙ্গ আছুয়ে ভাল। শুনিতে শুনিতে দুশার কথন কামু সে হইল ঢল॥ কত বা কহব আদর পীরিতি তুয়া পুরসঙ্গ বিনে। আন নাহি জানে সে বর নাগর দীন চণ্ডীদাস ভণে॥ २८। थान...णायान-वर्गा। 123 কানড়া ১ রাই, বড় সে দেখিল বিপ্রীত। 🔃 👌

সে নব নাগর কান ভোমারে কেবল মন , দেখিল সদয় অভি চিত ॥ কিবছ-বেদন-শবে ভেল তথ্য করে করে

বিরহ-বেদন-শরে ভেল ত**মু অ**রে **অ**রে আন ক**হি**তে নাহি আন। • **৫** 

শুনিতে ভোমার রীত পুলক মানয়ে চিত লোরে অ'থি হরল গেয়ান॥ তোমার মাধুরী গুণে প্রবণ পরশি শুনে মোহিত হুইল কলেবর। কেবল ভোমার নাম 'নিরবধি জপে শ্যাম ১০ কাঁপে তুটি অধর স্থন্দর॥ শুনিয়া সখীর বাণী অতি ভেল বিরহিণী কহ কহ শুনি পিয়া-গুণে। সোনার পুথলি ঐছে অবনীতে লোটাইছে ধারা বহে এ গুই নয়নে। क्मन मथुता श्रुती কেমন নাগরী নারী कर एकि मदम-मजनि। কেমন কুবুজা নারী ক্ষনিব শ্রবণ ভরি কত রূপ সে জন মালিনী॥ তা সনে পীরিতি করে মুগধ রসিকবরে ২০ শুনিয়াছি পর লোকমুখে। এত কি সহিতে পারি মনে সে গুমরি মরি জনম গোঙামু এই চুখে। উঠিল দারুণ মান এই অভি ভেল মান পিয়া কি \* \* # এত দূর। মিলব নাগরমণি **ह** श्रीमांत्र करह थनि হব তুয়া মনোরথ পূর॥

> **१२२** ধানশী।

শুনি ধনী মুরছিত জেলি।
সোঙরি সে হংগ-রস-কেলি॥
পিরা-গুণ ঝুরিডে ঝুরিতে।
পুলকিত ভেল হিয়া চিতে॥
পড়ল ধরণীতলে গোরী।
মুহুল লোর অভি ভোরি॥

সো পঁত বিদগধ রায়। মধুপুর রহল ছাপার।। এত কি সহিব কুলবালা। এ অতি বিরহকি জালা।। ٥٤ সো নব নাগর স্থভান। ছোড়ল মোহ অবিধান।। यंत (जल कूत्रुकाक मक्र। তব ভেল সব সুখ-ভঙ্গ।। এ সখি তোরে বলি ব্যথা। 10 সাজাহ দারুণ অতি চিতা॥ এ দেহ করিব ছারখার। কে এত সহিব ব্লঞ্জাল।। **ह** धीमांग करह श्रून रवांग। নাগর মিলব আসি কোড়॥ ₹• ৮। ছাপায়... সুকাইয়া। ১२। (मार...(सर-- अक्वायक्रत्य क्षाप्त्र हा क्षित्र हिन।

120

### **२०३-त्रामात्रात्र।**

ক্ষানিয়ে রাধার বাণী সখী কহে ভালে জানি সকল কহিয়ে ভালমতে। গ্রবণ ভরিয়া শুন বিষাদ ভাবিছ কেন বুঝিয়ে করিবে যাহা চিতে।। মোরে সে ভেজল কান আইল ভোমার স্থান ৫ রাধারে তুষিবে ভালমতে। পেয়ে দশমীর দশ। ুপাছে হবে ফণভাষা তুরিতে চলিয়ে যাহ পথে॥ পাছে ধনী তেক্তে প্ৰাণ পাইয়া বিরহ-বাণ তেঁই আমি আসিল ভূরিত। ঘাইৰ গোকুল-মাৰ কহিলা নাগররাজ দেখিব সে প্রেমমই রীড়।।

পশ্চাতে গমন সাধে 'শুন স্থমই রাধে চণ্ডীদাস বলে পুন পাবে ভাহার মিলন। ৰিহি ভেল অমুকুল। শুন শুন আমার বচন। সুহই-বেলয়ার। সক্ষত করিয়া বাণী আসিব সে গুণমণি এক সধী আসি হেনক সময়ে হেন দুশা কবে হবে মোর। হাসি হাসি কহে কথা। পেয়ে সে নাগররাজ সাধিব আপন কাজ উঠ উঠ ধনি ও চাঁদ-বদনি কবে সে করব নিজ কোড়।। সধীর বচন শুনি ' ঘুচাহ মনের ব্যথা।। হর্ষ হইল ধনী তব তুরদিন সব দুরে গেল পরশ করিব আমি যবে। উঠিয়া বৈদহ রাই। তবে সে মনের সিদ্ধি যদি মিলায়বে বিধি নিকটে আওল তোমার মাধব চণ্ডীদাস স্থা হব তবে। দেখহ নয়ন চাই। ১৭। কথা অভুসারে কাব্র করিয়া। শুনি শুভকথা এ সব বারতা আনদ্দে পুরল হিয়া। त्राधाकुरकः त्रमान । চা**হিতে সঘনে** চকিত-নয়নে সম্মুখে দেখন প্রিয়া॥ 138 এস এস বলি धाननी । **ভূটি বাহু ভূলি** . जरे, कानि कूपिन श्रीपन (छल। हामिया कश्य कथा। তুরিতে আওব মিলায়ল নিধি ১৫ भाषव मिलदा চিরদিনে বিধি ঘুচিল মনের ব্যপা॥ কপাল কহিয়া গেল।। ় বসন খসিছে সৰ সখী মেলি क्य छनाङ्गी চিকুর ফুরিছে পুলক হোবন-ভার। দেওয় দোঁহার পাশ। সন্থনে নাচিছে দেখিয়ে বিজ্ঞোর বাম অঙ্গ আঁখি আনন্দ-সাগর

ভাব-সন্মিলন।

ত্তণ গায় চণ্ডাদাস॥

(नलाननी।

**° নন্দের নন্দন** চতুর কান। भिनन व्यानिया क्रमस्य कान॥

ছুলিছে হিয়ার হার॥ প্রভাত সময়ে কাক কোলাকুণি আহার বাঁটিয়া খায়। পিয়া আসিবার নাম স্থাইতে ১০ উড়িয়া বসিল তায়॥ খসিয়া পড়িছে মুখের ভাস্থল

(मर्वत्र माथात्र कृत।

١.

20

₹ 0

যাহার যেমন পীরিতি গাঢ়া। ভাহারে ভেমতি করিলা বাঢ়া॥ মথুরা হৈতে এখনি হরি। **वार्डेल विन्या भवन** कति॥ আপনু খরে আপনি গেলা। পিতা মাতা জমু পরাণ পাইহা॥ কোলেতে করিয়া নয়ান-জলে। **भा**रत किया कैं। किया वरन ॥ আর দূরদেশে না যাবে তুমি। বাহির আর না করিব আমি॥ এত বলি কত দেওল চুম্ব। वादत वादत (मर्थ भूथात्रविम्म ॥ ঐছন মিলল সখল স্থা। আর কত জন কে করু লেখা। খাওয়াইয়া পিয়াইয়া শোয়াল ঘরে। ঘুমাক বলিয়া যতন করে॥ তখন বুঝিয়া সময় পুন। আ'ওল যমুনা-তীরক বন॥ রাইয়ের নিকটে পাঠাইল দুতী। বড়ু চণ্ডীদাস কহয়ে সতি॥

121

ञ्रह∛।

কেশপাশ দিয়া চরণ মুছায়ে
বিচিত্র পালকে লই।
আতি স্থাসিত বারি ঢালি রাধা
ধোরল চরণ ছুই॥
মুগমদ ভরি চন্দন কটোরি
আগোর তিমির তার।
মনের মানগে স্থাগারী রাধা
লেপিছে শ্রামের গায়॥

নানা ফুলদাম অতি স্থলোডন গলে পরাইল রাধা। · রূপ নিরীক্ষণ करत्र चरन चन তিলেক নাহিক বাধা। কান্মুর শ্রীমুখ বেন শশধর যেমন পূর্ণিমার শশী। রাই সে চকোর পাই নিরস্তর ১৫ পিবই অবশ রাশি॥ হেন মনে করি চণ্ডীদাস কহে শুনহ কিশোরী রাধে। পাশ আস দিয়া মনের মানসে ष्ठ्रिक एत रयन वारक ॥ ১৬। অবশ অর্থাৎ আত্মহারা হইয়া প্রচুর পরিমাণে

পান করিতেছেন। ———

> १२४ श्रुट्टे।

কিয়ে শুভ দরশনে উলসিত লোচনে

তুঁহু দোঁহা হেরি মুখছাঁদে।

তৃষিত চাতক নব জলধরে মিলল

তুখিল চকোর চাঁদে॥

আধ নয়ানে তুঁহু রূপ নিহারই

চাহনি আনহি ভাতি।

রসের আবেশে তুহু অঙ্গ হেলাহেলি

বিছুরল প্রেম সাঙ্গাতি।।

শ্রাম স্থ্যময় দেহ গোরী-প্রশে সেহ

মিলারল ধেন কাঁচা ননী।

রাই তমু ধরিতে নারে আলাইল আনক্ষভরে
শিরীশ-কুস্থম কমলিনী ॥
অতসী কুস্ম সম সম শ্রাম স্থ্নায়র
নায়রী চম্পক গোর।

টাদ আগোরল ১৫ নব জলধরে জন্ম ঐছে বহল শাম কোর॥ কুন্তল শিখি চন্দ্ৰক বিগলিত কেশ বিগলিত নিতল নিচোল। ছু হুক প্রেমরসে ভাসল নিধুবন উছলল প্রেম হিলোল॥ ছু ছু রূপ নির্ধিতে চণ্ডীদাস কৰে विছুत्रल देश भन्नकाल। শ্রাম স্থাড়বর : স্থানর রসরাজ স্বন্দরী মিলই রসাল।

४। ज्थिम...क्थार्छ।

123

उर्हे।

भारक क तत्रव भारत वंधूशा मिलल घरत রাধিকার অন্তরে উল্লাস। शत्रानिधि পारेयू विन नरेया सपरम जूनि রাখিতে না সহে অবকাশ। ំ মিলল ফুঁছ তমু কিবা অপরূপ। চকোর পাইল চাঁদ পাতিয়া পীরিতি-ফাদ कमलिनी পাওল মধুপ। রশভরে ছুঁছ তমু · থর **থ**র কাপই ঝাপই ফুঁহু দোঁহা আবেশে ভোর। নিভায়ল আনল ১০ হু"হুক মিলনে আজি পাওল বিরহক ওর॥ रेक्ट्रेल छूँ ह छन রতন-পালম-পর ছু হ মুখ ছেরই ছু ছ আনন্দে। হরষ সলিলভরে হেরই না পারই व्यनित्मरव त्रश्ल थरन्य ॥ व्यक्ति मनग्रानिन মৃত্ মৃত্ বহত নিরমল চাঁদ প্রকাশ।

ভাবভরে গদ গদ পাশে রহি চণ্ডীদাস।

ভাবোল্লাসে ধনী ঁবঁধুরে পাইয়া ভাবে গদ গদ কয়। ব্র**জ**-পীরিতের अमोभ कानिया मोभ कि निভাতে হয়॥ कालिया कूरिल স্বভাব তোমার কপট পীরিতি যত। মুচকি হাসিয়ে ভূক় নাচাইয়ে অবলা ভুলাইলে কত। পীরিতি-রদের রসিক বোলাও পীরিতি বুঝিতে নার। যত নাগরীর মথুরা নগরের পীরিতের ধর ধার॥ মথুরা বিহারী শুন গিরিধারী নারী-বধে নাহি ভয়। তোমারে ভ**লিলে ১৫** পীরিতি করিয়ে लार्य कि এই मना इस्र॥ **क्न मगरिंग** পীরিতি করিলে वित्रश्-दिष्मा पिरत्र । प्रयाहीन जम কালিয়া কঠিন তোর নিদারুণ হিয়ে। পীরিতি মমভা সোই রসিকতা সমতা হইলে রাখে। রসের গঠন পীরিভি রতন কুটিলাতে নাহি থাকে। পীরিতির দায় প্রাণ ছাড়া বার ২৫

পীরিভি ছাড়িতে নারে।

পীরিভি-রদের পসরা তা কি
রাখালে বহিতে পারে॥
বে জনা রসিক রসে চর চর
মরমী বে জন হয়। ৩০
হেরে রে রে করে ধবলী চরার
সে জনা রসিক নয়॥
রসিকের রীতি সহজ সরল
রাখালে তাই কি জানে।
চণ্ডীদাস কহে রাধার গঞ্জনা ৩৫
স্থা সম কামু মানে॥
৩৫। গঞ্জনা...ভংশনা—পাঠান্তর।

সুহই।

শুন শুন হে রসিক রায়। ভোমারে ছাড়িয়া বে হুখে আছিন্ নিবেদি ষে ভূয়া পায়॥ না জানি কি ক্ষণে কুমতি হইল গৌরবে ভরিয়া গেন্তু। তোমা ছেন বঁধু হেলায় হারায়ে পুরিয়া পুরিয়া মন্তু॥ জনম অবধি মায়ের সোহাগে সোহাগিনী বড় আমি। প্রিয়-সখীগণ দেখে প্রাণসম ১০ পরাণ-বঁধুয়া তুমি ॥ সধীগণে কহে শ্যাম-সোহাগিনা शब्द खब्द (प्र ইামারি গৌরব তুঁত বাঢ়াইলি चव पूँठोव्रव (क॥ ভোহারি গরবে গরবিনী হাম

চণ্ডীদাস কৰে : এমতি নহিলে পীরিতি কিসের স্থা।

২। তোমা উপেধিয়া যে হুৰে গোঞাইমু—পাঠান্তর।

148

ভূপালী।

বহু দিন পরে বঁধুয়া এলে। দেখা না হইত পক্ষাণ গেলে॥ এতেক সহিল অবলা বলে। ফাটিয়া যাইত পাষাণ হলে॥ ছখিনীর দিন ছখেতে গেল। মপুরা নগরে ছিলে ত ভাল। এ সব ছখ কিছু না গণি। ভোমার কুশলে কুশল মানি॥ এ সব ছখ গেল হে দূরে। হারাণ রতন পাইলাম কোড়ে॥ এখন কোকিল আসিয়া করুক গান। অমরা ধরুক তাহার তান॥ मलग्र भवन वहक मन्त्र। गगत्न छेपग्र इछेक हम्प ॥ वास्त्रनी जारमर्ग करह हखीमारम। 16 **ছ**थ पृत्र शिन स्थ-विनारम ॥

900

রামকেলী।

বঁধু, ছাড়িয়া না দিব ভোরে।
মরম বেখানে রাথিব সেখানে
হেন মোর মনে করে॥
নোক হাসি হউ বায় জাতি বাউ
তবু দা ছাড়িয়া দিব।

ভূমি গেলে বদি 🕴 শুন গুণনিধি ব্যানের স্নানেক . আছে কত জন আর কোথা ভুরা পাব ॥ রাধার কেবল ভূমি। ৰাখি পালটিতে নাহি পরতীতে ও ছটি চরণ শীতল দেখিয়া 🦠 পুইতে সোয়ান্তি নাই। শরণ লইসু আমি॥ ' চণ্ডীলাস বলে তুন তুনাগর দশা উপজল ১০ এখন মরণ জুড়াব কোন বা ঠাই॥ রাধারে না হও বাম। কাহারে কহিব লোকমুখে শুনি ভোমার মহিমা কেবা পিত্যাইব সরল পঞ্চর নাম।। (?) আমার যাতনা যত। ভোমার কারণে - এভেক সহিয়ে নহে পরমাদ হত॥ 26 শিশ্বড়া। রাধার বচন শুনি স্থনাগর <sup>8</sup>কি জানি ভক্তি তোমার পীরিভি গদ গদ ভেলা দেহা। অবলা কুলের বালা। আমি সে তোমার প্রেমে আছি বশ স্থজন দেখিয়া পীরিভি করিমু মরমে বেঁধেছি লেহা॥ পরিণামে হল জালা॥ চণ্ডীদাস কয় তুঁহু এক হয় ২০ অবলা জনের माघ ना नहें दि ইহার না হয় ভিমু। তিলে কত হয়ে দোষ। বিহি সে বসিয়া তু'ল মিশাইরা তুমি দয়া করি কুপা না ছাড়িছ • গড়ল একই তমু॥ মোরে না করিছ রোষ।। ১২। ,পিত্যাইব...বিশ্বাস করিবে। তুমি সে পুরুষ- ভূষণ শক্তি সকল্ব সহিতে হয়। कारमान । লেহ বাড়াইয়া কুলের কামিনী বন্ধু, কি আর বলিব আমি। ভোমা হেন ধন অমূল্য রতন ছাড়িতে উচিত নয়।। তিলেক না দেখি **७ ठाँपवर्ग्स्टन** তোমার তুলনা তুমি ॥ मद्राम मदिशा थांकि। ভূমি বিদগধ গুণের সাগর (एथ इशिहेत्रा ) ৫ **इग्न नग्न हेटा** রূপের নাহিক সীমা। চণ্ডীদাস আছে সাধী॥ বেন্ধেছ পীরিডি গুণে গুণবতী অথল ত্রজের রামা।। ভাতি কুল দিয়া আপনা নিছিয়া গড়া। वॅथू, ज्ञिम निषांक्रण नायः। শরণ লইয়াছি। বে কর সে কর ভোমার বড়াই ১০ ভোমার কারণে এড পরমাদ এ দেহ সঁপিয়াছি॥ निक्तराकिनाम करत्र ॥ •

` <b>.</b>	Fd	ोंगोंन		
टबान कहिंच	কহিতে কহিতে	পরাণ হইতে	শত শত গুণে	١.
	চয়ে ছখ।		त्रा मनि॥	
• •	ফাটিয়া পড়য়ে		আন জন বঙ	
এমতি ক্ল	बरप्र वृक् ॥	আমার পরা	_	
<b>ৰদি কোন</b> খানে `	कामि लाकशान		- শীত <b>ল জা</b> নিয়া	
শা <b>ও</b> ড়ী ৰ	শা <b>ওঁ</b> ড়ী ননদী তারা।		শরণ <b>লই</b> রাছি আমি ।।	
শ্যাম-নাম বলি	कारम कनकिनौ ३		ভারা বলে কত	••
	হার ধারা ।।	সে সব গো		
ट्टन करत्र मन	শুনি কুবচন	তোমার কারণে	- এত না সহিয়ে	
গরল ভবি	গরল ভখিয়া মরি।		ছুকুলে হইল হাসি ।।	
ভার নাহি দায়	শুন শ্রামরায়	1.1	শুন স্থনাগর	₹•
ভোমারে	ছাড়িতে নারি।। ১৫		•	,
ভোষা হেন ধন	ছাড়িব কেমনে	পীরিতি-রসের	চূড়ামণি হয়ে	
তোমা কা	তোমা কারে দিয়া যাব।		রুদেতে রসিয়া রাখ।।	
চণ্ডীদাস কৰে	रा वित्नि कि	৩। পতি⋯বলু—	পাঠান্তর।	
আর কো	থা গেলে পাব।।	<ul><li>वहचात्क</li></ul>	"	
NO.NA I WENT C		७। ° निवि…वदन		
	১৪-১৫। মরিতে কোন কণ্ট নাই। তবে ছঃখ এই যে, মরিয়া যে তোমাকে ছাড়িতে ভটাব।		5 " <u>"</u>	
वर एक वरेरव ।			••• 97	
*****	*****	১৮। এতনাসহিয়ে পে		
	101	२०-२०। हशीमान वरन		
	<b>a</b> ı		নিতি রাখ। চূড়ামণি হয়ে	
4. 6			স্কান। ২০৯ ন্তরে থাক ।—পাঠান্তর।	
<del></del>	মার বলিব আমি।			
	जनरम जनरम जीवरन मन्नरन		100	
	চ হইও তুমি।।		गनने।	
•	গৌরী আরাধিয়ে	•	, কে জানে পীরিতি	
	কামনা করি।		_	
	দেখা ভব সন্তে		রসের মাধুরী	
•	পরাণে মরি।।	বুঝিতে পাৰ		_
	ভোমা <b>হে</b> ন নিধি		বে জন প্রিত	ť
' रिथि मिनांत्रन चीनि।		কিছু কিছু জানে সেহ। •		

🖏দের রসিক 🂢 রসে আরোপিত সেই সে জানয়ে সেহ॥ কোন কুলরামা পীরিভি না জানে সে জন আছয়ে ভাল। মুঁই সে পীরিতি করিয়া পশিসু এ দেহ হইল কাল॥ কায় মন চিতে ও রাঙ্গা চরণে শরণ লয়েছে রাধা। ঘর বান্ধিয়াছি ১৫ এ হেন স্থাধের • তাহা কেন কর বাধা॥ পীরিতি রতন অনেক যু**ত**নে ভাঙ্গিতে তিলেক পারি। গড়িতে বিষম অভিশয় শ্রম শুনহ প্রাণের হরি॥ চণ্ডীদাস বলে এমন পীরিতি শুনিতে জগৎ বশ। দোঁহে সে জানয়ে দোঁহার তত্ত্ব ॰ আন কে জানয়ে রস।

103

युष्टे ।

বঁধু, কি আর বলিব আমি।
মরণে জীবনে জনমে জনমে
প্রাণনাথ হৈও তুমি ॥
ডোমার চরণে আমার পরাণে
বাঁথিল প্রেমের ফাঁসি। ৫
সব সমর্পিয়া একমন হৈয়া
নিশ্চর হইলাম দাসী॥
ভাবিয়া ছিলাম এ তিন ভূবনে • •
আর মোর কেহ আছে।
রাধা বলি কেহ শুধাইতে নাই ১০
দাঁড়াব কাহার কাছে॥

এ কুলে ও কুলে ছুকুলে গোকুলে আপনা বলিব কায়। শীতল বলিয়া শরণ লইন্মু ও ছটি কমল পায় ॥ ना ठिलर इत्ल व्यवना सथतन বে হয় উচিত তোর। ভাবিয়া দেখিমু প্রাণনাথ বিনে গতি যে নাহিক মোর॥ আঁখির নিমিখে यपि नाहि (पिथ २० .তবে সে পরাণে মরি। ্চণ্ডীদাস কহে পরশ-রতন গলায় গাঁথিয়া পরি॥ ৬-१। ভাতি কুল শীল সকল মজাঞা হইমু তোমার দাসী।—পাঠান্তর। ১৬-२०। व्यवना व्यथल मा (ठेन हत्राप क्रिव नाहिक ५व। অবসার ক্রটি যদি হয় কোটি ক্ষিতে উচিত তোর। कत्रि मिरवषम গলায় বসন শুন হে রসিক রায়। 🚤 🏿 ছাড়িতে উচিত নয়॥ ---পাঠান্তর।

180

थ्रहरे।

শুন হে চিকণ কালা।

বলিব কি আর চরণে তোমার
অবলার যত জালা ॥

• চরণ থাকিতে না পারি চলিতে

\* সদাই পরের বশ।

যদি কোন ছলে তব কাছে এলে
লোকৈ করে অপ্যশ ॥

বদন থাকিতে না পারি বলিতে
তেঁই সে অবলা নাম।
নয়ন থাকিতে সদা দরশন ১০
না পোলাম নবীন শ্রাম॥
অবলার যত তুখ প্রাণনাথ
সব থাকে মনে মনে।
চণ্ডীদাস কয় রসিক বে হয়
সেই সে বেদনা জানে॥ ১৫

183

स्रहें।

वँधू, कि बात विनव व्यामि। যে মোর ভরম ধরম করম সকলি জান হে তুমি॥ না জানি আপনা যে ভোর করুণা ব্দানন্দে ভাসি বে নিভি। ভোমার আদরে সবে স্নেহ করে বুঝিতে না পারি রীতি॥ মায়ের যেমন বাপার তেমন ভেমতি বরজ পুরে। স্থীর আদরে পরাণ বিদরে ১০ সে সব গোচর ভোরে॥ সতী বা অসতী তোহে মোর মতি তোহারি আনন্দে ভাসি। ছোহারি বচন সালন্ধার মোর ভূষণে ভূষণ বাসি॥ 26 গ্ডীদাসে বলে শুন হে সকলে विनयं-वहन जात है বিনয় করিয়া ৰচন কছিলে ় তুলনা নাহিক ভারু॥

े 18र वर्रे ।

वंधू, कि आंत्र विनव ट्लाटन । . পীরিতি করিয়া অলপ বয়ুসে त्रहिष्ड ना मिलि चरत ॥ কামনা করিয়া সাগরে মরিব • সাধিব মনের সাধা। মরিয়া হইব শ্রীনন্দের নন্দন ভোমারে করিব রাধা॥ পীরিতি করিয়া ছাডিয়া যাইব রহিব কদস্বতলে। ত্রিভঙ্গ হুইয়া মুরলী বাজাব ১০ যখন যাইবে জলে॥ यूत्रली स्वित्रा মোহিত হইবা महक कूलित वीला। চণ্ডীদাস কয় তখনি জানিবে পীরিতি কেমন স্থালা॥ 10

> १४० यहरे।

শুন স্থনাগর করি জোড় কর

এক নিবেদিরে বাণী।

এই কর মেনে ভাঙ্গে নাহি বেনে

নবীন পারিতিখানি॥

কুল শীল জাতি ছাড়ি নিজ পতি ৫

কালি দিয়ে ছুই কুলে।

এ নব বৌবন পরশ-রতন

সঁপেছি চরণতলে॥

তিন হি আঁখর করিয়ে আদর

শিরেতে লয়েছি আমি। >•

অবলার আশ না কর নৈরাশ

সুদাই পুরিবে তুমি॥

তুমি রসরাজ রসের সমাজ
কি আর বলিব আমি।

চণ্ডীদাস কতে জনমে জনমে ১৫

বিমুধ না হও তুমি॥

**188** शन्नी ।

নিবেদন শুন শুন বিনোদ নাগর।
তোমারে জজিয়ে মোর কলক অপার॥
পর্বত সমান কুল শীল তেয়াগিয়া।
ঘরের বাহির হৈলাম তোমার লাগিয়া॥
নবরে নবরে নব নবঘন-শ্যাম।
কি দিব কি দিব বঁধু মনে করি আমি।
যে ধন তোমারে দিব সেই ধন তুমি।।
তুমি আমার প্রাণ-বঁধু আমি ছে তোমার।
ভোমার ধন তোমারে দিতে ক্ষতি কি আমার॥ ১০
দিজ কণ্ডীদাসে কহে শুন শ্যামধন।
কুপা করি এ দাসীরে দেহ শ্রীচরণ॥

१८१ १८१

বঁধু, তুমি সে পরশ-মণি হে
তুমি সে পরশ-মণি।
ও অঙ্গ-পরশে এ অঙ্গ আমার
সোনার বরণখানি।।
তুমি রস-শিরোমণি হে
বঁধু, তুমি রস-শিরোমণি।
(মোরা) অবলা অখলা আহিরিণী বালা
ভো সেবা নাহি জানি।।
তোঁহার লাগিয়া ধাই বনে বনে
স্ববল-বেশ ধরি হে।

(এক) ভিলে শত যুগ দরশনে মানি

হেছে কি রইতে পারি হৈ।।

অঙ্গের বরণ কন্তুরী চন্দন

(আমি) হুদয়ে মাখিয়ে রাখি।
ও তুটি চরণ পরাণে ধরিয়া ১৫

নয়ান মুদিয়া থাকি।।
চণ্ডীদাস কহে শুন রসবতি
তুঁত্বে পীরিতি জান হে।
বঁধু সে তোমার এক কলেবর
তুঁত্বে এক প্রাণ হে।। ২০

78**७** युर्हे ।

বঁধু, ভূমি সে আমার প্রাণ। (पर यन वापि ভোহারে সঁপেছি कूल नील कां जिमान।। ভূমি হে কালিয়া অখিলের নাণ (यांगीत आताधा धन। গোপ গোয়ালিনী হাম অতি হীনা না জানি ভজন পৃজন॥ পীরিতি-রসেতে ঢালি তমু মন দিয়াছি ভোমার পায়। ভূমি মোর পতি ভূমি মোর গতি ১০ মন নাহি আন ভায়॥ কলম্বী বলিয়া ভাকে সব লোকে তাহাতে নাহিক ছুখ। ভোমার লাগিয়া গলায় পরিতে স্থা। স্তী বা অসতী ভোমাতে বিদিষ্ ভাল মন্দ নাহি জানি। কহে চণ্ডীদাস

ভোহারি চরণথানি,॥

<sup>101</sup> হুঃই।

অনেক সাধের পরাণ-বঁধুয়া नग्रांत नुकारम् (थाव। প্রেম-চিন্তামণির শোভা গাঁথিয়া হিয়ার মাঝারে লব॥ তুমি হেন ধন দিয়াছি যৌবন কিনেছি বিশাখা জানে। অধিকার কার কিনা ধনে আর এ বড় গৌরব মনে॥ বাড়িতে বাড়িতে ফল না বাড়িতে গগনে চড়ালে মোরে। গগন হইতে ভূমে না ফেলাও এই নিবেদন তোরে॥ এই নিবেদন গলায় বসন দিয়া কহি শ্রাম পায়। कौरन मत्ररंग ১৫ চণ্ডাদাস কয়

> 18৮ यु**३**हें।

ना ঠिलिय ब्रांका भाग्र॥

বঁধু হে, নয়নে লুকায়ে থোব। প্রেম-চিস্তামণি রুসেতে গাঁথিয়া হৃদয়ে তুলিয়া লব॥ শিশুকাল হৈতে আন নাহি চিতে

াশ ওকাল হৈতে আন নাহি চিতে ও পদ করেছি সার। ধন জ্ঞান মন জীবন যৌবন তুমি সে গলার হার॥

শয়নে স্থপনে নিজা জাগরণে

কভু না পাদরি ভোমা।

অবলার ক্রটি : শত হয় কোটি ১০
সকলি করিবে ক্রমা ॥
না ঠেলিহ বলে অবলা অথলে '
থে হয় উচিত তোর ।
ভাবিয়া দেখিলাম ভোমা বঁধু বিনে
আর কেহ নাহি মোর ॥ ১৫
তিলে আঁখি আড় করিতে না পারি
তবে যে মরি আমি ।
চিণ্ডীদাস ভণে অমুগত জনে
দয়া না ছাড়িও তুমি ॥

185

एर्हे।

শ্যাম-স্থন্দর শরণ আমার শ্যাম শ্যাম সদা সার। শ্যাম সে জীবন শ্যাম প্রাণ্ধন শ্যাম সে গলার হার॥ শ্যাম বেশ মৌর ৫ শ্যাম সে বেশর খ্যাম-শাড়ী পরি সদা। ভঙ্গন পূজন খ্যাম তমু মন শ্যাম-দাসী হল রাধা।। শ্যাম জাতি কুল শ্রাম ধন বল শ্যাম সে হুখের নিধি। অমূল্য রতন শ্যাম হেন ধন ভাগ্যে মিলাইল বিধি॥ কোকিল ভ্রমর করে পঞ্চম্বর বঁধুয়া পেয়েছি কোলে। হিয়ার মাঝারে ক্লাখিহ শ্যামেরে ১৫

विक हशीमांत्र बटन ॥

# ঐকুষ্ণের উত্তর। 160 কামোদ। ঈষৎ হাসিয়া রাই পানে চেয়ে কহে বিনোদিয়া কান। তোমার মহিমা চাতুরী # \* \* ইহা কে জানয়ে আন॥ পরম তুর্লভ আনন্দ কৈশোর ৫ নবীন কিশোরী রাধা। হিয়ায়ে হিয়ায়ে মরমে মরমে .সদাই আছুয়ে বাঁধা॥ তোমার কারণে নন্দের ভবনে রাখিয়ে ধেমুর পাল। গোলোক তেজিয়া গোকুলে বসতি ইহাই জানিবে ভাল॥ ভোমার নামের মধুর মাধুরী . নিরবধি করি গান। রাধা বিনে সব স্থাখের বৈভব ১৫ ্ৰ মনেতে নাহিক আন। শ্যামের বচন শুনি চণ্ডীদাস আনন্দে ভাসেন কতি। এ রস-চাতুরী ' কি বা বুঝিব কার লাছে এত গতি॥ २० কু । ত্রি । রাই, তোমার মহিমা বড়ি। গোলোক ভেঞ্জিয়া বহিতে নারিমু

আইল তথায় ছাড়ি॥

বুঝিতে নারিয়াছি।

রসতত্ত্বধানি আন অবতারে

¢

ভাহার কারণে নন্দের ভবনে জনম লভিয়াছি । . . . . বর্ণ বর্ণ ভেদ রস চারু কেদ . ভেদ আছে নয় রস ৷ চারু সে পল্লব ছয় ছয় ৩৪৭ ১০ ইহা কি আনের বল। নবর্ত্তক(?) রতি আঠার প্রকার পাঁচ গুণ তার হয়। তর ৩ম করি রসিক বুঝিলে ঙ্গি সাধনে কয়॥ 20 ভূমি সে ইহাতে রভি। আট আট গুণ ভটস্থ ইইলে বুঝিতে পারয়ে রীতি॥ এই সে মাধুরী ২০ চত্তাদাস কৰে ত্রজেশরী প্রিয় রাধা। অসীম চাতুরী দোঁহার পীরিতি প্রেমস্থা-রদে বাধা॥ न क्रमा-वड़ार्ति । বেদে দিতে সীমা ভোমার মহিমা কেহ সে নারিয়াছে। ভার অগোচর ভব বিরিঞ্চির (कर (म जानिय़ाष्ट्र॥ কত শত শত ভাব অধুরত ৫ যে জন মজিয়া থাকে। , কোটিক গুটিক কোন একখানে রিক পাইয়া থাকে॥ রসে রস পুরি প্রেমের গার্গরি সারুরে খুজিলে পাবে। নিয় গুণ বাবে লবে ॥

এ তিন তটম্থ এ তিন বেকভ
শত গুণ যাতে বসি ।

তর তম করি বিচার করিলে ১৫

সেই এর অভিলাষী ॥

চণ্ডীদাস কথে গুণে গুণ মিশি

এ তিন বস্তু সাধে ।

আছে এক রতি তাহে নাহি গতি
এ কথা বুঝিতে সাদে ॥ ২০

160

युष्ट्र ।

রাই, তুমি সে আমার গতি। ভোমার কারণে রসভত্ত লাগি গোকুলে আমার স্থিতি। নিশি দিশি বসি গীত আলাপনে भूत्रली लहेग्रा करत । যমুনা-সিনানে ভোমার কারণে বসি থাকি তার:তীরে॥ মাধুরী দেখিতে তোমার রূপের কদম্ব-ভলাতে ণাকি। শুনহ কিশোরি চারি দেখি ছেরি ১০ যেমত চাতক পাখী। তৰ রূপ গুণ মধুর মাধুরী সদাই ভাবনা মোর। করি অমুমান সদা করি গান তব প্রেমে হৈয়া ভোর॥ চণ্ডীদাস কৰে এছন পীরিভি লগতে আর কি হয়।

এমন পীরিভি । না দেখি কখন কখন হবার নয়॥

8 । নিশি দিশি সদা বসি আলাপনে।...পাঠারর।

9 । বসিয়া থাকিয়ে ছলে। ... .,

>২->৫। ভোষার সুরতি রাধা রূপথানি
ভাষরে বাদ্ধিরাছি।
করে করে সদা ভোষা নিজ মন্ত্র
উহাই জপিতেছি ৷ ... পাঠারর।

১৬-১৯ ৷ চণ্ডীদাস করে হেন কি পীরিতি
জগতে আর কি হয় ৷

এমন আরতি নাহি দেখি কতি
ইহা না কহিলে নয় ৷ ... পাঠারর।

... পাঠারর ৷

--**--**

द्ध ।

আর এক বাণী শুন বিনোদিনি मया ना ছाডिও মোরে। . किছ्रे ना कानि ভজন সাধন সদাই ভাবি হে ভোরে॥ ভজন সাধন करत्र (यहे जन १ ভাহারে সম্ম বিধি। আমার ভল্লন ভোমার চরণ তুমি রসমই নিধি ॥ ধাওত পীরিতি मान द्याधि তমু মন হল ভোর। সকল ছাড়িয়া ় তোমারে ভ**জি**য়া এই দশা হইল মোর॥ নব সন্নিপাতি দারুণ বেয়াধি পরাণে মরিলাম আমি। ডুবায়ে আমারে ১৫ রসের সায়রে অমর করহ তুমি ।

বেবা কিছু আমি 🥇 সব জান তুমি ভোমার আদেশ সার। ভোমারে ভব্দিয়া নায়ে কড়ি দিয়া ডুবে कि হইব পার॥ না জানি সাঁতার বিপদ পাথার সম্পত্তি নাহিক মোর। वाशनी चारमर्भ करह हशीमारम বে হয় উচিত তোর॥ ক্ষাই। জপতে ভোমার নাম বংশীধারী অফুপাম তোমার বরণের পরি বাস। তুয়া প্রেম সাধি গোরী আইমু গোকুল পুরী বরজমগুলে পরকাশ ॥ ধনি, ভোমার মহিমা জানে কে। ৫ অবিরাম যুগ শভ গুণ গাই অবিরভ • গাইয়া করিতে নারি শেষ॥ গঞ্চন-বচন ভোর শুনি স্থখে নাহি ওর स्थामग्र लागरत्र मत्राम । তরল কমল আঁখি তেরছ নয়নে দেখি ১০ विकारेयु कनरम कनरम ॥ তোমা বিমু বেবা যত পীরিতি করিমু কত সে পীরিতে না পূরল আশ। ভোমার পীরিতি বিমু স্বতন্ত্র না হইল তমু অনুভবে কৰে চণ্ডীদাস॥ ১৫

ন্ত্ৰ।
গৃহমাঝে রাধা কাননেতে রাধা
সকলে রাধারে দেখি।
শয়নে ভোজনে গমনে রাধিকা
রাধিকা সদাই মতি॥

স্নেহেক্তে রাধিকা প্রেমেতে রাধিকা রাধিকা আরতি পাশে 🖟 রাধারে ভজিয়া রাধাকান্ত নাম 🗀 : ( পেয়েছি অনেক আখে॥ জ্ঞানেতে রাধিকা খ্যানেভে রাধিকা রূপেতে রাধিকা ময়। সর্ববাঙ্গে রাধিকা স্বপ্নেছ রাধিকা সর্ববত্র রাধিকা ময়॥ আর্ডি ভক্তি শ্রামের বচন শুনি রসমই রাধা। এমন পীরিভি ১৫ চণ্ডীদাস বলে क्रमरत्र क्रमरत्र वीथा॥

161 यहहै।

উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশোরী কিশোরী হইল সারা। কিশোরী ভজন কিশোরী পূজন কিশোরী নয়ানভারা॥ কাননেতে রাধা ৫ গৃহমাঝে রাধা রাধাময় সব দেখি। গমনেতে রাধা শয়নেতে রাধা রাধাময় হল আঁখি॥ প্রেমেতে রাধিকা স্লেহেডে রাধিকা রাধিকা আরতি পাশে। রাধারে ভব্সিয়া রাধাবলভ নাম পেয়েছি অনেক আশে॥ माधुत्री छर्नित्र। শ্রামের বচন প্রেমানন্দে ভাসে রাধা। দোঁহার পীরিভি ১৫•ু চণ্ডীদাস কহে

भवार्ग भवारम बाँधा ॥ '

ू <sup>नदर</sup> यहरे।

উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশোরী কিশোরী গলার হার। কিশোরী ভঙ্গন কিশোরী পূজন কিশৌরী-চরণ সার॥ . শয়নে স্বপনে গমনে কিশোরী ভোজনে কিশোরী আগে। করে করে বাঁশী ফিরি দিবানিশি কিশোরীর অন্মরাগে ॥ কিশোরী-চরণে পরাণ সঁপেছি ভাবেতে হৃদয় ভরা। দেখো হে কিশোরি অমুগত জনে करता ना ठत्रग-हाड़ा॥ আমি পীতবাস কিশোরীর দাস ইহাতে সন্দেহ যার। কোটি যুগ যদি আমারে ভল্তয়ে ১৫ বিফল জ্জন তার॥ কহিতে কহিতে রসিক নাগর ভিতল নয়ন-জলে। চণ্ডীদাস কৰে নবীন কিশোরী वंधूदा कतिन काला॥ २०

কলাণী।

উঠিতে কিশোরা বসিতে কিশোরী
কিশোরী নয়ান-তারা।
কিশোরী ভজন কিশোরী পূজন
কিশোরী গলার হারা॥
রাধে, ভিন না ভাবিহ তুমি।
সব ভেরাগিয়া ও রাঙ্গা চরণে
শরণ লইমু শামি।।

শরনে স্থানে । সুমে জাগরণে
কন্তু না পাসরি ডোমা।
তুয়া পদাশ্রিত করিয়ে মিনতি- ১০
সকলি করিবা ক্ষমা॥
গলায় বসন আর নিবেদন
বলি যে তুহারি ঠাই।
চণ্ডীদাস ভণে ও রাঙ্গা চরণে
দয়া না ছাড়িও রাই॥ ১৫

**1**७० कांकि।

শুন স্থনাগরী রাই। ভোমার মহিমা এ রস-চাতুরী সদা মুরলীতে গাই॥ সদালই নাম অতি অসুপাম ্ করে নিশি দিশি জপি। রাধা নাম চুটি প্রেমের ক্লাকুর व्यापन क्षरत्र त्रापि॥ উঠিতে বসিতে আন নাহি চিতে নিরস্তর ভোমা দেখি। (यम रम ठाँरमञ्ज ठरकात लालरम ১० সদাই বসিয়া থাকি॥ লুবধ চরিত তেন মোর মন পরাণ ভোমার পাশে। মনমথ হাতী অঙ্কুশ না মানে

আনে কি জানয়ে লেহা। তুঁত সে জানয়ে দোঁহার মহিম। আনে কি জানয়ে ইহা॥

পিত চাহে রুস রোবে॥

শুন স্থনাগর

চণ্ডীদাস কৰে

¢

16) काशि।

অভি অনুপম ভোমার বরণ যে দিন না দেখি ভোয়। **অ**তি মনোহর তুমি সে চম্পক নিরখিতে আঁখি রোয়॥ ভোমার বেণীর চাঁচর চিকুর ৫ যদি বা পড়য়ে মনে। काल जानशानि . এलाইয়ে দেখি আপন মনের সনে॥ যবে পড়েমনে **শ্রীমুখম গুল** নিরখি গগন-শশী। >0 ভার পানে চেয়ে ভারে নির্থিয়ে তবে নিবারণ বাসি॥ তোমার নয়ন চঞ্চল স্থন **म्या अल्ला अल्ला** তবে পুরে মন দেখি নিবারণ ১৫ • খঞ্চন পাখীর সনে॥ চণ্ডীদাস কৰে হেন মনে লয়ে 😎ন রসময় কাসু। গুই এক দেহ অভি বড় লেহ

> **16**१ কানড়া।

তবে সে কাসনে (?) মনে 🖟

রাধা বিনে জার • জান নাহি ভায়
দেখি সে রাধার রূপ।
আনন্দ-লহরী উঠে কত বেরি
অমিয়া রসের কৃপ॥
তবে সে জুড়ার দেখিরা বরণ
, মদন মোহিড মানি।

ভবে সে জুড়ায়ে সফল করিয়া জানি॥ ভোমা হেন ধন থোব কোনখানে • শুনহ স্ক্ৰিরী রাই। ' নিশি দিশি ভোমা ধিয়াই অস্তরে আন কিছু মনে নাই ॥ স্বপনে নিশিতে যুমাই যখন ভোমারে দেখিয়ে থাকি। निँए घरहडन **मिथिए मिथिए ३**৫ उथनि भिलारः आँथि॥ চাহিতে তখন স্থপন আপন কখন ইহাই নয়। তখনি উঠিয়া বিরলে যাইয়া অধিক ঘোষণা হয়।। চণ্ডীদাস কহে ঐছন পীরিভি জগতে পূরিত ভেল। দোঁহার পীরিভি আরভি শুনিভে সবে আনন্দিত ভেল।

ন্ধী। রাই বিনে মনে

দেখিলে জ্ড়ায়ে আঁখি।
তোরে রসমই যবে নাহি দেখি
মরমে মরিয়া থাকি॥
তোমার শীরিতি হুখের জারতি ৫
তো বিনে নাহিক জান।
'তুরা সাধে রাধে পীতের বসন
পরিয়ে করিয়ে গান॥
তোমার মহিমা ও স্থুখ গরিমা
রাধার জাঁধর দুটি।

সকলি আঁধার

শানি স্ত্রে .. করে কর ধরি
দিরবধি স্পানি ।
রাধা বিনে যত সে সব নৈরাশ
আশবাস. তুয়া পাশ।
ভূমি মস্ত্র তুমি স্থধাকর ১৫
তুমি উপাসনা বাস॥
চণ্ডীদাস বলে বড় অদভূত
দোহার মহিমা রীত।
কেবা ইহা তত্ত্ব বুঝিব বেকত
যার আছে রসে চিত॥ ২০
১৪। আশবাস আখাস।

## রাগাত্মিক পদ।

168

নিত্যের আদেশে বাশুলী চলিল সহজ্ঞ জানাবার তরে। নানুৰ গ্রামেতে ভ্ৰমিতে ভ্ৰমিতে প্রবেশ যাইয়া করে॥ চাপড় মারিয়া वाश्वनी चानित्रा চণ্ডীদালে কিছু কয়। সহজ ভজন করহ যাজন ইহা ছাড়া কিছু নয়॥ ছাড়ি জপ তপ করহ আরোপ একতা করিয়া মনে। যাহা কহি আমি তাহা শুন তুমি **७न** इ कि विषे क्रिक করিয়া একত্রে • • বস্থতে গ্রহেতে ভক্তৰ ভাহারে নিভি। বাণের সহিতে সদাই যুক্তিতে ১৫ সহক্ষের এই রীভি।

मिन्निन (मर्टनरङ না যাবে কদাচিতে বাইলে প্রমাদ হবে। এই কথা মনে ভাব রাত্রি দিনে' আনন্দে থাকিবে তবে॥ রতি পরকীয়া যাহারে কহিয়া সেই সে আরোপ সার। ভজন তোমারি রজক-ঝিয়ারি রামিণী নাম বাহার ॥ বাশুলী আদেশে কৰে চণ্ডীদাসে ২৫ শুন হে দ্বিজের স্থত। এ কথা লবে না না জানে যে জনা সেই সে কলির ভূত॥

116

চণ্ডীদাস কহে শুনহ মাতা। কহিলে আমারে সাধন-কথা ॥ º সাতাশি উপরে তিনের স্থিতি। সে তিন রহয়ে কাহার গতি॥ এ ভিন ছুয়ারে কি বীঞ্চ হয়। कि वीक शांधिया जांधक क्य ॥ রতির আকৃতি বলিয়ে যারে। রসের প্রকার কছিব মোরে॥ কি বীজ সাধিলে সাধিব রভি। কি বী**জ ভজিলে** রসের গভি॥ 5 সামান্ত রভিতে বিশেষ সাধে। সামান্ত সাধিতে বিশেষ বাধে॥ সামান্ত বিশেষ একতা রভি। এ কথা শুনিয়া সন্দেহ মতি॥ সামান্ত রভিতে কি বীব্দ হয়। বিশেষ রভিতে কি বীজ কয়॥ '

२०

٥ د

20

२०

সামাশ্য রসকে কি রস বাজে।
কি বীজ প্রকারে বিশেষ মজে।
তিনটি ছুয়ারে থাকয়ে যে।
সেই তিন জন নিড্যের কে॥
চণ্ডীদাস কৰে কহবে মোরে।
বাংগলী কহিছে কহিব তোরে॥

#### 166

বাশুলী কহিছে শুন হে দ্বিজ। কহিব তোমারে সাধন-বীজ ॥ প্রথম তুয়ারে মদের গতি। বিতীয় তুয়ারে আসক স্থিতি॥ তৃতীয় হুয়ারে কন্দর্প রয়। কন্দর্প রূপেতে শ্রীকৃষ্ণ কয় ॥ আসক রূপেতে শ্রীরাধা কই। মদরূপ ধরি আমি সে হই।। সাতাশী আঁখেরে সাধিবে তিনে 🕽 ু একত্র করিয়া আপন মনে॥ রতির আকৃতি আসক রয়। রদের আকৃতি কন্দর্প হয়।। ভিনটি আঁখরে রভিকে যজি। পঞ্চম আঁখরে বাণকে ভঞ্জি।। দ্বিতীয় আসকে সামান্ত রতি। ভবে সে পাইবে বিশেষ স্থিতি॥ চতুর্থ আঁখর সামাশ্য রস। ভাছাতে কিশোরা কিশোরী বশ ॥ वालनी कहाय अहे तम मात्र। এ রস-সমুদ্র বেদান্ত পার॥

### 161

এ দেহে সে দেহে একই রূপ। ভবে সে জানিবে রসেরই কৃপ॥ এ বীজে দে বীজে এক**ডा** হবে। তবে সে প্রেমের সন্ধনি পাবে॥ त्म वीक विकास এ वीक जरकं। সেই সে প্রেমের সাপরে মজে। রভিতে রসেতে একতা করি। সাধিবে সাধক বিচার করি॥ বিশুদ্ধ রতিতে বিশুদ্ধ রস। ভাহাতে কিশোরা কিশোরী বশ। বিশুদ্ধ রতিতে কারণ কি। সাধহ সভত রজক-ঝি॥ সাতাশী উপরে তাহার ঘর। তিনটি তুয়ার তাহার পর॥ বাকে মিশাইয়া রামিণী যঞা। 30 রসিকমগুলে সভত ভল ॥ বিশুদ্ধ রভিতে বিকার পাবে। সাধিতে নারিলে নরকে যাবে॥ বাশুলী কহিছে এই সে হয়। চন্ত্ৰীদাস কহে অস্তথা না হয়॥ २०

### 966

সরূপে অবোপ যার রসিক নাগর ভার প্রাপ্তি হবে মদনমোহন। গ্রামা দেব বাশুলীরে ফিজাস গে করকোড়ে রামী কহে শৃঙ্গার সাধন॥ বাশুলীর পায় ধরে ৫ চ্লীদাস করলোডে মিনতি করিয়া পুছে বাণী। বাউল হইসু অভি-শুন মাডা ধর্ম্মতি কেমনে সুবুদ্ধি হবে প্রাণী॥ - 🕐 হাসিয়ে বাশুলী কয় শুন চণ্ডী মহাশয় ভামি থাকি রসিক নগরে। সে গ্রামে দেবতা আমি ইহা জানে বুজকিনী किकांत्र (१ यज्य जारादा ॥

·411

সে দেশের রঞ্জকিনী হয় রসের অধিকারী
রাধিকাস্বরূপ তার প্রাণ।
ভূমি ত রমণের গুরু সেহ রসের কল্পতরু ১৫
তার সনে দাস অভিমান॥
চণ্ডীদাস কহে মাতা কহিলে সাধন-কথা
রামী সত্য প্রাণপ্রিয়া হৈল।
নিশ্চয় সাধন-গুরু সেই রসের কল্পতরু
তার প্রেমে চণ্ডীদাস মৈল॥ ২০

162 .

শুন রঞ্জিনী রামি।

, ও চুটি চরণ শীতল জানিয়া
শরণ লইমু জামি॥

তুমি বেদবাদিনী হরের ঘরণা

তুমি সে নয়নের তারা। ৫
তোমার জজনে ত্রিসন্ধ্যা যাজনে

তুমি সে গলার হারা॥

রজ্জিনী-রূপ কিশোরীস্বরূপ
কামগন্ধ নাহি তায়।

রজ্জিনী-প্রেম নিক্ষিত হেম ১০

ব্যু চন্ডীদাস গায়॥

110

এক নিবেদন করি পুন: পুন:

শুন রঞ্জিনী রামি।

যুগল চরণ শীতল দেখিয়া

শরণ লইলাম আমি ॥

রক্জিনী-রূপ কিশোরী-স্বরূপ ৫০

কামগন্ধ নাহি তায়।

না দেখিলে মন করে উচাটন
দেখিলে প্রাণ স্কুড়ায়॥

তুমি রজকিনী আমার রম্ণী তুমি হও মাতৃ পিতৃ। , ১৯ ত্ৰিসন্ধ্যা বাজন ভোমারি ভঙ্গন তুমি বেদমাভা গায়ত্রী ॥ তুমি বাগবাদিনী হরের ঘরণী তুমি সে গলার হারা। তুমি শ্বৰ্গ মৰ্ত্ত পাতাল পর্ববত ১৫ তুমি সে নয়ানের ভারা॥ ভোমা বিনে মোর সকলি আঁধার দেখিলে জুড়ায় আঁখি। रय मित्न ना ८मिथ 😗 ठाँम-वमन মরমে মরিয়া থাকি॥ ও রূপমাধুরী পাসরিতে নারি कि मिरत्र कतिव वर्ग। তুমি সে তন্ত্ৰ তুমি সে মন্ত্র তুমি উপাসনা-রস ॥ ভেবে দেখ মনে এ তিন ভুবনে ২৫ কে আছে আমার আর। ' বাশুলী আদেশে কহে চণ্ডীদাসে ধোপানী-চরণ সার।

113

পুন আর বার আসি তরাতর
বাশুলী জগতমাতা।
ধরিয়া রামিণী কহিছেন বাণী
শুনহ জামার কথা॥
বাহা কহি বাণী শুনহ রামিণী ব
এ কথা ভূবন-পার।
পরকীয়া রতি করহ আরতি
সেই সে ভজন-সার॥
চণ্ডীদাস নামে আছে একজন
ভাহারে আরোপ কর। . ১০

30

20

<sup>7</sup>নিত্যধামে যাবে অবশ্য করিলে আমার বচন ধর। ্নেত্রে বেদ দিয়া সদাই ভঞ্জিবা আনন্দে থাকিবা তবে। সমুদ্র ছাড়িয়া नत्रक याहेवा ১৫ জন্ধন নাহিক হবে॥ আৱ তিন দিয়া বেদে মিশাইয়া সতত তাহাই যজ। নিত্য একমনে . ভাব রাত্রি দিনে মম পদ সদা ভক্ত ॥ २० প্রাপ্তি নাহি মিলে ব্যভিচারী হৈলে নরকে যাইবে ভবে। ভাব রাত্রি দিনে রতি শ্বির মনে সহজ পাইবে তবে॥ শুনছ রামিণী ২৫ আর এক বাণী এ কথা রাখিও মনে। কহে চণ্ডীদাসে বাশুলী আদেশে এ কথা পাছে কেহ শুনে॥

192

কহিছে রজকিনী রামী শুন চণ্ডীদাস তুমি নিশ্চয় মরম কহি জানে। সভ্য করি মান ভাহা বাশুলী কহিছে যাহা বস্তু আছে দেহ বর্ত্তমানে ॥ আমি ত আশ্রন্থ হই বিষয় ভোমারে কই ৫ রমণকালেতে গুরু তুমি। ভোমার রভি ধ্যান আমার স্বভাব মন তেঁই সে ভোমায় গুরু করি মানি॥ রসিক নগরে যাব সহজ মানুষ হব থাকিব প্রণয়-রস-ঘরে। শ্ৰীরাধিকা হবে রাজা হইব ভাহার প্রকা **फुविव तरमब मरतावरत** ॥

সেই সরোবরে সিয়া মনপন্ম প্রকাশিয়া
হংস প্রায় হইয়া রহিব ।

শ্রীরাধা-মাধব সঙ্গে আনন্দে কৌতুক রঙ্গে ২৫
জনমে মরণে তুয়া পার ॥
শুন চঞীদাস প্রভু জজন না হয় কভু
মনের বিকার ধর্ম জানে ।
সাধন শৃক্ষার রস ইহাতে হইবে বশ
বস্তু আছে দেহ বর্ত্তমানে ॥ ২০

**ह** छोमान करह जुभि रन खक । তুমি দে আমার কলপভরু॥ যে প্রেম-রতন কহিলে মোরে। কি ধন রভনে তুষিব ভোরে॥ ধন জন দারা সোঁপিতু ভোরে। দয়া না ছাডিছ কখন মোরে॥ ধরম করম কিছু না জানি। কেবল ভোমার চরণ মানি॥ এক নিবেদন ভোমারে কব। মরিয়া দোঁহেতে কি রূপ হব॥ বাংগলী কহিছে কহিব কি। মরিয়া হইবে রজক-ঝি॥ পুরুষ ছাড়িয়া প্রকৃতি হবে। একদেহ হয়ে নিভ্যেতে যাবে॥ চণ্ডীদাস প্রেমে মুচ্ছিত হইলা। বাকলী চলিয়া নিভোতে গেলা॥

এই সে রস নিগৃঢ় ধন্ত। ব্ৰহ্ম বিনা ইহা না কানে অন্ত। চুই রসিক হইলে কানে। সেই ধন সদা বড়নে আনে॥

٥۷

নরুপে নরনে রাখিবে পীরিতি।
রাগের উদয় এই সে রীতি॥
রাগের উদয় বসতি কোথা।
মদন মাদন শোষণ বথা॥
মদন বৈসে বাম নরনে।
মাদন বৈসে দক্ষিণ কোণে॥
শোষণ বাণেতে উপানে চাই।
মোহন কুচেতে ধরয়ে ভাই।।
ন্তান্ত্রন শুঙ্গারে সদাই স্থিতি।
চণ্ডীদাস কহে রসের রতি॥

116

কাম আর মদন চুই প্রকৃতি পুরুষ। ভাহার পিতার পিতা সহত মানুষ॥ **ভাহা দেখ দুর নহে আছয়ে নিকটে।** ত্রকাণ্ড ভিতরে তেঁহ রহে চিত্রপটে ॥ সপের মস্তকে যদি রছে পঞ্চ মণি। কীটের স্বভাব-দোষে তাহে নহে ধনী॥ গোরোচনা জন্মে দেখ গাভীর ভাগুরে। ভাহার যভেক মূল্য সে জানিতে নারে॥ স্থন্দর শরীরে হয় কৈতবের বিন্দু। किতव रिटाल रग्न गत्रालत्र जिस् ॥ >0 व्यक्ति ज्ञान विश्व विश्व कि विश्व कि विश्व विश् নাড়িলের রক্ষের মূল ফল নাহি পাই ॥ निजात आर्वाम (एथ कशाल शात ८० दा। চিত্রপটে নৃত্য করে ভার নাম মেয়ে॥ . निर्मित्यारा कुक मात्री त्मरे कथा क्या। ় চণ্ডীদাস কৰে কিছু বাশুলী স্থপায়॥

> শৃঙ্গার রস বুঝিবে কে। সব-রস-নার শৃক্ষার এ'॥

শৃঙ্গার রসের মরম বুকে।

মরম বুঝিয়া ধরম বজে।

রসিক ভকত শৃঙ্গারে মরা।

ককল রসের শৃঙ্গার সারা॥

কিশোর কিশোরী তুইটি জন।

শৃঙ্গার রসের মূরতি হন॥

তুরু বস্তু এবে বলিব কার।

বিরিক্ষি ভবাদি সীমা না পার॥

কিশোরা কিশোরী রাহাকে ভজে।

তুরু বস্তু সেই সদা বজে॥

চন্দ্রীদাস কহে না বুঝে কেহ।

যে জন রসিক বুঝরে সেই॥

111

রসিক রসিক সবাই কহয়ে কেহ ত রসিক নয়। वृतिया (मिश्टम ভাবিয়া গণিয়া কোটিতে গোটিক হয়॥ मिश (इ. त्रिक विनव कारत । রসেতে মিশায় বিবিধ মশলা রসিক বলি যে তারে॥ রস পরিপাটী স্থবর্ণের ঘটা সম্মুধে পুরিয়া রাখে। খাইতে খাইতে পেট না ভারিবে >• ভাহাতে ডুবিয়া থাকে॥ त्रक्रे भिवरम সেই রস পান 🔧 অঞ্চলি পুরিরা খায়। দ্বিগুণ বাড়ায়ে খরচ করিলে উছলিয়া বহি বার # 34 চণ্ডীদাস কহে শুন রসবডি ভূমি সে রসের কৃপ।

রসিক জনা রুঁসিক না পাইলে • বিশুণ বাড়য়ে ছখ ॥

196

রসিক নাগরী রসের মরা।
রসিক জমর প্রেম পিয়ারা॥
অবলা মূরতি রসের বাণ।
রসে ডুবুঁ করে পরাণ॥
রসবজী স্দা হৃদয়ে জাগে।
দরশ বাড়ায়া পরশ মাগে॥
দরশে পরশে রস প্রকাশ।
চণ্ডীদাস করে রস-বিলাস॥

113

রসের কারণ রসিকা রসিক কায়াটি ঘটনে রস। রসিক কারণ রসিকা হোয়ত • যাহাতে প্রেম-বিলাস।। স্থলত পুরুষে কাম সৃক্ষ্ম গতি স্থলত প্রকৃতি রতি। मृंहक घटेरन সে রস হোরত এবে ভাহে নাহি গভি॥ বিন হি কখন দৃঁহুক জোটন না হয় পুরুষ নারী। প্রকৃতি পুরুষে যো কিছু হোয়ত রভি প্রেম পরচারি॥ পুরুষ অবশ 🔹 প্রকৃতি সবশ অধিক রস যে পিয়ে। রতি স্থকালে অধিক স্থহি ১৫ ৫

তা নাকি পুরুষে পায়ে॥

বাণ বে কামের হয়।

নিক্ষয়ে বাণ

দুঁছক নয়নে

্ৰাছিক কখন রভিন্ন যে বাণ তবে কৈছে নিক্ষয়।। কাম দাবানল রভি সে শীঙল मिल धार्यः भाजः कून कार्ठ थए (श्रम रव व्यारभग्न পচনে পীরিভি মাত্র॥ লোভ উপজিয়া ২৫ পচনে পচনে যবে ভেল জবমর। বিলাসে উপজে সেই বস্তু এবে তাহারে রস যে কয়॥ বাশুলী আদেশে চণ্ডীদাস ভথি রূপনারায়ণ সঙ্গে। দুঁত আলিসন করল তখন ভাগল প্রেম-তরঙ্গে ॥

960

প্রেমের আকৃতি দেখিয়া মূর্ডি মন যদি ভাতে ধায়। রসিক কেমন তবে ত সে জন বুঝিতে বিষম ভায়।। আপন মাধুরী দেখিতে না পাই ৫ ममारे अस्त ब्राम । করয়ে ভাবনি আপনা আপনি कि देश कि देश गता॥ মাতুষ অভাবে মন মরিচিয়া তরাসে আছাড় খায়। আছাড় খাইয়া করে ছট্ফট্ कोत्रत्स्य मतिवा वात्र ॥ **জানে কোন জন** - ভাহার মরণ কেমন মরণ সেই। रमहेरम जीवरव ১৫ যে জনা জানয়ে

मत्रण वाष्ट्रिया लाहे।।

**विं। विंदा प्रति को को दिन को को** লোকে তাহ। নাহি জানে। প্রেমের আকৃতি করে ছট্ফটি . চতীদাস ইহা ভণে॥ २० 112 প্রেমের যাজন শুন সর্ববঞ্চন অতি সে নিগুঢ় রস। যখন সাধন করিবা তখন এড়ায় টানিবা শাস॥ . তাহা ছইলে মন বায়ু সে ৫ আপনি হইবে বশ। তাহা হৈলে কখন না হইবে পতন জগৎ ঘোষিবে যশ। বেদবিধি পার এমন আচার যাজন করিবে যে। ١. ব্রঞ্জের নিত্যধন পায় সেই জন তাহার উপর কে॥ नमानम कार्य नग्रान (पथर्य যুগল কিশোর রূপ। প্রেমের আচার নয়ন-গোচর ১৫ জানয়ে রসের কৃপ। চণ্ডীদাস কয় নিভ্য বিলাসময় হৃদয় আনন্দ ভোরা। নয়নে নয়নে থাকে গুই জনে ষেন জীয়ন্তে মরা॥ . 168 শুন শুন দিদি প্রেম হুধানিধি প কেমন তাহার জল। কেমন ভাহার গভীর গভীর উপরে শেহালা দল।

কেমন ডুবারু : ডুবেছে ভাষাতে ৫ ना कानि कि नागि पूरव। ভূবিয়া রভন চিনিতে নারিলাম ' পড়িয়া রহিলাম ভবে॥ আমি মনে করি আছে কত ভারি मा जानि कि धन व्याटह। নন্দের নন্দন কিশোরা কিশোরী **চমकि** চমकि शास्त्र॥ স্থীগণ মেলি 'দেয় করতালি यक्तरथ मिभारम बग्र । यक्तभ जानिएय क्रांभ केश केश केश ভাবিয়ে দেখিলে হয় ॥ ভাবের ভাবনা আশ্রয় যে জনা ডুবিয়ে রহিল সে। আপনি তরিয়ে জগৎ তরায় তাহাকে তরাবে কে॥ চণ্ডীদাস বলে লাখে এক মিলে कौरवत्र लागरत्र थान्छ। শ্রীরূপ করুণা যাহারে হইয়াছে সেই সে সহজ বাদ্ধা॥

আপনা বুঝিরা স্থজন দেখির।
পীরিতি করিব তার ।
পীরিতি রতন করিব যতন
বদি সমানে সমানে হয় ॥
স্থি হে, পীরিতি বিষম বড় ।
যদি পরাণে পরাণে মিশাইতে পারে
তবে সে পীরিতি দঢ় ॥

ভ্রমরা সমান আছে কভ জন মধুলোভে করে শ্রীত।

্ উড়িরে পলার মধু পান করি এমতি ভাহার রীভ ॥ বিধুর সহিত কুমুদ পীরিতি वन्रि चरनक मृद्र । পীরিতি হইলে युक्त सुक्त এমতি পরাণ ঝুরে॥ 20 মুজনে কুজনে পীরিতি হইলে সদাই তুখের ঘর। যে করে পীরিতি আপন **সুখেতে** . তাহারে বাসিব পর ॥ कीवरन मद्राप २० भत्राम भन्नाम कीयुट्ड मित्रल यात्रा। নিতৃই নৃতন পীরিতি রতন যতনে রাখিল তারা॥ স্থজন বাঁধিতে আপন পীরিভি স্ক্রনে পীরিতে আশ। ₹ @ ও যেন মো বিনে মজল অর্থনি • এমতি দোহার ভাব॥ অনস্ত পীরিতি মুজরে মুজনে শুনিতে বাড়ে যে আশ। ভাহার চরণে নিছনি লইয়া ৩০ करह चिक ठखीमान ॥ २४-१)। चुक्त चुक्त অনস্থ পীরিভি ভনিয়া বে করে আশ।

তাহার নিছনি দিয়ে ত পরাণী करह विक हशीमात्र ॥ ... शाधाखत्र ।

শুন গো সঞ্জনি আমার বাত। পীরিভি করবি স্থকন সাত॥ স্থুজন পীরিতি পরাণ রেখ। **পরিণামে कछू ना ছবে** টোট ॥

118

ষ্বিতে স্বিতে চন্দ্ৰ সার : বিগুণ সৌরভ উঠয়ে তার ॥ চণ্ডীদাস কহে পীরিভি রীভি। বুঝিয়া সঞ্জনি করছ প্রীতি॥

নিজ দেহ দিয়া ভজিতে পারে। সহজ পীরিতি বলিব তারে॥ সহজে রসিক করয়ে প্রীত। রাগের ভঙ্কন এমন রীত। এখানে সেখানে এক হইলে। সহজ পীরিতি না ছাড়ে মৈলে॥ সহজ বুঝিয়ে যে হয় রত। তাহার মহিমা কহিব কত॥ **ठखीमान कटर महक वो छ।** বুঝিয়ে নাগরী করহ প্রীত॥

পীরিতি করিয়া ভাঙ্গয়ে যে। সাধন অঙ্গ না পায় সে॥ প্রেমের পীরিতি মাধুরীময়। नत्मत नम्मन कर्डक क्या। রাগ সাধনের এমনি রীত। সে পথী জনার তেমতি চিত।। नकन ছाড়िन याशत उद्य। তাহারে ছাড়িতে সাধ যে করে॥ व्यापि हखीमान हात्रि स्न तुकान। মৃচ্ উঠাইল জানিল মান ॥ ' ৮। नाय यः..नारम-- भागास्त्र। ১-১০। আদি চঙাদাসে চারি স্ব্বান। पांछे छेठाहेन (यथन शाम s .... शाठी खत्र।

٥ (

11	1	প্রেদের মাঝারে <sup>`</sup>	পুলকের স্থান ৫
<b>্লে</b> মের পীরিভি <sup>°</sup>	কিনে উপজিল	পুলক উণ	। পরে ধারা।
', প্ৰেম সে বৰি	নৰ কাৰে।		রসের স্থান-
কেবা কোথা পাইল	কেবা সে দেখিল	এ হুখ জ	
এ কথা বলিব কারে॥			<b>ফুলের বস</b> তি
পাতের ফুলে 🕠	ফুলের কিরণ ৫		পরে গন্ধ। ১০
ভাহার মাঝারে যেই।			এ তিন আখর
ভাহাতে অনেক	য <b>ুনে নিঙ্গাড়ে</b>		बिर <b>७ धन्म</b> ॥
যুবক রসিক	<b>म्हि ॥</b>		় ফলের বস্তি
প্রেমের চাতুরি	চতুর হইয়।	ভাহার উ	
তিনের কাছে	তে থাকে। ১•	ঢেউর উপর	ঢে <b>উর ব</b> সতি ১৫
চারিটি আখর	হরিতে পুরিতে	এ কথা জানয়ে কেউ।।	
ভাহে যেবা ব	াকি থাকে॥		ছুয়ের বস্তি
ভাহার বাকিতে	প্রেমের আখর	` কে <b>হ</b> কো	
পীরি <b>ভি আং</b>	পীরিতি আখর <b>জড়।</b>		পীরিতি বৈসয়ে
সকল আখর	क्ष्णु कति (मथ ) ८		क्षांत्र खर्म ॥ २०
প্রেমের আখ	त्र मण् ॥	•	
হয়টি আখর	मृत कति (एथ		, शाठीखर ।
ভাহার ঘুচাই छুই।			র ধারার বস্তি
	এ কথা বুঝিবে		বুৰয়ে কারা।
	त्वरें॥ २∙		র রসের স্থান দানিরে যোরা » পাঠান্তর।
১ ৷ একসংখ্যাত নিজ ক	tra i ettima i	ঞ্চন ক্রের…কুলের ১ ক্রের…কুলের	
		১৭-১৮। <b>ছবের উপরে</b>	
<ul><li>कारत—छारत</li></ul>	,,		
৫-৬। পাতের মূলে	ভ্ৰমরা বুলে	কেছ কিছু ইহা লানে। ,, ১৯। উপরে ∵ৰাবারে ,,	
e-७। পাতের ফুলে স্থলের কি		३३। ७५(४ ः नामा	C9 ,,
1। ভাহাতে—কথাট			
'		•	•
166			163
পীরিভি উপরে	পীরিডি বৈসঙ্গে	ধরণী উপরে ধরিবে ঢারি।	
ভাহার উপরে ভাব।		ভবে সে চিনিবে ছুগধ বারি॥	
	•	<b></b>	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

ভাবের বসভি

্ ভাহার সপরে লাভ।

ভবে সে চিনিবে ছুগধ বারি॥ রাজ রূপা চিনিৰে গার। কুটিল চিনিবে কোন উপার। ¢

२०

আগেতে কহে মধুর বাণী। পরের হৃদয় পাতিরা আনি॥ " আপন আশা পরকে দেই। চণ্ডীদাস কৰে কুটিল সেই।

ভাবের অন্তরে ভাবের উদয় ভাহার উপরে ভাব। ফুলের মধু • চাঁপার পাখড়ি গব্ধেতে দিল লাভ। বড় বড় হ্মন রসিক কহরে রসিক কেহ ত নর। তর তম করি বিচার করিলে কোটিকে গুটিক হয়। রসের উদয় কোন রসে কোন কোন স্থা কোন স্থ। পশিরা না পিরে ভাহার মাধুরী ু তা বিজ মনের ইব।

ভাহার উপরে কে। ও রূপ দেখিরে মরম করয়ে ১৫ त्रजिक कहांत्र (म ॥ মৃত্তিকা উপরে আর এক মেওয়া ভাহার উপরে হুধা। স্থার উপবে বে মিক্টতা আছে वित्र भनी शिद्य खूमा॥

স্বান্ন উপরে কি বা সে কামরু

133

সভের সঙ্গে পীরিভি করিলে সভের বরণ হয়।

অসভের বাভাস অক্সেতে সাগিলে সকলি পলারে বায়॥ সোনার ভিতরে তামার বসতি ৫ (यमन वत्रण (प्रश्रि। রাগের ঘরেতে বৈদিগ থাকিলে রসিক নাহিক্ দেবি॥ রসিকের প্রাণ যেমতি কররে এমতি কহিব কারে। এমতি বুঝায়ে **ढेलिया ना ढेटन** মরম কহিব ভারে॥

যাহার দেখিব এমতি করণ ভাহার নিকটে বসি।

कन्द्रम कन्द्रम ३० চণ্ডীদাস কয় হয়ে রব তার দাসী॥

132

সহজ আচার সহজ বিচার महस्र विलाख कांग्र। কিসের গঠন কেমন বরণ বিবরিয়া কহ ভায়॥ কহিতে লাগিল ৫ শুনি নন্দস্থত র্ভন বৃক্তামু-ঝি। কোণা ভার শ্বিভি সহজ পীরিতি আমি না জেনেছি শুনেছি। আনলের আলস কীরোদ সায়র প্রেমবিন্দু উপজিল। ১০ গম্ম পদ্ম হয়ে কামের সহিতে বেগেতে ধাইয়া গেল।।

বিজুরি জিনিয়া বরণ বাহার . কুটিল স্বভাব বার।

कतात छमत्र >१ वांचात्र क्षप्रत्य লে আজ করয়ে ভার ॥

এমতি সাচার ভলন বে করে ্ শুনহ রসিক ভাই। - চণ্ডীদাস কহে ইহার উপরে আর দেখ কিছু নাই॥ ર• 130 সহজ সহজ সহজ কহয়ে সহজ জানিবে কে। তিমির অন্ধকার যে হইয়াছে পার সহজ জেনেছে সে॥ চাঁদের কাছে অবলা আছে ৫ সেই সে পীরিতি সার। বিষে অমৃততে মিলন একত্রে কে বুঝিবে মরম তার॥ বাহিরে ভাহার একটি দুয়ার ভিতরে তিনটি আছে। চতুর হইয়া তুইকে ছাড়িয়া থাকিবে একের কাছে। অভি সে রসাল যেন আম্রফল वाहित्त कूनी छाल क्या। ইহার আসাদন বুঝে যেই জন ১৫ করহ তাহার আশা॥ অভাগিয়া কাকে স্বাত্ন নাহি জ্বানে भक्षरय निरम्बत करन। রসিক কোকিলা জ্ঞানের প্রভাবে মজয়ে চ্ত-মুকুলে॥ ২০ নবীন মদন আছে একজন . . ় শোকুলে ভাহার থানা। কামবীজ সহ ব্ৰজ-বধ্গণ , , করে তার উপাসনা।। महक कथां जि मतन कति ताथ २० ে শুন লো রহুক-বি।

वाक्षमी व्यातमार्थं व्यानित्व वित्यत्व আমি আর বলিব কি॥ রূপ করুণাতে পারিবে মিলিভে चुिंदिव मरनत्र थान्ना। কহে চণ্ডীদাস পুরিবেক আশ তবে ত খাইবে স্থধা ৷৷

138

সই, সহজ মাতুষ নিভ্যের দেশে। মনের ভিতরে কেমনে আইসে।। ব্যাসের আচার করিবে থেই। বিরকা উপরে ষাইবে সেই॥ রাগতত্ত্ব লইয়া যে জন ভঙ্গে। **(महे (म छाहात मकान भूँ एक ।**। সহজ ভজন বিষম হয়। অসুগত বিনা কেছ না পায়।। ं ठछीमांत्र वर्ल এ त्रांत कथा। বুঝিলে পাইৰে মরম-ব্যথা ॥ \*

126

বেক্ষাণ্ড ব্যাপিয়া আছুয়ে যে জন কেহ না দেখয়ে তারে। প্রেমের পীরিভি যে জন জানয়ে সেই সে পাইতে পারে॥ পীরিভি পীরিভি তিনটি আখর ৫ ব্যানিবে ভব্দন-সার। গাগ-**মার্গে বেই** ' ভজন করুয়ে প্রাপ্তি হইবে ভার॥ মৃত্তিকার উপরে জলের বসতি তাহার উপরে ঢেউ। ভাহার উপরে পীরিভি বসভি তাহা কি জানয়ে কেউ॥

রসের পীরিভি . রসিক জানয়ে রতি আযোদন ় কুরহ বতন সধীর সঙ্গিনী হবে ॥ . রস উগারিল কে। দেহ রতি ক্ষয় কুপত রভি হয় গোলোকে রহিল সে।। সাধক সাধন পাকে। পুত্র পরিজন সংসার আপন চণ্ডীদাস কয় বিনা ছঃখে নয় ১৫ / किट्नात्री हतन रहेट्य ॥ সকল ত্যজিয়া লেখ। পীরিতি করিলে তাহারে পাইবে মনেতে ভাবিয়া দেখ।। পীরিভি পীরিভি তিনটি আখর কাতরা অধিকা দেখিয়া রাধিকা পীরিতি ত্রিবিধ মত। বিশাখা কহিল ভায়। ভলিতে, ভলিতে নিগৃত হইলে চিতে এত ধনী ব্যাকুল ছইলে হইবে একই মত॥ ধরম সরম যায়॥ সকল প্রধান ২৫ পরকীয়া ধন ধনি, কছব ভোমার ঠাঁই। যভন করিয়া লই। পরকীয়া রস করিতে হে বশ ভঙ্কন করিলে নৈষ্ঠিক হইয়া অধিক চাতুরী চাই ॥ পদ্ধতি সাধক হই॥ ষাইবি দক্ষিণে থাকিবি পশ্চিমে পদ্ধতি হইয়া রস আস্থাদিয়া বলিবি পুরবমুখে। ৈ নৈষ্ঠিকে প্রবৃত্ত হয়। গোপন পারিতি গোপনে রাখিবি ১০ ভাছার চরণ হৃদয়ে ধরিয়া থাকিবি মনের স্থথে॥ দ্বিজ চণ্ডীদাস কয়॥ গোপন পীরিতি গোপনে রাখিবি সাধিবি মনের কাজ। সাপের মুখেতে ভেকেরে নাচাবি এ বড় কঠিন সাধন শরণ ভবে ভ রসিকরাজ। वज़्हे विषम माग्र । যে জন চ'তুর স্থমেরু-শিখর যদি হয় ভঙ্গ নব সাধুসক সূতায় গাঁথিতে পারে। জীবের জনম তায়। মাকসার জালে মাতক বাঁধিলে অনর্থ নিবৃত্তি ° সভে দূর গতি ৫ এ রস মিলয়ে ভারে । • ় • ' ভঞ্চন ক্রিয়াতে রভি। পীরিতি যা সনে আদর সে ধনে ২০ সতত না লবি ঘর। প্রেম গাঢ় রতি হয় দিবা রাতি হয় সে ভাহাতে প্রীতি॥ অন্তরে পরাণ বাঁটিয়া দেওবি আসক উকত সবে দূরগত वाहिएत वाहिवि शत्र ॥ \* · স**দ্পুরু আশ্রায়ে হবে।** 

বেদ বেদার্ত্তর না করিবি বিচার ना লৈৰি বেদে বিরস। ₹4 না হবি অসতী হইবি সভী না হইবি কাহার বশ ॥ হইবি কুলটা কুল ভ্যঞ্জিবি ভাবিতৈ ভাবিতে দেহা। হেরি পরপতি হেমকাস্তি রতি সপতি ভাবিবি লেহা। সিনান করিবি ৰলম্ব-লাগৱে এলাইয়া মাথার কেশ। নীরে না ভিজিবি জল না ছুইবি সম তুখ সুখ ক্লেশ। কৰে চণ্ডীদালে বাশুলী আদেশে বাশুলী-চরণে পড়ি। হইবি গিলি ব্যঞ্চন বাঁটিবি না ছুঁইবি হাঁড়ি।

मत्रम कहिएड ध्यम ना यय नाहि (वह्नविधि व्रम्। সতী বে হইবে আঞ্চনি খাইবে ना इट्ट अट्यात वर्ण ॥ বে জন যুবতী কুলবতী সভী স্থূশীল স্থুমতি যার। सपत्र-मांकाटत নায়ক লুকায়ে ভবনদী হয় পার॥ ু কুলটা হইবে কুল না ছাড়িবে ্ কগঙ্গে ভাসিবে নিভি। হবে অস্ত পতি 🥕 😗 · পাইয়া কাম রভি ভাহাতে বলাব সভী॥ न्नान मा कतिय व्यक्त ना घूरेव

ে এলাইরা মাধার কেল।

সমুদ্রে পশিব নীরে না ডিডিব ১৫
নাহি স্থপ তুপ ক্লেশ ॥
রঞ্জনী দিবসে হব পরবশে
স্থপনে রাখিব লেহা ।
একত্র থাকিব নাহি পরশিব
ভাবিনী ভাবের দেহা ॥ ২০
অন্তের পরশে সিনান করিব
তবে সে রীভি সাজে ।
কহে চণ্ডীদাস এ বড় উল্লাস
থাকিব যুবভীমাবে ॥

155

হইলে স্থাতি পুরুষের রীতি
বে জাতি নায়িকা হয়।
আঞায় হইলে সিদ্ধ রতি মিলে
কখন বিফল নয়॥
তেমতি নায়িকা হইলে রসিকা ৫
হীন জাতি পুরুষেরে।
অজাব লওয়ায় স্থাতি ধরায়
বেমন কাচ-পোকা করে॥
সহজ করণ রতি নিরূপণ
বে জন পরীক্ষা জানে। ১০
সেই ত রসিক হয় ব্যবসিক
ভিজ্ঞ চঙীদাস ভণে॥

মিলা অমিলা ছুই রসের লক্ষণ।
নায়ক নায়িকা নাম লক্ষণ কথন॥
পূর্ববরাগ হৈতে সীমা সমৃদ্ধি মান আদি।
রসের ভঞ্জিত ক্রেমে যতেক অবধি॥
পতি উপপতি ভাবে ঘাদশ বে রস।
পূন বে বিশুণ হইরা কররে প্রকাশ॥

> 0

কল্মার বিবাহ আর অল্মের উপপতি।
ভাব-ভেদে এই হর চবিবশ রস-রীতি॥

পূর্ণ চারি গুণ করি হয় ছেয়ানই।
অনুকূল দক্ষিণ খৃষ্ট আর শঠ তাই॥
এই সব নাম-ভেদে নায়কের ভেদ।
পূন হয় তাহার লক্ষণ বিভেদ॥
এই সব গুণ কৃষ্ণচন্দ্রে একা বর্তে।
চন্ট্রীদাসে কহে রস-ভেদ এক পাত্রে॥

10

প্রবর্ত্ত দেহের সাধন করিলে কোন বরণ হব।
কোন কর্ম্ম বাজন করিলে কোন বৃন্দাবনে বাব॥
নব বৃন্দাবন নব নাম হয় সকল আনন্দময।
কোন বৃন্দাবনে ঈশ্বরে মামুষে মিলিত হইরা রয়॥
কোন বৃন্দাবনে বিরজা বিলাসে তরু-লতা চারি পালে। ৫
কোন বৃন্দাবনে কিলোর কিলোরী জ্রীরূপমঞ্চরী সাথে॥
কোন বৃন্দাবনে বিকলিত পদ্ম জমরা পশিছে তায়॥
কোন বৃন্দাবনে বিকলিত পদ্ম জমরা পশিছে তায়॥
কোন বৃন্দাবনে বিকলিত পদ্ম জমরা পশিছে তায়॥
কোণতের পথ না হয় বেকত রসিক জনার সনে।
উপাসনা জেদ বাহার হয়েছে সেই সে মরম জানে॥
উত্তম কুলেতে লভিয়ে জনম ছি নীচ সহ ব্যবহার॥

P03.

নারিকা-সাধন শুনহ লক্ষণ
বেরূপে সাধিতে হর।
শুদ্দ কার্চ্চের সম আপনার
দেহ করিতে হর॥
সে কালে রমণ অতি নিতা করণ
তাহাতে বে সাধন হবে।
মেদের বরণ রতির গঠন
তথন দেখিতে পাবে॥

সে রতি-সাধন

সেই সে রসিক সার । ১০

অমর হইয়া

সমান পৃরির ।

তাহার উপর

রতির বরণ হয় । 

সাধিতে সে রতি

বিজ চণ্ডীদাস কয় ॥

F03

সজনি, শুন গো মামুবের কাজ। এ তিন ভুবনে (म मन वहरून কহিতে বাসিবেক লাজ # কমল উপরে জলের বসতি তাহাতে বসিল তারা। ভাহাদের ভাহাদের রসিক মানুষ পরাণে হানিছে হারা ॥ ভ্রমর পশিল সুমেরু উপরে ভ্রমর ধরি ফুল। রসিক মানুষ ১০ ভাহাদের ভাহাদের হারায়েছে লাভি কুল। হরিণ দেখিয়া বেরাধ পলার কমল গেল লে ভূজ। ব্যের ভিভরে আলসের বসভি রাছতে গিলিছে চক্র ॥ শ্রমেক উপরে क कथा वृक्तिरव रक। র্নিক হটলে ध्वीमात्र कटर বুকিছে পারিবে সে।

সে কেমন যুবতী কুলবতী সতী ্ সুন্দর সুমতি সার। ্হিয়ার মাঝারে নায়কে লুকাইয়া ख्यनमी श्र भार ॥ ব্যভিচারী নারী • না হবে কাগুরি ৫ नाग्रं वािष्या लाव। ভার অবছায়া পরশ করিলে शुक्रय-ध्वम वादव ॥ সে কেমন পুরুষ পর্ল-রতন সেবা কোন গুণে হয়। সাতেৰ বাড়ীতে পাষাণ পড়িলে পরশ-পাষাণ হয় । সাতের বাড়ীতে कोर्त्राप नपी নারায়ণ শুভ যোগ। সেই ধোগেতে न्डाभन कतिरम ১० इय दक्ती मनड (याग॥ রমণ ও রমণী তারা ছুই জন काँहा शाका छूटि थारक। খসিয়া পড়িলে এক বৰু রসিক মিলয়ে তারে।। २० উঠিছে বিগুণ মনের আগুন তোলা পাড়া হবে সার। চণ্ডাদাস কৰে ধশ্ব সে নারী ভলাটে নাহিক আর॥

নারীর হজন অভি সে কঠিন কুৰা সে জানিবে ভার। জানিহু জুৰ্ধি নারিলেক বিধি বিশাস্তে এক্ত রয়॥

त्यमन मीशिका : उक्करत्र अधिक। ए ভিতরে অনগ-শিখা। পডক দেখিয়া পড়য়ে স্থুরিরা . পুড়িয়া মররে পাখা॥ জগৎ খুরিয়া ভেমতি পড়িয়া কামানলে পুজ়ি মরে। রসজ্ঞ ধে জন সে করয়ে পান বিষ ছাড়ি অমুতেরে॥ হংস চক্ৰযাক ় ছাড়িয়া উদক म्नाल ह्य मना भाषा। তেমতি নহিলে কোণা প্রেম মিলে ১৫ বিজ চণ্ডীদাস কয়॥

এ তিন ভূবনে ঈশর গতি।
ঈশর ছাড়িতে পরে শকতি ॥
ঈশর ছাড়িলে দেহ না রয়।
মানুষ ভজন কেমনে হয় ॥
গান্ধাং নহিলে কিছুই নয়।
মনেতে ভাবিলে স্বরূপ হয় ॥
কহয়ে চণ্ডাদাস বুকয়ে কে।
ইহার অধিক পুছয়ে যে ॥

রাগের ভজন শুনিরা বিষম
বেদের আচার ছাড়ে।
রাগামুগমেতে লাভ বাড়ে চিতে
সে সব প্রহণ করে॥
ছাড়িতে বিষম ভাহার করণ
আচার বিষম না পারে।
অভি অসম্ভব অলৌকিক সব

করিয়া প্রহণ . না করে যাজন
.সে কেন সাধনা করে। ১০
গুরিতে না পারে আনাগোনা করে
ফাঁফরে পড়িয়া মরে॥
ভার এ কুল ও কুল তুকুল গেল
পাথারে পড়িল সে।
চন্ডীদাস কয় সে দেব নয় ১৫

৫-৮। ব**লিতে বিষ্**ম করণ তাহার আচার বিষম বড়। দেকিয়া শুনিয়া মালাতে ভূলিয়া করিতে না পারে দি**ঢ় ৪...পাঠান্তর**।

তাহারে তরাবে কে॥

ত্রমন মাধুরী যাহার মনে।
তাহার মরম সেই সে জানে॥
তিনটি তুয়ারে যাহার আশ।

'আনন্দ নগরে তাহার বাস॥

'প্রেম-সরোবরে তুইটি ধারা।
অাস্বাদন করে রঙ্গিক যারা॥
তুই ধারা যখন একত্রে থাকে।
তখন রঙ্গিক যুগল দেখে॥
প্রেমে ভোর হয়ে করয়ে আন।
নিরবধি রঙ্গিক করয়ে পান॥
কহে চণ্ডাদাস ইহার সাক্ষা।
এ রূপ-সাগরে তুবিয়া থাকি॥

শ্বরূপ বিহনে রূপের জনম কখন নাহিক হয়। শ্বসুগত বিহনে কার্য্যসিদ্ধি . কেমনে সাধকে কর॥ কে বা অমুগত কাহার সহিত থানিব কোনে শুনে।

মনে অমুগত মূঞ্জী সহিত ভাবিয়া দেখহ মনে॥

হই চারি করি আটটা আখর

তিনের জনম তার ।

এগার আখরে মূল বস্ত জানিলে

একটি আখর হয়॥

চগুলাস কহে, শুন হে মাসুষ ভাই।

সবার উপর মাসুষ সত্য

তাহার উপর নাই॥

১৫

প্রবর্ত্ত সাধিতে বস্তা অনায়াসে উঠে.।
নামাইতে বস্তা সাধক বিষম সঙ্কটে ॥
নামান আনন্দ মন করিয়ে নির্দারি।
পৌষ মাঘ মাসের শিশির কুন্তে ভরি ॥
সেই পূর্ণকুস্তা বৈছে সবে পাতে ঢালি।
সর্ববাঙ্গে মস্তকে পাদ করয়ে শীভলি ॥
তৈছে সাধকের সেই সন্ধানের কার্য্য।
তারণ্যামৃতধারা তার নাম কৈল ধার্য্য ॥
লাবণ্যামৃতধারা কহি সিন্ধে সঙ্কেতে।
কারুণ্যামৃত স্নান কহি প্রবর্ত্ত দশাতে ॥
সংক্রেপে কহিল ভিন স্নানের বিধান।
সম্যক্ কহিতে নারি বিদরে পরাণ ॥
অটল পরেতে এই পদ গুরু মর্ম্মা।
চণ্ডীদাস লেখে ব্যক্ত আপনার ধর্ম্মা॥

ব্ভির কারণ রবির কিরণ
থেমন জলেতে লাগে।
অন্তরে লন্তরে শুদ্ধ করে তথুরৈ
আকর্ষরে উপভাগে।

F33

পুরুষ প্রকৃতি ' দৌহে এক রীতি ৫ ে রতি সাধিতে হয়। পুরুষেরই যুতে নায়িকার রীতে ষেমতে সংযোগ পায়॥ পুরুষ-সিংহেতে পদ্মিনী নারীতে যে সাধন উপজয়। স্বলাভি অনুগা সোনাতে সোহাগা পাইলে গলিয়া যায়॥ বে জাতি যুবতী সাধিতে সে রভি কুজাতি পুরুষে ধরে। कलें (क (यमन পুষ্প হয় ক্ষত ১৫ क्षमग्र कांत्रिया मदत्र॥ পুরুষ তেমতি নারী হীনজাভি রভির আশ্রয় লয়। विव हछोतान क्य ॥

12

আমার পরাণ- পুথলি লইয়া নাগর করয়ে পূজা। পুথলি আমার নাগর পরাণ-क्षप्रमावादत त्राका ।। আনে করে চুরি আনের পরাণ তিন আনে নাহি জানে। আগম নিগম তুৰ্গম স্থাম व्यवग नयन मत्न ॥ এই সাত নদী অনস্ত অবধি ় এ সাত যে দেশে নাই। সে দেশে ভাহার বসতি নগর এ দেশে কি মতে পাই।। अ नक्ष्वन क्रत (यह अन ं र्न कन माथात्र मिन। '

मतिरल रन कन ं की यां हैरे जारत ३६ অমৃত-রস আনি॥ খ্রীং সে অক্ষর তাহার উপর . নাচে এক বাজিকর। এক কুমুদিনী ছুন্দুভি বাজায় বাঁণী জিনি তার স্বর॥ তুন্দু ভি বাঁশীটি যখন বাজিবে তা শুনে মরিবে ধে। রসিক ভকত ভুবনে বেকভ স্থীর সঙ্গিনী সে।। এ সব ব্যবহার দেখিব যাহার ২৫ তাহার চরণ সার। মন-সূতা দিয়া তাহার চরণ গাঁথিয়া পড়িব হার॥ বাশুলী আদেশে কহে চণ্ডীদাসে काँ हा भाका छूरे कल। (य कल"लहर्त (म कल পाहर्त তেমতি ভাহা বিরল।।

সদা বল তত্ত্ব হয় কত তত্ত্ব শুন।
চিকিশ তত্ত্ব হয় দেহের গঠন ॥
পঞ্চ ভূত ক্ষেত্র তেজ মরুৎ ব্যোম আপ।
বড়্রিপু কাম ক্রোধ মদ মাৎস্ব্যা দস্তা ॥
দশ ইন্দ্র ক্ষত তারা হয় ত পৃথক।
ভ্রোনেন্দ্রিয় কর্ম্মেন্দ্রিয় বিবিধ নামাত্মক ॥
ভ্রোনেন্দ্রিয় জিহ্বা কর্ণ নাসা ত্বক্ চকু।
কর্ম্মেন্দ্রিয় হস্ত পদ গুল্ল কিন্দ্র বপু ॥
মহাভূত অহক্ষার আর হয় ভ্রান।
এই ত হয় চিকিশে তত্ত্ব নিরূপণ ॥
কিবা কারিক্রের আজা কারিকুরি।

তার মধ্যে ছয় পল্ম রাখিয়াছে পূরি॥

20

२०

રેઉ

91

সহস্রারে হয় পদ্ম সহস্রক দল। তার তলে মণিপূর পরমশিবের **স্থ**ল। নাসামুলে বিদল পদ্ম খঞ্চনাকি। কঠে গাঁথি যোড়শ দল পদ্ম দিল রাখি॥ ঙ্গুংপদ্ম নিৰ্ম্মিত আছে শত দলে। কুলকুগুলিনী দশদল হয় নাভিমূলে ॥ নাভির নিম্নভাগে প্রেম-সরোবর। অফটদল পদা হয় গ্রাহার ভিতর॥ তক্ত পরে নাডী ধরে সার্দ্ধ তিন কোটি। স্থুল সূক্ষ্ম বত্রিশ ভারা কিবা পরিপাটি **॥** लिञ्जमृत्ल यष् ्रलाखुक निरशिकि । গুহুমূলে চতুর্দ্দল পদ্ম বিরাজিত। এই অফ্ট পদ্ম দেহমধ্যেতে আছয়। মতান্তরে হাৎপদ্ম দাদশদল কয়॥ मश्यमल अधिमल (मश्म(धा नया। এই চুই পদ্ম নিত্য-বস্তুর আধার হয়॥ यहेठाळ्य मूल मृशाल श्रा (मऋष्धः। শির্মি পর্যান্ত সে ভেদ করি সগু॥ দওঁ তুই পার্ষেতে ঈড়া পিঙ্গলা রহে। মধ্যে স্থিত স্ব্যুম্বা সদা প্রবল বহে॥ মূলচক্র হয় হংস যোগের আধান। অফ্টদল চক্রে লীলার সঞ্চার॥ ষিদল চক্রেতে হয় অমৃত নির্ভর। আর পঞ্চ চক্রে পঞ্চ বায়ুর সঞ্চার॥ প্রাণ অপান ব্যান উদান সমান। কণ্ঠাম্বজাবধি চতুৰ্দ্দে অবস্থান॥ কণ্ঠপরে উদান হৃদিতে বহে প্রাণ। নাড়ীর ভিতরে পমান করে সমাধান॥ চতৃদ্দিলে অপান সর্ব্বস্তৃতেতে ব্যান। মুখ্য অনুলোম বিলোম সকল প্রধান ॥ অঙ্গপা নামেতে ভারা কুম্বক রেচক। অসুলোম উদ্ধরেতা বিলোম প্রবর্ত্তক।

প্রবর্ত্ত সাধক হৃদ্নাভি-পদ্মের কাশ্রার। সিদ্ধার্থ সহস্রারে কাছরে নিশ্চর। রতি স্থির প্রেম-সরোবর অফদলে। সাধনের মূল এই চণ্ডাদাস বলে।

۶۲,4

মভান্তরে যে কহরে শুনছ নিশ্চয়।
মন্তক উপরে সহত্রদল পদা কয়॥
ক্রমধ্যে ঘিদল কঠে যোলদল।
ক্রদিমধ্যে ঘাদশ নাভিমূলে দশদল।
লিঙ্গমূলে যড়্দল চতুর্দশ গুহুমূলে।
বস্তুভেদ আছে ভার চণ্ডাদাস বলে॥
সাধন তত্বে ভার যোগ নাহি হয়।
বৈধি যোগ এই তত্বে হয় ত নিশ্চয়॥

150

চৌদ্দ ভূবনে ভূবন তিন। সপ্ত আখর ভাহার চিন॥ চুইটি আখরে দদা পীরিতি: ভিনটি পরশে **ডপজে র**িড । निङ्क्त कानरन आहरम् धर्मः पृष्टेि याथत और ठत्र भन्। কনক আসন আছয়ে ভাতে। মনসিজ রাজা বৈসয়ে যাতে॥ কর্পর চন্দন শীতল জলে। ষেমন আনন্দ লেপনকালে॥ তাপিত জনে সে আনন্দ পায়। শীতভাত জন ভয়ে পলায়। ১ পঞ্চ রস আদি একত্তে মেলি। যে যার স্বভাব আনন্দে কেলি।। অষ্ট আখহ একত্র ধৰে। কনক আসন জানিবে তেবে।

পঞ্চ রন্ধ অনুবাদ বে হর। আদি চণ্ডীদাস বিধেয় কয়।

L14

বিষ্ণারক্তে সহত্যক্ষণ পলে রূপের আশ্রয়।
ইয়েই অধিষ্ঠাতা তার স্বরূপ লক্ষণ হয় ॥
সেই ইয়েই বাহার হয় গাঢ় অমুরাগ।
সেই জন লোক-ধর্মাদি সব করে ত্যাগ॥
কায়-মনোবাক্যে করে গুরুর সাধন।
সেই ত কারণে উপজয়ে প্রেম ধন॥
তাতে যদি কোন বাধা মনে উপজিবে।
চণ্ডীদাস বলে সে নরকে ভূবিবে॥

639

সহজ আচার সহজ বিচার সহজ বলিব কায়। , না জানি মরম করে আচরণ এ বড় বিষম দায়॥ না জানি ধরম না জানি মরম ৫ আচরিতে করে আশ। শুনিয়া যেমন ত্রিণবের গান কাকে করে অভিলাষ॥ স্থাকর দেখি খছোত যেমন সমতেজ হতে চায়। ১০ শত শত কোটি कत्रद्य উদয় 🕠 ়. ভবু ভার বোগ্য নয়॥ **(मर्() व्हर्म छ** পারিজাত পুষ্প **কপিতে করয়ে আশ।** শিবনুতা দেখি ভূতগণ নাচে ১৫

এমন বে জন নিত্য সহজ ঘটায়
আচরিতে করে আশ।
বাশুলী আদেশে ভণে চণ্ডীদাসে.
নরকে হইবে বাস।

२•

b:b মাসুৰ মাসুৰ ত্ৰিবিধ মাসুৰ মানুষ বাছিয়া লহ। অযোনি মানুষ সহজ মানুষ মানুষ সংস্কার দেই।। সংস্কার যেই ব্ৰহ্মাণ্ডেতে সেই সামাত ভাহার নাম। মরণে জীবনে করে গভাগতি कौरत्राप-माग्रदत्र थाम ॥ গোলোক উপরে অযোনি মামুষ নিত্যস্থানে সদা রয়। তাহার প্রকাশ বৈকুঠের পতি लीला काग्ना (यवा इय़।। সহজ মানুষ জানে। খানন্দ ঘটান রহে ছুই জনে ১৫

P32

বিজ চণ্ডীদাস ভণে ৷৷

মানুষ মানুষ স্বাই বলয়ে

মানুষ কেমন জন।

মানুষ রতন • মানুষ জীবন

মানুষ পরাণ ধন॥

ভূবনে ভূলয়ে এ সব লোক ৫

মরম নাহিক জানে।

মানুষের প্রেমা নাহি জীব কে

মানুষে সে প্রেমা জানে॥

বে জন মানুৰ ্সে জানে মানুৰ ় মানুষে মানুষ চিনে। >0 এ লোক মাসুষ এ ভূরের বল मानूरव मानूव कारन।। জীয়ন্তে মরা মানুষ যারা সেই ত মানুষ সার। মহাভাগ্যবান্ ১৫ মানুষ লক্ষণ মানুষ স্বার পর।। বিরল ধাম মানুষ নাম , বিরল ভাহার রীভি। **ह** शीमारम करह मकलि वित्रल কে জানে ভাহার রীভি॥

**F30** 

কেবা সে প্রকৃতি পুরুষ কেবা। কেবা সে মানুষ কার করে দেবা॥ প্রকৃতি বলিয়া বলয়ে জগতে। • প্রকৃতি কি বস্তু না জানে তত্ত্বে॥ রদের মাধুরী সবা হইতে ভারি বুঝিতে শকতি কার। অদ্ভুত সকল এ সব বিরল ইহাতে মানুষ অধিকার॥ পাইতে বিরল চণ্ডীদাস কহে >• এইত মাসুষ রস। যাহার আলাপে তুখ ভয় ভাঙ্গে সবা হইতে প্রেম-রস।

**63**3

ষেবা জন জানে কহিছে না পারে श्वमद्र श्वमद्र (नर्। ভরিল ভাপনে সে আপনার গুণে ভাহারে ভরাবে কেই॥

. শুনহ রসিক ভব্ত জুন্। 💃 জগতে জানি রাখিবে মন 🗎 🐍 রসিক নাগরী পাইবা বধা। রসের কৌতুক বাড়াবা তথা। त्रिक यूवजी स्टेरव रव । রসিক পাইলে না ছাড়ে সে॥ প্রকৃতি হইয়া রস না জানে। कनिया (ज रेमल ना (करन ॥ বে না জানে রসের রীত। সদাই আনন্দ ভাৰার চিত ॥ কি নারী পুরুষ দোঁহাতে একা। কহে চণ্ডীদাসে পীরিতি লেখা॥

₽₹₹ তিনটি আখরে না জানি কি আছে ভিনেরে করিল বশ। তিন ভয়ে হমু সম্বনে কম্পিত ভিনে করে অপ্যশ। স্থি হে, ভিনের মূল কি বটে। ছুই বেয়াকুল যে তিন লাগিয়া তিন গায় ঘাটে মাঠে॥ তিন সোড়ারিয়া তিন ছি লাগিয়া ভিনে স্থির নাহি বাঁধে। যবে গুই মিলে আর গুই খেলে

ভিনের বলিহারি॥ · . চেরে ছই খেলে .১≀ ক্ষণমাত্র চুই তাহা দেখি লোক হাসে। সে ছুই কখন তিন সম্বাক্ষণ

তিনে চার মিশাইল সাত অক্ষর হইল

ভূয়ে ভূয়ে ছল চারি।

ভাইে চণ্ডীদাস ভাসে॥.

নাছিল বখন মা বাপ জনম ু আমার জনম হল। না ছিল বখন नानात कनम . পাকিল মাধার চুল। ভগ্নীর জনম না ছিল যখন ভাগিনা হইল বুড়া। অনিভা কুলের এ কি বিপরীতে ন পিতা ন পিতা খুড়া ॥ না ছিল বখন খণ্ডর শাশুড়ী তখন হয়েছে বউ। > 0 খরের ভিতরে বসিয়া রয়েছে ইহা না বুঝয়ে কেউ॥ মাটীর জনম না ছিল বখন তথন করেছি চাব। पिराम तकनी ना हिल यथन ১৫ তখন গণেছি মাস। (এখন) এ কুল ও কুল তুকুল ভূবিল পাথারে পড়িল দেহ। কে আমি কে তুমি करह हखीमारम ইহা না বুঝায়ে কেহ। **२** •

বিবিধ |

ৰহাগ।

আজু কে গো মুরলী বাজার।

এ ত কভু নহে খ্যাম রায়॥

ইহার গৌর বরণে করে আল।

চূড়াটি বান্ধিয়া কে বা দিল॥

ভাহার ইন্দ্রনীল-কান্তি তেমু।

এ-ত নহে রুক্দম্ত কামু॥

देशद क्रिश (प्रिथ नवीन आकृष्टि। নটবর-বেশ পাইল কথি॥ বনমালে গলে দোলে ভাল। এনা বেশ কোন দেশে ছিল II ١. কে বনাইল হেন রূপখানি। ইহার বামে দেখি চিকনবরণী॥ नील উक्जिल नीलम्बि। হবে বুঝি ইহার স্থন্দরী। 24 সখীগণ করে ঠারাঠারি॥ কুঞ্ছে ছিল কামু কমলিনী।. কোথায় গেল কিছুই না জানি॥ আজু কেন দেখি বিপরীত। रू वृति (माराज চরিত। ২০ **ह** श्रीमान मत्न मत्न हारन। এরপ হইবে কোন দেখে।

শ্রীবলরামের রূপ।

**५२€** 

হহিনী।

দেখ বলরাম ভুবনমাকো।
রূপ দেখি কাম মরমে লাজে॥
চাঁচর চিকুরে চামরী মজে।
নানা ফুল ভাল ভাহাতে সাজে॥
রক্ষত-মুকুরে মাজিয়ে মুখ।
তা দেখিয়া চাঁদের মরমে ছুখ॥
ভিলক বলিভ ললিভ ভালে।
মুগ্ধ ভ্রমরা অলকজালে॥
অরুণ দীঘল নয়ন দেখি।
বিকচ কমল কিসে বা লেখি॥

পাত সহিত কদস্ব ফুলে।
গ্রাবণে মকর কুগুল দোলে॥
তিলফুল জিনি স্থন্দর নাসা।
নাগরী জনার মনের বাসা॥
অরুণ বরণ দশন বাস।
বাঁধুলী ফুলের গরব নাশ॥
কুন্দ-কোরক জিনিয়া বিজ।
কি ছার তাহাতে করক বীজ॥
চণ্ডীদাস কহে হাসির কাছে।
আর কি জগতে অমৃত আছে॥

পানার **।** 

ফটিক অঙ্গের জমু রজত-স্থলর তমু রসে ঢল ঢল বলরাম। কোটি গুঞ্চা মুগ্ৰছাদ বিগত-কলঙ্ক চাঁদ ় মৃগমদ-ভিলক অমুপাম। চাঁচর চিকুরে চূড়া वनकृत-भाना (वड़ा ० টলমল শিখিদল তায়। শিখিদল শত শত পরিমলে উনমত মধু পিবি মধুরিম গায় ॥ পরিসর ভাল স্থল বিলোল অলকামাল মুখচন্দ্র অতি অপরূপ। চম্কিত অতি ভীত হেরিতে চকিত চিত কত শত মনমথ ভূপ॥ উন্নত বঙ্কিম চারু ্ৰ কন্দৰ্প-কামান উরু কমল পলাশ দুটি আঁখি। বারুণী অলস-ঘোরে মেলিতে না পারে জোরে ১৫ चूरम दुलू दुलू रयन रमिश ॥ नामाभूटि खलमल বিলসে মুকুতা কল ञ्जूक व्यथत्त महा होनि ।

হেরিয়া,দশনপাতি সিন্দুর সুকুতা জাতি অমিয়া উগারে রাশি রার্শি॥ বাম কর্ণে ঝলমল মণিময় কুপ্তল দক্ষিণেতে নবীন মঞ্জরী। কণ্ঠহার পরিপাটি দেখিতে সোনার কাঁটি উরে গুঞ্জা অতি মংনাহারী॥ রঙ্গন মালতী কুন্দ कत्रवीत अत्रविमा २० থরে ধরে লাগয়ে ভাহাতে। কুন্দ মলিকা জাভি কনক-চম্পক ধৃথি রমণক তুলদীর পাতে॥ মনদার অংশাক ধুপ শেফালিকা সাউলাফুল আর যত বনফুল ভালে। ভ্রমিছে ভ্রমরা তায় মধুর মধুর গায় উরুপর দোলে বনমালে॥ স্থ্যলিত ভুজদণ্ড করভ-শাবক-শুগু কনক-কেয়ুর ভায় সাজে। অঙ্গদ বলয়ামণি নীল পাটের থোপনি ৩৫ মণিবন্ধ বাহুতে বিরাক্তে॥ চলিলা ভাগ্তীর-পথে শ্রীদাস স্থদাম সাথে **ह** छीमात्र (मर्ट्य त्ररकोष्ट्ररक । দেখ দেখ রাম রায় না ঠেলিহ রাজা পায় চরণেতে রেখহ আমাকে।

কাকমাল্য মান।

थानण ।

হলধর-ভরে মালা নাহি পারে দিতে।
ফিরিয়া আইল সধী করিয়া সঙ্কেতে॥
কেন কালে আইল কাক খাছ্ম প্রবা বলে।
সেই হেতু নিল মালা ওঠে করি তুলে।
আহার নাহিক হল দিল ফেলাইয়া।
প্রবনে দিলেক ভাষা বেগে উড়াইয়া॥

>0

পাসিরা পূর্ড়িল ঠোন্সা চন্দ্রাবলীর বরে। প্র্যানরা দেখিল মালা অভি মনোহরে।
সংক্ষত জানিরা এখা খুঁজে শ্রাম রার।
দেখিতে না পার পুন সাতলী খেলায়।
এগা সেই মালা লয়ে আনন্দে পুরিল।
চন্দ্রা বেশ করি সৈই মালা পরি এল।
রাইকে দেখিবার ভরে এল ভার পাশ।
প্রায়েতে জানিল ভাল করে চন্দ্রীদাস।

#### পাশা-(ধলা।

トくト

রলেতে আবেশ হয়ে শ্রামটাদের মুখ চেয়ে কহিছেন রসবতী রাধা। ধর মোর বেশ ধর আপন আঁচরে ভর करत्रत्र भूत्रनी त्रांथ वाँथ।॥ रातिए (वनत पिव किनिएल मूत्रको निव ए আর নিব ভোমার হাতের বাঁশী। ভোমারে জিনিয়া লব ৰাপন হৃদয়ে থোব নতুৰা হইব ভোমার দাসী ॥ শ্বাম কৰে হাসি হাসি আমার মোহন বাঁশী शांबान विषय्त्र वात्र शांत्न। কড ওণের বাঁশী মোর কত ধনের বেশর ভোর नमान कर्द्र (कान क्षर्ण ॥ রাই করে ওন খ্যাম বেশর যাহার নাম (मानएय नानिक। मूचमारक। बात्र ऋरहा मूथ जाना শাপনি ভূলেছ কালা ১৫ হেন খন নিন্দ কোন লাজে। ভোষার বাঁশীর গানে ৰধিল অবলা প্ৰাণে এবে সে ঠৈকেছ রাধার হাতে। চ্ণীদানেতে কর বাঁশী গেলে প্রাণ রয় খল বাঁশী না সাধিহ হাতে॥

#### रशिन।

এ ধনি মানিনি মান নিবার। আবীরে অরুণ শ্বাম-অঙ্গ মুকুরপর নিজ প্রতিবিশ্ব নেহার॥ তঁত এক রমণী শিরোমণি রসবতী े কোন ঐছে জগমাহ। ভোহারি সমুখে শ্যাম সহ বিলস্ব কৈছন রস নিরবাছ॥ ঐছন সহচরী-वहन समस्य धति ঈষৎ হাসি সনে মান তেয়াগল। উলসিত চুঁহে দোঁহা হেরি॥ পুন সৰ জন মেলি করয়ে বিনোদ কেলি পিচকারি করি হাতে। বিজ চণ্ডীদাস আবীর যোগায়ত সকল সখীগণ সাথে॥ একা কাঁখে কুম্ভ করি ৰমুনাতে জল ভুরি জলের ভিতরে শ্রাম রায়। ফুলের চূড়াটি মাথে মোহন মুরলী হাতে পুন কামু জলেতে লুকায় ॥ যমুনাতে দিতে ঢেউ वात ना (मिश्रम (कडे ८ তেউ স্থির মাঝে পুন কামু। কভেক প্ৰবন্ধ করি **ध्रतिवादित हाई इति** ধীরে ধীরে হাত বাড়াইসু। ৰাত ৰাড়াইল্লা নাহি পাই তুৰিলে ধরিতে চাই

কান্দিতে কান্দিতে ঘরে আইমু ।
চণ্ডীদাসের বাণী শুন রাধা বিনোদিনি
মিছে কেন ডুবেছিলে জলে।
বুঝিতে নারিলে মারা জলে ছিল অজ্ছায়া

শ্রাম ছিল কদবের ডালে॥

## পরিশিষ্ট।

( 本 )

#### **ह** छीषांत्र-दन्मना ।

(3)

বিভাপতিশ্চণ্ডিদাসো জয়দেবঃ ক্বীশ্বঃ।
লালাগুকঃ প্রেম্য্কো রামানন্দক নন্দিঃ।
শ্রীলোবিন্দঃ ক্বীন্দ্রোহন্তঃ দিদ্ধঃ কুফঃ ক্বীন্দ্রকঃ।
পৃথিব্যাং ধন্ত-ধন্তাক্তে বর্ণ্যন্তে দিদ্ধর্মপিগং॥
এভান্ বিজ্ঞবরান্ বন্দে সপ্তবারিধিতুল্যকান্।
ধেষাং সংস্কৃতিমাজেন সর্বসিদ্ধিঃ প্রভায়তে॥

( ? )

জন্ম জন্মদেব কবি-নৃপত্তি-শিরোমণি, বিদ্যাপতি রসধাম।
ক্রম্ম জন্ম চণ্ডীদাস রসশেশ্বর অধিল ভ্বনে অমুপাম।
যাকর রচিত মধ্র রস নিরমল গছপছমন্ন গীত।
প্রেভূ মোর গৌরচন্দ্র আসাদিলা রাম্ম স্ক্রপ সহিত।
যবহুঁ যে ভাব উদন্ম ছহুঁ অন্তরে

· তব গায়ই ছছ মেলি। ভনইতে দাক পাবাণ গলি যাওত ঐছন স্বমধ্র কেলি॥ আছিল গোপতে যতন করি পছঁ মোর

জগতে করল প্রচার।
সো রস শ্রবণে প্রশানাহি হোয়ল

( )

বোয়ত বৈষ্ণব দাস ।

জন্ম জায় চণ্ডিদাস গুণভূপ। 'বিজ্ঞাকুল-ক্ষলবন্ধু কবি-মণ্ডল-মণ্ডিত মহীমাধুরী অপরুপ। পরম সবলহিয় প্রবল প্রেমময়

বান্তলী দেবা দেওল উপদেশ।
নিক্ষপম গোরী ভামরস শিবইতে
বাঢ়ল নিশিদিশি উলাস অশেষ।
মরি মরি কি রীতি পীরিতি-রস শশধর
তারা সহ রস কো কক ওর।
বিরচয়ে ললিত গীত শুনইতে ইহ
অধিল ভূবন-নরনারী বিভোর॥
রসিক সকল সহ সংকীর্ত্তনরত
রাধামোহন-চিত উমভায়।
বিদিত চবিত চিত্র ভণ নরহবি
পামর মন কি রহব উছু পার।

(8)

বিপ্রকৃষে ভূপ ভূবনে পূজিত যুগল-পীরিভিদাতা।
যার তহু মন রঞ্জন না জানি কি দিয়া গড়িল ধাতা।
সতত ভকতি-রদে জগমগ চরিত বুঝিবে কে।
যাহার চরিতে ঝুরে পশুপাণী পীরিতে মজিল যে।
শ্রীরাধা-গোবিন্দ-কেলিবিলাস যে বর্ণিল বিবিধ মতে
কবিবর চার্ক নিরুপম মণী ব্যাপিল যাহার গীতে।
শ্রীনন্দ-নন্দন নবখীপপতি শ্রীগৌর আনন্দ ইইয়া।
যার গীতামুত আত্মাদে অরপ রায় রামানন্দ লৈঞা।
পরম পণ্ডিত স্কাতে পদ্ধর্ম জিনিয়া যাহার গান।
অহুখন কীর্নানন্দে মগন পরম কর্কণীবান্।
বন্দাবনে রতি যার তার সঙ্গে সভত সে স্থথে ভোরা।
বিস্ক জনের প্রাণধন গুণ বর্ণিতে নাহিক গুর।
চণ্ডীদাস-পদে যার রতি সেই পীরিভি-মরম আনে।
পীরিভি-বিহীন জনেণধিক্ ব্ছ দাস নরহরি ভণে।

• ( • )

জয় স্বায় চণ্ডাদাস দয়াময় মণ্ডিত সকল গুণে।
অহপেম থাক যপ রসায়ন গাওত জগতজনে।
নালুর গ্রামেতে নিশা সময়েতে বাগুলী প্রসন্ন হৈয়া।
রাই কাহ্ তৃহ্ঁন ভূল চরিত কহয়ে নিকটে গিয়া।
গুনি ভাবে মনে জানি পুন দেবী

কহে কি চিন্ত হ চিতে।
কথমনী তারা ধ্বনী দরশে ফ্রিবে বিবিধ মতে ॥
ইহা ভানি নিশি প্রভাতে চলিল প্রণমি বাশুলী পায়।
ধ্বনী-দরশ-রদে ফুরে সব কি দিব তুলনা তার॥
চণ্ডীদাস হিয়া ধ্ইল ধ্বনা প্রেমেডে পড়িল বাধা।
রাই কাম গুণে ঝুরে দিবানিশি ঘুচিল সকল ধাধা॥
ধ্বনী মহিমা সীমা জানাইল ধ্তা সে বাশুলী দেবী:
নরহরি কহে পাইল তুলহ প্রেম চণ্ডীদাস কবি॥

( 😉 )

কবিকুলে রবি চণ্ডীদাস কবি ভাবুকে ভাবুকমণি।
রসিকে রসিক প্রেমিকে প্রেমিক সাধকে সাধক গণি॥
উজ্জ্বল কবিস্থ ভাষার লালিত্য ভূবনে নাহিক হেন।
হলে ভাব উঠে মুখে ভাষা ফুটে উভয় অধীন যেন॥
সরল তরল রচনা প্রাঞ্জল প্রসাদ-গুলেতে ভরা।
বেই পশে কানে সেই লাগে প্রাণে

শুন। মাত্র আত্মহারা। রামতারাধনী রাধাক্ষরপিণী ইউ ধাতু যার হয়। যাহার দরশে চণ্ডী রবে ভাবে কবিতার লোভ বয়।

(1)

চি ত্রীন্মস-চরণ-রঞ্জ চিস্তামণিগণ শিরে করি ভূবা। শরণাগত জনে হীন অকিঞ্নে ক্রণাকরি প্রব আশা।

হরি হরি তর মরু অকুশল যাব। . রসিক-মুক্টমূণি প্রেম-ধনেহি ধনী কুপা-নিরীখণ যব পাব। স্থান শোধি মোহে ঐছে প্রবোধবি

বৈছে ঘূচ্যে আধিয়ার।
ভামর গৌরী বিলাস রস কিঞ্চিত

মরু চিতে কর পরচার।
ছহঁক চরিত বদন ভরি গাওব

রসিক ভকতগণ পাশ।
গম অপরাধ সাধ মরু পুরহ কহ দীন গোবিন্দ দাস॥

( b )

ছিজকুল-স্থত রসময় চিত জয় জয় চণ্ডীদাস।
মধ্র মধ্র শবদে গাইল। যুগল-রসের ভাষ ॥
কিবা অপরপ কবিতা-মাধ্রী আথর পীরিতি-মাধা।
অমিয়া ছানিয়া দিলা বিতরিয়া অন্প বচন ভাগা॥
বরজ যুগল পীরিতের খনি সে মুখ শরদ-শশী।
কবিতা পঠনে হেন লয় মনে চিত যায় যেন থসি॥
বাঞ্জী আদেশে যুগল-পীরিতি গাইলা সে কবিচন্দ।
রস কবিকুল মত্ত মধুকর পীয়ে ঘন মকরন্দ॥
নিতাই আদেশে পরসাদ দাসে গাইবে ব্জবিলাস।
চরণ-সরোজে শরণ লইকু সফল করহ আশ॥

## পরিশিষ্ট।

(1)

স্থাৰ জীয্ক শিণরতন মিত্র কর্ত্ক সংগৃহীত।
[রতন-লাইত্রেরী, পুথি নং ১০৬৬, সার্দ্ধ ছই
শতাধিক বংসরের প্রাচীন পুথি, প্রাধিস্থান—রক্ষকবাটা, লম্বোদরপুর]

(১)
মেধের বিজ্ঞাৎ চালের উলিত
বাম করে যেবা ধরে।
তোমার আমার বসের চাতৃন্দী
আভাবে বুঝিতে পারে॥

মানুষ মুরতি হিলোল আকৃতি ं व्यक्तन वज्ञन व्याधि । দাড়িম কুমুম বরণ স্থম ্ষন সৌদামিনী পাথী। জবাতর পাধী জবাপুঙ্গে থাকি ভিন্ন ভেদ নাহি হয়। **গমনাগম**ন একটি করয়ে সন্ধান নাহিক পায়॥ রক্ত পদ্মপর রক্তবর্ণ মর রক্তবর্ণের পঞ্চদ্রী। করে নিত্যলীলা এ স্ব লইয়া হিকোল রাগের মামুষ ভজন हिस्त्रान त्रारंभत्र (मर. কিবানরনারী গন্ধক কিল্পরী किंवा (पर्वी व्यात्र (प्रवा॥ কিবা মূগপাখী কিবা বৃক্ষঝাকে किया की है खनहत्र। আবোপিত হলে -হিন্দোল রাগেতে হিলোল বরণ ভার॥ হিলোল রাগেতে করে চণ্ডীদানে হিলোল পাথীর ঠাই। হিলোল রাগেতে যে জনা ভজিবে সে জনা মাত্র পাই। ( ? ) অতি বিপরীতি প্রেমের পীরিতি দেহ বৃতি নাহি রয়। সভাব রাখিবে প্রকৃতি প্রভাবে এ কথা কহিতে ভয়। যদি হয় স্থিত অন্লেতে ঘুত তাহার তুলনা সেই। আছয়ে এমন ক্ৰোড়ে কোন স্থন याक्रम करत्राष्ट्र (यह । শৃন্ম দিয়া ভথি পুক্ষের রতি প্রকৃতি রদের অঙ্গ।

প্রকৃতি হইঞা পুক্ষ আচরে করিবে সে নারীর সভা ।
উপটাঞা রতি অভি বিপরীতি 
প্রেম রতি অভি নয়।
চঞীদাসে কয় দেহ রতি নয় ।
বিন্দুপাত নাহি,হয়।
( ৩
কামের স্বরূপ নাহিক ইছাতে

বাগের স্বরূপে রয়। একাস্ক করিঞা প্রকৃতি হইঞা মামুষ জন্মাবেশ হয়। নিধামী হইঞা রাণা রতি নঞা একান্ত করিঞা রবে। ভবে সে জানিবে দেহ রতি শৃক্ত প্রকৃতি জানিতে পাবে॥ করি অঙ্গীকার **স্থী** গোত্র ধরি অগ্য গোতা নাহি ববে। প্রকৃতি সেবিঞা পুন সঙ্গ হলে এ থোর নরকে যাবে। রাগের সাধন প্রেম রভি গুণ দেহ রতি নাহি রবে। পুন ইহা হঞি অন্য অন্য মনে তবে সে নাহিক পাবে॥ নিগৃঢ় বেণ टेह व क्रेशव এই সে কহিলাম সার। চতীদাসে কয় কামান্তগা নয় ষেন সে করাত ধার॥

(8)

বদিকা অবন্ধিপুরে পঢ়কা পঢ়ন পড়ে।

হেন কালে এক রসের নামরি দরশন দিল মোরে॥

সে যে চাহিল আমার পানে
ভাম হানিল মদন-বাণে।

সেই হৈতে মন করে উন্ধেটন ধ্রেম না মানে প্রাণে।

সে যে বসের পুতলী বালা

তার মদন-মেহন লীলা।

চেতন সহিতে চড়ি মনোরথে করএ বিবিধ থেলা ॥
পাপ ভয় করি মনে
তারে ছাড়িতে চাহি যেমনে।
বাঢ়িল মদন করিল রমণ যাপল রমণী সনে॥

সে জগতজননী উমা
রাগিতে নারিল আমা।
দেখিঞানে রুল নবান পীরিতি জাতিকুলে দিল সীমা॥
যত মনে করি বারা
ত হু রজক রমণী সার।।

চণ্ডীদানে বলে নবীন পীরিতে জীগতে হইলাম মরা॥

( t )

তার পর দিনে দেবী আরাধনে বদিলাম যতন করি। অই ৩ভ দিনে দেবীবার স্বর্ণ

व्यक्तिगंत्र (१४न् (शाती॥

হায় মন চলি গেল কেন। দেপিঞাসে রূপ নবীন পিরীতি ক্ষরণ

লইলা থেন॥

শুন শুন দেবী ভোষা আমি সে বিফল হইল মোর। পুণাধর্ম গেল মোকাদি সকল চরণ

না পেলাম তোর॥

দেবী কৰে পুন শুনহ বচন বিবোধনা বাস তুমি। বছ ভাগ্যের উদএ শুভার যোগবলে জানি আমি॥ জনম সফল জরামৃত্যু গেল ঘৃচিল যতেক দায়। হরিছর ব্রহ্মা পুটা (?) দিক কথা

ধেয়ানে নাহিক পায়।

পিরীতি রতনে করিবে যতন আমার বচন মানি।
ভঙ্গ শুদ্ধবতি স্বরূপেতে স্থিতি প্রেম অসুসারি গণি।
ইহাকে নাহি সারাৎসার জানিবে এগত মাঝে।
আমি হেন কত দেবী দেবা গেলে

চ থীদানে কয় এই সভা হয় স্বভাব স্বরূপ দেহা। বাশুলি বচনে সভা জানি মন্দে

ধোবিনী সম্বৃতি লেহা।

কি করে ভোমার কাজে।

( 😻 )

ত্ববিত দ্ব সে প্রেমরতি পুনে এক \* \* রুস ভন্ধ ॥
এমতি জানিঞা রসিক দেখিঞা করিবে সে নারী সন্ধ রসিক জানএ রসের চাত্রী সেই সে তাহার

সোণায় সোহাগা যেন।

রসের পরাণে প্রেমের পিরীতি মিশাইক্রা আঁছে তেন॥
না দেখিলে মরি দেখিলে কি করি হিয়াএ হিয়াএ থ্ব।
আপনা বেচিক্রা তাহারে কিনিব লোকাপেক্ষা
নাহি নিব॥

লোক ক্ৰচন গুরুর গঞ্জন মেল মানিলাম বিষে। চণ্ডীদাসে বলে গোপত না হলো পরকীয়া হবে কিনে

( 9 )

খ্যামের কিরণ শরনহি বন ছটার কিবা দে ছবি। হেন মনে হয় যদি লোক ভব্ন নয় কোলে করি চেঞা যেঞা॥

( 46 )

নিসেদ (?) নীলজ বনমালি।
বাধানে কি ভেটে চক্রাবলী॥
হেমঘট দেখিয়া পাথারে।
দে রাধার মন সাত পাঁচ করে।
মাকড়ের হাতে নারিকল।
বাইতে সাধ ভাঙ্গিতে নাহি বল॥
সাপের মাথা কণি জলে।
বড় কহে বাগুলির বলে॥

( & )

অথ কলহান্তরিতা।
কেন বা কাহকে আমি উপেধি আইছ।
আপনি অগপনি কেন গরল গাইছ।
হায় হায় কি মাটি গাইগ্রা মুই এমতি করিছ।
হাতের রতন পায়ে- ফেলাইছ।
ফ্রধা পিবইতে গেল ভূবিলাম বিষে।
হিয়া দগদগি হইল জ্ডাইব কিলে।
চন্দন তরুর বিষক্ষল হইল দেবলে।
কি জানি ললাটে মোর এমতি আছিল।
চঙীদাস কয় সই উদয় হইল।

### ধুরাং ও অপ্রচালত শব্দের ত্যালকা ও অর্থ।

**भगगः था।** 18 • কথা বলিতে আঁক্ষম। 44 चर्य । ष्मकान १ घरमान्। অপেয়ান আ অবাক সধাই **অগাধ** ষাই 866 . षाहरम । ৩০নং পদে আছে,—"আচছিতে বাই षाउँगढ़ ७०० বোধ হয়, পাগলিনী, আলু-**পড়িল चवारे"। '**चवारे' मरसन्न লাম্বিত। লিখিয়াছিলাম--'অহিব'। আধ্যান ৩৩ व्याशायिकाः, व्याशाय, व्यवनाः। ক্তি এখন দেখিতেছি, 'অস্থির' অর্থ বাগম 404 (वांध हद 'अश्रम', व्यर्थ 'व्यश्रमा'। হইতে পারে না। রাধা ত অহির আপরল ৬১৭ বন্ধ, পূৰ্ণ। হইয়া পড়েন নাই, ভিনি সংজা-**ভাগরি ১৪**>, २०७ शृह, व्याधात्र। रोन। हरेशकितन, तनरे मरका-আগল ১.६,১৮० काउव। रीनछ। चठीन शकीन, क्लनाः আগি व्यक्षि। 'चन्नांध' चर्च कत्रित्न मन्य इत्र ना। আঞ্জি ২০৬ সভাশ বাবু বলেন ষে, 'আগলি' পাঠ ব্যবির षश्ति । हहेरत, व्यर्व 'शत्रिशृर्व, द्वनिशृत'। किन्न पनिरमाप ७८७ ज क्यांठात चर्च हम ना । 'चनिः 'আগুলি' পাঠ ক্লাথিয়া ভাহার অর্থ ৰোব' না পড়িয়া 'অতিরোব' ও 'বাটকাইয়া' করিলেও বেশ চলিডে 'क्रव' ना शक्तिया 'क्रव' शक्रित भारतः। भगनरक चार्डिकारेषा चर्चार **७८२ এ**व दक्त वर्ष इद। সঙ্গে नहेवा अवीर महनाकून हहेवा। বছধন पश्चन, गर्सरा । আচির ২০৭ কোন অর্থ নাই, কেবল প্রাচীরের चह्रभ्य । नटक बाबकुष्ठ रुष, (वयन 'क्न हैन'। >•७,>>१,>७०, ) मब्हि चिंक्शरन नारे, আৰু ৪৫ আজি। আটন ২৪ বেদী। ) কিন্তু স্পষ্ট বোধ হয় বে, **हिशान देश 'विश्वमु,' 'कडे' এই व्यर्ख** चावनि ७२ (चर्थ द्विए७ शांत्रनाम ना।) चौतुरा २७० व्यक्ततम्य, तृक्ष धनव উद्धितं. ব্<u>ৰিহার</u> করিয়াছেন। আর্ড। এরণ পুকুরকে এ বেশে প্ৰকৃত পৰ্ব 'পদ্যান্তাণ', ক্ৰিড षश्पर 'এঁথো পুকুর' বলে। **এ एरन ७५ वडे वर्स् वारह**छ चान ১৩२,२०৮ टावमणिक चर्व 'चल', विक्रीविधित रहेबाट्ड । **पर्गठांव ६६ निका, प्रशान।** वर्ष 'वाष'।

	. •	1	a)•		
44	<b>लम्प्रर्था</b>		শব্দ	পদ <b>সংখ্যা</b>	' অৰ'
<b>অ</b> [নচান		অবির।	উভরোগ	4)	<b>डेक भस, जशा</b> त छे९स
चानना		नन ।			বা ব্যগ্ৰভা।
		चारवस्य ।	উভবাৰ	(4)	<b>উटिकःच</b> दत्र ।
আরতি		শক্টি বহু স্থানে নানা অর্থে ব্যব-		87+,8	৮> উव्यन।
		হ <b>ই</b> য়াছে। কোৰাও অৰ্থ 'প্ৰেম'			ua,
		াৰাও 'লোভা', কোণাও আবার	ء.	•	·
		ান অৰ্থ নাই ।	এড়ি		ং২>, বথাক্রেমে অর্থ—রাধ
শার্ত্তি ক	865, 89	ē, ৪ <b>৯৫, আ</b> ধিক্য ভিন্ন অপর			ধরানাদিয়া যাওয়া; ভ্যা — :
		অৰ্থ সক্ত হয় না।			করা। ,
আরন্ত	<b>9</b> 2	হরিজা।			હ
আর্ <b>ড</b> ন	8 • २	কর্ম।	প্র	>00, >1%,	es> यथाकृत्य व्यर्थ—(नः
আলিস	₹•9	আলস্য।		·	नद्यान ।
আসক	৩৮৬	উপবেশন-স্থান, ज्योगन।			<b>क</b>
		₹	কচলিয়া	160)	*
ইছিয়া	२ १ •	रेक्टाक विद्या।		১৮৭) <b>২ড</b> ং	বারা পরিষার করিয়া, কাচি
11411	<b>\</b> 10		ক <b>চালি</b>	<b>•</b>	
		উ	ৰুটা C		ষ্টেকটা শাদা।
উকি	989	বিশেষ্য করিলে অগ্রিকুলিজ,	কডি		কোপায়।
		া করিলে গুপ্তভাবে থাকিয়া	1 1 1 1 1		মর্শ অর্থ করিলেও চলিট
		<b>केर क्षकांन इंबद्धा</b> —peep ।			। কৃষ্ণপ্রাপ্তির দিকে বু
উি		প্রথমটির অর্থ উপস্থিত হওয়া,			প্রলোভিড করে, স্থভর
		ীয়টির <b>অর্থ উকি</b> —peep।	कद्रदव	यज्ञनी (	
डेच ७८८		(7)	4 NC4		শ, ট্যাক। প্ৰকৃত অৰ্থ, কাঁ কাপড়েৰ বে অংশ জড়া
উদারিয়া	<b>৮</b> २	পুণিয়া, উদ্বাচন করিয়া।		थारक	
উচস্ব		, १२३ डेड, चरनक।	करह		' क्थनहें।
উচল	022	<b>डे</b> क । ✓	কান্তা		म्प्रत्य । <b>मर्खा</b> ।
ক বৈ ত	***	উচ্চারণ করা।	কা <b>দা</b> র		(2)
উভয়	(43	<b>उक्</b> यन ।	কিনার -		⊶. ठीव ।
<b>डेक</b> इ	۲٦	ष्ट <del>व</del> न ।	কুট <b>ক</b>		ল। কৃটিল, কুটক—কৌটিল্য
<b>উ</b> লৱোগ	<b>₹</b> • 9	<b>उन्द</b> न।	<b>~</b> ,		ণ্টার এইরূপ অর্থ করিতে
উন্সাগর	454	व्यनित्रन ।			ষে সরল হয়, সে <b>কু</b> টিলভ
উपाष्टिया.	456	উদ্টাইয়া, স্থণা করিয়া, ভ্যাগ			शित्र ७ तर सार शांक ना
	•	< <b>क्</b> त्रिश ।	কুটি		वशास्ट्रम वर्ष कृष्टिनका
<b>डेहर</b> ह	. 663	শৃক করা।	-		मध्य ।

```
অৰ্থ
         भग्नश्था
শৰ
                     कूँ म मिया পরিস্থার করিল।
                                                  त्युवना
            4.3
कुमन '
                     কুলের গৌরব।
*কুলগারি
                                                            Б
                     কুম্বাটকার।
কৃহাবে
                                                  57
                                                            >
                      কুৰার।
 কোওর
                                                                      षायाम कत्रिमाम।
                                                  চাৰিত্ব
                                                            ७१२
                      মাঝি।
 কেরবাল.
                                                            ०১, २२८, ७८१ ह पत्र
                                                  চাতর
                         (7)
 কোপনি
             895
                                                                      চাপিয়া ধরিল।
                                                  চাপটিলে
                                                  চালে
                                                                      আবরণ চর্মে।
                   নাৰাভ।
          ٤5
 ८थम
                                                  চেত্ৰনী
                                                                      চৈত্তত করাইতে পারে, এমন
                                                            98
                   নৌকা বাহিত করা; নদীর এক
 ধেয়া
                                                                      (कान श्रीलाक।
                  পার হইতে অপর পারে নৌক।
                                                   ८हटहे।
                                                                      অল্লবয়সা।
                                                             •0
                  नहेबा वाख्या।
                                                   চৌরস
                                                             446
                                                                      व्यवद्भुत्र ।
                                                             Ð
                     মভ, সমতুশ্য।
 গতিক
                                                   ছড়ি
                                                             826
                                                                      व्यनहास हहेसा।
                    ( व्यर्थ(वाध रहेग ना )।
 গ ডবেড
           ٤>
                                                   इसन
                                                             650
                                                                      ह्ना ।
                    ( व्यर्थ नाह )।
 গদি
                                                   etg
                                                             889
                                                                      ছায়া।
           ১, ०२७, ८२८, कनमी, পাख।
 পাপরি
                                                                      চलिया यात्र, नहे रुव ।
                                                   ₹C6
                                                             293
                     প্রোধিত করে।
           12
 গাড়ে
                     পাঢ়, পভীব।
                                                            জ
 গাড়ি
           823
                     অভ, শরীর।
 গাত
                                                                      निक्षु।
                                                             b٤
                                                   ₹ÿ
                     গীত।
 গাৰন
            २०
                                                                      वक्व।
                      (श्रीव्रव।
 গারিমা
            >4.
                                                    विन
                                                                       (খন।
                     ८७ए क्रिश्रा।
 গাসি
                                                              a, ১a, ৩১७ (वन ।
                                                    वर्
  FIED
                      खल क्या।
             21
                                                   বাগাত
  শুক্ৰবিভ
                      생주 !
                                                   ৰাগাভি
                      (श्रम ।
 গেও
            489
                                                                       क्रज्याच ।
                                                              ٩ २
                                                    বাবে
                      গোপনে।
  গোপডে
            99.
                                                   ৰাতি ৰাতি ৬২৭
                      মিনভি।
  গোহৰি
             96
                                                    ভাতিয়া
                                                              > 10
                       ( व्यर्थ वृत्रिमाम ना )।
  গোহারি
                                                             as, soe भाषात्र शिवात क्रांगफ ।
                                                   वार
            ঘ
                                                                      बीयन शांत्रव कति, वैक्ति r 🌶
                                                             300
                                                   वि
  বাতে
            ૭૪
                     च्रांति ।
                                                                       ৰাহাতে।
                                                   बिर्ग
  षाष्टि
                     व्यवदाध ।
            જીર
                                                             १०, १०२ मैज, शृथक्ष इटेटल शाहत्।
                                                   ৰুণা
                     ठिखा, 'वानना' नटह। द्यांवा--
  (वांववा
            1.0
                                                             २०१, ध्रुर के कि छ इत्र ।
                                                   क्राव
                      भूतः भूतः भावृष्टि कवा।
```

			16			
	· ' <b>ব</b> '	•	শস্থ	পদস্	ध्या .	44
- मंग	পদসংখ্যা	<b>44</b>	ডুৰি	939	745.	रक्त।
वंदक)	₹8	বাভারন।		856		ভো।
. বাট-	888, 8		ডোৰি	680		विशे।
ं वामन	ररर	ৰানার ভার কৃষ্ণ।	ভোর	856	ने क्यू । रं	
	<b>0</b> 44	্ৰকার।		. <b>5</b>	•	•
ঝারি	<b>૭</b> ૮	ভূপার।	υ <del>ψ</del>	•		_
ঝাপে	७२ १	)	छन छन	296		रुशिव व्यवानी।
ব <b>াপ</b> ৰে	8, २७३	<ul><li>) ठालिका थरत, आवत्रन करत्।</li></ul>	<b>छन्</b> दक	<b>क</b> ्र ५	বিহন	
বিৰ্ট	225	ক্ত কলসী-খণ্ড জলের উপর			<b>छम्</b> हर	ग ब्रद्ध
		ছুড়িয়া ধেলা।		ত		
ঝুৰি	866	च्य ४७।	ভক্লবি	11	কৌশ	শম্য :
ঝুরিয়া	10)	ष्यं वर्षे क्रिया।	ভন্তবিদ	9.6	বিচার	ı
	t		<b>उ</b> ष्टे <b>र</b>	•>	ভীত	İ
টাগ	•		ভিধ	३३, २७	ভাহার,	তথায়।
VIT		बज्या व्यर्थ ना कतिरत छेलात	তাক	٥٠, ١٠	0 M#1	
		नाहे, जरत (क्यन कतिया हहेन,	ভাকর	<b>50</b> 2	ভাহার	
টান	09	বুঝা যায় না। গভি।	তাকিয়া ———	468	वृष्टि क	
টার	6+2	গভ। হাতের অলঙারবিশেষ।	ভাজনি	446	ভৰ্জন।	
<b>है।</b> नि	<b>e1</b>	(हन्न।	তাড়বাল ভিধিন			व बोमा ।
টিকে	9.9	चित्र रहेश थाटक।		•	क्रीम ।	•
निर्व	10, 21	७ <b>ठ</b> ळूत्र ।	ডেনা ডেরছ	9.	ছিল বল্প	
টাটনি	99	চাতুৰ্বা, হুটামি।	ভেঁকো	242	ডিৰ্য্যক্,	वक् ।
টিটপনা	16, 36		ভোকা	8 <b>6•</b> २२२	ছে।	
টোনা	<b>3</b> 1-	रेजनान-विद्या।	ভোড়	809		াকোধ উকি।
	b		33114		141441	(क्षिश् ।
ঠানি	424	<b>जस्यान क</b> तिया।	we.	थ	_	
ঠাম	२०७	অভার কাল।	পরি শ্বন লাভ	<b>958</b>	मान्नि, ८	
	/ 48e	प्र, निक्छे।	ष्टत्र ष्टत षाना	<b>₹8</b>	সারি স	
ें शिक्र	<b>b8</b>	रक करा।		<b>68</b>	শাভা	
	•			999, 863 989)	খাগন কা	
'काका	339	ভাৰাভি, চুৰি।		(	েছবাভা বুকিনা।	শেপর কি অর্থ হয়,
, Vlag	801, 690	CHERT CHANGE		6e)	<b>400€</b>	

	শক ়	পদসংখ্যা	· <b>অ</b> ধ <sup>*</sup>	শব্দ °	পদসংখ	n 44 ::
	ৰোৰ '	•	अज्ञ ।	•	(>>6, >8	, २७१, नडामि, ছडोमि।
	•	₽		নাট	(ves	মোহন বেশ.।
	<b>ए</b> त्रपन	48•	कहें।	নাটকা	65	
	4.A.	>8	मृष्ट्, निश्वम ।	নাটা	∫وق	नांकी।
	प्रकार	7.4	मृष्ठ छोटन ।	নারা	9.4	( • वैर्थ द्विनाम ना )।
	<b>पत्र</b> म	र १२	यञ्जना ।	নাহ	<b>२</b> >२	নাধ ।
	দরশি	8	দর্শন, আকার।	নিকশে	6.8	প্ৰকাশ করিয়া।
	पत्रिषा	>84	नको ।	নিৰ্ধা'ঙ	82	খাঘাত, আক্রমণ।
	<b>ए</b> णा	26	কাতর অবস্থা।	निছनि	961	ভাগে।
	দাপনা .	1•	ৰজ্বা লিখিয়াছিলাম, কিন্ত	নিছিয়া	<b>२</b> १•	ভ্যাগ।
			ভাহা বোধ হয় না। অৰ্থবোধ	•	657	বশিহারি।
			इहेन ना।	নিছু	887	লেখা।
	मिर्दर्भ	963	চক্তে।	নিদান	478	নিৰ্দিষ্
	দিব	₩>>	षिया ।	नित्रदङ्	२७३	নিকটে।
	मोचन	२७	मीर्च ।	নিশান	<b>ર હ</b> ર	<b>भक्</b> ।
	ছণ্ডলি	30	ৰোড়া।	নিঃস্বান	266	<b>थय</b> ।
	ছ্ছ	868	বিশুণ।	निंग	৩	নিজা।
	•	8, 69	८ इ	নেহালে	390, 3	14 (WEY )
	ধেয়াশিনী	17, 65	ৰে খীলোক দেবতার পূকা	নোটন	85•	চুড়া।
			क्रत्र ।		9	
	देशव	२७७	সাধ, অনৰ্থক।	পঞ্চর	908	( चर्व इव ना )।
	দোহারিয়া	8 2	শ্ৰোড়া ৰোড়া।	<b>গণা</b>	856	(বিশেষ কোন অর্থ নাই)।
	<b>दर्गा</b> चि	₹•5	বিভীৰ।	পদউধ	2.	भक्षे वर्ष्ठ ; कि भक्को, वन।
		ध		.,,		यात्र ना ; क्कृष्टे कि इस ? मध्य
	uturw					হইতে পারে; সেও পদার্থ।
	पोपटम भौन्दा	369	खर् <b>यः।</b> दिन्यः — :	পছমিনি	२७३	পদ্মিনী।
	राजा शंदनि	<b>ર•ર</b> • • •	हिं <b>चा,</b> खर ।	প্নশ্র	878	(অৰ্থ বৃথিলাম না)।
	राधान स्रो	•	মি <b>শ্ৰ</b> ণ।	পরকার	436	व्यकात्र ।
	ৰ। ধেয়ানি	981	शीत्र । 	পর্কিত	<b>.</b>	প্ৰাকৃত ৮
Ç.	CHAILA	<b>4</b> > <b>c</b>	शानमधाः :	পর্শি	9.9	পরীকা করিয়া।
,		न		পর্মশা	125	नक्षे चवचा । ·
_	<b>ৰ</b> গে	99	( व्यर्वदर्शाप हरेग ना )।	পরতেক	168	প্রভাক। • ;
,	ৰতি	*	ব্ৰণাম।	পরাভব	121	चनमान, बहुना।

```
११गः था
                   ) निन्हां, चशवाह ।
                                                   বয়ানে
                                                            8 9
                                                                     वश्टम ।
                                                   বড়াই ১১৮
                                                                     গৌরব, বাহাত্রী।
 পশারী
                     (माकानमात्र ।
                                                  ব্দুয়া ৫০, ৯০
                                                                     বড় লোক।
 পদারি
          424
                     প্রদার করিল, ফেলিল।
                                                  दङ्
                                                           t•
                                                                     वश् ।
 পাউস
          ott
                     বৰ্ষার নৃতন ঢল।
                                                  ৰা
                                                           0.9
                                                                      ৰাভান।
 পাৰালি
          629
                    'থৌত করিয়া।
                                                  বাই
                                                           630
                                                                     বাহিত করা।
 পারা
           د د
                    মত।
                                                  বাউল
                                                           ંગ્ર૧
                                                                     উন্মন্ত।
 পিছ
         805
                    मयुद-भाषा।
                                                  বাঙরি
                                                                     भाशनिनौ ।
                                                           0000
 পিজ্যাইব ৭৩৩
                    প্রত্যের করাইব।
                                                                     বাজাও।
                                                  বাও
                                                           8 16
 পুনি
                    भूनक्षांत्र, भूर्विमा व्यर्थ इस ना।
         ೦೯೦
                                                  বাধার
                                                           >> 6
                                                                     প্রকৃত অর্থ ধানের মড়াই,
 পুনবেরি
                    शूनक्षात्र ।
           9
                                                                     वर्षात काम।
 পূর্ণ
                  ( व्यर्थ वृक्षिमांभ ना )।
       ( 6.
                                                  বাগাল
                                                           25.2
                                                                     রাধাল।
 প্রা
                  थिनदा ।
        92
                                                  বাচাইলা ৫৬৭
                                                                    বিস্তার করিলা।
 পুরি
       649
                  माय क्रिया।
                                                  বাঢা
                                                           126
                                                                     সংবর্জনা ।
পেখি
                  (मिथि।
         ₹€
                                                  বারিল
                                                                     বন্ধ হইল, ঝলসিল।
                                                           8•
                  (कोमन।
প্রবন্ধ
         06. UF
                                                  বাসি
                                                           82.
                                                                     म्यान कवि।
প্ৰ
                  ( বিশেষ কোন অৰ্থ নাই )।
        S
                                                  বাহে
                                                          . 392
                                                                     বাহতে।
প্ৰিয়া
                  भविक (विश्वा।
        ۵
                                                  বাছটি
                                                           4.5
                                                                      वाङ्त्र जनकात्रविद्यव ।
পিখন
                  পরিহিত।
         85
                                                  বাহুডিয়া ১৫৫
                                                                      অগ্রসর হট্যা।
          क
                                                  বায়
                                                                     বাজায় ৷
                                                           २७
                                                           ৩৪
                                                                     ৰায়।
                  ष्टे व्यरम विकाश।
       २३७
                                                 বাভিয়া
                                                                     আঘাত করিয়া।
                                                           230
कृष्टेक ६०२
                  সামার ।
                                                 বিকি
                                                                     বিক্ৰয়।
                                                           > 5
(本(本 802)
                  প্রকেপ করে।
                                                 বিকে
                                                                     31
                                                           3 • 8
ফোঁপান ১৫
                  কোরে নিখাস।
                                                 বিঘিনি
                                                                     विश्व ।
                                                           ...
            4
                                                 বিজ্বরি
                                                                     বিছাৎ।
                                                           8 4
                 वक्रभामी, इहे।
विक्रम ১१৮
                                                 विश्वविद्या
                                                                     विश्वख श्रेरन।
                                                           २२७
বনি
       3.5
                  ( व्यर्थ (वांध इहेन ना )।
                                                 বিথার
                                                                    · বিশৃত্যল।
                                                           2.6
                  মিল হয়।
ৰনে
        4
                                                 বিদপ্ৰ
                                                            8.४, 8>१ (व्यम् ।
वश्रीन २५, ७०, ८४, वाँधन ।
                                                 বিদগধি
                                                           ૭ર
                                                                      প্ৰেমিকা।
বলনি
                  গঠন।
        >
                                                 বিনিয়া
                                                                      কাটিয়া।
                                                            950
       २२५
                 ত্তরে তরে বিভাগ।
                                                 विवन
                                                                      यमहीत ।
                                                           460
বিরিশন ২৩৩
                  444 I
                                                 বিভাৰ
                                                           ...
                                                                      নানা ভাব হইতে পাৰে
विद्याः २२८
                  राष्ट्रक शक् ।
                                                 ৰিডোল
                                                            >>0
                                                                      विष्णंत्र ।
```

•			1 les			
च शहरा	trl .	चर्च	भव •	পদ সংখ্য	ा वर्ष .	• •
ব্দধ বিছল ৫	• •	वर्षरवाध हरेन ना ।	ভূঁকেঁ	२) •	বিশ্ব হয়।	•
বসর ৫	15	বিশ্বত হ'ব।		ম		
বহি ১	e	বিধি।	মঝু	>6	<b>ভাষা</b> র।	•
[¶	9 \$ 6	वृष्टि ।	মল্লভোড়	म ১२		রক্ষ অলহার,
লে 🦠	<b>5</b> 5, 5€0	सम्बद्धाः .			এখন ভো	গ বলৈ।
বৰত	۲	ব্যক্ত।	ষহট।	<b>( 9 0</b>	চাঁৰি।	
বেয়া	>•0	ৰাহিত করিয়া।	মহল	₹8	বাটীর অং	41
বেয়াপিত	860	ব্যাপ্ত, জ্ঞাত ।	মহাই	476	भहान् ।	
বেরাইতে	>11	বাহির হইতে।	মানাইব	8२७	,800 वृक्षाह्या,	শশ্বত করিয়া।
ৰোধে শোধে	২৮১	শামাতে।	भ्षेटक	₹	মাথায়।	
বোলহ	255	ভ্রমণ কর।	<b>मू</b> नल	<b>૭</b> ૨	मृक्ि ।	
বোলাইয়া	Sta	ভাকিয়া।	<i>मू</i> फ	७२२	মাপা।	
ৰৌহারি	२७१	বধু।	মেনে	•	কোন অং	(नाई।
	ভ		মেশা	<b>ર</b> ૭,૬	৪৬০ মিলন,	শংহডি ।
	-	<b>TE</b> 1	মেহা	>->	(यम् ।	
ভর্ম	₹ <b>%</b> ₽	<b>नव</b> ्य ।		• য		
••	२ <i>१४</i> ४	<b>ভ্ৰম</b> । শোভা পায়।	ষাকর	825	যাহার।	
ভাগে ভাঙ	er	<u>द्या</u> शासा <b>ख</b> ा	<b>যু</b> ক্তি	৩১৮	বুঝিলাম	वा ।
णार्थ खा <b>र्</b> गाहेव	>>8	क्ष (१९३)।	যু <b>তে বু</b> ছে	5 83	वह मध्ये।	षि ।
ভাৰাহয়।	) <b>2</b> b	बुविश्व।	<b>ৰোগা</b> নী	)·b	<b>,</b> যাহার৷	নিন্য প্রভাগ
		विस्कृत चढीहेरव ।			(श्व ।	
ভাঙ্গাবে	) \$\brace \( \alpha \al	१ (वाथ इम्र)	<b>टेग</b> ्टन	२२८	(यक्तर्थ।	
ভাৰ	-	्रे ।		ব		
ভাবে ভাবি ভবি	(8)	था। हानांकि।	त्र८ढे	16	রটনা করে, ক	₹ I
ভারি ভূরি <sub>বিচার</sub>	422 422	श्रीह।	রনিয়া	۶•৮, ১২ <sup>,</sup>	৬ রসিক।	
ভিত	<b>&gt;,</b> <	প্রা <b>ড</b> । ভীব।	রা	२१३	कथा।	
" ভিয়ান	७१२ •	পাক।	রাগি	>	রাগ, অন্তরাগ	
ভীতে ভীতে	644 •	पार । <b>७</b> व ।	রাজ	۲	মিন্ত্ৰী, কারিগ	11
ভাতে ভূবৰ শক্তি		<sup>ভর।</sup> শক্তিমান্ কুমর।	<b>ৰা</b> ভাপল		° রক্তোৎপল।	•
ভূষা নক। ত	>8•	পাঠাইছে।	*বেহা	878,	७८६ (त्रथा ।	
ভেল		क्ट्रेन।	८ब्राहे	**	(त्राप्तन क्ति।	
ভোৱে	•	विस्तन।		ल्	•	1 .
यमा समा	<b>b1</b>	<u>ब</u> ।	मि ३	(64 83)	'লক্ ক্রিয়	11 <b>(</b> .

			No.		•
•_	1		0		
শব্দ প্	गरवा। . \	<b>पप</b> ्रत	শস্ব	<b>भगगरवा</b> ।	.44
লখিতে গ	*>	বেশিভে।	<sup>6</sup> नांबी	830	नाको ।
সহ্মি ৩	>>	नची ।	<b>শা</b> ভ	42	गटम ।
শন্তা ০	• ' •	সাণ।	সান	(00, 664	
नहिन	>e•	( वर्ष द्विनाय ना )।	সান্ধাইৰ		অবৈশ করিল।
नाववान ३	३८, ६१६ म	क ७१ डेव्हन ।	শামাই	7 959	थादन क्षिण।
मारत्र ।	•	दिश्य क्या	সামাল	684	( वर्ष वृतिनाम ना )।
শে	t	শ্ৰেষ।	সায়ৰ	२५७	नद्याववः।
শেঠা ৮	8, ७२१, 8	० ६ विशम् ।	সার	826	শেষ কর, ওজর কর।
শেহা ও	a, २७ <del>७</del>	ব্ৰেম।	শারজ	<b>6</b> 2	भीखर्स (१) i
গোর ১	৩৭	<b>직</b> 확 i ·	সালম	٥	चनकात्र।
লোহ ৬	)8, <del>4</del> 29	<b>च</b> र्थ ।	<b>শি</b> ধি	8 % 8	(7)
			সীট	७२२	ष्माद भग्नार्थ।
	<b>M</b>		<b>হুগড়</b>	<b>د</b> ی	হুগঠিত।
শামহিতে	<b>0</b> 54	সম্বৰ করিতে।	<b>স্থগড়</b> পণ	1 046	নাগরালি।
C	Ob-10	वानिम्।	কুগৰ	88	( পৰ্ব বৃধিকাম না )।
निरं <b>त्रां</b> ना	r	পুরস্বার ৷	হুবর হুচারি	30.	स्थन। सर्वेत्रः
	• २, 880	(वरना।	<b>च्यो</b>	oo, wa	হুচাক, হুন্দর। <b>ভা</b> ন।
		चेत्रम्। चीत्र्।	হু দর	167	<b>(r</b> )
ল্বৰ প্ৰভা <b>ৰ</b>		বাণ । শুনিডে ভীৰণ।	च्यापि	64)	<b>चगणात्र क्</b> त्रिया, वश्यि ।
441 2011	(3	Ginco Gidal	স্থ্যারিতে দেওলা	i ba eeo j	সম্পন্ন করিছে।
	স		গেডগা গেঁওলি	348	क्रमक উद्धिनकाठीर भगार्थ।
শ্বর ৬৫৪		। र्ष वृत्रिमाय ना । )	61 014	``` }	
শ্বান ৩		দ্য করিয়া প্রেরিভ।	সেহনে	७२७	त्र पर्व ।
मत्यह ४७३	<b>म</b> १र	। विक् ।	সোঙৰি সোদৰ	976	শরণ করিয়া। শাশীয়।
गत्मम २०১	गूर	पर्।	গোৰম সোভ	७७७ २८४	ৰোড। ৰোড।
সমাধান ৮২	व्यव	। धीन ।	গোৰাত্তি	28.6	শান্তি।
সমাধি ৪		७७৯ (भर, निषानः)	पठवत्री	970	चौथीना ।
्गटचोध ७७		<b>कारेबा ६</b> ,	<b>শ</b> াঁচা	682	ঠিক, খাট।
্সর ২		र्व इप्रना।		₹	•
স্বি - ৪৮১		वर्षिया, •	शंना	864	<b>भारम</b> ।
		গাৰ কৰে ৷	' হাসিল	>>•	जाशंव ।
শঙ্গে ৫০৮	, १५५ ज	িবোৰ হয় না।	<b>हिड</b>	<b>4</b> >8	वर्ष स्व मा।
मणि २६३	की	41	হডাশ	426	হতাশার উদ্বেদ।

# . অশুদ্ধি-শোধন।

<b>ત્રુઃ</b>	পদ	পং 🐨	<b>শণ্ড</b>	95
ን፦	२৮	•	ৰুধিষ্ঠর	<b>ৰু</b> ধিটির
ર•	o• ( 🖥	का) ४२	কীৰ্ষিত	<b>কী</b> প্রিড।
* 85	90	•	नाय	भार
tt	36	٤٢	পরি	পত্তি
96	252	১৬ পং বি	<b>দর</b> পর এই চরণটি ছ	াপ। হয় নাই :—
		এবে ঘটে ব	াদি হয়েড	জাগাতি
		75	কণী আগুলি রাধ।	
৬৬	ऽ२७	<b>b</b>	করে	<b>ক</b> বে
98	285	90	वारम	कत्व
ьŧ	<i>&gt;</i> 68	>	८इन्थ	८भङ्
720	889	२२	চূধের	<b>স্</b> থের
12%	800	>	মাধ্ব	<b>মাণবা</b>
>•>	854	20	বাগিণী	রাগিশী
<b>२</b> २•	t • t	>>	<b>ም</b>	<b>कृ</b> षः
2124	**	১৩	পোপী	গোপী



